

बृहज्जोतिषार्णवेऽष्टमे धर्मस्कन्ध उपासनास्तबके

# श्रीदुर्गोपासनाकल्पद्रुमाध्यायः

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई.

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

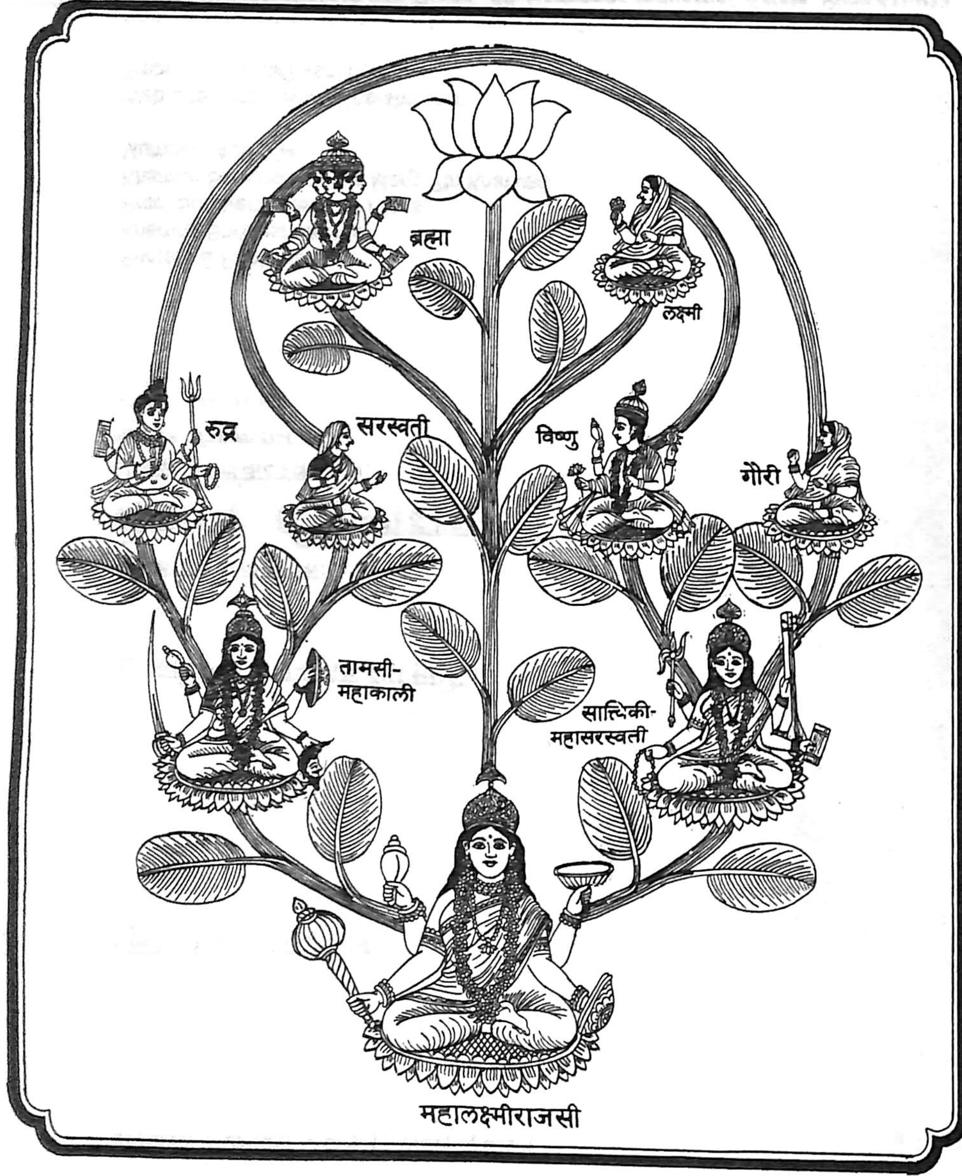
Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri




# अथ बृहज्ज्योतिषार्णवेऽष्टमे धर्मस्कंध उपासनास्तबकेऽष्टाविंशत्यधिकशततमः श्रीदुर्गोपासनाकल्पद्रुमाध्यायः प्रारभ्यते ।

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

संस्करण : जनवरी २०१५, संवत् २०७१

मूल्य : ४०० रुपये मात्र

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:

**खेमराज श्रीकृष्णदास,™**

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,

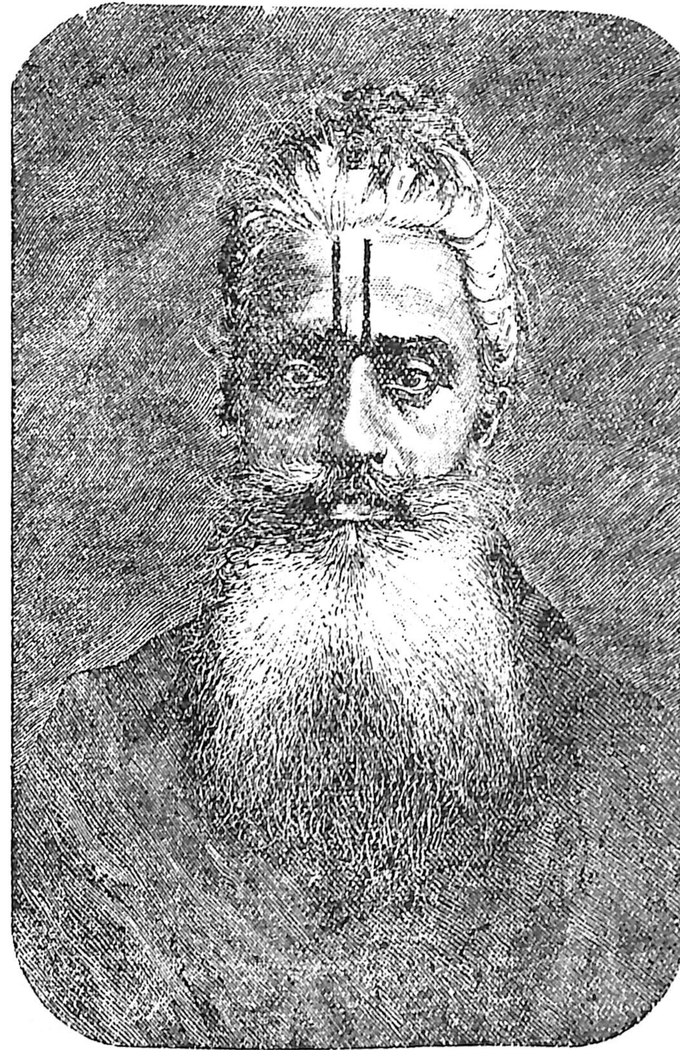
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

*Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass, Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004,*

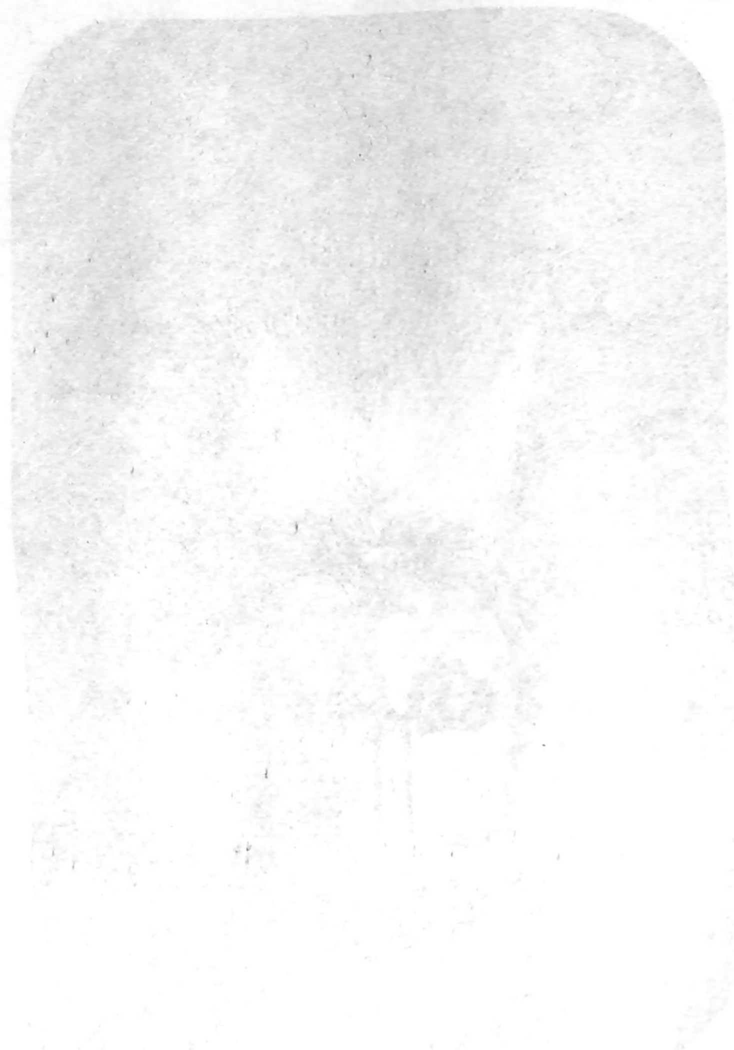
Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri



बृहज्ज्योतिषार्णवकर्ता औदीच्यसहस्रज्ञातीय

व्यङ्कटरामात्मज हरिकृष्णशर्मा.

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

# अथ दुर्गोपासनाकल्पद्रुमविषयानुक्रमणिका ।




| पत्रांकाः | प्र० | विषयनामानि. | ग्रन्थनामानि. | श्लोकप्रतीकानि. | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | उपोद्घातप्रकरणम् | ( हरिकृष्णः ) | वृषवाहनवि० | ५२ |
| ३ | २ | दुर्गामाहात्म्यम् | ( पाद्मे सृष्टिखण्डे ) | चण्डिकानुप्र० | १८५ |
| १२ | ३ | अथ दुर्गाष्टाक्षरीमन्त्रपटलम् | ( देवीरहस्यतन्त्रे ) | भगवन्सर्वतन्त्रज्ञ | ९ |
| १३ | ,, | तत्र मन्त्रोद्धारः | | तारं मायां० | १० |
| ,, | ,, | यन्त्रोधारः | | विन्दुत्रिकोणं | २२ |
| ,, | ,, | अथावरणदेवतानिर्णयः | | ब्राह्मीनारायणी० | २५ |
| १४ | ,, | अथ प्रयोगाः | | स्तम्भनं मोहनं० | ३७–५२ |
| १५ | ४ | अथ पद्धतिः | ( देवीरहस्यतन्त्रे ) | शृणु पार्वति वक्ष्या० | १ |
| २१ | ५ | अथ श्रीदुर्गाकवचम् | ( देवीरहस्यतन्त्रे ) | अधुना देवि वक्ष्या० | ४२ |
| २३ | ६ | अथ श्रीदुर्गासहस्रनामस्तोत्रम् | ( देवीरहस्यतन्त्रे ) | अधुना शृणु वक्ष्या० | १३३ |
| २९ | ७ | अथ श्रीदुर्गास्तोत्रम् | ( देवीरहस्यतन्त्रे ) | अधुना देवि वक्ष्या० | १९ |
| ३१ | ८ | अथ श्रीदुर्गाभुवनवर्णनम् | ( देवीरहस्यतन्त्रे ) | श्रीशैलराज० | ४४ |
| ३३ | ९ | अथ दुर्गापञ्चरत्नेश्वरीविधानम् | ( देवीरहस्यतन्त्रे ) | अधुना देवि० | १८ |
| ३४ | १० | अथ दुर्गास्तोत्रम् | ( ब्रह्मवैवर्ते ) | पुरा स्तुत्ता सा० | २६ |
| ३५ | ११ | अथ ब्रह्माण्डमोहननाख्यं दुर्गाकवचम् | ( ब्रह्मवैवर्ते ) | भगवन्सर्व० | १९ |
| ३६ | १२ | अथ दुर्गाष्टोत्तरशतनामात्मकस्तोत्रम् | ( विश्वसारतन्त्रे ) | शतनाम प्रवक्ष्यामि | १९ |
| ३७ | १३ | अथ रुद्रचण्डीपाठः | ( रुद्रयामले ) | चण्डिकाहृदयं० | ६५ |
| ४० | १४ | अथ सरस्वतीलक्ष्मी कालिकासूक्तत्रयम् | ( रुद्रयामलतन्त्रे षट्कतन्त्रे ) | मुने कथय० | ७८ |
| ४६ | १५ | अथ श्रीचण्डिकामालामन्त्रः | ( अथर्वणागमसंहितायाम् ) | अस्य श्री० | |
| ४७ | १६ | अथ शूलिनीदुर्गामन्त्रविधानम् | ( शारदातिलके ) | ज्वल ज्वलय० | १ |
| ४८ | ,, | अस्य पूजाप्रयोगः | ( तन्त्रसारे ) | प्रातःकृत्यादि० | २४-३५ |
| ४९ | ,, | अथ शूलिनीदुर्गामहामन्त्र | | अस्य श्री० | |
| ५१ | १७ | अथ श्रीनवदुर्गोपनिषत् | ( अथर्वणरहस्ये ) | अस्य श्री० | |
| ६५ | १८ | अथ श्रीदुर्गोपनिषत् | ( अथर्वशीर्षे ) | सर्वे वै देवा० | |
| ६७ | १९ | अथ देवीमहिम्नस्तोत्रम् | ( चन्द्रचूडः ) | त्वमन्तस्त्वं० | ३४ |
| ७० | २० | अथ श्रीदुर्गास्तवः | ( हरिवंशे ) | आर्यास्तवं प्रवक्ष्या० | १० |


Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

| पत्रांकाः | प्र० | विषयनामानि | ग्रन्थनामानि | श्लोकप्रतीकानि | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| ७२ | २१ | अथदुर्गाकल्पप्रकरणं तत्राश्विनप्रतिपदादिनवम्यन्तं कर्तुमङ्गलस्नानादिकम् | (शान्तिसारे मार्कण्डेयपुराणे डामरतन्त्रे च) | शृणु राजन्प्र० | १ |
| ,, | ,, | वैदिकलशस्थापनादिकम् | | ततश्च कारये० | ३ |
| ,, | ,, | यन्त्रोद्धारः | | यन्त्रोद्धारः प्र० | ६ |
| ,, | ,, | यन्त्रोपरि चतुरस्रे पीठपादुकानाथपूजनम् | | पञ्चकैः कालि० | ८ |
| ७३ | ,, | अथाष्टदलदेवताः | | चक्रे अष्टदले० | १८ |
| ,, | ,, | अथ षड्दलदेवताः | | वायुः सोमस्त० | २२ |
| ,, | ,, | अथ त्रिकोणदेवताः | | गणेशं हरिहरं० | २३ |
| ,, | ,, | अधिदेवताप्रत्यधिदेवताः | | सरस्वत्याः० | २५ |
| ,, | ,, | चतुःषष्टियोगिनीनामानि पूजा च | | जया च विज० | २९-३७ |
| ७४ | ,, | अथ मन्त्रोद्धारः | | पुनस्त्वां परि० | ३८ |
| ,, | ,, | तत्र प्रश्नोत्तरे | | | |
| ,, | ,, | अथ नवार्णमन्त्रोद्धारश्चन्द्रादिसमवर्णसहितः | | ऐंबीजमादि० | ४२ |
| ,, | | नवार्णजपफलम् | | नवाबीजविशुद्धो० | ४५ |
| ,, | ,, | अस्य सिद्धादिविचारो नास्ति | | अस्मिन्नवाक्ष० | ५० |

| पत्राङ्काः | प्र. | विषयनामानि. | ग्रन्थनामानि | श्लोकप्रतीकानि, | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| ७४ | २० | अस्य ऋषिच्छन्दोदेवतादि | | नवक्षरस्य ऋषयो० | ५१ |
| ७५ | ,, | विनियोगः ऋष्यादिन्यासाश्च | | मन्त्राणां पल्ल० | ५५ |
| ,, | ,, | अथ मन्त्राणां पल्लवशिरोमूकसुप्तनष्टमृतवृथानिर्वीर्यकीलितशून्यभुजङ्गमलक्षणानि प्रयोजनं च | | | |
| ,, | | कर्मपरत्वेन पल्लवयोजना | | नमोन्तः शा० | ६१ |
| ,, | ,, | जलमध्येऽनुष्ठानं न्यासतर्पणादि | | नद्यादौ विधि० | ६८ |
| ७६ | ,, | अथ पूजापद्धतिक्रमस्तत्र स्थाननियमः | | प्रविश्य देव० | ७४ |
| ,, | ,, | पद्मासनलक्षणम् | | पूर्वादिषट्सु० | ७९ |
| ,, | ,, | भूतशुद्धिः | | मौनी बद्धास० | ८१ |
| ,, | ,, | प्राणायामः | | तस्याचिरेण० | ९२ |
| ७७ | ,, | न्यासकर्तव्यताविधिः | | पूजानां जप० | ९५ |
| ,, | ,, | मातृकान्यासः १ | | मातृकान्या० | ९८ |
| ,, | ,, | सारस्वतन्यासः २ | | अथ सारस्वतो० | १०५ |
| ,, | | मातृगणन्यासः ३ | | तृतीयं ते प्रव० | १०९ |
| ,, | | षडूदेवीन्यासः ४ | | जायते त्रिषु० | ११३ |
| ७८ | | अभेद्यन्यासः ५ | | पादाभ्यां ना० | ११८ |


Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

| पत्राङ्काः | प्र० | विषयनामानि. | ग्रन्थनामानि. | श्लोकप्रतीकानि. | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| ७८ | २१ | वैकुण्ठमुखकुन्न्यासः ६ | | मध्यं पातु | १२२ |
| ,, | ,, | शिरआदिपायुपर्यन्तं बीजन्यासः ७ | | ब्रह्मणः पायु० | १२५ |
| ,, | ,, | पाय्वादिशिरोन्तं बीजन्यासः ८ | | पायुवो ब्रह्म० | १२६ |
| ,, | ,, | मन्त्रन्यासः ९ | | महारक्षोगणा० | १२८ |
| ,, | ,, | वल्लवयुक्तन्यासः १० | | हृन्मस्तकशि० | १३० |
| ७९ | ,, | खड्गिन्यादिश्लोकन्यासः ११ | | न्यासं ते संप्र० | १४० |
| ,, | ,, | एकादशन्यासान्ते सृष्टिमुद्रादर्शनम् | | एवं न्यासवि० | १४८ |
| ,, | ,, | अर्घपात्रादिस्थापनम् | | अर्घपात्रं प्रति० | १५१ |
| ८० | ,, | पीठपूजा | | पीठादिपूज० | १५६ |
| ८१ | ,, | देवीपूजा | | एकाक्षरं महा० | १८० |
| ,, | ,, | सप्तशतीपाठकरणम् | | प्राणानायम्य पूर्वो० | १८८ |
| ,, | ,, | होमविधानम् | | जपेन्नवाक्षरं मन्त्रं० | १९१ |
| ८२ | ,, | प्रार्थनाविसर्जनादिनि० | | बिदध्यात्सुस्थि० | १९९ |
| ,, | ,, | पूजामहिमा | | अनेन विधिना० | २०२ |
| ,, | ,, | कार्यपरत्वे ध्यानयोगः | | यथा ध्यानं तथा० | २०८ |
| ,, | ,, | कार्यपरत्वे चतुरस्रादिपीठ-निर्णयः | | चतुरस्रेहि शान्त्यर्थं० | २१४ |

| पत्रांकाः | प्र० | विषयनामानि. | ग्रन्थनामानि. | श्लोकप्रतीकानि. | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| ८३ | २१ | कार्यपरत्वे कुण्डानिर्णयः | | योनिकुण्डे भगांके | २१७ |
| ,, | ,, | चरित्रत्रयऋष्यादिकम् | | चण्डीसप्तशती० | २२२ |
| ,, | ,, | अथ काम्यप्रयोगाः | | नित्यचण्ड्यादि० | २२५ |
| ,, | ,, | अथ नित्यचण्डीलक्षणम् | | सकृद्रहस्य० | २२६ |
| ,, | ,, | नवचण्डीविधानम | | शुक्लां षष्ठीं० | २२८ |
| ८४ | ,, | कालरात्रिसंज्ञकनवचण्डीविधानम् | | महाकालोद्भवं० | २३७ |
| ,, | ,, | कुण्डस्य अष्ट संस्काराः पात्रासादनं च | | संस्कारैरष्टभिः० | २३८ |
| ८५ | ,, | स्विष्टकृदादिपूर्णाहुत्यन्तं कर्म वसोर्द्धारा अभिषेकादिकं च | | ब्रह्माणीमाहेश्व० | २५८ |
| ८६ | ,, | नवरात्रिविधानम् | | शारदे चाश्विने० | २७२ |
| ,, | ,, | शतचण्डीविधानम् | | शतचण्डीवि० | २८९ |
| ८७ | ,, | तत्र मधुपर्कविधिः | | मधुपर्कवि० | २९६ |
| ,, | | मण्डपप्रवेशः | | कृतस्वस्त्ययनो० | ३०८ |
| ,, | | मण्डपपूजा | | दिशापालांश्च० | ३११ |
| ८८ | ,, | कुमारीपूजा | | कुमारीदशकं० | ३२६ |
| ८९ | ,, | होमः पूर्णाहुतिवसोर्धारादानादिकं च | | महाजागरणो० | ३३६ |


Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

| पत्रांकाः | प्र० | विषयनामानि. | मन्थनामानि. | श्लोकप्रतीकानि. | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| ९० | २१ | चण्डिकायाः महाविद्या १ चण्डी २ सप्तशती ३ मृतसंजीविनी ४ महाचण्डी ५ कुमुदीनाम ६ | | महाविद्या म० | ३५७ |
| ,, | ,, | नवार्णसंपुटनिर्णयः | | शतमादौ च० | ३५९ |
| ,, | ,, | कुमारीपूजाविधिः | | महाराज० | ३६१ |
| ९१ | ,, | इति दुर्गाकल्पः समाप्तः | | सोऽपि ज्ञान० | ३८१ |
| ,, | २२ | अथ द्वितीयदेवीसूक्तम् | ( मार्कण्डेयपु० | जन्तोरप० | ७० |
| ९५ | २३ | अथ चण्डिकाहृदयम् | | ओ३म् ह्रीं जय० | |
| ९६ | २४ | अथ श्रीचण्डिकास्तोत्रम् | | या देवी खड्गहस्ता० | १२ |
| ९८ | २५ | अथ लघुदुर्गासप्तशती-स्तोत्रम् | ( मार्कण्डेयपु० ) | ओ३म् व्रीं व्रीं० | १० |
| ९९ | २६ | अथ दुर्गाकवचम् | ( कुब्जिकातन्त्रे ) | शृणु देवि प्रवक्ष्यामि० | ७ |
| ,, | २७ | अथ चण्डीस्तोत्रम् | ( पृथ्वीधराचार्यः ) | यत्कर्मधर्म० | १७ |
| १०१ | २८ | अथ गुरुकीलकपटलम् | ( रहस्यतन्त्रे ) | पुरा सनत्कुमाराय० | २३ |
| ,, | २९ | वेदवत्सप्तशतीप्रतिपादनं सप्तसतीसप्तशतीति-पदद्वयव्याख्या | ( मेरुतन्त्रे ) | अस्य स्तोत्रस्य सप्तसती सप्तशती चेति नामद्वयम् | |
| १०३ | ,, | अथ सप्तशतीमन्त्रविभाग-प्रकरणम् | ( कात्यायनीतन्त्रे नीलकण्ठः ) | मार्कण्डेय उ० | |

| पत्रांकाः | प्र० | विषयनामानि. | ग्रन्थनामानि. | श्लोकप्रतीकानि | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| १०४ | २९ | अथ सप्तशत्या मन्त्रविभाग-ज्ञानार्थं कात्यायनीतन्त्रस्य नीलकण्ठकृतव्याख्या | ( कात्यायनीतन्त्रे ) | मार्कण्डेय उवाच० | |
| ११३ | ,, | अथ सप्तशत्या मन्त्रविभाग-ज्ञानार्थं प्राचीनोक्तकारिकाः | | मार्कण्डेय उवाच | ४७ |
| ११५ | ,, | अथ सप्तशत्या मन्त्रमिभागज्ञा-नार्थं नागोजीभट्टकृतश्लोकाः | | अष्टसप्तत्युत्तराणां० | ६१ |
| ११७ | ,, | अथ डामरतन्त्रोक्तश्लोका-दिसंख्या | | अधुना देवि व० | ५३ |
| ११८ | ,, | अथ ब्रह्माण्डपुराणोक्तश्लो-कादिसंख्या | | तत्राद्यचरिता० | ६४ |
| ,, | ,, | अथ गोविन्दकण्वकृतसप्त-शतीमन्त्रविभागः | | अनिर्वाच्यजग० | ६८-१२७ |
| १२२ | ,, | अथ गुप्तवतीटीकाकारमतेन सप्तशतीस्पष्टमन्त्रविभागदर्शनम् | | मार्कण्डेय उवाच० | |
| ,, | ,, | यथाःश्रुतग्राहिमतेन मन्त्रविभागः | | मार्कण्डेय उवाच० | |
| १३३ | ३० | अथ दुर्गापटलं तत्र उपोद्घातश्लोकाः | | दृष्ट्वा तन्त्राण्यने० | १ |
| ,, | ,, | चण्डीनवार्णमन्त्रोद्धारः | ( मन्त्रमहोदधौ ) | अथोनवाक्षरं० | ५ |
| ,, | ,, | नवार्णऋष्यादिन्यासः १ | | नवाक्षरोऽस्य ऋ० | ६ |
| ,, | ,, | ऋष्यादिन्यासः २ | | ऋषिच्छन्दोदेवता० | १० |


Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

| पत्राङ्काः | प्र. | विषयनामानि. | ग्रन्थनामानि. | श्लोकप्रतीकानि. | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| १३३ | ३० | एकादशन्यासे मातृकान्यासः १ | | प्रथमं मातृका० | ११ |
| " | " | सारस्वतन्यासः २ | | अथ द्वितीयं कुर्वी० | १२ |
| १३४ | " | मातृगणन्यासः ३ | | ततस्तृतीयं कुर्वी० | १५ |
| " | " | नन्दिन्यादिन्यासः ४ | | न्यासं चतुर्थं० | १९ |
| " | " | ब्रह्माख्यन्यासः ५ | | अथ कुर्वीत ब्र० | २३ |
| " | " | महालक्ष्म्यादिन्यासः ६ | | षष्ठं न्यासं ततः | २७ |
| १३६ | " | मूलाक्षरन्यासः ७ | | मूलाक्षरन्यास० | ३१ |
| " | " | वर्णन्यासः ८ | | कृतेऽस्मिन्नष्ट० | ३३ |
| " | " | मन्त्रव्याप्तिन्यासः ९ | | कुर्वीत नवमं० | ३४ |
| " | " | षडङ्गन्यासः १० | | ततः कुर्वीत० | ३६ |
| " | " | खड्गिनीत्यादिश्लोकन्यासः ११ | | दशन्यासोक्त० | ३८ |
| " | " | मन्त्रवर्णन्यासः | | मन्त्रवर्णान्० | ४३ |
| " | " | महाकालीध्यानम् | | खड्गं चक्रगदे० | ४४ |
| " | " | महालक्ष्मीध्यानम् | | अक्षस्रक्परशुं० | ४५ |
| " | " | महासरस्वतीध्यानम् | | घण्टाशूल० | ४६ |
| " | " | नवार्णपुरश्चरणम् | | एवं ध्यात्वा० | ४७ |
| " | " | यन्त्रावरणदेवता | | त्रिकोणमध्ये० | ४९ |
| १३७ | " | नवरात्रे नवार्णमन्त्रजपः | | आश्विनस्य० | ५९ |
| १३७ | ३० | सप्तशत्याश्चरित्रत्रयस्य ऋष्यादिन्यासः | | सप्तशत्याश्च० | ६१ |
| " | " | सार्धचण्डीपाठफलम् | | सार्धस्मृति० | ६६ |
| " | " | पाठान्ते न्यासध्यानजपादिकम् | | समाप्तौ तु० | " |
| " | " | पाठादौ कवचार्गलाकीलकपाठक्रमकथेतिहासाः | | पुरा दशमु० | ६९ |
| १३८ | " | पाठादौ अर्गलाकीलककवचं पठेदिति क्रमवर्णनम्, | | अर्गलं विष्णुना० | ८३ |
| " | " | अर्गलादीनां पठनफलमाह | | अर्गला हृदये० | ८५ |
| १३९ | " | सप्तशतीसंपूर्णपाठस्याद्यन्ते नवार्णसम्पुटम् | | प्रत्यध्याय० | ८८ |
| " | " | प्रत्यध्यायस्याद्यन्ते नवार्णसंपुटम् | | नवार्णमनुना० | ८९ |
| " | " | निष्कामपाठे सम्पुटस्यानपेक्षा | | चरितं मध्यमं० | ९० |
| " | " | एकचरित्रपाठे निर्णयः | | चरितार्धं० | ९१ |
| " | " | अर्धचरित्रपाठेऽनिष्टफलम् | | यदि प्रमादात्० | ९२ |
| " | " | अध्यायमध्ये न विरामः | | पुनरध्यायमारभ्य० | " |
| " | " | दुर्गापाठकरणे नव भेदाः | | महाविद्या महा० | ९४ |
| " | " | महाविद्यानामकदुर्गापाठक्रमः १ | | आद्याद्विती० | ९८ |
| " | " | महातन्त्रनामकदुर्गापाठक्रमः २ | | आद्यन्तमध्यच० | ९९ |


Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

| पत्राङ्काः | प्र० | विषयनामानि. | ग्रन्थनामानि. | श्लोकप्रतीकानि. | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| १३९ | ३० | चण्डीनामकदुर्गापाठक्रमः ३ | | आदिमध्यान्तचारित्र० | ९९ |
| " | " | सप्तशतीनामकदुर्गा० ४ | | मध्यमाद्यन्तचारित्र० | १०० |
| " | " | मृतसंजीविनीनामकदुर्गा० ५ | | अन्त्यादिमध्यचा० | " |
| " | " | महाचण्डीनामकदुर्गा० ६ | | अन्त्यमध्यादिचा० | १०१ |
| " | " | रूपचण्डीनामकदुर्गा० ७ | | संपुटत्वेन संयो० | १०२ |
| " | " | योगिनीनामकदुर्गा० ८ | | योगिनीनां चतु० | १०३ |
| १४० | " | पराचण्डीनामकदुर्गा० ९ | | पराबीजसमायो० | १०४ |
| " | " | जयादिनवदुर्गानामानि | | जयां च विजयां० | १०५ |
| " | " | नवभेदज्ञाने फलमाह | | एवं ज्ञात्वा सप्तश० | १०७ |
| " | " | अथ कामनापरत्वे चण्डीपाठ-संख्या | ( वाराहीतन्त्रे ) | चण्डीपाठफलं दे० | १०८ |
| १४१ | " | सप्तशतीस्तवप्रशंसा | | नातः परतरं० | १२३ |
| " | " | अथ कामनापरत्वे स्थापित-कलशे निक्षेपपदार्थाः | | संशोध्य भूमिं० | १२५ |
| " | " | पदार्थनिक्षेपणे मन्त्रप्रयोजनम् | | नकुलीशं वामकर्ण० | १३० |
| " | " | मन्त्रोद्धारः | | चामुण्डायै स० | १३१ |
| " | " | हस्ते पुस्तकं धृत्वा पाठकरणे दोषः | | हस्ते संस्थापना० | १३३ |
| " | " | कामनापरत्वे होमपदार्थाः | | मारणं मोहने० | १३४ |
| १४२ | " | पाठे सृष्टिस्थितिसंहारक्रम-त्रयनिरूपणम् | ( हरगौरीतन्त्रे ) | श्रीकामः पुत्र० | १३८ |

| पत्राङ्काः | प्र० | विषयनामानि | ग्रन्थनामानि. | श्लोकप्रतीकानि. | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| १४२ | ३० | कामनापरत्वे पाठकरणे दक्षिणानिर्णयः | | पञ्च स्वर्णाः० | १४२ |
| " | " | वाचकस्य पूजाकरणम् | ( देवीपुराणे ) | वाचकं पूजयि० | १४३ |
| " | " | चण्डीपठनश्रवणफलम् | | वाजपेयस० | १४६ |
| १४३ | " | रात्रिसूक्तदेवीसूक्तसंपुट-निर्णयः | ( मारीचकल्पे ) | रात्रिसूक्तं जपेदादौ० | १५० |
| " | " | सूक्तेन सह चण्डीपुरश्चरण-सूक्तेन सह दशांशहोमश्च | | एवं देवि मया प्रो० | १५३ |
| " | " | संपुटितहोमे मन्त्रसंख्या-निर्णयः | | मन्त्रपुटं बीजपुटं० | १५५ |
| " | " | अथ कवचाहुतिनिषेधः | ( तन्त्रांतरे ) | चण्डीस्तवं प्रवक्ष्या० | १५९ |
| १४४ | " | कवचार्गलाकीलकदुर्गा-रहस्यत्रयाणां होममाह | ( स्कान्दे ) | चण्डीपाठेन होतव्यं० | १६३ |
| " | " | सप्तशतीपाठेऽङ्गषट्कस्य मुख्यतमपठने दोषं चाह | | अङ्गहीनो यथा देही० | १६५ |
| " | " | रात्रिसूक्तनवार्णमन्त्रयोः संपुटनिर्णयः | ( ग्रन्थकर्ता ) | नवार्णकमनुं० | १६९ |
| १४५ | " | दाक्षिणात्यसंप्रदायेन सं-पुटनवार्णमन्त्रनिर्णयः | ( नागोजीभट्ट-टीकायाम् ) | वेदादिर्वाग्भवं० | १७२ |
| " | | | | | |
| १४६ | " | डामरतन्त्रोक्तनवार्णसंपुटी-करणप्रयोगः | | ऐंबीजमादीन्दु | १७७ |


Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

| पत्राङ्काः | प्र० | विषयनामानि. | ग्रन्थनामानि. | श्लोकप्रतीकानि. | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| १४६ | ३० | षट्पल्लवानां कामनापरत्वेन निर्णयः | | मन्त्राणां पल्लवो० | १८२ |
| ,, | ,, | शारदातिलकोक्ताष्टाक्षर-दुर्गामन्त्रविधानम् | | ततो दुर्गामनुं वक्ष्ये० | १८९ |
| १४७ | ,, | अथ दुर्गे स्मृता, कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारां मन्त्रद्वयप्रयोगः | | दुर्गे स्मृता० | २०९ |
| १४८ | ,, | दुर्गानवार्णषट्प्रयोगविधानम् | ( प्रयोगतन्त्रे ) | वषड्वश्ये फडु० | २१३ |
| १४९ | ,, | तत्र पल्लवाः | | नमोऽन्तः शान्ति० | २३० |
| ,, | ,, | दिङ्नियमः | | | |
| १५० | ,, | साध्यनामस्थापननिर्णयः | | साध्यनामार्णमे० | २४० |
| १५१ | ,, | मन्त्रप्रकारः | ( तन्त्रसारे ) | अ थ दुर्गामनुं० | २६१ |
| १५२ | ,, | अथ सप्ताक्षरो दुर्गामन्त्रः | | ओ३म् ह्रीं दुर्गायै नमः | २७० |
| १५३ | ,, | अथ दुर्गायन्त्रोद्धारः | | दुर्गायन्त्रं प्रव० | २७३ |
| ,, | ,, | अथ तन्त्रान्तरोक्तदुर्गामन्त्रः | | ओ३म् रात्रीं प्रव० | २८० |
| ,, | ,, | अथ दुर्गानवार्णमहामन्त्रः | | ओ३म् अस्य श्री० | २८१ |
| १५४ | ,, | अथ संपुटितपाठहोमे आहुति-संख्या सप्तशत्येत्याह | ( प्रयोगसंग्रहे ) | कदाचित्संपुटैर्यु० | २८६ |
| १५४ | ३० | अथैकस्मिन्दिने संपूर्णपाठ-करणाशक्तौ निर्णयः | | पा १ठो २ यं० | २८७ |
| ,, | ,, | अथ सप्तशत्याः शापोद्धारोत्कीलने निर्णयः | | त्रयोदशाध्यायं० | २८८ |
| ,, | ,, | अथ स्तोत्रपठनविधिः तत्र सप्तशत्या मानसपाठनिषेधः | | प्रणवं पूर्वमु० | २८९ |
| ,, | ,, | अथ पुस्तकं विना पाठनि० | | पुस्तके वाचनं० | २९३ |
| १५५ | ,, | अथ नित्यचण्डीजपनिर्णयः | | नित्यचण्ड्यादि० | ३०७ |
| ,, | ,, | अथ प्रत्यध्याये जपहोमतर्पण-पूजनादि | | मंत्र पठित्वा | ३१० |
| १५६ | ,, | अथ प्रत्यध्याये महाहुतिमन्त्राः | | ओ३म् नमो देव्यै | ३१२ |
| १५७ | ,, | अथ पुनः शापोत्कीलनविषये निर्णयः | | आदौ प्राणं तथा० | ३२७ |
| ,, | ,, | अथ प्रकारान्तरेण रात्रिसूक्त-विचारः | | सामविधि० | ३३१ |
| १५८ | ,, | अथ वैदिकदुर्गाराधनम् | ( शान्तिसारे ) | जातवेदस० | ३३२ |
| ,, | ,, | अथ कामनापरत्वेन प्रयोगाः | ( नागोजीभट्टः ) | प्रतिश्लोकमा० | ३४४ |
| ८१ | ,, | अथ शीघ्रकार्यार्थं प्रत्यहं नव-चण्डीनिर्णयः | | | |


Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

| पत्राङ्काः | प्र० | विषयनामानि. | ग्रन्थनामानि. | श्लोकप्रतीकानि. | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| १६२ | ३० | अथ कामनापरत्वेन मंत्रसूचना | | बन्दिमोचने | ४०७ |
| ,, | ,, | अथ दुर्गानामप्रसिद्धिः | | तत्रैव च० | ४०८ |
| १६३ | ,, | अथ दुर्गाविधानम् | ( मार्कण्डेयपु० ) | तत्रानुक्त्वा० | ४११ |
| १६८ | ,, | इति दुर्गापटलम् | | ततः कृत्वा० | ४९२ |
| ,, | ३१ | अथ नित्यचण्डीविधानम् | | नित्यचण्ड्यादि० | ४ |
| ,, | ,, | अथास्याः प्रयोगः | | तत्र साधकः० | |
| १६९ | ३२ | अथ नवरात्रिनवचण्डी- दुर्गाविधानम | ( नागोजीभट्टीये ) | अथातः संप्र० | ५ |
| ,, | ,, | अथ प्रयोगः | | तत्र साधकः० | |
| १७० | ,, | अथ नवचण्डीविधिः | | शरद्दताविषे० | |
| १७१ | ,, | अथ कुमारीपूजनम् | | पूजादिनात्० | |
| १७२ | ,, | अथ नवचण्डीविधिना होम- प्रकारः | | मूलेन कुण्डं० | |
| १७७ | ,, | अथ नियमग्रहणे मन्त्रः | | नवरात्रं निरा० | १ |
| ,, | ,, | अथ नियममोचने मन्त्रः | | इदं व्रतं मया० | २ |
| ८५ | ,, | अथ घटस्थापने निर्णयः | | आश्विने शुक्लप० | ५ |
| १८४ | ,, | इति घटस्थापनविधिः | | इमां पूजां० | ९५ |
| ,, | ३३ | अथ शतचण्डीविधानम् | ( कोडतन्त्रे ) | यदा यदा सतां० | १ |
| १८७ | ,, | अथ गोविन्दकृतशतचण्डी- प्रयोगः | | तत्र अनावृष्ट्या० | ३७ |
| १९२ | ३४ | अथ सहस्रायुतलक्षचण्डी- विधानम् | ( मन्त्रमहोदधौ शान्तिसारे च ) | एतद्दशगुणं० | १८ |
| १९४ | ३५ | अथ दुर्गामखमहोत्सवस्तत्र नवार्णविधानम् | | अथातः संप्रव० | १ |
| ,, | ,, | दीक्षाकालनियमाः | | चैत्रे मासि जपं० | ४-११ |
| १९५ | ,, | अथ मन्त्रोद्धारः | | ओ३म् ऐं ह्रीं क्लीं चामुं० | |
| ,, | ,, | मखोत्सवपद्धतिक्रमारम्भः | | अथ ब्राह्मे मुहूर्त्ते० | |
| ,, | ,, | तत्र गुरुपादध्यानादिकम् | | प्रातः शिरसि० | १-२ |
| ,, | ,, | अथ मखे सत्पात्रब्राह्मणाः | | सदाचाराः० | ५ |
| ,, | ,, | अथ पूजासंभाराः | | अथानन्तरं० | ८-१३ |
| १९६ | ,, | अथ प्रधानसंकल्पः | | देशकालौ स्मृत्वा० | |
| ,, | ,, | अथ निष्कामसंकल्पः | | मया च ऋत्विग्० | |
| १९७ | ,, | अथ ब्राह्मणप्रार्थना | | पावनाः सर्वे० | १५ |
| ,, | ,, | गणेशमातृकापूजा | | गणेशं संपू० | २२ |
| १९८ | ,, | पुण्याहवाचननान्दीश्राद्धादीनि | | | |
| १९९ | ,, | अथ ब्राह्मणवरणम् | | आवाहयामि | ६४ |
| २०० | ,, | अथ कुमारीबटुकसुवासिनी- पूजाविधिः इति प्रथमो- ऽवसरः | | एकवर्षा तु० | ७७ |
| २०३ | ,, | अथ स्नानसंध्यातर्पणविधिः इति द्वितीयोऽवसरः | | ब्राह्मे मुहूर्त्ते० | १२३ |


Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

| पत्राङ्काः | प्र० | विषयनामानि. | ग्रन्थनामानि | श्लोकप्रतीकानि. | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| २०७ | ३५ | अथ मण्डपप्रतिष्ठा इति तृतीयोऽबसरः | | अथ मण्डप० | १३० |
| २०९ | ;; | अथ भूतशुद्धयादिबर्ण-मातृकान्यासविधिः इति चतुर्थोऽवसरः | | गुर्वादीनेवं० | १४० |
| २१४ | „ | अथैकादशन्यासविधिः इति पंचमोऽबसरः | | तत्रादौ० | |
| २२० | „ | अथ कामकलान्यासविधिः इति षष्ठोऽबसरः | | प्रणवादि० | |
| २३८ | „ | अथ षोडशस्तम्भप्रतिष्ठाविधिः | | ईशानस्तम्भे० | |
| २४२ | „ | अथ तोरणध्वजपताका-प्रतिष्ठापूजाबलिदानादिकम् इति सप्तमोऽबसरः | | सुदृढतोरणं पूर्वे० | |
| २४९ | „ | अथ होमविधिः इत्यष्टमोऽबसरः | | अथातः कुण्डं० | |
| २६४ | ३६ | अथ दुर्गादीपदानविधिः | ( नागोजीभट्टीये ) | षोडशांगुल० | |
| २६५ | ३७ | अथ दुर्मानित्यार्चनपद्धतिः | ( श्रीनिवासकृत-कल्पवल्ल्याम् ) | तत्र श्रीमत्० | |
| „ | „ | अथ दन्तधावनम् | | क्लीं कामदे० | |
| २६६ | „ | अथ वैदिकतान्त्रिकस्नान-सन्ध्यादिकम् | | तत्र नाभिमात्र० | |
| २६८ | ३७ | अथ द्वारपूजा | | ओ३म् विं विघ्नरा० | |
| २६९ | „ | अथासनविथिः | | स्वासनस्थानं० | |
| २७० | „ | अथ पापपुरुषशुद्धिः | | शरीरे पादादि० | |
| २७१ | „ | अथ प्राणप्रतिष्ठा | | शिरसि ब्रह्म० | |
| „ | „ | मातृकान्यासः | | ततः शिरसि० | |
| „ | „ | अथानेकन्यासाः | | शिरसि ब्रह्म० | |
| २७५ | „ | अथ पात्रस्थापनविधिः | | तत्र स्वर्णादि० | |
| २७७ | „ | अथ पीठपूजा | | ओ३म् ओंकारपी० | |
| २७८ | „ | अथ मूर्तिस्थापनविधिः | | कर्णिकामध्यस्य० | |
| २८२ | „ | इति दुर्गानित्यर्चनपद्धतिः | | | |
| „ | ३८ | अथ दुर्गानैमित्तिककाम्या-र्चनपद्धतिः | ( श्रीनिवासः ) | साधकैर्नैमित्तिकं० | |
| २८३ | ३९ | अथ दुर्गादमनपूजापद्धतिः | „ | तत्र चैत्रवैशाखे० | |
| २८४ | ४० | अथ दुर्गापवित्रारापेण-प्रयोगः | „ | तत्र मिथुन० | |
| २८६ | ४१ | अथ जयदुर्गामन्त्रविधानम् | ( शारदातिलके ) | तारो दुर्गे युगं | |
| २८७ | ४२ | अथ दुर्गाषोडशनामस्तोत्रम् | ( ब्रह्मवैवर्ते ) | सर्वाख्या० | ३३ |
| २८९ | ४३ | अथ दुर्गास्तोत्रम् | „ | श्रीकृष्णस्य० | ५५ |
| २९१ | ४४ | अथ दुर्गाकवचम् | „ | कवचं कथितं | ४३ |
| २९३ | ४५ | अथ दुर्गासहस्रनामस्तोत्रम् | ( कुलार्णवे ) | मम नाम० | २३७ |


Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

| पत्राङ्काः | प्र० | विषयनामानि. | ग्रन्थनामानि. | श्लोकप्रतीकानि. | श्लो० |
|---|---|---|---|---|---|
| ३०४ | ४६ | अथ दकारादिदुर्गासहस्रनामावलिः | | ओ३म् दुं दुर्गायै० | |
| ३२० | ४७ | अथ दुर्गाष्टोत्तरशतनामावलिः | | ओ३म् दुर्गायै० | |
| ३२२ | ४८ | अथ श्रीदुर्गानीराजनम् | | जय देवी० | |
| ३२७ | ४९ | अथ दुर्गाब्रह्मकवचम् | | यद्गुह्यं परमं० | ५६ |
| ३३१ | ५० | अथार्गलास्तोत्रम् | | ओ३म् अस्य श्री० | २७ |
| ३३२ | ५१ | अथ श्रीदुर्गाकीलकस्तोत्रम् | | ओ३म् नमश्चण्डि० | १५ |
| ३३३ | ५२ | अथ विविधन्यासाः | | ओ३म् अं नमः० | |
| ३४२ | ५३ | अथ शापोद्धारोत्कीलनम् | | ओ३म् ह्रीं क्लीं० | |
| ३४३ | ,, | अथ रात्रिसूक्तम् | | विश्वेश्वरी० | १५ |
| ३४४ | ,, | अथ वेदोक्तसूक्तम् | | ओ३म् रात्री व्यख्यदा० | |
| ३४५ | ५४ | अथ दुर्गासप्तशतीपाठः | (मार्कण्डेयपु.) | ओ३म् अस्य श्री० | |
| ,, | ,, | तत्र ध्यानम् | | | |
| ३५१ | ,, | अथ सप्तशतीपाठक्रमारम्भः | ,, | ओ३म् मार्कण्डेय उवाच | ७०० |
| ३९५ | ५५ | अथ देवीसूक्तम् | ,, | नमो देव्यै० | |
| ३९९ | ५६ | अथ रहस्यत्रयनिरूपणम् | ,, | ओ३म् अस्य श्री० | |
| ४०४ | ५७ | अथ लक्ष्मीसूक्तम् | ,, | सृष्टिस्थितिवि० | |
| ४०५ | ५८ | अथ विलोमदुर्गापाठः तत्र कवचादिन्यासध्यानान्तम् | | तत्रादौ० | |
| ४०६ | ,, | अथ संहारपाठक्रमः | ,, | एवं देव्या वरं० | ७०० |
| ४३६ | ५९ | अथ श्रीदुर्गादेवीगीता | (देवीभागवते) | धराधराधीश० | ५०८ |
| ४६१ | ६० | अथ ग्रन्थालङ्कारः | | श्रीमद्राजसने० | ४ |


इति श्रीदुर्गोपासनाकल्पद्रुमविषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ॥ वृषवाहनविघ्नेशौ हंसवाहं सरस्वतीम् ॥ स्वेष्टं श्रीबटुकं नत्वा पितरं व्यङ्कटं ततः ॥ १ ॥ श्रीगौतमकुलोत्पन्नो ज्योतिर्विद्व्यङ्कटात्मजः ॥ हरिकृष्णः करोत्यत्र दुर्गोपासनसंग्रहम् ॥ २ ॥ अस्यामुपासनायां वै साधारणमपेक्षितम् ॥ तत्सर्वं पूर्वमेवोक्तं विज्ञेयमिह चादरात् ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तानां पदार्थानामत्र वक्ष्याम्यनुक्रमम् ॥ लक्षणं गुरुशिष्याणां दीक्षाग्रहणनिर्णयः ॥ ४ ॥ पारायणविधानं चाभिषेकस्य विधानकम् ॥ बीजानां लक्षणं चैव पुरश्चर्याविधिस्तथा ॥ ५ ॥ स्थानस्य निर्णयश्चैवासनस्य च विनिर्णयः ॥ मुद्राणां लक्षणाध्यायो मालानिर्णय एव च ॥ ६ ॥ जपस्य लक्षणं चैव ह्यजपाजपलक्षणम् ॥ तान्त्रिकं स्नानसंध्यादिनित्यकर्मनिरूपणम् ॥ ७ ॥ भूशुद्धिर्द्वारपूजादिदेहरक्षानिरूपणम् ॥ भूतशुद्धिश्च प्राणानां प्रतिष्ठादिभिरेव च ॥ ८ ॥ न्यासानां निर्णयश्चैव मातृकान्यासनिर्णयः ॥ अनेकविधन्यासानां सप्रमाणं निरूपणम् ॥ ९ ॥ अर्चनं द्विविधं चैव वाममदक्षिणभेदतः ॥ वामेन वा दक्षिणेन पूजनं तु यथारुचि ॥ १० ॥ पात्राणां लक्षणं चैव पात्रस्थापननिर्णयः ॥ शुद्धिः पञ्चमकाराणां या वामे परिकीर्तिता ॥ ११ ॥ पात्राणां ग्रहणं चैव तिरस्करणिपूजनम् ॥ अन्तर्यागविधानं च वैश्वदेवनिरूपणम् ॥ १२ ॥ बहिर्यागविधानं च देवतापीठनिर्णयः ॥ सर्वयन्त्रप्रतिष्ठा च साऽपि भेदद्वयात्मिका ॥ १३ ॥ इष्टदेवस्थापनार्थं प्रथमं यन्त्रपूजनम् ॥ वश्याद्यनेककार्येषु यानि यन्त्राणि सन्ति हि ॥ १४ ॥ तेषां चैव प्रतिष्ठा च यन्त्रसिद्धिकरं यतः ॥ अनेकविधपूजाया भेदलक्षणवर्णनम् ॥ १५ ॥ शङ्खघण्टापूजनं च तन्माहात्म्यनिरूपणम् ॥ उपासनाप्रभेदेन भस्मरुद्राक्षधारणम् ॥ १६ ॥ गोपीचन्दनमाहात्म्यं तुलसीकाष्ठधारणम् ॥ निर्णयश्चैव संप्रोक्तो ह्यावाहनविसर्जने ॥ १७ ॥ आसनस्य च ध्यानस्य तथा पाद्यार्घ्यनिर्णयः ॥ विधिराचमनीयस्य मधुपर्कस्य निर्णयः ॥ १८ ॥ विधिः स्नानाभिषेकस्य जलाहरणनिर्णयः ॥ वस्त्रस्य चोपवीतस्य तथाऽलंकरणस्य च ॥ १९ ॥ गन्धाक्षतानां पुष्पाणां पत्राणां च विनिर्णयः ॥ धूपदीपविधानं च नैवेद्यस्य विनिर्णयः ॥ २० ॥

टिप्प०—यत्र यत्र शब्दोपरि अङ्काः सन्ति तेऽङ्कास्तदध्यायसूचकाः सन्तीति विज्ञेयम् ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

फलताम्बूलयोश्चैव दक्षिणायाश्च निर्णयः ॥ आरार्तिकमन्त्रपुष्पप्रदक्षिणविनिर्णयः ॥ २१ ॥ प्रणामस्य प्रार्थनायास्तीर्थस्य च विनिर्णयः ॥ अङ्गपूजाऽऽवरणपूजा बलिदानादिनिर्णयः ॥ २२ ॥ कुमारिकादिपूजायाः शक्तिपूजननिर्णयः ॥ स्तोत्रादिपठनं चैव तीर्थग्रहणनिर्णयः ॥ २३ ॥ होमस्य च विधानं वै कुण्डमण्डपलक्षणम् ॥ तर्पणस्य मार्जनस्य द्विजसंतर्पणस्य च ॥ २४ ॥ विधानं च पृथक्प्रोक्तं निर्णयश्च पृथक्पृथक् ॥ मन्त्रस्य शीघ्रसिद्ध्यर्थं विधिरुक्तो मया नृणाम् ॥ २५ ॥ सर्वसिद्धिकरः साक्षान्मन्त्रे संस्कारपूर्वकः ॥ मूलिकाग्रहणे मन्त्रा दिशां नियमं एव च ॥ २६ ॥ ऋतुमासर्क्षवाराणां तिथीनां नियमस्तथा ॥ अंगुलीनिर्णयश्चैव वन्दाग्रहणनिर्णयः ॥ २७ ॥ सिद्धार्यादिचक्रमार्गशोधनं साधकेष्टयोः शापोद्धारोत्कीलने च सूतकादिविनिर्णयः ॥ २८ ॥ नपुंसकादिभेदाश्च मन्त्राणां ये प्रकीर्तिताः ॥ पुरश्चरणतः पूर्वकृत्यं यच्चान्तिमे तथा ॥ २९ ॥ तत्सर्वमपि ग्रन्थेऽस्मिन् पूर्वमेव प्रकीर्तितम् ॥ आवरणदेवतानां च यजनार्थं विशेषतः ॥ ३० ॥ उद्धारश्चैव यन्त्राणां मन्त्रोद्धारस्तथैव च ॥ सर्वेषां चव देवानां गायत्रीमन्त्रसंग्रहः ॥ ३१ ॥ चक्रपूजाविधिश्चैव काम्यपूजाविधिस्तथा ॥ नैमित्तिकार्चनविधिर्विशेषेण निरूपितः ॥ ३२ ॥ गर्भाधानादिसंस्कारास्तान्त्रिकाश्च निरूपिताः ॥ दीक्षितस्योदासकस्य ह्यन्त्येष्टिकर्मनिर्णयः ॥ ३३ ॥ कौलमार्गप्रकाशश्च कौलखण्डनमेव च ॥ पूजापराधाः संप्रोक्ताः स्वस्तिकादिनिरूपणम् ॥ ३४ ॥ देवालयस्य मर्यादासेवनं च निरूपितम् ॥ निर्णयश्चाधिकारस्य शब्दसृष्टिनिरूपणम् ॥ ३५ ॥ षडाम्नायस्य चोत्पत्तिः पवित्रदमनार्चनम् ॥ मूर्तीनां लक्षणं चैव तपोमार्गनिदर्शनम् ॥ ३६ ॥ जातिस्मरस्य चोपायाः प्रशंसा च निरूपता ॥ दुष्कर्मप्रायश्चित्तानि नित्यशिक्षानिरूपणम् ॥ ३७ ॥ शरीरस्य स्वरूपं च कामनाभेदनिर्णयः ॥ पृथक्पृथक्तथाऽध्यायैः सर्वेषां निर्णयः स्फुटः ॥ ३८ ॥ परिभाषाभिधेऽध्याये केषांचिन्निर्णयस्तथा ॥ कृतस्तदनुरोधेन प्रयोगः सिद्धिदो नृणाम् ॥ ३९ ॥ अदृष्ट्वैव विधानं तु कृतश्चेन्नैव सेत्स्यति ॥ येषां सर्वोपासनेषु ह्युपयोगो भवेत्किल ॥ ४० ॥ तेषां सर्वपदार्थानां पूर्वमेव निरूपणम् ॥ कृतं तस्माद्विशेषेण दृष्ट्वोपासनमारभेत् ॥ ४१ ॥ सर्वे शाक्ता द्विजाः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

प्रोक्ता न शैवा न च वैष्णवाः ॥ आदिदेवीमुपासन्ते गायत्रीं वेदमातरम् ॥ ४२ ॥ तस्मादादौ प्रयत्नेन गायत्रीं प्रयुतं जवेत् ॥ पटलं पद्धतिर्वर्म तथा नामसहस्रकम् ॥ ४३ ॥ स्तोत्राणि चेति पञ्चाङ्गं देवतोपासने स्मृतम् ॥ कवचं देवतागत्रं पटलं देवताशिरः ॥ ४४ ॥ पद्धतिर्देवहस्तौ तु मुखं साहस्रकं स्मृतम् ॥ स्तोत्राणि देवतापादौ पञ्चाङ्गं पञ्चभिः स्मृतम् ॥ ४५ ॥ जपो होमस्तर्पणं च मार्जनं विप्रभोजनम् ॥ आराधनं पञ्चविधं देवतानां प्रकीर्तितम् ॥ ४६ ॥ पञ्चाङ्गैः सहितं त्वेतद्दशाङ्गं कथ्यते बुधैः ॥ हृदयं दीपदानं च स्तवराजादिकं तथा ॥ ४७ ॥ मालामन्त्रस्तथा कल्पः सर्वमेतद्ब्रवीम्यहम् ॥ उपासनाशराङ्गेषु या प्रोक्ता पद्धतिः पुरा ॥ ४८ ॥ इष्टदेवार्चनार्थं * तीयाङ्गं च तत्स्मृतम् ॥ तस्योपयोगिकं ह्येतत्सर्वं पूर्वं मयोदितम् ॥ ४९ ॥ सविस्तरं च तद्दृष्ट्वा कार्या पद्धतिरुत्तमा ॥ सनिर्णयां च सर्वत्र लिखामि यदि पद्धतिम् ॥ ५० ॥ तदा ग्रन्थो महानेव भवेत्तस्माच्च पूर्वतः ॥ लिखित्वा निर्णयं पश्चात्पटलादिकमत्र वै ॥ ५१ ॥ प्रवक्ष्यामि विशेषेण ग्रन्थानालोक्य यत्नतः ॥ तस्माद्यत्नपरो भूयात्स्वस्य सिद्ध न संशयः ॥ ५२ ॥ इति श्रीज्योतिर्वित्कुलावतंसव्यङ्कटरामात्मजहरिकृष्णविनिर्मिते बृहज्ज्योतिषार्णवेऽष्टमे धर्मस्कन्धे तृतीय उपासनास्तबके श्रीदुर्गोपासनाध्याय उपोद्घातप्रकरणं प्रथमम् ॥ १ ॥ अथ श्रीदुर्गामाहात्म्यम् ॥ उक्तं च पाद्मे सृष्टिखण्डे ॥ भीष्म उवाच ॥ चण्डिकाऽनुग्रहाद्दैत्या गताः शिष्टा रसातलम् ॥ तद्वदस्व महाप्राज्ञ चण्डिकापूजने फलम् ॥ १ ॥ यथा संपूज्यते देवी तुष्टा यच्छति यत्फलम् ॥ श्रोतुं कौतूहलं मेऽद्य तद्वदस्व सविस्तरम् ॥ २ ॥ पुलस्त्य उवाच ॥ शृणुष्व नृपशार्दूल चण्डिकापूजने फलम् ॥ तत्कृत्वा स्वर्गभुङ्मर्त्यः पश्चान्मोक्षं लभेद् ध्रुवम् ॥ ३ ॥ यत्पूजने फलं देव्या न तत्क्रतुशतैरपि ॥ लभ्यते नितरां तात तीर्थदानव्रतादिभिः ॥ ४ ॥ चण्डिकां पूजयेद्भक्त्या यो नरः प्रत्यहं नृप ॥ न क्षमस्तत्फलं वक्तुं साक्षाद्देवः पितामहः ॥ ५ ॥ अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ॥ चण्डिकापूजनस्यैव लक्षांशेनापि नो समः ॥ ६ ॥ स दाता स मुनिर्यष्टा स तपस्वी स तीर्थपः ॥ यः सदा पूजयेद्दुर्गां नानापुष्पानुलेपनैः ॥७॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

धूपैर्दीपैस्तथा भोज्यैः प्रणमेद्वाऽपि भाविनीम् ॥ स योगी स मुनिः श्रीमांस्तस्य मुक्तिः करे स्थिता ॥८॥ वर्षमेकं तु यो दुर्गां पूजयेद्विजितेन्द्रियः ॥ एकाहारो महाबाहो सोऽग्निष्टोमफलं लभेत् ॥ ९ ॥ पौर्णमास्यां नवम्यां च अष्टम्यां च नराधिप ॥ स्नापयित्वा शुभां दुर्गां वाजपेयफलं लभेत् ॥ १० ॥ शुक्लपक्षे नवम्यां तु अष्टम्यां परमेश्वरीम् ॥ त्रिकालं पूजयेद्यस्तु चतुर्दश्यां नराधिप ॥ ११ ॥ स गच्छति परं स्थानं यत्र देवी व्यवस्थिता ॥ क्रीडित्वा सुचिरं कालं राजा भवति भूतले ॥ १२ ॥ नवम्यां सोपवासस्तु यः पूजयति चण्डिकाम् ॥ दशानामश्वमेधानां फलं प्राप्नोति मानवः ॥ १३ ॥ जितेन्द्रियो ब्रह्मचारी शुचिर्भूत्वा तु यो नरः ॥ चण्डिकां पूजयेद्भक्त्या स याति परमां गतिम् ॥ १४ ॥ स्नानोपवासनियमैः पूजाजागरमार्जनैः ॥ सर्वकालेषु सर्वेषु चण्डिकां यः प्रपूजयेत् ॥ १५ ॥ विमानवरमारुह्य ध्वजमालाकुलं नृप ॥ ब्रह्मलोकं नरो गत्वा मोदते शाश्वतीः समाः ॥ १६ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन यथाविभवविस्तरैः ॥ पूजयेत्सततं दुर्गां महापुण्यफलेच्छया ॥ १७ ॥ अयने विषुवे चैव षडशीतिमुखे नृप ॥ मासैश्चतुर्भिर्यत्पुण्यं विधिना पूज्य चण्डिकाम् ॥ १८ ॥ तत्फलं लभते वीर नवम्यां कार्त्तिकस्य तु ॥ मासि चाश्वयुजे वीर शुक्लपक्षे त्रिशूलिनीम् ॥ १९ ॥ नवम्यां पूजयेद्यस्तु तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ अश्वमेधसहस्रस्य राजसूयशतस्य च ॥ २० ॥ यत्फलं तल्लभेद्वीर दिवि देवगणैर्वृतः ॥ मासि मासि नरो भक्त्या पूजयेद्यस्तु चण्डिकाम् ॥ २१ ॥ लभेत्षाण्मासिकं पुण्यं नवम्यां तु न संशयः ॥ मेरुपर्वततुल्योऽपि राशिः पापस्य कर्मणः ॥ २२ ॥ चण्डिकावैद्यमासाद्य नश्यते दुष्टरोगवत् ॥ दुर्गार्चने रतो नित्यं महापातकसंभवैः ॥ २३ ॥ दोषैर्न लिप्यते वीर पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥ छित्त्वा भित्त्वा च भूतानि हत्वा सर्वमिदं जगत् ॥ २४ ॥ प्रणम्य शिरसा देवीं न स पापैर्विलिप्यते ॥ सर्वावस्थां गतो वाऽपि युक्तो वा सर्वपातकैः ॥ २५ ॥ दुर्गां दृष्ट्वा नरः सोऽपि प्रयाति परमं पदम् ॥ स्वपंस्तिष्ठन् व्रजन्मार्गे प्रलपन्भोजने रतः ॥ २६ ॥ स्मरते सततं दुर्गां स च मुच्येत बन्धनात् ॥ न तद्देशे तु दुर्भिक्षं न च दुःखं प्रवर्तते ॥ २७ ॥ न कश्चिन्म्रियते राजन्पूज्यते यत्र चण्डिका ॥ यो दुर्गां पूजयेन्नित्यं श्वपचो वा जिते

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

द्रिन्यः ॥२८॥ भावेन च समायुक्तः सोऽपि याति परां गतिम् ॥ पूजयित्वा तु तां भक्त्या श्रद्धया सर्वमंगलाम् ॥२९॥ प्रयाति परमं स्थानं यत्र सा सर्वमंगला ॥ व्रताभिषेकं यः कुर्यादहोरात्रं नराधिप ॥ ३० ॥ सूक्ष्मधारेण ताम्रेण भगवत्या विचक्षण ॥ मासि चाश्वयुजे वीर सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३१ ॥ कार्त्तिके पौर्णमास्यां यः सोपवासोऽर्चयेदुमाम् ॥ सोऽग्निष्टोमफलं विन्देत्सूर्यलोकं च गच्छति ॥ ३२ ॥ आषाढे पौर्णमास्यां तु योऽर्चयेदम्बिकां नरः ॥ सोपवासो महाभागः स याति परमां गतिम् ॥ ३३ ॥ पौर्णमास्यां तु यो माघे पूजयेद्विधिवच्छिवाम् ॥ सोऽश्वमेधमवाप्नोति विष्णुलोके महीयते ॥ ३४ ॥ अयने दक्षिणे यस्तु पूजयेदम्बिकां नृप ॥ सकृद्गन्धोदकैश्चैव गन्धर्वसदने वसेत् ॥ ३५ ॥ पञ्चगव्येन उक्षित्वा पञ्चचूडाचलं व्रजेत् ॥ आपः क्षीरं कुशाग्राणि तन्दुला हविरक्षताः ॥ ३६ ॥ सहसिद्धार्थका दूर्वा कुंकुमं रोचना मधु ॥ अर्घोऽयं कुरुशार्दूल द्वादशांग उदाहृतः ॥ ३७ ॥ अनेन पूजयेद्यस्तु स याति परमं पदम् ॥ दारवेणार्घपात्रेण दत्त्वाऽर्घं विधिवन्नृप ॥ ३८ ॥ देव्यै तदा महाराज अग्निष्टोमफलं लभेत् ॥ अब्दमेकशतं दिव्यं शक्रलोके महीयते ॥ ३९ ॥ गन्धानुलेपनं कृत्वा ज्योतिष्टोमफलं लभेत् ॥ चन्दनेन विलिप्यार्यामग्निष्टोमफलं लभेत् ॥ ४० ॥ विलिप्य कृष्णागुरुणा वाजपेयफलं लभेत् ॥ कुंकुमेन विलिप्यार्यां गोसहस्रफलं लभेत् ॥ ॥ ४१ ॥ चन्दनागुरुकर्पूरैः सूक्ष्मपत्रैः सुकुंकुमैः ॥ दुर्गामालिप्य विधिवत्कल्पकोटिं वसेद्दिवि ॥ ४२ ॥ अग्निहोत्रपरे विप्रे वेदवेदांगपारगे ॥ सुवर्णानां सुवर्णानां शते दत्ते तु यत्फलम् ॥४३॥ तत्फलं लभते राजन् पूजयित्वा तु चण्डिकाम् ॥ मालया बिल्वपत्राणां नवम्यां च पुरेण च ॥४४॥ मालाद्वयेन संपूज्य दुर्गांदेवीं नराधिप ॥ बिल्ववृक्षस्य पुष्पैश्च राजसूयफलं लभेव ॥४५॥ करवीरस्रजोभिश्च पूजयेद्यस्तु चण्डिकाम् ॥ वाजपेयस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः ॥ ४६ ॥ द्रोणपुष्पस्रजोभिस्तु पूजयेद्यस्तु चण्डिकाम् ॥ राजसूयफलं प्राप्य स्वर्गलोके महीयते ॥ ४७ ॥ पूजयित्वा तु राजेन्द्र श्रद्धया विधिपूर्वकम् ॥ वन्यपुष्पस्रजोभिस्तु पितृलोके महीयते ॥ ४८ ॥ शमीपुष्पस्रजोभिस्तु आर्यां संपूज्य भक्तितः ॥ गोसहस्रफलं लब्ध्वा विष्णुलोके महीयते ॥ ४९ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सर्वेषामेव पुष्पाणां प्रवरं नीलमुत्पलम् ॥ नीलोत्पलसहस्रेण यस्तु मालां प्रयच्छति ॥ ५० ॥ दुर्गायै विधिवद्वीर तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ वर्षकोटिसहस्राणि वर्षकोटिशतानि च ॥ ५१ ॥ दिव्यमूर्तिधरो भूत्वा रुद्रलोके महीयते ॥ सर्वासां पुष्पजातीनां यत्फलं परिकीर्तितम् ॥ ५२ ॥ तस्माच्छतगुणं प्राप्य दुर्गालोके महीयते ॥ नीलोत्पलस्रजोभिस्तु पूजयेद्यस्तु चण्डिकाम् ॥ ५३ ॥ वाजपेयफलं प्राप्य रुद्रलोके महीयते ॥ अलाभे पुष्पजातीनां पत्राण्यपि निवेदयेत् ॥ ५४ ॥ पत्राणामप्यलाभे तु ओषधीस्तु निवेदयेत् ॥ ओषधीनामलाभे तु भक्त्या भगवती जिता ॥ ५५ ॥ प्रत्येकमुक्तपुष्पेषु कुशेष्वपि फलं नृप ॥ आंगिरसेषु तेष्वेव द्विगुणं काञ्चनस्य तु ॥ ५६ ॥ मल्लिकामुत्पलं पत्रं शमीपुन्नागचम्पकम् ॥ कर्णिकारमशोकं च द्रोणपुष्पं विशेषतः ॥५७॥ चन्दनं च जपापुष्पं नागकेशरमेव च ॥ यः प्रयच्छति पुण्यात्मा पुष्पाण्येतानि भावतः ॥ ५८ ॥ चण्डिकायै नरश्रेष्ठ स च प्रोक्तफलं लभेत् ॥ संप्राप्य कालाद्राजत्वं चण्डिकानुचरो भवेत् ॥ ५९ ॥ अथ पुष्पविशेषाणां फलं वक्ष्येऽम्बिकार्चने ॥ ऋतुकालोद्भवैः पुष्पै मंल्लिकाजातिकुङ्कुमैः ॥ ६० ॥ सितरक्तैस्तथा पुष्पैर्नीलपुष्पैश्च पाण्डुरैः ॥किंशुकैः केशरैः कङ्कैः कङ्कतैश्च सचम्पकैः ॥६१॥ बकुलैश्चैव मन्दारैः कुन्दपुष्पैः कुरण्टकैः ॥ करवीरार्कपुष्पैश्च तुर्विषैश्चापराजितैः ॥ ६२ ॥ धत्तूरकातिमुक्तैश्च ब्रह्मकागस्तिसंभवैः ॥ दमनैः सिन्धुवारैश्च सुरभीमार्कवैस्तथा ॥ ६३ ॥ लताभिर्ब्रह्मवृक्षस्य दूर्वाङ्कुरैश्च कोमलैः ॥ मञ्जरीभिः कुशानां च बिल्वपत्रैः सुशोभनैः ॥६४॥ भक्त्या युक्तास्तथाऽनुक्तश्चण्डिकायाश्च मन्दिरे ॥ स दिव्ययानगो भूत्वा रमते वैष्णवे पुरे ॥ ६५ ॥ पद्माकृतिं च यः कुर्यान्मण्डलं चण्डिकागृहे ॥ स ब्रह्मणः पुरं गत्वा मोदते ब्रह्मणा सह ॥६६॥ शङ्खवर्णं तु यः कुर्यान्मण्डलं विधिवन्नृप ॥ स दिव्यं यानमारुह्य चन्द्रलोकमवाप्नुयात् ॥६७ ॥ नानावर्णेन चूर्णेन कृत्वा मन्डलमुत्तमम् ॥ गत्वा माहेश्वरीलोकं मोदते शाश्वतीः समाः ॥ ६८ ॥ वज्राकृतिं वज्रचूर्णैर्यः कुर्यान्मन्डलं नृप ॥ ऐरावतं समारूढ इन्द्राणीलोकमाप्नुयात् ॥ ६९ ॥ यः करोति नरो भक्त्या दुर्गायाः पुरतो महत् ॥ श्वेतकृष्णैः सितैर्वर्णैः श्रीवत्साङ्कितमुत्तमम् ॥ ७० ॥ मण्डलं स नरो वीर विमानवरमाश्रितः ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सेव्यमानोऽप्सरोव्रातव्रजेच्छ्रीलोकमुत्तमम् ॥ ७१ ॥ यः करोति नरो भक्त्या मण्डलं चाम्बिकान्वितम् ॥ रमते किन्नरैः सार्धं यावदाभूतसंप्लवम् ॥ ७२ ॥ घृतपिष्टप्रदीपाद्यैर्घृतमिश्रितपल्लवैः ॥ ओषधीभिश्च मेध्याभिः सर्वबीजैर्यवादिभिः ॥ ७३ ॥ नवम्यां सर्वकालेषु यात्राकाले विशेषतः ॥ यः कुर्याच्छ्रद्धया वीर दिव्यं नीराजनं नरः ॥ ७४ ॥ शङ्खभेर्यादिनिर्घोषैर्महद्भिर्देववादितैः ॥ जयशब्दैः पुष्कलैश्च शिवलोकं स गच्छति ॥ ७५ ॥ लवणेनाक्षतैः कृत्वा देव्या नीराजनं कृतम् ॥ तावत्कल्पसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥ ७६ ॥ सुवर्णरौप्यवर्णैश्च कृत्वा नीराजनं नरः ॥ भगवत्यै महाराज ब्रह्मलोके महीयते ॥ ७७ ॥ त्रिकालं यो नरः कुर्याद्दुर्गायाः पुरतो नृप ॥ नृत्यं गीतं च वादित्रं तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ७८ ॥ यावन्त्यब्दानि कुरुते गीतं नृत्यं च वादितम् ॥ तावत्कल्पानि राजेन्द्र देवीलोके सुखं वसेत् ॥ ७९ ॥ एकाहमपि यो भक्त्या पञ्चगव्येन चण्डिकाम् ॥ स्नापयेन्नृपशार्दूल स गच्छेत्सुरभीपुरम् ॥ ८० ॥ कपिलापञ्चगव्येन घृतक्षीरयुतेन च ॥ स्नानं शतगुणं प्रोक्तमितरेभ्यो नराधिप ॥ ८१ ॥ वर्षैश्च षट्सहस्राणां पापानां समुपार्जनम् ॥ तत्सर्वं विलयं याति तोयेन लवणं यथा ॥ ८२ ॥ घृताभ्यंगेन देव्यास्तु कृतेन विधिवन्नृप ॥ तस्मादभ्यञ्जयेद्भक्त्या नित्यं भगवतीं नृप ॥ ८३ ॥ नवम्यां शुक्लपक्षे तु विधिवच्चण्डिकां नृप ॥ घृतेन स्नापयेद्यस्तु तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ८४ ॥ दश पूर्वान् दश परानात्मानं च विशेषतः ॥ भवार्णवात्समुद्धृत्य दुर्गालोके महीयते ॥ ८५ ॥ क्षीराद्यैः स्नापयेद्यस्तु श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ॥ चण्डिकां स नरो याति गोलोकं तमसः परम् ॥ ८६ ॥ चण्डिकां स्नापयेद्यस्तु नरश्चेक्षुरसेन च ॥ सौवर्णकेन यानेन विष्णुना सह मोदते ॥ ८७ ॥ यो नरः स्नापयेद्दुर्गां श्रद्धया हेमवारिणा ॥ सौवर्णयानमारूढो मोदते पुरुषैर्दिवि ॥ ८८ ॥ रक्तोदकेन विधिवत्स्नापयेच्छ्रद्धयाऽन्वितः ॥ चण्डिकां स नरः पूर्वैर्विष्णुलोके महीयते ॥ ८९ ॥ स्नापयेद्य उमां देवीं नरः कर्पूरवारिणा ॥ सौवर्णे यानमारूढो गच्छते यत्र चण्डिका ॥ ९० ॥ चण्डिकां स्नापयित्वा तु श्रद्धयाऽगुरुवारिणा ॥ इन्द्रलोकं समासाद्य क्रीडते सह किन्नरैः ॥ ९१ ॥ पितॄनुद्दिश्य यो दुर्गां मधुना पायसेन च ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

स्नापयेद्विधिवद्भक्त्या तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ९२ ॥ तृप्ता भवन्ति पितरस्तस्य वर्षशतद्वयम् ॥ य एवं स्नापयेन्नित्यं स्नान द्रव्यैर्नराधिप ॥ ९३ ॥ युगपद्विधिवद्वीर तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ अश्वमेधसहस्रस्य राजसूयशतस्य च ॥ ९४ ॥ अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य स फल विन्दते नरः ॥ स्नापयित्वा नरस्ताम्रैर्वाजपेयफलं लभेत् ॥ ९५ ॥ सौवर्णैः स्नापयित्वा च चण्डिकां कलशैर्नृप ॥ अश्वमेधफलं प्राप्य ब्रह्मलोके महीयते ॥ ९६ ॥ घृतस्नातां तथा दुर्गां समुद्वर्तयते तु यः ॥ यवगोधूमजैश्चूर्णैर्घर्षयेच्छर्करेण च ॥ ९७ ॥ घृतेन पयसा दध्ना स्नापयेच्चण्डिकां ततः ॥ बिल्वपत्रैः सुगन्धाढ्यैर्वर्षयेद्यत्नतः पुमान् ॥ ९८ ॥ गोसहस्रशते दत्ते यत्फलं पुष्करे स्मृतम् ॥ तत्फलं लभते वीर देव्या उद्वर्तने कृते ॥ ९९ ॥ दत्त्वाऽर्धं विधिवद्भक्त्या दुर्गायै पद्मवारिणा संपूज्यमानो गन्धर्वै रमते दिवि देववत् ॥ १०० ॥ दत्त्वोपवासं विधिवत्स भोगी पुत्रवान् भवेत् ॥ उत्तरे अयने यस्तु सोपवासोऽर्चतेऽम्बिकाम् ॥ १०१ ॥ बहुपुत्रो बहुधनः स नरः कीर्तिमान्भवेत् ॥ इत्येते कथिता वीर पूजा काला मनीषिभिः ॥ १०२ ॥ कृत्वोपवासं विधिवद्विषुवे योऽर्चयेच्छिवाम् ॥ शक्तिमान् बहुपुत्रश्च स भवेद्बलवान्नरः ॥ १०३ ॥ योऽर्चयेद्विधिवद्दुर्गां ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥ कृत्वोपवासं विधिवत्स भवेत्पुत्रवान्नरः ॥ १०४ ॥ शान्तिकामो नरो यस्तु राहुग्रस्ते दिवाकरे ॥ सोपवासोऽर्चयेद्देवीं स गच्छेत्परमं पदम् ॥ १०५ ॥ इत्येते कथिता वीर पूजाकाला मनीषिभिः ॥ दुर्गायाः कुरुशार्दूल येषु ब्रह्मदिवं व्रजेत् ॥ १०६ ॥ दुर्गाया दर्शनं पुण्यं दर्शनादभिवन्दनम् ॥ वंदनात्स्पर्शनं श्रेष्ठं स्पर्शनादपि पूजनम् ॥ १०७ ॥ पूजनाल्लेपनं श्रेष्ठं लेपनात्तर्पणं स्मृतम् ॥ तर्पणान्मांसदानं तु महिषाजनिपातनम् ॥ १०८ ॥ अहन्यहनि यो दुर्गां पूजयेद्रुधिरादिभिः ॥ कुलानां शतमुद्धृत्य ब्रह्मलोके महीयते ॥ १०९ ॥ वरं प्राणपरित्यागः शिरसः कर्तनं वरम् ॥ चापूज्येहभुञ्जीत चण्डिकां चण्डरूपिणीम् ॥ ११० ॥ पुलस्त्य उवाच ॥ देवैः पुरा जगत्कर्ता पृष्टो देवः पितामहः ॥ ब्रूहि दुर्गार्चनं देव येन तुष्यति चण्डिका ॥ १११ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शंभुः पूजयते देवीं मन्त्रशक्तिमयीं शुभाम् ॥ अक्षमालां करे न्यस्य तेनासौ विभवोद्भवः ॥ ११२ ॥ दुर्गां रत्नमयीं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

देवाः पूजयामि सदा ह्यहम् ॥ तेन प्राप्तं मया चैव ब्रह्मत्वं च सुदुर्लभम् ॥ ११३ ॥ इन्द्रनीलमयीं दवीं विष्णुः पूजयते सदा ॥ विष्णुत्वं प्राप्तवांस्तेन अद्भुतैकं सनातनम् ॥ ११४ ॥ देवीं हेममयीं दुर्गां धनदोऽर्चयते सदा ॥ तेनासौ धनदो देवो धनेशत्वमवाप्तवान् ॥ ११५ ॥ विश्वेदेवा महात्मानो रौप्यां देवीं मनोरमाम् ॥ यजन्ति विधिवत्तेन विश्वेदेवत्वमागताः ॥ ११६ ॥ वायुः पूजयते भक्त्या देवीं पित्तलसंभवाम् ॥ वायुत्वं तेन संप्राप्तमनौपम्यगुणावहम् ॥ ११७ ॥ वसवः कांस्यकां देवीं पूजयन्ति विधानतः ॥ प्राप्तास्ततो महात्मानो वसुत्वं तन्महोदयम् ॥ ११८ ॥ अश्विनौ पार्थिवीं देवीं पूजयन्तौ विधानतः ॥ तेन तावश्विनौ देवौ स्ववैद्यौ संबभूवतुः ॥ ११९ ॥ स्फाटिकीं शोभनां देवीं वरुणः पूजयेत्सदा ॥ वरुणत्वं च संप्राप्तं तेन चद्धर्या समन्वितम् ॥ १२० ॥ देवीं रत्नमयीं पुण्यामग्निर्यजति भावितः ॥ अग्नित्वं प्राप्तवांस्तेन तेजोरूपसमन्वितम् ॥ १२१ ॥ ताम्रां देवीं सदा कालं भक्त्या देवो दिवाकरः ॥ अर्चते तेन संप्राप्तं सूर्यत्वं शुभमुत्तमम् ॥ १२२ ॥ मुक्ताफलमयीं देवीं सोमः पूजयते सदा ॥ तेन सोमेन संप्राप्तं सोमत्वं सततोज्ज्वलम् ॥ १२३ ॥ प्रवालकमयीं देवीं पूजयन्ति विधानतः ॥ तेन ते ग्रहतां प्राप्ता ग्रहाः सूर्यादयोऽनिशम् ॥ १२४ ॥ वारिजां शोभनां देवीं पूजयन्त्यसुरोत्तमाः ॥ वारिजाश्च महात्मानस्तेन तेऽमितविक्रमाः ॥ १२५ ॥ त्रपुसीसमयीं देवीं यजन्ते पितरः सदा ॥ मातृत्वं प्राप्य ताः सर्वाः संपूज्याश्च जगत्रये ॥ १२६ ॥ तथा लोहमयीं देवीं पिशाचाः पूजयन्ति ताम् ॥ तेन सिद्धिबलोपेताः प्रयान्ति परमं पदम् ॥ १२७ ॥ त्रैलोहिणीं सदा देवीं यजन्ते गुह्यकादयः ॥ तेन भोगबलोपेताः प्रयान्तीश्वरमन्दिरम् ॥ १२८ ॥ वज्रलोहमयीं देवीं यजन्ते भूतयोनयः ॥ तेन मुक्ताः सुरत्वं च लभन्ते सततं दिवि ॥१२९॥ देवास्तथा यूयमपि यदीच्छथ परां गतिम् ॥ शिवां मणिमयीं पूज्य लप्स्यध्वे मानसेप्सितम् ॥ १३० ॥ यश्च देव्या गृहं नित्यं संमार्जयति भक्तितः ॥ स भवेद्बलवान्देवाः सर्वसंपत्तिसंयुतः ॥ १३१ ॥ देव्या गृहं तु यो देवा गोमयेनोपलेपयेत् ॥ स्त्री पुमान्वा यथावच्च षण्मासाभ्यन्तरे सुराः ॥ १३२ ॥ स लभेदीप्सितान्कामान्देवीलोक च गच्छति ॥ पुलस्त्य उवाच ॥ स्नानकाले



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

महाराज नानावादित्रमङ्गलैः ॥ १३३ ॥ जयशब्दैश्च यो दुर्गां स्नाप्यमानां जलादिभिः ॥ संपूजयति भक्त्या च गन्धपुष्पादिभि स्तथा ॥ १३४ ॥ स क्रीडते दिवं गत्वा गन्धर्वाप्सरसां गणैः ॥ चक्रैर्वा शतशाखैस्तु क्षीरवृक्षसमुद्भवैः ॥ १३५ ॥ हेमजैश्चापि कलशैर्जलक्षीरघृतान्वितैः ॥ अनेकवर्णसंयुक्तैरक्षतैर्नीरतन्दुलैः ॥ १३६ ॥ यः करोति नरो भक्त्या चक्राकारं तु मण्डलम् ॥ चण्डिकायाः पुरो राजञ्जलजैः स्थलसंभवैः ॥ १३७ ॥ पत्रैः पुष्पैर्यथालाभं सर्वर्तुषूद्भवैः शुभैः ॥ वन्यानां सर्वपत्रैश्च पुष्पैश्चैव प्रपूजयेत् ॥ १३८ ॥ शुभं वाऽप्यशुभं वाऽपि फलं पुष्पं निवेदयेत् ॥ भक्त्या युक्तो नरः सर्वं स च देवत्व माप्नुयात ॥ १३९ ॥ नानापुष्पस्रजोभिश्च मण्डपं चण्डिकोपरि ॥ यः कुर्याद्विधिवद्भक्त्या विष्णुलोके महीयते ॥ ॥ १४० ॥ कुर्यात्पुष्पगृहं भक्त्या विधिवच्चण्डिकोपरि ॥ नवम्यां पूर्वकाले वा विचित्रकुसुमोज्ज्वलम् ॥ १४१ ॥ विमानवरमारुह्य पुष्पदामोपशोभितम् ॥ अक्षयं मोदते कालं चण्डिकालयमाश्रितः ॥ १४२ ॥ पूजाविभक्तविन्यासरचनादिषु सर्वतः ॥ फलमेवं समासेन ज्ञेय वित्तानुसारतः ॥ १४३ ॥ कृष्णागुरु सकर्पूरं सिन्दूरं चन्दनं तथा ॥ भगवत्यै नरो भूयः पदं दत्त्वा नराधिप ॥ १४४ ॥ इह कामानवाप्याथ शिवलोके महीयते ॥ गुग्गुलुं सघृतं दत्त्वा दुर्गायै च नरर्षभ ॥ १४५ ॥ वर्षार्धं विधिवद्भक्त्या गोसहस्रफलं लभेत् ॥ अगुरुधूपमावेद्य सर्वयज्ञफलं लभेत् ॥ १४६ ॥ सितागुरुं नरो दत्त्वा गोसहस्रफलं लभेत् ॥ सर्वेषामेव धूपानां दुर्गाया गुग्गुलुः प्रियः ॥ १४७ ॥ घतयुक्तो विशेषेण सततं प्रीतिवर्द्धनः ॥ द्वे सहस्रे पलानां तु तथा पलशत द्वयम् ॥ १४८ ॥ दत्त्वा शुक्लनवम्यां तु चण्डिकावल्लभो भवेत् ॥ महिषाक्षं घृताक्तं तु दग्ध्वा बिल्वमथापि वा ॥ १४९ ॥ वाजपेय फलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ॥ सकृच्चागुरुधूपेन प्रीतिदा सर्वमङ्गला ॥ १५० ॥ शोधयेत्पापकलिलं काञ्चनं दहनो यथा ॥ वस्त्राणि सुविचित्राणि सूक्ष्माणि सुमृदूनि च ॥ १५१ ॥ यः प्रयच्छति दुर्गायै स गच्छति शिवालयम् ॥ सुवर्णघटितं वस्त्रं यो दुर्गायै प्रयच्छति ॥ १५२ ॥ गोसहस्रफलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ॥ एवं वित्तानुसारेण फलं ज्ञेयं समासतः ॥ १५३ ॥ संध्याकाले नवम्यां

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

यो बलिं कुर्यान्नराधिप ॥ चण्डिकायतने भक्त्या महिषाजनिपातनैः ॥ १५४ ॥ स गच्छति परं स्थानं यत्र सा चण्डिका स्थिता ॥ गुडखण्डाज्यसंमिश्रमन्नं दत्त्वा नराधिप ॥ १५५ ॥ वैष्णवः सुकुलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ॥ गुडखण्डघृतानां च तथा शर्करया नृप ॥ १५६ ॥ दत्ते चोद्वर्तने देव्यै स याति ब्रह्मणः पदम् ॥ शाल्योदनं रसानां च प्रपानं विरजं तथा ॥ १५७ ॥ यः प्रयच्छति दुर्गायै स च गच्छेच्छिवालयम् ॥ दुर्गामुपिश्य पानीयं केतकीगन्धवासितम् ॥ १५८ ॥ यः प्रयच्छति राजेन्द्र स गणाधिपतिर्भवेत् ॥ आम्रं च नारिकेलं च खर्जूरं बीजपूरकम् ॥ १५९ ॥ यः प्रयच्छति दुर्गाय स गच्छेत्परमं पदम् ॥ घृतदीप प्रदानेन योऽर्चयेच्चण्डिकां नरः ॥ १६० ॥ सोऽश्वमेधफलं प्राप्य चण्डिकानुचरो भवेत् ॥ तैलदीपं च यो दद्यात्पूजयित्वा तु चण्डि काम् ॥ १६१ ॥ नागलोकं समासाद्य क्रीडते सह किन्नरैः ॥ आत्मदेहवसादीपं प्रज्वाल्य चण्डिकाग्रतः ॥ १६२ ॥ निवेदयेन्नरो भक्त्या मोदते सोऽम्बिकालये ॥ यः कुर्यात्कार्त्तिके मासि शोभनां दीपमालिकाम् ॥ १६३ ॥ चण्डिकायतने भक्त्या स सूर्यालय माव्रजेत् ॥ घृतेन कुरुशार्दूल अमायां च स्वशक्तितः ॥ १६४ ॥ विशेषतो नवम्यां तु भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥ तावद्वर्षसहस्राणि ब्रह्मलोके महीयते ॥ १६५ ॥ अश्मसारमयं कृत्वा नानादीपसमन्वितम् ॥ दीपं दत्तं समुद्बोध्य दुर्गायाः पुरतो नृप ॥ १६६ ॥ नरः कल्पायुतं साग्रं दुर्गालोके महीयते ॥ चन्द्रांशुनिर्मलं छत्रं मणिमाणिक्यभूषितम् ॥ १६७ ॥ सर्वतः शोभनं कृत्वा नाना पुष्पानुलेपनैः ॥ दुर्गायाः पुरतो वीर स याति परमां गतिम् ॥ १६८ ॥ चामरे श्रद्धया देव्यै दत्त्वा च परयाऽन्वितः ॥ राजसूयफलं प्राप्य हसलोके महीयये ॥ १६९ ॥ संप्रसारितदेहो यो दण्डवत्पतितो भुवि ॥ चण्डिकापुरतो वीर स याति परमां गतिम् ॥ १७० ॥ तत्फलं लभते वीर प्रणम्य शिरसा महीम् ॥ दुर्गापूजोपकरणं स्वल्पं वा यदि वा बहु ॥ १७१ ॥ कृत्वा वित्तानुसारेण रुद्रलोके मही यते ॥ चण्डिकां पूजयित्वा तु प्रहृष्टेनान्तरात्मना ॥ १७२ ॥ कृताञ्जलिपुटो भूत्वा इदं स्तोत्रमुदीरयेत् ॥ दुर्गां शिवां शान्ति करीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम् ॥ १७३ ॥ सर्वलोकप्रणेत्रीं च प्रणमामि सदाऽम्बिकाम् ॥ मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

कलाम् ॥ १७४ ॥ विश्वेश्वरीं विश्ववन्द्यां चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥ सर्वदेवमयीं देवीं सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ १७५ ॥ ब्रह्मेशविष्णुनमितां प्रणमामि सदा उमाम् ॥ विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां दिव्यस्थाननिवासिनीम् ॥ १७६ ॥ योगिनीं योगविद्यां च चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥ ईशानमातरं देवीमीश्वरीमीश्वरप्रियाम् ॥ १७७ ॥ प्रणतोऽस्मि सदा दुर्गां संसारार्णवतारिणीम् ॥ इदं यः पठते स्तोत्रं शृणुयाद्वाऽपि भक्तितः ॥ १७८ ॥ स मुक्तः सर्वपापेभ्यो दुर्गालोके महीयते ॥ १७९ ॥ देवीभागवते ॥ अधुना शृणु विप्रेन्द्र दुर्गादेव्या महात्म्यकम् ॥ यस्याः स्मरणमात्रेण पलायन्ते महाऽऽपदः ॥ १८० ॥ एनां न भजते यो हि तादृक् नास्त्येव कुत्र चित् ॥ सर्वोपास्या सर्वमाता शैवी शक्तिर्महाद्भुता ॥ १८१ ॥ सर्वबुद्ध्यधिदेवीयमन्तर्यामिस्वरूपिणी ॥ दुर्गसंकटहन्त्रीति दुर्गेति प्रथिता भुवि ॥ १८२ ॥ वैष्णवानां च शैवानामुपास्येयं च नित्यशः ॥ मूलप्रकृतिरूपा सा सृष्टिस्थित्यन्तकारिणी ॥ १८३ ॥ सर्वे देवा हरिब्रह्मप्रमुखा मनवस्तथा ॥ मुनयो ज्ञाननिष्ठाश्च योगिनश्चाश्रमास्तथा ॥ १८४ ॥ लक्ष्म्यादयस्तथा देव्यः सर्वे ध्यायन्ति तां शिवाम् ॥ तदैव जन्मसाफल्यं दुर्गास्मरणमस्ति चेत् ॥ १८५ ॥ इति श्री बृ० ध० उपासनास्तबके दुर्गोपासनाध्याये श्रीदुर्गा माहात्म्यनिरूपणं नाम प्रकरणं द्वितीयम् ॥ २ ॥ अथ श्रीदुर्गापटलम् ॥ उक्तं देवीरहस्यतन्त्रे षट्चत्वारिंशत्तमे पटले ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ भगवन् सर्वतन्त्रज्ञ साधकानां जयावह ॥ यत्पुरा सूचितं देव दुर्गापञ्चाङ्गमुत्तमम् ॥ १ ॥ सर्वस्वं सर्वदेवानां रहस्यं सर्वमन्त्रिणाम् ॥ तदद्य कृपया ब्रूहि यद्यस्ति मयि ते दया ॥ २ ॥ भैरव उवाच ॥ एतद्गुह्यतमं देवि पञ्चाङ्गं तत्त्वलक्षणम् ॥ दुर्गायाः सारसर्वस्वं न कस्य कथितं मया ॥ ३ ॥ तव स्नेहात्प्रवक्ष्यामि दुर्गापञ्चाङ्गमीश्वरि ॥ गुह्यं गोप्यतमं गुह्य न देयं ब्रह्मवादिभिः ॥ ४ ॥ या देवी दैत्य दमनी दुर्गेत्यष्टाक्षरात्मिका ॥ देवैराराधिता पूर्वं ब्रह्माच्युतपुरःसरैः ॥ ५ ॥ पुरंदरहितार्थाय वधार्थाय सुरद्विषाम् ॥ सैवं सृजति भूतानि राजसी परमेश्वरी ॥ ६ ॥ सात्त्विकी रक्षति प्रान्ते संहरिष्यति तामसी ॥ इत्थं गुणत्रयीरूपा सृष्टिस्थितिलयात्मिका ॥ ॥ ७ ॥ *अष्टाक्षरी महाविद्या संध्यातीता परात्मिका ॥ यस्याः पञ्चाङ्गमधुना रहस्यं त्रिदिवौकसाम् ॥ ८ ॥ वक्ष्यामि परमप्रीत्या*

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

न चाख्येयं दुरात्मने ॥ पटलं तव वक्ष्यामि यन्त्रोद्धारं पराश्रयम् ॥ सर्वतन्त्रेषु विख्यातं सर्वकामफलप्रदम् ॥ ९ ॥ तारं मायां चाक्रिकं चक्रिदूरावायव्यालं विश्वमन्ते भवानि ॥ दुर्गायास्ते वर्णितो मूलविद्यामन्त्रोद्धारो गोपितोऽष्टाक्षरोऽयम् ॥ १० ॥ इत्युद्धारः ॥ नास्यान्तरायबाहुल्यं नापि मित्रारिदूषणम् ॥ नो वा प्रयाससंयोगो नाचारयुगविप्लवः ॥ ११ ॥ साक्षात्सिद्धिप्रदो मन्त्रो दुर्गायाः कलिनाशनः ॥ अष्टाक्षरोऽष्टसिद्धीशो गोपनीयो दिगम्बरैः ॥ १२ ॥ महाचीनक्रमस्थानां साधकानां जयावहः ॥ मन्त्रराजो महादेवि सद्यो भोगापवर्गदः ॥ १३ ॥ वर्णलक्षं पुरश्चर्यां तदर्धं वा महेश्वरि ॥ एकलक्षावधि कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥ ॥ १४ ॥ मूलोत्कीलनसिद्धं तु संजीवनसुसंस्कृतम् ॥ पुरश्चर्यां चरेत्पश्चात्संपुटाढ्यं चरेन्मनुम् ॥ १५ ॥ ततो मन्त्रं जपेन्नित्यं दुर्गाया अष्टसिद्धिदम् ॥ यं जप्त्वा साधको भूमौ विचरेद्भैरवो यथा ॥ १६ ॥ ऋषिरस्य स्मृतो देवि मन्त्रस्याद्यो महेश्वरः ॥ छन्दोऽनुष्टुब्देवता च श्रीदुर्गाऽष्टाक्षरात्मिका ॥ १७ ॥ तारं कीलकमीशानि विश्वबन्धनमीश्वरि ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ १८ ॥ तारमायाक्षरैर्देवि न्यासं षड्दीर्घभागिभिः ॥ निहत्य षड् रिपून् देवि ध्यायेद्दुर्गां कुलेश्वरि ॥ १९ ॥ दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां शङ्खाब्जखड्गशरखेटकशूलचापान् ॥ संतर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम् ॥ २० ॥ यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि दुर्गायाः कुलसुन्दरि ॥ सर्वसिद्धिप्रदं चक्रं सर्वाशापरिपूरकम् ॥ २१ ॥ बिन्दुत्रिकोणं रसकोणबिम्बं वृत्ताष्टपत्राञ्चितवह्निवृत्तम् ॥ धरागृहोद्भासितमिन्दुचूडे दुर्गाश्रयं यन्त्रमिदं प्रदिष्टम् ॥ २२ ॥ लयाङ्गमस्य यन्त्रस्य सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ॥ यस्योच्चारणमात्रेण कोटियज्ञफलं लभेत् ॥ २३ ॥ गणेशं च कुमारं च पुष्पदन्तं विकर्तनम् ॥ चतुर्द्वारेषु देवेशि पूजयेत्साधकेश्वरः ॥ २४ ॥ ब्राह्मी नारायणी देवी चामुण्डा ह्यपराजिता ॥ माहेश्वरी च कौमारी वाराही नारसिंहिका ॥ २५ ॥ पूज्या वसुदले देवि भैरवा अष्ट पार्वति ॥ असितांगो रुरुश्चण्डः क्रोधोन्मत्तकपालकाः ॥ २६ ॥ भीषणश्चैव संहारो वामावर्तेन साधकैः ॥ पूज्याः पृथक्पृथग्देवि गन्धपुष्पाक्षतैः शिवे ॥ २७ ॥ दत्त्वा पुष्पाञ्जलिं चक्रे मूलमुच्चार्य साधकः ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पूजयेत्पञ्चकिञ्जल्कैः षडस्रेषु कुलाम्बिकाः ॥ २८ ॥ शैलपुत्रीं स्ववामाग्रात्पूजयेद्ब्रह्मचारिणीम् ॥ चण्डघण्टां च कूष्माण्डां स्कन्द मातरमीश्वरि ॥ २९ ॥ कात्यायनीं च संपूज्य दूर्वागन्धाक्षतैः परम् ॥ पुनः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा श्रीचक्रे परमार्थदे ॥ ३० ॥ पूजयेद्देवतास्तिस्रः कुलस्थास्त्रिपुराम्बिकाः ॥ कालरात्रिर्महागौरी देवभूतीति पार्वति ॥ ३१ ॥ त्रिकोणागाच्छिवे पूज्याः सिन्दूरा क्षतपुष्पकैः ॥ दूर्वादलाञ्जलिं दत्त्वा यन्त्रराजेष्टसिद्धये ॥ ३२ ॥ पूजयेदम्बिकां दुर्गामष्टाक्षरविभूषणाम् ॥ बिन्दौ देवीमष्ट भुजां विद्यामष्टाक्षरीं शिवे ॥ ३३ ॥ नीलकंठं शिवे बिन्दौ पूजयेज्जगदम्बिकाम् ॥ तत्रायुधानि देवेशि पूजयेदष्ट साधकः ॥ ३४ ॥ शङ्खं पद्ममसिं बाणान् धनुः खेटकमीश्वरि ॥ शूलं संतर्जनीं दिव्यां नानापुष्पैः समर्चयेत् ॥ ३५ ॥ देवदेव्यौ बिन्दुपीठे पूजयेत्सर्व सिद्धये ॥ यं विधाय कलौ मन्त्री भवेत्कल्पद्रुमोपमः ॥ ३६ ॥ स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे ततः ॥ वशीकारं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ॥ ३७ ॥ एषां साधनमाचक्षे प्रयोगाणां महेश्वरि ॥ महाचीनक्रमस्थानां साधकानां हिताय च ॥ ३८ ॥ अयुतं तु जपेन्मूलं श्मशाने निशि साधकः ॥ हुनेद्दशांशतः सर्पिर्यवान्मांसान्मृगच्युतान् ॥ ३९ ॥ स्तम्भनं जायते क्षिप्रं वादिकाविजनाम्भ साम् ॥ अयुतं प्रजपेद्देवि वटे रुद्राक्षमालया ॥ ४० ॥ होमो दशांशतः कार्यो घृतपद्माक्षपङ्कजैः ॥ आरग्वधैः स्वधामूलैर्मोहनं जायते क्षणात् ॥ ४१ ॥ देवानां दानवानां च का कथाऽल्पधियां नृणाम् ॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं वने साधकसत्तमः ॥ ४२ ॥ वेतसीमूलगो वाऽपि हुनेत्तत्र दशांशतः ॥ घृतपायसशम्बूकान् रिपुर्मृत्युमुखं व्रजेत् ॥४३॥ अयुतं प्रजपेद्रात्रौ शून्यागारे कुलेश्वरि ॥ होमो दशांशतः कार्यो घृतव्योषधिजीरकैः ॥ ४४ ॥ कपिबीजैरपि प्रातर्भवेदाकर्षणं स्त्रियाम् ॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं चत्वरे त्वरितं हुनेत् ॥४५॥ आज्या ब्जेक्षुरसाखण्डरक्तपुष्पाणि पार्वति ॥ शक्रोऽपि वशतामेति किं पुनः क्षुद्रभूमिपः ॥ ४६ ॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं साधकोऽश्वत्थमूलके ॥ हुनेदाज्यं दशांशेन केशान् स्त्रीणां त्वचं गणाः ॥ ४७ ॥ रिपुमुच्चाटयेच्छीघ्रं यदि शक्रसमो भवेत् ॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं सुरद्रुमतिले हुनेत् ॥ ४८ ॥ घृताण्डकुक्कुटाङ्गानि नानापुष्पाणि पृच्छकः ॥ रोगोपद्रवकालस्य सद्यः शान्तिर्भविष्यति ॥ ४९ ॥ अयुतं प्रजपे

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

न्मूलं लीलोपवनमण्डले ॥ होमो दशांशतः कार्यो घृतमीनाजमस्तकैः ॥५०॥ पादैरष्टभिरीशानि सद्यः पुष्टिःप्रजायते ॥ इत्येष पटलो दिव्यो मन्त्रसर्वस्वरूपवान् ॥५१॥ दुर्गारहस्यभूतोऽपि गोपनीयो मुमुक्षुभिः ॥ ५२ ॥ इति श्री०बृ०ध०स्कं०उपा०स्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये देवीरहस्यतन्त्रोक्तश्रीदुर्गापटलनिरूपणं नाम तृतीयं प्रकरणम् ॥३॥ अथ श्रीदुर्गापद्धतिः ॥ उक्तं च तत्रैव सप्तचत्वारिंशत्तमे पटले ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ शृणु पार्वति वक्ष्यामि पद्धतिं गद्यरूपिणीम् ॥ यस्याः श्रवणमात्रेण कोटियज्ञफलं लभेत् ॥ १ ॥ ब्राह्मे मुहूर्तें उत्थाय बद्धपद्मासनः स्वशिरःस्थसहस्राराधोमुखकमलकर्णिकान्तर्गतं निजगुरुं श्वेतवर्णं श्वेतालङ्कारालंकृतं द्विभुजं स्वशक्त्या श्वेताम्बरभूषितया वामेऽङ्के सहितं ध्यात्वा मानसैरुपचारैः संपूज्य दंडवत्प्रणमेत् ॥ अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ॥ तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ तदाज्ञां गृहीत्वा बहिरागत्य मलमूत्रादि संत्यज्य वर्णोक्तं शौचं कृत्वा नद्यादौ गत्वा सुकूर्चं द्वादशाङ्गुलम् ॥ ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनमनोहराय नम इति दन्तान्विशोध्य चाक्रिकबीजेन गण्डूषषट्कं विधाय प्रणवेन मुखं त्रिः प्रोक्ष्य ॥ ॐ ह्रीं मणिधरि वज्रिणि शिखापरिसरे रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहेति शिखां बद्ध्वा तत्त्वत्रयेणाचम्य मूलेन प्राणायामं विधाय मलापकर्षणं स्नानं कुर्यात् ॥ ततो मूलेन मृदमानीय जलं प्रोक्षयेत् ॥ मन्त्रमृदा सूर्यमंडलं विचिन्त्य गङ्गेत्यङ्कुशमुद्रया तीर्थमावाह्य जले यन्त्रं विभाव्य ॥ देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते ॥ यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देवि इहावह ॥ इति सनीलकंठं दुर्गामावाह्य तत्र षडङ्गं विधाय देवीं सशिवां ध्यात्वा मूलं यथाशक्ति जपित्वा त्रिरुन्मज्जेत् ॥ तत्र कुम्भमुद्रां बद्ध्वा स्वमूर्ध्नि देवदेव्यौ जलेन स्नापयित्वा ॥ ॐ ह्रां ह्रीं सः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशाशक्तिसहिताय एष तेऽर्घो नमः ॥ इति त्रिर्दत्त्वा वासोऽन्यत्परिधाय तत्त्वत्रयेणाचम्य प्राणायामत्रयं कृत्वा पूर्वसंध्यां कृत्वा षडङ्गं कृत्वा चुलुकेन जलमादाय तत्त्वमुद्रयाऽऽच्छाद्य हं यं वं रं लं इति पञ्चभूतमन्त्रेणाभिमन्त्र्य त्रिर्मूलमुच्चरंस्तद्गलितोदकबिन्दुभिः सप्तधा स्वशिरोऽभ्युक्ष्य सव्यहस्ते शेषं जलं धृत्वा इडयाऽन्तर्नीत्वा देहान्तः पापं प्रक्षाल्य पिङ्गलया विरेच्य पुरःकल्पितवज्रशिलायां वामे फडिति निक्षिपेत् ॥ इत्यघमर्षणं विधाय पूर्ववदाचम्य जले

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

यन्त्रं ध्यात्वा मूलं यथाशक्ति जपित्वा ॥ मूलम् ॥ सवाहने सायुधे सपरिच्छदे नीलकण्ठसहिते मातर्दुर्गे तृप्यतां इत्यष्टवारं संतर्प्य नीलकण्ठं त्रिः संतर्प्य एकैकाञ्जलिना परिवारदेवताः संतर्प्य देवदेव्यौ हृदि ध्यात्वा जले चतुरस्रं विधाय तत्रेशानादिक्रमेण गुरून् संतर्प्य गायत्रीं जपेत् ॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै विद्महे अष्टाक्षरायै धीमहि ॥ तन्नश्चण्डी प्रचोदयात् ॥ इति यथाशक्ति जपित्वा गायत्र्या देवदेव्योरर्घत्रयं दत्त्वा जपं समर्प्य यागमण्डपमागच्छेत् ॥ इति संध्याविधिः ॥ ततो गृहमागत्य पादौ प्रक्षाल्य द्वार देवीः पूजयेत् ॥ ॐ गां गूं गणेशाय नमः पूर्वे ॥ ॐ क्षां ह्रीं बटुकाय नमः दक्षिणे ॥ ॐ क्षां क्षे क्षेत्रपालाय नमः पश्चिमे ॥ ॐ यां यूं योगिनीगणेभ्यो नमः उत्तरे ॥ ॐ गां गङ्गायै नमः देहल्याम् ॥ ॐ यां यमुनायै नमः ऊर्ध्वे ॥ ॐ सं सरस्वत्यै नमः मध्ये॥ गृहान्तः प्रविश्य आसनं शोधयेत् ॥ ॐ आं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनशोधने विनियोगः ॐ प्रीं पृथिव्यै नमः ॥ महि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां लोके पवित्रं कुरु चासनम् ॥ ॐ आं आधारशक्तये नमः ॥ मूलप्रकृत्यै नमः ॥ अं अनन्ताय नमः ॥ पद्माय नमः ॥ पद्मनालाय नमः ॥ तत्रोपविश्य ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ इति पठित्वा तालत्रयेण वामपार्ष्णिघात त्रयेण नाराचमुद्रया च दिव्यान् भौमानान्तरिक्षान्विघ्नानुत्सार्य छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं कृत्वा गुरुं प्रणमेत् ॥ अखण्डमण्डलाकारमिति गुरुभ्यो नमः ॥ परमगुरुभ्यो नमः ॥ परात्परगुरुभ्यो नमः॥ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः॥इति गन्धाक्षतैः स्वशिरस्यभ्यर्च्य न्यासपूर्वं संकल्पं कुर्यात् ॥ अस्य श्रीदुर्गापूजामन्त्रस्य महेश्वर ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीदुर्गा देवता दुं बीजं ह्रीं शक्तिः ॐ कीलकं नम इति दिग्बन्धः ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थे दुर्गापूजायां विनियोगः ॥ अथ न्यासः ॥ महेश्वरऋषये नमः शिरसि ॥ अनुष्टुपछन्दसे नमो मुखे ॥ दुर्गादेवतायै नमो हृदि ॥ दुंबीजाय नमो नाभौ ॥ ह्रींशक्तये नमो गुह्ये ॥ ॐ कीलकाय नमः पादयोः ॥ नमो दिग्बंध इति सर्वाङ्गे ॥ ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रौं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रौं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं षडङ्गन्यासः ॥ अथ मूलन्यासः ॥ ॐ नमः शिरसि ॥ ह्रीं नमो मुखे ॥ दुं नमो वक्षसि ॥ गां नमो नाभौ ॥ यैं नमः पृष्ठे ॥ नं नमो जान्वोः ॥ मः नमः पादयोः ॥ इति त्रिर्व्यापयेत् ॥ ॐ आत्मतत्त्वाय नमः शिरसि ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वाय नमो मुखे ॥ ॐ दुं शिवतत्त्वाय नमो हृदये ॥ ॐ गुरुतत्त्वाय नमो नाभौ ॥ ॐ ह्रीं शक्तितत्त्वाय नमः जङ्घयोः ॥ ॐ दुं शिवशक्तितत्त्वाय नमः पादयोः ॥ ॐ अं आं कं खं गं घं ङं इं ईं हृदयाय नमः ॥ ह्रीं उं ऊं चं छं जं झं ञं ऋं ॠं शिरसे स्वाहा ॥ दुं लृं टं ठं डं ढं णं ॡं शिखायै वषट् ॥ गां एं तं थं दं घं नं ऐं कवचाय हुम् ॥ यैं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ नमः अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः अस्त्राय फट् ॥ एवं करन्यासः ॥ इति शुद्धमातृकान्यासः ॥ अथ मूलमातृकान्यासः ॥ अं नमः शिरसि ॥ आं नमो मुखवृत्ते ॥ इं नमो दक्षनेत्रे ॥ ईं नमः वामनेत्रे ॥ उं नमो दक्षकर्णे ॥ ऊं नमो वामे ॥ ॠं नमो दक्षगण्डे ॥ ऋं नमो वामे ॥ लृं नमो दक्षनासापुटे ॥ ॡं नमो वामे ॥ एं नम ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ऐं नमोऽधरोष्ठे ॥ ओं नम ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ ॥ औं नमः अधोदन्तपङ्क्तौ ॥ अं नमः शिरसि अः नमो ॥ मुखे ॥ कं नमो दक्षबाहुमूले ॥ खं नमः कर्पूरे ॥ गं नमो मणिबन्धे ॥ घं नमोऽङ्गुलिमूले ॥ ङं नमः अङ्गुल्यग्रे ॥ चं नमो वामबाहुमूले ॥ छं नमः कूर्परे ॥ जं नमो मणिबन्धे ॥ झं नमोऽङ्गुलिमूले ॥ ञं नमोऽङ्गुल्यग्रे ॥ टं नमः दक्षपादमूले ॥ ठं नमो जानुनि ॥ डं नमो गुल्फे ॥ ढं नमोऽङ्गुलिमूले ॥ णं नमोऽङ्गुल्यग्रे ॥ तं नमो वामपादमूले ॥ थं नमो जानुनि ॥ दं नमो गुल्फे ॥ धं नमोऽङ्गुलिमूले ॥ नं नमोऽङ्गुल्यग्रे ॥ पं नमो दक्षपार्श्वे ॥ फं नमो वामपार्श्वे ॥ बं नमः पृष्ठे ॥ भं नमो नाभौ ॥ मं नमो जठरे ॥ यं नमो हृदि ॥ रं नमो दक्षांसे ॥ लं नमः ककुदि ॥ वं नमो वमांसे ॥ शं नमो हृदादिदक्षहस्ताग्रान्तम् ॥ षं नमो हृदादि वामहस्ताग्रान्तम् ॥ सं नमो हृदादिदक्षपादाग्रान्तम् ॥ हं नमो हृदादिवामपादाग्रान्तम् ॥ ळं नमः पादादिशिरःपर्यन्तम् ॥ क्षं नमः शिरसः पादपर्यन्तम् ॥ इति त्रिर्व्यापयेत् ॥ एवं विधाय पूर्ववत्षडङ्गं कृत्वा प्रणवेन प्राणायामत्रयं विधाय पृ० १६

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

कु० ६४ रे० ३२ ॥ ॐ आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ इत्याचम्य प्राणायामयोगेन भूतशुद्धिं कुर्यात् ॥ ॐ हुं आकुञ्चनेन सुषुम्नावर्त्मना कुण्डलिनीं ब्रह्मपथान्तर्नीत्वा परमशिवेन सह संयोज्य तदुद्भूतामृतधारया स्वात्मानं कुलगुरूंश्च संतर्प्य पुनस्तेनैव मार्गेण स्वस्थानं प्राप्य ॥ यमिति वायुबीजेन षोडशधा जप्तेन वामकुक्षिगतं पापपुरुषं ॥ शोषयेत् रमिति वह्निबीजेन चतुःषष्टिवारजप्तेन दाहयेत् ॥ वमिति वरुण बीजेन प्लावयेत् द्वात्रिंशद्वारजप्तेन ॥ लमितीन्द्रबीजेन षोडशधा जप्तेन गलच्चन्द्रामृतवृष्ट्या स्वात्मानं दिव्यदेहं भावयेत् ॥ इति भूतशुद्धिं कृत्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ ॐ ह्रीं दुं आं क्रों सोऽहं हंसः मम प्राणाः मम जीवः मम सर्वेन्द्रियाणि मम वाङ्मनस्त्वक्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहैवागत्य चिरं सुखं तिष्ठन्तु स्वाहेति प्राणान्समर्प्य षडङ्गं विधायाचम्य देवीं ध्यायेत ॥ भूगेहनागदलवृत्तरसारराबिन्दुस्थसन्महिषर्पीठगतां भवानीम् ॥ दूर्वादलाग्रसदृशच्छविमष्टबाहुं दुर्गां भजे त्रिनयनां विलसत्रिबीजाम् ॥ इति ध्यात्वा मूलाङ्गन्यासं विधाय श्रीचक्रं चतुर्द्वारं त्रिवृत्तमष्टदलं वृत्तं षडस्रं त्रिकोणं बिन्दु विचिन्त्य वाऽष्टगधेन विलिख्य पीठपूजां कुर्यात ॥ ॐ ह्रीं मण्डूकाय नमः २ कालाग्निरुद्राय नमः २ मूलप्रकृत्यै नमः २ आधारशक्त्यै नमः २ कूर्माय नमः २ अनन्ताय नमः २ वराहाय नमः २ पृथिव्यै नमः २ इत्युपरि संपूज्य सुधार्णवाय नमः २ मध्ये नवरत्नविराजित नवरत्नखण्डमयद्वीपाय नमः २ पद्मरागखंडाय नमः २ स्वर्णगिरये नमः २ नन्दनोद्यानाय नमः २ कल्पवनाय नमः २ पद्मवनाय नमः २ विचित्ररत्नखचितभूमिकायै नमः २ चिन्तामणिमंडपाय नमः २ नवरत्नखचितरत्नमयवेदिकायै नमः २ रत्न सिंहासनाय नमः २ तन्मध्ये सहस्रारपद्माय नमः २ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः २ विकृतिमयकेसरेभ्योनमः २ तन्मध्ये अष्टबीजभूषित कर्णिकायै नमः२ तत्पार्श्वे धर्माय नमः२ज्ञानवैराग्यैश्वर्येभ्योनमः २वामे अधर्माज्ञानवैराग्यानैश्वर्येभ्योनमः २ मध्ये सं सत्त्वाय नमः २ रं रजसे नमः २ तं तमसे नमः २॥मूलं मातृकाश्चोच्चार्य श्रीयोगपीठाय नमः २ इत्यभ्यर्च्य पात्रार्चनं कुर्यात् ॥ तत्रस्ववामेवृत्तत्रिकोण

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

चतुरस्रं मण्डलं विधाय मूलेनाभ्यर्च्य मूलं दुर्गासामान्यार्घाय नमः ॥ तन्मण्डलं षडङ्गेनाभ्यर्च्य तत्रास्त्रक्षालितं शंखं संस्थाप्य ॥ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नम इति विलोममातृकया सपूर्य्य । सौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः॥ इत्यभ्यर्च्य मूलेनाष्टवारं मन्त्रितं कृत्वा ॥ गं गङ्गे चेति तीर्थमावाह्य इति सामान्यार्घ्यविधिः ॥ सामान्यर्घ्यस्य वामे त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्रं मण्डलं कृत्वा तन्मंडलं षडंगेनाभ्यर्च्य मूलमुच्चार्य श्रीदुर्गाकलशमंडलाय नमः ॥ ततो मूलेनाभ्यर्च्य तत्रास्त्रक्षालितां त्रिपादिकां संस्थाप्य रं वह्निमंडलाय दशकलात्मने नमः इति संपूज्य तत्र कलशं संस्थाप्य ॥ अं अर्कमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ तत्रानामिकाङ्गुष्ठकरामृतधारापातेत विलोममातृकया कलशमापूर्य ॥ सौः सोममंडलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ इत्यभ्यर्च्य ॐ ह्रीं दां दीं दूं दैं दौं दः दुं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय २ शुक्रशापं मोचय २ ॐ ह्रीं दुं सुरादेव्यै वौषट् ॥ इति सप्तधाऽभिमन्त्र्य ॥ ॐ दुं ह्रीं दूं ह्सक्षमलवरयूं आनन्दभैरवाय वौषट् ॥ ॐ ह्रीं दुं आनन्दभैरवसुधादेवीपादुकाभ्यो नमः ॥ इति सपूज्य धेनुयोनिमत्स्यमुद्राः प्रदर्श्य ॥ॐ सूर्यमंडलसंभूते वरुणालयसंभवे ॥ अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥ एकमेव परं ब्रह्म स्थूलं सूक्ष्ममयं ध्रुवम् ॥ कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥ पावमानः परानन्दः पावमानः परो रसः ॥ पावमानं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम् ॥ वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि ॥ तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्या व्यपोहतु ॥ कृष्णशापविनिर्मुक्ता त्वं मुक्ता ब्रह्मशापतः ॥ विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव साम्प्रतम् ॥ इति संपूज्य धेनुयोनिमत्स्यमुद्राः प्रदर्श्य गरुडमुद्रयाऽऽच्छादयेदिति द्रव्यशुद्धिः ॥ ॐ ह्रीं दुं कृतावभारो हरिणा कलिना पीडितं जगत् ॥ बलिना निगृहीतं तु कौलिकानां हिताय च ॥ श्रीदुर्गापारितोषार्थं स्वयं मीनोऽभवत्प्रभुः ॥ इति मुद्रात्रयं प्रदर्श्य मीनशुद्धिः ॥ ॐ ह्रीं दुं छागलादिगवान्तादिकृतरूपाय वै नमः ॥ बल्यर्थं देवदेव्योश्च पवित्रीभव साम्प्रतम् ॥ मूलं त्रिर्जपित्वा मुद्रात्रयं दर्शयित्वा मांसशुद्धिः ॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गार्चनकाले तु यानि यानीह साम्प्रतम् ॥ वस्तूनि सौरमीयाणि पवित्राणीह साम्प्रतम् ॥ इति मूलं त्रिर्जपेन्मुद्रात्रयं दर्शयेदिति सर्वशुद्धिः ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तत्र मूलेनानन्दभैरवाङ्कोपविष्टां नीलकंठकेशीं ध्यात्वा बाह्यश्रीचक्रमर्चयेत् ॥ तत्र मूलेन पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्काचमनीयनैवेद्य गन्धपुष्पदीपच्छत्रमुक्तमालादीन्निवेद्य गंडूषत्रयं निवेद्य मूलषडंगं विधाय चतुरस्रं पूजयेत् ॥ ॐ ह्रीं दुं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीचक्राय नम इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा ॥ ॐ ह्रीं दुं गं गणेशाय नमः पूर्वे ३॥ॐ ह्रीं कुमाराय नमः दक्षिणे ३ ॥ प्रीं पुष्पदन्ताय नमः पश्चिमे ३ ॥ वें विकर्तनाय नमः उत्तरे ३ ॥ प्रथमावरणम् ॥ ॐ ह्रीं दुं असितांगभैरवयुतब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ३ ॥ रुरुभैरवयुतनारायणीश्री० ३ ॥ चंडभैरवयुतचामुण्डाश्री० ३ ॥ क्रोधेशभैरवयुतापराजिताश्री० ३ ॥ उन्मत्तभैरवयुतमाहेश्वरी श्री०३ ॥ कपालभैरवयुतकौमारीश्री० ३॥ भीषणभैरवयुतवाराहीश्री० ३॥ संहारभैरवयुतनारसिंहीश्री० ३ इति वामावर्तेन गन्धाक्षत पुष्पैरभ्यर्च्य द्वितीयावरणम् ॥ ॐ ह्रीं दुं सर्वाशापूरकाय श्रीचक्राय नमः ॥ इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा षटकोणं पूजयेत् ३ ॥ शैलपुत्री श्री०३ ॥ ब्रह्मचारिणीश्री० ३॥ चंडघण्टश्री०३ ॥ कूष्मांडाश्री० ३ ॥ स्कन्दमाताश्री० ॥ कात्यायनीश्री० ३ ॥ इति वामावर्तेन संपूज्य तृतीयावरणम् ॥ श्रीचक्रे पुष्पाञ्जलिं दत्वा ३ ॥ कालरात्रिश्री० ३ ॥ महागौरीश्री० ३ ॥ देवदूतीश्री०३ ॥ इत्यग्रे ईशानाग्नेयतोऽर्चयेत ॥ चतुर्थावरणम् ॥ ॐ ह्रीं दुं अष्टसिद्धिदाय श्रीचक्राय नमः ॥ मूलं नीलकंठश्रीदुर्गाश्री०॥इति सप्तधाऽभ्यर्च्य बिन्दौ पञ्चमावरणम् ॥ मूलम् ॥ अम्बिकाश्री० मूलम् ३ ॥ अष्टाक्षराश्री० ३ ॥ मूलम् ३ ॥ अष्टभुजाश्री० ३ ॥ मूलं नीलकंठश्री० मूलं ॥ जगदम्बिकाश्री० इति षष्ठावरणम् ॥ बिन्दौ शङ्खाय नमः ॥ पद्माय नमः ॥ खड्गाय नमः ॥ बाणेभ्यो नमः ॥ धनुषे नमः ॥ खेटकाय नमः ॥ शूलायनमः तर्जन्यै नमः ॥ त्रिरुच्चार्य श्रीनीलकंठश्रीदुर्गाश्रीं० मूलेन गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्याचमनीयताम्बूलच्छत्रचामरारार्तिकादीन् समर्प्य इति सप्तमावरणम् ॥ तत्रमूलेन बलिं निवेद्य सौः सर्वविघ्नकृद्भ्यो भूतेभ्यः स्वाहा यां यूं योगिनीगणेभ्यो नमः ॥ ॐ वां वीं देवीपुत्र बटुकनाथ कपिलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख एहि एहि इमं बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ क्षां क्षें क्षेत्रपालाय नमः ॥ इति बलिं दत्त्वा संकल्प्य पूर्वं न्यासं विधाय देव्यग्रे मालामादाय यथाशक्ति जपं कृत्वा समर्प्य गुह्यातिगुह्येति पठित्वा ततः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

कवचसहस्रनामस्तवपाठं कृत्वा तदपि समर्प्य ॥ प्रातःप्रभृति सायान्तं सायादिप्रातरन्ततः ॥ यत्करोमि जगन्मातस्तदस्तु तव पूजनम् ॥ इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणम्य संहारमुद्रया देवदेव्यौ हृद्यानीय स्वयमपि शिवरूपो भूत्वा पात्रार्पणं विधाय सुखं विहरेदिति दुर्गानित्यपूजाविधिः ॥ इति श्रीनित्यपूजायाः पद्धतिं गुह्यगोपिताम् ॥ श्रीदुर्गासारसंभूतां गोपयेत्साधकेश्वरि ॥ इति श्री० बृ० ध० उपा० श्रीदु० देवीरहस्यतन्त्रोक्तश्रीदुर्गापद्धतिनिरूपणं नाम चतुर्थं प्रकरणम् ॥ ४ ॥ अथ श्रीदुर्गाकवचम् ॥ उक्तं च तत्रैवाष्टचत्वारिंशत्पटले ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ अधुना देवि वक्ष्येऽहं कवचं मन्त्रगर्भकम् ॥ दुर्गायाः सारसर्वस्वं कवचेश्वरसंज्ञकम् ॥ १ ॥ परमार्थप्रदं नित्यं महापातकनाशनम् ॥ योगिप्रियं योगगम्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ २ ॥ विना दानेन मन्त्रस्य सिद्धिर्देवि कलौ भवेत् ॥ धारणादस्य देवेशि शिवस्त्रैलोक्यनायकः ॥ ३ ॥ भैरवो भैरवेशानि विष्णुर्नारायणो बली ॥ ब्रह्मा पार्वति लोकेशो विघ्नध्वंसी गजाननः ॥ ४ ॥ सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लेखर्षभः प्रिये ॥ सूर्यस्तमोपहो लोके चन्द्रोऽमृतनिधिस्तथा ॥ ५ ॥ बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गाकवचधारणात् ॥ मर्त्योऽप्यमरतां याति साधको मन्त्रसाधकः ॥ ६ ॥ कवचस्यास्य देवेशि ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः ॥ छन्दोऽनुष्टुप् प्रिये दुर्गा देवताऽष्टाक्षरा स्मृता ॥ ७ ॥ चक्रिबीजं च बीजं स्यान्माया शक्तिरितीरिता ॥ ८ ॥ ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकम् ॥ दुं नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु चक्री पातु श्रुती मम ॥ ९ ॥ मठं गण्डौ च मे पातु देवेशी रक्तकुण्डला ॥ वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीजनिषूदिनी ॥ १० ॥ लवणं पातु मे चोष्ठौ चामुण्डा चण्डघातिनी ॥ भेकीबीजं सदा पातु दन्तान्मे रक्तदन्तिका ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे कण्ठं नीलकण्ठाङ्कवासिनी ॥ ॐ ऐं क्लीं पातु मे स्कन्धौ स्कन्दमाता महेश्वरी ॥ १२ ॥ ॐ सौः क्लीं मे पातु बाहू देवेशी बगलामुखी ॥ ऐं श्रीं ह्रीं पातु मे हस्तौ शिवाशतनिनादिनी ॥ १३ ॥ सौः ऐं ह्रीं पातु मे वक्षो देवता विन्ध्यवासिनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पातु कुक्षिं मम मातङ्गिनी परा ॥ १४ ॥ श्रीं ह्रीं ऐं पातु मे पार्श्वौ हिमाचलनिवासिनी ॥ ॐ स्त्रीं हूं ऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गतिनाशिनी ॥ १५ ॥ ॐ क्रीं हूं पातु मे नाभिं देवी नारायणी सदा ॥ ॐ ऐं क्लीं सौः सदा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पातु कटिं कात्यायनी मम ॥१६॥ ॐ ह्रीं श्रीं पातु शिश्नं मे देवी श्रीबगलामुखी ॥ ऐं सोः क्लीं सौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता ॥१७॥ ॐ ह्रीं ऐं श्रीं हसौः पायादूरू मम मनोन्मना ॥ ॐ जूं सः सौः पातु जानु जगदीश्वरपूजिता ॥१८॥ ॐ ऐं क्लीं पातु मे जङ्घे मेरुपर्वतवासिनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गीं सदा पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं दुं पातु मे पादौ पार्वती षोडशाक्षरी ॥ पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ च वैष्णवी तथा ॥ २० ॥ दक्षिणे चण्डिका पातु नैर्ऋते नारसिंहिका ॥ पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये माऽप राजिता ॥ २१ ॥ उत्तरे पातु कौमारी चैशान्यां शांभवी तथा ॥ ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पात्वधस्ताच्छिवा सदा ॥ २२ ॥ प्रभाते त्रिपुरा पातु निशीथे छिन्नमस्तका ॥ निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका ॥ २३ ॥ अग्नेरम्बा च मां पातु जलान्मां जग दम्बिका ॥ वायोर्मां पातु वाग्देवी वनाद्वनजलोचना ॥ २४ ॥ सिंहात्सिंहासना पातु सर्पात्सर्पान्तकासना ॥ रोगान्मां राजमातङ्गी भूताद्भूतेशवल्लभा ॥ २५ ॥ यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसान्तका ॥ भूतप्रेतपिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा ॥ २६ ॥ सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा ॥ इत्येवं कवचं गुह्यं दुर्गासर्वस्वमुत्तमम् ॥ २७ ॥ मन्त्रगर्भं महेशानि कवचेश्वरसंज्ञकम् ॥ वित्तदं पुण्यदं पुण्यं वर्म सिद्धिप्रदं कलौ ॥ २८ ॥ वर्म सिद्धिप्रदं गोप्यं परापररहस्यकम् ॥ श्रेयस्करं मनुमयं रोगनाशकरं परम् ॥ ॥ २९ ॥ महापातककोटिघ्नं मानदं च यशस्करम् ॥ अश्वमेधसहस्रस्य फलदं परमार्थदम् ॥ ३० ॥ अत्यन्तगोप्यं देवेशि कवच मन्त्रसिद्धिदम् ॥ पठनात्सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे ॥ ३१ ॥ रवौ भूर्जे लिखेद्धीमान् कृत्वा कर्माह्निकं प्रिये ॥ श्रीचक्राग्रेऽष्ट गन्धेन साधको मन्त्रसिद्धये ॥ ३२ ॥ लिखित्वा धारयेद्बाहौ गुटिकां पुण्यवर्धिनीम् ॥ किं किं न साधयेल्लोके गुटिका वर्मणोऽचि रात् ॥ ३३ ॥ गुटिकां धारयेन्मूर्ध्नि राजानं वशमानयेत् ॥ धनार्थी धारयेत् कण्ठे पुत्रार्थी कुक्षिमण्डले ॥ ३४ ॥ तामेवं धारयेन्मूर्ध्नि लिखित्वा भूर्जपत्रके ॥ श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत् ॥३५॥ सुवर्णेनाथ संवेष्ट्य धारयेद्रक्तरज्जुना ॥ गुटिका कामदा देवि देवानामपि दुर्लभा ॥ ३६ ॥ कवचस्यास्य गुटिकां धृत्वा मुक्तिप्रदायिनीम् ॥ कवचस्यास्य देवेशि वर्णितुं नैव शक्यते ॥ ३७ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

महिमानं महादेवि जिह्वाकोटिशतैरपि ॥ अदातव्यमिदं वर्म मन्त्रगर्भं रहस्यकम् ॥ ३८ ॥ अवक्तव्यं महापुण्यं सर्वं सारस्वतप्रदम् ॥ अदीक्षिताय नो दद्यात्कुचैलाय दुरात्मने ॥ ३९ ॥ अन्यशिष्याय दुष्टाय निन्दकाय कुलार्थिनाम् ॥ दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च ॥ ४० ॥ शान्ताय कुलसक्ताय शान्ताय कुलवासिने ॥ इदं वर्म शिवे दद्यात्कुलभागी भवेन्नरः ॥ ४१ ॥ इदं रहस्यं परमं दुर्गाकवचमुत्तमम् ॥ गुह्यं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ४२ ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते बृ० धर्मस्कन्धे उपासनास्तबके श्रीदुर्गोपासनाध्याये देवीरहस्यतन्त्रोक्तश्रीदुर्गाकवचनिरूपणं नाम पञ्चमं प्रकरणम् ॥५॥ अथ श्रीदुर्गासहस्रनामस्तोत्रम् ॥ उक्तंच तत्रैवैकोनपञ्चाशत्पटले ॥ भैरव उवाच ॥ अधुना शृणु वक्ष्यामि दुर्गासर्वस्वमीश्वरि ॥ रहस्यं सर्व देवानां दुर्लभं जन्मिनामपि ॥ १ ॥ श्रीदुर्गातत्त्वमुद्दिष्टं सारं त्रैलोक्यकारणम् ॥ मन्त्रनामसहस्रं च दुर्गायाः पुण्यदं परम् ॥ २ ॥ यत्पठित्वा शिवे धृत्वा देवीनामसहस्रकम् ॥ अश्वमेधायुतं पुण्यं लोके सौभाग्यवर्धनम् ॥ ३ ॥ श्रेयस्करं विश्ववन्द्यं सर्वदेवनमस्कृतम् ॥ गुह्यं गोप्यतमं देवि पठनात्सिद्धिदायकम् ॥४॥ अस्य श्रीदुर्गानामसहस्रस्य श्रीमहेश्वर ऋषिः ॥ अनुष्टुप्छन्दः ॥ श्रीदुर्गा देवता ॥ दुंबीजम् ॥ ह्रींशक्तिः ॥ ॐ कीलकम् ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थे सहस्रनामपाठे विनियोगः ॥ ॐ ह्रीं तुं दुं जगन्माता भद्रिका भद्रकालिका ॥ प्रचंडा चंडिका चंडी चंडमुंडनिषूदनी ॥ ५ ॥ अनुसूया तुटिस्तारा कृत्तिका कुब्जिकालया ॥ प्रलयास्थितिसंभूति विंभूतिर्भयनाशिनी ॥ ६ ॥ महामाया महाविद्या मूलविद्या चिदीश्वरी ॥ महालसा मदोत्तुङ्गा मदिरा मदनप्रिया ॥७॥ अलिव्यालप्रसूः पुण्या पवित्रा परमेश्वरी ॥ आदिदेवी कला कान्ता त्रिपुरा जगदीश्वरी ॥ ८ ॥ मनोन्मना महालक्ष्मीः सिद्धलक्ष्मीः सरस्वती ॥ सरित्कादम्बरी गोधा गुह्यकाली गणेश्वरी ॥ ९ ॥ गणाम्बिका जया तापी तपना तापहारिणी ॥ तपोमयी दुरालम्बा दुष्टग्रहनिवारिणी ॥ १० ॥ दुःस्वप्नघ्नी सुखदा माध्वी परमामृतसूः सुरा ॥ सुधा सुधांशुनिलया प्रलयानलसन्निभा ॥ ११ ॥ समस्तसंपदम्भोजविलया कलिकालया ॥ विद्येश्वरी विश्वमयी विराट् छन्दोगतिर्मतिः ॥ १२ ॥ धृतिश्च दाम्भिकी दोला लोपामुद्रा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पटीयसी ॥ गरिष्ठाऽरिष्टहा दुष्टा कृशा काशी कुलाऽकुला ॥ १३ ॥ अकुलस्था पदन्यासा न्यासरूपा विरूपिणी ॥ विरूपाक्षा कोटराक्षी कुलकान्ताऽपराजिता ॥ १४ ॥ अजिता कुलिका लम्पा लम्पटा त्रिपुरेश्वरी ॥ त्रितयी वेदविन्यासा संन्यासा सुमति भेया ॥ १५ ॥ अभया स्वर्मुखा देवी महौषधिरलंबुसा ॥ चपला चन्द्रिका चण्डा चण्डमुण्डनिषूदनी ॥ १६ ॥ चपलाक्षी मदा विष्टा मदिरारुणलोचना ॥ पुरित्रिपुरसूरास्ता रमा रामा मनोरमा ॥१७॥ सन्ध्या सन्ध्याभ्रशीला च शाला श्यामपयोधरा ॥ शशाङ्क मुकुटा श्यामा सुरा सुन्दरलोचना ॥ १८ ॥ विषमाक्षी विशालाक्षी वशा वागीश्वरी शिला ॥ मनःशिला च कस्तूरी मृगनाभिर्मृगे क्षणा ॥ १९ ॥ मृगारिवाहना साध्वी मानदा मत्तभाषिणी ॥ नारसिंही वामदेवी वामा वामश्रुतिप्रिया॥२० ॥ पुण्या पुण्यगतिः पुण्या पुत्री पुण्यजनप्रिया ॥ चामुण्डा उग्रमुण्डा च महाचण्डतमा उमा ॥ २१ ॥ तपस्विनी प्रभा ज्योत्स्ना महज्ज्योतिःस्वरूपिणी ॥ सुरूपा सद्गतिः साध्वी सदसद्रूपराजिता ॥ २२ ॥ सृष्टिः स्थितिः क्षेमकरी क्षामा क्षामोन्नतस्तनी ॥ क्षोणी क्षयकरी क्षीणा शवस्था शिववल्लभा ॥ २३ ॥ दन्तुरा दाडिमप्रीतिर्दया दाम्भिकसूदिनी ॥ राक्षसी डाकिनी योग्या योगिनी योगवल्लभा ॥ २४ ॥ कबन्धा कन्दरा कृत्या कृत्तिका कण्टकान्तका ॥ कलङ्करहिता काली कम्पा काश्मीरवल्लभा ॥ २५ ॥ काशी कीर्तिप्रदा काञ्ची काश्मीरी कोकिलस्वना ॥प्रभावती महारौद्री रुद्रपत्नी रुजापहा ॥ २६ ॥ रतिः स्तुतिस्तुरी तुर्या तोतुलाऽतलवासिनी ॥ तपः प्रिया शरच्छ्रेष्ठा पञ्चपुत्री यमस्वसा ॥ २७ ॥ यामी यमान्तका याम्या यमुना स्वर्नदी तडित् ॥ नारायणी विश्वमाता भवानी पापनाशिनी ॥ २८ ॥ विगता विगतप्रश्ना कृशा कृष्टाऽसिधारिणी ॥ वारी वारावरधरा वरदा वीरसूदिनी ॥ २९ ॥ वीरसूर्वाम नाकारा दीर्घसूत्रा दयावती ॥ दरी धनप्रिया धात्री धात्रीवल्ली महोदरी ॥ ३० ॥ गणेश्वरी गणा काञ्ची काञ्चीकिङ्किणिघण्ट का ॥ माया मायावती मत्ता प्रमत्ता प्रवरेश्वरी ॥ ३१ ॥ पौरन्दरी शची सीता शीतातपस्वभावजा ॥ स्वाभाविकगुणा गण्या गाम्भीर्यगुणभूषणा ॥ ३२ ॥ सूतिः सूर्यकला सुप्ता सप्तसप्ततिरूपिणी ॥ तेजस्विनी सदानन्दा सभासन्तोषवर्धिनी ॥ ३३ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तर्पणाऽऽकर्षणा होता संकल्पा शुभमन्त्रिका ॥ दर्भा द्रोणिकला शान्ता समिधा सुरवेदिका ॥ ३४ ॥ धूम्राऽहुतिश्च रमतिश्चामीकर रुचिश्चिता ॥ दिव्याऽनलेश्वरी नीला कालानलसरस्वती ॥ ३५ ॥ अपर्णा सुफला यज्ञा समया निभया मया ॥ भीमस्वना भर्गशिखा भास्वती भास्करा विभा ॥ ३६ ॥ विभावरी नदी नन्द्या नन्द्यावर्तप्रवर्तिनी ॥ पृथ्वीधरा विषधरा विश्वगर्भा प्रव र्तिका ॥ ३७ ॥ विश्वमाया विश्वबाला विश्वंभरविलासिनी ॥ उरगेशा पद्मनागा पद्मनाभप्रसूः प्रजा ॥ ३८ ॥ तोरणा तुलसी दीक्षा दक्षा दाक्षायणी द्युतिः ॥ संपुटा शयना शय्या शासना शमनान्तका ॥ ३९ ॥ श्यामाकवर्णा शार्दूली शष्पनीतांशु वल्लभा ॥ स्तुत्या प्रणीता नियतिः कम्पना कम्पहारिणी ॥ ४० ॥ चम्पकाभा धराचीनाऽदीना दीनजनप्रिया ॥ वसुंधरा वासवेशी वसुनाथा वटेश्वरी ॥ ४१ ॥ समुद्रा संगमा पूर्णा तरला तरुवासिनी ॥ पार्वती पामरी मान्या माननीया मधुप्रिया ॥ ४२ ॥ माधवी मधुपानस्था मन्दिरा मन्दुरा मृगी ॥ मुमूर्षा भरुषा रेवा रेवती रमणी रमा ॥ ४३ ॥ ऋद्धिहस्ता सिद्धिहस्ता अन्नपूर्णा महेश्वरी ॥ अनुरूपा जगज्ज्योतिः समस्तासुरघातिनी ॥ ४४ ॥ गारुडी गगनालम्बा लम्बमानकचप्रिया ॥ पीताम्बरा पीतपुष्पा पूतना गीतवल्लभा ॥ ४५ ॥ बलाका जगदन्ता च जरा जयवरप्रदा ॥ प्रीतिः कठोरवदना करालरदना रमा ॥ ४६ ॥ जिह्वा हस्ता च बगला प्रणया विनयप्रदा ॥ कीरी करालवपुषी शेमुषी मक्षिका मषी ॥ ४७ ॥ उत्तीर्णा तर्णिका तीक्ष्णा श्लक्ष्णा कामेश्वरी शिवा ॥ शिवपत्नी सरोजाक्षी पद्महस्ता सरस्वती ॥ ४८ ॥ तथ्या पथ्यकृती रथ्या रथस्था विततस्वरा ॥ महती रामिणी भार्गी शुचिहासा हरीश्वरी ॥ ४९ ॥ हरिद्रत्नांशुलसिता लक्ष्मीनायकसुन्दरी ॥ अम्बालिकाऽम्बा देवेशी अनघाऽग्निशिखा श्रुतिः ॥५०॥ अलसाऽल्पगतिश्चान्त्याऽनन्ताऽनन्तगुणाश्रया ॥ आद्या चादित्यसङ्काशा आदित्यकुलसुन्दरी ॥ ५१ ॥ आत्मरूपाऽधिशमनी आदिमायाऽऽदिदेवता ॥ इन्द्रस्य सूरिनद्योतिरिनाग्निशशिलोचना ॥ ५२ ॥ उमा उर्वी उरुभुजा उत्तुङ्गा चोक्षवाहना ॥ उत्तुङ्गा चोत्तमा ध्येया उल्लासा चोरुगार्विणी ॥ ५३ ॥ ऊष्मा ऊणा च गुर्वङ्गी ऊर्ध्वाक्षी ऊर्ध्वमस्तका ॥ ऋद्धिर्ऋचा ऋवर्णेशी ऋण

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ढर्त्री च वार्तकी ॥ ५४ ॥ ऋद्धिजा चारुवस्त्रा च ऋणिवासा महालसा ॥ लृकारा लृक्करा लीना लृकारवरधारिणी ॥ ५५ ॥ एणाङ्क मुकुटा चेहा चारुचन्द्रकला कला ॥ एकारगतिरैश्वर्यदायिनी चैश्वरी गातः ॥ ५६ ॥ ॐ कारबीजरूपा च औत्रिकी बीज धारिणी ॥ अम्बिकाऽलम्पिका वाच अस्वरोद्गाररूपिणी ॥ ५७ ॥ काली च भद्रकाली च कालिका कालवल्लभा ॥ कदम्बनिलया कन्था काञ्चीमण्डनमण्डिता ॥ ५८ ॥ कलङ्करहिता कूर्पा काञ्चनाभा करीरगा ॥ कनकाचलवासा च कारुण्याकुलमा नसा ॥ ५९ ॥ कुलस्था कौलिनी कुलज्ञा कुरुकुल्ला कपालिली ॥ कपालकुलनिर्विण्णा क्लींकारा कञ्जलोचना ॥ ६० ॥ खञ्जनाक्षी खड्गधरा खेटकायुधभूषणा ॥ खर्पराढ्या च खलहा खेटिनी खेचरी खगा ॥ ६१ ॥ खगायुधा खगगतिः खकाराक्षरभूषणा ॥ गणाध्यक्षा गजगतिर्गणेशजननी गदा ॥ ६२ ॥ गोधा गदाधरप्राज्या गगनेशी मही मला ॥ घुर्घुरा घटभूर्घूका घुसृणाभा घने श्वरी ॥ ६३ ॥ घनसारप्रिया साम्या घवर्णरुतभूषणा ॥ चान्द्री चन्द्रस्तुता चार्वी चन्द्रिका चण्डनिःस्वना ॥ ६४ ॥ चञ्चरीक स्वना देवी चञ्चच्चामीकराङ्गदा ॥ छत्रिका छुरिका छच्छा छत्रचामरभूषणा ॥ ६५ ॥ ज्रीकारी जलजिह्वा च जृम्भिका जल योगिनी ॥ जटाजूटधरा जातिर्जातीपुष्पसमानना ॥ ६६ ॥ जलेश्वरी जगद्ध्येया जानकी जननी जटा ॥ झञ्झा झरी झरत्कारी झरत्काञ्चीरकिंकिणी ॥ ६७ ॥ झिंटिका झम्पकृज्झम्पा झंपत्रासनिवारिणी ॥ ञणुरूपा ञकहस्ता ञकाराक्षरसंमता ॥ ६८ ॥ टंकायुधा महातथ्या टंकारा करुणाटसी ॥ ठक्कुरा ठत्करा ठानी डिंडीरवसना डला ॥ ६९ ॥ ढंडानिलमयी ढंड्रा ढणत्कार करा ढसा ॥ णान्ता नणी णीलायुधा णवर्णाक्षरभूषणा ॥ ७० ॥ तरुणी तुन्दिला तोदा तामसी तामसप्रिया ॥ ताम्राननना ताम्रकरा ताम्राम्बरधरा तुला ॥ ७१ ॥ तापत्रयहरा तापी तैलासक्ता तिलोत्तमा ॥ स्थाणुपत्नी स्थली स्थूला स्थितिः स्थैर्यधरा स्थुला ॥ ७२ ॥ दन्तिनी दन्तुरा दावी देवकी देवनायिका ॥ दमिनी शमिनी दंडचा दंडहस्ता दुरानतिः ॥ ७३ ॥ दुर्वारा दुर्गतिर्द्राक्षी द्राक्षा द्रविड़वासिनी ॥ दूरस्था दुन्दुभिध्वाना दरदा दरनाशिनी ॥ ७४ ॥ दुःखघ्नी च द्रुगा द्रष्टा दया दाम्भिकयनाशिनी ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

धर्म्या धर्मप्रसूर्धन्या धनदा धातृवल्लभा ॥ ७५ ॥ धनुर्धरा धनुर्वल्ली धनुष्कवरदायिनी ॥ धूमाली धूम्रवदनाधूमश्रीधूम्रलोचना॥ ॥ ७६ ॥ नलिनी नर्तकी नान्ता नङ्गा नलिनलोचना ॥ निमला निगमाचारा निम्नगा नगजा निमिः ॥ ७७ ॥ नीलग्रीवा निरीहा च नीपोपवनवासिनी ॥ निरञ्जनजनी जन्या निद्रालुर्नीरवासिनी ॥ ७८ ॥ नटिनी नाट्यनिरता नवनीतप्रियाऽनिला ॥ नारायणी निराकारा निर्लेपा नित्यवल्लभा ॥ ७९ ॥ पद्मावती पद्मकरा पुत्रदा पुत्रवत्सला ॥ परोत्तरा पुरी पाठा पीनश्रोत्रा पुलोमजा ॥ ८० ॥ पुष्पिणी पुस्तककरा पटुः पाटीरवाहना ॥ पापघ्नी शम्पिनी पाली पली परमसुन्दरी ॥ ८१ ॥ पिशाची च पिशाचघ्नी पानपात्रधरा पुटा ॥ पूर्णिमा पञ्चमी पौत्री पुरूरववरप्रदा ॥ ८२ ॥ पञ्चयज्ञा पञ्चशरी पञ्चाशतमनुप्रिया ॥ पञ्चाली पञ्चपुत्रा च पूर्णा पूर्णमनोरथा ॥ ८३ ॥ फलिनी फलदात्री च फलहस्ता फणिप्रिया ॥ फिरङ्गहा स्फीतमतिः स्फीतिः स्फीतिमनी स्फुरा ॥ ८४ ॥ बलमाया बलस्तन्या बिल्लसेना बलाबला ॥ बगलेश्वरपूज्या च बलिनी बलवर्धिनी ॥ ८५ ॥ बुद्धमाता बौद्धमतिर्बद्धा बन्धनमोचिनी ॥ भगिनी भगमाला च भगलिङ्गाऽमृतस्रवा ॥ ८६ ॥ भीमेश्वरी च भीरुण्डा भगेशी भगमर्षिणी ॥ भगलिङ्गस्थिता भग्या भाग्यदा भगमालिनी ॥ ८७ ॥ मत्ता मनोहरा मैना मैनाकजननी मुरी ॥ मुरली मानवी होत्री महस्विजनमोदिता ॥ ८८ ॥ मत्तमातङ्गगा माद्री मरालगतिरञ्चला ॥ यज्ञेश्वरीश्वरी यज्ञा यजुर्वेदप्रियाश्विनता ॥ ८९ ॥ यशोवती यतिस्था च यतिस्था यतिवल्लभा ॥ यवनी यौवनस्था च यवा यक्षजनाश्रया ॥ ९० ॥ यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञभूर्युपमूलिनी ॥ रञ्जिता राजपत्नी च राजसूयफलप्रदा ॥ ९१ ॥ रजोवती रजश्चित्रा राज्यदा राज्यवर्धिनी ॥ राज्ञी रात्रिंचरेशानी रोगघ्नी त्रिपुरेश्वरी॥९२॥ ललिता लतिका लाप्या लोपा ललनलालसा ॥ लाटीरद्रुमवासा च पाटीरद्रुमवर्तिनी ॥ ९३ ॥ लङ्का ललज्जटाजूटा लङ्घिता सुरसुन्दरी ॥ लोकेशवरदा लीया लयकर्त्री महालया ॥ ९४ ॥ वेदिर्विगघ्ना वाणी च वेणा वेणुवनेश्वरी ॥ वन्दमाना ववर्णाढ्या वाराही वीरमातृका ॥ ९५ ॥ शङ्खिनी शङ्खवलया शङ्खायुधधरा शमा ॥ शशिमण्डलमध्यस्था शीतलाम्बुनिवासिनी ॥ ९६ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

श्मशानस्था महाघोरा श्मशाननिलयेश्वरी ॥ सिन्धुः सूत्रधरा सत्रा समस्तकुलचारिणी ॥ ९७ ॥ सप्तमी सात्त्विकी सत्त्वा सूत्रस्थाऽसुरसूदिनी ॥ सुरेश्वरी संपदाद्या समस्ताचलचारिणी ॥ ९८ ॥ समदा संमतिः संमा सवना सवनेश्वरी ॥ हंसी हरिप्रिया हास्या हरिन्नेत्रा हराम्बिका ॥ ९९ ॥ हेषा हटीश्वरी हीरा फलिनी फलदायिनी ॥ हेहा हाहारवा हाला हालाहालहता शया ॥ १०० ॥ क्षेमा क्षेमप्रदा क्षामा क्षौमाम्बरधरा क्षया ॥ क्षितिः क्षीरप्रियाऽलक्ष्या क्षितिभृत्तनया क्षुधा ॥ १०१ ॥ क्षत्रिणी ब्राह्मणी क्षेत्रा क्षपा क्षबीजमण्डिता ॥ लक्षबीजस्वरूपा च क्षकाराक्षरमातृका ॥ १०२ ॥ दुर्गन्धनाशिनी दूर्वा दुर्गमा दुर्गनाशिनी दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ॐ ह्रीं दुंबीजमण्डिता ॥ १०३ ॥ इति नामसहस्रं तु मन्त्रगर्भं महाफलम् ॥ दुर्गाया दुर्गतिहरं सर्वदेवनमस्कृतम् ॥ १०४ ॥ सर्वमंत्रमयं दिव्यं देवदानवपूजितम् ॥ श्रेयस्करं महापुण्यं महापातकनाशनम् ॥ १०५ ॥ यः पठेत्पाठयेद्वाऽपि शृणोति श्रावयेत्तथा ॥ स महापातकैर्मुक्तो देवदानवसेवितः ॥ १०६ ॥ इह लोके सुखं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत् ॥ दुर्गानाम सहस्रं तु मूलमन्त्रैकसाधनम् ॥ १०७ ॥ अर्धरात्रे पठेद्वीरो मधुरं भवसेवितम् ॥ त्रिवारं वर्मपूर्वं तु भवेद्वागीशसन्निभः ॥ १०८ ॥ यः पठेद्देवि मध्याह्ने स्त्रीयुतो मुक्तकुन्तलः ॥ तस्य वैरिकुलं त्रस्येद्दर्शनादेव नश्यति ॥ १०९ ॥ दहनादिव देवेशि पतङ्गकुल मद्रिजे ॥ यः पठेद्वेतसीमूले सायं पूजितभैरवः ॥ ११० ॥ तस्यास्यकुहराद्वाणी निःसरेद्गद्यपद्यभाक् ॥ यः पठेत्सततं देवि शयने स्त्री रताकुला ॥ १११ ॥ स भवेद्वैरिविध्वंसी धनेन धनदोपमः ॥ वाग्भिर्वागीशसदृशः कवित्वेन सितोपमः ॥ ११२ ॥ तेजसा सूर्यसङ्काशो यशसा सूर्यसन्निभः ॥ बलेन वायुतल्यो हि लक्ष्म्या गीर्वाणनायकः ॥ ११३ ॥ देवि किं बहुनोक्तेन स भवेद्भैरवोपमः ॥ स्तम्भनाकर्षणोच्चाटवशीकरणकक्षमः ॥ ११४ ॥ रवौ भूर्जे लिखेद्देवि निशीथे वाऽष्टगन्धकैः ॥ सस्तन्यरेतो राजस्कैः साधको मंत्रसाधकः ॥ ११५ ॥ लिखित्वा वेष्टयेन्नाम सहस्रमणिमीश्वरि ॥ श्वेतवस्त्रेण संवेष्टय लाक्षया परिवेष्टयेत् ॥ ११६ ॥ सुवर्णरजताढ्यैश्च वेष्टयेत्पीतसूत्रकैः ॥ संपूज्य गुटिकां देवि शुभेऽह्नि साधकोत्तमः ॥ ११७ ॥ धारयेन्मूर्ध्नि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वा बाहौ गुटिकां कामदायिनीम् ॥ रणे रिपून्विक्षित्याशु कल्याणी गृहमाविशेत् ॥ ११८ ॥ वन्ध्या वामभुजे धृत्वा कृत्वा साधकपूजनम् ॥ पुत्राँल्लभेन्महादेवि साक्षाद्वैश्रवणोपमान् ॥ ११९ ॥ गुटिकैषा महादिव्या गोप्या कामफलप्रदा ॥ साधकैः सततं पूज्या साक्षाद्दुर्गास्वरूपिणी ॥ १२० ॥ योऽर्चयेत्साधको दुर्गां गुटिकां धारयेत्प्रिये ॥ पठेद्दुर्गे शिवे मन्त्रं नाम साहस्रिकं परम् ॥ १२१ ॥ अङ्गस्तोत्रं फलं तस्य देवि वक्ष्येऽधुना शृणु ॥ वने राजकुले वाऽपि दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे ॥ १२२ ॥ ग्रहयक्षपिशाचादिभूतप्रेतभये तथा ॥ वीरे विगतभीर्देवि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥१२३॥ स्तम्भयेद्वायुसूर्यौ च चन्द्रादीन्साधकोत्तमः ॥ मोहयेत्त्रिजगत्सद्यः कान्ताश्चाकर्षयेद् ध्रुवम् ॥ १२४ ॥ मारयेदखिलान् शत्रूनुच्चाटयेच्च वैरिणः ॥ वशयेद्देवताः सद्यः किं पुनर्मानवान् शिवे ॥ १२५ ॥ शमयेदखिलान्रोगान्महोत्पातानुपद्रवान् ॥ किं किं न लभते वीरो दुर्गापञ्चाङ्गपूजनात् ॥१२६॥ इदं रहस्यं दुर्गाया अष्टाक्षर्या महेश्वरि ॥ सर्वस्वं सारतत्त्वं च मूलविद्यामयं परम् ॥ १२७ ॥ महाचीनक्रमस्थानां साधकानां यशस्करम् ॥ पठेत्संपूजयेद्देव्या मन्त्रनामसहस्रकम् ॥ १२८ ॥ इदं सारं हि तन्त्राणां तत्त्वानां तत्त्वमुत्तमम् ॥ दुर्गानामसहस्रं तु तव भक्त्या प्रकाशितम्॥१२९॥अभक्ताय न दातव्यं गोप्तव्यं पशुसंकटे॥ अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा नरकमाप्नुयात ॥१३०॥ दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च ॥ शान्ताय भक्तियुक्ताय देयं नामसहस्रकम् ॥१३१॥ विना दानं न गृह्णीयान्न दद्याद्दक्षिणां विना ॥ दत्त्वा गृहीत्वाऽप्युभयोः सिद्धिहानिर्भवेद् ध्रुवम् ॥ १३२ ॥ इदं नामसहस्रं तु गुप्तं गोप्यतमं शिवे ॥ तव भक्त्या मयाऽऽख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ १३३ ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते बृहज्ज्योतिषार्णवे धर्मस्कन्धे उपासनास्तबके श्रीदुर्गोपासनाध्याये देवीरहस्यतन्त्रोक्तश्रीदुर्गासहस्रनामस्तोत्रनिरूपणं नाम षष्ठं प्रकरणम् ॥ ६ ॥ अथ दुर्गास्तोत्रम् ॥ उक्तं च तत्रैव पञ्चाशत्तमे पटले ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ अधुना देवि वक्ष्यामि दुर्गास्तोत्रं मनोहरम् ॥ मूलमन्त्रमयं दिव्यं सर्वसारस्वतप्रदम् ॥१॥ दुर्गार्तिशमनं पुण्यं साधकानां जयप्रदम् ॥ दुर्गाया अङ्गभूतं तु स्तोत्रराजं परात्परम् ॥ २ ॥ श्रीदुर्गास्तोत्रराजस्य ऋषिर्देवो महेश्वरः ॥ छन्दोऽनुष्टुब्देवता श्रीदुर्गाऽप्यष्टाक्षरा शिवे ॥३॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दुं बीजं च परा शक्तिर्नमः कीलकमीश्वरि ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थे दुर्गास्तोत्रपाठे विनियोगः ॥ ४ ॥ अथ ध्यानम् ॥ दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां शङ्खाब्जखड्गशरखेटकशूलचापान् ॥ संतर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां दुर्गां नवारकुलपीठगतां भजेऽहम् ॥५॥ तारं हारं मन्त्रमालासुबीजं ध्यायेदन्तर्यो बलं बालकान्तः ॥ तस्य स्मारंस्मारमङ्घ्रिद्वयीं द्राग्रम्भाऽऽयाति स्वर्गता कामवश्या ॥६॥ मायां जपेद्यस्तव मन्त्रमध्ये दुर्गे सदा दुर्गतिखेदखिन्नः ॥ भवेत्स भूमौ नृपमौलिमालामाणिक्यनिर्घृष्टपदारविन्दः ॥ ७ ॥ चाक्रिकं यदि जपेत्तवाम्बिके चक्रमध्यगत ईश्वरेश्वरि ॥ साधको भवति चक्रवर्तिनां नायको नयविलासकोविदः ॥ ८ ॥ चक्रिबीजमपरंस्मरेच्छिवे योऽरिवर्गविहिताहितव्यथः ॥ आजिमण्डलगतो जयेद्रिपून्वाजिवारणरथाश्रितो नरः ॥ ९ ॥ दूर्वाबीजं यो जपेत्प्रेतभूमौ सायं मायाभस्मना लिप्तकायः ॥ गीर्वाणानां नायको देवमन्त्री भुक्त्वा राज्यं प्राज्यप्राज्यं करोति ॥१०॥वायव्यबीजं यदि साधको जपेत्प्रियाकुचद्वन्द्वविमर्दनक्षमः ॥ समस्तकान्ताजननेत्रवागुरैर्विलासहंसो भविता स पार्वति ॥ ११ ॥ विश्वं विश्वेश्वरि यदि जपेत्कामवेलाकलार्तो रात्रौ मात्राक्षरविलसितन्यास ईशानि मातः ॥ तस्य स्मेराननसरसिजभ्राजमानाङ्गलक्ष्मीर्वश्याऽवश्यं सुरपुरवधूमौलिमालोर्वशी सा ॥१२॥ भूगेहाञ्चितसत्रिवृत्तविलसन्नागारवृत्ताञ्चितव्यस्रारोल्लसिताग्निकोणविलसच्छ्रीबिन्दुपीठस्थिताम् ॥ ध्यायेच्चेतसि शर्वपत्नि भवतीं माध्वीरसाघूर्णितां यो मन्त्री स भविष्यति स्मरसमः स्त्रीणां धरण्यां दिवि ॥ १३ ॥ दुर्गास्तवं मनुमयं मनुराजमौलिमाणिक्यमुत्तमशिवाङ्गरहस्यभूतम् ॥ प्रातः पठेद्यदि जपावसरेऽर्चनायां भूमौ भवेत्स नृपतिर्दिवि देवनाथः ॥ १५ ॥ इति स्तोत्रं महापुण्यं पञ्चाङ्गैकशिरोमणिम् ॥ यः पठेदर्धरात्रे तु तस्य वश्यं जगत्त्रयम् ॥ १५ ॥ इदं पञ्चाङ्गमखिलं श्रीदुर्गाया रहस्यकम् ॥ सर्वसिद्धिप्रदं गुह्यं सर्वाशापरिपूरकम् ॥ १६ ॥ गुह्यं मन्त्ररहस्यं तु तव भक्त्या प्रकाशितम् ॥ अभक्ताय न दातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ १७ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ भगवन्भवताऽनेन कथनेन महेश्वर ॥ श्रीपञ्चाङ्गस्य दुर्गाया अद्य क्रीताऽस्म्यहं परम् ॥ १८ ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ इदं रहस्यं परमं दुर्गासर्वस्वमुत्तमम् ॥ पञ्चाङ्गं वर्णितं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वत् ॥ १९ ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते बृ० ध० उपा० स्त० श्रीदुर्गो० ध्याये देवीर० श्रीदुर्गास्तोत्रनिरूपणं नाम सप्तमं प्रकरणम् ॥७॥ अथ श्रीदुर्गाभुवनवर्णनम् ॥ उक्तं च देवीरहस्यतन्त्रैकपञ्चाशत्तमे पटले॥श्रीभैरव उवाच॥ श्रीशैलराजशिखरे नानाद्रुमलताकुले ॥ वसन्तलक्ष्मीनिलये समासीनमुमापतिम् ॥ १ ॥ एकदा देवमीशानं शशिशेखरमुत्तमम् ॥ उमाश्रितार्धवपुषं देवदानवसेवितम् ॥ २ ॥ ध्यानासक्ताक्षिश्रितयं जटाजूटलतारुणम् ॥ भस्माङ्गरागधवलं नारायणनमस्कृतम् ॥३॥ ब्रह्मादिदेवप्रणतं गन्धर्वजनवन्दितम् ॥ यक्षराक्षसनागेन्द्रनगेन्द्रकुलपूजितम् ॥ ४ ॥ भैरवं भैरवाकारं गिरीशं परमेश्वरम् ॥ उत्थाय विनता भूत्वा पर्यपृच्छत पार्वती ॥ ५ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ भगवन् सर्वलोकेश सर्वलोकनमस्कृत ॥ गुणातीत गणाध्यक्ष भूतेश्वर महेश्वर ॥ ६ ॥ सृजस्यवसि नृत्यान्ते संहरस्यमितं जगत् ॥ चराचरं च त्वमेव किं पुनर्जपसि प्रभो ॥ ७ ॥ किं ध्यायसि महादेव सततं भक्तवत्सल ॥ वद शीघ्रं दयाम्भोधे यद्यहं प्रेयसी तव ॥८॥ श्रीभैरव उवाच ॥ देवि किं ते प्रवक्ष्यामि रहस्यमिदमद्भुतम् ॥ सर्वस्वं सारभूतं मे सर्वेषां तत्त्वमुत्तमम् ॥ ९ ॥ लक्षवारसहस्राणि वारिताऽसि पुनः पुनः ॥ स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि ॥ १० ॥ अद्य भक्त्या तव स्नेहाद्वक्ष्यामि परमाद्भुतम् ॥ देवीरहस्यतन्त्राख्यं तन्त्रराजं महेश्वरि ॥११॥ सर्वागमैकमुकुटं सर्वसारमयं ध्रुवम् ॥ सर्वतन्त्रमयं दिव्यं पटलैर्दशभिर्युतम् ॥ १२ ॥ अनुक्रमणिकां दिव्यां शृणु तन्त्रस्य पार्वति ॥ यस्याः श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत् ॥ १३ ॥ श्रीविद्यानिर्णयो देवि मन्त्रसाधनकोऽपरः ॥ शिवमन्त्रप्रकाशाख्यो दीक्षाविधिरनुत्तमः ॥ १४ ॥ पुरश्चर्याविधिर्देवि पञ्चरत्नेश्वरीक्रमः ॥ होमसाधनकश्चैव चक्रपूजाविधिः परः ॥ १५ ॥ आचारनिर्णयो देवि दशमो दशमीविधिः ॥ तत्रादौ देवि वक्ष्येऽहं दुर्गाभुवनमद्भुतम् ॥ १६ ॥ जयं नाम महादिव्यं बहुविस्तारविस्तृतम् ॥ नानारत्नसमाकीर्णं सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ १७ ॥ इन्द्रगोपकवर्णं च चन्द्रकोटिमनोहरम् ॥ अप्रमेयमसंख्येयमगम्यं सर्ववादिनाम् ॥ १८ ॥ इदं दिव्यं जयं नाम भुवनं परमेश्वरि ॥ तत्रैव वसते दुर्गा नवरूपात्मिका परा ॥ १९ ॥ या देवदेवी वरदा सर्वलोकैकसुन्दरी ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

या दुर्गेति स्मृता लोके ब्रह्माण्डोदरवर्तिनी ॥ २० ॥ विष्णुना तपसा पूर्वमाराध्य परमेश्वरी ॥ महिषस्यासुरेन्द्रस्य वधार्थायाव तारिता ॥ २१ ॥ योगमाया महामाया सर्वदा परमेश्वरी ॥ तामेवाहर्निशं ध्याये श्रीविद्यां परमां जपे ॥२२॥ तामद्याहं प्रवक्ष्यामि विद्याचरणदायिनीम् ॥ यां श्रुत्वा स शिवो जातः पञ्चनादात्मकः शिवः ॥ २३ ॥ यदाऽभूद्द्वारहीना सा दुर्गा निष्कलरूपिणी ॥ साक्षाद्भुवनरूपाऽपि महज्ज्योतिःस्वरूपिणी ॥ २४ ॥ तदा शवहकाले तु ज्योतीरूपे महीश्वरि ॥ शिवः प्रभामण्डलतो निर्गतो ऽचेतनो विभुः ॥ २५ ॥ अशृणोन्नादमाधारं जगतां बीजमुत्तमम् ॥ अवमं सारमायां त्वं सृष्टोऽग्रे मनुनायकः ॥ २६ ॥ इति श्रुत्वा परानादं तारमित्युपदीर्यते ॥ शिवो जजाप सहसा बीजं त्रिजगतां शिवे ॥ २७ ॥ तेन मायेति शब्दं स शुश्राव गगना ततः ॥ दमं भज महेशान सदानन्दालयं परम् ॥ २८ ॥ बिन्दुनादमयो देवः शिवोऽभूत्परमेश्वरः ॥ ततो नादं स शुश्राव दृष्टिकर्ण विवर्जितम् ॥ २९ ॥ दुर्गां भजेति स शिवः पञ्चनादात्मकोऽभवत् ॥ ततो जप्त्वा पराविद्यामसृजज्जगदम्बिके ॥ ३० ॥ आदौ वायुं शिवः सृष्ट्वा ततः सृष्टिं यथेच्छया ॥ इच्छामात्रं शिवे विश्वं विश्वेश्वरि चराचरम् ॥ ३१ ॥ ससर्ज लवमात्रं स शितिकण्ठः शिवः शिवे ॥ इतीमां गुप्तविद्यां तु लब्ध्वा गुरुपदार्चनात् ॥ ३२ ॥ किं किं न साधयेल्लोके साधको मन्त्रसाधकः ॥ वस्त्रं वह्निं च कामं च धनं वृत्तं च साधकः ॥ ३३ ॥ वशीकुर्याद्यथाबुद्ध्या येन तुर्याकुलो भवेत् ॥ श्रीचक्रमिदमाधारं देव्या विभवकार णम् ॥ ३४ ॥ गुह्यं सर्वस्वमम्बायाः पूज्यं साधकसत्तमम् ॥ चक्रं लिखेन्महादेवि पूज्यमब्जार्कयोर्दलैः ॥ ३५ ॥ येन देवी महामाया श्रीदुर्गाऽऽशु प्रसीदति ॥ चक्रे संपूजयेद्यस्तु नीलाभां दहतीं द्युतिम् ॥ ३६ ॥ वह्नीन्दुसूर्याम्बुरजं मण्डलाकारमर्चयेत् ॥ लसन्मुकुटरोचिष्णुः स भवेत्साधकोत्तमः ॥ ३७ ॥ तस्य शङ्खनिभा कीर्तिर्भ्रमते भुवनत्रये ॥ ससुरासुरगन्धर्वं वशं याति महे श्वरि ॥ ३८ ॥ शरासवरसानन्दमयो भूत्वा जपेन्मनुम् ॥ खेटकास्तस्य तुष्यन्ति साधकस्याङ्गपूजनात् ॥ ३९ ॥ तस्य रोगा विनश्यन्ति सर्वे शूलादयोऽचिरात् ॥ तर्जनीं तव वक्ष्यामि रिपवो यान्ति विद्रुताः ॥ ४० ॥ तस्य गेहं धनं गावो महिषा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

विष्टरं गजाः ॥ दुर्गा रत्नवती भूमिस्तस्य पीठं मनोहरम् ॥ ४१ ॥ साधकस्य भवेदेवं संपत्तिर्बहुधाऽर्चनात् ॥ एवं ध्यायेन्महादेवीं दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥ ४२ ॥ ध्यानेन येन देवेन्द्रो भविष्यति हि साधकः ॥ इतीदं देवि तत्त्वं ते कथितं परमाद्भुतम् ॥ ४३ ॥ अवक्तव्यमदातव्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ४४ ॥ इति श्रीहरिकृष्णविरचिते बृ० धर्मस्कन्धे उपासनास्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये देवीरह० श्रीदुर्गाभुवनवर्णननिरूपणं नाम अष्टमं प्रकरणम् ॥८॥ अथ दुर्गापञ्चरत्नेश्वरीविधानम् ॥ उक्तं च देवीरहस्यतन्त्रे षट्पञ्चाशत्तमे पटले ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ अधुना देवि वक्ष्येऽहं पञ्चरत्नेश्वरीविधिम् ॥ यस्य श्रवणमात्रेण विद्या सिद्ध्यति सत्वरम् ॥ ॥ १ ॥ विना पञ्चरत्नेश्वरीमन्त्रजाप्यं न सिद्धिर्भवेत्साधकस्योत्तमस्य ॥ ततः पूजयेद्दीक्षितः श्रीगुरुं स्वं समस्तार्थसिद्धीश्वरं देवदेवि ॥ २ ॥ दुर्गायाः परमं तत्त्वं पञ्चरत्नेश्वरीमयम् ॥ श्रीदुर्गा शारिका शारी सुमुखी बगलामुखी ॥ ३ ॥ पञ्चरत्नेश्वरीविद्या दुर्गायाः कथिता मया ॥ सुदिने देवि दुर्गायाः पञ्चरत्नेश्वरीं जपेत् ॥ ४ ॥ वर्णलक्षपुरश्चर्याफलमाप्नोति साधकः ॥ साधकेषु चतुर्ष्वेवं श्रीदुर्गोपासकः शिवे ॥ ५ ॥ श्रीगुरुं वन्दनैः स्तुत्या तोषयित्वा धनैरपि ॥ दीक्षामन्येषु शिष्येषु दापयेत्साधकोत्तमः ॥ ६ ॥ येन मन्त्रो हि दुर्गायाः सद्यः स्फुरति भारते ॥ पञ्चस्वपि महादेवि साधकेषु कलौ युगे ॥ ७ ॥ पञ्चरत्नेश्वरीं दत्त्वा पुरश्चर्याफलं लभेत् ॥ श्रीदुर्गोपासकश्चैव शारदोपासकस्तथा ॥ ८ ॥ शारिकोपासकश्चैव मातङ्ग्यास्त्वपरः शिवे ॥ पञ्चमो बगलामुख्याश्चैकत्र मिलिताश्च ते ॥ ९ ॥ पूजयेयुर्गुरुं देवि पञ्चरत्नेश्वरीं जपेत् ॥ अन्योन्यं साधकाः पञ्च श्रीगुरोः पुरतः शिवे ॥ १० ॥ पुरश्चर्याफलं सिद्धं प्रार्थयेयुर्गुरोस्ततः ॥ एवं सिद्धमनुर्लोके सर्वसिद्धिं प्रयच्छति ॥ ११ ॥ तारं मायां चक्रिकं च त्रिदूर्वा वायव्यार्णं विश्वमन्ते भवानि ॥ दुर्गायास्ते वर्णितो मूलविद्यामन्त्रोद्धारो गोपितोऽष्टाक्षरोऽयम् ॥ १२ ॥ तारं मायां कामराजश्च शक्तिः स्तम्भं तस्माद्भगवत्यै च नाम ॥ भूमिस्तस्मादञ्चले ठद्वयं स्यात्प्रोक्तो मुक्त्यै शारदामन्त्र एषः ॥ १३ ॥ तारं परामातटसिन्धुराणाः खं शर्म तन्मध्यगतं च नाम ॥ अन्तेऽश्मरी



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पार्वति शारिकायास्त्रयोदशार्णो मनुरस्ति गोप्यः ॥ १४ ॥ वाक्काममुच्छिष्टपदं विभाव्य चण्डालिनी वै सुमुखी च देवि ॥ महापिशाची सककात्रयाब्जं वनं मनुः स्यात्सुमुखीप्रियोऽयम् ॥ १५ ॥ तारं मठं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय द्विः ॥ पादं जिह्वां कीलय द्विर्मठं वा तारं नीरं ब्रह्मणोऽस्त्रास्त्रविद्याम् ॥ १६ ॥ इत्येषा गुप्तविद्येयं प्रभावसहिता कलौ ॥ पञ्चरत्नेश्वरी ग्राह्या पुरश्चरणसिद्धये ॥ १७ ॥ इतीदं तत्त्वमीशानि पुरश्चर्यारहस्यकम् ॥ अनन्तफलदं गुह्यं गोपनीयं मुमुक्षया ॥ १८ ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उपा० स्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये दे० श्रीदुर्गापञ्चरत्नेश्वरीविधाननि० नाम नवमं प्रकरणम् ॥ ९ ॥ अथ दुर्गा स्तोत्रम् ॥ उक्तं च ब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतिखण्डे अन्तिमेऽध्याये ॥ पुरा स्तुता सा गोलोके कृष्णेन परमात्मना ॥ संपूज्य मधुमांसेन प्रीतेन रासमण्डले ॥ १ ॥ मधुकैटभयोर्युद्धे द्वितीये विष्णुना पुरा ॥ तत्रैव काले सा दुर्गा ब्रह्मणा प्राणसंकटे ॥ २ ॥ चतुर्थे संस्तुता देवी भक्त्या च त्रिपुरारिणा ॥ पुरा त्रिपुरयुद्धे च महाघोरतरे रणे ॥ ३ ॥ पञ्चमे संस्तुता देवी वृत्रासुरवधे तथा ॥ शक्रेण सर्वैर्देवैश्च घोरे च प्राणसंकटे ॥ ४ ॥ तदा मुनीन्द्रैर्मुनिभिर्मानवैः सुरथादिभिः ॥ संस्थिता पूजिता सा च कल्पे कल्पे परात्परा ॥ ५ ॥ स्तोत्रं च श्रूयतां ब्रह्मन् सर्वविघ्नविनाशनम् ॥ सुखदं मोक्षदं सारं भवाब्धेः पारकारणम् ॥ ६ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका ॥ ७ ॥ कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम् ॥ परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या स्वरूपिणी ॥ ८ ॥ निजस्वरूपा परमा भक्तानुग्रह विग्रहा ॥ सर्वस्वरूपा सर्वाणी सर्वाधारा परात्परा ॥ ९ ॥ सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमङ्गलमङ्गला ॥ सर्वज्ञानप्रदा देवी सर्वज्ञा सर्व भाविनी ॥ १० ॥ त्वं स्वाहा देवदाने च पितृदाने स्वधा स्वयम् ॥ दक्षिणा सर्वदाने च सर्वकर्मणि संततम् ॥ ११ ॥ निद्रा त्वं च दया त्वं च कृष्णा त्वं चात्मनश्च मे ॥ तत्क्षान्तिः शान्तिरीशा च कान्तिस्तुष्टिश्च शाश्वति ॥ १२ ॥ श्रद्धा पुष्टिश्च तन्द्रा च लज्जा शोभा प्रभा सदा ॥ सतां संपत्स्वरूपा श्रीर्विपत्तिरसतामिह ॥१३॥ प्रीतिरूपा पुण्यवतां पापिनां कलहांकुरा ॥ शश्वत्कर्ममयी शक्तिः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सर्वदा सर्वजीविनाम् ॥ १४ ॥ देवेभ्यः स्वपदं दात्री धातुर्धात्री कृपामयी ॥ कृता या सर्वदेवानां सर्वासुरविनाशिनी ॥ १५ ॥ योगनिद्रा योगरूपा योगदात्री च योगिनाम् ॥ माहेश्वरी च ब्रह्माणी विष्णुमाया च वैष्णवी ॥ १६ ॥ भद्रदा भद्रकाली च सर्वलोकभयंकरी ॥ ग्रामेग्रामे ग्रामदेवी गृहदेवी गृहेगृहे ॥ १७ ॥ महायुद्धे महामारी दुष्टसंहाररूपिणी ॥ रक्षास्वरूपा शिष्टानां मातेव हितकारिणी ॥ १८ ॥ ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां तपस्या च तपस्विनाम् ॥ विद्या विद्यावतां त्वं च बुद्धिर्बुद्धिमतां सताम् ॥ ॥ १९ ॥ मेधास्मृतिस्वरूपा च प्रतिभा प्रतिभावताम् ॥ राज्ञां प्रतापरूपा च विशां वाऽपीशपूजिते ॥ २० ॥ इत्यात्मना कृतं स्तोत्रं दुर्गायाः स्वर्गकारणम् ॥ पूजाकाले पठेद्यो हि सिद्धिर्भवति वांछिता ॥ २१ ॥ वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च दुर्भगा ॥ श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सुपुत्रं लभते ध्रुवम् ॥२२॥ कारागारे महाघोरे यो बद्धो दृढबन्धने ॥ श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं बन्धनान्मुच्यते ध्रुवम् ॥ २३ ॥ यक्ष्मग्रस्तो गलत्कुष्ठी महाशूली महाज्वरी ॥ श्रुत्वा स्तोत्रंवर्षमेकं सद्यो रोगात्प्रमुच्यते ॥ २४ ॥ राजद्वारे श्मशाने च महारण्ये रणस्थले ॥ हिंस्रजन्तुसमीपे तु श्रुत्वा स्तोत्रं प्रमुच्यते ॥ २५ ॥ महादरिद्रो मूर्खश्च वर्षं स्तोत्रं पठेत्तु यः ॥ विद्यावान्धनवांश्चैव स भवेन्नात्र संशयः ॥ २६ ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उ० दुर्गोपासनाध्याये ब्रह्मवैवर्तान्र्गतप्रकृतिखण्डोक्त दुर्गास्तोत्रनिरूपणं नाम दशमं प्रकरणम् ॥ १० ॥ अथ ब्रह्माण्डमोहनाख्यं दुर्गाकवचम् ॥ उक्तं च तत्रैव ॥ नारद उवाच ॥ भगवान् सर्वधर्मज्ञ सर्वज्ञानविशारद ॥ ब्रह्माण्डमोहनं नाम प्रकृतेः कवचं वद ॥ १ ॥ नारायण उवाच ॥ शृणु वक्ष्यामि हे वत्स कवचं च सुदुर्लभम् ॥ श्रीकृष्णेनैव कथितं कृपया ब्रह्मणे पुरा ॥ २ ब्रह्मणा कथितं पूर्वं धर्माय जाह्नवीतटे ॥ धर्मेण दत्तं मह्यं च कृपया पुष्करे पुरा ॥३॥ त्रिपुरारिश्च यद्धृत्वा जघान त्रिपुरं पुरा ॥ मुमोच ब्रह्मा यद्धृत्वा मधुकैटभयोर्भयात्॥४॥सञ्जहार रक्तबीजं यद्धृत्वा भद्रकालिका ॥ यद्धृत्वा हि महेन्द्रश्च संप्राप कमलालयाम् ॥५॥ यद्धृत्वा च महायोद्धा बाणः शत्रुभयंकरः ॥ यद्धृत्वा शिवतुल्यश्च दुर्वासा ज्ञानिनां वरः ॥ ६ ॥ ॐ दुर्गेति चतुर्थ्यन्तः स्वाहान्तो मे शिरोऽवतु ॥ मन्त्रः षडक्षरोऽयं च भक्तानां कल्पपादपः ॥७॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

विचारो नास्ति वेदे च ग्रहणेऽस्य मनोर्मुने ॥ मन्त्रग्रहणमात्रेण विष्णुतुल्यो भवेन्नरः ॥८॥ मम वक्रं सदा पातु ॐ दुर्गायै नमोऽन्तकः ॐ दुर्गे च इति कण्ठं मन्त्रः पातु सदा मम ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीमिति मन्त्रोऽयं स्कन्धं पातु निरन्तरम् ॥ ह्रीं श्रीं क्लीमिति पृष्ठं च पातु मे सर्वतः सदा ॥ १० ॥ ह्रीं मे वक्षस्थलं पातु हं सं श्रीमिति सन्ततम् ॥ ऐं श्रीं ह्रीं पातु सर्वाङ्गं स्वप्ने जागरणे सदा ॥ ११ ॥ प्राच्यां मां पातु प्रकृतिः पातु वह्नौ च चण्डिका ॥ दक्षिणे भद्रकाली च नैर्ऋत्यां च महेश्वरी ॥ १२ ॥ वारुण्यां पातु वाराही वायव्यां सर्वमङ्गला ॥ उत्तरे वैष्णवी पातु तथैशान्यां शिवप्रिया ॥ १३ ॥ जले स्थले चान्तरिक्षे पातु मां जगदम्बिका ॥ इति ते कथितं वत्स कवचं च सुदुर्लभम् ॥ १४ ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥ गुरुमभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालंकार चन्दनैः ॥ १५ ॥ कवचं धारयेद्यस्तु सोऽपि विष्णुर्न संशयः ॥ स्नाने च सर्वतीर्थानां पृथिव्याश्च प्रदक्षिणे ॥ १६ ॥ यत्फलं लभते लोकस्तदेतद्धारणे मुने ॥ पञ्चलक्षजपेनैव सिद्धमेतद्भवेद् ध्रुवम् ॥ १७ ॥ लोकश्च सिद्धकवचो नावसीदति संकटे ॥ न तस्य मृत्युर्भवति जले वह्नौ विषे ज्वरे ॥ १८ ॥ जीवन्मुक्तो भवेत्सोऽपि सर्वसिद्धीश्वरीश्वरम् ॥ यदि स्यात्सिद्धकवचो विष्णुतुल्यो भवेद ध्रुवम् ॥ १९ ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते बृह० धर्म० उपासनास्तमके दुर्गो० ध्याये ब्रह्मवैवर्तप्रकृतिखण्डान्तर्गतदुर्गा कवचनिरूपणं नाम एकादशं प्रकरणम् ॥११॥ अथ दुर्गाष्टोत्तरशतनामात्मकस्तोत्रम् ॥ उक्तं च विश्वसारतन्त्रे ॥ ईश्वर उवाच शत नाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ॥ यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता सदा भवेत् ॥ १ ॥ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भव मोचिनी ॥ आर्या दुर्गा जया आद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥ २ ॥ पिनाकधारिणी चित्रा चन्द्रघण्टा महातपा ॥ मनो बुद्धिरहं कारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥ ३ ॥ सर्वमन्त्रमयी सत्या सत्यानन्दस्वरूपिणी ॥ अनन्ता भाविनी भाव्या भवा भव्या सदागतिः ॥ ४ ॥ शंभुपत्नी देवमाता चिन्तारत्नप्रिया सदा ॥ सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ५ ॥ अपर्णा चैकपर्णा च पाटला पाटलावती ॥ पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीरनादिनी ॥ ६ ॥ अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी कुलसुन्दरी ॥ वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्ग

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मुनिपूजिता ॥ ७ ॥ ब्राह्मी माहेश्वरी चेन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ॥ चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥ ८ ॥ विम लोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया सत्या च वाक्प्रदा ॥ बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥ ९ ॥ निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी ॥ मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ १० ॥ सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी ॥ सर्वशास्त्रमयी विद्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥ ११ ॥ अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रविधारिणी ॥ कुमारी चैव कन्या च कौमारी युवती यती ॥ १२ ॥ अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा ॥ इदं च पठेत्स्तोत्रं दुर्गानामशताष्टकम् ॥ १३ ॥ नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥ धनं धान्यं सुतान् जायां हयं हस्तिनमेव च ॥ १४ चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥ कुमारीं पूजयित्वा च ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् ॥ १५ ॥ पूजयेत्प्रयतो भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम् ॥ तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि सर्वैः सुरवरैरपि ॥ १६ ॥ राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥ १७ ॥ गोरोचनालक्तककुंकुमेन सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण ॥ विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत्सदा धारयतः स्मरारिः ॥ १८ ॥ भौमावास्यां निशाभागे चन्द्रे शतभिषां गते ॥ विलिख्य प्रपठन् स्तोत्रं स भवेत्संपद पदम् ॥ १९ ॥ इति श्रीहरिकृष्णविरचिते० बृ० ध० उपासनास्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये विश्वसारतन्त्रोक्तश्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामा त्मकस्तोत्रनिरू० नाम द्वादशं प्रकरणम् ॥१२॥ अथ रुद्रचण्डीपाठः ॥ उक्तं च रुद्रयामले॥ श्रीशंकर उवाच ॥ चण्डिकाहृदयं न्यस्य शरणं यः करोत्यपि ॥ अनन्तफलमाप्नोति देवि चण्डीप्रसादतः ॥ १ ॥ रविवारे यदा चण्डीं पठेदागमसंमताम् ॥ नवावृत्ति फलं तस्य जायते नात्र संशयः ॥ २ ॥ सोमवारे यदा चण्डीं पठेद्यस्तु समाहितः ॥ सहस्रावृत्तिपाठस्य फलं जानीहि सुव्रते ॥ ३ ॥ कुजवारे जगद्धात्रीं पठेदागमसंमताम् ॥ शतावृत्तिफलं तस्य बुधे लक्षफलं ध्रुवम् ॥ ४ ॥ गुरौ यदि महामाये लक्षयुग्म फलं ध्रुवम् ॥ शुक्रे देवी जगद्धात्री चण्डीपाठेन शंकरि ॥ ५ ॥ ज्ञेयं तुल्यफलं दुर्गे यदि चण्डि समाहितः ॥ शनिवारे जगद्धात्रि कोट्यावृत्तिफलं ध्रुवम् ॥ ६ ॥ अत एव महेशानि यो वै चण्डीं समभ्यसेत् ॥ स सद्यश्च कृतार्थश्च राजराजाधिपो भवेत् ॥ ७ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

आरोग्यं विजयं सौख्यं वस्त्ररत्नप्रवालकम् ॥ पठनाच्छ्रवणाच्चैव जायते नात्र संशयः ॥ ८ ॥ धनं धान्यं प्रवालं च वस्त्रं रत्न विभूषणम् ॥ चण्डीश्रवणमात्रेण कुर्यात्सर्वं महेश्वरी ॥ ९ ॥ घोरचण्डी महाचण्डी चण्डमुण्डविखण्डिनी ॥ चतुर्वक्त्रा महावीर्या महा देवविभूषिता ॥ १० ॥ रक्तदन्ता वरारोहा महिषासुरमर्दिनी ॥ तारणी जननी दुर्गा चण्डिका चण्डविक्रमा ॥ ११ ॥ गुह्यकाली जगद्धात्री चण्डी च यामलोद्भवा ॥ श्मशानवासिनी देवी घोरचण्डी भयानका ॥ १२ ॥ शिवा घोरा रुद्रचण्डी महेशा गणभूषिता ॥ जाह्नवी परमा कृष्णा महात्रिपुरसुन्दरी ॥ १३ ॥ श्रीविद्या परमा विद्या चण्डिका वैरिमर्दिनी ॥ दुर्गा दुर्गे शिवा घोरा चण्डहस्ता प्रचण्डिका ॥ १४ ॥ माहेशी बगला देवी भैरवी चण्डविक्रमा॥ प्रमथैर्भूषिता कृष्णा चामुण्डा मुण्डमर्दिनी ॥१५॥ रणखण्डा चन्द्रघण्टा रणरामवरप्रदा॥भारणी भद्रकाली च शिवा घोरभयानका ॥१६ ॥ विष्णुप्रिया महामाया नन्दगोपगृहो द्भवा ॥ मङ्गला जननी चण्डी महाक्रुद्धभयंकरी ॥ १७ ॥ विमला भैरवी निद्रा जातिरूपा मनोहरा ॥ तृष्णा निद्रा क्षुधा माया शक्तिर्माया मनोहरा ॥ १८ ॥ तस्यै देव्यै नमस्तस्यै सर्वरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १९ ॥ इमां चण्डीं जगद्धात्रीं ब्राह्मणस्तु सदा पठेत् ॥ नान्यांस्तु पाठयेद्देवि पठने ब्रह्महा भवेत् ॥ २० ॥ यः शृणोति धरायां च मुच्यते सर्वपातकैः ॥ ब्रह्महत्या च गोहत्या स्त्रीवधोद्भवपातकम् ॥ २१ ॥ श्वश्रूगमनपापं च कन्यागमनपातकम् ॥ तत्सर्वं पातकं दुर्गे मातृगमनपातकम् ॥ २२ ॥ सुतस्त्रीगमने चैव यद्यत्पापं प्रजायते ॥ परदारकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥ २३ ॥ जन्मजन्मान्तरात्पापाद्गुरुहत्यादिपातकम् ॥ मुच्यते मुच्यते देवि गुरुपत्नीसुसंगमात् ॥ २४ ॥ मनसा वचसा पापं यत्पापं ब्रह्म हिंसने ॥ मिथ्यायाश्चैव यत्पापं तत्पापं नश्यति क्षणात् ॥ २५ ॥ श्रवणं पठनं चैव यः करोति धरातले ॥ स धन्यश्च कृतार्थश्च राज राजाधिपो भवेत् ॥२६॥ यः करिष्यत्यविज्ञाय रुद्रयामलचण्डिकाम्॥पापैरेतैः समायुक्तो रौरव नरकं व्रजेत् ॥ २७ ॥ अश्रद्धया च कुर्वन्ति ते च पातकिनो नराः ॥ रौरवं नरकं कुण्डं कृमिकुण्डं मलस्य वै ॥ २८ ॥ शुक्रस्य कुण्डं स्त्रीकुण्डं यान्ति ते ह्यचिरेण वै ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ततः पितृगणैः सार्धं विष्ठायां जायते कृमिः ॥ २९ ॥ शृणु देवि महामाये चण्डीपाठं करोति यः ॥ गङ्गायां चैव यत्पुण्यं काश्यां विश्वेश्वराग्रतः ॥ ३० ॥ प्रयागे मुण्डने चैव हरिद्वारे हरेर्गृहे ॥ तस्य पुण्यं भवेद्देवि सत्यं दुर्गे रमे शिवे ॥ ३१ ॥ त्रिगयायां त्रिकाश्यां वै यच्च पुण्यं समुत्थितम् ॥ तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं न संशयः ॥ ३२ ॥ भवानी च भवानी च भवानी चोच्यते बुधैः ॥ भकारस्तु भकारस्तु भकारः केवलः शिवः ॥ ३३ ॥ वाणी चैव जगद्धात्री वरारोहे भकारकः ॥ प्रेतवद्देवि विश्वेशि भकारः प्रेतवत्सदा ॥ ३४ ॥ आरोग्यं च जयं पुण्यं नातः सुखविवर्धनम् ॥ धनं पुत्रजरारोग्यं कुष्ठं गलितनाशनम् ॥ ३५ ॥ अर्धांगरोगा न्मुच्येत दद्रुरोगाच्च पार्वति ॥ सत्यं सत्यं जगद्धात्रि महामाये शिवे शिवे ॥ ३६॥ चण्डे चण्डि महारावे चण्डिका व्याधिनाशिनी ॥ मन्दे दिने महेशानि विशेषफलदायिनी ॥ ३७ ॥ सर्वदुःखाद्विमुच्येत भक्त्या चण्डीं शृणोति यः ॥ ब्राह्मणो हितकारी च पठे न्नियतमानसः ॥३८॥ मङ्गलं मङ्गलं ज्ञेयं मङ्गलं जयमङ्गलम् ॥ भवेद्धि पुत्रपौत्रैश्च कन्यादासादिभिर्युतः ॥ ३९ ॥ तत्त्वज्ञानेन निधन काले निर्वाणमाप्नुयात् ॥ मणिदानोद्भवं पुण्यं तुलाहिरण्यके तथा ॥ ४० ॥ चण्डीश्रवणमात्रेण पठनाद्ब्राह्मणोऽपि च ॥ निर्वाणमेति देवेशि महास्वस्त्ययने हितः ॥ ४१ ॥ सर्वत्र विजयं याति श्रवणाद्ग्रहदोषतः ॥ मुच्यते च जगद्धात्रि राजराजाधिपो भवेत ॥ ४२ ॥ महाचण्डी शिवा घोरा महाभीमा भयानका ॥ काञ्चनी कमला विद्या महारोगविमर्दिनी ॥ ४३ ॥ गुह्यचण्डी घोरचण्डी चण्डी त्रैलोक्यदुर्लभा ॥ देवानां दुर्लभा चण्डी रुद्रयामलसंमता ॥ ४४ ॥ अप्रकाश्या महादेवी प्रिया रावणमर्दिनी ॥ मत्स्यप्रिया मांस रता मत्स्यमांसबलिप्रिया ॥ ४५ ॥ मदमत्ता महानित्या भूतप्रमथसंगता ॥ महाभागा महारामा धान्यदा धनरत्नदा ॥ ४६ ॥ वस्त्रदा मणिराज्यादिसदाविषयवर्द्धिनी ॥ मुक्तिदा सर्वदा चण्डी महाविपदनाशिनी ॥ ४७ ॥ इमां हि चण्डीं पठते मनुष्यः शृणोति भक्त्या परमां शिवस्य ॥ चण्डीं धरण्यामतिपुण्ययुक्तां स वै न गच्छेत्परमन्दिरं किल ॥ ४८ ॥ जप्यं मनोरथं दुर्गे तनोति धरणी तले ॥ रुद्रचण्डीप्रसादेन किं न सिध्यति भूतले ॥ ४९ ॥ रुद्रध्येया रुद्ररूपा रुद्राणी रुद्रवल्लभा ॥ रुद्रशक्ती रुद्ररूपा रुद्रमुखसम

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

न्विता ॥ ५० ॥ शिवचण्डी महाचण्डी शिवप्रेतगणान्विता ॥ भैरवी परमा विद्या महाविद्या च षोडशी ॥५१॥ सुन्दरी परमा पूज्या महात्रिपुरसुन्दरी ॥ गुह्यकाली भद्रकाली महाकालविमर्दिनी ॥ ५२ ॥ कृष्णा तृष्णा स्वरूपा सा जगन्मोहनकारिणी ॥ अतिमन्त्रा महालज्जा सर्वमङ्गलदायिनी ॥ ५३ ॥ घोरतन्त्री भीमरूपा भीमा देवी मनोहरा ॥ मंगला बगला सिद्धिदायिनी सर्वदा शिवा ॥ ५४ ॥ स्मृतिरूपा कीर्तिरूपा योगीन्द्रैरपि सेविता ॥ भयानका महादेवी भयदुःखविनाशिनी ॥ ५५ ॥ चण्डिका शक्ति हस्ता च कौमारी सर्वकामदा ॥ वाराही च वराहास्या इन्द्राणी शक्रपूजिता ॥ ५६ ॥ माहेश्वरी महेशस्य महेशगणभूषिता ॥ चामुंडा नारसिंही च नृसिंहशत्रुमर्दिनी ॥५७॥ सर्वशत्रुप्रशमनी सर्वारोग्यप्रदायिनी ॥ इति सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ५८ ॥ नैव शोकं नैव रोगं नैव दुःखं भयं तथा ॥ आरोग्यं मङ्गलं नित्यं करोति शुभमंगलम् ॥ ५९ ॥ महेशानि वरारोहे ब्रवीमि सत्य मुत्तमम् ॥ अभक्ताय न दातव्यं मम प्राणाधिकं शुभम् ॥ ६० ॥ तव भक्ताय शान्ताय शिवविष्णुप्रियाय च ॥ दद्यात्कदाचि द्देवेशि सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥ ६१ ॥ अनन्तफलमाप्नोति शिवचण्डीप्रसादतः ॥ अश्वमेधवाजपेयराजसूयशतानि च ॥६२॥ तुष्टाश्च पितरो देवास्तथा च सर्वदेवताः ॥ दुर्गेयं मृन्मयी ज्ञानं रुद्रयामलपुस्तकम् ॥ ६३ ॥ मन्त्रमक्षरसंज्ञानं करोत्यपि नराधमः ॥ अत एव महेशानि किं वक्ष्ये तव सन्निधौ ॥ ६४ ॥ लम्बोदराधिकश्चण्डीपठनाच्छ्रवणात्तु यः ॥ तत्त्वमस्यादि वाक्येन मुक्तिं प्राप्नोति दुर्लभाम् ॥६५॥ इति श्रीह० बृ० धर्म० उपा० स्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये रुद्रयामलोक्तश्रीरुद्रचण्डीनिरूपणं नाम त्रयोदशं प्रकरणम् ॥ १३ ॥ अथ सरस्वतीलक्ष्मीकालिकासूक्तत्रयम् ॥ उक्तं च रुद्रयामले षट्तन्त्रे ॥ तत्रादौ विनियोगादिकम् ॐ अस्य श्रीत्रिमूर्तिमहासरस्वतीसूक्तस्य ब्रह्मा ऋषिः ॥ त्रिष्टुबनुष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि ॥ श्रीमहासरस्वती देवता ॥ श्रीमहासरस्वती प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ षडङ्गन्यासः ॥ ॐ क्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ क्लूं मध्य माभ्यां नमः ॥ ॐ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अथ ध्यानम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां शशिधरां क्लीं सात्त्विकीं सत्प्रियां बाणेक्षुं मुसलं त्रिशूलवरदं शङ्खं च घण्टां करैः ॥ बिभ्राणां हल कार्मुकं सुविलसत्सौन्दर्यरूपां परां पद्माभां हि निशुम्भशुम्भमथिनीं वन्दे महाशारदाम् ॥१॥ ॐ अस्य श्रीत्रिमूर्तिमहालक्ष्मीसूक्तस्य विष्णुर्ऋषिः ॥ त्रिष्टुबनुष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि ॥ श्रीमहालक्ष्मीर्देवता ॥ श्रीमहालक्ष्मीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ श्रामिति दीर्घबीजेन करषडङ्गन्यासः ॥ ॐ श्रां अङ्गु० ॥ ॐ श्रीं त० ॥ ॐ श्रूं म० ॥ ॐ श्रैंअ० ॥ ॐ श्रौं क० ॥ ॐ श्रः कर० कर० ॥ एवं हृदयादि ॥ अथ ध्यानम् ॥ नित्यां स्वर्णसरोजसुप्रकटितां बालार्ककोटिप्रभां श्वेतास्यस्तनमण्डलारुणमयां मध्ये विचित्र प्रभाम् ॥ सत्सालाकमलेषुखड्गकुलिशं कौमोदकीं चक्रकं शूलं वै परशुं च शङ्खममलं घण्टां च पाशं क्रमात् ॥ १ ॥ शक्तिं दण्डक चर्मचापदशकं दोर्भिर्वहन्तीं मुदा सान्द्रानन्दमयीं कमण्डलुधरां नीलोरुजङ्घाकुचाम् ॥ चित्रां माहिषमर्दिनीं गुणमयीं साम्राज्य लक्ष्मीप्रदां मायाबीजमयीं परावरमहालक्ष्मीं भजे राजसीम् ॥ २ ॥ ॐ अस्य श्रीत्रिमूर्तिमहाकालीसूक्तस्य सदाशिव ऋषिः ॥ त्रिष्टुबनुष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि ॥ श्रीमहाकाली देवता ॥ श्रीमहाकालीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ह्रां अ० ॥ ॐ ह्रीं त० ॥ ॐ ह्रूं म० ॥ ॐ ह्रैं अ० ॥ ॐ ह्रौं कनि० ॥ ॐ ह्रः कर० ॥ एवं हृदयादि ॥ अथ ध्यानम् ॥ घोरां भीमपराक्रमां दशकरैः खड्गेषुशूलं गदां चक्रं पाशभुशुण्डिके च परशुं चापं शिरो बिभ्रतीम् ॥ वागीशां मधुकैटभप्रमथिनीं ब्रह्मार्तिहन्त्रीं परां त्रिंशल्लोचनमण्डितां दशमुखीं वन्दे महाकालिकाम् ॥ ३ ॥ एवं न्यासध्याने कृत्वा सूक्तत्रयं पठेत् ॥ तद्यथा ॥ राजोवाच ॥ मुने कथय सर्वज्ञ भूयः किंचिदनुत्तमम् ॥ तत्त्वमेतस्य सर्वस्य येन सिद्धिरवाप्यते ॥ १ ॥ ऋषिरुवाच ॥ भूयः शृणु महाभाग देवी माहात्म्यमुत्तमम् ॥ विना येन स्तवश्चायं निर्जीवो नृपनन्दन ॥ २ ॥ दृष्ट्वा शुम्भं विनिहतं दारुणं देवकण्टकम् ॥ आजग्मुः पर मानन्दाद् ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ३ ॥ देव्याः स्तुतिं समाधातुं गतास्तल्लक्षसंयताः ॥ आज्ञामादाय देवेश्याः कर्तुं दर्शनमादरात् ॥ ॥ ४ ॥ बद्धाञ्जलिपुटाः साक्षात्तुष्टुवुः क्रमशः शिवाम् ॥ लोकानां च हितार्थाय देवीसूक्तानि पार्थिव ॥ ५ ॥ ब्रह्मा सरस्वतीसूक्तं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

लक्ष्मीसूक्तं जनार्दनः ॥ सूक्तं तथा महाकाल्याः शंकरः स्वयमब्रवीत् ॥ ६ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ अजां पुराणीममरां सनातनीं चतुर्भुजां पुस्तकमक्षधारिणीम् ॥ वराभयाभ्यामनुशोभिहस्तां नमामि तां जाड्यजटाविनाशिनीम् ॥ ७ ॥ सरस्वतीं त्वामनुनौमि वाचो वरप्रदां हंसवराधिरूढाम् ॥ मुक्तामणिद्योतितकण्ठहारां भाग्यैकलभ्यां परमां पवित्राम् ॥ ८ ॥ श्रीकण्ठशक्तित्रयशोभमानां दशारतुर्येण कृतानुरूपाम् ॥ पञ्चारवासोभृतभूगृहारां सरस्वतीं त्वां प्रणमामि देवीम् ॥ ९ ॥ कलाढ्यमन्त्रामधिकोटिवासां विहारयन्त्रां विमलैकशोभाम् ॥ स्वच्छावदातां स्फटिकानुरूपां सरस्वतीं त्वां प्रणमामि मातः ॥ १० ॥ वाक्कामकार्यैः परमैः पवित्रै रमारमाह्रीवरदानदक्षैः ॥ बीजैरमीभिः कपिबीजयुक्तैः क्लींयुग्ममिश्रैरिति मन्त्रराजः ॥ ११ ॥ एकेन चैकेन च युग्मकेन द्व्भ्यां मथैकेन तथैव शेषैः ॥ कराङ्गुलिस्तैः परमोत्तमोऽयं निहन्ति पापानि च साधकानाम् ॥ १२ ॥ हठेन वै शृङ्खलया च श्रेण्या विधातृपत्न्या च तथैव वाचा ॥ श्रीः कीर्तिब्राह्म्यादिभिः शोभया च न्यासैरमीभिः पतितोऽपि शंभुः ॥ १३ ॥ द्रव्येण होमात्सकलार्थसिद्धिः सुकिंशुकैर्वागपि सिद्धिमृच्छेत् ॥ तैः साकमाज्येन रमानिवासः सुपायसेनापि च वेदसिद्धिः ॥ १४ ॥ न चाम्ब ते महिमानं वदामि सरस्वति प्रथिते लोकमध्ये ॥ जानन्ति किं बुद्बुदा भूमितोये जडा वयं ब्रह्महरीशमुख्याः ॥१५॥ तथैव वाचा वयं संवदामो जिघ्राम शक्त्या च तथैव जीवाः ॥ पश्याम हे त्वां हि मातर्महेशि स्पृशाम साक्षात्त्वयि संयुतायाम् ॥ १६ ॥ स्वादं विदामस्तव शक्तियोगाद्गृह्णीमहे तव शक्त्या महेशि ॥ गच्छाम हे तव शक्तेः प्रभावादानन्दयुक्तास्तव सन्निवेशात् ॥ ॥ १७ ॥ आत्मा मनस्त्वं त्वमेवासि देहस्त्वमेव वै चैन्द्रियपञ्चतत्त्वम् ॥ त्वमेव वै विषयाः शब्दमुख्याः परावरेषां परमा त्वमेव ॥ १८ ॥ रविश्च ते चन्द्रमाश्च ते ताराश्चते भूमिश्च ते जलं च ते तेजश्च ते वायुश्च ते व्योम च ते शब्दश्च ते स्पर्शश्च ते रूपं च ते रसश्च ते गन्धश्च ते ॥ प्राणश्च तेऽपानश्च ते व्यानश्च ते उदानश्च ते समानश्च ते नागश्च ते कूर्मश्च ते कृकलश्च ते देवदत्तश्च ते धनंजयश्च ते भूतात्मा च ते ॥ ज्ञानात्मा च ते सर्वात्मा च ते मम चित्तं त्वय्येव विनिवेश्यताम् ॥ १९ ॥ यदा न चाण्डं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

भुवनानि जीवा नाहं न विष्णुर्न च पार्वतीशः॥ न चेश्वरो नापि सदाशिवश्च त्वमेव चासीदिति वा भविष्या॥२०॥कालस्त्वमेवासि जगत्त्रयाणां स्वभाववीर्यादिकं च त्वमेव॥ त्वमेव विश्वं परमात्मशक्तिर्नमामि ते पादपीठं सरस्वति॥ २१॥ त्वं वेदवाणी निखिलाश्च वेदास्त्वं शब्दशक्तिश्च तथाऽर्थशक्तिः॥ त्वं ब्रह्मविद्याऽपि परावरेशि त्वां ब्रह्मशक्तिं शरणं प्रपद्ये॥२२॥ सूक्तं तवेदं सुभगं सरस्वति प्रातश्च मध्याह्नकाले च सायम्॥ पठन्ति ये श्रद्धया युक्तचित्तास्ते भोगमोक्षौ सहसा लभन्ते॥ २३॥ न ते कुयोनिं न दरिद्रतां चाध्यात्मादितापं न च संलभन्ते॥ त एव धन्याश्च त एव पूज्याः सर्वत्र मानो भवतीह तेषाम्॥ २४॥ इदं पुराणं विरजं सुधामयं सुतत्त्वभूतं जगतां त्रयाणाम्॥ ते प्राप्नुवन्ति प्रकटप्रभावास्त्वां सर्वयोनिं शरणं प्रपद्ये॥ २५॥ ऋषिरुवाच॥ स्तुत्याऽनया वेदवाण्या सर्वसारस्वरूपया॥ प्रसन्नादेवदेवेशी महापूर्वा सरस्वती॥ २६॥ आविर्भूता महादेवी ब्रह्मतोषैककारिणी॥ उवाच वचनं दिव्यं ब्रह्मानन्दप्रदायकम्॥ २७॥देव्युवाच॥ स्तुत्याऽनया च ते ब्रह्मन् भृशं तोषसमन्विता॥ तुष्टाऽस्मि व्रियतां देव वरं संतोषकारकम्॥ २८॥ ब्रह्मोवाच॥ त्वदर्चने मनो देवि दृढं भवतु सर्वदा॥ एष एव वरः साक्षादुत्तमो व्रियते मया॥ २९॥ सुसूक्तेनापि देवेशि तेजो दिव्यं विधीयताम्॥ येन कार्याणि सिध्यन्ति साधकानां महात्मनाम्॥ ३०॥ श्रीदेव्युवाच॥ सर्वदा ते मनो देवीकुलधर्मैः सुपूजितम्॥ दृढं भवतु सूक्तं च प्रसादान्मे परंतप॥ ३१॥ सर्वसिद्धिप्रदं चास्तु परमानन्ददायकम्॥ विना सूक्तं पठेद्यस्तु स्तोत्रं सप्तशतीति च॥ ३२॥ मातृगामी स विज्ञेयो नरकावासतत्परः॥ ममावज्ञापराधेन ब्रह्मघ्नानां गतिं व्रजेत्॥ ३३॥ ऋषिरुवाच॥ एवमुक्त्वा वचो देवी तूष्णीमासीन्नृपोत्तम॥ इति श्रीसरस्वतीसूक्तम्॥ अथाञ्जलिं समाधाय हरिः प्रोवाच विश्वकृत्॥ ३४॥ हरिरुवाच॥ परावरेशां जगदादिभूतां परां वरेण्यां वरदां वरिष्ठाम्॥ वरेश्वरीं बहुवाग्गिमप्रगीतां त्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये॥ ३५॥ श्रियं समस्तैरधिवासभूतां महासुलक्ष्मीं धरणीधरां च॥ अनादिमादिं परमार्थरूपां त्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये॥ ३६॥ एकामनेकां विविधाशुकार्यां सुकारिणीं सदसद्रूपिणीं च॥ रूपा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मरूपां च शिवां शिवप्रदां त्वां विश्व० ॥ ३७ ॥ सर्वाश्रयां सर्वजगन्निवासां श्रीमन्महालक्ष्मीमनादिदेवीम् ॥ शक्तिस्वरूपांच शिवस्वरूपां त्वां विश्व० ॥ ३८ ॥ कामाभिधां श्रीमधिवासभूतां ह्रींरूपिणीं बीजकपिप्रभावाम् ॥ कर्णाष्टबीजां परमार्थसंज्ञां त्वां विश्व० ॥ ३९ ॥ वैश्वानरस्त्रीसहितेन देवी श्रीमन्त्रराजेन विराजमानाम् ॥ सर्वार्थदात्रीं परमां पवित्रां त्वां विश्व० ॥४०॥ त्रिकोणपञ्चारयुगप्रभावां षट्कोणमिश्रां द्विदशारयुक्ताम् ॥ अष्टारचक्रादिनिवासभूतां त्वां० ॥ ४१ ॥ पुनर्दशारद्वितयेन युक्तां पञ्चारकोणाङ्कितभूगृहां च ॥ यन्त्राधिवासामपि यन्त्ररूपां त्वां विश्व० ॥ ४२ ॥ संभावितां सर्वदा न्यासगम्यां सर्वस्वरूपा मपि सर्वसेव्याम् ॥ सर्वाक्षरन्यासवशां वरिष्ठां त्वां विश्व० ॥ ४३ ॥ सृष्टिस्थितिप्रलयाख्यैश्च बीजैर्न्यासं विधाय प्रजपन्ति ये त्वाम् ॥ त एव राजेन्द्रनिघृष्टपादा विद्याधरेन्द्रस्य यशोलभन्ते ॥ ४४ ॥ प्रपूज्य यन्त्रं विधिना महेशि साभ्यासपूजाः परमां सुभाग्याः ॥ जपन्ति ये त्वां विविधार्थदात्रीं त एव धान्याः कुलमार्गनिष्ठाः ॥ ४५ ॥ जानन्ति के पशवस्ते कुरूपा ब्रह्मादिगीते महिमा महेशि ॥ केचिन्महान्तो निजधामलाभा जानन्ति ते देवि परं सुधाम ॥ ४६ ॥ विधाय कुण्डं विधिना स्थण्डिलं वा सौगन्धिहोमं सफलं प्रकुर्वते ॥ त्वत्तोषणाज्जायते भाग्यमात्रं तेषां सुदेवैरपि योगगम्यम् ॥ ४७ ॥ पुनः स्तुवन्ति प्रयताश्च मातः स्तोत्रैरुदारैः कुलयोगयुक्ताः ॥ त एव धन्याः परमार्थभाजो भोगश्च मोक्षश्च किमस्ति तेषाम् ॥ ४८॥ ऋषिरुवाच ॥ इति स्तुत्वा ऽवसाने तु महालक्ष्मीं ददर्श सः ॥ चतुर्भुजां त्रिनयनां महिषासुरघातिनीम् ॥ ४९ ॥ अस्य श्रीमन्महालक्ष्मीः प्रसन्ना स्तुति गौरवात् ॥ उवाच स्मितशोभाढ्या नारायणमजं शुभम् ॥ ५० ॥ देव्युवाच ॥ वरं वरय देवेश नारायण सनातन ॥ दास्याम्य द्याभिदातव्यं तव स्तुत्या वशीकृता ॥ ५१ ॥ नारायण उवाच ॥ मातः परकारुण्ये महालक्ष्मि वरप्रदे ॥ कुलाचारे मतिर्मेऽस्तु दृढं तेऽस्तु तथा शिवे ॥५२॥ तव सूक्तं च सफलं तव सुप्रीतिकारणम् ॥ देव्युवाच ॥ वरमेतन्महाभाग नारायण सनातन॥५३॥सूक्त मेतद्विना यस्तु पठेत्सप्तशतीं नरः ॥ स याति च महाघोरं नरकं दारुणं किल ॥ ५४ ॥ लिप्यते परमशाप्यं मम कोपविघूर्णितः ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

लक्ष्मीस्तोत्रं विना सप्तशतीस्तोत्रं निषिध्यते ॥ ५५ ॥ ऋषिरुवाच ॥ एवमुक्त्वा वचो देवी तूष्णीं भगवती नृप ॥ इति श्रीमहालक्ष्मीसूक्तम् ॥ ततोऽञ्जलिं समाधाय शिवो वाचं मुदा युतः ॥ ५६ ॥ तुष्टाव वाग्भिर्दिव्याभिर्महाकालीं महेश्वरः ॥ वेदवाणीं सुतत्त्वाभिर्लोकानां हितकाम्यया ॥ ५७ ॥ श्रीशिव उवाच ॥ शिवामनिन्द्यां विविधप्रभावां कालीं कलामालिनीं विश्ववन्द्याम् ॥ कपालखट्वाङ्गधरां नृमुण्डमालाविभूषां मृगचर्मशोभाम् ॥ ५८ ॥ सुशुष्कमांसां च शवासनस्थां विभीषणां भीषयन्तीं सुरारीन् ॥ रक्तप्रियां मांसमदाविपूर्णां कालीं शरण्यां शरणं व्रजामि ॥ ५९ ॥ सुघोरबीजं च कपीश्वरश्च चिन्तामणिः कुब्जिककामरूपे ॥ विद्यासु विद्यासु च कामराजं कामः कलामालिनी कामराजम् ॥ ६० ॥ वह्नेर्वधूर्मन्त्रराजोऽयमीशे विश्वं पुनातीश्वरि देवि वन्द्ये ॥ मन्त्रेण चानेन सिध्यन्ति सर्वाः सुसिद्धयः सर्वजगन्निवासे ॥ ६१ ॥ पञ्चारयुग्मं च त्रिकोणयुग्मं पुनश्च पञ्चारयुगेन बद्धम् ॥ कलाप्रकोष्ठं किल भूगृहं च यन्त्रेश्वरं ते च पदाब्जवासम् ॥ ६२ ॥ संपूज्य यन्त्रं तव विश्वनायिके निष्पापिनस्ते सहसा भवन्ति ॥ ये साधकास्तव मार्गानुसारिणः कुलानुवृत्त्या परमाः पवित्राः ॥ ६३ ॥ ते सिद्धिमृद्धिं च वशानुगम्यां नृणां वशीकृत्य गृणन्ति भूपाः ॥ समस्तमन्त्रेण विधाय चाङ्गन्यासादिकं भक्तिसुभावयुक्ताः ॥ ६४ ॥ ते किंकरीकृत्य गृणन्ति देवानीत्से जगत्येव विभूतियुक्ते ॥ वदामि नान्यं न शृणोमि चान्यं गृणामि नान्यं न विचिन्तयामि ॥ ६५ ॥ स्मरामि नान्यं न भजामि चान्यं ध्यायामि नान्यं न वितर्कयामि ॥ गायामि नान्यं तव मन्त्रपादात्त्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये ॥ ६६ ॥ येषां न दैवं त्वमिहासि देवि नाराधयन्तीह च ते कुबुद्धयः ॥ येऽन्धं तमः प्रविशन्ति ते सदा तेषां मां भूद्दर्शनं ते दुरात्मनाम् ॥ ॥ ६७ ॥ ऋषिरुवाच ॥ इति वाक्यं समाकर्ण्य परमामृतसंमितम् ॥ प्रसन्नाऽभून्महाकाली व्रियतामीप्सितो वरः ॥ ६८ ॥ इत्युवाच विशालाक्षी शम्भोरानन्ददायिनी ॥ प्रसन्ना परमाह्लादसंयुता शिवभाषणात् ॥ ६९ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ व्रियतां मनसोऽभीष्टो वरो जगति दुर्लभः ॥ दास्याम्यद्याभिदातव्यं तव स्तुत्या वशीकृता ॥ ७० ॥ शिव उवाच ॥ कुलाचारेण ते देवि मतिर्मेऽस्तु कदा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

चन ॥ शिथिला देवदेवेशि सूक्तं च सफलं तव ॥ ७१ ॥ देव्युवाच ॥ एवमस्त्विति चोक्त्वाऽथ तिस्रो देव्यः सनातनाः ॥ अन्तर्धिमापुः परमा एकस्मिन्नास्थिताभवन् ॥ ७२ ॥ अथ तान्स्तुवतो देवान्प्रोवाच वचनं मुदा ॥ संतोषयन्ती च मुहुर्लोकानुग्रह तत्परा ॥ ७३ ॥ देव्युवाच ॥ शृणुध्वं प्रीतिसंयुक्ता ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ देवीसूक्तं परं ध्यायन् भविष्यति वरार्थदम् ॥ ७४ ॥ देवीसूक्तं विना देवा ये च सप्तशतीं नराः ॥ श्रोष्यन्ति च पठिष्यन्ति तेषां शापः पदे पदे ॥ ७५ ॥ देवीसूक्तं विना पाठो ह्यरण्ये रोदनं यथा ॥ स्तोत्रोच्चारेण चानेन पूर्णं स्तोत्रमभूदिदम् ॥७६॥ देवा ऊचुः ॥ मातः सप्तसतीस्तोत्रफलश्रुतिरिहोच्यताम् ॥ यां समाकर्ण्य जीवानां विश्वासो जायते भृशम् ॥७७॥ ऋषिरुवाच ॥ इति वाक्यं समाकर्ण्य ब्रह्मविष्णुशिवोदितम् ॥ फलस्तुतिमथो वाच स्तोत्रस्यास्य महामते ॥७८॥ इति श्रीहरिकृष्ण०बृ०ध० उपासनास्त०श्रीदुर्गोपा० ध्याये रुद्रयामलोक्तदेवीसूक्तत्रयनिरूपणं नाम चतुर्दशं प्रकरणम्॥१४॥अथ श्रीचण्डिकामालामन्त्रः ॥ उक्ताश्चथर्वणागमसंहितायाम् ॥ ॐ अस्य श्रीचण्डिकामालामन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीचण्डिका देवता ॐ ह्रः बीजम् ॐ सौं शक्तिः ॐ ह्रौ कीलकम् मम श्रीचण्डिकाप्रसादसिद्ध्यर्थं सकलजन वश्यार्थं श्रीचण्डिकामालामन्त्रजपे विनियोगः ॥ अथ न्यासः ॥ ॐ ह्रां फां इत्यादिषडङ्गानि विन्यस्य ॥ अथ ध्यानम् ॥ कल्याणीं कमलासनस्थशुभदां गौरीं घनश्यामलां मालादामविभूषितामभयदामार्द्रैकरक्षैः शुभैः ॥ श्रीं ह्रीं क्लीं वरमन्त्रराजसहितामानन्दपूर्णा त्मिकां श्रीशैले भ्रमराम्बिकां शिवयुतां चिन्मात्रमूर्तिं भजे ॥१॥ इति ध्यात्वा ॥ अथ मालामन्त्रः॥ ॐ ह्रः ॐ सौं ॐ ह्रौं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री जय जय चण्डिका चामुण्डे चण्डिके त्रिदशमुकुटकोटिसंघट्टितचरणारविन्दे गायत्रि सावित्रि सरस्वति महि कृताभरणे भैरवरूपधारिणि प्रकटितदंष्ट्रोग्रवदने घोराननयने ज्वलज्ज्वालासहस्रपरिवृते महाट्टहासाद्धवलीकृतदिगन्तरे सर्वयुगपरिपूर्णे कपालहस्ते गजाजिनोत्तरीये भूतवेतालपरिवृते प्रकम्पितधराधरे मधुकैटभमहिषासुरधूम्रलोचनचण्डमुण्डरक्तबीजशुम्भनिशुम्भ दैत्यनिकृते कालरात्रि महामाये शिवे नित्ये ॐ ऐं ह्रीं ऐन्द्रि आग्नेयि नैऋति वारुणि वायव्ये कौबेरि ईशान्ये ब्रह्मविष्णु

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

शिवस्थिते त्रिभुवनधराधरे वामे ज्येष्ठे रौद्रि अम्बिके ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराहीन्द्राणी ईशानी महालक्ष्मी इति स्थिते महोग्रविषमहाविषोरगफणामणिमुकुटरत्नमहाज्वालामलमणिमहाहिहारबाहुकहोत्तमाङ्गनवरत्ननिधिकोटितत्त्वबाहुजिह्वावाणीशब्दस्पर्श रूपरसगन्धात्मिके क्षितिसाहसमध्यास्थिते महोज्ज्वलमहाविषोपविषगन्धर्वविद्याधराधिपते ॥ ॐ ऐंकारा ॐ ह्रींकारा ॐ क्लीं कारा हस्ते ॐ आं ह्रीं क्रौं अनग्रेऽनग्रे पाते प्रवेशय २ ॐ द्रां द्रीं शोषय २ ॐ द्रां द्रीं होमय २ ॐ क्लां क्लीं दीपय २ ॐ ब्लूं ब्लूं संतापय२ॐसौं सौं उन्मादय २ ॐ म्लैं म्लैं मोहय २ ॐ खां खां शोधय २ ॐ द्यां द्यां उन्मादय २ ॐ ह्रीं ह्रीं आवेशय २ ॐ स्त्रीं स्त्रीं उच्छादय २ ॐ स्त्रीं स्त्रीं आकर्षय २ ॐ हुं हुं आस्फोटय २ ॐ त्रूं त्रूं त्रोटय २ ॐ छां छां छेदय २ ॐ कूं कूं उच्चाटय २ ॐ हुं हूं हन २ ॐ ह्लीं ह्लीं मारय २ ॐ घ्रीं घ्रीं घर्षय २ ॐ स्वीं स्वीं विध्वंसय २ प्लूं प्लूं प्लावय २ ॐ भ्रां भ्रां भ्रामय २ ॐ म्रां म्रां दर्शय २ ॐ दां दां दिशो बन्धय २ ॐ दीं दीं वर्तिनामेकाग्रचित्ता विशिकुरुतेङ्गये ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं फ्रः ॐ चामुण्डायै विच्चे स्वाहा मम सकलमनोरथं देहि २ सर्वोपद्रवं निवारय २ अमुकं वशं कुरु २ भूतप्रेतपिशाचब्रह्मपिशाच ब्रह्मराक्षसयक्षयमदूतशाकिनीडाकिनीसर्पश्वापदतस्करादिकं नाशय २ मारय २ भञ्जय २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा १ जपो नित्यम् १२१ आदौ सुवासिन्याः कुमार्याः पूजां कृत्वा पश्चाज्जपं कुर्यात् ॥ एवमेकविंशतिशतजाप्येन स्त्रियो वा पुरुषोऽपि वा ॥ राजद्वारे श्मशाने च विवादे शत्रुसंकटे ॥ शत्रोरुच्चाटने चैव सर्वकार्याणि साधयेत् ॥२॥ इति श्रीह० बृ०ध०उपा०स्त०श्रीदुर्गोपा० ध्याये अथर्वणागमसंहितोक्तश्रीचण्डिकामालामन्त्रनिरूपणं नाम पञ्चदशं प्रकरणम् ॥१५॥ अथ शूलिनीदुर्गामन्त्रविधानम् ॥ उक्तं च शारदातिलके ॥ ज्वलज्वलयशब्दान्ते शूलिनीति पदं पुनः ॥ दुष्टग्रहहुमस्यान्ते वह्निजायावधिर्मनुः ॥ १ ॥ पञ्चभिर्दशभिः प्रोक्तो ग्रहशत्रुविनाशनः ॥ ऋषिर्दीर्घतमाः प्रोक्तः ककुप्छन्द उदाहृतम् ॥ २ ॥ शूलिनी देवता प्रोक्ता समस्तसुरवन्दिता ॥ दुर्गे ह्रद्वरदे शीर्षं विन्ध्यवासिनि तच्छिखा ॥ ३ ॥ असुरान्ते मर्दिनी स्याद्युद्धपूर्वंप्रिये पुनः ॥ त्रासयद्वितयं वर्म देवसिद्धसुपूजिते॥ ४ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नान्दिनी स्याद्रक्षयुग्मं महायोगेश्वरी क्रमात् ॥ शूलिन्याद्या हुंफडन्ताः पञ्चाङ्गमनवः स्मृताः ॥ ५ ॥ अध्यारूढां मृगेन्द्रं सजलजलधरश्यामलां हस्तपद्मैः शूलं बाणं कृपाणमरिजलजगदाचापपाशान्वहन्तीम् ॥ चन्द्रोत्तंसां त्रिनेत्रां चतसृभिरसिमत्खेटकं बिभ्रतीभिर्देवीं संसेव्यमानां प्रतिभटभयदां शूलिनीं तां नमामि ॥ ६ ॥ मनुमेनं जपेन्मन्त्री वर्णलक्षं विचक्षणः ॥ सर्पिषाऽन्नेन वा होमस्तद्दशांशमितो भवेत् ॥ ७ ॥ प्रागुक्ते पूजयेत्पीठे वक्ष्यमाणेन वर्त्मना ॥ विधाय पूजामङ्गानि पूज्याः पत्रेषु शक्तयः ॥ ८ ॥ दुर्गाऽऽद्या वरदा विन्ध्यवासिन्यसुरमर्दिनी ॥ युद्धप्रिया पञ्चमी स्याद्देवसिद्धसुपूजिता ॥ ९ ॥ सप्तमी नन्दिनी प्रोक्ता महायोगेश्वरी परा ॥ दलाग्रेषु तदस्त्राणि चक्रं शङ्खमसिं पुनः ॥ १० ॥ गदेषुचापशूलानि बाणपाशान्दिशाधिपान् ॥ इत्थं जपादिभिः सिद्धं कुर्यात्कर्म निजेप्सितम् ॥ ११ ॥ अष्टोतरसहस्रं यस्तिलैस्त्रिमधुराप्लुतैः ॥ नित्यं प्रजुहुयात्तस्य शक्तिः स्यादतिमानुषी ॥ १२ ॥ अष्टोत्तरशतं नित्यं सर्पिषा जुहुयान्नरः ॥ वाञ्छितं वत्सरादर्वाक् प्राप्नोति महतीं श्रियम् ॥ १३ ॥ पूर्वं होमो भवेन्नृणां सर्ववाञ्छित सिद्धिदः ॥ छुरिकाद्यानि शस्त्राणि जप्तानि मनुनाऽमुना ॥१४॥ संसिक्ताज्यविलिप्तानि वितरन्ति जयश्रियम्॥अश्वत्थार्कसमिद्भिर्वा तिलैर्वा मधुरोक्षितैः ॥ १५ ॥ होमो वै दिशति क्षिप्रमीप्सितान्मान्त्रिणो वशान् ॥ उद्यदायुधहस्तां तां देवीं कालघनप्रभाम् ॥ १६ ॥ ध्यात्वाऽऽत्मानं जपेन्मन्त्रं स्पृष्ट्वा तं मुञ्चति ग्रहः ॥ सर्पाखुवृश्चिकादीनां विषमाशु विनाशयेत् ॥ १७ ॥ मनुनाऽनेन विधिवन्मन्त्रविद्देवताधिया ॥ मन्त्रेणानेन संजप्तान्बाणानादाय योधिकः ॥१८॥ विमुञ्चेत्प्रतिसेनायां सा द्रुतं विद्रुता भवेत् ॥ शूलपाशधरां देवीं ध्यात्वाऽऽत्मानमनाकुलः ॥ १९ ॥ प्रविशेद्युद्धदेशं यो जित्वाऽऽयाति स निर्व्रणः ॥ जुहुयात्तिलसिद्धार्थैर्लक्षमेकं यथाविधि ॥ २० ॥ नामयुक्तं जपेन्मन्त्रं वश्याऽसौ मतिमेष्यति ॥ गुटिकां गोमयोत्पन्नां हुत्वाऽष्टशतसंख्यया ॥ २१ ॥ सप्ताहान् कुरुते मन्त्री विद्वेषं स्निग्धयोर्मिथः ॥ गृहीत्वा गोमयं व्योम्नि त्रिसहस्रं जपेत्पुनः ॥ २२ ॥ गमिष्यति द्वारदेशे निखातं स्तम्भकृद्भवेत्॥बहुनोक्तेन किं सर्वं साधयेन्मनुनाऽमुना ॥ २३ ॥ अस्य पूजाप्रयोगः तन्त्रसारे ॥ प्रातःकृत्यादि दुर्गामंत्रोक्तपीठन्यासान्तं कर्म कृत्वा ऋष्यादि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

न्यासं कुर्यात् ॥ शिरसि दीर्घतमस ऋषये नमः ॥ मुखे ककुप्छन्दसे नमः हृदि शूलिन्यै देवतायै नमः ॥ तथा च निबन्धे ॥ ऋषिर्दीर्घतमाः प्रोक्तः ककुपछन्द उदाहृतम् ॥ शूलिनी देवता प्रोक्ता समस्तसुरवन्दिता ॥ २६ ॥ ततः कराङ्गन्यासौ कुर्यात् ॥ शूलिनि दुर्गे हुंफट्ट अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ शूलिनि वरदे हुंफट्ट तर्जनीभ्यां स्वाहा॥शूलिनि विन्ध्यवासिनि हुंफट्ट मध्यमाभ्यां वषट् ॥ शूलिन्यसुरमर्दिनि युद्धप्रिये त्रासय हुंफट्ट अनामिकाभ्यां हुं ॥ शूलिनि देवसिद्धसुपूजिते नन्दिनि रक्ष रक्ष महायोगेश्वरि हुंफट्ट कनिष्ठिकाभ्यां फट्ट ॥ एवं हृदादिषु ॥ ततो ध्यानम् ॥ अध्यारूढां मृगेन्द्रं सजलजलधरश्यामलां पद्महस्तैः शूलं बाणं कृपाण मरिजलजगदाचापपाशान्वहन्तीम् ॥ चन्द्रोत्तंसां त्रिनेत्रां चतसृभिरसिमत्खेटकं बिभ्रतीभिः कन्याभिः सेव्यमानां प्रतिभटभयदां शूलिनीं भावयामि ॥ ३० ॥ एवं ध्यात्वा मानसैः संपूज्यार्घस्थापनं कुर्यात ॥ ततः पूर्वोक्तपीठपूजां विधाय पुनर्ध्यात्वाऽऽवाह नादिपञ्चपुष्पाञ्जलिदानपर्यन्तं कर्म कृत्वा आवरणदेवतापूजामारभेत् ॥ तद्यथा ॥ अग्निनिर्ऋतिवाय्वीशानकोणेषु दिक्षु च पूर्वोक्तानि पूजयेत् ॥ ततः पूर्वादि पत्रेषु ॥ ॐ दुर्गायै नमः एवं वरदायै विन्ध्यवासिन्यै असुरमर्दिन्यै युद्धप्रियायै देवसिद्धसुपूजितायै नन्दिन्यै महायोगेश्वर्यै ॥ ततः पत्राग्रेषु तदस्त्राणि पूजयेत् ॥ अस्य पुरश्चरणं पञ्चदशलक्षजपः ॥ अथ वर्णमनुं वक्ष्ये शीघ्रबोधविधायिनीम् ॥ यस्यामनुपलब्धायां सर्वमेतज्जगज्जडम् ॥ ३९ ॥ अथ श्रीशूलिनीदुर्गामहामन्त्रः ॥ ॐ अस्य श्रीशूलिनीदुर्गामहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीशूलिनी दुर्गा परमेश्वरी देवता हुं बीजं मं शक्तिः स्वाहा कीलकं मम शूलिनीदुर्गासप्रादसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ॥ ॐ श्रीशूलिनि वरदे देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट्ट ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ श्रीशूलिनि वरदे देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट्ट ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ श्रीशूलिनि युद्धविप्रे देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट्ट ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ श्रीशूलिनि महिषासुरमर्दिनि देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट्ट ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ श्रीशूलिनि विन्ध्यवासिनि यन्त्रमन्त्रतन्त्राकर्षिणि देवसिद्धसु

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ श्रीशूलिनि सर्वसिद्धिप्रदायिनि देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ एवं हृदयादिन्यासः ॥ ॐ श्रीशूलिनि वरदे देव सिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रां हृदयाय नमः ॐ श्रीशूलिनि वरदे देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष २ महा योगेश्वरी हुंफट् ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ श्रीशूलिनि युद्धप्रिये देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रूं शिखायै वषट् ॥ ॐ त्रिशूलिनि महिषासुरमर्दिनि देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रैं कवचाय हुम् ॥ ॐ श्रीशूलिनि विन्ध्यवासिनि यन्त्रमन्त्रतन्त्राकर्षिणि देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ श्रीशूलिनि सर्वसिद्धप्रदायिनि देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रः अस्त्राय फट् ॥ अथ ध्यानम् ॥ बिभ्राणा शूलबाणा स्यभयवरगदाचापपाशान्कराग्रैर्मेघश्यामा किरीटोल्लसितशशिकलाभूषणा ॥ भीषणास्या ॥ सिंहस्कन्धाधिरूढा चतसृभिरचितं खेटकं बिभ्रतीभिः कन्याभिर्भिन्नदैत्या भवतु भवभयध्वंसिनी शूलिनी नः ॥ १ ॥ संहारमुद्रां प्रदर्श्य योनिमुद्रां प्रणमेत् लमिति पञ्चपूजा ॥ अथ मन्त्रः ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं ज्वल २ शूलिनि दुष्टग्रहान् हुंफट् स्वाहा ॥ अथ शूलिनीदुर्गामूलमन्त्रस्य षडङ्गं कृत्वा मूलं जपित्वाऽनन्तरं मालामन्त्रं पठेत् ॥ अथ मालामन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवति कङ्कालरात्रि दुं दुर्गे शुं शूलिनि बं बटुकभैरवि अर्धरात्रविलासिनि प्रतापकेलिनि महाज्ञानधारिणि सर्वभूतप्रेतपिशाचमदभीषमाकर्षय २ आवे शय २ केलय २ भाषय २ महाबटुकभैरवी हुंफट् स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवति भद्रकालि कालकूटमोहिनि ऐं ह्रीं श्रीं इष्टकामार्थसिद्धिप्रदायिनि सकलज्ञापिनि संक्रामिणि ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही इन्द्राणी चामुण्डा भैरवेश्वरी आकर्षय २ आवेशय २ केलय २ भाषय २ ऐं ह्रीं श्रीं हन २ सप्तमातृके हुंफट् स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवति ह्रीं ज्वल २ शूलिनि संहारकालि अष्टभुजे शालिनि एहि २ आगच्छ २ आवेशय २ केलय २ भाषय २ बन्धय २ घातय २ छिन्धि २

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

रारारारा ग्राहय २ सकलग्रहान् संहारय २ भूतग्रहप्रेतग्रहपिशाचग्रहब्रह्मराक्षसग्रहडाकिनीग्रहशाकिनीग्रहकाकिनीग्रहराकिनीग्रह हाकिनीग्रहयाकिनीग्रहकालनिग्रहमहाकालनिग्रहावेशग्रहानावेशग्रहस्वप्नग्रहभोगग्रहापस्मारग्रहनित्यग्रहसर्वग्रहान् संहारय २ उच्चाटय २ नाशय २ मारय २ शोषय २ दह २ पच २ भक्षय २ खण्डय २ खड्गेन छिन्धि २ शूलेन ताडय २ पाशेन बन्धय २ अनलेन दह २ ह्रीं दुर्गे बटुकभैरवि सकलग्रहसंहारकारिणि भूतज्वरप्रेतज्वरपिशाचज्वरराक्षसज्वरपित्तज्वरवातज्वरश्लैष्मिक ज्वरसन्निपातज्वरैकाहिकज्वरद्व्याहिकज्वरत्र्याहिकज्वरचातुर्थिकज्वरपक्षज्वरमासज्वर त्रिमासज्वरषण्मासज्वरसांवत्सरिकज्वरसर्व ज्वरान् भञ्जय २ कटिशूलकुक्षिशूलाङ्गशूलपार्श्वशूलपृष्ठशूलशिरःशूलादिसर्वरोगान् संहारय २ ह्रीं दुर्गे परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्रविद्यास्तम्भिनि स्वमन्त्रस्वयन्त्रस्वतन्त्रविद्याविवर्धिनि ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट्स्वाहा ॥ ३ ॥ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि सर्वकामफलप्रदा २ इति जपं निवेद्य उत्तरन्यासं कृत्वा यथाशक्त्या प्रजप्य स्तुवीत ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते० बृ० ध० उ० स्त० दुर्गोपासनाध्याये श्रीशूलिनीदुर्गानिरूपणं नाम षोडशं प्रकरणम् ॥ १६॥ अथ श्रीनवदुर्गोपनिषत्॥उक्तं चाथर्वणरहस्ये ॥ ॐ अस्य श्रीनवदुर्गामहामन्त्रस्य किरातरूपधर ईश्वर ऋषिः अनुष्टुप् छन्द अन्तर्यामी नारायणः किरातरूपधरेश्वरो नवदुर्गागायत्री देवता ॐ बीजं स्वाहा शक्तिः क्लीं कीलकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः ॥ हंसनी ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ शङ्खिनी ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ चक्रिणी ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ गदिनी ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ शरिणी ह्रौं कनिष्ठिकास्यां नमः ॥ त्रिशूलधारिणी ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथ हृदयादि ॥ हंसिनी ह्रां हृदयादि नमः ॥ शङ्खिनी ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ चक्रिणी ह्रूं शिखायै वषट्॥गदिनी ह्रैं कवचाय हुम्॥शरिणी ह्रौं नेत्रत्रयाय य वौषट् ॥ त्रिशूलधारिणी ह्रःअस्त्राय फट् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः ॥ अथ ध्यानम् ॥अरिशङ्खकृपाणखेटबाणान्सुधनुष्कशूलमथ कर्तरीं दधाना॥भजतां मदिष्टोत्तमाङ्गसंस्था नवदूर्वासदृशी श्रियेऽस्तु दुर्गा ॥ १ ॥ हेमप्रख्यामिन्दुखण्डान्तमौलिं शङ्खारिष्टाभीतिहस्तां त्रिनेत्राम् ॥ हेमाब्जस्थां

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पीतवर्णां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि॥२॥ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ॐ हरिःॐ॥अथ पञ्चपूजा ॥ॐलं पृथिव्यात्मने गन्ध समर्पयामि॥ॐहंआकाशात्मने पुष्पं समर्पयामि ॥ॐयं वाय्वात्मनेधूपंसमर्पयामि ॥ॐः रं अग्न्यात्मने दीपं समर्पयायि॥ॐवं अमृतात्मने अमृतनैवेद्यंसमर्पयामि ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उत्तिष्ठ पुरुष किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितम् ॥ यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय शमय स्वाहा ॥ ॐ नमश्चण्डिकायै नमः ॥ हेतुकं पूर्वपीठे तु आग्नेय्यां त्रिपुरान्तकम् ॥ दक्षिणे चाग्निवेतालं नैर्ऋत्यां यमजिह्वकम् ॥ ४ ॥कालाख्यं वारुणे पीठे वायव्यां तु करालिनम् ॥ उत्तरे एकपादं तु ईशान्यां भीमरूपिणम् ॥ ५ ॥ आकाशे तु निरालम्बं पाताले वडवानलम् ॥ यथा ग्रामे तथाऽरण्ये रक्ष मां बटुकस्तथा ॥ सर्वमंगलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै नमः ॥ प्रयोगविषये ब्राह्मण्यै नमः ॥ वारुणि खल्वि माहेश्वर्यै नमः ॥ कुल्यवासिन्यै कुमारिण्यै नमः ॥ जयन्तीपुरलाहिवाराहिण्यै नमः ॥ अष्टमहाकालि माहेश्वर्यै नमः ॥ चित्रकूट इन्द्राण्यै नमः त्रिपुरब्रह्मचारिण्यै नमः ॥ एकवृक्षशुभिण्यै महालक्ष्म्यै नमः ॥ त्रिपुरब्रह्माण्डनायक्यै नमः ॥ एतानि क्षं क्षं त्रैलोक्यवशंकराणि ॥ बीजाक्षराणि ॐ ह्रीं कुरु कुरु हुंफट् स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकलनरमुखभ्रमरीम् ॥ ॐ क्लीं ह्रीं सकलराजमुखभ्रमरीम् ॥ ॐ क्रौं सौं सकलदेवतामुख भ्रमरीम् ॥ ॐ क्लीं क्लीं सकलकामिनीमुखभ्रमरीम् ॥ ॐ ईं सौः सकलदेशमुखभ्रमरीम् ॥ हसकफ्रें त्रैलोक्यचित्तभ्रमरीम् ॥ ॐ क्षं क्षां क्षिं क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः ॥ उग्रभैरवादिभूतप्रेतपिशाचचिचित्तभ्रमरीं हुं क्षुं हुं क्लीं राजमन्त्रयन्त्रभ्रमरीं हुं क्षुं हुं क्लीं सिद्धमन्त्र यन्त्रतन्त्रभ्रमरीं हुं क्षुं हुं क्लीं साध्यमन्त्रयन्त्रतन्त्रभ्रमरीं सकलसुरासुरसर्वमन्त्रयन्त्रतंत्रभ्रमरीं सर्वक्षोभिणी सर्वक्लेदिनी सकलमनोन्मादकरी आं ह्रीं क्रौं परमकल्याणी महायोगिनी ॥ ॐ महाविद्यां प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्मितताम् ॥ चिन्तितां किरातरूपेण मारणां हृदयनन्दिनीम् ॥८॥ उत्तमा सर्वविद्यानां सर्वभूतवशंकरी ॥ सर्वपापक्षयकरी सर्वशत्रुनिवारिणी ॥ ॐ कुलकरी गोत्रकरी धनकरी

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

धान्यकरी बलकरी यशस्करी विद्याकरी उत्साहबलवर्धिनी भूतानां विजृम्भिणी स्तम्भिनी मोहिनी द्राविणी सर्वमन्त्रप्रभञ्जिनी सर्व विद्याप्रभेदिनी सर्वज्वरोत्सादकरी ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकमर्द्धमासिकं मासिकं द्विमासिकं त्रिमासिकं षाण्मासिकं सांवत्सरिकं वातिकं पैत्तिकं श्लैष्मिकं सान्निपातिकं सन्ततज्वरं शीतज्वरम् उष्णज्वरं विषमज्वरं तापज्वरं च गण्डमालालूतताल्लु वर्णानां त्रासिनी सर्पाणां त्रासिनी सर्वान् त्रासिनी शिरःशूलाक्षिशूलकर्णशूलदन्तशूलबाहुशूलहृदयशूलकुक्षिशूलपक्षशूलगुदशूल गुल्मशूललिङ्गशूलयोनिशूलपादशूलसर्वाङ्गशूलविस्फोटकादि इति आत्मरक्षा परोक्षरक्षा प्रत्यक्षरक्षा अग्निरक्षा अघोररक्षा वायु रक्षा उदकरक्षा महान्धकारोल्काविद्युदनिलचरोशस्त्रास्त्रे मां रक्ष रक्ष स्वाहा ॥ महादेवस्य तेजसां भयंकराविष्टदेवता बन्धयामि पन्था नुगतचौराद्रक्षते बन्धकस्य कण्टकं बन्धयामि महादेवस्य पञ्चशीर्षेण पाणिना महादेवस्य तेजसा सर्वशूलान् कहपिङ्गलेन कण्टक मयरुद्राङ्गी ॐ अं आं मातङ्गी इं ईं मातङ्गी उं ऊं मातङ्गी ऋं ॠं मातङ्गी ऌं ॡं मातङ्गी एं ऐं मातङ्गी ओं औं मातङ्गी अं अः मातंगी स्वर स्वरब्रह्मदण्ड विश्वर विश्वर रुद्रदण्ड प्रज्वल प्रज्वल वायुदण्ड प्रहर प्रहर इन्द्रदण्ड भक्ष भक्ष निर्ऋतिदण्ड हिलि हिलि यमदण्ड नित्योपवादिनि हंसिनी शङ्खिनी चक्रिणी गदिनी शूलिनी त्रिशूलधारिणी हुंफट् स्वाहा ॥ आयुर्विद्यां च सौभाग्यं धान्यं च धनमेव च ॥ सदा शिवं पुत्रवृद्धिं देहि मे चण्डिके शुभे ॥ ९ ॥ अथातो मन्त्रपादा भवन्ति ॥ ॐ छायायै स्वाहा ॥ चतुरायै स्वाहा ॥ हलि स्वाहा ॥ पीलि स्वाहा ॥ पिलि स्वाहा ॥ हरं स्वाहा ॥ हरहरं स्वाहा ॥ गन्धर्वाय स्वाहा ॥ गन्धर्वाधिपतये स्वाहा ॥ यक्षाय स्वाहा ॥ यक्षाधिपतये स्वाहा ॥ रक्षसे स्वाहा ॥ रक्षोऽधिपतये स्वाहा ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ ॐभुवः स्वाहा ॥ ॐस्वः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ उल्कामुखी स्वाहा ॥ रुद्रमुखी स्वाहा ॥ रुद्रजटी स्वाहा ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रतेजसे स्वाहा ॥ या इमा भूतप्रेतपिशाचराक्षसनवग्रहभूतवेतालशाकिनीडाकिन्यः कूष्माण्डवासश्चत्वारो राजपुरुषः कलहपुरुषो वा तेषां दिशं बन्ध यामि ॥ दुर्दिशो बन्धयामि ॥ हस्तौ बन्धयामि ॥ चक्षुषी बन्धयामि ॥ श्रोत्रे बन्धयामि ॥ जिह्वां बन्धयामि ॥ घ्राणं बन्धयामि ॥

www.saraswatiprakashan.com
Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

बुद्धिं बन्धयामि ॥ गतिं बन्धयामि ॥ मतिं बन्धयामि ॥ अन्तरिक्षं बन्धयामि ॥ आकाशं बन्धयामि ॥ पातालं बन्धयामि ॥ यममुखेन पञ्चयोजनविस्तीर्णं बन्धयामि ॥ रुद्रो बध्नातु ॥ रुद्रमण्डलं रुद्रः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं रुद्रमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ १० ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ११॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ प्राच्यां दिशि इन्द्रो देवता ऐरावतारूढो हेमवर्णो वज्रहस्त इन्द्रो बध्नातु ॥ इन्द्रमण्डलमिन्द्रः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितमिन्द्रमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्नि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ १ ॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः ॥ अस्माकमस्तु केवलः॥१॥वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय आग्नेय्यां दिशि अग्निर्देवता मेषारूढो रक्तवर्णो ज्वालाहस्तोऽग्निर्बध्नातु ॥ अग्निमण्डलमग्निः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचल मचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ॥ अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ याम्यां दिशि यमो देवता महिषारूढो नीलवर्णो दण्डहस्तो यमो बध्नातु यममण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा॥३॥ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः॥यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मदिषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ नैर्ऋत्यां दिशि निर्ऋतिमण्डलं निर्ऋतिःसहपरिवारो देवताप्रत्यधि देवतासहितं निर्ऋतिमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्र कवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ मोषुणः पराघरा निर्ऋतिर्दुर्हणावधीत ॥ पदीष्ट तृष्णया सह ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वारुण्यां दिशि वरुणो देवता मकरारूढः श्वेतवर्णः पाशहस्तो वरुणो बध्नातु वरुणमण्डलं वरुणः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं वरुण मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौर सर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ इमं मे० ॥ १ ॥ तत्त्वा यामि० ॥ २ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः॥रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥३॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वायव्यां दिशि वायुर्देवता मृगारूढो धूम्रवर्णो ध्वजहस्तो वायुर्बध्नातु वायु मण्डलं वायुः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं वायुमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचल मचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ तव वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत ॥ आवाँस्या वृणीमहे ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ कौबेर्यां दिशि कुबेरो देवता अश्वारूढः पीतवर्णो गदाङ्कुशहस्तः कुबेरो बध्नातु कुबेरमण्डलं कुबेरः सहपरिवारो देवता प्रत्यधिदेवतासहितं कुबेरमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सहपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महा वज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति ॥ सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो देदाशदस्मै ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ईशान्यां दिशि ईशानो देवता वृषारूढः स्फटिकवर्णस्त्रिशूलहस्त ईशानो बध्नातु ईशान मण्डलमीशानः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितमीशानमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् ॥ पूषा नो यथा वेदसामस द्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ऊर्ध्वायां दिशि ब्रह्मा देवता हंसारूढो रक्तवर्णः कमण्डलुहस्तो ब्रह्मा बध्नातु ब्रह्ममण्डलं ब्रह्मा सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं ब्रह्ममण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवार कस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगा णाम् ॥ श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अधस्ताद्दिशि वासुकिर्देवता कूर्मारूढः पद्महस्तो वास्तुकिः बध्नातु वासुकिमण्डलं वासुकिः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवता सहितं वासुकिमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ नमो अस्तु सर्पेभ्यो० ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अवान्तरस्यां दिशि विष्णुर्देवता गरुडारूढः श्यामवर्णश्चक्रहस्तो विष्णुर्बध्नातु विष्णुमण्डलं विष्णुः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं विष्णुमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे० ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ प्राच्यां दिशि इन्द्रः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु त्रिशूलको नाम राक्षसः शाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीयाकिनीराकिनीवैतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ वर्षन्तु ते० बीजान्यव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ आग्नेय्यां दिशि अग्निः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु मारीचको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीयाकिनीवैतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सहपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्र



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

म्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट्ट् स्वाहा ॥२॥ ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ याम्यां दिशि यमः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु एकपिङ्गलको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनी डाकिनीकाकिनीहाकिनीराकिनीयाकिनीवैतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्र म्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट्ट् स्वाहा ॥३॥ ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जहि ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ नैर्ऋत्यां दिशि निर्ऋतिःसह परिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु सत्यको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनीहा किनीराकिनीयाकिनीवैतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्र कवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हंफट्ट् स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ प्रतीच्यां दिशि वरुणः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु लम्बको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीराकिनी याकिनीवैतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचाया स्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट्ट् स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वायव्यां दिशि वायुः सहपरिवारो देवता प्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु प्रलम्बको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीराकिनी याकिनीवैतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचाया

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

स्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ कौबेर्यां दिशि कुबेरः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु अश्वालको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीराकिनीयाकिनीवैतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ईशान्यां दिशि ईशानः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु उन्मत्तको नाम रासक्षसस्त० शाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीराकिनीयाकिनीवेतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ऊर्ध्वायां दिशि ब्रह्मा सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु आकाशवासी नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीराकिनीयाकिनीवैतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ वर्षन्तु ते० अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अधस्ताद्दिशि वासुकिः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु पातालवासी नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीराकिनीयाकिनीवैतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ वर्षन्तु ते० अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अवान्तरस्यां दिशि विष्णुः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तद्दिक्षु महाभीमको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीराकिनीयाकिनीवैतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्याघ्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रौं हुंफट् स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ वर्षन्तु ते० अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ प्राच्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते इन्द्राणिवज्रहस्ताभ्यां सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ आग्नेय्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते अग्निज्वालहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ याम्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते यमकालदण्डहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नैर्ऋत्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते निर्ऋतिखड्गकंकालहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वारुण्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते वारुणिपाश हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वायव्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते वायविवेधहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ कौबेर्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

कौबेरीगदांकुशहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ईशान्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते ईशानित्रिशूलडमरुहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ऊर्ध्वायां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते ब्रह्माणि स्रुकुस्रुवकमण्डलवक्षसूत्रांकुशहस्तैः मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ नमो भगवते पातालवासिनि विषगलहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अवान्तरस्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते श्रीमहालक्ष्मीपद्माख्ढा पद्महस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ शिरो रक्षतु ब्रह्माणी मुखं माहेश्वरी तथा ॥ कण्ठं रक्षतु वाराही ऐन्द्री चैव भुजद्वयम् ॥ १ ॥ चामुण्डा हृदयं रक्षेत्कुक्षिं रक्षेच्च वारुणी ॥ वैष्णवी रक्ष पादौ मे पृष्ठदेशे धनुर्धरी ॥ २ ॥ यथा ग्रामे तथा क्षेत्रे रक्षस्व मां पदे पदे ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ ॐ ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि इन्द्राणि चामुण्डे सिद्धचामुण्डेश्वरि गणेश्वरि क्षेत्रपाल नारसिंहि महालक्ष्मि सर्वतो दुर्गे हुंफट् स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं हुंफट् ॥ कनकवज्रवैडुर्यमुक्तालंकृतभूषणे एहि एहि आगच्छ आगच्छ मम कर्णे प्रविश्य भूतभविष्यवर्तमानकालज्ञानदूरदृष्टिदूरश्रवणं ब्रहि ब्रहि अग्निस्तम्भनशत्रुस्तम्भनशत्रुमुखस्तम्भनशत्रुगतिस्तम्भन शत्रुमतिस्तम्भनपरेषांगतिसर्वमतिशत्रूणां वाग्जृम्भणं स्तम्भनं कुरु कुरु शत्रुकार्यहानिकरि मम कार्यसिद्धिकरि शत्रूणामुद्योगविध्वंस कारि वीरचामुण्डि निहाटकहाटकधारिणी नगरीपुरीपट्टणआस्थानसंमोहिनी असाध्यसाधिनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं देवि हन हुंफट् स्वाहा ॥ ॐ आं ह्रीं सौं ऐं क्लीं हूं सौः ग्लौं श्रीं क्रौं एहि एहि भ्रमराम्बा हि सकलजगन्मोहनाय मोहनाय सकलाण्डजपिण्डजान् भ्रामय २ जरा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

प्रजावशंकारि संमोहय संमोहय महामाये अष्टादशपीठरूपिणि अमलवरयूं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर कोटिसूर्यप्रभाभासुरि चन्द्रजटी मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भस्मीकुरु भस्मीकुरु विश्वमोहिनी हुं क्लीं हुं हुंफट् स्वाहा॥ ॐनमो भगवते कामदेवाय इन्द्राय वसाबाणाय इन्द्र संदीपबाणाय क्लीं क्लीं संमोहनबाणाय ब्लूं ब्लूं संतापनबाणाय सःसः वशीकरणबाणाय कम्पित कम्पित हुंफट् स्वाहा॥क्लीं नमो भगवते कामदेवाय श्रीं सर्वजनप्रियाय सर्वजनसंमोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हन हन वद वद तप तप संमोहय संमोहय सर्व जनं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॐ ह्रां श्रीं ष्णीं क्ष्म्प्रैं हूस्त्रौं सहस्राराय हुंफट् स्वहा ॥ ॐनमो विष्णवे ॥ ॐ नमो नारायणाय ॥ ॐ जय जय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ॥सहस्रार ज्वालावर्त क्ष्म्प्रौं हन हन हुंफट् स्वाहा ॥ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ श्रीमन्नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ श्रीमते नारायणाय नमः ॥ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् ॥ नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥ ४ ॥ भगवन् सर्वविजय सहस्राराय राजित ॥ शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि श्रीकरं श्रीसुदर्शनम् ॥५॥ अरुणी वारुणी चैव सविग्रहनिवारिणी ॥ सर्वकर्मकारि ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ ॐ भुवः स्वाहा ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यक् ग्राहयित्वा ॥ततो महाविद्या सिध्यति ॥ अशिक्षितं नोपयुञ्जीत ॥ अहं न जाने न च पार्वतीश एकविंशतिवाराणि परिजाप्य शुचिर्भवेत् ॥ ६ ॥ पत्रं पुष्पं फलं दद्यात् स्त्रियो वा पुरुषोऽपि वा ॥ अवश्यं वशमित्याहुरात्मना च परेण वा ॥ ७ ॥ महाविद्यावतां पुंसां मनः क्षेत्रं करोति यः ॥ सप्तरात्रौ व्यतीतायां शत्रूणां तद्विन श्यति ॥८॥ ॐ कुबेर ते मुखं रौद्रं नन्दिमानन्दिमावह ॥ ज्वरं मृत्युभयं घोरं विषं नाशय मे ज्वर ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय हृदये अमृताभिवर्षाय मम ज्वररोगशांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॐ कालकाल महाकाल कालदण्ड नमोऽस्तु ते ॥ कालदण्डनिपा तेन भूम्यामन्तर्हितं ज्वरं हन्ति ॥ लिखित्वा यस्तु पश्यति समुद्रस्योत्तरे तीरे मारीचो नाम राक्षसस्तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां हुताशनं शमय शमय स्वाहा ॥ हिमवत्युत्तरे पार्श्वे चपला नाम यक्षिणी ॥ तस्या नूपुरशब्देन विशल्या भव गर्भिणी ॥ जातवेदसे सुन

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः ॥ स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः ॥ १० ॥ भास्कराय विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि ॥ तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥ १ ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात ॥ प्रतिकूलकारिणी नश्येत् ॥ अनुकूलकारिणी अस्तु ॥ महादेवी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि ॥ तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२॥ॐ भ्रूं ह्रीं श्रीं ब्रह्मकोशजी मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा॥पञ्चम्यां च नवम्यां च दशम्यां च विशेषतः॥ पठित्वा तु महाविद्यां श्रीकामः सर्वदा पठेत् ॥ ११ ॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ श्रीमें भजतु ॥ अलक्ष्मीमें नश्यतु ॥ यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह ॥ पवमानवितज्जहि ॥ यदुत्थितं दुःखं भवति तत्सर्वं शमय शमय स्वाहा॥ॐ गायत्र्यै स्वाहा॥ॐ सावित्र्यै स्वाहा॥ॐ सरस्वत्यै स्वाहा ॥ तत्पुरुषाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि ॥ तन्न इन्द्रः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ४ ॥ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ॥ तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥५॥ तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि ॥ तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् ॥ ६ ॥ तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि ॥ तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् ॥ ७ ॥ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि ॥ तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥ ८ ॥ वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि ॥ तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥ ९ ॥ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ॥ तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ १० ॥ मन्मथेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि ॥ तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ॥ ११ ॥ वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि ॥ तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात् ॥ १२ ॥ भास्कराय विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि ॥ तन्नो आदित्यः प्रचोदयात् ॥ १३ ॥ वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि ॥ तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ॥ १४ ॥ कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारि धीमहि ॥ तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥१५॥ सहस्रपरमा देवी शतमूला शतांकुरा ॥ सर्वंहरतु मे पापं दूर्वा दुःस्वप्ननाशिनी ॥ १२ ॥ काण्डात्काण्डात्प्ररो हन्ती० ॥ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुंधरे ॥ शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पद ॥ १३ ॥ अत्रिणा त्वा क्रिमे हन्मि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

कण्वेन जमदग्निना ॥ विश्वावसोर्ब्रह्मणा हतः कृमीणाᳬराजा अप्येषाᳬस्थपतिर्हतः ॥ अथो माताऽथो पिता अथो स्थूरा अथो क्षुद्राः अथो कृष्णाः अथो श्वेताः अथो आशातिका हताः श्वेताभिः सह सर्वे हताः आहरावद्य श्रुतस्य हविषो यथा तत्सत्यं यदमुं यमस्य जम्भयोः आदधामि तथा हि तत ॥ खण्फण्म्रसि ब्रह्मणा त्वा शपामि ॥ ब्रह्मणस्त्वा शपथेन शपामि ॥ घोरेण त्वा भृगूणां चक्षुषा प्रेक्षे ॥ रौद्रेण त्वाऽङ्गिरसा मनसा ध्यायामि ॥ अघस्य त्वा धारया विध्यामि ॥ अधरो मत्पद्यस्वासौ उत्तुद शिमिजा वरि तल्पेजे तल्प उत्तुद गिरीᳬ रनुप्रवेशय मरीचीरुपसंनुद यावदितः पुरस्तादुदयाति सूर्यः तावदितोऽमुं नाशय योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः खट् फट् जहि छिन्धि भिन्धि हन्धि कट् इति वाचः क्रूराणि परिबाहिणीदं नमस्ते अस्तु मा मा हिᳬसीः द्विषन्तं मेऽभिनाशय तं मृत्यो मृत्यवे नय अरिष्टं रक्ष अरिष्टं भञ्ज भञ्ज स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदे महाभैरवि ज्वल ज्वल विद्युज्ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे क्ष्म्रीं क्ष्म्यैं नमो नारायणाय घ्रिणुः सूर्यादित्यों सहस्रा हुंफट्॥अव ब्रह्म द्विषो जहि ॥ सर्पोलूककाककङ्ककपोतादिवृश्चिकोग्रदंष्ट्राकरोग्रविषान्मे महाभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षससकलकिल्बिषादिमहारोगविषान्निरोगविषं कुरु कुरु स्वाहा ॥ अक्षिस्पन्दं च दुःस्वप्नं भुजस्पन्दं च दुर्मतिम् ॥ दुश्चिह्नं दुर्गतिं रोगं भयं नाशय शांकरि ॥ १४ ॥ महाविद्यां कृतवतो योस्माकं द्वेष्टि योऽरिष्टं स्मरति यावदेकविंशतिं कृत्वा तावदधिकं नाशय ॥ ब्रह्मविद्यामिमां देवि नित्यं सेवेत यः सुधीः ॥ ऐहिकामुष्मिकं सौख्यं सिद्ध्यत्येव न संशयः ॥ १५ ॥ एनां विद्यां महाविद्यां यो दूषयति मानवः ॥ सो ऽवश्यं नाशमाप्नोति षण्मासादचिरेण वै ॥१६॥ अग्रतः पृष्ठतः पार्श्वे ऊर्ध्वतो रक्ष मे सदा ॥ चण्डघण्टा विरूपाक्षी त्वां भजे जगदीश्वरीम् ॥ १७ ॥ एवंविधां महाविद्यां त्रिसन्ध्यं स्तौति मानवः ॥ दृष्ट्वा जनैर्दुष्टजनाः सर्वमोहवशं गताः ॥ १८ ॥ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ॥ दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरां दुःशमनायै नमः ॥ १९ ॥ मातर्मे मधुकैटभघ्नि महिषप्राणापहारोद्यमे हेलानिर्मितधूम्रलोचनवधे हे चण्डमुण्डार्दिनि ॥ निःशेषीकृतरक्तबीजदनुजे नित्ये निशुम्भापहे शुम्भ

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ध्वंसिनि संहराशु दुरितं दुर्गे नमस्तेऽम्बिके ॥ २० ॥ कालदण्डपरं मृत्युविजया बन्धयाम्यहम् ॥ पञ्चयोजनविस्तीर्णं मृत्योश्च मुख मण्डलम् ॥ तस्माद्रक्ष महाविद्ये भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ २१ ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ वारिजलोचनसहपारीगतिं वारयासुरकर निकरैः पूरितमेघद्रुगानां दापितागोपकन्यके सहोदरवतु॥अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धलक्ष्मी स्वाहा ॥ ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ आवहन्ती वितन्वाना कुर्वाणा चीरमात्मनः ॥ वासांसि मम गावश्च अन्नपाने च सर्वदा ॥ ततो मे श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जारितृभ्यो दधाति ॥ श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ श्रिय एवैनं तच्छ्रियामादधाति संतत मृचा वषट्कृत्यं संतत्यै संधीयते प्रजया पशुभिर्य एवं वेद ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्लूं प्रों हुंफट् स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जहि ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ इति श्रीह० बृहज्ज्यो० धर्मस्कन्ध उपा० स्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये अथर्वणरहस्योक्तश्रीनवदुर्गोपनिषन्निरूपणं नाम सप्तदशं प्रकरणम् ॥ १७ ॥

अथ श्रीदुर्गोपनिषत् ॥ उक्तं चाथर्वशीर्षे ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः काऽसि त्वं महादेवि साऽब्रवीदहं ब्रह्मस्वरूपिणी मत्तः प्रकृति पुरुषात्मकं जगत् ॥ शून्यं चाशून्यं च अहमानन्दानानन्दौ अहं विज्ञानाविज्ञाने अहं ब्रह्माब्रह्मणी द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये इति वा आथर्वणश्रुतिः ॥ १ ॥ अहं पञ्चभूतानि अहं पञ्चतन्मात्राणि अहमखिलं जगत् वेदोऽहं विद्याऽहमविद्याऽहमजाऽहमनजाऽहमध श्चोर्ध्वं तिर्यक्चाहमहं रुद्रैर्वसुभिश्चरामि अहमादित्यैरुत विश्वेदेवैः अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्राजापत्यं दधामि अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्रजाय यजमानाय सुन्व ते अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ॥ अहं सुवेपितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वा १ न्तःसमुद्रे य एवं वेद स दैवीं संपदमाप्नोति ते देवा अब्रुवन् ॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः॥नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ २ ॥ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ॥ दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरां नाशयते नमः ॥ ३ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ॥ सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु ॥ कालरात्रीं ब्रह्म सुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् ॥ सरस्वतीमदितिदक्षदुहितरं ननाम पावनां शिवाम् ॥ महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्षया दुहिता तव ॥ तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ॥ कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हस्ता मातलिश्वायमिन्द्रः ॥ पुनर्गुहा सकला मायया चापृथक् त्वेशा विश्वमाताऽतिविद्या ॥ एषात्म शक्तिः एषा विश्वमोहिनी पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा एषा श्रीमहाविद्या य एवं वेद स शोकं तरति नमस्ते भगवति मातरस्मान्पा हि सर्वतः सैषाऽष्टौ वसवः सैषैकादश रुद्राः सैषा द्वादशादित्याः सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षसिद्धाः सैषा सत्त्वरजस्तमांसि सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः सैषा ग्रह नक्षत्रज्योतींषि कलाकाष्ठादिकामरूपिणी तामहं प्रणौमि नित्यम् ॥ पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिफलप्रदाम् ॥ अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शारदां शिवाम् ॥ ४ ॥ वियदाकारसंयुक्तां वीतिहोत्रसमन्विताम् ॥ अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थ साधकम् ॥ ५ ॥ एवमेकाक्षरं मन्त्रं यतयः शुद्धचेतसः ॥ ध्यायन्ति परमानन्दं मम ज्ञानाम्बुराशयः ॥ ६ ॥ वाङ्मया ब्रह्मभूस्तस्मा त्पृष्ठं चक्रसमन्वितम् ॥ सूर्यो वामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्ताष्टतृतीयकः ॥ ७ ॥ नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधारयुक् ततः ॥ विच्चे नवार्णकोण स्थः परमानन्ददायकः ॥ ८ ॥ हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम् ॥ पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम् ॥ ९ ॥ त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुहं भजे ॥ नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम् ॥ १० ॥ महादारिद्र्यशमनीं महाकारुण्यरूपि णीम् ॥ यस्याः स्वरूपं ब्रह्माद्या न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया यस्या अन्तो न लक्ष्यते तस्मादुच्यते अनन्ता यस्या गृहं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका एकैव विश्वरूपिणी तस्मादनेका अनन्ततपोवाच्यज्ञेयाऽन्ताऽलक्ष्याऽजैकाऽनैका ॥ मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी ॥ यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचार विघातिनीम् ॥ ११ ॥ नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ॥ य इदमथर्वशिरसमोऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षफलमवाप्नोति ॥ इदे मथर्वशीर्षं ज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति ॥ शतलक्षं प्रजप्त्वाऽथ नार्चाशुद्धिं च विन्दति ॥ शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ॥ १२ ॥ दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते ॥ महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥ १३ ॥ सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापंनाशयति ॥ सायंप्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति ॥ निशीथे तुरीय संध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति ॥ नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति ॥ प्रतिष्ठायां प्राणानां प्रतिष्ठापयति भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति महामृत्युं तारयति य एवं वेद ॥ इति श्री ह० बृ० ध० उपा० स्त० श्री दुर्गोपा० ध्याये श्रीदेव्युपनिषन्निरूपणं नाम अष्टादशं प्रकरणम् ॥ १८ ॥ अथ देवीमहिम्नस्तोत्रम् ॥ चन्द्रचूड उवाच ॥ त्वमन्तस्त्वं पश्चा त्त्वमसि पुरतस्त्वं च परतस्त्वमूर्ध्वं त्वं चाधस्त्वमसि खलुलोकान्तरचरी॥त्वमिन्द्रस्त्वं चन्द्रस्त्वमसि निगमानामुपनिषत्तवाहं दासो ऽस्मि त्रिपुरहररामे कुरु कृपाम् ॥ १ ॥ इयान् कालः सृष्टेः प्रभृति बहुकष्टेन गमितो विना यत्त्वत्सेवां करुणरसकल्लोलिनि शिवे ॥ तदेतद्दौर्भाग्यं मम विषयतृष्णाख्यरिपुणा हतः शुद्धानन्दं स्पृशिमि तव सिद्धेश्वरि पदम् ॥ २ ॥ सुधाधारावृष्टेस्तव जननि दृष्टे र्विषयतां वयं यामो दामोदरभगिनि भाग्येन फलितम् ॥ इदानीं भूतानां ध्रुवमुपरि भूताः परमुदा न वाञ्छामो मोक्षं विपिन पथि कक्षं जरदिव ॥ ३ ॥ जपादौ नो सक्ता हरगृहिणि भक्ताः करुणया भवत्या ह्येमत्या कति कति न भावेन गमिताः ॥ चिदानन्दाकारं भवजलधिपारं निजपदं न ते मातुर्गर्भे जननि तव गर्भे यदि गताः ॥ ४ ॥ चिदेवेदं सर्वं श्रुतिरिति भवत्याः स्तुतिकथा प्रियं भात्यस्तीति त्रिविधमपि रूपं तव शिवे ॥ अणुर्दीर्घं ह्रस्वं महदजरमन्तादिरहितं त्वमेव ब्रह्मासि त्वदपर मुदारं न गिरिजे ॥ ५ ॥ त्वयाऽन्तर्यामिन्या भगवति वशिन्याऽऽदिसहिते विधीयन्ते भावा मनसि जगतामित्युपनिषत् ॥ अहं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

कर्तैत्यन्तर्विशतु मम बुद्धिः कथमुमे सबुद्धिस्त्वद्भक्तो न भवति कुबुद्धिः क्वचिदपि ॥ ६ ॥ न मन्त्रं तन्त्रं वा किमपि खलु विद्मो गिरिसुते क्व यामः किं कुर्मस्तव चरणसेवा न रचिता ॥ अये मातः प्रातः प्रभृति दिवसास्तावधि वयं कुबुध्याऽहंकार्यी शिव शिव न यामो निजवयः ॥७॥ इहामुष्मिँल्लोके ह्यपि न विषये प्रेमकरवे न मे वैरी कश्चिद्भगवति भवानि त्रिभुवने ॥ गुणान्नामाधारं निगम गणसारं तव पदं मनो वारंवारं जपति च विनोदं च भजते ॥ ८ ॥ महामाये काये मम भवति यादृक्खलु मनो मनस्ते संख्याने न हि तादृक्कथमुमे ॥ त्वमेवान्तर्मातर्निगमयसि बुद्धिं त्रिजगतां न जाने श्रीजानेरपि न विदितस्तेऽत्र महिमा ॥ ९ ॥ अमीषां वर्णानां क्रतुकरणसम्पूर्णवयसां निकाम्यं काव्यानामुरसि समुदायं प्रकटितम् ॥ स्तनौ मेरू मत्वा स्थगित ममृतोपाख्यमुभयं दयाधाराधारं मम जननि द्वारं तव भजे ॥ १० ॥ स्तनद्वन्द्वं स्कन्दद्विपमुखमुखे यत्स्नुतमुखं कदाचिन्मे मात र्वितरतु मुखे स्तन्यकणिकाम् ॥ अनेनायं धन्यो जगदुपरि मान्योऽपि भवतां कुपुत्रे सत्पुत्रे न हि भवति मातुर्विषमता ॥ ११ ॥ जगन्मूलं शूलं ह्यनुभवति कूलं कथमिदं द्विधाकुर्वे सर्वेश्वरि मम तु गर्वेण फलितत् ॥ पदद्वन्द्वं द्वन्द्वंव्यतिकरहरं द्वन्द्वसुखदं गुणा रामे रामे कलय हृदि कामेश्वरि सदा ॥ १२ ॥ अहोरात्रं गात्रं समजनि न पात्रं मम मुदा धनायत्तं चित्तं तृणमपि तु निश्चित्त मभवत् ॥ इदानीमानीता कथमपि भवानी हृदि मया स्थितं मन्ये धन्ये पथि कथमधन्येह मुचितः ॥ १३ ॥ निराकारामाराद्धि हृदयमाराधितवता मया मायातीता सितसकलकायापहतये ॥ अहं कोऽहं सोऽहं मतिरिति विमोहं हतवति कृताहन्तानन्तामुपनयति सन्तानकवति ॥ १४ ॥ त्वदंघ्रेरुद्द्योतादरुणकिरणश्रेणिगमनात्समुद्भूता ये ये जगति जयिनः शोणमणयः ॥ त एते सर्वेषां शिरसि विदुषां भान्ति भुवने त्वदीयादन्यः को भवति जनवन्द्योऽद्य गिरिजे ॥ १५ ॥ अकार्षीत्सोऽमर्षी भुवनमपरं गाधितनयः शशा पान्यो लक्ष्मीमपिबदपरो ह्यर्णवमिति ॥ सपर्यामाहात्म्यं तव जननि तादात्म्यफलदं कियद्वक्ष्ये यक्षेश्वरकिरणदत्तं भगवति ॥ १६ ॥ अमी देवाः सेवां विदधति यतो मञ्चकतया शिवोऽप्यच्छच्छायारचितरुचिरप्रच्छदतया ॥ कृतार्थीकर्तुं मां परमशिव

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वामाङ्कनिलया परब्रह्मस्फूर्तिस्तव जयति मूर्तिः सकरुणा ॥१७॥ समुद्धर्तुं भक्तान् प्रभवति विहर्तुं जगदिदं गतिं वायोर्बद्ध्वा विनिमयति रूपं च नियमात् ॥ यदृच्छा यस्येच्छा न च भजनविच्छेदभयतो नमस्ते भक्ताय ध्रुवभजनसक्ताय गिरिजे ॥ १८ ॥ उमा माया माता कमलनयना कृष्णभगिनी भवानी दुर्गाऽम्बा मतिरमरलक्ष्मीति तरला ॥ महाविद्या देवी प्रकृतिरजजायेति जपतां भवन्ति श्रीविद्ये तव जननि नामानि निधयः ॥ १९ ॥ दिशां पाला बाला हरहरिसरोजासनमुखास्त्वया दुर्गे सर्वे कति कति न भक्ता अधिकृताः ॥ स्वयं रक्ता भक्तावहमधिकृतो नाधिमगमं सुखे वा दुःखे वा मम समतया यान्तु दिवसाः ॥ २० ॥ भवत्या भक्तानां यदि किमपि कश्चिद्विधिकृते पुरो वा पश्चाद्वा कपटदुरितेर्षापरवशः ॥ जनश्चेत्संन्यासादपि जपति नारायणपदं ततोऽप्येनं देवी नयनपथवीथीं गमयति ॥ २१ ॥ क्रिया वा कर्ता वा करणमपि वा कर्म यदि वा प्रणीयन्ते चेष्टा जगति पुरुषैर्भावकलुषैः ॥ समर्प्य स्वात्मानं तव तु पदयोरिन्द्रपदवीमिदं वा तद्विष्णोर्गणयति न भक्तोऽयमचलः ॥ २२ ॥ स्वयं माया कार्याद्युदयकरणे कौतुकवती शिवादीनां सर्गस्थितिविलयकर्माणि बिभृषे ॥ अयं भक्तो नाम्ना भगवति शुभः स्यात्तव यदा भवान्या भक्तानामशुभमपरं तेऽपि न कृतम् ॥२३॥ धरित्री ह्यम्भोधिस्त्वमपि दहनस्त्वं च पवनस्त्वमाकाशस्त्वं च ग्रसति पुरुषस्तेन सहितम् ॥ ग्रसन्ती ब्रह्माण्डं प्रकृतिरपि दासी पशुपतेर्यदासीत्संहारे जननि तव संहारमहिमा ॥ २४ ॥ स्फुरत्तारा माल्यं ग्रहनिवहनीराजनविधिर्दिवैर्धूमो धूपो मलयपवमानः परिमलः ॥ इदं ते नैवेद्यं विविधरसवेद्यं खलु सुखं सपर्यामर्यादा ध्रुवमियमुमे ब्रह्मनिलये ॥ २५ ॥ नवाधारा सृष्टिः स्फुटितनवधाशब्दरचना नवानां खेटानामुपरि नवधाऽप्यर्चितपदे ॥ नवानां संख्यानां प्रकृतिरगराजन्यतनये नवद्वीपी देवी त्वमसि नवचक्रेश्वरि शिवे ॥ २६ ॥ यदाऽकृष्याकृष्यातपति भवदम्बा क्व नु गता बलात्कारादारादिति यमभटे नाम विधया ॥ तदैवेनं दीनं स्पृशति वदने प्रश्रयवती विधूयाम्बा धूर्तं गुहमपि धयन्तं भगवती ॥ २७ ॥ हविर्धाने गीतं श्रुतिशिरसि निर्धारितमितं शिवस्यार्धाङ्कस्थं परममहदद्धा मम मनः ॥ यदाऽऽचक्षाणस्ते चरणतललाक्षारसजलैर्मुखं प्रक्षाल्यायं गणयति न लक्षाणि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

कृतिनाम् ॥ २८ ॥ गुरूणां सर्वेषामयमुपरि विद्यागुरुरभून्मनूनां सर्वेषामयमुपरि जातो भुवमनुः॥ कलानां सर्वासामियमुपरि लक्ष्मीः परकला महिम्नां सर्वेषामयमुपरि जागर्ति महिमा ॥ २९ ॥ यदाऽऽलापादापादितविविधविद्यापरिणतिः करे कृत्वा मोक्षं व्यवहरति लोकं प्रभुतया ॥ प्रणादेवाशाये प्रभवति दुरापे च पुरुषस्तदेतन्माहात्म्यं विरलजनसारम्यं तव शिवे ॥३०॥ याभिः शंकर कालकृत्यदहनज्वालासमुत्सारणं याभिः शुम्भनिशुम्भदर्पदलनं याभिर्जगन्मोहनम् ॥ याभिर्भैरवभीमरूपदलनं सद्यः कृतं मेऽन्वहं दारिद्र्यं दलयन्तु तास्तव दृशो दुर्गे दयामेदुराः ॥ ३१ ॥ याभिर्दुर्गतया कुशासनपुनःस्वाराज्यदानं कृतं याभिर्भारतसंसदि द्रुपदजालज्जा जवाद्रक्षिता ॥ याभिः कृष्णगृहीतहस्तकमलैस्त्राणं कृतं मेऽन्वहं दारिद्र्यं दलयन्तु तास्तव दृशो दुर्गे दयामेदुराः ॥ ३२ ॥ याभिर्विष्णुकृते कृतं कुरुकुलप्रध्वंसनं संगरे प्राद्युम्नेर्हृदि मुद्गरस्य कुसुमस्रग्याभिराकल्पिता ॥ कंसाद्याभिरपि व्यधायि वसुधा गोपालगोपायनं दारिद्र्यं दलयन्तु तास्तव दृशो दुर्गे दयामेदुराः ॥ ३३ ॥ याभिः स्थावरजङ्गमं कृतमिदं याभिः सदा पालितं याभिर्भासितमाक्रमेण च पुनर्याभिः सदा संहृतम् ॥ याभिर्दुःखमहाम्भसो भवमहासिन्धोर्न के तारिता दारिद्र्यं दलयन्तु तास्तव दृशो दुर्गे दयामेदुराः ॥ ३४ ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते बृ० ध० उपा० स्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये चन्द्रचूडकृतश्रीदेवीमहिम्नस्तोत्रनिरूपणं नाम एकोनविंशं प्रकरणम् ॥ १९ ॥ अथ श्रीदुर्गास्तवः ॥ उक्तं च हरिवंशे ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ आर्यास्तवं प्रवक्ष्यामि यथोक्तनृषिभिः पुरा ॥ नारायणीं नमस्यामि देवीं त्रिभुवनेश्वरीम् ॥१॥ त्वं हि सिद्धिर्धृतिर्मेधा श्रीर्विद्या सन्नतिर्मतिः ॥ सन्ध्या रात्रिः प्रभा निद्रा कालरात्रिस्तथैव च ॥ २ ॥ आर्या कात्यायनी देवी कौशिकी ब्रह्मचारिणी ॥ जननी सिद्धसेनानी उग्रचारी महातपाः ॥ ३ ॥ जया च विजया चैव पुष्टिश्च त्वं क्षमा दया ॥ ज्येष्ठा यमस्य भगिनी नीलकौशेयवासिनी ॥ ४ ॥ बहुरूपा विरूपा च अनेकविधचारिणी ॥ विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी ॥ ५ ॥ पर्वताग्रेषु घोरेषु नदीषु च गृहेषु च ॥ वासस्तव महादेवि वनेषूपवनेषु च ॥ ६ ॥ शबरैर्बर्बरैश्चैव पुलिन्दैरभिपूजिता ॥ मयूरपक्षध्वजिनी लोकान् क्रमसि सर्वशः ॥ ७ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

कुक्कुटैश्छागलैर्मेषैः सिंहैर्व्याघ्रैः समाकुला ॥ घण्टानिनादबहुला विश्रुता विन्ध्यवासिनी ॥ ८ ॥ त्रिशूली पट्टिशी चैव सूर्यचन्द्र पताकिनी ॥ नवमी कृष्णपक्षस्य शुक्लस्यैकादशी तथा ॥९॥ भगिनी बलदेवस्य रजनी कलहप्रिया ॥ आवासः सर्वभूतानां निष्ठा च परमा गतिः ॥१०॥ नन्दगोपसुता चैव देवानां विजयावहा ॥ चीरवासाः सुवासाश्च रात्रिः संध्या त्वमेव च॥११॥ प्रकीर्णकेशी मृत्युश्च तथा मांसोदनप्रिया ॥ लक्ष्मीरलक्ष्मीरूपेण दानवानां वधाय च ॥१२॥ सावित्री चैव वेदानां माता मन्त्रगणस्य च ॥ अन्तर्वेदी च यज्ञानामृत्विजां चैव दक्षिणा॥१३॥सिद्धिः सांयात्रिकाणां तु वेला त्वं सागरस्य च ॥ यक्षाणां प्रथमा यक्षी नागानां सुरसेति च ॥१४॥ कन्यानां ब्रह्मचर्या त्वं सौभाग्यं प्रमदासु च ॥ ब्रह्मचारिण्यथो दीक्षा शोभा च परमा तथा ॥ १५ ॥ ज्योतिषां त्वं प्रभा देवी नक्षत्राणां च रोहिणी ॥ राजद्वारेषु तीर्थेषु नदीनां संगमेषु च ॥ १६ ॥ पूर्णा च पूर्णिमा चन्द्रे कृत्तिवासा इति स्मृता ॥ सरस्वती च वाल्मीकेः स्मृतिर्द्वैपायनेस्तथा ॥ १७ ॥ कर्षकाणां च सीतेति भूतानां धरणी तथा ॥ ऋषीणां धर्मबुद्धिस्तु देवानां मानसी तथा ॥ १८ ॥ सुरादेवीति भूतेषु स्तूयसे त्वं स्वकर्मभिः ॥ इन्द्रस्य चारुदृष्टिस्त्वं सहस्रनयनेति च ॥ तापसानां च देवी त्वमरणिश्चाग्निहोत्रिणाम् ॥ १९ ॥ क्षुधा च सर्वभूतानां तृप्तिस्त्वं दैवतेषु च ॥ स्वाहा तृप्तिर्धृतिर्मेधा वसूनां त्वं वसुमती ॥ २० ॥ आशा च मानुषाणां तु तुष्टिश्च कृतकर्मणाम् ॥ दिशश्च विदिशश्चैव तथा ह्यग्निशिखा प्रभा ॥ २१ ॥ शकुनी पूतना च त्वं रेवती वसुदारुणा ॥ निद्रा च सर्वभूतानां मोहिनी क्षत्रिया तथा ॥ २२ ॥ विद्यानां ब्रह्मविद्या च त्वमोंकारो वषट् तथा ॥ नारीणां पार्वती च त्वं पौराणी मृषयो विदुः ॥ २३ ॥ अरुन्धत्येकभर्तॄणां प्रजापतिवचो यथा ॥ पर्यायनामभिर्दिव्यैरिन्द्राणी चेति विश्रुता ॥ २४ ॥ त्वया व्याप्तमिदं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥ संग्रामेषु च सर्वेषु अग्निप्रज्वलितेषु च ॥ २५ ॥ नदीतीरेषु चौरेषु कान्तारेषु भयेषु च॥ प्रवासे राजबन्धे च शत्रूणां च प्रमर्दने ॥ २६ ॥ प्राणात्ययेषु च सर्वेषु त्व हि रक्षा न संशयः ॥ त्वयि मे हृदयं देवि त्वयि चित्तं मनस्त्वयि ॥ २७ ॥ रक्ष मां सर्वपापेभ्यः प्रसादं कर्तुमर्हसि ॥ इमं तव स्तवं दिव्यमिति व्यासप्रकल्पितम् ॥ २८ ॥ यः पठेत्प्रात

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

रुत्थाय शुचि प्रयतमानसः ॥ त्रिभिर्मासैः काङ्क्षितं च फलं वै संप्रयच्छति ॥ २९ ॥ षड्भिर्मासैर्वरिष्ठं तु वरमेकं प्रयच्छति ॥ आर्चिता नवभिर्मासैर्दिव्यं चक्षुः प्रयच्छति ॥ ३० ॥ संवत्सरेण सिद्धिं तु यथाकामं प्रयच्छति ॥ सत्यं ब्रह्म च दैवं च दैपायनवचो यथा ॥ ३१ ॥ नृणां बन्धं वधं घोरं पुत्रनाशं धनक्षयम् ॥ व्याधिं मृत्युभयं चैव पूजिता शमयिष्यसि ॥ ३२ ॥ भविष्यसि महाभागे वरदा कामरूपिणी ॥ मोहयित्वा च तं कंसमेका त्वं भोक्ष्यसे जगत् ॥ ३३ ॥ अहमप्यात्मनो वृत्तिं विधास्ये गोषु गोपवत् ॥ स्ववृद्ध्यर्थमहं चैव करिष्ये कंसगोपताम् ॥३४॥ एवं तु स समादिश्य गतोऽन्तर्धानमीश्वरः ॥ सा चापि तं नमस्कृत्य तथाऽस्त्विवति विनिश्चिता ॥ ३५ ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उपा० स्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये हारिवंशोक्तश्रीदुर्गास्तवनिरूपणं नाम विंशं प्रकरणम् ॥ २० ॥ अथ श्रीदुर्गाकल्पः उक्तं च शान्तिसारे मार्कण्डेयपुराणे डामरतन्त्रे च ॥ शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि चण्डिकाक्रममुत्तमम् ॥ आश्विनस्य सिते पक्षे प्रतिपत्सु यथाक्रमम् ॥ १ ॥ बहुवचनेन नवम्यन्तं तिलतैलेन स्नानम् ॥ सुस्नातस्तिलतैलेन पूर्वाह्णे च नृपोत्तम ॥ पुण्याहवाचनं कृत्वा द्विजांश्चैव प्रपूजयेत् ॥ २ ॥ ततश्च कारयेद्वेदिं सप्तधान्ययुतां नृप ॥ स्थापयेत्पूर्णकलशं पञ्चरत्नसमन्वितम् ॥ ३ ॥ वस्त्रे चारक्तके चैव संलिखेद्यन्त्रमुत्तमम् ॥ गर्भे संस्थापयेद्देवीं चण्डिकां हेमरूपिणीम् ॥ ४ ॥ पञ्चामृतैश्च सुस्नातां चर्चितां गन्धकुङ्कुमैः ॥ तथा रक्तेन वस्त्रेण प्रसन्नां भक्तवत्सलाम् ॥ ५ ॥ गुरूपदेशविधिना पूजयित्वा प्रयत्नतः ॥ यन्त्रोद्धारः प्रयत्नेन ज्ञातव्योऽस्य नृपोत्तम ॥ ६ ॥ चतुरस्राष्टषट्कं च त्रिकोणं संलिखेत्ततः ॥ कुङ्कुमागरुकर्पूरैश्चन्दनैश्च सितासितैः ॥ ७ ॥ पञ्चकैः कालिकाभिश्च तथा कस्तूरिकादिभिः ॥ चतुरस्रे पूर्वदिशि न्यसेदुड्डाणपीठकम् ॥ ८ ॥ नाथमुण्डेश्वरं चैव मुण्डाख्यां पादुकां तथा ॥ न्यसेन्मातृकोपपीठमाग्नेय्यां पृथिवीपते ॥ ९ ॥ मातृकेश्वरोपनाथं च मातृकाख्योपपादुकाम् ॥ पीठं जालन्धरं चैव दक्षिणे तु तथैव च ॥ १० ॥ नाभं ज्वालामुखं चापि ज्वालाख्यां पादुकां तथा ॥ कोल्हापुरोपपीठं च नैर्ऋत्यां विन्यसेन्नृप ॥ ११ ॥ कोल्हारेश्वरोपनाथं कोल्हाराख्योपपादुकाम् ॥ पूर्णगिरीशपीठं च पश्चिमे स्थापयेन्नृप ॥ १२ ॥ नाथं पूर्णेश्वरं चाऽपि पूर्णाख्यां

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पादुकां तथा ॥ संहाराख्योपपीठं च वायव्यां च प्रपूजयेत् ॥ १३ ॥ संहाराख्योपनाथं च संहाराख्योपपादुकाम् ॥ उत्तरायां तथा देशे ओणपीठं प्रपूजयेत् ॥ १४ ॥ ओणकेश्वरनाथं च ओणाख्यां पादुकां तथा ॥ कामरूपोपपीठं च ईशान्यां पूजयेत्ततः ॥ १५ ॥ कामेश्वरोपनाथं च कामाख्यां चोपपादुकाम् ॥ आग्नेय्यामग्निसुमुखं नैर्ऋत्यां प्रेतवाहनम् ॥ १६ ॥ ज्वालामुखं तु वायव्यां धूम्राक्षं त्वीशतस्तथा ॥ कोणे चतुष्टये वाऽपि वेतालानां चतुष्टयम् ॥ १७ ॥ चक्रे अष्टदले चैव शक्त्यष्टकमुदाहृतम् ॥ भैरवाष्टकं च ततो लोकपालाष्टकं तथा ॥ १८ ॥ ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ॥ वाराही चैव माहेन्द्री चामुण्डा चण्डिका तथा ॥ १९ ॥ असिताङ्गो रुरुश्चैव चण्डः क्रोधस्तथैव च ॥ उन्मत्तभैरवश्चैव कपाली भीषणस्तथा ॥ २० ॥ संहारभैरवश्चेति भैरवाष्टकमीरितम् ॥ इन्द्रोऽग्निश्च यमश्चैव निर्ऋतिर्वरुणस्तथा ॥ २१ ॥ वायुः सोमस्तथेशानो लोकपालाः प्रकीर्तिताः ॥ गुरुं परमगुरुं च परमेष्ठिगुरुं तथा ॥ २२ ॥ गणेशं हरिहरं चैव षड्दले चैव पूजयेत् ॥ बाह्ये त्रिकोणके चक्रे प्रधानस्य च पृष्ठतः ॥ २३ ॥ पूजयेच्च महाकालीं रुद्रो गौर्या तथा सह ॥ महालक्ष्मीं हृषीकेशो लक्ष्म्या च सहितस्तथा ॥ २४ ॥ सरस्वत्याः पृष्ठदेशे विरिञ्चिस्स्वरया सह ॥ कालश्च दक्षिणे पूज्यो रुद्रश्चापि नृपात्मज ॥ २५ ॥ सिंहश्चापि तथा भक्त्या पूजनीयः प्रयत्नतः ॥ मृत्युर्वामे च विजयो गणेशो महिषस्तथा ॥ २६ ॥ मृतनामा ततश्चापि त्रिकोणे बाह्यतस्तथा ॥ मध्ये त्रिकोणके चक्रे प्रधानं चण्डिकां नृप ॥ २७ ॥ अधिदेवीं महाकालीं दक्षिणे चैव पूजयेत् ॥ प्रत्यधिदेवतां चैव वामभागे सरस्वतीम् ॥ २८ ॥ पूजयेच्च नृपश्रेष्ठ वेदगर्भामनिन्दिताम् ॥ इति यन्त्रोद्धारक्रमः ॥ जया च विजया चैव जयन्ती चापराजिता ॥ २९ ॥ दिव्ययोगी महायोगी सिद्धयोगी गणेश्वरी ॥ प्रेताशी डाकिनी काली कालरात्रिस्तथैव च ॥ ३० ॥ टङ्काक्षी रौद्रवेताली हुंकारी ऊर्ध्वकेशिनी ॥ विरूपाक्षी च शुष्काङ्गी नरभोजनिका तथा ॥ ३१ ॥ फट्कारी वीरभद्रा च धूमाङ्गी कलहप्रिया ॥ राक्षसी घोररक्ताक्षी विश्वरूपा भयंकरी ॥ ३२ ॥ चण्डमारी च चण्डी च वाराही मुण्डधारिणी ॥ भैरवी च तथोर्ध्वाक्षी दुर्मुखी प्रेतवाहिनी ॥ ३३ ॥ खट्वाङ्गी चैव लम्बोष्ठी

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मालिनी मत्तयोगिनी ॥ काली रक्ता च कङ्काली तथा च भुवनेश्वरी ॥ ३४ ॥ त्रोटिकी च महामारी यमदूती करालिनी ॥ केशिनी मर्दिनी चैव रोमगङ्गाप्रवाहिनी ॥ ३५ ॥ बिडाली कामुका लाक्षी जया चाधोमुखी तथा ॥ मुण्डाग्रधारिणी व्याघ्री काङ्क्षिणी प्रेतभक्षिणी ॥ ३६ ॥ धूर्जटी विकटी घोरी कपाली विषलम्बिनी ॥ चतुःषष्टिस्तु योगिन्यः पूजनीयाः प्रयत्नतः ॥ ३७ ॥ इति यन्त्रोद्धारः ॥ अथ मन्त्रोद्धारः ॥ राजोवाच ॥ पुनस्त्वां परिपृच्छामि चण्डिकायजनादिकम् ॥ नित्यचण्ड्यादिजाप्यस्य विधानं च द्विजोत्तम ॥ ३८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ परिपृच्छसि राजेन्द्र चण्डिकापूजनादि यत् ॥ तदहं ते प्रवक्ष्यामि यथावदनुपूर्वशः ॥ ३९ ॥ आदौ नत्वा महालक्ष्मीं कर्त्रीं हर्त्रीं सदोदिताम् ॥ यन्नमस्कारतो यज्ञा भवन्ति सुकृताः सकृत् ॥ ४० ॥ त्रैलोक्यडामरं मन्त्रं शृणु भूप नवाक्षरम् ॥ येन विज्ञातमात्रेण परमैश्वर्यवान् भवेत् ॥ ४१ ॥ ऐं बीजमादीन्दुसमानदीप्तिं ह्रीं सूर्यतेजोद्युतिमद्वितीयम् ॥ क्लीं मूर्तिवैश्वानरतुल्यरूपं तृतीयमानन्त्यसुखाय चिन्त्यम् ॥ ४२ ॥ चां शुद्धजाम्बूनदकान्ति तुर्यं मुं पञ्चमं रक्ततरं प्रकल्प्य ॥ डां षट्कमुग्रार्तिहरं सुनीलं यैं सप्तमं कृष्णतरं रिपुघ्नम् ॥ ४३ ॥ विं पाण्डुरं चाष्टममादिसिद्धं च्चे धूम्रवर्णं नवमं विशालम् ॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इति नवाक्षरो मन्त्रः ॥ एतानि बीजानि नवात्मकस्य जप्तुः प्रदद्युः सकलार्थसिद्धिम् ॥ ४४ ॥ नवबीज विशुद्धोऽयं मन्त्रस्त्रैलोक्यपावनः ॥ एनं जपति यो मन्त्री फलं तस्य वदाम्यहम् ॥ ४५ ॥ वश्या भवन्ति कामिन्यो राजानोऽनुचरा इव ॥ न हस्तिसर्पदावाग्निचोरशत्रुभयं भवेत् ॥ ४६ ॥ सर्वाः समृद्धयस्तस्य जायन्ते चण्डिकाज्ञया ॥ नश्यन्ति दारुणा रोगाः सत्यं सत्यं न संशयः ॥ ४७ ॥ सहस्रमस्य मन्त्रस्य नवबीजस्य यो जले ॥ नाभिमात्रे जपेत्सम्यक् कवित्वं लभते ध्रुवम् ॥ ४८ ॥ अयुतं नवतत्त्वस्य राजबन्धनसंकटैः ॥ जपेत्तदाऽऽशु मुच्येत यो मन्त्री चण्डिकाज्ञया ॥ ४९ ॥ अस्मिन्नवाक्षरे मन्त्रे महालक्ष्मी र्व्यवस्थिता ॥ तस्मात्सुसिद्धः सर्वेषां सर्वदिक्षु प्रदीपकः ॥ ५० ॥ अनेनास्य सिद्धादिविचारो नास्तीति सूचितम् ॥ नवाक्षरस्य ऋषयो ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ छन्दांस्युक्तानि मुनिभिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभः ॥ ५१ ॥ देव्यः प्रोक्ता महापूर्वाः काली लक्ष्मीः सर

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

स्वती ॥ नन्दा शाकंभरी भीमा शक्तयोऽस्य मनोः स्मृताः ॥ ५२ ॥स्याद्रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजसंचयः ॥ अग्निवायुभगा स्तत्त्वं फलं वेदत्रयोद्भवम् ॥ ५३ ॥ भगः सूर्यः ॥ सर्वाभीष्टप्रसिद्ध्यर्थं विनियोग उदाहृतः ॥ ऋषिच्छन्दोदैवतानि शिरोमुखहृदि न्यसेत् ॥ ५४ ॥ शक्तिबीजानि स्तनयोस्तत्त्वानि हृदये पुनः ॥ मन्त्राणां पल्लवो वासो मन्त्राणां प्रणवः शिरः ॥ ५५ ॥ शिरः पल्लवसंयुक्तो मन्त्रः कामदुघः फले ॥ पल्लवः नमोऽन्तः ॥ न्यासं विना भवेन्मूकः सुप्तः स्यादासनं विना ॥ ५६ ॥ पल्लवेन विना मन्त्रो नग्नः संपरिकीर्तितः ॥ शिरोहीनो मृतः प्रोक्तो वृथा मन्त्रो गुरुं विना ॥ ५७ ॥ हतो दुष्टाय दत्तो यो निर्वीर्यश्चाधि काक्षरः ॥ अन्तरालेन बीजेन व्याप्तः कीलित उच्यते ॥ ५८ ॥ यस्य जाप्यं शृणोत्यन्यः स मन्त्रः शून्य उच्यते ॥ ऋषिदैवत छन्दोभिः परित्यक्तो भुजङ्गमः ॥ ५९ ॥ मूकः सुप्तो मृतो नग्नो वीर्यहीनो वृथा हतः ॥ भुजङ्गः कीलितः शून्य ईदृङ्मन्त्रो ऽन्यथाफलः ॥ ६० ॥ यत्नाद्विवर्जयेन्मन्त्री यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः ॥ नमोऽन्तः शान्तिके पुष्टौ प्रणिपाते च कीर्तितः ॥ ॥ ६१ ॥ वश्याकर्षणहोमेषु स्वाहान्तः सिद्धिदायकः ॥ वौषट्पल्लवसंयुक्तो मन्त्रो लक्ष्म्यादिसाधकः ॥ ६२ ॥ हुंकारपल्लवोपेतो मारणे ब्राह्मणं विना ॥ यन्त्रभञ्जनकार्येषु सुघोरभयनाशने ॥ ६३ ॥ वषडन्तो महाकल्पो ग्रहमालाब्धिनाशकः ॥ खण्डनोच्चाटने बन्धे मन्त्रः फट्पल्लवान्वितः ॥ ६४ ॥ जातिहीना न सिद्ध्यन्ति तस्माज्जातिं नियोजयेत् ॥ नमः स्वाहा वषट्कं च वौषट् फडिति जातयः ॥ ६५ ॥ ॐकारमुखजौ मन्त्रौ वेदागमसमुद्भवौ ॥ पल्लवोऽस्त्यागमे मन्त्रे वैदिके नास्ति पल्लवः ॥ ६६ ॥ पल्ल वेन च जप्योऽयं मन्त्रो वेदसमुद्भवः ॥ न नग्नः कीर्त्यते यस्मान्नैश्वर्यपरिधानवान् ॥ ६७ ॥ नद्यादौ विधिवत्स्नात्वा नाभिमात्रे ऽम्भसि स्थितः ॥ दशाञ्जलिभिरात्मानं नवबीजेन प्लावयेत् ॥ ६८ ॥ कृत्वा माध्याह्निकं सर्वमुदकान्ते समाहितः ॥ तर्प णीयं महालक्ष्म्याः षडङ्गन्यासमाचरेत् ॥ ६९ ॥ मायाबीजं चण्डिकायै हृदयादि नमोऽन्तकम् ॥ ॐ मायाबीजं चण्डिकायै अंगुष्ठाभ्यां नमः तर्जनीभ्यां० मध्य० अना० कनि० करत० ॥ एवं हृदयादि ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यात्वा महिष मर्दिनीम् ॥ ७० ॥ चण्डिकां त्रिजगद्धात्रीं ब्रह्माद्यमरवन्दिताम् ॥ ततश्च नवबीजान्ते चण्डिका तृप्यतामिति ॥ ७१ ॥ अञ्जलीना

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मष्टशतं सुगन्धिकुसुमान्वितम् ॥ अशक्तौ तु तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः ॥ ७२ ॥ महालक्ष्मीं तर्पयित्वा प्रार्थितान् लभते ध्रुवम् ॥ अप्रार्थितानपि कामान्कर्ता प्राप्नोति तर्पणात् ॥ ७३ ॥ प्रविश्य देवतागारं वितानपरिशोभितम् ॥ पुष्पप्राकारशोभाढ्यं पूजाद्रव्यैः प्रपूजितम् ॥ ७४ ॥ बहुदीपप्रकाशाढ्यं दिव्यैर्धूपैः सुधूपितम् ॥ तत्रोपविष्टो विधिना पूजयित्वा हरीश्वरौ ॥ ७५ ॥ उपविश्यासने मन्त्री प्राङ्मुखो धृतिमान् क्षमी ॥ कामक्रोधमहामोहलोभतापविवर्जितः ॥ ७६ ॥ चतुरस्रे समे शुद्धे सर्वदोषविवर्जिते ॥ लिखेदष्टदलं प कुङ्कुमागरुचन्दनैः ॥ ७७ ॥ पद्ममध्ये लिखेच्चक्रं षट्कोणं चण्डिकालयम् ॥ षट्कोणचक्रमध्यस्थमाद्यबीजत्रयं न्यसेत् ॥ ७८ ॥ पूर्वादिषट्सु कोणेषु बीजान्यन्यानि विन्यसेत् ॥ गुदमेढ्रान्तरं वामपादमूलेन पीडयेत् ॥ ७९ ॥ वामपादोपरि स्थाप्य दक्षिणं चरणं दृढम् ॥ एतत्पद्मासनं नाम जरामरणवर्जितम् ॥ ८० ॥ मौनी बद्धासनो ज्ञानी ध्यानी निश्चलविग्रहः ॥ अनाहतविशुद्धात्मा भेदयित्वा यथाक्रमम् ॥ ८१ ॥ स्वशरीराद्विनिर्गत्य सूक्ष्मरूपोऽर्धमार्गगः ॥ ततो नदीं समुत्तीर्य स्थित्वा स्वकरसंपुटैः ॥ ८२ ॥ शोधयेत्पञ्चभूतानि ज्ञात्वा वर्णक्रमैः पृथक् ॥ पृथिव्यापोऽनलो वायुः खं भूतानामयं क्रमः ॥ ८३ ॥ पृथ्वी पीता सितं वारि रक्तवर्णो हुताशनः ॥ तेषां कृष्णतरो वायुराकाशं निर्मलं सदा ॥ ८४ ॥ मनसा शोधयेद्बुद्धिं बुद्ध्या संशोधयेन्मनः ॥ तद्द्वयं परमं शुद्धमात्मनः सम्यगीरितम् ॥ ८५ ॥ स्वदेहं ब्रह्ममार्गेण योगयुक्त्या समाविशेत् ॥ सुषुम्णास्थानमाश्रित्य तिष्ठमानमनाहते ॥ ८६ ॥ आदौ संशोधयेत्पृथ्वीं शोषदाहप्लवामृतैः ॥ पुनर्वारि पुनस्तेजः पुनर्वायुं तु पावयेत् ॥ ८७ ॥ बीजैश्चतुर्विधैर्वायोरग्नेर्वरुणशक्रयोः ॥ यमिदं शोषकं बीजं रमिदं दाहकं महत् ॥ ८८ ॥ वमाप्लुवनबीजं च लमिन्दुममृतात्मकम् ॥ एवं शुद्धानि भूतानि भवन्ति नृपनन्दन ॥ ८९ ॥ व्योम्नश्च शोधनं नास्ति यतस्तन्निर्मलं सदा ॥ कृत्वाऽऽलयं स्वकं देहं प्रविश्यात्मविशोधनम् ॥ ९० ॥ कर्तव्यं योगमाश्रित्य सर्वकामविवर्जितम् ॥ भूतसिद्धिमिमां कृत्वा यः कुर्याच्चण्डिकार्चनम् ॥ ९१ ॥ तस्याचिरेण कालेन महालक्ष्मीः प्रसीदति ॥ निकुञ्चनादधःशक्तिरूर्ध्वशक्तेर्निपातनात् ॥ ९२ ॥ मध्यशक्तेः प्रबोधाय प्राणायाम

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

परो भवेत् ॥ एकचित्ते न्यसेद्‌बुद्धिं क्रोधगर्वविवार्जितम् ॥ ९३ ॥ स्वार्थं लोभं परित्यज्य जपकर्ता च निश्चलः ॥ निरञ्जनं महागोप्य मन्त्रसाधनमुत्तमम् ॥ ९४ ॥ इति प्रथमपटलः ॥ ऋषिरुवाच ॥ पूजानां जपहोमानां सर्वमाङ्गल्यकर्मणाम् ॥ न्यासं ब्रवीमि भूपाल सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥ ९५ ॥ स्थिरासने स्थिरो भूत्वा निरहंकारनिर्ममः ॥ स्वगुरोश्चरणं नत्वा महालक्ष्मीं च पूर्ववत् ॥ ९६ ॥ ध्यानपूर्वं नमस्कृत्य न्यासकर्म समारभेत् ॥ क्षिप्त्वाक्षिप्त्या न्यसेत्तत्त्वं बिन्दुनोपरि भूषितम् ॥ ९७ ॥ मातृका न्यासविज्ञानी शिरः प्रथमपल्लवः ॥ प्रथमं विन्यसेन्मूर्ध्नि ललाटे तत्परं न्यसेत् ॥ ९८ ॥ नेत्रयोर्द्वितयं भूप द्वयमन्यत्कपोलयोः ॥ श्रुत्योः स्वरद्वयं न्यस्य द्वयं नासापुटद्वयोः ॥ ९९ ॥ ओष्ठयोर्विन्यसेद्द्वन्द्वं द्वन्द्वं दशनलेखयोः ॥ जिह्वायां विन्यसेदेकं तालुस्थाने च तत्परम् ॥ १०० ॥ विन्यसेत्प्रथमं वर्गं भूपतेर्दक्षिणे भुजे ॥ वामे परं न्यसेद्वर्गं द्वितीयं दक्षिणे भुजे ॥१०१॥ चतुर्थं वाम पादे च पञ्चमं हृदये न्यसेत् ॥ शेषाक्षराणां नवकं न्यसेद्वै सर्वधातुषु ॥ १०२ ॥ त्वचि रक्ते च मांसे च स्नायुष्वस्थिषु पञ्चमम् ॥ मज्जामेदांसि शुक्रे च तृतीयं तत्परं न्यसेत् ॥ १०३ ॥ अयं ते मातृकान्यासः प्रथमः परिकीर्तितः ॥ साङ्गवेदसमो भाति भूषितो येन मान्त्रिकः ॥ १०४ ॥ अथ सारस्वतो न्यासो द्वितीयस्ते प्रकथ्यते ॥ उक्तमन्त्रस्य बीजानां नवानां देवतार्चने ॥ १०५ ॥ आद्यं बीजद्वयं कृत्वा प्रणवादि नमोऽन्तकम् ॥ कनिष्ठिकादिसर्वासु पञ्चस्वंगुलिषु न्यसेत ॥ १०६ ॥ करमध्ये च पृष्ठे च स्फारे च मणिबन्धने ॥ हृदि मूर्ध्नि शिखायां च कवचे चक्षुरस्त्रयोः ॥ १०७ ॥ बद्धेषु संप्रयोक्तव्यं सर्वदिक्षु पृथक् पृथक् ॥ भृशं सारस्वते न्यासे महत्यस्मिन्कृते सकृत् ॥ १०८ ॥ दुरितं विलयं याति जाडयं वाक्पापसंचयम् ॥ तृतीयं ते प्रवक्ष्यामि न्यास मातृगणान्वितम् ॥ १०९ ॥ मायाबीजेन संयुक्ता ब्रह्माणी पातु सर्वतः ॥ एवमीशानपर्यन्तमष्टौ मातृः प्रपूजयेत् ॥ ११० ॥ ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ॥ वाराही नारसिंहैन्द्री चामुण्डा चाष्ट मातृकाः ॥ १११ ॥ ऊर्ध्वं व्योमेश्वरी पातु सप्तद्वीपेश्वरी भुवि ॥ नागेश्वरी च पाताले न्यासकर्ता च निर्भयः ॥ ११२ ॥ जायते त्रिषु लोकेषु सर्वदेवप्रियो यतः ॥ षड्देवीनां पुनर्न्यासं

www.saraswatiprakashan.com

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

चतुर्थं शृणु भूमिप ॥ ११३ ॥ पूर्वाङ्गं नन्दजा पातु कमलांकुशमण्डिता ॥ खड्गपात्रकरा पातु दक्षिणे रक्तदन्तिका ॥ ११४ ॥ पुष्पपल्लवमूलादिहस्ता शाकंभरी सदा ॥ धनुर्बाणधरा दुर्गा वामं दुर्गार्तिहारिणी ॥ ११५ ॥ शिरःपात्रकरा भीमा मस्तकाच्चरणावधि ॥ चरणाभ्यां शिरो यावत् भ्रामरी चित्रकान्तिभृत् ॥ ११६ ॥ अनेन न्यासयोगेन जरामरणवर्जितः ॥ निर्भयश्चाग्निवारिभ्यां मान्त्रिकस्तत्क्षणाद्भवेत् ॥ ११७ ॥ पादाभ्यां नाभिपर्यन्तं ब्रह्मा पातु समन्ततः ॥ नाभेर्विशुद्धिपर्यन्तं पातु नित्यो जनार्दनः ॥ ११८ ॥ विशुद्धेस्तु शिखा यावत्पातु रुद्रस्त्रिलोचनः ॥ हंसः पादद्वयं पातु वैनतेयः करद्वयम् ॥ ११९ ॥ चक्षुषी वृषभः पातु पश्चाङ्गानि गजाननः ॥ एवं परम्परां पातु सर्वानन्दमयो हरिः ॥ १२० ॥ अभेद्यः पञ्चमो न्यासः कर्तुः कामदुघा फलः ॥ महापापातिपापाभ्यां प्रायश्चित्तमसौ भवेत् ॥ १२१ ॥ मध्यं पातु महालक्ष्मीरष्टादशभुजा ध्रुवम् ॥ ऊर्ध्वं सरस्वती पातु भुजैरष्टाभिरूर्जिता ॥ १२२ ॥ अधः पातु महालक्ष्मीस्त्रिशल्लोचनमण्डिता ॥ सिंहो हस्तद्वयं पातु परहंसोऽग्निमण्डलम् ॥ ॥ १२३ ॥ महिषेण समायुक्तः प्रेतः पातु पदद्वयम् ॥ सर्वाङ्गानि महेशानी चण्डिका च परस्परम् ॥ १२४ ॥ वैकुण्ठसुखकृन्न्यासः षष्ठः कष्टोपशान्तये ॥ ब्राह्मणः पायुपर्यन्तं नवद्वारेषु विन्यसेत् ॥ १२५ ॥ उक्तमन्त्रस्य बीजानि प्रणवाद्यं पृथक् पृथक् ॥ पायुतो ब्रह्मपर्यन्तं विन्यसेत्तानि पूर्ववत् ॥ १२६ ॥ न्यासद्वयमिदं प्रोक्तं सुगोप्यं सप्तमाष्टमम् ॥ महाभयमहाव्याधिशत्रुचौरविघातनम् ॥ १२७ ॥ महारक्षोगणानां च कल्पान्ताग्निसमं भवेत् ॥ पूर्वाङ्गे विन्यसेन्मन्त्रं मस्तकाच्चरणावधि ॥ १२८ ॥ दक्षिणे पश्चिमे वामे तथा लोमविलोमयोः ॥ अस्मिन्न्यासे कृते राजन् नवमे देववद्भवेत् ॥ १२९ ॥ हृन्मस्तकशिखास्वेनं कवचे लोचनद्वये ॥ अस्त्रे सर्वकनिष्ठादि पृथङ्‍ मन्त्रं विनिक्षिपेत् ॥ १३० ॥ नमोऽन्तं प्रथमं प्रोक्तं स्वाहान्तं तत्परे भवेत् ॥ वषडन्तं हुमन्तं च वौषडन्तं फडन्तकम् ॥ १३१ ॥ पूज्यस्त्रैलोक्यदेवानां दशमेऽस्मिन्कृते कृती ॥ दशन्यासप्रविष्टो वै यद्वद्देवस्तथा भवेत् ॥ ॥ १३२ ॥ यत्पश्यति यथा दृष्टया तद्भवेत्तादृशं किल ॥ तेन सार्धं महालक्ष्मीः स्वयं वदति सर्वदा ॥ १३३ ॥ भविष्यमभविष्यं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वा तं पालयति पुत्रवत् ॥ ब्रह्मविष्णुशिवास्त्वेनं पालयन्त्यात्मवत्सदा ॥ १३४ ॥ त्रिषु लोकेषु पश्यन्ति यदाऽऽधिक्यं न किं चन ॥ दशन्यासैः कृतं पापं दशजन्मार्जितं क्षणात् ॥ १३५ ॥ सुतीव्रं विलयं याति तामिस्रं रविणा यथा ॥ सन्नद्धो दशभिन्यासैश्चण्डीं सप्तशतीं जपेत् ॥ १३६ ॥ असाध्यं साधयत्याशु कार्यं लोकत्रयेऽपि यत् ॥ माधवे मासि मध्याह्ने तपन्तं निर्मलं रविम् ॥ ॥ १३७ ॥ दिवान्धास्तं न पश्यन्ति सर्वदा सर्वथा यथा ॥ चण्डीसप्तशतीजाप्यं दशन्यासैः समुज्ज्वलम् ॥ १३८ ॥ त्रैलोक्ये सर्वदुष्टास्तं न पश्यन्ति च सर्वदा ॥ चण्डीसप्तशतीजाप्ये सरहस्ये नृपोत्तम ॥ १३९ ॥ न्यासं ते संप्रवक्ष्यामि ब्रह्माविष्णुशिवैः कृतम् ॥ अङ्गेषु सर्वसिद्ध्यर्थं चन्द्रामृतमनः सुखम् ॥ १४० ॥ अस्मिन्न्यासे दश श्लोका ब्रह्मविष्णुशिवोदिताः ॥ खड्गिनी शूलिनी श्लोकमाद्यं कृष्णतरं न्यसेत् ॥ १४१ ॥ नाभ्यादिचरणान्तं तु न्यासं शत्रुविनाशनम् ॥ शूलेन पाहि नो देवि पुनः श्लोक चतुष्टयम् ॥ १४२ ॥ बालार्कसदृशं न्यासं चिन्तनीयं महत्तरम् ॥ तद्विशुद्धादिपर्यन्तं न्यासं तिमिरनाशनम् ॥ १४३ ॥ सर्वस्वरूप इत्यादिश्लोकानां पञ्चकं पुनः ॥ शुद्धस्फटिकसङ्काशं न्यासं त्रैलोक्यकामदम् ॥१४४॥ मौलिर्मुखं तथा नेत्रे श्रोत्रे नासाद्वये तथा ॥ लिङ्गं चैव गुदं चैव दशस्थानं प्रकीर्तितम् ॥ १४५ ॥ मूर्ध्नी विशुद्धिपर्यन्तं श्लोकानां पञ्चकं न्यसेत् ॥ अयमेकादशो न्यासो दशन्याससमो भवेत् ॥१४६॥ नवाक्षरस्य मन्त्रस्य जाप्ये सर्वफलप्रदे ॥ एते न्यासः प्रकर्तव्याश्चण्डीं सप्तशतीं पठेत् ॥ १४७ ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा सृष्टिमुद्रां विलोकयेत् ॥ तस्या विलोकने राजन् कृते न्यासाः स्थिरो भवेत् ॥ १४८ ॥ परिषिञ्चति पूजार्थं द्रव्याणि नव बीजतः ॥ दशन्यासैः कृतैर्यस्य जपकर्ता फलं लभेत् ॥ १४९ ॥ तत्फलं लभते सत्यमस्मिन्नेकादशे कृते ॥ तलपृष्ठो द्भवां मुद्रां दत्त्वाऽस्त्रेणावगुण्ठयेत् ॥ १५० ॥ अर्घपात्रं प्रतिष्ठाप्य पूरयेच्छुभवारिणा ॥ गन्धपुष्पाक्षतांस्तत्र विन्यस्य नृपनन्दन ॥ ॥ १५१ ॥ ध्यात्वा सर्वाणि तीर्थानि हस्तं दत्त्वाऽभिमन्त्रयेत् ॥ रक्षार्थं तस्य कर्तव्या चक्रमुद्राऽस्त्रसंयुता ॥ १५२ ॥ अर्घोदकस्य संस्कारं पूजाद्रव्यस्य पूर्ववत् ॥ कृत्वा लोमविलोमाभ्यामात्मानं सम्यगर्चयेत् ॥ १५३ ॥ प्रत्यर्घं संप्रतिष्ठाप्य मध्ये पीठार्घं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पात्रयोः ॥ षट्कोणचक्रमध्यस्थां मध्यबीजैर्व्यवस्थिताम् ॥ १५४ ॥ महाकाल्या सरस्वत्याऽलंकृतां दक्षवामयोः ॥ संयुक्तां दक्षिणे वामे सिंहेन महिषेण च ॥१५५॥ अष्टादशभुजां ध्यात्वा महालक्ष्मीं प्रणम्य च ॥ पीठादिपूजनं कुर्यात्स्वबीजेन पृथक् पृथक् ॥ ॥ १५६ ॥ ॐ कारबिन्दुमध्यस्थं ना मध्ये चाद्यमक्षरम् ॥ देवतानां स्वबीजं च प्रजाया ऋद्धिसिद्धिदम् ॥ १५७ ॥ ॐ कारं प्रथमं पीठं पूर्णपीठं ततः परम् ॥ तृतीयं कामपीठं च पूजयेत्संप्रदायतः ॥ १५८ ॥ पूर्वादिदिक्षु पीठस्य गणेशादिचतुष्टयम् ॥ गणेशक्षेत्रपालौ च पादुकैर्बटुकास्त्रयः ॥ १५९ ॥ आग्नेयादिचतुर्दिक्षु पूज्यं देवीचतुष्टयम् ॥ आद्या तत्र जया प्रोक्ता द्वितीया विजया स्मृता ॥ १६० ॥ जयन्ती तत्परा भूप चतुर्थी स्यात्पराजिता ॥ पूज्या नामपदैर्देभ्यः पीठपङ्कजमध्यगाः ॥ १६१ ॥ प्रागादिक्रमयोगेन पञ्च षट् षट् च षट् तथा ॥ प्रथमा विष्णुमाया च द्वितीया चेतना स्मृता ॥ १६२ ॥ बुद्धिर्निद्रा क्षुधा छाया शक्तिस्तृष्णाऽष्टमी तथा ॥ क्षान्तिर्जातिस्ततो लज्जा शान्तिः श्रद्धा त्रयोदशी ॥१६३॥ कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा स्मृतिरेव दया तथा ॥ तुष्टिः पुष्टिश्च माया च भ्रान्तिर्नामपदक्रमः ॥ १६४ ॥ त्रयोविंशतिसंख्याता ब्रह्मणा पूजिताः स्तुताः ॥ नालमूले च संपूज्य माधारादिचतुष्टयम् ॥ १६५ ॥ आधारं कूर्मशेषौ च चतुर्थी पृथिवी नृप ॥ ततो नालं समभ्यर्च्य पद्मं संपूज्य यत्नतः ॥ १६६ ॥ ज्ञानामृतसुतृप्तात्मा मण्डलार्चनमारभेत् ॥ अर्घोदकाद्भिरासिच्य मण्डलं सौम्यदृष्टिमान् ॥ १६७ ॥ पूर्वपात्रादितः पूज्यं मातृणां मण्डलं शिवम् ॥ रहस्यकथितैर्बीजैः स्वबीजेनाथवा नृप ॥ १६८ ॥ आद्यपत्रे समभ्यर्च्या ब्रह्माणी हंसवाहिनी ॥ माहेश्वरी वृषारूढा पूज्या सा हुतभुग्दले ॥१६९॥ मयूरवाहना पूज्या कौमारी दक्षिणे दले ॥ नैर्ऋते वैष्णवी पूज्या गरुडोपरि संस्थिता ॥ ॥ १७० ॥ पश्चिमे यज्ञवाराही दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरा ॥ समीरणदले पूज्या नारसिंह्यब्धिनिस्वना॥ १७१ ॥ गजराजसमारूढा पूज्यैन्द्री सौम्यदिग्दले ॥ गणनाथपरीवारा सदा रुद्रेण संयुता ॥ १७२ ॥ ईशपत्रे समभ्यर्च्या चामुण्डा मुण्डमण्डिता ॥ ब्रह्माणी कर्णिकामध्ये क्रमात्षट्कोणपूजनम् ॥ १७३ ॥ नन्दजा हेमगर्भाभा सुरक्ता रक्तदन्तिका ॥ नीला शाकंभरी दुर्गा सर्वदुःखार्ति

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

हारिणी ॥ १७४ ॥ दंष्ट्राञ्चितमुखी भीमा नीलपत्रशिरोधरा ॥ तेजोमण्डलदुर्दर्शी भ्रामरी वरदाऽर्चिता ॥ १७५ ॥ आद्यबीजे महाकालीं ध्यानपूर्वां समर्चयेत् ॥ द्वितीयेऽष्टादशभुजां महालक्ष्मीं प्रपूजयेत् ॥ १७६ ॥ तृतीयेऽष्टभुजां ध्यात्वा समभ्यर्च्य सरस्वतीम् ॥ ततः कृत्वा पृथक्पूजां सम्यङ्ग् महिषसिंहयोः ॥ १७७ ॥ मध्यबीजे चिरं ध्यात्वा महालक्ष्मीं समाहितः ॥ हद्यादावाहनं पूर्वमासनं मणिभूषितम् ॥ १७८ ॥ मण्डलस्था तु या देवी पीठस्था सर्वशस्तथा ॥ महालक्ष्म्या सहैक्येन चिन्तयेद्योगमुद्रया ॥ १७९ ॥ एकाक्षरं महालक्ष्म्या रूपं ध्यात्वा परात्परम् ॥ मुद्राभुजायुधाकारांश्चण्डिकाग्रे प्रदर्शयेत् ॥ १८० ॥ अष्टादशाक्षमालाद्यास्ततः पाद्यं प्रकल्पयेत् ॥ वारिपुष्पाक्षतारक्तचन्दनैश्च प्रमोदितम् ॥ १८१ अर्घं दत्त्वा महालक्ष्म्यै धेनुमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ संकल्पाचमनं भूप स्नानं पुष्पाभिषेचनम् ॥ १८२ ॥ विदध्याद्दैधसीं मुद्रां यथा माता प्रतुष्यति ॥ महार्हे चित्रिते वस्त्रे चित्राण्याभरणानि च ॥ १८३ ॥ कस्तूरीकुङ्कुमोपेतं कर्पूरागरुचन्दनम् ॥ सुरभीणि सुपुष्पाणि बिल्वपत्राक्षतानि च ॥ १८४ ॥ नैवेद्यं चण्डिकां भूप दिव्यैधूपैश्च धूपयेत् ॥ ज्वलन्मणिशिखाकारैर्दीपैर्नीराजनैः शुभैः ॥ १८५ ॥ यथावर्णक्रमोपेतैर्नैवेद्यैः पायसादिभिः ॥ अनेकरसपक्वान्नैर्महालक्ष्मीं प्रतोषयेत् ॥ १८६ ॥ प्रणम्याचमनं दत्त्वा चन्दनं मुखवासनम् ॥ सकर्पूरं च ताम्बूलं भक्तिभावसमन्वितम् ॥ १८७ ॥ प्राणानायम्य पूर्वोक्तान् न्यासान्संस्मृत्य चात्मवान् ॥ प्रथमं चरितं प्रोक्तं मधुकैटभघातनम् ॥ १८८ ॥ महिषासुरनिर्नाशं चरितं मध्यमं तथा ॥ चरितं चोत्तरं विद्धि निशुम्भादिवधाश्रितम् ॥ १८९ ॥ चरितानि जपेत्त्रीणि सरहस्यान्यतन्द्रितः ॥ चरितं मध्यमं चैषां जपेद्वा चण्डिकामयम् ॥ १९० ॥ जपेन्नवाक्षरं मन्त्रमथवाऽष्टोत्तरं शतम् ॥ हुनेज्जपदशांशेन पायसं तिलसर्पिषा ॥ १९१ ॥ नवाक्षरेण मन्त्रेण स्मार्ताग्नौ नृपनन्दन ॥ विद्यया मूलमन्त्रेण होमं कुर्यादनेन वा ॥ १९२ ॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ १९३ ॥ अनेन श्लोकपाठेन जुहुयाद्वा शुभं हविः ॥ उद्धृतप्रोक्षितो मन्त्रैः पात्रानीतः समुज्ज्वलम् ॥ १९४ ॥ संस्कृतायां भुवि स्थाप्य स्मार्ताग्निः संप्रकीर्तितः ॥ देवतार्च



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नस्य जाप्यस्य होमे भूः संस्कृता यथा ॥ १९५ ॥ कृत्वा संस्थापयेदग्निं नान्यथा स्थापनं मतम् ॥ स्मार्ते हि पायसं होमे हुते स्मार्ते हुताशने ॥ १९६ ॥ अत्र स्मार्ताग्नावुक्ते ब्राह्मणस्य होमः स्मार्ताग्नावेव उक्तः ॥ तान्त्रिकप्रकारस्तु तदितरेषामेव शूद्रस्य तान्त्रिक एव तदितरयोर्विकल्पः ॥ होमाभावे द्विगुणो जपः ॥ तदभावे समित्सर्पिस्तिलानां हवनं भवेत् ॥ होमो यत्र महालक्ष्म्या ऋतुकाल समुद्भवैः ॥१९७॥ सजपं होमनैवेद्यं महालक्ष्मीं प्रणम्य च॥शूलेन पाहि नो देवीत्येतैः श्लोकैः प्रदक्षिणाम् ॥१९८॥ विदध्यात्सुस्थितो भूत्वा चण्डिकाध्यानतत्परः ॥ नमो देव्या इति श्लोकैः पञ्चभिः पञ्चवर्गतः ॥ १९९ ॥ कृत्वा पञ्च नमस्कारानुपविश्यासने शुभे ॥ सर्वस्वरूपे इत्यादिषड्भिः श्लोकैः कृताञ्जलिः ॥ २०० ॥ प्रार्थयेज्जगतां धात्रीं प्रयतात्मा मनेप्सितम् ॥ स्वशरीरे समारोप्य दद्या दस्यै विसर्जनम् ॥ २०१ ॥ अनेन विधिना भूप यः कुर्याच्चण्डिकार्चनम् ॥ तस्य तुष्टा महालक्ष्मीर्यद्ददाति शृणुष्व तत् ॥ २०२॥ महदैश्वर्यमतुलं त्रैलोक्ये तस्य जायते ॥ धर्मराजसमायुक्तं पुत्रपौत्रसमाकुलम् ॥ २०३ ॥ तं करोति महालक्ष्मीर्नरं वै ब्रह्मणोपमम् ॥ शिवाश्च प्रबलायन्ते तत्स्थानाच्छतयोजनम् ॥ २०४ ॥ तेनैकोनवसन्तोऽपि तं न पश्यति दृश्यवत् ॥ तस्य स्मरणमात्रेण विघ्नानां जायते क्षयः ॥ २०५ ॥ त्रिषु लोकेषु यत्किंचित्सुरासुरसुदुर्लभम् ॥ तत्सर्वं तं समायाति महालक्ष्मीप्रसादतः ॥ २०६ ॥ यो जपे त्परया भक्त्या महालक्ष्म्याः सुपूजनम् ॥ स नरो लभते सत्यं पूजाफलमनुत्तमम् ॥ २०७ ॥ तुष्टिपुष्टिसुकीर्तीनां सिद्ध्ये सर्वकर्म णाम् ॥ यथा ध्यानं तथा कुर्यात्पूजने जपकर्मणि ॥ २०८ ॥ सद्बुद्ध्या देवतानां च प्रीतये शुभकर्मणाम् ॥ शुद्धस्फटिकपङ्काशं ध्यानं स्यात्पूजने मतम् ॥२०९॥ वश्ये रक्ततरं ध्यानं कर्बुरं हर्षवेगयोः ॥ धूम्रमुच्चाटनाख्येषु कृष्णध्यानं च मारणे ॥२१०॥ नीलो त्पलदलश्यामं ध्यात्वा भवति सुप्रजाः ॥ सर्वरत्ननिभाकारं ध्यात्वा निश्चलमानसः ॥ २११ ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति नृप चोक्तं मया तव ॥ कल्पान्ताग्निसमं युद्धे ध्यानं प्रोक्तं स्वयंभुवा ॥ २१२ ॥ महाशोषं महायुक्तं ध्यात्वा वारिभवे भये ॥ पीयूषवर्षसंयुक्तं पूर्णचन्द्रसमप्रभम् ॥ २१३ ॥ ध्यानं कृत्वा लभेत्सत्यं शीघ्रं सर्वान्मनोरथान् ॥ चतुरस्रे हि शान्त्यर्थं पीठे पूजामहाफलम् ॥२१४॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वश्यादौ वर्तुले तद्वदर्धचन्द्रे सुपौष्टिके ॥ त्रिकोणे या विरुद्धा सा पञ्चकोणेऽथवा भवेत् ॥ २१५ ॥ षट्कोणपीठपूजायां निर्भय स्तत्क्षणाद्भवेत् ॥ खण्डनादौ रविमिते पीठे या पूजनक्रिया ॥ २१६ ॥ विधूनयति शत्रूणां सप्तरात्रकृतं सति ॥ योनिकुण्डे भगाङ्के वा वर्तुले चार्धचन्द्रके ॥ २१७ ॥ नवत्रिकोणचक्रे वा चतुरस्रेऽष्टपत्रके ॥ योनिकुण्डे भवेद्वाग्ग्मी भगे चाकृतिरुत्तमा ॥ २१८ ॥ वर्तुले तु भवेल्लक्ष्मीरर्धचन्द्रे त्रयं भवेत् ॥ नवत्रिकोणकुण्डे तु खेचरत्वं प्रजायते ॥ २१९ ॥ चतुरस्रे भवेच्छान्तिर्लक्ष्मीः पुष्टि रारोगता ॥ पद्माङ्के सर्वसंपत्तिरचिराद्भूप जायते ॥ २२० ॥ चक्रेऽष्टकोणसुभगे समीहितफलं भवेत् ॥ होमं कुर्याद्दशांशेन कुसुमैर्ब्रह्म वृक्षजैः ॥ २२१ ॥ अस्य श्रीचण्डीसप्तशतीप्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः ॥ महाकाली देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ नन्दजा शक्तिः ॥ रक्त दन्तिका बीजम् ॥ अग्निस्तत्त्वम् ॥ मध्यमचरितस्य विष्णुर्ऋषिः ॥ महालक्ष्मीर्देवता ॥ उष्णिक् छन्दः ॥ शाकंभरी शक्तिः ॥ दुर्गा बीजम् ॥ वायुस्तत्त्वम् ॥ उत्तरचरित्रस्य रुद्र ऋषिः ॥ महासरस्वती देवता ॥ अनुष्टुप्छन्दः ॥ भीमा शक्तिः ॥ भ्रामरी बीजम् ॥ सूर्य स्तत्त्वम् ॥ अस्य श्रीनवाक्षरमन्त्रस्य हिरण्यगर्भवासुदेवरुद्रा ऋषयः ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि ॥ महाकालीमहालक्ष्मीमहा सरस्वत्यो देवताः ॥ नन्दजाशाकंभरीभीमाः शक्तयः ॥ रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि ॥ ह्रीं कीलकम् ॥ अग्निवायुसूर्यास्त त्त्वानि ॥ कार्यनिर्देशे जपे विनियोगः ॥ एतद्गोप्यतरं सर्वं वेदागमसमुद्भवम् ॥ ब्रह्मणा गुरवे दत्तं गुरुणा मम शंसितम् ॥ २२२ ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणां त्रिषु लोकेषु साधनम् ॥ अनेन सदृशं नास्ति सत्यं सत्यं नृपोत्तम ॥ २२३ ॥ इति पूजाजपहोमविधिः द्वितीया पटलः ॥ अथ काम्यप्रयोगः ॥ ऋषिरुवाच ॥ नित्यचण्ड्यादिजाप्यस्य विधानं ते वदाम्यहम् ॥ क्रमेण सर्वकार्याणां सिद्धये यच्च पुण्यदम् ॥ २२४ ॥ पूर्वोक्तविधिना कृत्वा चण्डिकातर्पणादिकम् ॥ शुक्लां भूतामवष्टभ्य मासं प्रतिदिनं जपेत् ॥२२५॥ सकृद्रहस्य संयुक्तं चण्डिकाचरितत्रयम् ॥ दशांशहोमसहितं सोच्यते नित्यचण्डिका ॥ २२६ ॥ धनपुत्रयशोदात्री महाव्याधिविनाशिनी ॥ महाभयमहादुःखहन्त्री सौख्यप्रदायिनी ॥ २२७ ॥ शुक्लां षष्ठीमवष्टभ्य यावच्छुक्लचतुर्दशी ॥ नव दुर्गा विधातव्याः सर्वकार्यफला

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

र्थिना ॥ २२८ ॥ संपूज्य विधिवद्देवीं चण्डिकाकृततर्पणम् ॥ कलशं पञ्चरत्नाढ्यं सहकारदलाकुलम् ॥ २२९ ॥ सवस्त्रं संप्रति ष्ठाप्य चण्डिकाग्रेऽम्भसा भृतम् ॥ समन्तात्पूजयेद्दिक्षु दिशां पालान यथाक्रमम् ॥ २३० ॥ चन्दनेन विलिप्ताङ्गः स्रग्वी न्यासपरा यणः ॥ नवाहं रूपमेकैकं मौनी बद्धासनो जपेत् ॥ २३१ ॥ प्रणवादिरहस्यान्तं चण्डिकाचरितत्रयम् ॥ चतुरस्रे समे कुण्डे समन्ता द्धस्तमात्रके ॥ २३२ ॥ एकावरणसंयुक्ते योनिमण्डलमण्डिते ॥ ॥ दशांशविधिना होममुक्तद्रव्येण साधयेत् ॥ २३३ ॥ नवदुर्गा मखे कुण्डमेवं जानीहि भूपते ॥ नित्यचण्डीविधानेऽपि कुण्डमीदृक् प्रकीर्तितम् ॥ २३४ ॥ नवचण्डीमखे कुण्डमीदृग्लक्षणमुच्यते ॥ एतद्द्विगुणितं कुण्डं दशचण्ड्याः प्रकीर्तितम् ॥२३५॥ कृष्णषष्ठीं समारभ्य नवदुर्गाविधानवत् ॥ यो यथा कुरुते जाप्यं कालरात्रि रुदाहृता ॥ २३६ ॥ महाकालोद्भवं दुःखं कालरात्रिर्व्यपोहति ॥ संस्कारैरष्टभिः कुण्डं संस्कृत्याग्निं प्रतिष्ठयेत् ॥ २३७ ॥ माया बीजसमोपेतं दुर्गास्तवनसाधकः ॥ कुण्डमध्यभुवं दर्भैः परिमार्ज्योपलेपयेत् ॥ २३८ ॥ प्रागग्राः स्रुवमूलेन रेखास्तिस्रः समुल्लि खेत ॥ पांशुमुद्धृत्य रेखाणामभ्युक्षणमतः परम् ॥ २३९ ॥ कुण्डस्य पूजनं षष्ठ सप्तमं सप्तमुद्रया ॥ अत्रावगुण्ठनं कुण्डे संस्कार श्चाष्टमः स्मृतः ॥ २४० ॥ शतमङ्गलनामानं कुण्डेऽग्निं संप्रतिष्ठयेत् ॥ चण्डिकापाठसंपूर्णं ब्राह्मणं दक्षिणे द्विजम् ॥ २४१ ॥ तत स्तत्साग्निकुण्डं च नवसूत्रेण सूत्रयेत् ॥ कुण्डस्योत्तरतः स्थाप्या प्रणीता वारिपूरिता ॥ २४२ ॥ प्रणीतापात्रयोर्मध्ये उत्तरे विश्वदेवता ॥ स्थापयेत्प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतोदकपूरितम् ॥ २४३ ॥ प्रणीतापात्रतः पूर्वं स्थाप्याः पात्रगणाः क्रमात् ॥ आज्य स्थाली चरुस्थाली गव्यक्षीरसमन्विता ॥ २४४ ॥ स्रुक्स्रुवौ च घृतं गव्यं तन्दुलाः कुशपूलकः ॥ पालाशसमिधस्तिस्रः पूर्णपात्रमतः परम् ॥ २४५ ॥ सप्तद्वीपेश्वरीं ध्यात्वा गृहीत्वा कुशपूलकम् ॥ निक्षिपेत्प्रोक्षणीपात्रे वारुणं बीजमुच्चरन् ॥ २४६ ॥ तेन दर्भसमूहेन शतसंख्येन संस्थितम् ॥ क्रमात्पात्रगणं प्रोक्षेत्प्रोक्षणीपात्रवारिणा ॥ २४७ ॥ आज्यपात्रे चरुस्थाल्यां निक्षि पेद् घृततन्दुलान् ॥ यथाक्रमेण कर्तव्यं ततोऽधिश्रपणं तयोः ॥ २४८ ॥ आज्ये च पायसे कार्यं पर्यग्निकरणं तयोः ॥ स्रुव्यं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पालाशकाष्ठेन त्रिभिर्दर्भैः समुज्ज्वलम् ॥ २४९ ॥ स्रुवयोस्तापनं कृत्वा प्रणीतोदकसिञ्चनम् ॥ पुनः प्रतपनं कृत्वा दक्षिणे स्थापनं स्मृतम् ॥२५०॥ उद्वास्य प्रथमं पूर्वादानीयाज्यं प्रदक्षिणम् ॥ कुण्डाचार्यान्तरे स्थाप्य स्वबीजजपपूर्वकम् ॥ २५१ ॥ अभिघार्याज्य मार्गेण वायव्ये स्थापयेच्चरुम् ॥ स्वबीजजपसंस्थाने धेनुमुद्रा तयोर्भवेत् ॥ २५२ ॥ तिस्रः पालाशसमिधो मौनी वैश्वानरे क्षिपेत् ॥ कुशपूलकयुक्ताभिः प्रोक्षण्यद्भिः प्रदक्षिणम् ॥ २५३ ॥ पर्युक्ष्याग्निं प्रणीतायां निक्षिपेत्कुशपूलकम् ॥ निधाय दक्षिणं जानुं भूमौ वह्निमुखे हुते ॥ २५४ ॥ अन्वारब्धे स्रुवेणाज्यं निर्धूमे हव्यवाहने ॥ प्रजापतिर्महाकाली महालक्ष्मीः सरस्वती ॥ २५५ ॥ एतदग्निमुखं प्रोक्तं मायाबीजपुरःसरम् ॥ संस्रवान्प्रोक्षणीपात्रे निक्षिपेदग्निसाधनः ॥ २५६ ॥ विदध्यात्कल्पितं होमसुक्तेन हविषा शमीम् ॥ तेन स्विष्टकृतं दद्याद्धविषा सोज्ज्वलेऽनले ॥ २५७ ॥ मायाबीजं च ॥ ब्रह्माणी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही नारसिंही ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्विष्टकृते स्वाहा ॥ २५८ ॥ अयं तु मुनिभिः प्रोक्तो मन्त्रः स्विष्टकृते हुते ॥ आज्यस्य नवकं दद्यान्मायाबीजादिनामभिः ॥ २५९ ॥ तद्यथा ॥ ॐ ह्रीं नन्दायै स्वाहा इत्यादिनवाहुतयः ॥ नन्दा भगवती आद्या द्वितीया रक्तदन्तिका ॥ २६० ॥ शाकंभरी तृतीया च दुर्गा भीमा च तत्परे ॥ भ्रामरी कालिका चैव शिवदूती प्रजापतिः ॥ २६१ ॥ गन्ध पुष्पफलोपेतं कृत्वा यज्ञात्मकं स्तवम् ॥ ततः पूर्णाहुतिं दद्याद् घृतस्याच्छिन्नधारया ॥ २६२ ॥ नवाक्षरेण मन्त्रेण महालक्ष्मी परायणः ॥ ध्यायेद्यज्ञपुरोडाशममृतं देवदुर्लभम् ॥ २६३ ॥ प्रोक्षणीपात्रमध्यस्थान्मन्त्रेणाश्नाति संस्रवान् ॥ यस्माद्यज्ञरसाः पूता यज्वानो ब्रह्मरूपिणः ॥ २६४ ॥ तं संस्रवपुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम् ॥ सलिलेन प्रणीतायास्तीर्थध्यानपरायणः ॥ २६५ ॥ करोति मार्जनं दर्भैः शतशः श्लोकपाठतः ॥ याः शिवा याश्च शक्तयो याभिश्च सविता सह ॥ २६६ ॥ यास्त्वापः सत्यं दधाना स्ता मे कृण्वन्तु भेषजम् ॥ अभिषिञ्चेदथात्मानं चतुर्भिश्चण्डिकास्तवैः ॥ २६७ ॥ दानं दद्याद्विधानेन हेमधेन्वम्बरादिकम् ॥ नवदुर्गा तथाऽऽख्याता पापतापप्रणाशिनी ॥ २६८ ॥ सर्वैश्वर्यप्रदा भूप कुर्वेनामविलम्बितम् ॥ नवदुर्गाविधानेऽस्मिन्यत्फलं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

परिकीर्तितम् ॥ २६९ ॥ कालरात्रिविधानेऽपि तत्फलं लभते ध्रुवम् ॥ एतत्त्रिगुणितं सर्वं नवदुर्गाजपे फलम् ॥ २७० ॥ कथितं तदवाप्नोति नित्यं चण्डीजपे कृते ॥ मनसा चिन्तितं कार्यं कार्यसिद्धिः प्रजायते ॥ २७१ ॥ ऋषिरुवाच ॥ शारदे चाश्विने मासि शुक्लपक्षे नृपोत्तम ॥ प्रतिपत्तिथिमारभ्य नवचण्डीं समारभेत् ॥ २७२ ॥ तोरणाढ्ये शुभस्थाने सुविताने स्वलंकृते ॥ पूर्वादिक्रमयोगेन दिग्देवीभ्यो बलिं हरेत् ॥ २७३ ॥ गन्धपुष्पाक्षताधूपदीपैश्चरुभिरुत्तमैः ॥ कादम्बरी गजारूढा पुनरुक्षाज पृष्ठगा ॥ २७४ ॥ कराली महिषारूढा रक्ताक्षी प्रेतसंस्थिता ॥ श्वेतकौलिरगा श्वेता हरिता मृगवाहिनी ॥ २७५ ॥ यक्षिणी सिंह पृष्ठस्था कङ्काली वृषवाहना ॥ हंसपृष्ठसुरा ज्येष्ठा सर्पराजाहिवाहना ॥ २७६ ॥ अनेन विधिना दत्त्वा दिग्देवीभ्यो बलिं यजी ॥ नव ग्रहान् लोकपालान् दिशां पालांश्च पूजयेत् ॥ २७७ ॥ कलशं पञ्चरत्नाढ्यं हेमवस्त्रोदकान्वितम् ॥ संप्रतिष्ठाप्य संपूज्य चण्डिकार्चनमारभेत् ॥ २७८ ॥ पूर्वोक्तेन विधानेन गन्धपुष्पैरनुत्तमैः ॥ वस्त्रालङ्कारसिन्दूरकस्तूर्यगरुचन्दनैः ॥ २७९ ॥ बहुभिर्धूप दीपैश्च नैवेद्यैर्वर्णसंस्थया ॥ कृत्वा तु पूजनं सर्वं जपेदेकाग्रमानसः ॥ २८० ॥ सकृद्रहस्यसंयुक्तं चण्डिकाचरितत्रयम् ॥ कुमारीं विप्र मुख्यांश्च भोजयेद्विधिपूर्वकम् ॥ २८१ ॥ यदाद्ये दिवसे कुर्याच्चण्डिकापूजनादिकम् ॥ द्विगुणं तद्द्वितीयेऽह्नि त्रिगुणं तत्परेऽहनि ॥ ॥ २८२ ॥ नवमीतिथिपर्यन्तं वृद्ध्या पूजाजपादिकम् ॥ एकाहारं व्रती कुर्यात्सत्यादिनियमैर्युतः ॥ २८३ ॥ कृत्वा होमादिकं सर्वं नवदुर्गाविधानवत् ॥ वित्तशाठ्यं परित्यज्य कुर्यादाचार्यतोषणम् ॥ २८४ ॥ वस्त्रांगुलीयमूधेनुवाजिहेमप्रदानतः ॥ अशक्तो नित्यमेकं तु दद्यादस्यै प्रयत्नतः ॥ २८५ ॥ शृणुष्वास्य फलं भूप यो हि कश्चिदनेन हि ॥ विदधाति विधानेन य एनां नवचण्डिकाम् ॥ २८६ ॥ इन्द्रब्रह्मादयो देवास्तमायान्ति प्रसेवितुम् ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं निर्धनो धनवान् भवेत् ॥ २८७ ॥ अविद्यो लभते विद्यां सकामश्च मनोरथान् ॥ व्याधयः संक्षयं यान्ति शत्रवः क्षयमाप्नुयुः ॥ २८८ ॥ न तस्यास्ति भयं किंचिद्राजचौराग्निवातजम् ॥ ऋषिरुवाच ॥ शतचण्डीविधानं ते यथावत्कथयाम्यहम् ॥ २८९ ॥ सुघोरायामनावृष्ट्यां भूकम्पे च सदारुणे ॥ परचक्रभये तीव्रे क्षय

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

रोग उपस्थिते ॥ २९० ॥ राजवश्यादिकार्येषु आयुष्मत्सुतजन्मनि ॥ महोत्पातविनाशाय पञ्चविंशतियोजने ॥२९१॥ देशे सर्वत्र शान्त्यर्थं शतचण्डीमिमां जपेत् ॥ शिवाभ्याशे समे देशे चतुर्द्वारं सुतोरणम् ॥ २९२ ॥ पताकालंकृतं कुर्यान्मण्डपं वेदिभूषितम् ॥ तत्र कुण्डं प्रकर्तव्यमुक्तलक्षणसंयुतम् ॥ २९३ ॥ सदाचाराःकुलीना ये ह्रीमन्तः सत्यवाजिनः ॥ चण्डिकापाठसंपूर्णा दयावन्तो जितेन्द्रियाः ॥ २९४ ॥ ईदृग्लक्षणसंयुक्ता दम्भमोहविवर्जिताः ॥ दश विप्रान् समभ्यर्च्य महालक्ष्मीस्वरूपिणः ॥२९५॥ मधुपर्कविधानेन यथावत्तद्ददाम्यहम् ॥ श्रीपर्णीवृक्षपीठानि हस्तमात्राणि मानतः ॥ २९६ ॥ अष्टांगुलसमुच्छ्रायसहितानि समानि च ॥ स्रुवा स्रुक्च समायुक्ताः खादिरा लक्षणान्विताः ॥ २९७ ॥ सप्तविंशतिदर्भाणां वेण्यो ग्रन्थिविभूषिताः ॥ विष्टराणां सर्वयज्ञे लक्षणं परिकीर्तितम् ॥ २९८ ॥ शुद्धोष्णोदकसंपूर्णाः पादार्घं ताम्रपात्रकाः ॥ शङ्खाश्चार्घप्रदानाय गन्धपुष्पयवान्विताः ॥ २९९ ॥ दूर्वोदकसमायुक्ताः स्थापनीयाः पृथक्पृथक् ॥ सुताम्राश्च कमण्डल्व आचम्योदकपूरिताः ॥३००॥ संपुटा मधुपर्कार्थं कांस्या दध्यादि संयुताः ॥ महान्त्यर्हाणि वस्त्राणि मुद्रिकाढ्यं सुभूषणम् ॥ ३०१ ॥ मयूरपत्रच्छत्राणि सोष्णीषाणि समाहरेत् ॥ पादुका आहरेत्तत्र ताम्रभूषणभूषिताः ॥ ३०२ ॥ अन्यदत्र यदस्त्युक्तं मधुपर्कस्य पूजनम् ॥ कृत्वा फलमवाप्नोति महायज्ञार्हणोपमम् ॥ ३०३ ॥ अन्येभ्यो मधुपर्कस्य विप्रेभ्यः पूजनं समम् ॥ यथावद्द्विगुणं दद्यादाचार्याय सुभक्तिमान् ॥ ३०४ ॥ अन्यैर्द्विजैः सम यत्र देशिकस्य प्रपूजनम् ॥ तस्मिन्यज्ञे फलं स्वल्पमनावृष्टौ यथा क्षितौ ॥ ४०५ ॥ अर्चितास्ते द्विजाः श्रेष्ठा संतुष्टाः पूर्णमानसाः ॥ यजमानं सपत्नीकं सुतबन्धुसमन्वितम् ॥ ३०६ ॥ उपवेश्यासने पुण्यकलशाग्रे विभूषिते ॥ वेदमन्त्राक्षरैः पूर्णं कुर्वन्ति स्वस्तिवाचनम् ॥ ३०७ ॥ कृतस्वस्त्ययनो विप्रैर्वेदवादित्रनिःस्वनैः ॥ चण्डिकामण्डपं यायात्परिवारविभूषितः ॥ ३०८ ॥ पश्चिमद्वारमार्गेण प्रविश्य कृतमण्डपम् ॥ ददातिपूजनेऽनुज्ञां देशिकाय कृताञ्जलिः ॥ ३०९ ॥ देशिकः सर्वमन्त्रज्ञो नवभिर्ब्राह्मणैः सह ॥ दिग्देवीर्नव ग्रहांश्च लोकपालैः समन्वितान् ॥ ३१० ॥ दिशापालांश्च संपूज्य कलशं स्थाप्य एव च मण्डपस्य चतुर्दिक्षु दत्त्वा भूतबलिं

Chinmay, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

बहिः ॥ ३११ ॥ मण्डपे कलशौ द्वौ द्वौ द्वारे द्वारे निवेशयेत् ॥ पवित्रोदकसंपूर्णावाम्रपल्लवशोभितौ ॥३१२॥ उपस्पृश्योदकं ध्यात्वा चण्डिकां देववन्दिताम् ॥ उपविश्यासने वेद्यां बद्धपद्मासनो दृढः ॥ ३१३ ॥ प्राणायामविशुद्धात्मा दश कन्याः सभूषणाः ॥ चण्डिकापूजनं कुर्याद्विशेषेण समन्वितम् ॥ ३१४ ॥ कस्तूरीकुंकुमं जात्यं सकर्पूरं सचन्दनम् ॥ पलद्वयं च संपूर्णमनुलेपनमाहरेत् ॥ ३१५ ॥ दिव्यवस्त्रमलंकारं हेमगद्याणकत्रयम् ॥ लक्षपुष्पचतुर्थांशं गुग्गुलोश्च पलद्वयम् ॥ ३१६ ॥ दीपानां द्विशतं श्रेष्ठं मण्डपे जपसाधनम् ॥ कुडवौ द्वौ हविष्यान्नं नैवेद्यं सरसं शुचि ॥ ३१७ ॥ ताम्बूलानां सकर्पूरं शतद्वयमनुत्तमम् ॥ नवचण्डीविधानोक्तं महालक्ष्मीप्रपूजनम् ॥ ३१८ ॥ नवभिर्ब्राह्मणैः सार्धं कृत्वाऽऽचार्यो द्विजोत्तमः ॥ ददाति नवविप्रेभ्य आचार्यश्चण्डिकामयः ॥ ३१९ ॥ कार्यं जाप्यप्रसिद्ध्यर्थमनुज्ञामानपूर्वकम् ॥ ततोऽनुज्ञामनुप्राप्य वेद्यामाचार्यसन्निधौ ॥ ३२० ॥ मृद्वासनेषु संदिष्टा उपविष्टाः सुनिश्चलाः ॥ न्यासध्यानसमायुक्ता नासाग्रान्तावलोकिनः ॥ ३२१ ॥ श्रीगन्धपुष्पमालाश्च चण्डिकाचरितत्रयम् ॥ सरहस्यमृषिच्छन्दोदेवताशक्ति संयुतम् ॥ ३२२ ॥ बीजतत्त्वसमोपेतमुपांशुगणसंयुतम् ॥ जपेयू रूपमेकैकं मौनिनस्त्यक्तमत्सराः ॥ ३२३ ॥ समुत्थाय ततः कुर्युरेवं सर्वे प्रदक्षिणम् ॥ चण्डिकां सुनमस्कारैः परितोष्य पुनः पुनः ॥ ३२४ ॥ उपविश्य ततो युक्तैः श्लोकैः सर्वार्थसाधकैः ॥ प्रार्थयेयुः प्राप्यफलं महालक्ष्मीं दृढव्रताः ॥ ३२५ ॥ कुमारीदशकं भोज्यं भोज्या विप्रा दशोत्तमाः ॥ महाकाली महालक्ष्मीमहासरस्वतीर्जपन् ॥ ३२६ ॥ भोजयेत्परया भक्त्या देशिकादिदशद्विजान् ॥ ततो बन्धुसमायुक्तो भुञ्जीयात्तु सकृत्पुमान् ॥ ३२७ ॥ सत्कथाभिः सुगीतैश्च सर्ववादित्रनिःस्वनैः ॥ पूजनैः प्रदक्षिणीयैश्च वेदपाठैर्निशां नयेत् ॥ ३२८ ॥ द्वितीये दिवसे स्नात्वा विधिवत्ते द्विजोत्तमाः ॥ चण्डिकातर्पणं कुर्युः संपूर्णध्यानपूर्वकम् ॥ ३२९ ॥ सर्वं पृथक्पृथक्कृत्वा दिग्देवीयजनादिकम् ॥ बहिर्भूतबलिं दत्त्वा कृत्वा भूतप्रदक्षिणाम् ॥ ३३० ॥ पुष्पागारे प्रविश्याथ स्वस्वासनसुसंस्थिताः ॥ जपन्ति जय चण्डीति यावद्दुर्गाप्रपूजनम् ॥ ३३१॥ पूर्वस्मात्पूजनात् कुर्याद्द्विगुणं पूजनं क्रमात् ॥ आचार्यः सुस्थिरः शान्तश्चण्डिकायाः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

प्रतोषणम् ॥ ३३२ ॥ सुकृते पूजने विप्रा जपेयुर्द्विगुणं जपम् ॥ द्विगुणं च प्रकर्तव्यं कुमारीपरितोषणम् ॥ ३३३ ॥ कार्यं जागरणं रात्रावुक्तैः सर्वमहोत्सवैः ॥ चण्डिकापूजनं कार्यं कुमारीद्विजपूजनम् ॥ ३३४ ॥ तृतीयेऽहनि कर्तव्यं त्रिगुणं च सजागरम् ॥ चतुर्थे दिवसे पूर्वं सम्यक्कार्यं चतुर्गुणम् ॥ ३३५ ॥ महाजागरणोपेतं होमं स्यात्पञ्चमेऽहनि ॥ पायसं सर्पिषा युक्तं तिलैः शुक्लै र्विमिश्रितम् ॥ ३३६ ॥ जुहुत्युक्तविधिं कृत्वा दशांशेन नृपोत्तम ॥ रुद्राध्याये यथा होमं मन्त्रेणैकेन साधयेत् ॥ तथा स्तोत्रं जपं होमं मन्त्रेणैकेन साधयेत् ॥ ३३७ ॥ चण्डीसप्तशतीजाप्ये होममन्त्रो नवाक्षरः ॥ कथितः पूजनाध्याये तस्माद्धोमे भवे दसौ ॥ ३३८ ॥नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ अथवाऽयं भवेद्धोमे श्लोकस्तत्र निरूपितः ॥ ३३९ ॥ जपहोमे सुसंपूर्णे दिग्देवीनां शतं शतम् ॥ होतव्यं नाममन्त्रैश्च हविष्यान्नेन सादरम् ॥ ३४० ॥ शतं शतं क्रमाद्देयं समिदाज्यं चरु स्तिलाः ॥ ग्रहेभ्यो वैदिकैर्मन्त्रैः फलं पुष्पं शतं शतम् ॥ ३४१ ॥ लोकपालदिशापालहोमे सर्पिश्चरुं तिलान् ॥ आचार्यादिद्विजाः सर्वे जुहुयुश्च शतं शतम् ॥ ३४२ ॥ होमे संपूर्णतां प्राप्ते नमस्कृत्येष्टदेवताम् ॥ चण्डिकां देवदेवानामृषीणां वन्दितां पराम् ॥ ॥ ३४३ ॥ स्तम्भद्वये स्रुचं कृत्वा यजमानः स्वलंकृतः ॥ घृतकुम्भदशांशेन कुर्यात्पूर्णाहुतिं स्वयम् ॥ ३४४ ॥ मूर्धानं मन्त्र पाठेन नवाक्षरजपेन वा ॥ प्राशनं मार्जनाद्यं च नवदुर्गाविधानवत् ॥ ३४५ ॥ जपहोमं समावेद्य चण्डिकायै मनोरथम् ॥ ब्रह्मणे निष्कषड्वाह्यं दद्याद्गोमिथुनद्वयम् ॥ ३४६ ॥ यस्याः प्रभावमतुलं श्लोकमुक्त्वा कृताञ्जलिः ॥ दद्याद्गोमिथुनान्यष्टावाचार्याय सुतृप्तिमान् ॥ ३४७ ॥ चतुर्विंशतिसंख्याकैर्हैमगद्याणकैः सह ॥ एकैकमष्टविप्रेभ्यो दद्याद्गोमिथुनं स्वयम् ॥ ३४८ ॥ निष्कत्रय समायुक्तं वस्त्रालंकारभूषितम् ॥ सुस्थितं स्वासने शान्तं यजमानं महोत्सवम् ॥ ३४९ ॥ कुङ्कुमाक्ताक्षता दूर्वा सुगन्ध चन्दन दधि ॥ आदाय दीयते विप्रा अचार्यादिसुपूजिताः ॥ ३५० ॥ स्तोत्राणां च चतुर्णां तु महालक्ष्मीपरायणः ॥ एकैकं श्लोकमुच्चार्य दद्याद्राशिं सप्तुत्तमम ॥ ३५१ ॥ सभार्यःससुतः पूर्णो लब्धाशीर्वादमङ्गलः ॥ रक्तपुष्पाञ्जलिं दद्याच्चण्डिकायै विसर्जनम् ॥ ३५२ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

भूरिदानं ततो दत्त्वा तूर्यवादित्रनिःस्वनैः ॥ प्रविशेच्छान्तिपीठश्च तोरणाढ्यं स्वमालयम् ॥ ३५३ ॥ शतचण्डी विधानस्य कृतेन सुकृतेन हि ॥ महालक्ष्मीर्ददात्यस्मै त्रैलोक्ये सुखमुत्तमम् ॥ ३५४ ॥ यद्यत्कार्यं समुद्दिश्य क्रियते शत चण्डिका ॥ तत्र तस्य महालक्ष्मीस्तत्तदाशु प्रयच्छति ॥ ३५५ ॥ चरितत्रितयं जाप्यं चण्डिकाया नृपोत्तम ॥ सरहस्यानि नामानि ब्रह्मोक्तानि वदाम्यहम् ॥ ३५६ ॥ महाविद्या महामन्त्रश्चण्डीसप्तशतीति च ॥ मृतसंजीवनी नाम चतुर्थं परिकीर्तितम् ॥ ॥ ३५७ ॥ पञ्चमं तु महाचण्डी षष्ठं च कुमुदी परा ॥ एतानि यो विजानाति नामानि नृपसत्तम ॥ ३५८ ॥ शतमादौ शतं चान्ते जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम् ॥ चण्डीसप्तशतीमध्ये संपुटोऽयमुदाहृतः ॥ ३५९ ॥ सकामैः संपुटो जाप्यो निष्कामैः संपुटं विना ॥ एतद्गोप्यतरं तत्त्वं चण्डिकाजपसिद्धिदम् ॥ ३६० ॥ ऋषिरुवाच ॥ महाराज प्रयत्नेन सर्वसिद्धिफलप्रदम् ॥ सर्वयज्ञो त्तमं भूप कुमारीपूजनं शृणु ॥ ३६१ ॥ कृते यस्मिन्महालक्ष्मीरचिरेण प्रसीदति ॥ आमन्त्रयेद्दिने पूर्वे कुमारीं भक्तिपूर्वकम् ॥ ॥ ३६२ ॥ पूजादिने समाहूय कुमारीमाद्यदेवताम् ॥ कुमारीपूजनं कृत्वा महालक्ष्मीः प्रसीदति ॥ ३६३ ॥ मण्डले चरणौ तस्याः क्षालयेच्छुभवारिणा ॥ अर्चयेद्धेमपात्रेण वारिपुष्पाक्षतैः समम् ॥ ३६४ ॥ सुविताने शुभे स्थाने पङ्कजोपरि पीठके ॥ उपवेश्य कुमारीं तां स्वाङ्गे न्यासान्समाचरेत् ॥३६५॥ आसनं विधिवत्पूज्य क्रोधदर्पविवर्जितः ॥ अथ ध्यायेत्कुमारीं तां महालक्ष्मीस्वरूप पिणीम् ॥ ३६६ ॥ मातुलिङ्गं गदां खेटं पात्रं पीयूषपूरितम् ॥ दक्षिणाधःक्रमाद्धस्ते बिभ्रतीं सर्वमङ्गलाम् ॥ ३६७ ॥ सुतप्तहेम सर्वाङ्गीमाद्यां त्रिदशपूजिताम् ॥ नवाक्षरेण मन्त्रेण सुमर्चयेत ॥ ३६८ ॥ दद्यादाचमनं तस्यै दद्याद्वस्त्रं सकंचुकम् ॥ सकङ्कणांगुलीयानि कर्णालकरणे शुभे ॥ ३६९ ॥ ग्रैवेयकं प्रदत्त्वा च चन्दनेन विलेपयेत् ॥ पूजयेत्पुष्पमालाभिर्दिव्यैर्धूपैः सुधूपयेत् ॥ ३७० ॥ कुर्यादारार्तिकं राजन्नुदयं वाच्यतां मुहुः ॥ भोजयेद्भक्तिभावेन पायसं घृतशर्कराम् ॥ ३७१ ॥ सुपक्वान्नानि चान्यानि दम्भमोहविवर्जितः ॥ फलैः सुस्वादु चान्नं यद्दद्यादस्यै पुनः पुनः ॥ ३७२ ॥ यावत्सा भोजनं कुर्यात्तावत्स्तोत्रं जपेत्

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सुधीः ॥ दद्यादाचमनं तस्यै ताम्बूलं च समर्पयेत् ॥ ३७३ ॥ तोषयेद्धेमदानेन कुमारीं प्रणतोऽसकृत् ॥ प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥ ३७४ ॥ विसर्जयेत्कुमारीं तां स्वगृहे सत्त्वनिर्भरः ॥ अनेन विधिना भक्त्या कुमारीं योऽभिपूजयेत् ॥ ॥ ३७५ ॥ पृथिव्यां राज्यमासाद्य शिवसायुज्यतां व्रजेत् ॥ यं यं प्रार्थयते कामं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ३७६ ॥ कुमारीपूजनं कृत्वा तं तं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानां कुमारी परमा कला ॥ ३७७ ॥ तत्पूजनेन राजेन्द्र त्रैलोक्यं स्यात्सुपूजितम् ॥ सम्यक् तत्फलदं तस्य चतुर्वेदफलं भवेत् ॥ ३७८ ॥ सर्वतीर्थफलं तस्य यः कुमारीं समर्चयेत् ॥ तस्मात्पूजय भूपाल कुमारीं यतमानसः ॥ ३७९ ॥ कुमारीपूजने राजन् कोटियज्ञफलं लभेत् ॥ राज्यं च प्राप्स्यसे शीघ्रमविभ्रंश्यजन्मनि ॥ ३८० ॥ सोऽपि ज्ञानमवाप्नोति ब्रह्मलोकमकल्मषम् ॥ ३८१॥ इति श्रीहरिकृष्ण० बृ० ध० उपासनास्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये मार्कण्डेयपुराणोक्तदुर्गाकल्पनिरूपणं नामैकविंशं प्रकरणम् ॥ २१ ॥ अथ द्वितीयं देवीसूक्तम् ॥ उक्तं च मार्कण्डेयपुराणे ॥ ब्रह्मोवाच ॥ जन्तोरपश्चिमतनोः सति कर्मसाम्ये निःशेषपाशपटलच्छिदुरा निमेषाः ॥ कल्याणदेशिककटाक्षसमाश्रयेण कारुण्यतो भवसि शांभवि देशिकेष्टे ॥ १ ॥ मुक्तादिभूषणवती नवविद्रुमाभा यच्चेतसि स्फुरसि तारकितेव संध्या ॥ एकः स एव भुवनत्रयसुन्दरीणां कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरैर्विनाऽपि ॥ २ ॥ ये भावयन्ति मतिदाहभिदंशुजालैराप्यायमानभुवनाममृतेश्वरीं त्वाम् ॥ ते लंघयन्ति ननु मातरलंघनीयां ब्रह्मादिभिः सुरवरैरपि कालकक्षाम् ॥ ३ ॥ यः स्फाटिकाक्षगुणपुस्तककण्ठिकाभ्यां व्याख्यासमुद्यतकरां शरदिन्दुशुभ्राम् ॥ पद्मासनां च हृदये भवतीमुपास्ते मातः स विश्वकवितार्किकचक्रवर्ती ॥ ४ ॥ बर्हावतंसयुतबन्धुरकेशपाशां गुञ्जावलीकृतघनस्तनहारशोभाम् ॥ श्यामां प्रवालवदनां सुकुमारहस्तां त्वामेव नौमि शबरीं शबरस्य नाथाम् ॥ ५ ॥ अर्धेन किं तव लताललितेन मुग्धे क्रीतं विभो पुरुषधर्ममिदं त्वयेति ॥ आलीजनस्य परिहासवचांसि मन्ये मंदस्मितेन तव देवि जडीभवंति ॥ ॥ ६ ॥ ब्रह्माण्डबुद्बुदकदम्बकसंकुलो मे मायोदधिर्विविधदुःखतरंगमालः ॥ आश्चर्यमम्ब झटिति प्रलयं प्रयाति त्वद्ध्यानसंतति

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

महावडवामुखाग्नौ ॥ ७ ॥ दाक्षायणीति कुटिलेति गुहाननेति कात्यायतीनि कमलेति कलावनीति ॥ एषा सती भगवती पर मार्थतोऽपि संदृश्यते बहुविधा ननु नर्तकीव ॥ ८ ॥ संकोचमिच्छसि यदा गिरिजे तदानीं वाक्तर्कयोस्त्वमसि भूमिरनामरूपा ॥ यद्वा विकासमुपयासि यदा तदानीं त्वन्नामरूपगणनाः सुकरा भवंति ॥ ९ ॥ भोगाय देवि भवती कृतिनः प्रणामा भ्रूकिंकरी कृतसरोजगृहां सहस्राम् ॥ चिन्तामणिप्रचयकल्पित एव शैले कल्पद्रुमोपवन एव चिरं चरंतु ॥ १० ॥ हन्तुस्त्वमेव भवसि त्व दधीनमीशे संसारतापमखिलं दयया पशूनाम् ॥ वैकर्तनी किरणसंहतिरेव दक्षो धर्मं निजं शमयितुं निजयैव दृष्ट्या ॥ ११ ॥ शक्तिः शरीरमधिदैवतमन्तरात्मा ज्ञानं क्रिया करणमासनजालमिच्छा ॥ ऐश्वर्यमायतनमावरणादि च त्वं किं लज्जसे यदपि देवि शशाङ्क मौले ॥ १२ ॥ भूमौ निरुक्तिमपि तापयसि प्रतिष्ठा विद्याऽनले मरुति जातु तडिल्लतेव ॥ भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु निस्पन्दमानपरमामृततोयरूपा ॥ १३ ॥ आनन्दलक्षणमनाहतनाभिदेशे नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे ॥ प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं सिञ्चन्ति नेत्रसलिलैः पुलकैश्च धन्याः ॥ १४ ॥ त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मतनौ रुचिस्त्वं संचेतनाऽसि पुरुषे पवने चलत्वम् ॥ त्वं साधुताऽसि सलिले शिखिनि त्वमूष्मा निःसारमेवमखिलं त्वदृते यदि स्यात् ॥ १५ ॥ ज्योतींषि यत्र विच रन्ति यदन्तरिक्षे सूते ययाऽपि यदहिर्धरणीं च धत्ते ॥ यद्वाति वायुरनलो यदुदर्चिषस्ते तत्सर्वमम्ब तव केवलमाज्ञयैव ॥ १६ ॥ यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं नाङ्गीकरोति हृदयेषु जगच्छरण्ये ॥ तावद्विकीर्णजटिलाकुटिलप्रशस्तास्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं भजन्ति ॥ १७ ॥ यद्देवयानपितृयानविहारमेकं कृत्वा मनःकरणमण्डलसार्वभौमम् ॥ ज्ञानेन वेह तव कारणपञ्चकस्य पर्वाणि पार्वति न यान्ति निजागमत्वम् ॥ १८ ॥ स्थूलासु मूर्तिषु महीप्रमुखासु मूर्त्तैः कस्याश्च नापि तव वैभवमम्ब यस्याः ॥ प्रत्यङ्गिरा अपि न शक्यत एव वक्तुं साऽपि स्तुताऽखिलमयेति तितिक्षितव्यम् ॥ १९ ॥ कालाग्निकोटिरुचिमम्ब षडध्वशुद्धां बालावनेषु भवतीममृतौघवृष्टिम् ॥ श्यामां घनस्तनतटां शकलीकृतौ च ध्यायन्त एव भवतीं गुरवो भवन्ति ॥ २० ॥ विद्यां परां कतिचि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दम्बुरसं च केचिदानन्दमेव कतिचित्कतिचिच्च मायाम् ॥ त्वां विश्वमाहुरपरे वयमात्तनामाः साक्षादपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव ॥२१॥ कुवलयदलनीलं बन्धुसुस्निग्धकेशं पृथुतरकुचसारं क्रान्तिकान्तावनम्रम् ॥ किमिह बहुभिरुक्तैस्तत्स्वरूपं परं नः सकलभुवनमातः सन्ततं सन्निधत्ते ॥ २२ ॥ कारुण्यकोमलकटाक्षविराजमाने संसारतारिणि शिवे सकलाघहन्त्रि ॥ त्वां देवि वन्दितपदाममरादि भूतां वागीश्वरीमहमनन्तगुणां श्रयामि ॥२३॥ कलामालां कलातीतां सारां सारनिषेविताम् ॥ अमोघां सहमोघां च व्रजामि शरणं गिराम् ॥ २४ ॥ धात्रीं विधात्रीं कल्याणीं धरां धारणासुक्षमाम् ॥ अवियोनिमनिन्द्यां च वाचं त्वां शरणं व्रजे ॥२५॥ अजां पुराणीममृतामद्वितीयां सनातनीम् ॥ वरां वरेण्यां वरदां वरश्रेष्ठां वरप्रियाम् ॥२६॥ शुभां सरस्वतीं देवीं सच्चिदानन्दरूपिणीम् ॥ शरणागतवात्सल्ये त्वामहं शरणं व्रजे ॥२७॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ इति स्तुत्यवसाने तु प्रादुर्भूता कृपामयी ॥ महासरस्वती देवी प्रोवाच वचनं शुभम् ॥ २८ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ वरं वरय भद्रं ते कमलोद्भव सुव्रत ॥ स्तुत्याऽनया मनो देव संतोषं मम चाग मत् ॥२९॥ ब्रह्मोवाच ॥ यदि देवि प्रसन्नाऽसि वरदाऽसि वरेश्वरि ॥ त्वद्भक्तौ देहि मे दार्ढ्यं भवबन्धविमोचकम् ॥३०॥ श्रीदेव्युवाच ॥ एवमस्तु महाभाग कमलोद्भव मारिष ॥ मत्प्रसादात्तव सदा निर्मला बुद्धिरस्तु ते ॥३१॥ महासरस्वतीसूक्तं यत्त्वया भाषितं विधे ॥ तस्मै दत्तप्रतापो मे निशामय वचो मम ॥३२॥ विना सरस्वतीसूक्तं देवीं यश्चण्डिकां पठेत् ॥ ब्रह्मघ्नानां गतिं यातु शापमाप्नोतु दारुणम् ॥३३॥ निष्फलस्तस्य पाठोऽस्तु मम वाक्यनियन्त्रणात् ॥ अनेन पाठिता देवी धर्ममोक्षार्थकामदा ॥३४॥ ऋषिरुवाच ॥ इत्युक्त्वाऽन्तर्धिमापेदे महापूर्वा सरस्वती ॥ वरेण च्छन्दयित्वाऽजं लोककल्याणभाषिणी ॥३५॥ विष्णुरुवाच ॥ यामामनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं विद्येति यां श्रुतिरहस्यविदो गृणन्ति ॥ तां धर्मपल्लवितशंकररूपमुद्रां देवीमनन्यशरणः शरणं प्रपद्ये ॥३६॥ अम्ब स्तवेषु तव तावदकर्तृकाणि कुण्ठीभवन्ति वचसामपि कुण्ठनानि ॥ डिम्भस्य मे स्तुतिरिमाद्य न पुश्चरूपा वात्सल्यनिघ्नहृदयां भवतीं धुनोति ॥३७॥ ध्यानेति बिन्दुरिति वादवतीन्दुलेखारूपेति वाग्भवतनूरिति मारिकेति ॥ निष्पन्दमानससुधास्वरूपाऽवबोधा विद्योतसे मनसि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

भाग्यवतां जनानाम् (?)॥३८॥ आविर्भवत्पुलकसंहतिभिः शरीरैर्निष्पन्दमानसलिलैर्नयनैश्च नित्यम्॥ वाग्भिश्च गद्गदपदाभिरुपासते ये पादौ तवाम्ब भुवनेषु त एव धन्याः ॥३९॥ वक्त्रं यदुद्यनुतिभिर्नयते भवत्याः स्तुत्यं नमो यदपि देवि शिरः करोति ॥ चेतश्च यस्त्वयि परायणमन्तराणि कन्यापि कैरपि भवन्ति तपोविशेषैः ॥ ४० ॥ मूलालवालकुहरादुदिता भवानी निर्भिद्य षट्सु चरसि जातु तडिल्लतेव ॥ भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दुनिष्पन्दमानपरमामृततोयरूपा ॥ ४१ ॥ दग्धं यदा मदनमेकमनेकधाऽतो मुग्धः कटाक्षविधिनाऽङ्कुरयांचकार ॥ धत्ते तदा प्रभृति देवि ललाटनेत्रं सत्यं ह्रियैव मुकुलीकृतमिन्दुमौलिः ॥ ४२ ॥ अज्ञान संभवमनाकलितान्वयं हि भिक्षुं कपालिनमदादसमाद्वितीयम् ॥ पूर्वं करग्रहणमङ्गलतो भवत्या शंभुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये ॥ ॥ ४३ ॥ चर्माम्बरं च शवभस्मविलेपनं च भिक्षाटनं च नटनं च परेतभूमौ ॥ वेतालसंहतिपरिग्रहता च शंभोः शोभां बिभर्ति गिरिजे तव साहचर्यात् ॥ ४४ ॥ सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ॥ अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताऽधिवाचि ॥ ४५ ॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॥ ४६ ॥ ऋषिरुवाच ॥ इति स्तुत्यवसाने तु विष्णोरमिततेजसः ॥ प्रादुर्भूता महालक्ष्मीर्महिषासुरघातिनी ॥ ४७ ॥ श्रीदेव्युवाच व्रियतामीप्सितो देव कामस्ते कमलापते ॥ ददाम्यहं त्वां च सदा तव सूक्तवशीकृता ॥ ४८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यदि दास्यसि मे देवि वरान्सुकरुणागमात् ॥ त्वय्येव विमला भक्तिः सदा मेऽस्तु कृपा मयि ॥ ४९ ॥ किंचित्सूक्ते विधा तव्या कृपा सिद्धिर्वरोत्तमा ॥ यत्प्रसादात्प्रसन्ना त्वं भवस्यानन्ददायिनी ॥ ५० ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ एवमस्तु महाविष्णो कीर्तिस्ते ह्यनपायिनी ॥ अतुलश्च प्रतापो हि सदा भवतु सत्तम ॥ ५१ ॥ महालक्ष्मीसूक्तमृते देवीं यश्चण्डिकां पठेत ॥ मातृगामी स भवति पापं भवति पुष्कलम् ॥ ५२ ॥ सूक्तेऽस्मिन्काऽपि विमला स्थापिता सिद्धिरुत्तमा ॥ यस्याः प्रसादतो जन्तुर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥ ५३ ॥ इति ते व्याहृतं सत्यं विज्ञातव्यं रमापते ॥ तवास्तु विमला कीर्तिः सूक्तपाठानुभावतः ॥ ५४ ॥ इत्यु

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

क्त्वाऽन्तर्धिमापेदे महालक्ष्मीर्वरप्रदा ॥ नारायणं जगन्नाथं सा बोध्य बहुधा नृप ॥ ५५ ॥ शिव उवाच ॥ सुन्दरी त्रिपुरा कामकामिनी साधकप्रिया ॥ अमोघसत्यवचना विमोही मोहरूपिणी ॥ ५६ ॥ अमृतेशी च कल्याणी कारुण्या करुणा कला ॥ कलातीता कोमलान्तः करणा विश्वनायिका ॥ ५७ ॥ विघ्नकर्त्री विघ्नहर्त्री विघ्नेशी विघ्नयक्षिणी ॥ कामाख्या कामनिलया कामेशी भगमालिनी ॥ ५८ ॥ त्रिखण्डा योनिमुद्रा च धेनुमुद्रा च खेचरी ॥ पाशाङ्कुशा द्राविणी च मोहिनी मदभञ्जिनी ॥ ॥ ५९ ॥ मन्दप्रिया दुराराध्या काला कालविनाशिनी ॥ काष्ठा कुलेशी कल्याणी सुकल्या कल्यकारिणी ॥ ६० ॥ कोमलाङ्गी विश्वमाता युगेशी च युगन्धरी ॥ ब्रह्मविष्णुविमोहा च मोहिनी स्तम्भिनी परा ॥ ६१ ॥ अमोघा सत्यसंकल्पा सत्या सत्य विनाशिनी ॥ सत्यग्रामा सत्यवहा सत्यवश्या जनप्रिया ॥ ६२ ॥ शरीरवासिनी वासा निर्मदा वामदक्षिणा ॥ कपालकुण्डला काली काली कालविनाशिनी ॥ ६३ ॥ गानप्रिया च गीताङ्गी सुगीता धर्मशालिनी ॥ विश्वयोनिर्विश्वमाता विश्ववन्द्या क्रियामयी ॥६४॥ ऋषिरुवाच ॥ इति स्तुत्यवसाने तु श्रीशंभोः शूलधारिणः ॥ महाकाली कलातीता प्रोवाच वचनं महत् ॥६५॥ श्रीदेव्युवाच ॥ स्तुत्याऽनया ते महेश संतुष्टं मम मानसम् ॥ वरं वरय भद्रं ते प्रार्थनादधिकं शिव ॥ ६६ ॥ श्रीशिव उवाच ॥ तवामला सदा देवि जायतां भक्तिरुत्तमा ॥ एष एव वरो देवि प्रार्थितो मे कृपाकुले ॥ ६७ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ एवमस्त्विति देवेश सूक्तं ते पावनं क्षितौ ॥ दुर्लभं भविता देव सर्वसिद्धिविधायकम् ॥ ६८ ॥ महाकालीसूक्तमृते पठन्सप्तशतीं नरः ॥ दारुणं नरकं गच्छेत्सप्तशो व्याहृतं शिव ॥ ६९ ॥ अन्यच्च श्रूयतां देव सप्तशत्याः फलं भवेत् ॥ यस्य स्मरणमात्रेण ब्रह्महत्या क्षयं व्रजेत् ॥ ॥ ७० ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उ० स्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये मार्कण्डेयपुराणोक्तदेवीसूक्तनिरूपणं नाम द्वाविंशं प्रकरणम् ॥ २२ ॥

अथ श्रीचण्डिकाहृदयम् ॥ ॐ ह्रीं जय चामुण्डे इति त्रिदशकोटिमुकुटनिघृष्टचरणारविन्दे गायत्रि सावित्रि सरस्वति महासंध्या महाकृताभरणा भैरवरूपिणि धारणे प्रकटितदर्शने घोरे घोरासने ज्वलज्ज्वालासहस्रपरिवृते ऊर्ध्वमध्यवसुधाते उदारितव्रतरन्ध्रे

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

निर्मिते परे परापरे कम्पितचराचरे षट्चक्रशोभिते महाशून्ये सुगन्धे अधऊर्ध्वमध्यस्थिते भुक्तिप्रदे देवि निर्मले सकले सकल ऋग्यजुःसामपरिपठिते एहि एहि भगवति ऐन्द्रस्थे सूक्ष्मे सूक्ष्मात्परे फेकारावस्थिते भञ्जिनीस्तम्भिनीमोहनीक्षोभिणीजृम्भिणी पञ्चबीजमध्यस्थिते क्षेत्रे उपक्षेत्रे अष्टदलप्रकृतियोगियोगरते यक्षराक्षसज्वरमहाग्रहविषोपविषसिद्धगन्धर्वविद्याधराधिपते ॥ ॐ ह्रींकारकूंकारहस्ते ॥ ॐ आं ह्रीं अमुकपात्रे प्रवेशय प्रवेशय ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री त्रिपुरे त्रिशक्ति आद्यमूर्ति आगच्छ वामकरे पवित्रांगुलिसिञ्चनं कारयेत् ॥ अमृतसिञ्चनं पूर्णं कारयेत् ॥ सुगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यफलताम्बूलदक्षिणासर्वद्रंसमात्रेण कार येत् ॥ मधुकुङ्कुमकस्तूरीरक्तचन्दनरक्तकरवीरपुष्पैः अतः परं शतपत्राद्यानीतैर्नानाविधपुष्पैरेकचित्तमानसं कुर्वंस्तूष्णीं पूजां कुर्यात् ॥ ॐ द्रीं द्रीं द्रावय २ ॥ ॐ क्लीं क्लीं क्लावय २ ॥ ॐ म्लीं म्लीं म्लावय २ ॥ ॐ खं खं शोधय २ ॥ ॐ मूं मूं उन्मादय २ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं आवेशय २ ॥ ॐ भ्रीं भ्रीं मूर्च्छय २ ॥ ॐ धूं धूं धूनय २ ॥ ॐ म्लां म्लां आस्फोटय २ ॥ ॐ छ्रीं छ्रीं छेदय २ ॥ ॐ हूं हूं उच्छेदय २ ॥ ॐ हूं हूं हन हन २ ॥ ॐ गं गं धारय २ ॥ ॐ लां लां स्तम्भ य २ ॥ ॐ स्तूं स्तूं प्रमथय २ ॥ ॐ ग्रां ग्रां ग्रासय २ ॥ ॐ स्वां स्वां विध्वंसय २ ॥ ॐ प्लुं प्लं प्लावय २ ॥ ॐ भ्रूं भ्रूं भ्रामय २ ॥ ॐ क्रूं क्रं मुद्रां दर्शय २ ॥ ॐ बीं वीं बन्धय २ ॥ ॐ दीं दीं दिशं बन्धय २ ॥ ॐ आं आं अधो बन्धय २ ॥ ॐ ऊं ऊं ऊर्ध्वं बन्धय २ ॥ ॐ कीं कीं कीलय २ ॥ ॐ श्रीं श्रीं मीलय २ ॥ ॐ गीं गीं गिलय २ ॥ ॐ विलं कुरु २ ॥ ॐ हं सां विलम्बय २ ॥ ॐ ह्रां ह्रां हूं हूं फट् फट् अतीतानागतागतवर्तमानं समादिशयादिशय ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पावय २ ॥ त्रैलोक्ये वशवर्तिने एकोऽपि चण्डिकाहृदयं पूज्य पठिष्यतेऽत्यर्थफलम् इति चण्डिकावश्यं कुरु कुरु ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रः ॥ ॐ स्फां स्फीं स्फूं स्फः एकविंशति वारं जाप्यं राजद्वारे विवादे च शत्रुसंकटे समराङ्गणे कृते मनसा चिन्तितान्यपि सर्वाणि कार्याणि सिध्यन्ति ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उपा० स्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये श्रीचण्डिकाहृदयनिरूपणं नाम त्रयोविंशं प्रकरणम् ॥२३॥ अथ चण्डिकास्तोत्रम् ॥ या देवी खड्गहस्ता

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सकलजनपदव्यापिनी विश्वदुर्गा श्मामाङ्गी शुक्लपाशा द्विजगणगणिता ब्रह्मदेहार्धवासा ॥ ज्ञानानां साधयन्ती यतिगिरिगमन ज्ञानदिव्यप्रबोधा सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥ १ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं चर्ममुण्डे शवगमनहते भीषणे भीमवक्त्रे क्रां क्रीं क्रूं क्रोधमूर्तिर्विकृतस्तनमुखे रौद्रदंष्ट्राकराले ॥ कं कं कं कालधारि भ्रमसि जगदिदं भक्षयन्ती ग्रसन्ती हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥ २ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं रुद्ररूपे त्रिभुवननमिते पाशहस्ते त्रिनेत्रे रां रीं रूं रङ्गरंगे किलि किलितरवा शूलहस्ते प्रचण्डे ॥ लां लीं लूं लम्बजिह्वे हसती कहकहा शुद्धघोराट्टहासैः कङ्काली कालरात्रिः प्रदहतु दुरितं चण्ड मुण्डा प्रचण्डा ॥ ३ ॥ ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोररूपे घघघघघटिते घुर्घुराराavघोरे निर्मांसी शुष्कजङ्घे पिबतु नरवसाधूम्रधूम्रायमाने ॥ ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रावयन्ती सकलभुवि तले यक्षगन्धर्वनागैः क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥ ४ ॥ ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं चण्डवर्गे हरिहरनमिते रुद्रमूर्तिश्च कीर्तिश्चन्द्रादित्यौ च कर्णौ जडमुकुटशिरोवेष्टितां केतुमालाम् ॥ स्रक्सर्वौ चोरगेन्द्रौ शशिकिरणनिभा तारको हारकण्ठे सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥५॥ ॐ खं खं खं खड्गहस्ते वरकनकनिभे सूर्यकान्ति स्वतेजोविद्युज्ज्वालावलीनां नवनिशितमहाकृत्तिका दक्षिणेन ॥ वामे हस्ते कपालं वरविमलसुरापूरितं धारयन्ती सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥ ६ ॥ ॐ हुं हुं फट् कालरात्रि रुरुसुरमथनी धूम्रमारी कुमारी ह्रां ह्रीं ह्रूं हत्ति शोरौक्षपितुकिलिकिलाशब्द अट्टाट्टहासे ॥ हाहा भूतप्रभूते किलिकिलितमुखा कीलयन्ती ग्रसन्ती हुंकारोच्चारयन्तीं प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥ ७ ॥ ॐ भृङ्गी काली कपाली परिजनसहिते चण्डि चामुण्डनित्या रों रों रोंकारनित्ये शशिकरधवले कालकूटे दुरन्ते ॥ हुं हुं हुंकारकारी सुरगणनमिते कालकारी विकारी त्रैलोक्यं वश्यकारी प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥ ८ ॥ वन्दे दण्डप्रचण्डा डमरुरुणिमाणिष्टोपटंकारघण्टैर्नृत्यन्ती याऽट्टपातैरटपटविभवैर्निर्मला मन्त्रमाला ॥ सुक्षौ कुक्षौ वहन्ती खरखरितसखा चार्चिनि प्रेतमाला उच्चैस्तैश्चाट्टहासैर्घुरुघुरितरवा चर्ममुण्डा प्रचण्डा ९ ॥ ॐ त्व ब्राह्मी त्वं च रौद्री स च शिखिगमना त्वं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

च देवी कुमारी त्वं चक्री चक्रहस्ता घुरघुरितरवा त्वं वराहस्वरूपा ॥ रौद्रे त्वं चर्ममुण्डा सकलभुवि तले संस्थिते स्वर्गमार्गे पाताले शैलशृङ्गे हरिहरनमिते देवि चण्डी नमस्ते ॥१०॥ रक्ष त्वं मुण्डधारी गिरिगुहविवरे निर्झरे पर्वते वा संग्रामे शत्रुमध्ये विश विश भविशे संकटे कुत्सिते वा ॥ व्याघ्रे चौरे च सर्पेऽप्युदधिभुवि तले वह्निमध्ये च दुर्गे रक्षेत्सा दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥ ११ ॥ इत्येवं बीजमन्त्रैः स्तवनमतिशिवं पातकव्याधिनाशं प्रत्यक्षं दिव्यरूपं ग्रहगणमथनं मर्दनं शाकिनीनाम् ॥ इत्येवं वेगवेगं सकलभयहरं मन्त्रशक्तिश्च नित्यं मन्त्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मन्त्रसिद्धिम् ॥ १२ ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उपा० स्त० श्रीदुर्गोपा० मार्कण्डेयविरचितं चण्डिकास्तोत्रनिरूपणं नाम चतुर्विंशं प्रकरणम् ॥ २४ ॥ अथ लघुदुर्गासप्तशतीस्तोत्रम् ॥ ॐ व्रीं व्रीं व्रीं वेणुहस्ते स्तुतिविधबटुके हां तथा तानमाता स्वानन्दे नन्दरूपे अनहतनिरुते मुक्तिदे मुक्तिदे त्वाम् ॥ हंसः सोऽहंविशाले वलयगतिहसे सिद्धिदे वाममार्गे ह्रीं ह्रीं ह्रीं सिद्धलोके कषकषविपुले वीरभद्रे नमस्ते॥१॥ ॐ ह्रींकारोच्चारयन्ती मम हरति नयं चर्ममुण्डप्रचण्डे खां खां खां खड्गपाणे ध्रकध्रकध्रकिते उग्ररूपे स्वरूपे ॥ हुं हुं हुंकारनादे गगनभुवि तले व्यापिनी व्योमरूपे हं हं हंकारनादे सुरगणनमिते राक्षसान् हन्यमाने ॥२॥ ऐं लोके कीर्तयन्ती मम हरतु भयं चण्डरूपे नमस्ते घ्रां घ्रां घ्रां घोररूपे घघघघघटिते घर्घरे घोररावे ॥ निर्मांसे काकजंघे घसितनखनखाधूम्रनेत्रे त्रिनेत्रे हस्ताब्जे शूलमुण्डं कुलकुलकुकुले श्रीमहेशी नमस्ते ॥ ३ ॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ऐं कुमारी कुहकुहमखिले कोकिले नानुराग मुद्रासंज्ञत्रिरेखा कुरु कुरु सततं श्रीमहामारि गुह्ये ॥ तेजांगे सिद्धिनाथे मनपवनचले नैव आज्ञानिधाने ऐंकारे रात्रिमध्ये सुपितपशुजने तत्र कान्ते नमस्ते ॥४॥ ॐ व्रां व्रीं व्रुं व्रूं कवित्ये दहनपुरगते रुक्मिरूपेण चक्रे त्रिःशक्त्या युक्तवर्णादिककरनमिते दादिवंपूर्ववर्णे ॥ ह्रीं स्थाने कामराजे ज्वल ज्वल ज्वलिते कोशितैस्तास्तु पत्रे स्वच्छन्दं कष्टनाशे सुरवरवपुषे गुह्यमुण्डे नमस्ते ॥ ५ ॥ ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोरतुण्डे घघघघघघघे घर्घरान्यांघ्रिघोषे ह्रीं क्रीं द्रं द्रौं चचक्रे ररररमिते सर्वज्ञाने प्रधाने ॥ द्रीं तीर्थे द्रींतज्येष्ठे जुगजुगजजुरो म्लेच्छदे कालमुण्डे सर्वांगे रक्तघोरा मथनकरवरे वज्रदण्डे नमस्ते ॥६॥

Chinna, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ क्रां क्रीं क्रूं वामभित्ते गगनगडगडे गुह्ययोन्याहिमुण्डे वज्राङ्के वज्रहस्ते सुरपतिवरदे मत्तमातङ्गरूढे ॥ सुतेजे शुद्धदेहे ललललललिते छेदिते पाशजाले कुण्डल्याकाररूपं वृषवृषभहरं ऐन्द्रि मातर्नमस्ते ॥ ७ ॥ ॐ हुं हुं हुंकारनादे कषकषवसिनीमांसि वैतालहस्ते सुसिद्धर्षैः सिद्धसुसिद्धिढढढढढढः सर्वभक्षी प्रचण्डी ॥ जूं सः सौंशान्तिकर्मे मृतमृतनिगडे निःसमे सीसमुद्रेदेवित्वंसाध कानां भवभयवरदे भद्रकाली नमस्ते ॥ ८ ॥ देवि त्वं तूर्यहस्ते परिघगमनि ते त्वं वराहस्वरूपे त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी त्वमसि च जननी त्वं पराणी महेन्द्री ॥ ऐं ह्रीं ह्रींकारभूते अतलतलतले भूतले स्वर्गमार्गे पाताले शैलशृङ्गे हरिहरभुवने सिद्धिचण्डी नमस्ते ॥ ९ ॥ हन्ताक्ष सौण्डदुःख शमितभवभयं सर्वविघ्नान्तकार्ये गां गीं गूं गैं षडङ्गे गगनगटितटे सिद्धिदे सिद्धिसाध्ये ॥ क्रूं क्रूं मुद्रा गजांशो गसपवनगते त्र्यक्षरे वै कराले ॐ ह्रीं हूं गां गणेशी गजमुखजननी त्वं गणेशी नमस्ते ॥ १० ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उ० स्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये मार्कण्डेयकृतलघुसप्तशतीदुर्गास्तोत्रनिरूपणं नाम पञ्चविंश प्रकरणम् ॥ २५ ॥ अथ दुर्गाकवचम् ॥ उक्तं च कुब्जिकातन्त्रे ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम् ॥ पठित्वा पाठयित्वा च नरो मुच्येत संकटात् ॥ १ ॥ अज्ञात्वा कवचं देवि दुर्गामन्त्रं च यो जपेत् ॥ स नाप्नोति फलं तस्य परत्र नरकं व्रजेत् ॥ २ ॥ उमा देवी शिरः पातु ललाटं शूलधारिणी ॥ चक्षुषी खेचरी पातु वदनं सर्वधारिणी ॥ ३ ॥ जिह्वां च चण्डिकादेवी ग्रीवां सौभद्रिका तथा ॥ अशोकवासिनी चेतो द्वौ बाहू वज्रधारिणी ॥ ४ ॥ हृदयं ललिता देवी उदरं सिंहवाहिनी ॥ कटिं भगवती देवी द्वावूरू विन्ध्यवासिनी ॥ ५ ॥ महाबला च जङ्घे द्वे पादौ भूतलवासिनी ॥ एवं स्थिताऽसि देवि त्वं त्रैलोक्यरक्षणात्मिके ॥ ६ ॥ रक्ष मां सर्वगात्रेषु दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उपा० स्त० दुर्गोपा० कुब्जिकातन्त्रोक्तश्रीदुर्गाकवचनिरूपणं नाम षड्विंशं प्रकरणम् ॥ २६ ॥ अथ पृथ्वीधराचार्योक्त चण्डीस्तोत्रम् ॥ यत्कर्मधर्मनिलयं कलयन्ति तज्ज्ञा यज्ञादिकं तदखिलं सफलं त्वयैव ॥ त्वं चेतना यत इति प्रविचार्य चित्ते नित्यं त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ १॥ यद्दारुणात्परमिदं जगदम्ब यत्ते बीजं स्मरेदनुदिनं दहनाधिरूढम् ॥ मायांकितं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तिलकितं तरुणेन्दुबिन्दुनादैरमन्दमिह राज्यमसौ भुनक्ति ॥ २ ॥ पाथोधिनाथतनयापतिरेष शेषपर्यङ्कलालितवपुः पुरुषः पुराणः ॥ त्वन्मोहपाशविवशो जगदम्ब सोऽपि व्याघूर्णमाननयनः शयनं चकार ॥ ३ ॥ तत्कौतुकं जननि यस्य जनार्दनस्य कर्णप्रसूत मलजौ मधुकैटभाख्यौ ॥ तस्यापि यौ न भवतः सुलभौ निहन्तुं त्वन्मायया कवलितौ विलयं गतौ तौ ॥ ४ ॥ यन्माहिषं वपु रपूर्वबलोपपन्नं यन्नाकनायकपराक्रमजित्वरं च ॥ यल्लोकशोकजननव्रतबद्धहार्दं तल्लीलयैव दलितं गिरिजे भवत्या ॥ ५ ॥ यो धूम्र लोचन इति प्रथितः पृथिव्यां भस्मीबभूव समरे तव हुंकृतेन ॥ सर्वासुरक्षयकरे गिरिराजकन्ये मन्ये स्वमन्युदहने कृत एष होमः ॥ ॥ ६ ॥ केषामपि त्रिदशनायकपूर्वकाणां जेतुं न जातु सुलभाविति चण्डमुण्डौ ॥ तौ दुर्मदौ तु परमाम्बरतुल्यमूर्तं मातस्तवासि कुलिशात्पतितौ विशीर्षौ ॥ ७ ॥ दौत्येन ते शिव इति प्रथितप्रभावो देवोऽपि दानवपतेः सदनं जगाम ॥ भूयोऽपि तस्य चरितं प्रथयांचकार सा त्वं प्रसीद शिवदूति विजृम्भितं ते ॥ ८ ॥ चित्रं तदेतदपरैरपि ये न जेयाः शस्त्राभिपातपतिताद्रुधिरादपर्णे ॥ भूमौ बभूवः रमिताः पतिरक्तबीजास्तेऽपि त्वयैव गगने गिलिताः समस्ताः ॥ ९ ॥ आश्चर्यमेतदतुलं यदभूत्सुरारिस्त्रैलोक्यवैभव विलुण्ठनपुष्टपाणिः ॥ शस्त्रैर्निहत्य भुवि शुम्भनिशुम्भसंज्ञौ नीतौ त्वया जननि तावपि नाकलोकम् ॥ १० ॥ त्वत्तेजसि प्रलय कालहुताशनेऽस्मिन्यस्मिन्प्रयान्ति विलयं भुवनानि सद्यः ॥ तस्मिन्निपत्य शलभा इव दानवेन्द्रा भस्मीभवन्ति हि भवानि किमत्र चित्रम् ॥ ११ ॥ तत्किं गृणामि भवतीं भवतीप्रतापनिर्वापणप्रणयिनी प्रणमज्जनेषु ॥ तत्किं गृणामि भवतीप्रतापसंवर्धनप्रण यिनी विपदि स्थितेषु ॥ १२ ॥ वामे करे तदितरे च तथोपरिष्टात्पात्रं सुधारसयुतं वरमातुलिङ्गम् ॥ खेटं गदां च दधतीं भवतीं भवानीं ध्यायन्ति येऽरुणनिभां कृतिनस्त एव ॥ १३ ॥ आवाहनं यजनवर्णनमग्निहोत्रं कर्मार्पणं तव विसर्जनमत्र देवि ॥ मोहान्मया कृतमिदं सकलापराधं मातः क्षमस्व वरदे बहिरन्तरस्थे ॥१४॥ अन्तः स्थिताऽप्यखिलजन्तुषुतन्तुरूपा विद्योतसे बहिरिहाखिलवस्तु रूपा ॥ का भूरिशब्दरचना वचनातिगाऽऽसीर्दीनं जनं जननि मामव निष्प्रपञ्चम् ॥ १५ ॥ एतत्पठेदनुदिनं दनुजान्तकारि चण्डी

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

चरित्रमखिलं भुवि यस्त्रिकालम्॥श्रीमान्सुखी सुविजयी सुभगः क्षमः स्यात्त्यागी चिरन्तनवपुः कविचक्रवर्ती ॥१६॥ श्रीसिद्धनाथा परनामधेयः श्रीशम्भुनाथो भुवनैकनाथः ॥ तस्य प्रसादात्सुलभागमश्रीः पृथ्वीधरः स्तोत्रमिदं चकार ॥ १७ ॥ इति श्रीह० बृ०ध० उ० स्त० दुर्गोपा० ध्या० पृथ्वीधरविरचितचण्डीस्तोत्रनि० सप्तविंशं प्र०॥२७॥ अथ गुरुकीलकपटलम् ॥ उक्तं रहस्यतन्त्रे ॥ शिव उवाच ॥ पुरा सनत्कुमाराय दत्तमेतन्मयाऽनघ ॥ संवर्ताय ददौ तच्च स चान्यस्मै ददौ च तत् ॥ १ ॥ सर्वत्र चण्डीपाठस्य प्राचुर्येण महीतले ॥ ब्रह्मकाण्डः कर्मकाण्डस्तन्त्रकाण्डश्च सर्वथा ॥२॥ अभूत्प्रतिहतस्तेन शीघ्रसिद्धिप्रदायिनी ॥ तदा तेषां च सार्थक्यं कर्तुकामेन भूतले ॥ ३ ॥ दानप्रतिग्रहत्वेन मन्त्रोऽयं कीलितो मया ॥ दानप्रतिग्रहाख्यं यत्कीलकं समुदाहृतम् ॥ ४ ॥ तदारभ्य च मन्त्रोऽयं कीलकेनाभिकीलितः ॥ न सर्वेषां भवेत्सिद्ध्यै ये कीलकपराङ्मुखाः ॥ ५ ॥ ये नराः कीलनेनेमं जपन्ति परया मुदा ॥ तेषां देवी प्रसन्ना स्यात्ततः सर्वाः समृद्धयः ॥ ६ ॥ त्वत्प्रसूतस्त्वदाज्ञप्तस्त्वद्दासस्त्वत्परायणः ॥ त्वन्नामचिन्तनपरस्त्वदर्थेऽहं नियोजितः ॥ मयाऽऽर्जितमिदं सर्वं तच्च स्वं परमेश्वरि ॥ ७ ॥ राष्ट्रं बलं कोशगृहं सैन्यमन्यच्च साधनम् ॥ ८ ॥ त्वदधीनं करिष्यामि यत्रार्थे त्वं नियोक्ष्यसि ॥ तत्र देवि सदावर्ते त्वदाज्ञामेव पालयन् ॥ ९ ॥ इति संचिन्त्य मनसा स्वार्जितानि धनानि च ॥ कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥१०॥ समर्पयेन्महादेव्यै स्वार्जितं सकलं धनम् ॥ राष्ट्रं गृहं कोशबलं नवं च यदुपार्जितम् ॥ ११ ॥ अस्मिन्मासि मया देवि तुभ्यमेतत्समर्पितम् ॥ इति ध्यात्वा ततो देव्याः प्रसादं प्रतिगृह्य च ॥ १२ ॥ विभज्य पञ्चधा सर्वं त्र्यंशं स्वार्थं प्रकल्पयेत् ॥ देवपित्रतिथीनां च क्रियार्थं त्वेकमादिशेत् ॥ १३ ॥ एकांशं गुरवे दद्यात्तेन देवी प्रसीदति ॥ तस्य राज्यं स्वकं सैन्यं कोशः साधु विवर्धते ॥ १४ ॥ नानारत्नाकरः श्रीमान् यथा पर्वणि वारिधिः ॥ ज्ञात्वा नवाक्षरं मन्त्रं जीवब्रह्मसमाश्रयम् ॥ १५ ॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यानां सारं संसारभेषजम् ॥ सप्तशत्याख्यमन्त्रस्य यावज्जीव

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

महं जपम् ॥ १६ ॥ कुर्वंस्ततो न प्रमादं प्राप्नुयामिति निश्चयम् ॥ कृत्वा प्रारभ्य कुर्वीत ह्यकुर्वाणो विनश्यति ॥ १७ ॥ नाहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म निराकरोत् ॥ अनिराकरणं मेऽस्तु अनिराकरणं मम ॥ १८ ॥ इति वेदान्तमूर्धन्ये छान्दोग्यस्य प्रपञ्च नात् ॥ प्रारभ्य तत्परित्यागो न तस्य श्रेयसे ततः ॥ १९ ॥ नाब्रह्मवित्कुले तस्य जायते हि कदाचन ॥ न दारिद्र्यं कुले तस्य यावत्स्थास्यति मेदिनी ॥ २० ॥ प्रतिसंवत्सरं कुर्याच्छारदं वार्षिकं तथा ॥ तेन सर्वमवाप्नोति सुरासुरसुदुर्लभम् ॥ २१ ॥ अन्यच्च यद्यत्कल्याणं जायते तत्क्षणे क्षणे॥सत्यं सत्यमिदं सर्वं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥२२॥ पुत्राय ब्रह्मनिष्ठाय पित्रा देयं महात्मना ॥ अन्यथा देवता तस्मै शापं दद्यान्न संशयः ॥ २३ ॥ अयं भावः ॥ पित्रार्जितं विना स्वेनैव मन्त्रप्राप्त्युत्तरं यद्यन्नूतनमार्जितं तदर्जनं माससंबन्धिकृष्णचतुर्दश्यष्टम्यन्यतरदिवसे देवीनिकटे स्थित्वा देशकालौ संकीर्त्य दानप्रतिग्रहाख्येन कर्मणा देवीं प्रीणयिष्ये इति संकल्प्य ॥ त्वत्प्रसूत इत्यादिश्लोकत्रयमर्थानुसंधानपूर्वकं पठित्वा राष्ट्रं बलं कोशगृहमिति श्लोकमन्त्रेण देवी चरणयोर्दत्तमिवानुसंधाय प्रसन्नतया देव्याऽऽज्ञप्त एव पुनः प्रतिग्रहं विभाव्य तन्मध्ये पञ्चमं भागं गुरवे निवेद्य तत्पुत्रादिभ्यो वा दत्त्वाऽवशिष्टं चतुर्थांशं स्वेन क्रियमाणपञ्चयज्ञादिधर्मव्ययार्थं निष्कास्यैव तत्स्वार्थं यथेष्टं नियोजयेत् ॥ अत्र मासश्चान्द्रो ग्राह्यः ॥ अमायामर्जितस्य तूत्तरमासे दानमन्त्रे पूर्णिमास्वित्यूहो यथान्यायं तन्त्रेण दानादावूह्यः ॥ दानप्रतिग्रहे एकमन्त्रसाधा रण्येन मन्त्रस्वीकारादि यावदायुषो भागत्रये प्रथमार्धैकैकभागेष्वेव प्रकृते तदपवादमाह ज्ञात्वेति नवार्णमन्त्रं स्वीकृत्य महावाक्यार्थ वादिनं तदर्थं च गुरोर्लब्ध्वाधिकृतः सन्नद्यावधि यावज्जीवं सप्तशतीस्तवपाठं प्रमादेन सकृदपि न त्यक्ष्ये इति दृढं संकल्प्य तथैवानुतिष्ठेत् ॥ इत्यनेन च कीलके पटले ददाति प्रतिगृह्णाति इत्यस्य ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत इत्यस्य च प्रागुक्तोऽर्थः स्पष्ट मेवोक्त इति ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उपा० स्त० दुर्गोपा० ध्याये नीलकण्ठकृतगुरुकीलकपटलनि० अष्टाविंशं प्र० ॥ २८ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ॥ अचलौ गिरीशगिरिशौ मातामहतां च ताततां यातौ ॥ सर्वस्य यत्प्रभावाद्वन्देऽपर्णालतां तु गिरिजां ताम् ॥१॥ ये सन्ति श्रुतिमौलिसाररसिका यज्वान एवं परे स्ववर्यामाधरमाधुरीपरिचये संरम्भिणः सन्तु त ॥ अस्माकं तु तदेव लोचनचमत्काराय भूयाच्चिरं प्रालेयाचलकन्दरोदरझरीखेलत्तु मैनं वपुः ॥ २ ॥ मैनं मत्स्यीरूपमिति बाह्योऽर्थः ॥ मेनायां भवं मैनमिमि उमारूपं गूढोऽर्थः ॥ श्रीमल्लक्ष्मवतीं लक्ष्मीं मातरं देशिकोत्तमाम् ॥ पितरं रङ्गनाथाख्यं देशिकोत्तममाश्रये ॥ ३ ॥ शैवोपनामको वित्तो नीलकण्ठोऽभिधानतः ॥ सप्तशतीसप्तशतमन्त्रसंख्याविभाजके ॥ ४ ॥ कात्यायनीतन्त्रमध्ये पटलानां विबोधिनीम् ॥ व्याख्यां करोमि शिवयोस्तोषाय जनतामुद ॥५॥ अथ वेदवत अनादिसिद्धेयम् ॥ अथेदं सप्तशतीस्तोत्रं मार्कण्डेय उवाचेत्यारभ्य सावर्णिर्भविता मनुरित्यन्तं त्रयोदशाध्यायात्मकं मार्कण्डेयपुराणान्तर्गतं सर्वकामदुघं न केनचिन्निर्मितम ॥ किंतु वेदवदनाद्येव । तदुक्तं भुवनेश्वरीसंहितायाम्--" यथा वेदो ह्यनादिर्हि तद्वत्सप्तशती स्मृता " इति ॥ मेरुतन्त्रेऽपि--" सप्तशत्यास्तु सकलं तत्त्वं वेद्म्यहमेव हि । पादोनं श्रीहरिर्वेत्ति वेत्त्यर्धं तु प्रजापतिः । व्यासस्तुर्यांशकं वेत्ति कोट्यंशमितरे जनाः " इति ॥ व्यासेन प्रकटीकृतत्वात् व्यासकृत मिति लोक व्यवहारः ॥ रुद्रयामलेऽपि--" अस्ति गुह्यतमं देव्या माहात्म्यं सर्वसिद्धिदम् ॥ वाक्यैरर्थैश्च पद्यैश्च सप्तशत्यात्मकं शुभम ॥ सविशेषपरं साक्षाच्चिच्छक्तिमहिमाश्रयम् ॥ तात्पर्यगतया तत्कृत्स्नं निर्विशेषचिदाश्रयम् ॥ " अथ नामद्वयव्युत्पत्तिः । तत्र

अथ सप्तशतीमन्त्रविभागप्रकरणम् ॥ कात्यायनीतन्त्रे ॥ ईश्वर उवाच ॥ मार्कण्डेय उवाचाद्यो मन्त्रः श्लोकात्मकास्ततः ॥

व्योमादिवर्णमारभ्य द्वितीयस्वरसंयुतम् ॥ १ ॥

अस्य स्तोत्रस्य सप्तशती सप्तसती चेति नामद्वयं तद्व्युत्पत्तिर्मेरुतन्त्रे--" सप्तशत्याश्चरित्रे तु प्रथमे पद्मजो मुनिः ॥ छन्दो गायत्रमुदितं महाकाली तु देवता ॥ वाग्बीजं पावकस्तत्त्वं धर्मार्थे विनियोजनम् ॥ प्रयोगाणां तु नवतिर्मारणे मोहनेऽत्र तु " इत्यादि ॥ उच्चाटे स्तम्भने चात्र प्रयोगाणां शतद्वयम् ॥ मध्यमे तु चरित्रे स्यात्तृतीयेऽथ चरित्रके ॥ विद्वेषवश्ययोश्चात्र प्रयोगा दिक्कृतैर्मताः ॥ एवं सप्तशतं चात्र प्रयोगाः संप्रकीर्तिताः ॥ तस्मात्सप्तशतीत्येवं प्रोक्तं व्यासेन धीमता ॥ महाविद्येत्यादिसत्यः सप्त कल्पे तथाऽऽदिमे ॥ ब्रह्मेन्द्रगुरुशुक्राणां विष्णुरुद्रसुरद्विषाम् ॥ उपास्या देवता जातास्ताश्चात्र ब्रह्मणा स्तुताः ॥ तस्मात्सप्तशतीत्येवं व्यासेन परिकीर्तिता ॥ तथा मध्यमचरित्रे ॥ लक्ष्मी ललिता काली दुर्गा गायत्र्यरुन्धती सरस्वती इति ॥ तथा काली तारा छिन्नमस्ता सुमुखी भुवनेश्वरी बाला कुब्जेति सप्तसतीनां मन्त्रा गुप्तरूपेण कथिताः । तस्मात्सप्तसतीति नाम ॥ तथा तृतीयचरित्रे ब्राह्म्याद्याश्चामुण्डान्ताः सप्त तथा नन्दाशताक्षीशाकंभरीभीमारक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यः सत्यः सप्तसंख्या उक्तास्तस्मात्सप्तसती नाम इत्यादि मेरुतन्त्रे स्पष्टम् ॥ तत्र होमे तर्पणे मार्जने मन्त्रैः संपुटीकरणे च सप्तशतविभागं कृत्वैव होमादिकं सप्तशतमन्त्रैः कर्तव्यमन्यथा विफलं भवतीति वक्ष्यमाणकात्यायनीतन्त्रवचनादस्य स्तोत्रस्य सप्तशतमन्त्रविभागोऽवश्यमपेक्षितः ॥ स तु मन्त्रविभागः कात्यायनीतन्त्रे उक्तः । स च कात्यायनीतन्त्रव्याख्यानेन स्पष्टीक्रियते ॥ ईश्वर उवाच ॥ मार्कण्डेय उवाचाद्य इति ॥ अस्यार्थः ॥ मार्कण्डेय उवाचेत्याद्यः प्रथमः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

एको मन्त्रः ॥ ततस्तत उत्तरं द्वितीयस्वर आकारस्तेन संयुतः संयुक्तो व्योम हकारस्तस्यादिवर्णः सकारस्तेन सा इति सिद्धम् ॥ तमारभ्य नृपमित्यक्षरद्वयमन्तिमं येषां ते तदन्तिमा अष्टादश तत्संख्याकाः श्लोकात्मकाः मन्त्रा भवन्तीत्यर्थः ॥ तत्र यद्यपि सावर्णिः सूर्यतनय इत्यारभ्य प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपमित्यर्धात्पूर्वं सप्तदश श्लोकाः प्रत्युवाच स तं वैश्य इति त्वर्धश्लोक एव ॥ तथापि अन्त्यार्धश्लोकस्यैव मन्त्रत्वं स्वीकृत्य छत्रिन्यायेन श्लोकार्धेऽपि श्लोकव्यवहारः कृत इति बोध्यम् । तथा च प्रथममन्त्रेण सहिता एकोनविंशतिमन्त्राः संपन्नाः । वैश्यवाक्यमिति । वैश्य उवाचेत्येको मन्त्र इत्यर्थः । ततस्तदुत्तरं व्योमाद्यादिति ल्यब्लोपे पञ्चमी । व्योम हकारः तदाद्यः सकारस्तमारभ्येत्यर्थः ॥ १ ॥ तमारभ्य श्लोका अर्थाच्चत्वारः । ते पञ्चमन्त्रका भवन्ति इति शेषः । चतुःश्लोकानामेव तावत्पर्यन्तं सत्त्वात् ॥ ननु चतुर्षु श्लोकेषु पञ्चमन्त्रत्वं कथमिति चेत्प्रथमश्लोकस्यार्धभागस्य मन्त्रत्वस्वीकारात् । तदुक्तं भुवनेशीसंहितायाम् " समाधिर्नाम मन्त्रोऽयमर्धमन्त्रस्ततस्त्रयः। अन्तिमार्धेन सहिताः पञ्चमन्त्रा उदीरिताः " इति ॥ २ ॥ नृपस्योक्तिरिति । राजोवाचेत्येको मन्त्रो भवतीति शेषः । मान्तवर्णो मकारान्तवर्णो यकारः । कथंभूतः ऐकारेण युक् ऐकारेण युक्तस्तेन यै इति सिद्धं स आदित आदौ । अथ च सकारो बिन्दुसंयुक्तोऽन्तेऽवसाने ईदृशौ मन्त्रौ द्वौ मतो ॥ यैर्निरस्त इति श्लोके खण्डद्वयं कृत्वा मन्त्रद्वयं संपादनीयमिति भावः ॥ ३ ॥ ततो वैश्य उवाचेतीति ॥ वैश्य उवाचेत्येको मन्त्र इत्यर्थः । स्वरेषु एकादशः स्वर एकारः

नृपमित्यन्तिमा मन्त्रा भवन्त्यष्टादश प्रिये ॥ वैश्यवाक्यं ततः श्लोका व्योमाद्यात्पञ्चमन्त्रकाः ॥ २ ॥ नृपस्योक्तिर्मान्तवर्ण ऐकारेण युगादितः ॥ सकारो बिन्दुसंयुक्तोऽन्ते मन्त्रावीदृशौ मतौ ॥ ३ ॥ ततो वैश्य उवाचेति स्वरैकादश आदितः ॥ वह्निबीजं बिन्दुयुक्तमन्ते स्यान्मनुपञ्चकम् ॥ ४ ॥ मार्कण्डेय उवाचैकस्ततो मन्त्रत्रयं भवेत् ॥ तादिवर्ण च भुवनस्वरयुग्वारुणान्तिमम् ॥ ५ ॥ राजोवाचेति षण्मन्त्रा भादितान्ताः शुभानने ॥ अथोवाच ऋषिर्ज्ञानमस्तीत्यारभ्य पार्वति ॥ ६ ॥

स आदित आदौ । अथ च वह्निबीजं रकारः । कथंभूतं बिन्दुयुक्तम् ॥ तेन रमिति तदन्ते यस्यैतादृशं मनुपञ्चकं स्यादित्यर्थः । अत्राप्येवमेतद्यथा प्राहेत्यारभ्य निष्ठुरमित्यन्ताश्चत्वार एव श्लोकास्तेषु पूर्वन्यायेनादिमार्धान्तिमार्धेन सहितमध्यश्लोकत्रयेण पञ्चमन्त्रत्वं बोध्यम्॥४॥मार्कण्डेय उवाचैक इति । मार्कण्डेय उवाचेत्येको मन्त्र इत्यर्थः । ततस्तादिवर्णं तकार आदिवर्णो यस्य भुवनस्वर औकारस्तद्युग्वारुणोऽकारः सोऽन्तिमे यस्यैतादृशं मन्त्रत्रयं भवेत्।अत्रापि ततस्ताविन्यारभ्य पार्थिवावित्यन्तश्लोकद्वयेप्रथमश्लोकर्धान्तिमश्लोकार्धयोःपृथक्करणेन मध्यमैकश्लोकेन मन्त्रत्रयत्वं बोध्यम्। तदुक्तं भुवनेश्वरीसंहितायां ततस्तावर्धमेतत्स्यादिति॥५॥राजोवाचेति।राजोवाचेत्येको मन्त्र इत्यर्थः। ततो भकार आदिर्येषां ता इति अन्त येषां तादृशाः षण्मन्त्राःमता ज्ञेया इत्यर्थः।अत्रापि प्रथमान्तिमार्धद्वयपृथक्करणेन षण्मन्त्रत्वं बोध्यम्।तदुक्तं भगवन्निदमर्धं स्यादिति॥अन्तिमार्धस्य तु उवाचान्तास्तु ये मन्त्रास्तेऽर्धमन्त्रात्मिकाःप्रिये इति हरगौरीतन्त्रवचनात् मन्त्रत्वं बोध्यम्।अथोवाचेति॥ अथानन्तरमृषिरुवाचेत्येको मन्त्रः ॥ तदनन्तरं ज्ञानमस्ति

Chinmа, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

इत्यारभ्य सर्वेश्वरीत्यन्ता मन्त्रा द्वादश कीर्तिताः।प्रथमार्धमध्ये दश श्लोका अवशिष्टमन्तिमार्धमिलित्वा पूर्वन्यायन द्वादश मन्त्रा ज्ञेयाः॥राजोवाचेति । राजोवाचेत्येक मन्त्रः ॥ अथादौ भगवन् इति अन्ते विदांवरेति तादृशश्लोकद्वये प्रथमार्धमध्यश्लोकान्तिमार्धात्मकं मन्त्रत्रयमिदं पूर्वन्यायेन ख्यातमित्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ पश्चादृषिरुवाचेत्येको मन्त्रः । तत आदौ नित्यैव सा जगदिति अन्ते प्रभुरिति तादृशा ये सप्त श्लोकास्तेषु प्रथमार्धमध्यश्लोकषट्कान्तिमार्धात्मका अष्ट मन्त्रा इत्यर्थः ॥ ८ ॥ अथ ब्रह्मोवाचेति ॥ ब्रह्मोवाचेत्येको मन्त्रः ततस्त्वं स्वाहादिका असुरावित्यन्तिमा ये चतुर्दश श्लोकास्ते पूर्वन्यायेन प्रथमार्धमध्यत्रयोदशश्लोकान्तिमार्धात्मका पञ्चदश मन्त्रा इत्यर्थः ॥ ९ ॥ ऋषिरेवमिति । ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्र । एवं स्तुतेत्याद्याः केशवान्तिमा ये षट् श्लोकास्ते प्रथमार्धमध्यश्लोकपञ्चकांतिमार्धकाः सप्त मन्त्राः भवन्ति इत्यर्थः । ततो भगवदुक्तिर्भगवानुवाचेत्येको मन्त्रः । भवेतामद्य मे तुष्टाविति श्लोके खण्डद्वयेन द्वौ मन्त्रावित्यर्थः ॥ १० ॥ अथर्षिरिति ॥ ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः । वञ्चिताभ्यामिति ।

सर्वेश्वरेश्वरीत्यन्ता मन्त्रा द्वादश कीर्तिताः राजोवाचेति भगवन्नादावन्ते विदांवर ॥७॥ मन्त्र त्रयमिदं ख्यातं पश्चादृषिरुवाच च ॥ नित्यैव सा जगन्नादौ प्रभुरन्तेऽष्ट मन्त्रकाः ॥ ८ ॥ अथ ब्रह्मोवाच ततस्त्वं स्वाहा त्वं स्वधादिमाः ॥ महासुरान्तिमा मन्त्रा मताः पञ्चदश प्रिये ॥ ९ ॥ ऋषिरेवं स्तुतेत्याद्याः सप्त स्युः केशवान्तिमाः ॥ ततो भगवदुक्तिः स्याद्भवेतामित्युभौ मनू ॥ १० ॥ अथर्षिर्वञ्चिताभ्यामित्येतन्मन्त्रद्वयं शिवे ॥ ऋष्युक्तिश्च तथेत्युक्तेत्यादिमन्त्रद्वयं भवेत् ॥ ११ ॥ सर्वे श्लोका इहाध्याये त्वष्टयुक् सप्ततिर्मताः ॥ मध्येऽर्धश्लोकमन्त्रास्तु चतुर्विंशतिरीरिताः ॥१२॥ उवाचान्तास्तत्र बोध्या मन्त्रा भुवनसंख्यकाः ॥ संहत्याहुतयो ज्ञेयाश्चतुर्भिरधिकं शतम् ॥१३॥ इति कात्यायनीतन्त्रे सप्तशतीमन्त्रविभागे विंशतितमः प्रथमः पटलः ॥ २० ॥

वञ्चिताभ्यामित्यादिकमेतन्मन्त्रद्वयं भवेत् । वञ्चिताभ्यामयं मन्त्रो ह्यर्धमन्त्रो जलप्रद इति हरगौरीतन्त्रात्सोऽर्धमन्त्रोऽवशिष्ट एकः श्लोकमन्त्र इति मन्त्र द्वयम् । ऋष्युक्तिरिति । ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः तथेत्युक्त्वेत्यादिश्लोकद्वयात्मकं मन्त्रद्वयं नात्रार्धमन्त्रोऽस्ति ॥ ११ ॥ ननु सर्वे श्लोका इहाध्याये कति जातास्तत्राह-सर्वे श्लोका इति । इह प्रथमाध्याये सर्वे श्लोकाश्चतुष्पादात्मका अष्टयुक्सप्तति ७८ जाता मध्येऽर्धश्लोकमन्त्रास्तु पूर्वोक्तप्रकारेण चतुर्विंशतिरीरिताः इदमेव ज्ञापकं मध्ये मध्येऽर्धमन्त्र करणे ॥ १२ ॥ उवाचान्ताः कति सन्ति तत्राह उवाचान्ता इति । ऋषिरुवाच राजोवाचेत्याद्य उवाचमन्त्रा भुवनसंख्यकाश्चतुर्दशसंख्याका भवन्ति ॥ अस्त्वेतत्संहत्याहुतयः कति जातास्तदाह--संहत्येति । अस्यार्थः स्पष्ट एव ॥ १३ ॥ इति नीलकण्ठकृतायां कात्यायनीतन्त्रव्याख्यायां विंशः पटलः ॥ २० ॥

६

www.saraswatiprakashan.com

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तेन सह अष्टषष्टिश्लोकमेलनेन नवषष्टिराहुतयो जाता एकोनसतति-
ईश्वर उवाच ॥ द्वितीये द्वितीयाध्याये ऋषिरुवाचेति प्रथमो मन्त्रः । ततस्तृतीयेऽध्याये हे देशिके गुरुरूपिणि पार्वति ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः ॥ १ ॥ ततः
रिति फलितम् ॥ आहुतिरित्येक वचनमार्षम् । ततो देव्युवाचेत्येको मन्त्र स्तदन्ते एको मन्त्रश्लोक एकश्लोकात्मको मन्त्र इत्यर्थः ॥ २ ॥ तत ऋषरुक्तिः
पञ्चत्रिंशच्छ्लोकरूपा मन्त्रा इत्यर्थः । एवंप्रकारेण चतुर्युताश्चत्वारिंशदाहुतयः इत्यर्थः ॥ ३ ॥ चतुर्थे इति ।
ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः । पुनः पञ्च श्लोकाः पञ्चमन्त्रा इत्यर्थः । ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्र ततो द्वौ श्लोकौ मन्त्र-
चतुर्थे अध्याये ऋष्युक्तिः ऋषिरुवाचेति मन्त्रः ततः षड्विंशतिश्लोकात्मका मन्त्राः पुनः एतद्रहस्यं शिव एव जानाति नास्मत्पामरदृष्टि
रूपिणौ ॥ ४ ॥ तन्मध्ये एवं स्तुता सुरैर्देवीति मन्त्रोऽतिगुह्यो भवति अतिपावनश्च भवति

ईश्वर उवाच ॥ द्वितीये ऋषिरुवाचेति नवषष्ट्याहुतिः क्रमात् ॥ ततस्तृतीयेऽध्याये तु ऋषिरुवाचेति देशिके ॥१॥ पञ्चत्रिंशच्चैव
मन्त्राः श्लोका ज्ञेया वरानने ॥ देव्युवाचेति मन्त्रान्ते मन्त्रश्लोकस्ततः परम् ॥२॥ ऋषेरुक्तिः पुनः श्लोकाः पञ्चमन्त्राः सनातनाः॥
एवमाहुतयस्तत्र चत्वारिंशच्चतुर्युताः ॥ ३ ॥ चतुर्थं क्रमतो देवि ऋष्युक्तिः षट् च विंशतिः ॥ पुनस्तथैव ऋष्युक्तिः श्लोकौ
द्वौ मन्त्ररूपिणौ ॥ ४ ॥ एवं स्तुतेति मन्त्रोऽयमतिगुह्यः सुपावनः ॥ देव्युवाचेति व्रियतां मन्त्रोऽयं षोडशाक्षरः ॥ ५ ॥
देवा ऊचुस्ततश्चोक्त्वा भगवत्या कृतं वदेत् ॥ मन्त्रोऽयं शतवर्णाढ्यो द्वादशोत्तरयुक्पुनः ॥ ६ ॥ ततो ऋषिरुवाचान्त इति
प्रसादितेति वै ॥ चतुःसंख्यास्तु ये श्लोका मन्त्रास्तावन्त एव हि ॥ ७ ॥

गोचरं ततो देव्युवाचेत्येको मन्त्रः । ततो व्रियतामिति षोडशाक्षरोऽर्धश्लोकात्मको मन्त्रः इत्यर्थः ॥ ५ ॥ देवा ऊचुरिति एको मन्त्रः
तं मन्त्रमुक्त्वा भगवत्या कृतं सर्वमिति वदेत् । कियत्पर्यन्तं वदेत्तत्राह--मन्त्रोऽयमिति । द्वादश शते उत्तरा वर्णास्तद्युक् तद्युक्तः
शतवर्णाढ्यः द्वादशाधिकशतवर्णात्मः सार्धत्रिश्लोकात्मक इति यावत् तावत्पर्यन्तमेको मन्त्र इत्यर्थः।इदमेकमन्त्रत्वविधानं कामनापरत्वेन केवल-
मन्त्रजपपरतया क्वचिदुक्तं तत्सर्वोत्तमं भवतीति सूचनाय प्रसंगादुक्तं न तु सार्धत्रिश्लोकात्मक मन्त्रेणैकाहुतिः कर्तव्येत्यभिप्रायेण पटलान्ते वक्ष्य-
माणसंख्याया विरोधापत्तेः तस्मादत्रापि खण्डं कृत्वा होमः कर्तव्यःतत्र भुवनेशीसंहितायां भगवत्येत्येतदर्धं सर्वाशापूरकं स्मृतमित्युक्तत्वाद्भगवत्या
कृतं सर्वमित्यर्धश्लोकात्मक एको मन्त्रः ततः श्लोकत्रयात्मकास्त्रयो मन्त्राः इति बोध्यम्॥६॥ततो ऋषिरुवाचान्त इति । ऋषिरुवाचेको मन्त्रः अन्ते

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तदन्ते इति प्रसादितेत्यादयश्चत्वारः श्लोका ये स्युः तावन्त एव मन्त्रा भवन्तीत्यर्थः ॥ ७ ॥ सर्वाध्यायमन्त्रसंख्यां मेलयति श्लोकाश्चतुर्थे इति ॥ पञ्चत्रिंशदिति पञ्चत्रिंशच्छ्लोकात्मका मन्त्राः पञ्चोवाचान्ता अर्थात् बोध्याःतत्रैवार्धमन्त्रद्वयमेलने चत्वारिंशत् द्वियुक् द्विचत्वारिंशन्मन्त्रा भवन्ति इत्यर्थः ॥ ८ ॥ मध्यमचरित्रसंख्यां मेलयति एवं मध्यचरित्रस्येति ॥ स्पष्टम् ॥९॥ प्रथमं शतं तदुत्तरं पञ्चयुतं पञ्चाशदित्यर्थः ॥१५५॥ इति का० त० व्याख्यायामेकविंशः पटलः ॥ २१ ॥ पञ्चमाध्याये ऋषिरुवाचेतीति ॥ ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः ततः पुरा इत्यारभ्य विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः इत्यन्ताः श्लोकरूपाः षण्मन्त्रा भवन्तीत्यर्थः। ततो देवा ऊचुरित्येको मन्त्रः ॥ १ ॥ नमो देव्यादीति ॥ नमो देव्यै इत्यारभ्य विनम्रमूर्तिभिरित्यन्ताः श्लोकास्त्रिंशद्भवन्ति तन्मध्ये विष्णुमायेति शब्दितेत्यादिभ्रान्तिरूपेण संस्थितेत्यन्तिमा एतत्पदघटिता ये मन्त्रा एकविंशतिसंख्यकाः ते

श्लोकाश्चतुर्थेऽध्याये तु पञ्चत्रिंशत्परेश्वरि ॥ अर्धमन्त्रद्वयेनैव चत्वारिंशद्द्वियुक् पुनः ॥ ८ ॥ एवं मध्यचरित्रस्य पञ्चाशच्च शतोत्तरम् ॥ तथा पञ्चयुतं मन्त्रा महालक्ष्म्या विभेदतः ॥ ९ ॥ इति का० तन्त्रे एकविंशः पटल ॥ २१ ॥ ऋषिरुवाचेति पुरा विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥ षण्मन्त्राः श्लोकरूपास्ते देवा ऊचुस्ततः परम् ॥ १ ॥ नमो देव्यादितः श्लोकास्त्रिंशद्विनम्रमूर्तिभिः ॥ विष्णुमायादितो भ्रान्तिरूपान्ते त्रीणि षष्टियुक् ॥ २ ॥ अवतारैः पृथङ्मन्त्रास्तेषां त्रिषष्टिराहुतिः ॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्रीत्येकः श्लोकात्मकः परः ॥ ३ ॥

खण्डत्रयेण त्रिषष्टिर्भवन्तीत्यर्थः ॥ २ ॥ कथं खण्डत्रयं कर्तव्यमिति चेत्तत्राह–अवतारैरिति ॥ एतत्पदलब्धांकैः पृथङ्मन्त्राः कर्तव्याः खण्डत्रयं कर्तव्यं तत्राकारेण वर्गस्य ग्रहणं तेन च षोडशसंख्या लक्ष्यते वकारेण वररुचिसंकेतेन चतुःसंख्याया ग्रहणं मिलित्वा विष्णुमायेत्यादि नमस्तस्यै पर्यन्तं विंशत्यक्षरात्मकः प्रथमः खण्डः तार इति तकारेण षट्संख्याया ग्रहणं रकारेण द्वित्वसंख्याया मिलित्वाऽष्टाक्षरात्मको द्वितीयः खण्डः। यद्यप्येतद्ग्रन्थानुरोधेनायं द्वितीयखण्डः प्राप्तस्तथापि वेदाक्षरो मनुर्मध्ये महालक्ष्म्याः प्रतोषकृत्। लक्ष्मीसूक्ते तु ताशब्देनायमेवोच्यते शिवे ॥ इति चतुस्त्रिंशे पटले वचनात् तृतीयखण्डो ज्ञेयः नमस्तस्यै इति द्वितीयखण्डः एवं प्रतिश्लोकं संपन्ना ये त्रयो मन्त्रास्तेषां त्रिषष्टिराहुतिराहुतयो ज्ञेया इत्यर्थः। इत्थं मूलाक्षरात्तन्त्रान्तराच्च मन्त्रत्रये लब्धे गुप्तवत्यां केनचिज्जल्पितं या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै नमो नमः इति चतुर्विंशत्यक्षरो मन्त्रस्त्रिवारमुच्चार्याहुतित्रयं भवतीति तत्केन गुरुणा बोधितमिति स एव प्रष्टव्यः।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तथा च विंशत्यक्षरः प्रथमो मन्त्रो द्वितीयश्चतुरक्षरः अष्टाक्षरस्तृतीयो मन्त्र इति सिद्धम् ॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्रीति अयमेकश्लोकात्मको मन्त्रः ॥ ३ ॥ चितिरूपेणेति । चितिरूपेण या कृत्स्नामिति मन्त्रेण पूर्वोक्तयुक्त्या आहुतित्रयं कुर्यादित्यर्थः । एवं मन्त्रा इति । विष्णुमायेत्यादितः पूर्वैः त्रयोदशमन्त्रैः सह एवं प्रोक्तप्रकारेण सप्तषष्टिमन्त्रमेलने अशीतिमन्त्रा भवन्तीत्यर्थः ॥ अत्र प्रथमोक्तमुवाचमन्त्रद्वयं मेलयित्वा अशीति संख्या संपादितेति बोध्यम् ॥ ४ ॥ तत इति । स्तुतेति युगलं स्तुता सुरैरित्यादिकं मन्त्रद्वयमित्यर्थः । ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः । ततो एवं स्तवादियुक्तानाम् इत्यारभ्य त्वया कस्मान्न गृह्यते इत्यन्ताः सप्तदश मन्त्रा इत्यर्थः ॥ ५ ॥ ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः ॥ ततो वै निश्चयेन निशेति निशम्येति वचः शुम्भ इत्यादित्रितयैः श्लोकैः मन्त्राः त्रयः शुद्धभेदाः प्रकीर्तिताः शुद्धभेदेत्युपरञ्जकतया विशेषणम् ॥ ६ ॥ अथ

चितिरूपेण मन्त्रेणाप्याहुतित्रयमुच्चरेत् ॥ एवं मन्त्रा अशीतिस्ते पूर्वैः सह सुरेश्वरि ॥ ४ ॥ ततः स्तुतेति युगलमृषिरुवाच इत्यथ ॥ एवं स्तवादियुक्तानां त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥ ५ ॥ मन्त्राः सप्तदशैते तु ऋष्युक्तिश्चानिशेति वै ॥ इत्यादित्रितयैर्मन्त्राः शुद्धभेदाः प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥ अथ दूत उवाचेति देवि दैत्येश्वरस्ततः ॥ इत्याद्या नव मन्त्राश्च पुनरृषिरुवाच ह ॥ ७ ॥ इत्युक्तेत्यादिमन्त्रेणेहैकेन च सरस्वती ॥ देव्युवाच ततः श्लोकाश्चत्वारो मन्त्रभेदतः ॥ ८ ॥ अथ दूत उवाचेति गौरवा मा गमिष्यसि ॥ मन्त्राश्चतुःसंख्यकास्तु देव्युवाच ततः परम् ॥ ९ ॥ एवमेतद्बली शुम्भः स च युक्तं करोतु यत् ॥ इति मन्त्रद्वयं श्लोका अङ्गमन्त्राश्च ते नव ॥ १० ॥

दूतेति दूत उवाचेत्येको मन्त्रः । देवि दैत्येश्वर इत्यादयो नव मन्त्राः ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः ॥ ७ ॥ इत्युक्तेत्यादि । इत्युक्ता सा तदा देवीत्येकेन श्लोकेनैवेह सरस्वती प्राप्यत इति शेषः । सारस्वतप्रदोऽयं मन्त्र इति भावः । ततो देव्युवाचेत्येको मन्त्रः । ततः श्लोकाश्चत्वारो मन्त्राः ॥ ८ ॥ अथ दूत उवाचेति । दूत उवाचेत्येको मन्त्रः ॥ गौरवा मा गमिष्यसीत्यन्ताश्चतुःसंख्याः मन्त्राः देव्युवाचेति चैकः ॥ ९ ॥ एवमिति एवमेतद्बली शुम्भः इत्यारभ्य स च युक्तं करोतु यदित्यन्तं मन्त्रद्वयम् एवं रीत्या ते सर्वे श्लोका अथ च नव संख्या अङ्गमन्त्राश्च । अत्र नवशब्दः सप्तसंख्याबोधको लक्षणया वक्ष्यमाणसंख्यानुरोधात् ॥ अङ्गशब्दो ह्यारम्भवाचकः । अङ्गं तु देहावयवे पुंस्यारम्भे प्रकीर्तित इति कोशात् । तथा चारम्भमन्त्रा इत्यर्थः । ते च ऋषिरुवाच देव्युवाचेत्यादयः । सर्वे मन्त्रा मिलित्वा तस्मिन्नध्याये एते

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

एकोनपञ्चाशतसंख्या मन्त्राः पूर्वोक्ताः अशीतिमन्त्राश्चामिलित्वा शतादधिका एकोनत्रिंशन्मन्त्रका जाता इत्यर्थः ॥ १० ॥ ततः षष्ठेऽध्याये ऋषिरुवाचेत्याकर्ण्येति ॥ ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः । तत इत्याकर्ण्येत्याद्याश्चत्वारः श्लोकमन्त्राः ईरिताः ॥ ११ ॥ पुनर्ऋषिरुवाचेति एको मन्त्रः तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रमित्यादिमन्त्रत्रयं प्रोक्तं देव्युवाचेत्येको मन्त्रः ॥ १२ ॥ दैत्येश्वरेणेति ॥ दैत्येश्वरेण प्रहित इत्येको मन्त्रः । अथो अनन्तरमृषिर्वाचेति मन्त्रः । अथानन्तरमित्युक्तान्ते इत्युक्तपदस्यान्ते सोऽभ्यधावत इति पदमित्यादि तदादयो द्वादश श्लोकास्तैः श्लोकैस्तत्संख्या देवताहुतयो भवन्ति ॥ १३ ॥ आदित आहुतीः कथयति–चतुर्विंशतिभेदा इति ॥ षष्ठेऽध्याये चतुर्विंशतिसंख्या आहुतय इत्यर्थः ॥ १४ ॥ ततः सप्तमाध्याये ऋष्युक्तिरिति ॥ ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः । तत आज्ञप्तेत्यादि । आज्ञप्तास्तेन ते दैत्य इत्यादयस्त्रयो विंशतिसंख्या मातर

एकोनत्रिंशच्च शतादधिकामन्त्ररूपकाः ॥ ऋषिरुवाचेत्याकर्ण्य श्लोकाश्चत्वार ईरिताः ॥ ११ ॥ पुनर्ऋषिरुवाचेति तेनाज्ञप्तस्ततः परम् ॥ मन्त्रत्रयमिदं प्रोक्तं देव्युवाचेति वै ततः ॥ १२ । दैत्येश्वरेण प्रहित एको मन्त्रः प्रकीर्तितः अथो ऋषिरुवाचाथेत्युक्तान्ते सोऽभ्यधावत ॥१३॥ इत्यादिद्वादश श्लोकाः षष्ठेऽध्याये प्रकीर्तिताः ॥ चतुर्विंशतिभेदास्ता देवताहुतयः क्रमात् ॥ १४ ॥ ऋष्युक्तिराज्ञप्तेत्यादित्रयोविंशतिमातरः ॥ ऋषिरुवाच तावानीतौ मन्त्रभेदद्वयं क्रमात् ॥१५॥ सप्तविंशत्यदो देवि भवन्त्याहुतयः क्रमात् ॥ अत्राध्यायद्वये देवी धूम्राक्षीति प्रकीर्तिता ॥ १६ ॥ ऋषिश्चण्डे च निहते इत्यध्यायावसानकम् ॥ त्रिषष्ट्याहुतयःप्रोक्ता एकाऽप्यर्धाहुतिस्तथा ॥१७॥ रक्ताक्ष्या देवता अष्टौ देवतास्तु प्रकीर्तिताः ॥ राजोविचित्रमित्यादिश्लोकद्वयमुदाहृतम् ॥१८॥ ऋषिश्चकार कोपं हीत्यादिश्लोकस्वरूपतः ॥ सप्तत्रिंशच्च विज्ञेया देवता मन्त्ररूपतः ॥ १९ ॥

आहुतयो भवन्तीत्यर्थः । ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः तावानीताविति मन्त्रद्वयम् ॥ १५ ॥ सप्तविंशतीति । हे देवि अद एता आहुतयः । सर्वाः सप्त विंशतिसंख्या भवन्तीत्यर्थः । अत्राध्यायद्वये धूम्राक्षी देवता तदुपासकेनेदमध्यायद्वयमवश्यं पठनीयमित्यर्थः ॥ १६ ॥ ऋषिश्चण्डे च निहते इति । अष्टमाध्याये ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः ॥ चण्डे च निहते इत्याद्यध्यायावसानकम अध्यायान्तं त्रिषष्ट्याहुतयः प्रोक्तास्तन्मध्ये एकैवार्धश्लोकाहुतिरन्याः श्लोकरूपाः एकषष्टिसंख्य आहुतयः ऋषिरुवाचेत्येकाहुतिः मिलित्वा त्रिषष्ट्याहुतयः । तत्र प्राकृतमन्त्रस्य श्लोकात्मकस्य विच्छेदकरणापेक्षया ते विद्यमानस्यैवार्धस्य हते मातृगण इत्यस्य मन्त्रत्वमुचितम् ॥ १७ ॥ रक्ताक्ष्या इति देवीललाटान्निःसृताया रक्ताक्ष्या ब्राह्म्याद्या अष्टौ शक्तयो देवता अस्मिन्नध्याये भवन्ति । तदुपासकैरयमध्यायो नियमेन पठनीय इति भावः । नवमेऽध्याये राजोविचित्रेति । राजोवाचेत्येकः विचित्रमित्यादिकश्लोकद्वयम् ॥ १८ ॥ ऋषिश्चकारेति । ऋषिरुवाचेत्येकः । चकार कोपमित्यारभ्य श्लोकरूपाः सप्तत्रिंशन्मन्त्राः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

॥ १९ ॥ एकचत्वेति । सर्वा आहुतयो नवमाध्याये एकचत्वारिंशद्भवन्ति । अस्याध्यायस्य भैरवी तारा देवतेति पूर्ववत् ॥ २० ॥ दशमेऽध्याये ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः निशुम्भं निहतमित्यादिद्वयमन्त्रकं मन्त्रद्वयं भवतीत्यर्थः । ततो देव्युवाचेत्येको मन्त्रः । तत एकैवाहमित्यादी अनुत्तमौ मन्त्रावित्यर्थः ॥ २१ ॥ पुनर्देव्येकेति ॥ पुनर्देव्युवाचेत्येको मन्त्र इत्यर्थः ॥ तदुत्तरमेकमन्त्रेण अहं विभूत्येति मन्त्रेण सह पूर्वोक्ता अष्टौ मन्त्राः संपन्नाः । ऋषिरुवाचेत्येकः । ततः प्रववृते इत्यादि सार्धद्वाविंशतिर्मन्त्रा भवन्ति । तत्र द्वाविंशतिश्लोकरूपा मन्त्रा जज्वलुश्चाग्रय इति एकोऽन्तिमोऽर्धमनुः । अस्मिन्नध्याये सर्वे मन्त्रा द्वात्रिंशद्भवन्तीति बोध्यम् ॥ २२ ॥ दशमे इत्यादि स्पष्टं पूर्ववत् ज्ञेयम् ॥ २३ ॥ इति कात्यायनीतन्त्र

एकचत्वारिंशदिति आहुतिर्नवमे शुभे ॥ देवता भैरवी तारा शृणु गोप्यं वरानने ॥ २० ॥ ऋषिर्निशुम्भं निहतमित्यादिद्वय मन्त्रकम् ॥ ततो देवीति मन्त्रौ द्वो एकैवाहमनुत्तमौ ॥ २१ ॥ पुनर्देव्येकमन्त्रेणाप्यष्टौ मन्त्रा उदाहृताः ॥ ऋषिस्ततः प्रववृते सार्धद्वाविंशतिर्मताः ॥ २२ ॥ द्वाविंशन्मनवस्तत्राप्येको ह्यर्धमनुर्मतः ॥ दशमे सिंहमासीना शूलपाशविधारिणी ॥ २३ ॥ मुख्या चतुर्भुजा बाणचापहस्ता शुभेक्षणा ॥ इति कात्यायनीतन्त्रे द्वाविंशः पटलः ॥ २२ ॥ ऋषिःसुमेधा विख्यातः प्रोक्तो देव्या हते शुभे ॥ चतुस्त्रिंशत्तथा श्लोका मन्त्रास्तत्संख्यकाः स्मृताः ॥ १ ॥ ततो देव्येकमन्त्रेण वरदाऽहं सुरेश्वरी ॥ देवा ऊचुस्ततः सर्वाबाधाप्रशमनं तथा ॥ २ ॥ श्लोकेनैकेन देवेशि देव्युवाच ततः परम् ॥ वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्तेत्यादिश्लोकाश्चतुर्दश ॥ ३ ॥ सार्धा सर्वाहुतिर्देवि पञ्चाशत्पञ्चसंयुता ॥ वैष्णवी देवता ह्यत्र महागरुडवाहना ॥ ४ ॥ देव्युवाचेति च तत एभिः स्तवैश्च मां तदा ॥ दूरेत्यर्धेन सहिता अष्टाविंशतिरूपकाः ॥ ५ ॥

व्याख्यायां द्वाविंशः पटलः ॥ २२ ॥ ऋषिः सुमधेति । एकादशे ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः । देव्या हते इत्यादि आरभ्य चतुस्त्रिंशच्छ्लोकास्तावदेव मन्त्रा इत्यर्थः ॥ १ ॥ तत इति । देव्युवाचेति मन्त्रः एकेन वरदाऽहमित्युत्तरमन्त्रेण युक्तः । तथाच मन्त्रद्वयं बोध्यम् । देवा ऊचुरित्येकः सर्वाबाधाप्रशमनमित्युत्तरैकमन्त्रेण युक्तस्तेन मन्त्रद्वयं फलितम् ॥ २ ॥ देव्युवाचेत्येको मन्त्रः । ततो वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्त इत्यादयश्चतुर्दश श्लोका मन्त्राः ॥ ३ ॥ पञ्चसंयुता पञ्चाशदाहुतयोऽर्धमन्त्रेण सहिता अस्मिन्नध्याये भवन्तीत्यर्थः । स चार्धमन्त्रोऽर्थादवशिष्ट एव । वैष्णवी देवता पूर्ववद्बोध्या ॥ ४ ॥ देव्युवाचेतीति । देव्युवाचेत्येको मन्त्रः । तत एभिः स्तवैश्च मामित्यारभ्य दूरादेव पलायन्ते इत्यन्तिमार्धेन सहिता अष्टाविंशतिसंख्याविशिष्टश्लोकरूपा मन्त्रा बोध्याः ॥ ५ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ततश्चेति । ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः । ततः इत्युक्ता सा भगवतीति श्लोकमादित आदौ कृत्वा प्रथमार्धश्लोकेन सहिता ये नव श्लोकास्तैस्तत्संख्याकाहुतयो भवन्तीत्यर्थः । तदुक्तं कात्यायनीतन्त्रे--'इत्युक्तेत्यर्धमन्त्रोऽयं जपाच्छौर्यप्रदायकः' इति ॥ ६ ॥ सर्वाध्यायाहुतीः कथयति--एवं त्विति स्पष्टम् । ततस्त्रयोदशे इति ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः ॥७॥ एतत्ते कथितं भूपेति एतत्ते कथितं भूपेत्याद्यभ्यान्तिमार्धेन सहितं यत्त्रयं श्लोकानां तन्मनुः सार्धास्त्रयः श्लोकात्मका मन्त्रा इति यावत् । मार्कण्डेय उवाचेत्येकः । इति तस्य वचोदितः आर्षप्रयोगः आदित इति पदच्छेदः । आदितः प्रथमतः । इति तस्य वचः श्रुत्वेत्यर्धात्मक एको मन्त्र इत्यर्थः।ततः श्लोकषट्कं सार्धपञ्चमन्त्रात्मकं भवति । सृष्टिरूपदधातीति न्यायेनार्धश्लोकेऽपि श्लोकव्यवहारः । तत्र पञ्चश्लोकरूपा मन्त्रा अर्धश्लोक एको मन्त्रो मिलित्वा षड् मन्त्रा भवन्तीत्यर्थः॥८॥देव्युवाचेत्येको मन्त्रः । यत्प्रार्थ्यते त्वया

ततश्चर्षिरुवाचान्त इत्युक्त्वा श्लोकमादितः ॥ अर्धयुङ्नवभिः श्लोकैर्मन्त्रास्तत्संख्यका मताः ॥ ६ ॥ एवं तु द्वादशेऽध्याये ॥ एकचत्वारिंशदाहुतिः ॥ततस्त्रयोदशेऽध्याये ऋषिरुवाच इत्यथ॥७॥एतत्ते कथितं भूपेत्यादिसार्धत्रयं मनुः ॥ मार्कण्डेय उवाचेति इति तस्य वचोदितः ॥ ८ ॥ श्लोकषट्कं ततो देवीवाक्यं स्यात्परमेश्वरि ॥ यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप श्लोकेनैकेन तोषकृत् ॥९॥ मार्कण्डेय उवाचेति ततो वव्रे मनुद्वयम् ॥ देव्युवाच पुनश्चैव स्वल्पश्लोकत्रयेण वै ॥ १० ॥ अर्धानामेव मन्त्रत्वाद्भवन्त्यत्र षडाहुतिः ॥ ततो मार्कण्डेय इति इति दत्त्वा तयोरिति ॥११॥ द्वौ मन्त्रौ पुनरुच्चार्यसावर्णिर्भविता मनुः॥ एकोनत्रिंशत्संख्याका ऽऽहुतिरत्र विधीयते ॥ १२ ॥ एवंत्रयोदशेऽध्याये होमतर्पणकर्मणि ॥ शतानि सप्तसंख्यानि प्रोक्तानि तव शैलजे ॥ मकारादिर्नुकारान्तो मनुः परमदुर्लभः ॥ १३ ॥

भूपेत्येकः । अत्र विशेषमाह--श्लोकेनैकेनेति। अनेनैकेनैव श्लोकेनासकृदावर्तिनेन श्रीभगवती तोषकृद्भवतीत्यर्थः।तेन चात्रार्धमन्त्रत्वं न स्वीकर्तव्यमिति तात्पर्यम् ॥ ९ ॥ मार्कण्डेयेति । मार्कण्डेय उवाचेत्येकः । ततो वव्रे नृपो राज्यमित्यादि मन्त्रद्वयं देव्युवाचेत्येकः स्वल्पश्लोकत्रयेण स्वल्पदादिश्लोकत्रयेणात्र षडाहुतिः षडाहुतयो भवन्तीत्यर्थः । ननु श्लोकत्रये कथं षडाहुतित्वं तत्राह--अत्रार्धानामेवमन्त्रत्वादिति।अर्धमन्त्रषट्केन षडाहुतयोभवन्तीत्यर्थः॥१०॥ततो मार्कण्डेयेति । मार्कण्डेय उवाचेत्येको मन्त्रः । इति दत्त्वा तयोरिति । इति दत्त्वेत्यर्धश्लोक एव मन्त्र इत्यर्थः । पुनरनन्तरं द्वौ मन्त्रौ बभूवान्तर्हिता सद्य इत्यंकश्लोयात्मक एकोमन्त्रः ॥११॥ सूर्याज्जन्म समासाद्येत्यर्धात्मको द्वितीयो मन्त्रः तौ द्वौ मन्त्रावुच्चार्यान्ते सावर्णिर्भविता मनुरित्येकपादात्मकं मन्त्रं पठेदिति शेषः । ग्रन्थसमाप्तिबोधकं पठेन्न त्वस्याहुतिरित्यर्थः । तदुक्तं कात्यायनीतन्त्रे--'इति दत्त्वेत्यर्धमन्त्रो वाञ्छितार्थप्रपूरणे' इति ॥ १२ ॥ एवं त्रयोदशेऽध्याये इति इदं पूर्वत्रान्वेति । होमतर्पण कर्मणीति उत्तरत्रान्वेति । होमादिषु सप्तशत

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मन्त्राः कर्तव्या इत्यर्थः। तेन कामनानुसारेणैकद्वित्रिमन्त्रजपेनायं मन्त्रविभागनियमो यथा दुर्गे स्मृतेत्यादिकेवलमन्त्राणां जपादिष्विति बोध्यम्। अत एव भगवत्या कृतमित्यारभ्य सार्धत्रिंशच्छ्लोकात्मक एको मन्त्रो भगवता पूर्वमुक्त इति बोध्यम् ॥ १३ ॥ सत्संप्रदायेति । तदुक्तं भुवनेश्वरीसंहितायाम् ॥ "इयं सप्तशती देवि ज्वलदग्निर्न संशयः। सुरक्षिता सुखाय स्यादन्यथा गृहदाहकृत" इति ॥ १४ ॥ इत्थं कात्यायनीतन्त्ररहस्यार्थलब्धेऽनुगमे सप्रमाणेसत्य युगमारभ्याद्यपर्यन्तं सर्वदेशीयैः सर्वशिष्टैराश्रिते सत्यपि तमननुगमनादृत्योन्मत्तवत्कैश्चिद्गुप्तवतीग्रन्थे प्रलपितम् । यथा सोऽचिन्तयत्तदा तत्रेत्यर्धश्लोकात्मको मनुः । तथा किंनु तेषां कथं ते चेत्यर्धश्लोकात्मकौ मनू । तथा तेषां कृते करोमीति द्वावर्धश्लोककौ मनू । इत्यादिसर्वत्र सप्तशत्यां मन्त्राणां प्रमाणाभावेनाकुलीभावः कृतः । तथाऽन्यैरपि टीकाकारैः क्वचिदादिमश्लोक एवार्धमन्त्रत्वं क्वचिन्मध्यश्लोक एवार्धमन्त्रत्वं स्वीकृत्य सर्वसप्तशतीमन्त्राणामाकुलीभावः कृतस्तेन च सर्वानुष्ठानेषु लोकैरधर्मः कारितस्तादृशाधर्मचारिणां का गतिर्भवेदिति परमेश्वर एव जानाति। ननु किमिदं मन्त्रत्वं मननत्राणरूपत्वमिति चेन्न। तस्य ब्राह्मणे सत्त्वान्मन्त्रत्वमति व्याप्तं भवेत। विहितार्थाभिधायको मन्त्र इत्युक्ते वसन्ते कपिञ्जलानालभेत इत्यस्य मन्त्रस्य विधिरूपत्वादव्याप्तिरिति चेन्मैवं शास्त्रकारा यं मन्त्रं व्यवहरन्ति स एव मन्त्र इति समाख्यानस्य निर्दोषलक्षणत्वात् स्पष्टीकृतं चैतज्जैमिनिना सूत्रे 'तच्चोदकेषु मन्त्राख्या' इति मन्त्रेण मीमांसायाम् । अस्ति च

सत्संप्रदायविधिना ज्ञातव्यो मम वल्लभे ॥ अन्यथा विफलो मन्त्रः सत्यं सत्यं मयोदितम् ॥ १४ ॥ इति श्रीकात्यायनीतन्त्रे त्रयोविंशः पटलः ॥ २३ ॥

सप्तशतीमन्त्रेऽपि शिवस्य मन्त्रत्वमिति व्यवहारः। स्यादेतत्। जैमिनिना अर्थैकत्वादेकं वाक्यं साकांक्षं चेद्विभागे स्यादिति सूत्रेणैकवाक्य व लक्षणमभिहितं तस्यायमर्थः । यद्विभागे साकांक्षमविभागे चैकार्थं तदेकं वाक्यमिति। तत्र विभागे साकांक्षमित्युक्तेऽतिव्याप्तिः स्यात्। "स्योनं ते सदनं कृणोमि घृतस्य धारया सुषेवं कल्पयामि तस्मिन् सीदामृते प्रतितिष्ठ व्रीहीणां मेध सुमनस्यमानः" इति । अत्र तस्मिन् इत्यादि पदसमूहस्य विभागे सति प्रकृतवाचि तच्छब्दनिर्णयाय पूर्वपदसमूहसाकांक्षत्वमस्ति तद्द्वयवच्छेत्तुमेकार्थमि युच्यते हि तत्रैकार्थ वमस्ति पूर्वार्धस्य सदनकरणमर्थः उत्तरार्धस्य पुरोडाशप्रतिष्ठानं स्योनं समी चीनं सुषेवं सुष्ठु सेवितुं योग्यं मेधसारं पुरोडाश इत्यर्थः। अत्र द्वयोः समूहयोर्वाक्य द्वयत्वमुभयवादिसिद्धं तदेकार्थमित्यनेन व्यावर्तते। एकार्थमित्युक्तेऽतिव्याप्तिःस्यात्। "भगो वां विभजतु पूषा वां विभजतु" अनयोर्विभिन्न मन्त्रत्वेन पदसमूहयोस्तात्पर्यविषयस्य द्रव्यविभागरूपस्यार्थस्यैकत्वात्तद्द्वयवच्छेत्तुं विभागे साकांक्षमित्युक्तं तथा सति मन्त्रत्वपर्याप्त्याधिकरणैकवाक्यत्वयोः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सामानाधिकरण्यव्याप्त्या तादृशार्धश्लोकानामन्वेषणे सोऽचिन्तयत्तदा तत्रेत्येवमादय एवार्धश्लोकाः संभवन्तीति चेत्तदसत् अव्याप्त्यतिव्याप्तिदोषस्य दुष्परिहरत्वात् हुंफडादिमत्रेषु मन्त्रत्वेऽप्येकवाक्यत्वाभावात् ब्राह्मणग्रन्थ एकवाक्यत्वेऽपि मन्त्रत्वाभावात्।तथा च तादृशसामानाधिकरण्यस्य क्वचित्सत्त्वेऽपि सर्वत्रासत्त्वात्। किंच त्रयोदशेऽध्याये'स्वल्पैरहोभिर्नृपते'इत्यादिश्लोकत्रयेण परस्परापेक्षितानां षडर्धानां षण्मन्त्रस्वीकारेण भगवता तन्नियमस्यास्वीकाराच्च। किंच पूर्वोक्तवचनैः सर्वत्र निर्वाहे जाते तन्निमित्तस्वीकारे उपयोगाभावाच्च वक्ष्यमाणकारिकाविरोधस्य दुष्परिहरत्वाच्च। तस्मान्मदुक्तार्थ एव साधीयानिति सुधियो विभावयन्तु। अत्र केचिदनुगमैकरसिका एवमाहुः। ये सप्तशत्यामष्टसप्तत्युत्तरपञ्चशतश्लोकाः सन्ति तत्र यत्संख्यश्लोकमध्ये उवाचान्तमन्त्राःसन्ति तत्रोवाचान्तमन्त्रैरेव मन्त्रविभागस्यदर्शितत्वात् उवाचान्तमन्त्रपूर्वोत्तरभागस्थार्धश्लोकद्वयस्यमन्त्रद्वयत्वं बोध्यम्। यथा प्रथमचरित्रे अष्टादशश्लोकान्तिमश्लोकमध्ये वैश्य उवाचेत्युवाचान्तमन्त्रो ह्स्ति तत्र पूर्वोत्तरार्धश्लोकद्वयस्यमन्त्रद्वयत्वं तेन 'प्रत्युवाच स तं वैश्यः' इत्यादिरर्धमन्त्रः। वैश्य उवाचेति चैको मन्त्रः। समाधिर्नाम वैश्योऽहमित्याद्यर्धात्मक एको मन्त्रः। एवमेव सप्तशत्यां सर्वत्रानुगमः। यत्र चाध्यायान्तेऽर्धश्लोकः स्वभावत एव पतति यथा जज्वलुश्चाग्नयः शान्ता इति। तथा हते मातृगणस्तस्मिन्ननर्तासृङ्मदोद्धत इति। तात्रर्धश्लोकात्मक एक एव स मन्त्रो बोध्यः। प्रथमचरित्रान्ते ऋषिरुवाचेत्युवाचमन्त्रस्तु पूर्वश्लोकान्ते उत्तरश्लोकादौ च पतितो न श्लोकमध्ये इति न पूर्वोत्तरार्धयोर्मन्त्रद्वयत्वम्। एवं सप्तशत्यां विना प्रमाणं सप्तशतमन्त्रविभागोऽनुगमेनैव सिध्यति। अयं चानुगमः स्तोत्रकारेणैव मध्ये उवाचान्तमन्त्रकरणेन दर्शित इति तत्र वदामः सत्योऽयमनुगमो भवतां यदि कात्यायनीतन्त्रवचनविरुद्धो न स्यात्तदेव तु दुर्घटं तथा हि भवदनुगमानुरोधेन त्रयोदशाध्याये 'स्वल्पैरहोभिर्नृपते' इत्यादिश्लोकत्रये मन्त्रचतुष्टयं भवति कात्यायनीतन्त्रानुरोधेन तु मन्त्रषट्कं भवति ततश्च कात्यायनीतन्त्रविरोधो दुरुद्धर एवेति मदुक्त एव पन्था रमणीय इति सुविधो विभावयन्तु। तत यदि शिष्टास्तमनुगममाश्रित्य तदनुगमानुरोधेन सप्तशतमन्त्रविभागं स्वीकुर्वन्ति तर्हि वयमपि स्वीकुर्मो नास्माकमाग्रहः इति॥ हंसः सारं यथाऽऽदत्ते सारासारविवेकतः। त्यक्त्वाऽसारं तथा सारमङ्गीकुरुत पण्डिताः॥ अथास्य सप्तशतमन्त्रविभागस्य प्राचीनोक्ताः कारिका लिख्यते॥ मार्कण्डेय उवाचेति प्रथमो मन्त्र ईरितः॥ ततो मन्त्राः सप्तदशाप्यर्धश्लोकात्मकस्ततः॥ १५ ॥ वश्योक्तिरग्रतोऽर्धं स्यात्ततो मन्त्रास्त्रयः स्मृताः॥ कथं त इत्यप्यर्धं स्याद्राजावोचेति मन्त्रकः॥ १६ ॥ ततश्चार्धद्वयं मन्त्रौ वैश्योक्तिस्तदनन्तरम॥ ततोऽर्धमन्त्रः संप्रोक्तस्त्रयः श्लोका मनुत्रयम्॥ १७ ॥ करोमि किं यदर्धं स्यान्मार्कण्डेयवचस्ततः॥ ततस्ताविदमर्धं स्यादेकः श्लोकात्मको मनुः॥ १८ ॥ उपविष्टावित्यर्धमन्त्रो राजोवाच मनुस्तथा॥ भगवन्निति चार्धं स्याच्चतुः श्लोकी चतुष्टयम्॥ १९ ॥ ममास्येत्यर्धमन्त्रः स्यान्मुनिवाक्यं ततः परम्॥ ज्ञानमस्तीत्यर्धमन्त्रो दश मन्त्रास्ततः परम्॥ २० ॥ संसारेत्यर्धमन्त्रः स्याद्रा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

जोवाच मनुस्ततः ॥ भगवन्कोत्यर्धमन्त्रो मनुः श्लोकात्मकस्ततः ॥ २१ ॥ तत्सर्वमर्धमुनिवाङ् नित्यैवेत्यर्धमन्त्रकः ॥ षण्मन्त्रास्तुः ततः प्रोक्ता निद्रामित्यर्धमन्त्रकः ॥ २२ ॥ ब्रह्मोवाच ततोऽर्धः स्यात्त्रयोदश ततः परम् ॥ बोधश्चेत्यर्धमन्त्रः स्यान्मुनिवाक्यं ततः परम् ॥ २३ ॥ एवं स्तुतेत्यर्ध मन्त्रः पञ्च मन्त्रास्ततः परम् ॥ उक्तवन्तावर्धमनुर्भगवद्वाक्यमेव च ॥ २४ ॥ भवेतामिदमर्धं स्यात्किमन्येनेति चार्धकम् ॥ मुनिवाक्यं पुनश्चार्धं ततः स्याच्छ्लोकमन्त्रकः ॥ २५ ॥ मुनिवाक्यं ततो मन्त्रौ द्वौ प्रोक्तौ चरमौ परौ ॥ इत्येवं प्रथमेऽध्याये मन्त्रसंख्या समीरिता ॥ २६ ॥ द्वितीये ऋषि वाक्यं स्यादष्टषष्टयर्णवः स्मृताः ॥ तृतीये मुनिवाक्यं तु पञ्चत्रिंशत्तथाऽर्णवः ॥ २७ ॥ देवीवाक्यं ततश्चैकः श्लोको मुनिवचस्तथा ॥ पञ्च श्लोका स्ततो मन्त्रास्तृतीयेऽध्याय ईरिताः ॥ २८ ॥ चतुर्थे मुनिवाक्यं तु षड्विंशतिरथार्णवः ॥ मुनिवाक्यं ततो मन्त्रद्वयं देवीवचस्तथा ॥ २९ ॥ अर्धं श्लोकात्मको मन्त्रो देवा ऊचुस्ततः परम् । भगवत्येत्यर्धमन्त्रस्ततः श्लोकत्रयं स्मृतम् ॥ ३० ॥ मुनिवाक्यं वेदमन्त्राः स्यादध्यायेऽथ पञ्चमे ॥ मुनि वाक्यं च षट् श्लोका देवा ऊचुस्ततः परम् ॥ ३१ ॥ पञ्च श्लोकास्तु ते मन्त्रा या देवीत्यादितः पुनः ॥ भ्रान्तिदेव्यन्तिमा मन्त्रा एकविंशतिरी रिताः ॥ ३२ ॥ तेषां खण्डत्रयेणैव त्रिषष्टयाहुतयोऽभवन् ॥ विंशत्यक्षरपर्यन्तं प्रथमः खण्डईरितः ॥ ३३ ॥ वेदाक्षरो द्वितीयस्तु तृतीयोऽष्टाक्षरः स्मृतः ॥ इन्द्रियेत्येकमन्त्रः स्याच्चितिरूपेति च त्रयम् ॥ ३४ ॥ पूर्ववच्च ततो मन्त्रौ द्वौ मुनेर्वाक्यमेव च ॥ सप्तदशाथमन्त्राः स्युर्मुनिवाक्यं त्रणोऽर्णवः ॥ ३५ ॥ दूतवाक्यं नव श्लोका मुनिवाक्यं सकृन्मनुः ॥ देवीवाक्यं वेदमन्त्रा दूतवाक्यं ततः परम् ॥ ३६ ॥ चत्वारस्तु पुनः श्लोका देवीवाक्यं मनुद्वयम् ॥ अथ षष्ठ मुनेर्वाक्यं चत्वारः श्लोकमन्त्रकाः ॥ ३७ ॥ सप्तमेऽथ मुनेर्वाक्यं त्रयोविंशतिमन्त्रकाः ॥ मुनिवाक्यं च मन्त्रौ द्वौ भवेतामष्टमे ततः ॥ ३८ ॥ मुनिवाक्यं त्रिषष्टयात्माहुतयोऽर्धाहुतिस्तथा ॥ नवमे राजवाक्यं तु श्लोकद्वयमतः परम् ॥ ३९ ॥ मुनिवाक्यं ततः सप्तत्रिंशच्छ्लो कास्तु मन्त्रकाः ॥ दशमेगुनिवाक्यं तु मन्त्रद्वयमतः परम् ॥ ४० ॥ देवीवाक्यं च मन्त्रौ द्वौ पुनर्देव्येकमन्त्रकः ॥ मुनिवाक्यं ततो द्वाविंशत्याहुतय ईरिताः ॥ ४१ ॥ अर्धमन्त्रोऽन्तिमः प्रोक्तस्तत एकादशे पुनः ॥ मुनिवाक्यं चतुस्त्रिंशच्छ्लोका देवीवचस्ततः ॥ ४२ ॥ एकमन्त्रस्ततो देवा ऊचुरि त्येष मन्त्रकः ॥ एकमन्तोऽम्बिकावाक्यं चतुर्दश तथाऽर्णवः ॥ ४३ ॥ अर्ध मन्त्रोऽन्तिमः प्रोक्तो द्वादशेऽथाम्बिकावचः ॥ अष्टाविंशतिमन्त्राः स्युरे काऽप्यर्धाहुतिस्तथा ॥ ४४ ॥ पुनर्ऋषिस्ततोऽर्धं स्यान्नव श्लोकास्त्रयोदशे ॥ एकादशार्धाहुतयो द्वादश श्लोकमन्त्रकाः ॥ ४५ ॥ उवाचवचनैः षड् भिरेकोनत्रिंशदीरिताः ॥ गौडपादीयभाष्याब्धेः कारिकामृतमुद्धृतम् ॥ ४६ ॥ पिबन्तु विबुधाः सर्वे मृतिनाशो यतोभवेत् ॥ ४७ ॥ इति कारिका वली रहस्योद्घाटनेनाम्बा मा क्रोधमवलम्बताम् ॥ दोषवन्तः सुताः सन्ति क्षमाशीला हि मातरः ॥ १ ॥ रङ्गनाथसुतेनेयं श्रीलक्ष्मीतनयेन च ॥ नीलकण्ठेन विदुषा मन्त्रसंख्याप्रकाशिका ॥ २ ॥ कात्यायनीतन्त्रवर्ये कृता टीका यथामति ॥ प्रीयतां तेन मे देवी भुवनेशी महेश्वरी ॥ ३ ॥ इति श्रीरङ्गभट्टसुतनीलकण्ठकृतौ कात्यायनीतन्त्रोक्तसप्तशतीमन्त्रव्याख्याप्रकाशिकाटीकायां त्रयोविंशतितमः पटलः ॥ २३ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अथ मन्त्रविभागः ॥ नागोजीभट्टीये अष्टसदत्युत्तराणां श्लोकानां शतपञ्चकम् ॥ प्रोक्तं सप्तशतीस्तोत्रं तत्सप्तशतसङ्ख्यया ॥ १ ॥ विभज्य जुहुयान्मन्त्रमिति कात्यायनीमतम् ॥ मार्कण्डे उवाचैकः सावर्ण्याद्यास्ततः परम् ॥ २ ॥ श्लोकमन्त्राः सप्तपश अर्ध श्लोकात्मकस्ततः ॥ एकोनविंशदेवं स्युर्वैश्योक्तिर्विंशतिस्तथा ॥ ३ ॥ पुनरर्धं पुनः श्लोकत्रयमर्धं पुनर्भवेत् ॥ पञ्चविंशतिरेवं स्याद्राजा षड्विंशतिस्ततः ॥ ४ ॥ अर्धश्लोकात्मकौ मन्त्रौ मन्त्रसङ्ख्या प्रकीर्तिता ॥५॥ पुनरर्धं पुनः श्लोकत्रयमर्धं पुनर्भवेत् ॥ मार्कण्डेयः पुनश्चार्धश्लोकः श्लोकात्मकः पुनः ॥ ६ ॥ अर्धश्लोकात्मको मन्त्रो राजाऽधश्लोकमन्त्रकः ॥ मन्त्राश्चत्वारिंशदेवं श्लोकमन्त्रचतुष्टयम् ॥ ७ ॥ पुनरर्धमृषिश्चार्धं श्लोकमन्त्राः पुनर्दश ॥ पुनरर्धः पुना राजा एकोना षष्टिरुच्यते ॥ ८ ॥ पुनरर्धं पुनः श्लोकः पुनरर्धं पुनर्ऋषिः ॥ पुनरर्धं पुनः श्लोकाः षण्मन्त्राः पुनरर्धकम् ॥ ९ ॥ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ इत्येव पाठो मन्त्राणामेकसप्ततिरुच्यते ॥१०॥ ब्रह्माऽर्धश्लोमन्त्रोऽथ श्लोकमन्त्रास्त्रयोदश ॥ अर्धश्लोक ऋषिश्चार्धश्लोकः श्लोकास्तु पञ्च वै ॥ ११ ॥ पुनरर्धं तु मन्त्राणां सपञ्चनवतिः स्मृता ॥ भगवानर्धमन्त्रौ द्वावृषिश्लोकार्धकं पुनः ॥ १२ ॥ श्लोकः पुनर्ऋषि श्लोकद्वयं मन्त्रद्वयं भवेत् ॥ श्लोकानामष्टसप्तत्या चतुर्भिरधिकं शतम् ॥ १३ ॥ अध्यायादावेव ऋषिरुवाचेति सकृन्मनुः ॥ अष्ट षष्टिमिताः श्लोकास्तावन्तो मनवः स्मृताः ॥ १४ ॥ एकोनसप्ततिः सर्वेऽध्याये मन्ता द्वितीयके ॥ आदावृषिरुवाचैकः पञ्चविंश ततः परम् ॥ १५ ॥ निहन्यमानाद्याः श्लोका मुखरागाकुलाक्षरम् ॥ इत्यन्ता देव्युवाचैको गर्ज गर्जति चापरः ॥१६॥ श्लोका ऋषिरुवाचेति पुनश्च श्लोकपञ्चकम् ॥ चतुश्चत्वारिंशदेवं सर्वे मन्त्रास्तृतीयके ॥ १७ ॥ आद्यो ऋषिरुवाचेति शक्राद्याः श्लोक मन्त्रकाः ॥ षड्विंशास्तु ऋषिश्लोकद्वयं देवी ततः परम् ॥ १८ ॥ व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥ इत्यर्धश्लोक मन्त्रोऽथ देवा ऊचुस्ततः परम् ॥ ॥ १९ ॥ भगवत्या कृतं सर्वमित्यर्धश्लोकमन्त्रकः ॥ यदयं निहतः श्लोकद्वयं देवी ततः परम् ॥ २० ॥ ( पाठान्तरं—यदयं निहताद्यं च श्लोकमन्त्रत्रयं भवेत् ॥ ) ऋषिश्लोकास्तु चत्वारो मनवः परिकीर्तिताः ॥ षट्त्रिंश

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

च्छ्लोकककेऽध्याये चत्वारिंशद्द्वयाधिकम् ॥ २१ ॥ षट्सप्ततिश्लोकयुक्तेऽध्याये मन्त्रास्तु पञ्चमे ॥ एकोत्रिंशदधिकं शतं कात्या यनीमतम् ॥ २२ ॥ एको ऋषिरुवाचेति पुरा शुम्भादयश्च षट् ॥ श्लोकमन्त्रास्ततो देवा ऊचुश्चैवाष्टमो मनुः ॥ २३ ॥ नमो देव्यादिकाः श्लोकाः पञ्च मन्त्राः प्रकीर्तिताः ॥ त्रयोदशैवं मन्त्रास्तु या देवी त्यादयोऽपि च ॥ २४ ॥ एकविंशतिकाः श्लोका भ्रान्त्यन्तास्तेषु मन्त्रकाः ॥ प्रतिश्लोक त्रयो मन्त्रा ज्ञेयाः सर्वे त्रिषष्टिकाः ॥ २५ ॥ पुनः श्लोकात्मको मन्त्रस्त्रिमन्त्रः श्लोककः पुनः ॥ त्रयोविंशच्छ्लोककेषु मन्त्रा वै सप्तषष्टिकाः ॥ २६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ॥ नमस्तस्यै इति प्रोक्तो विंशत्यक्षरको मनुः ॥ २७ ॥ नमस्तस्यै इति प्रोक्तो द्वितीयश्चतुरक्षरः ॥ अष्टाक्षरस्तृतीयोऽपि नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २८ ॥ एवं द्वाविंशतिश्लोकैर्ज्ञेयं मन्त्रत्रयं बुधैः ॥ पूर्वैस्त्रयोदशैर्मन्त्रैः सहाशीतिरुदाहृताः ॥ २९ ॥ स्तुता सुरेति च श्लोकद्वयं चैव पुनरृषिः ॥ पुनः सप्तदश श्लोका ऋषिः श्लोकत्रयं ततः ॥ ३० ॥ दूतश्चैव नव श्लोका ऋषिरेकोऽम्बिका ततः ॥ ( एक इत्यस्यैक श्लोक इत्यर्थः ) चतुःश्लोकी पुनर्दूत चतुःश्लोकी पुनः शिवा ॥३१॥ श्लोकद्वयं मिलित्वा तु चत्वारिंशन्नवाधिकम् ॥ अशीत्यापि च संयोगे एकोनत्रिंशताऽधिकम् ॥ ३२ ॥ शतमेवं तु विज्ञेयमाहुतीनां च पञ्चमे ॥ विंशतिश्लोकसंयुक्ते षष्ठेऽध्याये प्रकीर्तिताः ॥ ३३ ॥ सर्वे श्लोका मन्त्ररूपा देव्यैकाऽथ ऋषित्रयम् ॥ चतुर्विंशतिमन्त्राणामित्येवं परिकीर्तिताः ॥ ३४ ॥ पञ्चविंशतिश्लोक युक्तेऽध्याये मन्त्रास्तु सप्तमे॥सर्वे मन्त्राः श्लोकरूपा ऋष्युवाच द्वयं ततः॥३५॥सप्तविंशतिरेवं तु मन्त्रसंख्या प्रकीर्तिता॥सार्धैकषष्टि श्लोकाढ्येऽष्टमेऽध्याये प्रकीर्तिताः ॥ ३६ ॥ एकषष्टिश्लोकमन्त्रा अन्तेऽर्धश्लोकमन्त्रकः ॥ आदावेक ऋषिश्चैव त्रिषष्टिर्मन्त्रसंततिः ॥ ३७ ॥ एकोनचत्वारिंशद्भिः श्लोकैर्युक्ते समीरिताः ॥ अध्याये नवमे मन्त्रास्तावन्तोऽथ मनुद्वयम् ॥ ३८ ॥ राजा ऋषिश्चेति चैकचत्वारिंशन्मनुस्त्वयम् ॥ सार्धसप्तान्वितैर्विंशच्छ्लोकैस्तु दशमेऽन्विते ॥ ३९ ॥ सप्तविंशतिमन्त्रास्तु श्लोकरूपास्ततोऽन्तिमः ॥ अर्धश्लोकात्मको मन्त्र ऋष्युवाच द्वयं तथा ॥ ४० ॥ देव्युवाच द्वयं चैव द्वात्रिंशन्मन्त्रसंग्रहः॥श्लोकानां सार्धपञ्चाशज्ज्ञेयमेकादशे

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

स्फुटम् ॥ ४१ ॥ पंचाशच्छ्लोकमन्त्रास्तु अन्तेऽर्धश्लोकमन्त्रकः ॥ शाकंभरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि ॥ ४२ ॥ एषोऽर्धमन्त्र इत्याहुः केचिदत्र विचक्षणाः ॥ देवीद्वयमृषिश्चैको देवा एकमितीरितम् ॥ ४३ ॥ पंचाधिकास्तु पंचाशन्मन्त्रा ज्ञेयाः परिस्फुटम् ॥ अष्टात्रिंशच्छ्लोकयुक्तेऽप्यध्याये द्वादशात्मके ॥ ४४ ॥ चत्वारिंशच्च एकश्च मन्त्रास्तत्राहुतिद्वयम् ॥ अधश्लोकात्मकश्लोकाः सप्तत्रिंशन्मिता ऋषिः ॥ ४५ ॥ देव्युवाचेति चैकैकमेव संख्या स्फुटोदिता ॥ त्रयोदशे सार्धसप्तदशश्लोकाः प्रकीर्तिताः ॥ ४६ ॥ ऋषिरुवाचेत्यारभ्य भोगस्वर्गापवर्गदा ॥ इत्यन्ताः पञ्च मन्त्रास्ते मार्कण्डेयस्ततः परम् ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वेत्यर्धमन्त्रस्तथा स्मृतः ॥श्लोकमन्त्रास्ततो ज्ञेयाः पञ्चैवाऽप्यर्धपद्यकम्॥४८॥देव्युवाचेति मन्त्रोऽयं ततः श्लोकस्तु मन्त्रकः ॥ मार्कण्डेयस्ततो मन्त्रः श्लोकौ मन्त्रद्वयं ततः ॥४९॥ ततो देवी षडर्धानि सप्त मन्त्राः प्रकीर्तिताः ॥ मार्कण्डेयस्ततो मत्रद्वयं मन्त्रत्रयं स्मृतम् ॥५०॥ आवृत्त्या त्वधिको मन्त्रः सावर्णिर्भविता मनुः ॥ एकोनत्रिंशत्संख्याका मन्त्रा अत्र स्मृता बुधैः ॥१॥ केचित्तु॥एकादशार्धाहुतयो द्वादश श्लोकमन्त्रकाः ॥ उवाचवचनैः षड्भिर्मन्त्रास्ते उक्तसंख्यकाः ॥ ५२ ॥ इत्याहुस्तत्र कात्यायनीतन्त्रे विरोधः स्पष्ट एवेति दिक् ॥ अथास्य स्तोत्रस्य श्लोकादिसंख्या डामरेश्वरतन्त्रे ॥ अधुना देवि वक्ष्यामि मालामन्त्रं नवार्णजम् ॥ यस्य स्मरणमात्रेण भुक्तिं मुक्तिं लभेन्नरः ॥ ५३ ॥ ब्रह्मणा त्वेकवारेण श्लोकाः प्रोक्ताश्चतुर्दश ॥ समाधिनाम्ना प्रोक्तास्तु श्लोकाश्चाष्टौ द्विवारतः ॥ ५४ ॥ तथा राज्ञा चतुर्वारैः श्लोकानां दशकं प्रिये ॥ मार्कण्डेयेन ऋषिणा पञ्चधा नव विंशतिः ॥५५॥ तथैवार्धेन सहिता भगवानेकमेकधा त्रिधा ॥ प्रोक्ताश्च विबुधैः सार्धं षट्त्रिंशदेव हि ॥ ५६ ॥ सार्धन्यूना षट्त्रिंशदित्यर्थः ॥ देव्या द्वादशधा सार्धैकोनषष्टिः प्रकीर्तिताः ॥ ५७ ॥ ऋषिणा सप्तविंशत्या चत्वारि च शतानि वै ॥ सार्धाष्टोत्तरकाण्यत्र दूतेनोक्ता द्विधा प्रिये ॥ ५८ ॥ श्लोकास्त्रयोदशैवात्र प्रोक्ताः प्राणप्रिये मम ॥ एवं सप्तशती संख्या श्लोका अष्टौ च सप्ततिः ॥ ५९ ॥ शतानि पञ्च देवेशि तेषां सप्तशताहुतिः ॥ विष्णुमायादितो भ्रान्तिरूपान्ते आहुतित्रयम् ॥ ६० ॥ चितिरूपेण देयं तु आहुतीनां त्रयं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

प्रिये ॥ इति ॥ यत्तु ॥ ब्रह्मैको भगवानेको मार्कण्डेयस्तु मार्गणः ॥ देवाः पञ्च ऋषिस्त्रिंशद्देवी द्वादशकं तथा ॥६१॥ वैश्यदूतौ पुन द्वौं द्वौ राजोवाचेति वर्णतः ॥ अर्धानि पूर्वपरयोः पुनः षोडश षोडश ॥ ६२ ॥ अर्धानि सप्त च द्वे च श्लोकाः पञ्चशतं तथा ॥ श्लोकाः सार्धं चतुरशीतिरध्यायाश्च त्रयोदश ॥ ६३ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे ॥ इति त्रयोदशेत्यर्थः ॥ एवमाहुतयः सप्तशतं स्युस्तर्पणस्य च ॥ इत्थं ज्ञानार्णवे तन्त्रे प्रोक्तमिति तत्तु ज्ञानार्णवे अनुपलम्भान्मूलान्तरादर्शनाच्च कात्यायनीतन्त्रे डामरादितन्त्र विरोधाच्चानादेयमिति ॥ अथ ब्रह्माण्डपुराणनाम्ना प्रत्यध्यायं श्लोकसंख्या क्वचिदुक्ता ॥ तत्राद्यचरिताध्याये श्लोकैकाशीति रुत्तमा ॥ अथ मध्यचरित्रे तु अष्टस्वेकसु संख्यकाः ॥ ६३ ॥ मध्यमायाश्चतुःसप्त चतुर्वेदखवेदकाः ॥ अथोत्तमचरित्रे षट् षडग्निश्लोकभागितेति ॥ ६५ ॥ अग्नीषोमाध्यायवती गीता सप्तशती स्मृता ॥ ६६ ॥ तथा कवचार्गलाकीलकानामपि श्लोकसंख्या उक्ताः ॥ श्रीवज्रकवचस्य त्रिपञ्चाशच्छ्लोकशालिता ॥ अर्गलाकीलके श्लोका द्व्यष्टाविंशतिसंख्यकाः ॥ ६७ ॥ अथो रहस्य त्रयस्य त्रयोऽध्याया मनुध्रुवाः ॥ इति च ॥ अथ गोविन्दकृतमन्त्रविभागः ॥ अनिर्वाच्यजगज्जन्मलयस्थेमभ्रमाश्रयम् ॥ सपाद्युप हितात्मानमाश्रयेत्तमुपाश्रयम् ॥ ६८ ॥ विघ्ननिर्विघ्नकर्तारं दुरितघ्नमृतिस्तवम् ॥ वन्दे विघ्नहरं देवं प्रसन्नकरुणार्णवम् ॥ ६९ ॥ चतुर्दशजनान्तस्था या चतुर्दशरूपिणी ॥ चतुर्दशोदिता मायादिकृचतुर्दशनाच्छुभा ॥ ७० ॥ काशीनिवासकण्वश्रीगणेशार्य सुतः सुधीः ॥ गोविन्दस्तनुते सप्तशतीमन्त्रविभाजनम् ॥ ७१ ॥ अष्टसप्तत्युत्तराणां श्लोकानां शतपञ्चकम् ॥ प्रोक्तं सप्तशतीस्तोत्रं तत्सप्तशतसंख्यया ॥ ७२ ॥ विभज्य जुहुयान्मन्त्रैरिति कात्यायनीमतम् ॥ मार्कण्डेय उवाचैकः सावर्ण्याद्यास्ततः परम् ॥ ७३ ॥ श्लोकमन्त्राः सप्तदश अर्धश्लोकात्मकाः स्थिताः ॥ एकोनविंशतिर्देवा वैश्योक्तिर्विंशतिस्तथा ॥ ७४ ॥ पुनरर्धं पुनः श्लोकत्रयमर्धं पुनर्भवेत् ॥ पञ्चविंशतिरेवं स्याद्राजा षड्विंशतिस्ततः ॥ ७५ ॥ अर्धश्लोकात्मकं मन्त्रं द्वयं वैश्य पुनर्भवेत् ॥ एकोनत्रिंशदेवं तु मन्त्रसंख्या प्रकीर्तिता ॥ ७६ ॥ पुनरर्धं पुनः श्लोकत्रयमर्धं पुनर्भवेत् ॥ मार्कण्डेय पुनश्चार्धं श्लोकः श्लोका

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

त्मकः पुनः ॥ ७७ ॥ अर्धश्लोकात्मको मन्त्रो ह्यर्धश्लोकमजान्तकः ॥ मन्त्राश्चत्वारिंशदेवं श्लोकमन्त्रचतुष्टयम् ॥ ७८ ॥ पुनरर्धं कविश्चार्धं श्लोकमन्त्राः पुनर्दश ॥ पुनरर्धं पुना राजेत्येकोना षष्टिरुच्यते ॥ ७९ ॥ पुनरर्धं पुनः श्लोकं पुनरर्धं पुनर्ऋषिः ॥ पुनरर्धं पुनः श्लोकाः षण्मन्त्राः पुनरर्धकः ॥ ८० ॥ स्तौमि निद्रां भगवतीमतुलां तेजसः प्रभुः ॥ इत्येव पाठो मन्त्राणामेकसप्ततिरुच्यते ॥८१॥ ब्रह्माद्यश्लोकमन्त्राद्यश्लोकमन्त्रास्त्रयोदश ॥ अर्धश्लोक ऋषिश्चार्धश्लोकः श्लोकास्तु पञ्च वै ॥ ८२ ॥ पुनरर्धं तु विप्राणां सपञ्चनवतिः स्मृता ॥ भगवानर्धमन्त्रे द्वे ऋषिश्लोकार्धकं पुनः ॥८३॥ श्लोकः पुनर्ऋषिः श्लोकद्वयं मन्त्रद्वयं भवेत् ॥ श्लोकानामष्टसप्तत्या चतुर्भि रधिकं शतम् ॥ ८४ ॥ उवाचवचनैः सार्धं विभागः प्रथमे मतः ॥ मार्कण्डेयद्वयं वैश्यद्वयं राजत्रयं ततः ॥८५॥ ऋषिः पञ्चकमुद्दिष्टं भगवानेक एव तु ॥ ब्रह्मैकं तु चतुर्विंशदर्धमन्त्राः प्रकीर्तिताः ॥ ८६ ॥ उवाचपदमध्येषु श्लोकद्वादशकेषु च ॥ अध्यायादावेक ऋषि रुवाचेति सकृन्मनुः ॥८७॥ अष्टषष्टिमिताः श्लोकास्तावन्तो मनवो मताः ॥ एकोनसप्ततिः सर्वाध्याये मन्त्रा द्वितीयके ॥८८॥ आदा वृषिरुवाचेति पञ्चत्रिंशत्ततः परम् ॥ निहन्यमानाद्याः श्लोका मुखरागाकुलाक्षरम् ॥८९॥ इत्यन्ता देव्युवाचैको गर्ज गर्जेति चापरः ॥ श्लोको ऋषिरुवाचेति पुनश्च श्लोकपञ्चकम् ॥ ९० ॥ चतुश्चत्वारिंशतस्तु सर्वे मन्त्रास्तृतीयके ॥ आद्यो ऋषिरुवाचेति शक्राद्याः श्लोक मन्त्रकाः ॥९१॥ षड्विंशास्तु ऋषिः श्लोका द्वयं देवी ततः परम् ॥ व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥९२॥ इत्यर्धश्लोक मन्त्रोऽथ देवा ऊचुस्ततः परम् ॥ भगवत्या कृतं सर्वमित्यर्धश्लोकमन्त्रकः ॥९३॥ यदयं निहताद्यं च श्लोकमन्त्रत्रयं भवेत् ॥ ऋषिश्लोका स्तु चत्वारो मनवः परिकीर्तिताः ॥ ९४ ॥ ऋषित्रयं तु देवैका एकदेवास्तु पञ्चभिः ॥ उवाचवचनैः श्लोकाः पञ्चत्रिंशत्तु मन्त्रकाः ॥ ९५ ॥ अर्धश्लोकात्मकं मन्त्रद्वयमेवं भवेदिह ॥ षट्त्रिंशच्छ्लोककेऽध्याये चत्वारिंशदद्वयाधिका ॥९६॥ विभज्य गणना कार्या मन्त्राणां हवनादिषु षट्सप्ततिश्लोकयुक्तेऽध्याये मन्त्रास्तु पञ्चमे ॥ ९७ ॥ एकोनत्रिंशदधिकशतं कात्यायनीमते ॥ एको ऋषिरुवाचेति पुरा शुम्भादयश्च षट् ॥९८॥ श्लोकमन्त्रास्ततो देवा ऊचुश्चैवाष्टमो मनुः ॥ नमो देव्यादिकाः श्लोकाः पञ्चमन्त्राः प्रकीर्तिताः ॥९९॥ त्रयो

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दशैवं मन्त्रास्तु या देवीत्यादयोऽपि च ॥ एकविंशतिकाः श्लोका भ्रान्त्यन्तास्तेषु मन्त्रकाः ॥१००॥ प्रतिश्लोकं त्रयो ज्ञेया मन्त्रा स्तत्र त्रिषष्टिकाः॥ पुनः श्लोकात्मको मन्त्रस्त्रिमन्त्रश्लोककं पुनः ॥ १०१ ॥ त्रयोविंशश्लोककेषु मन्त्रा वै सप्तषष्टिकाः या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ॥ १०२ ॥ नमस्तस्यै इति प्रोक्तो विंशत्यक्षरको मनुः ॥ नमस्तस्यै इति प्रोक्तो द्वितीयश्चतु रक्षरः ॥ १०३ ॥ अष्टाक्षरस्तृतीयोऽपि नमस्तस्यै नमो नमः ॥ एवं द्वाविंशश्लोकेषु ज्ञेयं मन्त्रत्रयं बुधैः ॥ १०४ ॥ पूर्वत्रयोदशै र्मन्त्रैः सहाशीतिरुदाहृता ॥ स्तुता सुरेति च श्लोकद्वयं चैव पुनर्ऋषिः ॥ १०५ ॥ पुनः सप्तदश श्लोका ऋषिश्लोकत्रयं ततः ॥ दूत श्चैव नव श्लोका ऋषिरेकोऽम्बिका ततः ॥१०६॥ चतुःश्लोकी पुनर्दूतचतुः श्लोकी पुनः शिवा ॥ श्लोकद्वयं मिलित्वा तु चत्वारिंश द्द्वयाधिका ॥ १०७ ॥ श्लोकाः सप्तोवाचवाक्यमेकोनार्धशतैःसह ॥ अशीत्यापि च संगोगे एकोनत्रिंशताधिकम् ॥ १०८ ॥ शत मेवं तु विज्ञेयमाहुतीनां च पञ्चमे ॥ ऋषेश्चतुष्टयं प्रोक्तं देवा ऊचु सकृत्पुनः ॥ १०९ ॥ दूतोवाचद्वयं देवी उवाच द्वितयं तथा ॥ नवोवाच चतुष्पञ्चाशच्छ्लोकाहुतयस्तथा ॥११०॥ द्वाविंशत्याहुतिश्लोकाः षट्षष्ट्याहुतयो मता· ॥ एकोनत्रिंशदधिकमाहुतीनां शतं मम ॥ १११ ॥ विंशतिश्लोकसंयुक्ते षष्ठेऽध्याये प्रकीर्तिताः ॥ सर्वे श्लोका मन्त्ररूपा देव्येकोऽथ ऋषित्रयम् ॥ ११२ ॥ चतुर्विंशति मन्त्राणामित्येवं परिकीर्तितम् ॥ पञ्चविंशतिश्लोकयुक्तेऽध्याये मन्त्रास्तु सप्तमे ॥ ११३ ॥ सर्वे मन्त्राः श्लोकरूपा ऋष्युवाच त्रयं ततः ॥ सप्तविंशतिरेवं तु मन्त्रसंख्या प्रकीर्तिता ॥ ११४ ॥ सार्धैकषष्टिश्लोकाश्चाष्टमेऽध्याये प्रकीर्तिताः ॥ एकषष्टिश्लोकमन्त्रा अन्तेऽर्धश्लोकमन्त्रकः ॥११५॥ आदावेको ऋषिश्चैकत्रिषष्टिर्मन्त्रसंततिः ॥ एकोनचत्वारिंशः द्विश्लोकैर्युक्ते समीरिताः ॥ ११६ ॥ अध्याये नवमे मन्त्रास्तावन्तोऽथ मनुद्वयम् ॥ राजा ऋषिश्चेति चैकचत्वारिंशन्मनुद्वयम् ॥ ११७ ॥ अर्धसप्तान्वितैर्विंशश्लोकैस्तु दशमेऽन्विते ॥ सप्तविंशतिमन्त्रास्तु श्लोकरूपास्ततोत्तमः ॥११८॥ अर्धश्लोकात्मको मन्त्र ऋष्युवाचद्वयं तथा ॥ देव्युवाचद्वयं चैव द्वात्रिंशन्मन्त्रसंग्रहः ॥११९॥ श्लोकानां सार्धपञ्चाशज्ज्ञेयं चैकादशत्रयम् ॥ पञ्चाशच्छ्लोकमन्त्रास्तदन्तेऽर्धश्लोकमन्त्रकः ॥१२०॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

देवीद्वयमृषिश्चैको देवी एकमितीरितम् ॥ पञ्चपञ्चाशदाहुत्यस्तत्पञ्चत्रिंशदुत्तरम् ॥१२१॥ श्लोके देवा ऊचुरेकमेवं ज्ञेयं तु साधकैः ॥ अष्टात्रिंशच्छ्लोकयुक्तेऽप्यध्याये द्वादशात्मके ॥१२२॥ एकचत्वारिंशतिस्तु मन्त्रास्तत्राहुतिद्वयम् ॥ अर्धश्लोकात्मकाः श्लोकाः सप्तत्रिंशन्मिता ऋषिः ॥ १२३ ॥ देव्युवाचेति चैकैकमेवं संख्या स्फुटोदिता ॥ त्रयोदशे सार्धसप्तदशश्लोकाः प्रकीर्तिताः ॥ १२४ ॥ एकादशार्धाहुतयो द्वादश श्लोकमन्त्रकाः ॥ उवाचवचनैः षड्भिर्मन्त्रा एकोनविंशतिः ॥१२५॥ मार्कण्डेयत्रय देवीद्वयमेक ऋषिर्भवेत् । एवं कात्यायनीतन्त्ररीत्या प्रोक्तं विभाजनम् ॥ १२६ ॥ एषां गोविन्दकृतसप्तशतीमन्त्रविभागकारिकाणामर्थस्त्वग्रे सप्तटीकासंग्रहप्रकरणे जगच्चन्द्रचन्द्रिकानाम्ना प्रसिद्धटीकायां स्पष्टतया प्रदर्शित इति ॥ एवं होमाशक्तो जयन्तीति मन्त्रेण नमो देव्यै इति मन्त्रेण सर्वमङ्गलेति मन्त्रेण वा होमपूजातर्पणानि ॥ जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविरित्यपि रहस्ये ॥ कात्यायनीतन्त्रोक्तमन्त्रविभाग एवाभियुक्तैः स्पष्टीकृत्य दर्शितः ॥ १७ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

## अथ गुप्तवतीमतेन स्पष्टमन्त्रविभागप्रतीकानि यथाश्रुतग्राहिभिन्नमतेन च स्पष्टमन्त्रविभागप्रतीकानि स्पष्टतया प्रदर्श्यन्ते ॥ मूलं तु गुप्तवतीटीकायां द्रष्टव्यमिति ॥ तद्यथा—

| कात्यायनीतन्त्रानुसारेण गुप्तवतीमतेन मन्त्रविभागः। | यथाश्रुतग्राहिमतेन मन्त्र-विभागः। | कात्यायनीतन्त्रानुसारेण गुप्तवतीमतेन मंत्रविभागः। | यथाश्रुतग्राहिमतेन मन्त्र-विभागः। | कात्यायनीतन्त्रानुसारेण गुप्तवतीमतेन मन्त्रविभागः। | यथाश्रुतग्राहिमतेन मन्त्र-विभागः। |
|---|---|---|---|---|---|
| १ मार्कंण्डेय उवाच १ | मार्कण्डेय १ | १६ असम्यग्व्ययशीलै | सञ्चितः सोऽसि | ३१ यैः संत्यज्य पितृ | किं करोमि |
| २ सावर्णिः सूर्यतनयः | सावर्णि | १७ एतच्चान्यच्च सततम् | तत्र विप्राश्रमा | ३२ किमेतन्नाभिजाना | पतिः स्वजन |
| ३ महामायानुभावेन | महामाया | १८ स पृष्टस्तेन कस्त्वम् | सशोक इव कस्मा | ॥ ३३ तेषां कृते मे निः ६ | यत्प्रेमप्रवणम् |
| ४ स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वम् | स्वारोचिषे | १९ इत्याकर्ण्य वचस्तस्य | ॥ प्रत्युवाच स १ | ॥ ३४ करोमि किं य ७ | ॥ करोमि किं ७ |
| ५ तस्य पालयतः सम्यक् | तस्य पाल | २० वैश्य उवाच २ | वैश्य उवाच २ | ३५ मार्कण्डेय उवाच ५ | मार्कण्डेय ५ |
| ६ तस्य तैरभवद्युद्धम् | तस्य तै | २१ समाधिर्नाम वैश्योऽह | ॥ समाधिर्नाम २ | ॥ ३६ ततस्तौ सहितौ ८ | ॥ ततस्तौ ८ |
| ७ ततः स्वपुरमायातो | ततः स्व | २२ विहीनः स्वजनैर्दारैः | पुत्रदारैर्निरस्तश्च | ॥ ३७ समाधिर्नाम वै ९ | समाधिर्नाम |
| ८ अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैः | अमात्यै | २३ सोऽहं न वेद्मि पुत्रा | वनमभ्यागतो | ३८ कृत्वा तु तौ यथान्या | ॥ उपविष्टौ ९ |
| ९ ततो मृगयाव्याजेन | ततो मृग | ॥ २४ किंनु तेषां गृहे २ | प्रवृत्तिं स्वजनानां च | ३९ राजोवाच ६ | राजोवाच ६ |
| १० स तत्राश्रममद्राक्षी | स तत्रा | ॥ २५ कथं ते किन्नु स ३ | ॥ कथं ते किन्नु ३ | ॥ ४० भगवंस्त्वामहम् १० | ॥ भगवंस्त्वा १० |
| ११ तस्थौ कञ्चित्स कालम् | तस्थौ कं | २६ राजोवाच ३ | राजोवाच ३ | ॥ ४१ दुःखाय यन्मे ११ | दुःखाय यन्मे |
| ॥१२ सोऽचिन्तयत्तदा १ | सोऽचिन्तय | ॥ २७ यैर्निरस्तो भवा ४ | ॥ यैर्निरस्तो ४ | ४२ ममत्वं गतराज्यस्य | जानतोऽपि |
| १३ मत्पूर्वैः पालितं पूर्वम् | मद्भृत्यै | ॥ २८ तेषु किं भवत ५ | ॥ तेषु किं ५ | ४३ अयं च निकृतः पुत्रै | स्वजनेन च |
| १४ न जाने स प्रधानो मे | मम वैरि | २९ वैश्य उवाच ४ | वैश्य उवाच ४ | ४४ एवमेव तथाऽहं च | दृष्टदोषेऽपि |
| १५ ये ममानुगता नित्यम् | अनुवृत्ति | ३० एवमेतद्यथा प्राह | ॥ एवमेतत् ६ | ४५ तत्केनैतन्महाभाग | ॥ पमास्य च १ |

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

| गुप्तवती. | यथाश्रुतग्राहि. | गुप्तवती. | यथाश्रुतग्राहि. | गुप्तवती. | यथाश्रुतग्राहि. |
|---|---|---|---|---|---|
| ४६ ऋषिरुवाच ७ | ऋषि ७ | ॥ ६५ तथापि तत्स १७ | तथापि | ८४ विष्णुः शरीरग्रहण | सोऽपि निद्रा |
| ४७ ज्ञानमस्ति समस्त | ॥ ज्ञानमस्ति १२ | ६६ देवानां कार्यसिद्ध्य | उत्पन्नेति तदा | ८५ सा त्वमित्थं प्रभावैः | कारितास्त |
| ४८ दिवान्धाः प्राणिनः | विषयश्च महाभाग | ६७ योगनिद्रां यदा वि | आस्तीय शेष | ॥८६ प्रबोधं च जगत्स्वा १८ | मोहयेतौ |
| ४९ ज्ञानिनो मनुजाः | केचिद्दिवा तथा | ६८ तदा द्वावसुरौ घोरौ | विष्णुकर्णमलो | ॥८७ बोधश्च क्रिय १९ | ॥ बोधश्च १९ |
| ५० ज्ञानं च तन्मनुष्या | यतो हि ज्ञानिनः | ६९ स नाभिकमले वि | दृष्ट्वा तावसुरौ | ८८ ऋषिरुवाच ११ | ऋषि ११ |
| ५१ ज्ञानेऽपि सति पश्यै | मनुष्याणां च यत्तेषाम् | ७० तुष्टाव योगनिद्रां ताम् | विबोधनार्थाय | ८९ एवं स्तुता तदा देवी | ॥ एवं स्तुता २० |
| ५२ मानुषा मनुजव्या | कणमोक्षा | ७१ विश्वेश्वरीं जगद्धा | ॥ निद्रां भगवतीम् १७ | ९० नेत्रास्यनासिका | विष्णोः प्रबोध |
| ५३ तथापि ममतावर्ते | लोभात्प्रत्युप | ७२ ब्रह्मोवाच १० | ब्रह्मो १० | ९१ उत्तस्थौ च जगन्नाथः | निर्गम्य दर्शने |
| ५४ तन्नात्र विस्मयः का | महामायाप्रभा | ७३ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं | ॥ त्वं स्वाहा १८ | ९१ मधुकैटभौ दुरात्मा | एकार्णवे हि |
| ५५ ज्ञानिनामपि चेतां | महामाया हरे | ७४ अर्धमात्रा स्थिता | सुधा त्वमक्षरे | ॥९४ तावप्यतिबलो २० | क्रोधरक्तेक्षणा |
| ५६ तया विसृज्यते वि | बलादाकृष्य | ७५ त्वयैतद्धार्यते वि | त्वमेव सा त्वम् | ॥९५ उक्तवन्तौ वरो २१ | पञ्चवर्षसहस्राणि |
| ॥ ५७ सा विद्या पर १२ | सैषा प्रसन्ना | ७६ विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वम् | त्वयैत पाल्यते | ९६ श्रीभगवानुवाच १२ | ॥ उक्तवन्तौ २१ |
| ॥ ५८ संसारबन्धहे १३ | ॥ संसारबन्ध १३ | ७७ महाविद्या महामा | तथा संहृति | ॥९७ भवेतामद्य मे २२ | भगवानु १२ |
| ५९ राजोवाच ८ | राजो ८ | ७८ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य | महामोहा च भवती | ॥९८ किमन्येन च २३ | ॥ भवेता २२ |
| ६० भगवन्का हि सा | ॥ भगवन् १४ | ७९ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वम् | कालरात्रिर्महारात्रि | ९९ ऋषिरुवाच १३ | ॥ किमन्येन २३ |
| ॥ ६१ यत्स्वभावा च १४ | ब्रवीति कथमुत्पन्ना | ८० खड्गिनी शूलिनी | लज्जा पुष्टिः | १०० वञ्चिताभ्यामिति | ऋषि १३ |
| ॥६२ तत्सर्वं श्रोतु १५ | ॥ तत्सर्वम् १५ | ८१ सौम्या सौम्यतरा | शङ्खिनी चापिनी | ॥१०१ अवां जहि २४ | ॥ वञ्चिताभ्याम् २४ |
| ६३ ऋषिरुवाच ९ | ऋषि ९ | ८२ यच्च किञ्चित्क्वचिद्व | परापराणाम् | १०२ ऋषिरुवाच १४ | विलोक्य ताभ्याम् |
| ॥ ६४ नित्यैव सा ज १६ | ॥ नित्यैव १६ | ८३ यया त्वया जगत्स | तस्य सर्वस्य | | ऋषि १४ |

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

**गुप्तवती.**

१०३ तथेत्युक्त्वा भगव
१०४ एवमेषो समुत्पन्ना
पूर्णश्लोकमन्त्राः ६६
अर्धश्लोकमन्त्राः २४
मार्कण्डेय २ वैश्य २ राज ३
ब्रह्म १ ऋषि ५ भगवद् १
वचनानि उवाचान्तानि १४
एवं सर्वमन्त्राः प्रथमे १०४

**द्वितीयाध्यायमन्त्राः ।**

१ ऋषिरुवाच १
२ देवासुरमभूद्युद्धम्
३ तत्रासुरैर्महावीर्यै
४ ततः पराजिता देवाः
५ यथावृत्तं तयोस्तद्वत्
६ सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दू
७ स्वर्गान्निराकृताः सर्वे
८ एतद्वः कथितं सर्वम्
९ इत्थं निशम्य देवानां

**यथाश्रुतग्राहि.**

तथेत्यु
एवमेषा
श्लोकमन्त्राः ६६
अर्धश्लोकमन्त्राः २४
उवाचमन्त्राः १४
सर्वे मन्त्राः १०४

**द्वितीयाऽध्यायमन्त्राः**

सर्वं एवैकरूपा
एकोनसप्ततिसंख्याः ६९.

**गुप्तवती.**

१० ततोऽतिकोपपूर्ण
११ अन्येषां चैव देवानाम्
१२ अतीव तेजसः कूटम्
१३ अतुलं तत्र तत्तेजः
१४ यदभूच्छांभवं तेजः
१५ सौम्येन स्तनयोर्यु
१६ ब्रह्मणस्तेजसा पा
१७ तस्यास्तु दन्ताः सं
१८ भ्रुवौ च सन्ध्ययो
१९ ततः समस्तदेवानाम्
२० शूलं शूलाद्विनि
२१ शङ्खंच वरुणःशक्तिम्
२२ वज्रमिन्द्रः समुत्पा
२३ कालदण्डाद्यमो द
२४ समस्तरोमकूपेषु
२५ क्षीरोदश्चामलं हार
२६ अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रम्
२७ अङ्गुलीयकरत्नानि
२८ अक्षाण्यनेकरूपा

**गुप्तवती.**

२९ अददज्जलधिस्तस्यै
३० ददावशून्यं सुरवा
३१ नागहारं ददौ तस्यै
३२ संमानिता ननादो
३३ अमायतातिमहता
३४ चचाल वसुधा चेलु
३५ तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां
३६ सन्नद्धाखिलसैन्या
३७ अभ्यधावत तं शब्द
३८ पादाक्रान्त्या नत
३९ दिशो भुजसहस्रेण
४० शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मु
४१ युयुधे चामरश्चान्यै
४२ अयुध्यतायुतानाम्
४३ अयुतानां शतैः ष
४४ वृतो रथानां कोटया
४५ युयुधे संयुगे तत्र
४६ युयुधुः संयुगे देव्या
४७ हयानां च वृतो युद्धे

**गुप्तवती.**

४८ युयुधुः संयुगे देव्या
४९ देवी खड्गप्रहारैस्तु
५० लीलयैव प्रचिच्छेद
५१ मुमोचासुरदेहेषु
५२ चचारासुरसैन्येषु
५३ त एव सद्यः संभूता
५४ नाशयन्तोऽसुरग
५५ मृदङ्गांश्च तथैवान्ये
५६ खड्गादिभिश्च श
५७ असुरान्भुवि पाशेन
५८ विपोथिता निपाते
५९ केचिन्निपतिता भू
६० सेनानुकारिणः प्रा
६१ शिरांसि पेतुरन्येषाम्
६२ एकबाह्वक्षिचरणा
६३ कबन्धा युयुधुर्देव्या
६४ कबंधाश्छिन्नशिर
६५ पातितै रथनागाश्वैः
६६ शोणितौघा महान

**गुप्तवती.**

६७ क्षणेन तन्महासैन्य
६८ स च सिंहो महानाद
६९ देव्या गणैश्च तैस्तत्र
अर्धश्लोकमंत्राः ०
श्लोकमंत्राः ६८
उवाचमंत्रा १
एवं सर्वमंत्राः द्विती-
याध्याये ६९

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

गुप्तवती.

## तृतीयाध्यायमन्त्राः ।

१ ऋषिरुवाच १
२ निहन्यमानं तत्सैन्य
३ स देवीं शरवर्षेण
४ तस्य च्छित्त्वा ततो देवी
५ चिच्छेद च धनुः सद्यो
६ स च्छिन्नधन्वा विरथो
७ सिंहमाहत्य खड्गेन
८ तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य
९ चिक्षेप च ततस्तत्तु
१० दृष्ट्वा तदापतच्छूलम्
११ हते तस्मिन्महावी
१२ सोऽपि शक्तिं मुमो
१३ भग्नां शक्तिं निपति
१४ ततः सिंहः समुत्प
१५ युद्ध्यमानौ ततस्तौ
१६ ततो वेगात्खमुत्पत्य
१७ उदग्रश्चरणेदेव्या
१८ देवी क्रुद्धा गदापा

यथाश्रुतग्राहि.

## तृतीयाध्यायमन्त्राः ।

ऋषिरुवाचेत्याद्याः
सर्व एवैकरूपाः ४४

गुप्तवती,

१९ उग्रास्यमुग्रवीर्यं च
२० बिडालस्यासिना
२१ एवं संक्षीयमाणे तु
२२ कांश्चित्तुंडप्रहारेण
२३ वेगेन कांश्चिदपरान्
२४ निपात्य प्रमथानीक
२५ सोऽपि कोपान्महा
२६ वेगभ्रमणविक्षुण्णा
२७ धुतशृङ्गविभिन्नाश्च
२८ इति क्रोधसमाध्मात
२९ सा क्षिप्त्वा तस्य वैपाशं
३० ततः सिंहोऽभवत्सद्यो
३१ तत एवाशु पुरुषं
३२ करेण च महासिंहम्
३३ ततो महासुरो भूयो
३४ ततः क्रुद्धा जगन्मा
३५ ननर्द चासुरः सोऽपि
३६ सा च तान्प्रहितांस्ते
३७ देव्युवाच

गुप्तवती.

३८ गर्ज गर्ज क्षणं मूढ
३९ ऋषिवाच ३
४० एवमुक्त्वा समुत्पत्य
४१ ततः सोऽपि पदाक्रां
४२ अर्धनिष्क्रान्त एवा
४३ ततो हाहाकृतं सर्वम्
हृषुरत्वां सुरा देवीम्
अर्धश्लोकमन्त्राः ०
श्लोकमन्त्राः ४१
उवाचमन्त्राः ३
सर्वमन्त्रास्तृतीये ४४

## चतुर्थाध्यायमन्त्राः ।

१ ऋषिरुवाच
२ शक्रादयः सुरगणा
३ देव्या यया ततमिदम्
४ यस्याः प्रभावमतुलम्
५ या श्रीः स्वयं सुकृति
६ किं वर्णयाम तव रूप
७ हेतुः समस्तजगताम्

गुप्तवती.

८ यस्याः समस्तसुरता
९ या मुक्तिहेतुरविचिन्त्य
१० शब्दात्मिका सुवि
११ मेधासि देवि विदि
१२ ईषत्सहासममलम्
१३ दृष्ट्वा तु देविकुपि
१४ देवि प्रसीद परमा
१५ ते संमता जनपदे
१६ धन्य णि देवि सक
१७ दुर्गे स्मृता हरसि भी
१८ एभिर्हतैर्जगदुपैति
१९ दृष्ट्वैव किन्न भवती
२० खड्गप्रभानिकर
२१ दुर्वृत्तवृत्तशमनम्
२२ केनोपमा भवतु
२३ त्रैलोक्यमेतदखि
२४ शूलेन पाहि नो
२५ प्राच्यां रक्ष प्रती
२६ सौम्यानि यानि रू

गुप्तवती.

२७ खड्गशूलगदादीनि
२८ ऋषिरुवाच २
२९ एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

**गुप्तवती.**

३० भक्त्या समस्तैस्त्रि
३१ देव्युवाच ३
॥ ३२ त्रियतां त्रिद १
३३ देवा ऊचुः ४
३४ भगवत्या कृतं सर्वम्
३५ यदि चापि वरो देयः
३६ यश्चमर्त्यः स्तवैरेभि
॥ ३७ वृद्धयेऽस्मत्प्र २
३८ ऋषिरुवाच ५
३९ इति प्रसादिता देवैः
४० इत्येतत्कथितं भूप
४१ पुनश्च गौरीदेहा
४२ रक्षणाय च लोकानां
अर्धश्लोकमन्त्राः २
श्लोकमन्त्राः ३५
उवाचमन्त्राः ५
सर्वे मन्त्राश्चतुर्थाध्याये ४२
मध्यमचरिते मन्त्रसंख्या
अर्धश्लोकमन्त्राः २

**यथाश्रुतग्राहि**

चतुर्थाध्याये शक्रादि-
स्तुतिमन्त्राः
सर्वे गुप्तवतीवद्विभक्ता
भेदस्त्वयम्
॥ ३४ भगवत्या २
३५ यदयं निहतः
३६ संस्मृता संस्मृ
३७ तस्य वित्तर्द्धि
अग्रे समानम्
इति चतुर्थोऽध्यायः

**गुप्तवती.**

श्लोकमन्त्राः १४४
उवाचमन्त्राः ९
सर्वे मन्त्राः १५५

अथ पञ्चमाध्यायमन्त्राः।

१ ऋषिरुवाच १
२ पुरा शुम्भनिशुम्भ
३ तावेव सूर्यतां तद्वद्
४ तावेव पवनर्द्धिं च
५ हृताधिकारास्त्रिदशा
६ तयाऽस्माकं वरो दत्तो
७ इति कृत्वा मतिं देवाः
८ देवा ऊचुः २
९ नमो देव्यै महादेव्यै
१० रौद्रायै नमो नित्यायै
११ कल्याण्यै प्रणतां वृ
१२ दुर्गायै दुर्गपारायै
१३ अतिसौम्यातिरौ

**यथाश्रुतग्राहि.**

पञ्चमाध्यायमंत्राः।

ऋषिरुवाचेत्याद्याः
सर्वे समानाः विशेष-
स्तु या देवीत्यादि
श्लोकेषु प्रतिश्लोकं
१४ या दे. स. भू. वि.
नमस्तस्यै १
१५ नमस्तस्यै २
१६ नमस्तस्यै नमो नमः ३
इति त्रयो मन्त्राः
अन्यत्सर्वं समानम्
इति पञ्चमाध्यायः

**गुप्तवती.**

या देवीत्यादिश्लोकेषु
तृतीयचरणमपनीय
त्रिपदागायत्रीछन्दस्को
मन्त्रः प्रत्येकं त्रिः पठनीयः
एवं प्रतिश्लोकं मन्त्रत्रयं
भवति तत्स्वरूपं चेत्थम्)

१६ या दे. विष्णु. न. ३
१९ या देवी. चेतने. न. ६
२२ या देवी. बुद्धि. न. ९
२५ या देवी. निद्रा. न. १२
२८ या दे. क्षुधा. न. १५
३१ या दे. छाया. न. १८
३४ या दे. शक्ति. न. २१
३७ या दे. तृष्णा. न. २४
४० या दे. क्षांति. न. २७
४१ या दे. जाति. न. ३०
४६ या दे. लज्जा. न. ३३
४९ या दे. शांति न. ३६

**गुप्तवती**

५२ या दे. श्रद्धा. न. ३९
५५ या दे. कांति. न. ४२
५८ या दे. लक्ष्मी. न. ४५
६१ या दे. वृत्ति. न. ४८
६४ या दे. स्मृति. न. ५१
६७ या दे. दया. न. ५४
७० या दे. तुष्टि. न. ५७
७३ या दे. मातृ न. ६०
७६ या दे. भ्रान्ति. न. ६३
७७ इंद्रियाणामधि
८० चितिरूपेण या ६६
८१ स्तुता सुरैः पूर्वम
८२ या सांप्रतं चोद्धत
८३ ऋषिरुवाच ३
८४ एवं स्तवादियुक्ता
८५ साऽब्रवीत्तान्सुरा
८६ स्तोत्रं ममैतत्क्रियते
८७ शरीरकोशाद्यत
८८ तस्यां विनिर्गता

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

गुप्तवती.

८९ ततोऽम्बिकां परं रू
९० ताभ्यां शुम्भाय चा
९१ नैव तादृक् क्वचिद्
९२ स्त्रीरत्नमतिचार्व
९३ यानि रत्नानि मण
९४ ऐरावतः समानी
९५ विमानं हंससंयुक्त
९६ निधिरेष महापद्मः
९७ छत्रं ते वारुणं गेहे
९८ मृत्योरुत्क्रान्तिदा
९९ निशुम्भस्याब्धिजा
१०० एवं दैत्येन्द्र रत्नानि
१०१ ऋषिरुवाच ४
१०२ निशम्येति वचः
१०३ इति चेति च वक्त
१०४ सतत्र गत्वा यत्रा
१०५ दूत उवाच ५
१०६ देवि दैत्येश्वरः शु
१०७ अव्याहताज्ञः स

गुप्तवती.

१०८ मम त्रैलोक्यम
१०९ त्रैलोक्ये वररत्ना
११० क्षीरोदमथनोद्भुत
१११ यानि चान्यानि दे
११२ स्त्रीरत्नभूतां त्वां दे
११३ मां वा ममानुजं वा
११४ परमैश्वर्यमतुलम्
११५ ऋषिरुवाच ६
११६ इत्युक्ता सा तदा दे
११७ देव्युवाच ७
११८ सत्यमुक्तं त्वया
११९ किंत्वत्र यत्प्रति
१२० यो मां जयति संग्रा
१२१ तदागच्छतु शु
१२२ दूत उवाच ८
१२३ अवलिप्तासि मैवम्
१२४ अन्येषामपि दै
१२५ इन्द्राद्याः सकलाः
१२६ सा त्वं गच्छ मयैवो

गुप्तवती.

१२७ देव्युवाच ९
१२८ एवमेतद्बली शु
१२९ स त्वं गच्छ मयोक्तं
अर्धश्लोकमन्त्राः ०
श्लोकमन्त्राः ५४
त्रिपान्मन्त्राः ६६
उवाचमन्त्राः ९
सर्वमन्त्राः १२९

## अथ षष्ठाध्यायमन्त्राः।

१ ऋषिरुवाच १
२ इत्याकर्ण्य वचो देव्याः
३ तस्य दूतस्य तद्वाक्य
४ हे धूम्रलोचनाशु त्वम्
५ तत्परित्राणदः कश्चि
६ ऋषिरुवाच २
७ तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रम्
८ सदृष्ट्वातां ततो देवीम्
९ न चेत्प्रीत्याद्य भवती

यथाश्रुतग्राहि.

## अथ षष्ठोऽध्यायः।

सर्वे मन्त्राः समानरूपाः॥

## इति षष्ठोऽध्यायः॥

गुप्तवती.

१० देव्युवाच ३
११ दैत्येश्वरेण प्रहितो
१२ ऋषिरुवाच ४
१३ इत्युक्तः सोऽभ्यधाव
१४ अथ क्रुद्धं महासैन्यम्
१५ ततो धुतसटः कोपा
१६ कांश्चित्करप्रहारेण
१७ केषांचित्पाटयामा
१८ विच्छिन्नबाहुशिर
१९ क्षणेन तद्बलं सर्वं
२० श्रुत्वा तमसुरं देव्या
२१ चुकोप दैत्याधिप
२२ हे चण्ड हे मुण्ड बलैः
२३ केशेष्वाकृष्य ब
२४ तस्यां हतायां दुष्टा
अर्धश्लोकमन्त्राः ०
श्लोकमन्त्राः २०
उवाचमन्त्राः ४
सर्वे मन्त्राः २४

गुप्तवती.

## सप्तमाध्यायमन्त्राः।

१ ऋषिरुवाच १
२ आज्ञप्तास्ते ततो दै
३ ददृशुस्ते ततो देवीम्
४ ते दृष्ट्वा तां समादातु
५ ततः कोपं चकारोच्चैः
६ भ्रुकुटीकुटिलात्त
७ विचित्रखट्वाङ्गधराः
८ अतिविस्तारवदना
९ सा वेगेनाभिपतिता
१० पार्ष्णिग्राहाङ्कु
११ तथैव योधं तुरगैः
१२ एकं जग्राह केशेषु
१३ तैर्मुक्तानि च शस्त्रा
१४ बलिनां तद्बलं सर्वं
१५ असिना निहताः के
१६ क्षणेन तद्बलं सर्वं
१७ शरवर्षैर्महाभीमैः
१८ तानि चक्राण्यने

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

**गुप्तवती.**

१९ ततो जहासातिरु

२० उत्थाय च महासिंहम्

२१ अथ मुण्डोऽभ्यधाव

२२ हतशेषं ततः सैन्यम्

२३ शिरश्चण्डस्य काली

२४ मया तवात्रोपहृतौ

२५ ऋषिरुवाच

२६ तावानीतौ ततौ द २

२७ यस्माच्चण्डं च मुण्डम्

अर्द्धश्लोप मन्त्राः ०

श्लोकमन्त्राः २५

उवाचमन्त्राः २

सर्वमन्त्राः २७

**अष्टमाऽध्यायमन्त्राः।**

१ ऋषिरुवाच १

२ चण्डे च निहते दैत्ये

३ तत कोपपराधीन

४ अथ सर्वबलैर्दैत्यः

५ कोटिवीर्याणिप

**यथातथ्यग्राहि.**

**अथ सप्तमाध्यायः।**

सर्वे मन्त्रास्तुल्यरूपाः

इति सप्तमोऽध्यायः॥

सर्वे मन्त्राः २७

**गुप्तवती.**

६ कालका दौर्हृदा मौ

७ इत्याज्ञाप्यासुरप

८ आयान्तं चण्डिका

९ ततः सिंहो महाना

१० धनुर्ज्यासिंहघण्टा

११ तन्निनादमुपश्रुत्य

१२ एतस्मिन्नन्तरे भूप

१३ ब्रह्मेशगुहविष्णूनाम्

१४ यस्य देवस्य यद्रूपम्

१५ हंसयुक्तविमानाग्रे

१६ माहेश्वरी वृषारूढा

१७ कौमारी शक्तिह

१८ तथैव वैष्णवी श

१९ यज्ञवाराहमतुलम्

२० नारसिंही नृसिंहस्य

२१ वज्रहस्ता तथैवैन्द्री

२२ ततः परिवृतस्ताभिः

२३ ततो देवीशरीरात्तु

२४ सा चाह धूम्रजटिल

**गुप्तवती.**

२५ ब्रूहि शुम्भं निशुम्भम

२६ त्रैलोक्यमिन्द्रोल

२७ बलावलेपादथ चेद्य

२८ यतो नियुक्तो दौत्ये

२९ तेऽपि श्रुत्वा वचो दे

३० ततः प्रथममेवाग्रे

३१ सा च तान्प्रहितान्

३२ तस्याग्रतस्तथा का

३३ कमण्डलुजलाक्षेप

३४ माहेश्वरीत्रिशूलेन

३५ ऐन्द्रीकुलिशपाते

३६ तुण्डप्रहारविध्वस्ता

३७ नखैर्विदारितांश्चा

३८ चण्डाट्टहासैरसुरा

३९ इति मातृगणं क्रुद्धम्

४० पलायनपराम् दृष्टा

४१ रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ

४२ युयुधे स गदापाणि

४३ कुलिशेनाहतस्या

**गुप्तवती.**

४४ यावन्तः पतितास्त

४५ ते चापि युयुधुस्तत्र

४६ पुनश्च वज्रपातेन

४७ वैष्णवी समरे चैनम्

४८ वैष्णवीचक्रभिन्न

४९ शक्त्या जघान कौ

५० स चापि गदया दै

५१ तस्याहतस्य बहुधा

५२ तैश्चासुरासृक्संभू

५३ तान्विषण्णासु.

५४ मच्छस्रपातसंभू.

५५ भक्षयन्ती चररणे

५६ भक्ष्यमाणस्त्वया

५७ ॥मुखेन काली ज. १

५८ ततोऽसावाजघा

५९ तस्याहतस्य देहात्तु

६० मुखे समुद्गता ये

६१ देवी शूलेन वज्रेण

**यथाश्रुतग्राहि.**

**अथाष्टमाऽध्याय-**

मन्त्राः सर्वे समाना-

काराः विशेषस्तु

५७ मुखेन० ततो

५८ न चास्या वेद

५९ यतस्ततस्तद्ध

६० तांश्चखादाथ

६१ जघान रक्तबी

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

**गुप्तवती.**

६२ स पपात महीपृष्ठे
६३ ततस्ते हर्षमतुलम्
अर्धश्लोक मन्त्राः १
श्लोकमन्त्रा ६१
उवाचमन्त्राः १
सर्वे मन्त्राः ६३

अथ नवमाध्यायमन्त्राः

१ राजोवाच १
२ विचित्रमिदमाख्या
३ भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतु
४ ऋषिरुवाच २
५ चकार कोपमतुलम्
६ हन्यमानं महासैन्यम्
७ तस्याऽग्रतस्तथा पृष्ठे
८ आजगाम महावी
९ ततो युद्धमतीवासी
१० चिच्छेदास्तांछ
११ निशुम्भो निशितम्
१२ ताडित वाहने देवी

**यथाश्रुतग्राहि.**

६२ ऽरक्तश्च मही
॥ ६३ हते मातृग
इत्यष्टमोऽध्यायः।

अथ नवमोऽध्यायः।

तत्र सर्वे मन्त्राः गुप्तवती-समानः ४१

**गुप्तवती.**

१३ छिन्ने चर्मणि खड्गे च
१४ कोपाध्मातो निशु
१५ आविध्याथ गदाम्
१६ ततः परशुहस्तं तम्
१७ तस्मिन्निपतिते भू
१८ स रथस्थस्तथाऽत्युच्चै
१९ तमायान्तं समालो
२० पूरयामास ककुभो
२१ ततः सिंहो महाना
२२ ततः काली समुत्पत्य
२३ अट्टाट्टहासमशिवम्
२४ दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति
२५ शुम्भेनागत्य या
२६ सिंहनादेन शुम्भस्य
२७ शुम्भमुक्तान् शरान्
२८ ततः सा चण्डिका
२९ ततो निशुम्भः स
३० पुनश्च कृत्वा बाहूनाम्
३१ ततो भगवती क्रुद्धा

**गुप्तवती.**

३२ ततो निशुम्भो वेगेन
३३ तस्यापतत एवाशु
३४ शूलहस्तं समायान्तम्
३५ भिन्नस्य तस्य शूलेन
३६ तस्य निष्क्रामतो दे
३७ ततः सिंहश्चखादो
३८ कौमारीशक्तिनि
३९ माहेश्वरी त्रिशूलेन
४० खण्डंखण्डं च चक्रेण
४१ केचिद्विनेशुरसुराः
अर्धश्लोकमन्त्राः ०
श्लोकमन्त्राः ३९
उवाचमन्त्रा २
सर्वेमन्त्राः ४१

दशमाध्यायमन्त्राः।

१ ऋषिरुवाच १
२ निशुम्भं निहतं
३ बलावलेपाद्दुष्टे त्वम्
४ देव्युवाच २

**गुप्तवती**

५ एकैवाहं जगत्यत्र
६ ततः समस्तास्ताः
७ देव्युवाच ३
८ अहं विभूत्या बहु
९ ऋषिरुवाच ४
१० ततः प्रववृते युद्धम्
११ शरवर्षैः शितैः शस्त्रैः
१२ दिव्यान्यस्त्राणि श
१३ मुक्तानि तेन चास्त्रा
१४ ततः शरशतैर्देवीम्
१५ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रः
१६ ततः खड्गमुपादाय
१७ तस्यापतत एवाशु
१८ अश्वांश्च पातयामा
१९ जग्राह मुद्गरं घोरम्
२० तथापि सोऽभ्यधाव
२१ देव्यास्तं चापि सा
२२ स दैत्यराजः सहसा
॥ २३ तत्रापि सा निरा

**यथाश्रुतग्राहि.**

अथ दशमोऽध्यायः।

अत्रापि मन्त्रभेदो गुप्तवतीतो विशेषः

१८ हताश्वः स तदा
१९ चिच्छेदापत
२० स मुष्टिं पातया
२१ तलप्रहाराभि
२२ उत्पत्य च प्रगृ
२३ नियुद्धं खे तदा



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

गुप्तवती.

२४ नियुद्धं खे तदा दे
२५ ततो नियुद्धं सुचिरम्
२६ स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य
२७ तमायान्तं ततो देवी
२८ स गतासुः पपातो
२९ ततः प्रसन्नमखिलम्
३० उत्पातमेघाः सो
३१ ततो देवगणाः सर्वे
३२ अवादयंस्तथैवान्ये

अर्धश्लोकमन्त्राः १
श्लोकमन्त्राः २७
उवाचमन्त्राः ४
सर्वमन्त्राः ३२

एकादशाध्यायमन्त्राः ।

१ ऋषिरुवाच १
२ देव्या हते तत्र महा
३ देवि प्रपन्नार्तिहरे
आधारभूता जग
५ त्वं वैष्णवी शक्ति

यथाश्रुतिग्राहि.

२४ ततो नियुद्धम्
२५ स क्षिप्तो धरणीम्
२६ तमायान्तं ततो
२७ स गतासुः पपातो
२८ ततः प्रसन्न
२९ उत्पातमेघाः
३० ततो देवगणाः
३१ अवादयंस्तथै
।। ३२ जज्वलुश्चाग्नयः

सर्वे मन्त्राः ३२

गुप्तवती.

६ विद्याः समस्ता
७ सर्वभूता यदा
८ सर्वस्य बुद्धिरूपेण
९ कलाकाष्ठादि
१० सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये
११ सृष्टिस्थिति
१२ शरणागतदीनार्त
१३ हंसयुक्तविमानाग्रे
१४ त्रिशूलचन्द्राहि
१५ मयूरकुक्कुट
१६ शंखचक्र
१७ गृहीतोग्रमहा
१८ नृसिंहरूपेण
१९ किरीटिनि महा
२० शिवदूती
२१ दंष्ट्राकराल
२२ लक्ष्मि लज्जे
२३ मेधे सरस्वती
२४ सर्वस्वरूपे

गुप्तवती.

२५ एतत्ते वदनम्
२६ ज्वालाकराल
२७ हिनस्ति दैत्य
२८ असुरासृग्वसा
२९ रोगानशेषान्
३० एतत्कृतं यत्
३२ विद्यासु शास्त्रेषु
३२ रक्षांसि यत्रोग्र
३३ विश्वेश्वरि त्वम्
३४ देवि प्रसीद
३५ प्रणतानाम्
३६ देव्युवाच २
३७ वरदाऽहम्
३८ देवा ऊचुः ३
३९ सर्वाबाधा
४० देव्युवाच ४
४१ वैवस्वते
४२ नन्दगोपगृहे
४३ पुनरप्यति

गुप्तवती.

४४ भक्षयन्त्याश्च
४५ ततो मां देवता
४६ भूयश्च शत
४७ ततः शतेन
४८ ततोऽहमखिलम्
।। ४९ शाकंभरीति
५० तत्रैव च वधि
५१ पुनश्चाहं यदा
५२ तदा मां मुनयः
५३ यदाऽरुण ख्याः
५४ त्रैलोक्यस्य
५५ इत्थं यदा यदा

अर्धश्लोकमंत्राः १
श्लोकमंत्राः ५०
उवाचमन्त्राः ४
सर्वे मन्त्राः ५५

इत्येकादशोऽध्यायः ।

यथाश्रुतिग्राहि.

एकादशाध्यायमन्त्राः

सर्वे तुल्याः भेदस्त्वयम्

४९ शाकंभ० तत्रै
५० दुर्गा देवीति
५१ रक्षांसि भ
५२ भीमादेवी
५३ तदाऽहम्
५४ भ्रामरीति
। ५५ तदा तदा

अर्धश्लोकमंत्राः १
श्लोकमंत्राः ५०
उवाचमंत्राः ४
सर्वे मन्त्राः ५५

इत्येकादशोऽध्यायः ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

**गुप्तवती**

**द्वादशाध्यायमन्त्राः ।**

१ देव्युवाच
२ एभिः स्तवैश्च
३ मधुकैटभ
४ अष्टम्यां च
५ न तेषां दुष्कृतम्
६ शत्रुतो न भयम्
७ तस्मान्ममैतत्
८ उपसर्गानशेषा
९ यत्रैतत्पठ्यते
१० बलिप्रदाने
११ जानताऽजानता
१२ शरत्काले महा
१३ सर्वाबाधाप्र
१४ श्रुत्वा ममैतत
१५ रिपवः संक्षयम्
१६ शांतिकर्मणि
१७ उपसर्गाः

**गुप्तवती.**

१८ बालग्रहाभि
१९ दुर्वृत्तानामशेषा
॥ २० सर्वं ममैतत् १
२१ पशुपुष्पार्घ्य
२२ अन्यैश्च विविधै
२३ श्रुतं हरति
२४ युद्धेषु चरितम्
२५ युष्माभिः स्तुतयो
२६ अरण्ये प्रान्तरे
२७ सिंहव्याघ्रानु
२८ आघूर्णितो वा
२९ सर्वाबाधासु
३० मम प्रभावात्
३१ ऋषिरुवाच
३२ इत्युक्त्वा सा
३३ तेऽपि देवा
३४ दैत्याश्च देव्या
॥ ३५ निशुम्भे च
३६ एवं भगवती
३७ तयैतन्मोह्यते

**यथाश्रुतग्राहि.**

द्वादशाध्याये
गुप्तवतीवत् विशेषस्तु
२० सर्वं० पशु
२१ विप्राणाम्
२२ प्रीतिर्मे
२३ रक्षां करो
२४ तस्मिन् श्रुते
२५ ब्रह्मणा च
२६ दस्युभिर्वा
२७ राज्ञा क्रुद्धेन
२८ पतत्सु चा
२९ स्मन्ममैत
॥ ३० दूरादेव पलायन्ते
३१ ऋषिरुवाच
३२ इत्युक्त्वा सा
॥ ३३ तेऽपि देवा
३४ यज्ञभागभुजः
३५ जगद्विध्वंसके
अन्ये गुप्तवतीवत्
इति द्वादशोऽध्यायः

**गुप्तवती.**

३८ व्याप्तं तवैतत्
३९ सैवकाले महा
४० भवकाले
४१ स्तुता संपूजिता
अर्धश्लोक मंत्राः २
श्लोकमंत्राः ३७
उवाचमंत्राः २
सर्वे मंत्राः ४१
इति द्वादशोऽध्यायः

**गुप्तवती.**

**त्रयोदशाध्यायमन्त्राः ।**

१ ऋषिरुवाच १
॥ २ एतत्ते कथितम् १
३ एवंप्रभावा
४ तया त्वमेव
५ तामुपैहि
६ मार्कण्डेय उवाच
७ इति तस्य वचः
८ निर्विण्णोऽति
९ सन्दर्शनार्थं
१० तौ तस्मिन्पुलिने
११ यताहारौ
१२ एवं समारा
१३ देव्युवाच ३
१४ यत्प्रार्थ्यते
१५ मार्कण्डेय उवाच ४
१६ ततो वव्रे नृपो
१७ सोऽपि वैश्यस्ततो
१८ देव्युवाच ५

**यथाश्रुतग्राहि.**

**अथ त्रयोदशोऽध्यायः ।**

१ ऋषिरुवाच १
२ एतत्ते कथितम्
३ विद्या तथैव
४ मोह्यन्ते
५ आराधिता
६ मार्कण्डेय उ २
७ इति तस्य
॥ ८ प्रणिपत्य १
९ जगाम सद्य
१० स च वैश्यस्तपः
११ अर्हणां चक्रतुः
१२ ददतुस्तौ
१३ परितुष्टा
१४ देव्युवाच ३
१५ यत्प्रार्थ्यते
१६ मार्कण्डेय उवाच ४
१७ ततो वव्रे
१८ सोऽपि वैश्यः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

| गुप्तवती. | | यथाश्रुतग्राहि | | गुप्तवती. | | यथाश्रुतग्राहि. | | गुप्तवती. | | कथाश्रुतग्राहि. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ॥१९ स्वल्पैरहोभि | २ | १९ देव्युवाच | ५ | पुनरुक्तमंत्राः | २ | २७ इति दत्त्वा तयो | | उत्तमचरित्रे मंत्राः | | चरित्रत्रये मंत्रसंख्या | |
| ॥२० हत्वा रिपून् | ३ | २० स्वल्परहोभिः | | अर्धश्लोकमंत्राः | ७ | २८ बभूवान्तर्हिता | | अर्धश्लोकमंत्राः | १२ | अर्धश्लोकमंत्राः | ३८ |
| ॥२१ मृतश्च भूयः | ४ | २१ हत्वा रिपून् | | श्लोकमंत्राः | १४ | २९ सूर्याज्जन्म | | श्लोकमंत्राः | ३२७ | श्लोकमंत्रा | ५३७ |
| ॥२२ सावर्णिको | ५ | २२ मृतश्च भूयः | | उवाचमंत्राः | ६ | अर्धश्लोकमंत्राः | ११ | त्रिपान्मंत्राः | ६६ | त्रिपान्मन्त्राः | ६६ |
| ॥२३ वैश्यवर्य | ६ | २३ सावर्णिको | | सर्वे मंत्राः | २९ | श्लोममंत्राः | १२ | पुनरुक्तमन्त्राः | २ | पुनरुक्तमंत्राः | २ |
| ॥२४ तं प्रयच्छामि | ७ | २४ वैश्यवर्य | | इति त्रयोदशोऽध्यायः ॥ | | उवाचमंत्राः | ६ | उवाचमंत्राः | ३४ | उवाचमंत्राः | ५७ |
| २५ मार्कण्डेय उवाच | ६ | २५ तं प्रयच्छामि | | | | सर्वे मंत्राः | २९ | इति उत्तरचरित्रे | | सर्वमन्त्रसंख्या | ७०० |
| २९ एवं देव्या वरम् | | २६ मार्कण्डेय उवाच | ६ | | | चरित्रत्रये मंत्राः | ७०० | सर्वेमंत्राः | ४४१ | इति मंत्रविवृतिः संपूर्णा । | |

इति श्रीव्यङ्कटरामात्मजहरिकृष्णविनिर्मिते बृहज्ज्योतिषार्णवेऽष्टमे धर्मस्कन्धे तृतीये उपासनास्तबके श्रीदुर्गोपासनाध्याये अनेकप्रकारेण दुर्गामन्त्रविभागकथनं नामैकोनत्रिंशं प्रकरणम् ॥ २९ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दृष्ट्वेति अहं हरिकृष्णः ॥ १ ॥ इहास्मिन् पटले अमूलं निर्मूलं मनःकल्पितं न विज्ञेयम्। अत्र नानाभेदविधानके संशयोऽपि न कार्य इति ॥ २ ॥ दुर्गाराधने वै निश्चयेन अनेकविधानानि कथितानि तानि देशोदेशेषु प्रासद्धानि सन्ति यथा कवचांशे होमो न युक्तस्तत्र कुत्रचित् यद्गुह्यं परमं लोक इत्यादि कवचं गृह्णन्ति कुत्रचिच्छ्रैलन पाहि नो देवीत्यादिश्लोकचतुष्टयात्मकं कवचं गृह्णन्तीति ॥ ३ ॥ अतस्तेषामनेकभेदानां मया संग्रह

अथ दुर्गापटलम् ॥ दृष्ट्वा तन्त्राण्यनेकानि पुराणानि विशेषतः ॥ जगन्मातुश्च दुर्गायाः पटलं कथयाम्यहम् ॥ १ ॥ नामूलं लिख्यते किंचिदिह विज्ञेयमादरात् ॥ नैवात्र संशयः कार्यो नानाभेदविधानके ॥२॥ तन्त्रान्तरेष्वनेकानि विधानानि मुनीश्वरैः ॥ कथितानीह दुर्गायाः प्रसिद्धानि च सन्ति वै ॥ ३॥ देशदेशेषु तेषां वै संग्रहः क्रियते मया ॥ साधकानां हितार्थाय श्रीदुर्गायाः प्रसादतः ॥ ४ ॥ तत्रादौ मन्त्रमहोदधौ ॥ अथ नवाक्षरं मन्त्रं वक्ष्ये चण्डीप्रवृत्तये ॥ वाङ् माया मदनो दीर्घा लक्ष्मीस्तन्द्री श्रुतीन्दुयुक् ॥५ ॥ डायै सदृग् जलं कूर्मद्वयं झिण्टीशसंयुतम् ॥ नवाक्षरोऽस्य ऋषयो ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ६ ॥ छन्दांस्युक्तानि मुनिभिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभः ॥ देव्यः प्रोक्ता महापूर्वाः काली लक्ष्मीः सरस्वती ॥७॥ नन्दाशाकंभरीभीमाः शक्तयोऽस्य मनोः स्मृताः ॥ स्याद्रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजसंचयः ॥ ८ ॥ अग्निवायुभगास्तत्त्वं फलं वेदत्रयोद्भवम् ॥ सर्वाभीष्टप्रसिद्ध्यर्थं विनियोग उदाहृतः ॥ ९ ॥ ऋषिच्छन्दोदैवतानि शिरोमुखहृदि न्यसेत् ॥ शक्तिबीजानि स्तनयोन्तत्त्वानि हृदये पुनः ॥ १० ॥ तत एकादश न्यासान्कुर्वीतेष्टफलप्रदान् ॥ प्रथमं मातृकान्यासः कार्यः पूर्वोक्तमार्गतः ॥ ११ ॥ कृतेन येन देवस्य सारूप्यं याति मानवः ॥ अथ द्वितीयं कुर्वीत न्यासं सारस्वताभिधम् ॥ १२ ॥ बीजत्रयं तु मन्त्राद्यं तारादि हृदयान्तिकम् ॥ क्रमादंगुलिषु न्यस्येत्कनिष्ठाद्यासु पञ्चसु ॥ १३ ॥

क्रियते इति ॥ ४ ॥ सप्तशतीपाठाङ्गभूतं चण्डीमन्त्रमाह--वागिति ॥ वाक् ऐं माया ह्रीं मदनः क्लीं दीर्घा लक्ष्मीः चा तन्द्री मः श्रुतीन्दुयुक् उबिन्दुयुक्ता मुं ॥ ५ ॥ डायै सदृक् स्वरूपं जलं वि कूर्मद्वयं चयुग्मं झिण्टीश ए च्चे ॥ ६ ॥ महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः ॥ ७ ॥ ८ ॥ भगः सूर्यः ॥ ९ ॥ १० एकादश न्यासानाह--तत इति ॥ पूर्वोक्तमार्गतः प्रथमपटलोक्तविधिना ॥ ११ ॥ सारस्वतन्यासमाह--अथेति ॥१२॥ बीजेति ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मन्त्रादिबीजत्रयं प्रणवादिनमोऽन्तं कनिष्ठादिषु स्थानेषु न्यस्य हृदयादिषु जातियुक्तं न्यसेत् यथा ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कनिष्ठायामित्यादि ॥ १३ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हृदयाय नम इत्याद्यङ्गेष्वपि ॥ १४ ॥ फलमाहास्मिन्निति ॥ १५॥ मायेति ह्रीं ब्राह्मी पूर्वतो मां पातु इत्यादि ॥ १६ ॥ यातुकाष्ठायां

करयोर्मध्यतः पृष्ठे मणिबन्धे च कूर्परे ॥ हृदयादिषडङ्गेषु विन्यसेज्जातिसंयुतम् ॥ १४ ॥ अस्मिन्सारस्वते न्यासे कृते जाड्यं विनश्यति ॥ ततस्तृतीयं कुर्वीत न्यासं मातृगणान्वितम् ॥ १५ ॥ मायाबीजादिका ब्राह्मी पूर्वतः पातु मां सदा ॥ माहेश्वरी तथाऽऽग्नेय्यां कौमारी दक्षिणेऽवतु ॥ १६ ॥ वैष्णवी यातुकाष्ठायां वाराही पश्चिमेऽवतु ॥ इन्द्राणी पावने कोणे चामुण्डा चोत्तरेऽवतु ॥ १७ ॥ ऐशाने तु महालक्ष्मीरूर्ध्वे व्योमेश्वरी तथा ॥ सप्तद्वीपेश्वरी भूमौ रक्षेत्कामेश्वरी तले ॥ १८ ॥ तृतीयेऽस्मिन् कृते न्यासे त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ न्यासं चतुर्थं कुर्वीत नन्दजादिसमन्वितम् ॥१९॥ नन्दजा पातु पूर्वाङ्गं कमलांकुशमण्डिता ॥ खड्गपात्रकरा पातु दक्षिणे रक्तदन्तिका ॥ २० ॥ पृष्ठे शाकंभरी पातु पुष्पपल्लवसंयुता ॥ धनुर्बाणकरा दुर्गा वामे पातु सदैव माम् ॥ २१ ॥ शिरःपात्रकरा भीमा मस्तकाच्चरणावधि ॥ पादादि मस्तकं यावद्भ्रामरी चित्रकान्तिभृत् ॥ २२ ॥ तुर्यन्यासं नरः कुर्याज्जरामृत्युं व्यपोहति ॥ अथ कुर्वीत ब्रह्माख्यं न्यासं पञ्चमनुत्तमम् ॥ २३ ॥ पादादिनाभिपर्यन्तं ब्रह्मा पातु सनातनः ॥ नाभेर्विशुद्धिपर्यन्तं पातु नित्यं जनार्दनः ॥ २४ ॥ विशुद्धेर्ब्रह्मरन्ध्रान्तं पातु रुद्रस्त्रिलोचनः ॥ हंसः पातु पदद्वन्द्वं वैनतेयः करद्वयम् ॥ २५ ॥ चक्षुषी वृषभः पातु सर्वाङ्गानि गजाननः ॥ परापरौ देहभागौ पात्वानन्दमयो हरिः ॥ २६ ॥ कृतेऽस्मिन्पञ्चमे न्यासे सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ षष्ठं न्यासं ततः कुर्यान्महालक्ष्म्यादिसंयुतम् ॥ २७ ॥ मध्यं पातु महालक्ष्मीरष्टादशभुजान्विता ॥ ऊर्ध्वं सरस्वती पातु भुजैरष्टाभिरूर्जिता ॥ २८ ॥

नैर्ऋत्याम् ॥ १७ ॥ १८ ॥ एतत्फलमाह--तृतीय इति ॥ १९ ॥ चतुर्थन्यासमाह--नन्दजेति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ फलमाह--तुर्यमिति ॥ २३ ॥ पञ्चमं न्यासमाह--पादादीति ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ फलमाह--कृतेति ॥ २७ ॥ षष्ठमाह--मध्यमिति ॥ अष्टादशभुजामाह--लक्ष्मीर्मम मध्यं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पात्वित्यादि प्रयोगः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ सप्तमं न्यासमाह--मूलेति ॥ ॐ रा ॥ ॐ रा नमः ब्रह्मरन्ध्रे इत्यादिप्रयोगः ॥३१॥३२॥ एतन्न्यासफलं रोगक्षयः ॥ पायुमारभ्य ब्रह्मरन्ध्रान्तं वर्णन्यासोऽष्टमः ॥ ३३ ॥ एतत्फलं दुःखनाशः ॥ नवममाह--कुर्वीतेति ॥ ३४ ॥ ३५ शिर सः पादान्त मष्टवारं मूलं न्यसेत् ॥ एवं पादाच्छिरोऽन्तमष्टशः एवं पुरो दक्षिणभागे पृष्ठे वामभागेऽप्येवं प्रत्यहमष्टशो मूलं न्यसेत् ॥ एतत्फलं देवत्वप्राप्ति

अधः पातु महाकाली दशबाहुसमन्विता ॥ सिंहो हस्तद्वयं पातु परहंसोऽक्षियुग्मकम् ॥ २९ ॥ महिषं दिव्यमारूढो यमः पातु पदद्वयम् ॥ महेशश्चण्डिकायुक्तः सर्वाङ्गानि ममावतु ॥३०॥ षष्ठेऽस्मिन्विहिते न्यासे सद्गतिं प्राप्नुयान्नरः ॥ मूलाक्षरन्यासरूपं न्यासं कुर्वीत सप्तमम् ॥ ३१ ॥ ब्रह्मरन्ध्रे नेत्रयुग्मे श्रुत्योर्नासिकयोर्मुखे ॥ पायौ मूलमनोर्वर्णान् ताराद्यान्नमसाऽन्वितान् ॥ ३२ ॥ विन्यसेत्सप्तमे न्यासे कृते रोगक्षयो भवेत् ॥ पायुतो ब्रह्मरन्ध्रान्तं पुनस्तानेव विन्यसेत् ॥३३॥ कृतेऽस्मिन्नष्टमे न्यासे सर्वं दुःखं विनश्यति ॥ कुर्वीत नवमं न्यासं मन्त्रव्याप्तिस्वरूपकम् ॥ ३४ ॥ मस्तकाच्चरणं यावच्चरणान्मस्तकावधि ॥ पुरो दक्षे पृष्ठदेशे वामभागेऽष्टशो न्यसेत् ॥३५॥ मूलमन्त्रकृतो न्यासो नवमो देवताप्तिकृत् ॥ ततः कुर्वीत दशमं षडङ्गन्यासमुत्तमम् ॥३६॥ मूलमन्त्रं जातियुक्तं हृदयादिषु विन्यसेत् ॥ कृतेऽस्मिन्दशमे न्यासे त्रैलोक्यं वशगं भवेत् ॥३७॥ दशन्यासोक्तफलदं कुर्यादेकादशं ततः ॥ खड्गिनीशूलिनीत्यादि पठित्वा श्लोकपञ्चकम् ॥३८॥ आद्यं कृष्णतरं बीजं ध्यात्वा सर्वाङ्गके न्यसेत् ॥ शूलेन पाहि नो देवीत्यादिश्लोकचतुष्टयम् ॥३९॥ पठित्वा सूर्यसदृशं द्वितीयं सर्वतो न्यसेत् ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे इत्यादि श्लोकपञ्चकम् ॥४०॥ पठित्वा स्फाटिकाभासं तृतीयं स्वतनौ न्यसेत् ॥ ततः षडङ्गं कुर्वीत विभक्तैर्मूलवर्णकैः ॥४१॥ एकेनैकेन चैकेन चतुर्भिर्युगलेन च ॥ समस्तेन च मन्त्रेण कुर्यादङ्गानि षट् सुधीः ॥४२॥ शिखायां नेत्रयोः श्रुत्योर्नसोर्वक्त्रे गुदे न्यसेत् ॥ मन्त्रवर्णान्समस्तेन व्यापकं त्वष्टशश्चरेत् ॥४३॥ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ॥ यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभं नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम् ॥ ४४ ॥

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ दशममाह- मूलेति ॥ मूल हृदयाय नम इत्यादि जातियुक्तं षडङ्गेषु न्यसेत ॥ एतत्फलं जगद्वश्यम् ॥ ३८ ॥ एकादशमाह-खड्गिनीति ॥ आद्यम् ऐं ॥ ३९ ॥ द्वितीयं ह्रीं ॥ ४० ॥ तृतीयं क्लीं ॥ ४१ ॥ षडङ्गमाह--एकेनेति ॥ ४२ ॥ वर्णन्यासमाह--शिखायामिति ॥ नेत्र

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

श्रुतिनासामुखेषु द्वौ द्वौ अष्टशोऽष्टवारम् ॥ ४३ ॥ महाकालीध्यानमाह--खड्गमिति खड्गचक्रबाणशिरःशङ्खान् दक्षेषु दधतीम् इतराणि वामेषु आस्यपाददशकां दशनक्कां दशपादां दशभुजां त्रिंशन्नेत्रामित्यर्थः ॥ हरौ सुते कमलासनो ब्रह्मा मधुकैटभौ हन्तुं यामस्तौत्तुष्टाव हरेर्निद्रा वैष्णवी मायेत्यर्थः ॥ तदुक्तं यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत ॥ सोऽपि निद्रावशं नीत इति ॥ ४४ ॥ महालक्ष्मीध्यानमाह--अक्षस्त्र

अक्षस्त्रक्परशू गदेषुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ॥ शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ ४५ ॥ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वती मनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ४६ ॥ एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षचतुष्कं तद्दशांशतः ॥ पायसान्नेन जुहुयात्पूजिते हेमरेतसि ॥ ४७ ॥ जयादिशक्तिभिर्युक्ते पीठे देवीं यजेत्ततः ॥ तत्त्वपत्रावृतत्र्यस्रषट्काणाष्टदलान्विते ॥ ४८ ॥ त्रिकोणमध्ये संपूज्य ध्यात्वा तां मूलमन्त्रतः ॥ पूर्वकोणे विधातारं सुरया सह पूजयेत ॥४९॥ विष्णुं श्रिया च नैर्ऋत्ये वायव्ये तूमया शिवम् ॥ उदग्दक्षिणयोः सिंहं महिषं च क्रमाद्यजेत् ॥ ५० ॥ षट्सु काणेषु पूर्वादि नन्दजां रक्तदन्तिकाम् ॥ शाकंभरीं तथा दुर्गां भीमां च भ्रामरीं यजेत् ॥ ५१ ॥सबिन्दुनादाद्यर्णाद्यास्ताराद्याश्च नमोऽन्तिकाः ॥ नन्दजाद्या यजेच्छक्तीर्वक्ष्यमाणा अमीदृशीः ॥ ५२ ॥ अष्टपत्रेषु ब्रह्माणी पूज्या माहेश्वरी परा ॥ कौमारी वैष्णवी चाथ वाराही नारसिंहिका ॥ ५३ ॥ पश्चादैन्द्री च चामुण्डा तथा तत्त्वदलेष्विमाः ॥ विष्णुमाया चेतना च बुद्धिर्निद्रा क्षुधा ततः ॥ ५४ ॥ छाया शक्तिः परा तृष्णा क्षान्तिर्जातिश्च लज्जया ॥ शान्तिः श्रद्धा कान्तिलक्ष्म्यौ धृतिर्वृत्तिः श्रुतिः स्मृतिः ॥५५॥ तुष्टिः पुष्टिर्दया माता ततो भ्रान्तिरिति क्रमात् ॥ बहिर्भूगृहकोणेषु गणेशः क्षेत्रपालकः ॥ ५६ ॥

गिति ॥ कुण्डिकां कमण्डलुं जलजं शङ्खम् । अक्षमालापद्मबाणखड्गवज्रगदाचक्रकमण्डलुशङ्खान्दक्षेषु अन्यानि वामेषु दधतीं रिभमर्दिनी महिषासुरघातिनीं सरोजस्थितां कमलसंस्थितां वा सुरौजोभवां देवदेहनिर्गततेजःसमुद्भूताम् ॥ ४५ ॥ महासरस्वतीध्यानमाह- घण्टेति ॥ शङ्ख मुसलचक्रबाणान्दक्षेषु घण्टाशूलहलधनूंषि वामेषु ॥ घनान्तेति शरच्चन्द्रप्रभाम् ॥ ४६ ॥ हेमरेतसि वह्नौ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सबिन्द्विति ॥ ॐ नं नन्दजायै नम इत्यादिवक्ष्यमाणा अमी दशीः सबिन्दुनादाद्यर्णाद्यास्ताराद्या नमोऽन्ता यजेत् ॐ ब्रह्माण्यै नम इत्यादि ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ तेष्ववदलषु चर्तुविंशेतिपत्रषु विष्णुमायाद्याः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ अग्नितिथिं प्रतिपदम् ॥ ५९ ॥६०॥ चण्डीस्तवस्य

बटुकश्चापि योगिन्यः पूज्या इन्द्रादिका अपि ॥ एवं सिद्धे मनौ मंत्री भवेत्सौभाग्यभाजनम् ॥ ५७ ॥ मार्कंण्डेयपुराणोक्तं नित्यं चण्डीस्तवं पठन् ॥ पुटितं मूलमंत्रेण जपन्नाप्नोति वांछितम् ॥ ५८ ॥ आश्विनस्य सिते पक्षे आरभ्याग्नितिथिं सुधीः ॥ अष्टम्यन्तं जपेल्लक्षं दशांशं होममाचरेत् ॥ ५९ ॥ प्रत्यहं पूजयेद्देवीं पठेत्सप्तशतीमपि ॥ विप्रानाराध्य मंत्री स्वमिष्टार्थं लभते ऽचिरात् ॥ ६० ॥ सप्तशत्याश्चरित्रे तु प्रथमे पद्मभूर्मुनिः ॥ छन्दो गायत्रमुदितं महाकाली तु देवता ॥ ६१ ॥ वाग्बीजं पावक स्तत्त्वं धर्मार्थे विनियोजनम् ॥ मध्यमेऽथ चरित्रे तु मुनिर्विष्णुरुदाहृतः ॥६२॥ उष्णिक् छंदो महालक्ष्मीर्देवता बीजमद्रिजा ॥ वायुस्तत्त्वं धनप्राप्त्यै विनियोग उदाहृतः ॥ ६३ ॥ उत्तरस्य चरित्रस्य ऋषिः शंकर ईरितः ॥ त्रिष्टुप् छंदो देवताऽस्य प्रोक्ता महासरस्वती ॥६४॥ कामो बीजं रतिस्तत्त्वं कामाप्त्यै विनियोजनम् ॥ एवं संस्मृत्य ऋष्यादीन्ध्यात्वा पूर्वोक्तमार्गतः ॥६५॥ सार्थस्मृतिं पठेच्चण्डीस्तवं स्पष्टपदाक्षरम् ॥ समाप्तौ तु महालक्ष्मीं ध्यात्वा कृत्वा षडंगकम् ॥ ६६ ॥ जपेदष्टशतं मूलं देवतायै निवेदयेत् ॥ एवं यः कुरुते स्तोत्रं नावसीदति जातुचित् ॥ ६७ ॥ चंडिकां प्रभजन्मर्त्यो धनैर्धान्यैर्यशश्चयैः ॥ पुत्रैः पौत्रै रुचाऽऽरोग्यैर्युवतो जीवेच्छतं समाः ॥ ६८ ॥ अथ सप्तशतीपाठे कवचार्गलाकीलकानामावश्यकतामाह ॥ उक्तं च देवीमाहात्म्ये ॥ पुरा दशमुखो ब्रह्मन्दीव्यमानो विहायसि ॥ गच्छन्नत्यूर्ध्वमार्गः संसर्वदिक्षु विचारयन् ॥ ६९ ॥

मार्कण्डेयपुराणोक्तस्य ऋष्यादीनाह--सप्तशत्या इति ॥ प्रथमचरित्रे मधुकैट भवधः ॥६१॥ मध्यमे महिषासुरवधः ॥ ६२ ॥ अद्रिजा ह्रीं ॥ ६३ ॥ उत्तरे शुम्भनिशुम्भवधः ॥६४॥ कामः क्लीं ॥६५॥ सार्थस्मृतिमर्थस्मरण पूर्वकम् ॥६६॥ ६७ ॥ यशश्चयैः कीर्तिसमूहैः ॥ समा वर्षाणि ॥६८॥६९॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

॥७०-७७॥ ईश्वरः शिवः तान् देवान् दुःखितान् समालोक्य प्रथमं कवचं ततः अर्गलां ततः कीलकं ततः सप्तशतीपठनमिति क्रमेण महातन्त्ररूपं दुर्गापाठं मुपादिशत् ॥ महातन्त्रलक्षणमग्रे वक्ष्यति ॥७८॥७९॥८०॥ताभ्यां सुरथवैश्याभ्यां जयत्वं देवि चामुण्डे इत्यादिपद्यं जयन्ती मङ्गलाकृष्णा

भुवि सप्तशतीमालापारायणपरं द्विजम् ॥ अवतीर्य समालोक्य किमिदं पठ्यते द्विज ॥ ७० ॥ इत्युक्तः स द्विजोऽप्याह देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ जप्यते सर्वलोकेषु मम छत्रं भवत्विति ॥ ७१ ॥ इत्याकर्ण्य त्रिलोकेशोऽहं ते छत्रं ददामि भोः ॥ इत्युक्त्वा प्रददौ छत्रं संतुष्टस्तु द्विजोत्तमः ॥ ७२ ॥ स्वपुस्तकं दशास्याय प्रददौ भक्तिदायकः ॥ आदाय रावणो दृष्ट्वा ॥ शाकंभर्या मनुस्तवम् ॥ ७३ ॥ भीमायास्तदृषिस्तोत्रमपाकृष्याविशेषितम् ॥ देयब्रह्मस्तुतियुतं चरित्रत्रितयान्वितम् ॥७४ ॥ संपूज्य पुस्तकं पाठाद्देवास्तु निधनं गताः ॥ अरुणाख्यस्ततो दैत्यस्त्रैलोक्यं चातिपीडयन् ॥ ७५ ॥ ततो देवा ऋषिस्तोत्रं विना सप्तशतीमनुम् ॥ जपंतस्तु महत्कालं महादेवीमुपासिषुः ॥ ७६ ॥ अप्रसन्ना महादेवी देवा ब्रह्माणमाययुः ॥ शनैर्विष्णुं शनैः शंभुं दृष्ट्वा सर्वे व्यबोधयन् ॥७७॥ ईश्वरस्तान्समालोक्य कवचार्गलकीलकैः ॥ सह सप्तशतीमालामहातंत्रमुपादिशत् ॥७८॥ ततः प्रसन्ना श्रीदेवी भ्रामरं रूपमाश्रिता ॥ अनेकभ्रमरैः सार्धमरुणाख्यं महासुरम् ॥७९॥ हत्वा ब्रह्मादिदेवानां भीतानाम भयं ददौ ॥ ब्रह्मा मृकण्डपुत्राय सुरथाय समाधये ॥ ८० ॥ मार्कण्डेयाय ताभ्यां च प्रसन्ना जगदंबिका ॥ जय त्वं च जयंती च श्लोकद्वितयमर्गलम् ॥ ८१ ॥ मधुकैटभविद्रावि विधात्रीति नवार्णकम् ॥ कीलकं शंकरप्रोक्तं कवचं ब्रह्मणा कृतम् ॥ ८२ ॥ अर्गलं विष्णुना प्रोक्तमेतत्त्रितयमुत्तमम् ॥ अर्गलाकीलकं चादौ पठित्वा कवचं पठेत् ॥ ८३ ॥ जपेत्सप्तशतीं चण्डीं क्रम एष शिवोदितः ॥ अर्गला दुरितं हन्ति कीलकं फलदं भवेत् ॥ ८४ ॥ कवचं रक्षयेन्नित्यं तस्मादेतत्त्रयं पठेत् ॥ अर्गला हृदये यस्य तस्मादर्गलवानसौ ॥ ८५ ॥ भविष्यति न संदेहो नान्यथा शिवभाषितम् ॥ कीलकं हृदये यस्य स कीलितमनोरथः ॥ ८६ ॥ कवचं हृदये यस्य स वज्रकवचः प्रभुः ॥ अथ दुर्गापाठे संपुटनिर्णयः महामाया मनोरादौ चरितस्यादितोऽपि वा ॥ ८७ ॥

इति पद्यं च अर्गलान्तर्गतम् अर्गलात्मकं पद्यद्वयं बोध्यम् ॥ ८१ ॥ मधुकैटभादिधूम्राक्षमर्दिनीपर्यन्तं नवार्णकं ज्ञेयं शेषं स्तुतिः ॥ ८२ ॥ कवचादित्रितयपठने मतान्तरमाह--अर्गला इति ॥ ८३ ॥ अत्र मूलं मृग्यमिति नागोजीभट्टः ॥ त्रयाणां पठने फलमाह अर्गलेति ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ नवार्णसंपुटे मतचतुष्टयमाह ॥ ८७ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ चरितार्धमिति ॥ एतत्पद्यं दुर्गारहस्येऽपि प्रतिपादितम् ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ अथ दुर्गापाठकरणे नव भेदाः रहस्योक्ता इति ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ एतन्नव भेदज्ञाने फलमाह --एतानीति ॥ ९६ ॥ पूर्वोक्तषड्विधानां स्वरूपं तत्र चण्डीपाठ एव लोमविलोमादिमार्गेण स्वरूपमुदितम्

प्रत्यध्यायसमारम्भे तत्समाप्तौ जपेत्तथा ॥ प्रतिश्लोकस्यादितो यत्तदन्ते वा पठेन्नरः ॥ ८८ ॥ नवार्णमनुना सार्धं सम्पुटोऽय मुदाहृतः ॥ सकामैः संपुटो जाप्यो निष्कामैः संपुटं विना ॥ ८९ ॥ अथानेकविधनिर्णयः ॥ चारितं मध्यमं चैव जपेद्वा चण्डिका द्वयम् ॥ एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह ॥ ९० ॥ चरितार्धं तु न जपेज्जपंश्छिद्रमवाप्नुयात् ॥ यावन्न पूर्यतेऽध्याय स्तावन्न विरमेत्सुधीः ॥ ९१ ॥ यदि प्रमादादध्याये विरामो भवति प्रिये ॥ पुनरध्यायमारभ्य पठेत्सर्वं मुहुर्मुहुः ॥ ९२ ॥ अनु क्रमात्पठेदेवं शिरःकम्पादिकं त्यजेत् ॥ पठ्यमानाध्यायमध्ये विरामो यदि वा भवेत्॥पुनरध्यायमारभ्य पठेत्पर्वमुदारधीः॥९३॥ अथ दुर्गापाठस्य नव नामानि तल्लक्षणानि च ॥ रहस्योक्तानि नामानि ब्रह्मोक्तानि वदामि ते ॥ महाविद्या महातन्त्री चण्डी सप्तशतीति च ॥ ९४ ॥ मृतसंजीविनी नाम पञ्चमं परिकीर्तितम् ॥ षष्ठं चैव महा चण्डी सप्तमं रूपदीपिका ॥ ९५ ॥ अष्टमं तु चतुःषष्टियोगिनी नवमी परा ॥ एतानि योऽभिजानाति नामानि नृपनन्दन ॥९६॥ जपं विना भवेत्तस्य चण्डिका वरदा सदा ॥ पूर्वोक्तषड्विधानां तु स्वरूपं तत्र चोदितम् ॥ ९७ ॥ आद्यद्वितीयतृतीयचरितानुक्रमेण च ॥ महाविद्या सप्तशती सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥ ९८ ॥ आद्यान्तमध्यचरितं महातन्त्रमितीरितम् ॥ आदिमध्यान्तचारित्रक्रमाच्चण्डीमहामनुः ॥ ९९ ॥ मध्यमाद्यन्त चरित्रक्रमात्सप्तशतीति च ॥ अन्त्यादिमध्यचारित्रान्मृतसंजीवनी स्मृता ॥ १०० ॥ अन्त्यमध्यादिचारित्रान्महाचण्डीति कथ्यते ॥ रूपं देहीति संयोज्य नवार्णमनुना सह ॥ १०१ ॥ संपुटत्वेन संयोज्य प्रतिश्लोकं जपेत्तथा ॥ रूपचण्डीति सा प्रोक्ता सर्वाभीष्टफलप्रदा ॥ १०२ ॥ योगिनीनां चतुःषष्टियोगात्सप्तशतीमनोः ॥ चतुःषष्टीति सा प्रोक्ता योगसिद्धिप्रदायिनी ॥१०३॥

॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ रूपंदेहीति अर्गलोक्तमन्त्रं नवार्णमन्त्रेण सह ॥ १०१ ॥ संपुटत्वेन चण्डीमन्त्रेण संयोज्य ॥ १०२ ॥ चतुःषष्टियोगिनी

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

स्तोत्रमन्त्रेण प्रतिश्लोकं संपुटितेन योगिनीचण्डी ॥ १०३ ॥ पराबीजम् सौरिति दन्त्यसकारौकारविसर्गयोगेन ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ यथावत्कथयामि त इत्यत्र प्रत्यहं पठतां नृणामिति पाठः कुत्रचिद्दृश्यते ॥ १०८ ॥ मनून् उक्त मन्वन्तरं ह्रीमित्यनत डामरतन्त्रोक्तनवार्णविधौ

पराबीजसमायोगात्परा चण्डीति कथ्यते ॥ एवं नवानां भेदानां नामानि च पृथक् पृथक् ॥ १०४ ॥ प्रत्येकं तैस्त्रिभिर्बीजैर्जयादिनवनामभिः ॥ जयां च विजयां भद्रां भद्रकालीमनन्तरम् ॥ १०५ ॥ सुमुखीं दुर्मुखीं प्रज्ञां पश्चाद्व्याघ्रमुखीं तथा ॥ अथ सिंहमुखीं दुर्गां नवदुर्गां विदुर्बुधाः ॥१०६॥ एवं ज्ञात्वा सप्तशतीं यो जपेत्सुसमाहितः ॥ तस्य देवी सुप्रसन्ना सर्वाभीष्टप्रदा भवेत ॥ १०७ ॥ अथ कामनापरत्वेन चण्डीपाठसंख्या ॥ वाराहीतन्त्रे ॥ शिव उवाच ॥ चण्डीपाठफलं देवि शृणुष्व गदतो मम ॥ एकावृत्त्यादिपाठानां यथावत्कथयामि ते ॥ १०८ ॥ संकल्पपूर्वं संपूज्य न्यस्याङ्गेषु मनून्सकृत् ॥ पश्चाद्बलिप्रदानेन फलमाप्नोति मानवः ॥ १०९ ॥ उपसर्गोपशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तिं पठेन्नरः ॥ गृहोपशान्तौ कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वगनने ॥११०॥ महाभये समुत्पन्ने सप्तवृत्तिमुदीरयेत् ॥ नवावृत्तौ भवेच्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत ॥ १११ ॥ राजवश्याय भूत्यै च रुद्रावृत्तिमुदीरयेत ॥ अर्कावृत्त्या काम्यसिद्धिर्वैरिहानिश्च जायते ॥ ११२ ॥ मन्वावृत्त्या रिपुर्वश्यस्तथा स्त्री वशतामियात् ॥ सौख्यं पञ्चदशावृत्त्या श्रियमाप्नोति मानवः ॥ ११३ ॥ कल्पावृत्त्या पुत्रपौत्रधनधान्यागमं विदुः ॥ राजभीतिविनाशाय विपक्षोच्चाटनाय च ॥ ११४ ॥ कुर्यात्सप्तदशावृत्तिं तथाऽष्टादशकं प्रिये ॥ महाऋणविमोक्षाय विंशावृत्तिं पठेन्नरः ॥ ११५ ॥ पञ्चविंशावर्तनाद्धि भवेद्बन्धविमोक्षणम् ॥ संकटे समनुप्राप्ते दुश्चिकित्स्यामये सदा ॥ ११६ ॥ जातिध्वंसे कुलोच्छेदे आयुषो नाशमागते ॥ वैरिवृद्धौ व्याधिवृद्धौ धननाशे तथा क्षये ॥ ११७ ॥ तथैव त्रिविधोत्पाते तथा चैवातिपातके ॥ कुर्याद्यत्नाच्छतावृत्तिं ततः संपद्यते शुभम् ॥ ॥ ११८ ॥ विपदस्तस्य नश्यन्ति अन्ते याति परां गतिम् ॥ जयवृद्धौ शतावृत्त्या राज्यवृद्धौ सदा पठेत् ॥ ११९ ॥

कथितः श्लोकन्यासो वा ॥ १०९ ॥ ११० ॥ महाभये महोत्पातादिजे भये ॥ १११ ॥ रुद्रा एकादश अर्काः द्वादश ॥ ११२ ॥ मनुश्चतुर्दश रिपुः शत्रुः ॥ ११३ ॥ कल्पः षोडश विपक्षोच्चाटनाय वैरिपरविरोधाय ॥ ११४--११९ ॥

Chinmа, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

॥ १२० ॥ १२१ ॥१२२१२३॥१२४॥ अत्र अष्टमृदमिति वा पाठः ॥१२५॥ धर्मकामः क्षिपेद्रस्म धनकामस्तु मौक्तिकमिति वा पाठः। कामार्थी रोचनां क्षिपेदिति पाठश्च ॥ १२६ ॥ मोक्षकामो न्यसेद्वस्त्रमिति पाठः। उच्चाटनार्थं व्याघ्रीं चेति पाठः। व्याघ्रो भाषया करेसवेत्युच्यते ॥ १२७ ॥

मनसा चिन्तितं देवि सिद्धिरष्टोत्तराच्छतात् शताश्वमेधयज्ञानां फलमाप्नोति सुव्रते ॥ १२० ॥ सहस्रावर्तनाल्लक्ष्मीरावृणोति स्वयं स्थिरा ॥ भुक्त्वा कामान्यथाकामं नरो मोक्षमवाप्नुयात् ॥१२१॥ यथाऽश्वमेधः क्रतुषु देवानां च यथा हरिः ॥ स्तवाना मपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः ॥ १२२ ॥ नातः परतरं स्तोत्रं किंचिदस्ति वरानने ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदं पुण्यं पावनानां च पावनम् ॥ १२३ ॥ अथवा बहुनोक्तेन किमन्येन वरानने ॥ पञ्चाशदावृत्तिपाठात्सर्वाः सिद्ध्यन्ति सिद्धयः ॥ १२४ ॥ अथ कामना परत्वेन कलशमध्ये निक्षेपपदार्थाः ॥ संशोध्य भूमिं संस्थाप्य कलशं तीर्थवारिणा ॥ पूरयित्वा वाजिगज शालादिभ्यो मृदस्तथा ॥ १२५ ॥ धनकामो न्यसेत्स्वर्णं धान्यकामस्तु मौक्तिकम् ॥ श्रीकामः कमलं न्यस्य कामार्थी दमनं न्यसेत ॥ १२६ ॥ मोक्षकामो न्यसेद्वत्तं जयकामोऽपराजिताम् ॥ उच्चाटनार्थं हिङ्गुलं वश्यार्थं शिखिमूलिकाम् ॥ १२७ ॥ मारणाय मरीचं तु केतकीं मोहनाय च ॥ आकर्षणार्थं धत्तूरं प्रक्षिपेत्कलशोपरि ॥ १२८ ॥ जपेन्मन्त्र महेशानि शृणुष्व गदतो मम ॥ क्षिप्तं यत्कलशे हस्ते तदेमं प्रजपेन्मनुम् ॥ १२९ ॥ नकुलीशं वामकर्णयुतमर्धेन्दुमस्तकम् ॥ द्विर्वाग्भवं समुच्चार्य मायाबीजमथोच्चरेत् ॥ ॥ १३० ॥ चामुण्डायै समुच्चार्य द्विठान्तोऽयमुदीरितः ॥ जपेद्द्वादशलक्षं तु स्नानं तेनैव वारिणा ॥ १३१ ॥ एवं शतावृत्तिफलं मयोक्तं ते विधिप्रिये ॥ आधारे स्थापयित्वा तु पुस्तकं वाचयेत्ततः ॥ १३२ ॥ हस्ते संस्थापनाद्देवी हन्त्यर्धं हि फलं यतः ॥ होमे प्रदीपिते वह्नौ मोक्षार्थी पायसं हुनेत् ॥ १३३ ॥ मारणे मोहने चैव तथैवोच्चाटकर्मणि हुनेन्मांसं त्रिमध्वक्तं मोहने मधुपायसम् ॥ १३४ ॥

॥ १२८ ॥ १२९ ॥ मस्तकमित्यत्र शेखरमिति पाठ ॥१३०॥ मन्त्रप्रकाशकः हूं ऐं ऐं ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा ह्रीमित्यनेन कराङ्गन्यासौ द्वादशलक्षं जपित्वा तेन कलशोदकेन स्नानं कारयेत् ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ मांसमित्यत्र माषमपीति पाठः १३४ ॥

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ अथ कामनापरत्वेन त्रिविधपाठक्रममाह--लक्ष्मीपुत्रकामनायां सृष्टिमार्गः ॥ १३८ ॥ सृष्टिसार्गलक्षणं सावर्णिः सूर्यतनय इत्यारभ्य सावर्णिर्भविता मनुरित्यन्तः पाठ इति सृष्टिक्रमः ॥ अथ स्थितिक्रममाह--जपदिनि पुरा शुम्भेत्यादिनवाध्यायान्पठित्वा

माहने मारणे चैव हुनेद्द्रैः स्तम्भने मातुलफलं वश्ये तु सितसर्षपाः ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थं पूर्वाशाभिमुखो यजेत् ॥ १३५ ॥ दक्षिणामुखः ॥ उच्चाटने उत्तरास्यः पूर्वोक्तमनुना हुनेत् ॥ १३६ ॥ एवं शतावृत्तिफलं मयोक्तं ते विधिप्रिये ॥ एकावृत्त्यादयः पाठाः सर्वेषां सर्वकामदाः ॥ १३७ ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदाः पुण्याः पातकानां च पावनाः ॥ हरगौरीतन्त्रे ॥ श्रीकामः पुत्रकामो वा सृष्टिमार्गक्रमेण तु ॥ १३८ ॥ सावर्णिः सूर्यतनयः सावर्णिर्भविता मनुः ॥ जपेच्छक्रादिमारभ्य शुम्भदैत्यवधावधि ॥ १३९ ॥ आद्यमारभ्य प्रजपेत्पश्चाच्छेषं समापयेत् ॥ शान्त्यादिकामः सर्वत्र स्थितिमार्गक्रमेण तु ॥ १४० ॥ स्थितिपाठः सर्वकामे मुक्तिकामे च संहृतिः ॥ संहारे चान्त्यमारभ्य पश्चादादि समापयेत् ॥ १४१ ॥ पञ्च स्वर्णाः शतावृत्तौ पक्षावृत्तौ तु तत्त्रयम् ॥ पञ्चावृत्तौ स्वर्णमेकं त्रिरावृत्तौ तदर्धकम् ॥ १४२ ॥ एकावृत्तौ पादमेकं दद्याद्वा शक्तितो बुधः ॥ देवीपुराणे ॥ वाचकं पूजयित्वा तु यथाविभवविस्तरैः ॥ १४३ ॥ वाचयित्वा ततो राजा देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ तदन्ते शान्तिरावस्तु जनस्य सनृपस्य च ॥ १४४ ॥अनेन विधिना राजन् यः पठेच्छृणुयादपि ॥ चिन्तयेद्वाचयेद्वाऽपि तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ १४५ ॥ वाजपेयसहस्रस्य अश्वमेधशतस्य च ॥ यत्फलं लभते तात तत्फलं शतधा भवेत् ॥ १४६ ॥

शक्राध्यान्तं पठेदिति स्थितिक्रमः शक्रादिमारभ्येत्यस्यातद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहिणा तदुत्तराध्यायमारभ्येत्यर्थः ॥ शक्रादिपर्यन्तमित्यस्य तदध्यायान्तमित्यर्थः ॥ १३९ ॥ १४० ॥ अथ संहारक्रममाह--मुक्तिकाम इति ॥ एवं देव्या वरं लब्ध्वेत्यादिश्लोकसंहारक्रमेण सावर्णिः सूर्यतनय इति श्लोकान्तं पठनीयमिति संहारक्रमः ॥ संकटे चायं प्रशस्तः ॥ १४१ ॥ चण्डीपाठस्य दक्षिणानियममाह--पञ्च स्वर्णा इति ॥ १४२ ॥ वाचकस्य पूजनमाह- वाचकमिति ॥ १४३--१४६ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

॥१४७ ॥ १४८ ॥ पत्निदमिति ह्रस्व आर्षः ॥ १४९ ॥ लयं मोक्षम् ॥ १५० ॥ पठनीये सूक्ते वैदिक इत्येके ॥ रात्रिसूक्तं दुर्गाप्रथमाध्यायस्थं विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीमिति पञ्चदशश्लोकात्मकं सूक्तं देवीसूक्तं नमो देव्यै महादेव्यै इत्यादिपञ्चमाध्यायस्थं त्रिंशच्छ्लोकात्मकम् इत्यपरे ॥ एतदन्तर्गते एवइति प्रामाणिकाः ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ प्रतिश्लोकामित्यस्य कात्यायनीतन्त्रोक्तमन्त्रविभागेनेति शेषः ॥ समुदाये सूक्तस्य व्यवहारस्य लक्ष्मीतन्त्र

गङ्गातोयाऽभिषेकेण तीर्थैर्मिषपुष्करैः ॥ यत्फलं लभते तात तत्फलादयुताधिकम् ॥ १४७ ॥ ब्रह्महत्यादिपापानां शमनं परमं मतम् ॥ वर्धनं चाथ धर्माणां काममोक्षफलप्रदम् ॥ १४८ ॥ पुत्रदं पत्निदं तात जयदं सौख्यदं परम् ॥ अनेन विधिना वत्स प्राप्नोति श्रवणान्नरः ॥ १४९ ॥ इह कीर्तिं श्रियं ब्राह्मीं परत्र भवती लयम् ॥ तथा मारीचकल्पे ॥ रात्रिसूक्तं जपेदादौ मध्ये सप्तशतीस्तवम् ॥ १५० ॥ प्रान्ते तु जपनीयं वै देवीसूक्तमिति क्रमः ॥ एवं संपुटितं स्तोत्रं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥ १५१ ॥ प्रकारान्तरमपि तन्त्रोक्तम् ॥ कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत्कृष्णचतुर्दशी ॥ वृद्ध्यैकोत्तरया जाप्यं पूर्वं संपुटितं तु तत् ॥१५२॥ एवं देवि मया प्रोक्तः पौरश्चरणिकः क्रमः ॥ तदन्ते हवनं कुर्यात्प्रतिश्लोकं तु पायसै ॥ १५३ ॥ रात्रिसूक्तं प्रतिऋचं तथा देव्याश्च सूक्तकम् ॥ तथा सिद्धिर्भवेन्नूनं नात्र कार्या विचारणा ॥ १५४ ॥ अथ संपुटितहोमे मन्त्रसङ्ख्यानिर्णयः ॥ मन्त्रपुटं बीजपुटं दुर्गास्तोत्रं पठेत्सदा ॥ मन्त्रबीजपुटा दुर्गा कामनासिद्धिदा सदा ॥ १५५ ॥ होमकाले सदा मन्त्रं दुर्गामन्त्रं पृथग्घुनेत् ॥ कामनाबीजसंयोगो दुर्गामन्त्रेण संहुनेत ॥ १५६ ॥ दुर्गास्तवनमन्त्राणां सङ्ख्या सप्तशतं भवेत् ॥ कामनामन्त्रसंख्या च शतं चैव चतुर्दश ॥ १५७ ॥ मध्ये मन्त्रान्सप्तशतं होमकाले तु योजयेत् ॥ पाठे मन्त्रपुटं वाच्यं होमे मन्त्राः पृथक् पृथक् ॥ १५८ ॥ होमसङ्ख्या च मन्त्राणां शतं वै चैकविंशतिः ॥ पाठे बीजपुटं वाच्यं होमे बीजपुटं हुनेत् ॥ १५९ ॥ अथ कवचाहुतिनिषेधः ॥ तन्त्रान्तरे ॥ चण्डीस्तवे प्रतिश्लोकमेकाहुतिरिहेष्यते ॥ रक्षाकवचगैर्मन्त्रैर्होमं तत्र न कारयेत् ॥ १६० ॥

कृतत्वात्तदवयवश्लोका एवात्र ऋच इति बोध्यम् ॥ १५३ ॥ प्रतिऋचमित्य प्युक्तशेषो बोध्यः ॥१५४॥ मन्त्रपुटं श्लोकार्धलौकिकवैदिकादिमन्त्रपुटं बीजपुटं ऐं ह्रीं क्लीं इत्यादिना संपुटम् ॥ १५५ ॥ बीजसंयोगः दुर्गामन्त्रेण संहुनत ॥ १५६ ॥ मन्त्रसंयोगे पृथक् होमः तेषां संख्या चतुर्दशशतम्

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ अथ कवचाहुतिनिर्णयोऽभिधीयते--चण्डीस्तव इति ॥ प्रतिश्लोक प्रतिमन्त्रम् ॥ तत्र चण्डीस्तवमध्ये रक्षाकवचगैर्मन्त्रैः शूलेन पाहि नो देवीत्यादिचतुर्मन्त्रैर्होमं न कारयेत ॥ अत्र विशेषः नीलकण्ठकृतरहस्यविवरणे ॥ प्रतिश्लोकमिति प्रतिमन्त्रमित्यर्थः ॥ ते च मन्त्राः सप्तशतीसंबधिनः कात्यायनीतन्त्रप्रदर्शिताः सप्तशतसंख्याकाः मार्कण्डेय उवाच स्वाहा इत्यादिकाः ॥ अत्र केचित् कवचादित्रयस्य रहस्यत्रयस्य च प्रतिश्लोकं होममनुतिष्ठन्ति तत्र कवचांशे होमो न युक्तः तन्त्रान्तरे निषेधात् ॥ चण्डीस्तवे इत्यादिना १ मौर्ख्यात्कवचगैरि

मौर्ख्यात्कवचगैर्मन्त्रैः प्रतिश्लोकं जुहोति यः ॥ स्याद्देहपतनं तस्य नरकं प्रतिपद्यते ॥ १६१ ॥ अन्धकाख्यो महादैत्यो दुर्गाहोमपरायणः ॥ कवचाहुतिजातपापान्महेशेन निपातितः ॥ १६२ ॥ अत्र मतान्तरं स्कान्दे हिंगुलाद्रिखण्डे उत्तरसंहितायाम् ॥ चण्डीपाठेन होतव्या कृत्वा तु कवचं पुरा ॥ ततश्चाप्यर्गलां चैव ततो वै कीलकं भवेत् ॥ १६३ ॥ ततः सप्तशतीं चैव रहस्यं पल्लवं तथा ॥ चण्डीपाठे तथा होमे क्रम उक्तो मनीषिभिः ॥ १६४ ॥ अथ सप्तशतीपाठेऽङ्गषट्कस्य मुख्यतां तदपठने दोषं चाह ॥ अङ्गहीनो यथा देही सर्वकर्मसु न क्षमः ॥ अङ्गषट्कविहीना तु तथा सप्तशतीस्तुतिः ॥ १६५ ॥ तस्मादेतत्पठित्वैव जपेत्सप्तशतीं पराम् ॥ अन्यथा शापमाप्नोति हानिं चैव पदे पदे ॥ १६६ ॥ रावणाद्याः स्तोत्रमेतदङ्गहीनं सिषेविरे ॥ हता रामेण ते यस्मान्नाङ्गहीनं पठेत्तत ॥ १६७ ॥ अङ्गषट्कं विजानीयात्कवचार्गलकीलकैः ॥ रहस्यत्रितयेनैव सहितैर्मनुजेश्वरः ॥ १६८ ॥ अथ रात्रिसूक्त नवार्णमन्त्रयोः संपुटत्वे नर्णयः ॥ ग्रन्थकर्ता नवार्णकमनुं जप्त्वा रात्रिसूक्तं ततः स्तवम् ॥ देवीसूक्त नवार्णं च पठेदिति क्रमोऽस्ति हि ॥ १६९ ॥

त्यादिना २ अन्धकश्चेत्यादिना ३ इति एतावदशक्तस्य पक्षान्तरमाह--जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वेति ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ मतान्तर माह- चण्डी पाठेनेति तृतीयापदच्छेदः ॥ शेषं स्पष्टम ॥ चण्डीपाठे तथा होमे च षडङ्गैः सह क्रम उक्त इति द्वितीयेनान्वयः ॥ अत्र नागोजीभट्टः ॥ अन्धकश्च महादैत्यो दुर्गाहोमपरायणः ॥ कवचाहुतिमात्रेण महेशेन निपातितः ॥ इति ॥ तत्र कवचं शूलेन पाहीत्यादिश्लोकचतुष्टयं तदाहुतिचतुष्टयं महालक्ष्म्यै स्वाहेत्येवेत्यभियुक्ताः ॥ यत्तु चण्डीपाठेन होतव्यमित्यादि क्रम उक्तो मनीषिभिरिति प्रतिश्लोकं च जुहुयादिति रुद्रयामलोक्तं तत्र

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मूल मृग्य बह्वसंमतत्वात्॥तत्राऽनुपलम्भाच्च ॥१६३॥१६४॥१६५॥१६६॥१६७॥१६८॥ रात्रिसूक्तनवार्णदेवीसूक्तानां संपुटनिर्णयोऽभिधीयते॥नवार्णः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इति । तत्र पाठक्रमः । कवचमर्गलां कीलकं तत ऋष्यादिन्यासपूर्वकमष्टोत्तरशतं नवार्णमन्त्रजपः । ततो रात्रिसूक्तं ततः पाठः कर्तव्यः । रात्रिसूक्तानन्तरं नवार्णजपमाह तदसत् " रात्रिसूक्तं जपेदादौ मध्ये सप्तशतीस्तवम् ॥ प्रान्ते तु पठनीयं वै देवीसूक्तमिति क्रमः ॥ एवं संपुटितं स्तोत्रम् " इति वचनात् पुटितमध्ये अन्यमन्त्रस्य प्रवेशे विरुद्धत्वामिति ॥ १६९ ॥ पक्षान्तरमाह नीलकण्ठव्याख्यापाठक्रम. कवचमर्गलां कीलकं ततो रात्रिसूक्तं तत ऋष्यादिन्यासपूर्वकमष्टोत्तरशतसहस्रं वा नवार्णमन्त्रजपः कर्तव्यः । नवार्णमन्त्रजपोत्तरं रात्रिसूक्तपाठमाह तदसत् पुटितं मूलमन्त्रेणेति वचनात् पुटितमध्ये अन्यमन्त्रप्रवेशस्य विरुद्धत्वात् शतमादौ शतं चान्ते इति डामरतन्त्रविरोधाच्च । तत्र

रात्रिसूक्तं नवार्णं च ततः सप्तशतीस्तवम् ॥ नवार्णं देवीसूक्तं च पठेदित्यपि चोचिरे ॥ १७० ॥ यतस्तयोः संपुटत्वे प्रमाणं जागरूककम् ॥ तस्माद्द्वयोर्व्यवस्था च देशाचारानुसारतः ॥ १७१ ॥ अथ दाक्षिणात्यसंप्रदाये त्वेवं पाठक्रमः ॥ उक्तं च नागोजीभट्टटीकायाम् ॥ वेदादिर्वाग्भवं चैव माया कामं तथैव च ॥ १७२ ॥ पृथ्वीरेकं वामनेत्रं नादबिन्दुविभूषितम् ॥ माया कामं नमः पश्चान्मूलमन्त्र उदाहृतः ॥ १७३ ॥ लक्षं जपेन्मूलमन्त्रं सर्वकामार्थसिद्धये ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं क्लीं नमः ॥ शत मादौ शतं चान्ते जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम् ॥१७४॥ चण्डीसप्तशतीमध्ये संपुटोऽयमुदाहृतः ॥ सकामैः संपुटो जाप्यो निष्कामैः संपुटं विना ॥ १७५ ॥ सप्तशतीस्तोत्रस्य सुमेधा ऋषिः गायत्र्यनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि महाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः ऐं ह्रीं क्लीं बीजानि क्षौं शक्तिः इष्टसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम् ॥ या चण्डी मधुकैटभ प्रदलिनी या माहिषोन्मूलिनी या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथिनी या रक्तबीजाशिनी ॥ शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलिनी या सिद्ध लक्ष्मीः परा सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥ १७६ ॥

रात्रिसूक्तदेवीसूक्ते द्विविधे वेदोक्ते तन्त्रोक्ते वैदिकानां तु प्रथमे एव मुख्ये अन्येषां तान्त्रिकाणां तु यथेच्छं विकल्पः । तत्र वैदिकं रात्रिसूक्तं रात्री व्यख्यदा यतीत्याद्यष्टर्चमृग्वेदे प्रसिद्धं तांत्रिकं तु विश्वेश्वरीमित्यादिसप्तशत्यां पठितम् । देवीसूक्तमपि अहं रुद्रेभिरित्याद्यष्टर्चमृग्वेदे प्रसिद्धं तान्त्रिकं तु नमो देव्यै इत्यादि सप्तशत्यां प्रसिद्धमिति विवेकः ॥ १७० ॥ यतः हेतोः तयोः पक्षयोः ॥ १७१ ॥ अथ नवार्णमन्त्रप्रकारान्तरमाह- वेदादिरिति ॥ अत्रापि मूलमन्त्रद्वये देशाचारतो व्यवस्था ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ लिखेदिति ॥ तत्र मध्यबीजे महालक्ष्मीं तद्दक्षिणे

अथैतत्स्तोत्रपाठे डामरकल्पोक्तनवार्णमन्त्रसंपुटीकरणप्रयोगविधिः ॥ तत्रादौ तदुद्धारः ॥ ऐं बीजमादीन्दुसमानदीप्तिं ह्रीं सूर्यतेजोद्युतिमद्द्वितीयम् ॥ क्लीं मूर्तवैश्वानरतुल्यरूपं तृतीयमानन्त्यसुखाय चिन्त्यम् ॥ १७७ ॥ चा शुद्धजाम्बूनदकान्ति तुर्यं मुं पञ्चमं रक्ततरं प्रकल्प्यम् ॥ डा षट्कमुग्रार्तिहरं सुनीलं य सप्तमं कृष्णतरं रिपुघ्नम् ॥ १७८ ॥ वि पाण्डुरं त्वष्टममादिसिद्धं च्चे धूम्रवर्णं नवमं विशालम् ॥ १७९ ॥ नाभिमात्रे जले स्थित्वा सहस्रं प्रजपेद्यदि ॥ जायते कविताशक्तिरयुतैर्बन्धमोक्षणम् ॥ १८० ॥ अस्मिन्नवाक्षरे मन्त्रे महालक्ष्मीर्व्यवस्थिता ॥ तस्मात्सुसिद्धः सर्वेषां सर्वदिक्षु प्रदीपकः ॥ १८१ मन्त्राणां पल्लवो वासो मन्त्राणां प्रणवः शिरः ॥ शिरःपल्लवसंयुक्तो मन्त्रः कामदुघो भवेत् ॥ १८२ ॥ वश्याकर्षण होमेषु स्वाहान्तः सिद्धिदायकः ॥ वौषट्पल्लवसंयुक्तो मन्त्रः पुष्ट्यादिसाधकः ॥ १८३ ॥ हुंकारपल्लवोपेतो मारणे ब्राह्मणं विना ॥ यन्त्रभञ्जनकार्येषु सुघोरभयनाशने ॥ १८४ ॥ वषडन्तः प्रकल्प्यस्तु ग्रहबाधाविनाशकः ॥ उच्चाटने तु संप्रोक्तो मन्त्रः फट्पल्लवान्वितः ॥ १८५ ॥ न्यासहीनो भवेन्मूको मृतः स्याच्छिरसा विना ॥ अपल्लवस्तु नग्नः स्यात्सव्यबीजस्तु कीलितः ॥ १८६ ॥ देवच्छन्दार्षिहीनो यो मन्त्रः स तु भुजंगमः ॥ लिखेदष्टदलं पद्मं कुङ्कुमागरुचन्दनैः ॥ १८७ ॥ पद्ममध्ये लिखेच्चक्रं षट्कोणं चण्डिकामयम् ॥ षट्कोणचक्रमध्यस्थमाद्यं बीजत्रयं न्यसेत् ॥ १८८ ॥ अथ शारदातिलके अष्टाक्षर मन्त्रविधानम् ॥ ततो दुर्गामनुं वक्ष्ये दृष्टादृष्टफलप्रदम् ॥ माया त्रिकर्णा बिन्द्वाढ्यो भूयोऽसौ सर्गवान् भवेत् ॥ १८९ ॥

महाकालीं वामे सरस्वतीं पूर्वादिषट्सु कोणेषु बीजान्यन्यानि विन्यसेदिति पूजायन्त्रम् ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पश्चान्तकः प्रतिष्ठावान्मारुतो भौतिकासनः ॥ तारादिर्हृदयान्तोऽयं मन्त्रो वस्वक्षरात्मकः ॥ १९० ॥ ऋषीश्च नारदश्छन्दो गायत्रं देवता मनोः ॥ दुर्गा समीरिता सद्भिर्दुरितौघनिवारिणी ॥ १९१ ॥ नमस्कारवियुक्तेन मूलमन्त्रेण साधकैः ॥ ह्रीमाद्यैः सह कुर्वीत षडङ्गानि यथाविधि ॥ १९२ ॥ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः शङ्खं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ॥ आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीक्वणन्नूपुरा दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ॥१९३॥ वसुलक्षं जपेन्मन्त्रं तिलैर्मधुर लोडितैः ॥ जुहुयाद्वा पायसेन सहस्रं विजितेन्द्रियः ॥१९४॥ पीठमित्थं यजेत्सम्यङ् नवशक्तिसमन्वितम् ॥ प्रभा माया जया सूक्ष्मा विशुद्धा नन्दिनी पुनः ॥ १९५ ॥ सुप्रभा विजया सर्वसिद्धिदा नवशक्तयः ॥ आभिर्ह्रस्वत्रयक्लीबरहितैः पूजयेदिमाः ॥१९६॥ प्रण वानन्तरं वज्रनखदंष्ट्रायुधाय च ॥ महासिंहाय वर्मास्त्रं नतिः सिंहमनुर्मतः ॥१९७॥ दद्यादासनमेतेन मूर्तिं मूलेन कल्पयेत् ॥ तस्यां संपूजयेन्मूर्तौ देवीमावाह्य मन्त्रवित् ॥ १९८ ॥ अङ्गावृतिं पुराऽभ्यर्च्य शक्तीः पत्रेषु पूजयेत् ॥ जया च विजयाकीर्तिप्रीतयः स्वप्रभा पुनः ॥ १९९ ॥ श्रद्धा मेधा श्रुतिः प्रोक्ता स्वनामाक्षरपूर्वकाः ॥ पत्राग्रेष्वर्चयेदष्ट चायुधानि यथाक्रमम् ॥ २०० ॥ शङ्खं चक्रं गदां खड्गं पाशांकुशशरान्धनुः ॥ लोकेश्वरास्ततः पूज्यास्तेषामस्त्राण्यनन्तरम् ॥२०१॥ इत्थं जपादिभिर्मन्त्री मन्त्रसिद्धेर्विधान वित् ॥ कुर्यात्प्रयोगानेतेन मनुना स्वमनीषितान् ॥ २०२ ॥ प्रतिष्ठाप्य विधानेन कलशान्नव शोभनान् ॥ रत्नहेमादिसंयुक्तान् पदेषु नवसु स्थितान् ॥ २०३ ॥ मध्ये संपूजयेद्देवीमितरेषु जयादिकाः ॥ संपूज्य गन्धपुष्पाद्यैरभिषिञ्चेन्नराधिपम् ॥ २०४ ॥ राजानो घ्नन्ति वै शत्रून्साधको विजयश्रियम् ॥ प्राप्नोति रोगी दीर्घायुः सर्वव्याधिविवर्जितः ॥ २०५ ॥ वन्ध्याऽभिषिक्ता विधिना लभते तनयं वरम् ॥ मन्त्रेणानेन संजप्तमाज्यं क्षुद्रग्रहापहम् ॥ २०६ ॥ गर्भिणीनां विशेषेण जप्तं भस्मादिकं तथा ॥ मध्ये तारे बीजमन्तस्थसाध्यं पत्रेष्वष्टौ मन्त्रवर्णान्विलिख्य ॥ त्रिष्टुब्बीजं वेष्टितं मातृवर्णैर्यन्त्रं दौर्गं भूपुरस्थं विदध्यात् ॥२०७॥ क्षुद्रभूतमहारोगचोरसर्पनिवारणम् ॥ विजयश्रीप्रदं पुंसां गर्भिणीनां सुतप्रदम् ॥ २०८ ॥ अथ दुर्गेस्मृतामन्त्रप्रयोगः ॥ दुर्गे

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

स्मृता इति मन्त्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः उष्णिक् छन्दः श्रीमहामाया देवता शाकंभरी शक्तिः दुर्गा बीजं श्रीं वायुस्तत्त्वं मम चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगः ॥ अथ न्यासः ॥ दुर्गे स्मृता० अंगुष्ठयोः हृदये ॥ स्वस्थैः स्मृता० तर्जन्योः शिरसे स्वाहा ॥ यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिम मध्यमयोः शिखायै वषट् ॥ पवमानवितज्जहि अनामिकयोः कवचाय हुम् ॥ दारिद्र्य० कनिष्ठिकयोः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ सर्वोपकार० करतलकरपृष्ठयोः अस्त्राय फट् ॥ अथ ध्यानम् ॥ केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥ २०९ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य योनिमुद्रया नत्वा ॥ अथ मन्त्रः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ॥ पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीम् ॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥ यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह ॥ पवमानवितज्जहि ॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ॥ पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ महत्कार्ये लक्षमयुतं सहस्रमष्टोत्तरशतं जपित्वा सकलकार्यसिद्धिर्भवति ॥ दशांशक्षीराज्यहवनम् ॥ दशांशतर्पणमार्जनसुवासिनीब्राह्मणभोजनानि ॥ नवार्णमन्त्रोद्धारः ॥ अथ मनुः ॥ नवार्णमन्त्रमालां चामुण्डां त्रिसुरात्मिकाम् ॥ ह्रीं क्लींमैमों बीजरूपां वन्दे देवीं श्रियं पराम् ॥ २१० ॥ अथ यन्त्रोद्धारः ॥ बिन्दुत्रिकोणषट्कोणं वसुकोणं ततः परम् ॥ चतुरस्रं चतुर्द्वारं नवार्णं यन्त्रमुत्तमम् ॥ २११ ॥ वषट् वश्ये फट् उच्चाटे हुं स्तम्भे खे च मारणे ॥ स्वाहा तुष्ट्यै ठः ठः पुष्ट्यै नमः सर्वार्थसाधने ॥ इति प्रकारः गुरुमुखादवगन्तव्यः ॥ इति षट्प्र० ॥ २१२ ॥ अथ दुर्गानवार्णषट्प्रयोगविधानमाह प्रयोगतन्त्रे ॥ वषड्वश्ये फडुच्चाटे हुं द्वेषे खे च मारणे ॥ ठः स्तम्भे वौषडाकर्षे नमः संपत्तिहेतवे ॥ २१३ ॥ स्वाहा पुष्टिस्तथा तुष्टिरित्येते मन्त्रपल्लवाः ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पूर्वे चाभिमुखं पश्चादाग्नेयाकर्षणं तथा ॥ २१४ ॥ दक्षिणं मारणे विद्यान्नैर्ऋत्यां स्तम्भने तथा ॥ पश्चिमे धनकाम्ये च वायव्यो च्चाटनं तथा ॥ २१५ ॥ उत्तरे चोग्रकर्माणि ईशान्ये ज्ञानसिद्धिदम् ॥ वौषडाकर्षणे चादौ मन्त्रान्ते साध्यनामकः ॥ २१६ ॥ तदन्ते वौषडन्ते च जपे विज्ञाय मन्त्रवित् ॥ मन्त्रादौ स्तम्भनं बीजं मन्त्रान्ते साध्यनाम च ॥ २१७ ॥ नामान्ते च पुनर्बीज मिति ज्ञात्वा मनुं जपेत् ॥ वषट्द्वन्द्वं तु वश्यादि न्यसेन्मन्त्रान्त एव हि ॥ २१८ ॥ साध्यनाम तदन्ते च वषडन्ते जपेत्सुधीः ॥ मारणे बीजमादौ च साध्यनाम ततः परम् ॥ २१९ ॥ तदन्ते च मनुं जप्त्वा नाम बीजं क्रमात्पठेत् ॥ मन्त्रान्ते बीजमुच्चार्य तदन्ते साध्यनाम च ॥ २२० ॥ नामान्ते च पुनर्बीजं द्वन्द्वमुच्चाटनं स्मृतम् ॥ मन्वन्तरं तथा बीजं मन्त्रान्नामानि निर्दिशेत् ॥ ॥ २२१ ॥ स्वाहा नमः स्वधा चेति मन्त्रान्ते च पठेत्सुधीः ॥ एवं ज्ञात्वा प्रयोगांश्च सर्वकर्माणि साधयेत् ॥ २२२ ॥ ॐकारः पुरुषः प्रोक्तः सर्वे मन्त्राश्च सुन्दरि ॥ तयोः संगमवेलायां वस्त्रमाच्छाद्य संजपेत् ॥ २२३ ॥ अस्य मंत्रस्य स्फुटेन दर्शयति तथा वक्ष्य माणमाह वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अमुकनामाख्यं वषट् मे वश्यं कुरु २ स्वाहेति वश्यम् ॥ २२४ ॥ अथोच्चाटनम् ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं फट् उच्चाटनं कुरु २ स्वाहेति ॥ २२५ ॥ अथ मोहनम् ॥ क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं क्लीं क्लीं मोहनं कुरु २ क्लीं क्लीं स्वाहेति ॥२२६॥ अथ मारणम् ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्त रं रं खें खें मारय२ रं रं शीघ्रं भस्मीकुरु २ स्वाहेति ॥२२७॥ अथ स्तम्भनम्॥ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं ह्लीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय २ ह्लीं जिह्वां कीलय २ ह्रीं बुद्धिं विनाशय २ ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहेति ॥ २२८ ॥ अथाकर्षणम् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देव दत्तं यं यं शीघ्रमाकर्षय २ स्वाहेति ॥ २२९ ॥ चण्डीमन्त्रं दर्शयति हरगौरीतन्त्रे ॥ नमोऽन्तः शान्तिके पुष्टौ प्रणिपाते च कीर्तितः ॥ वश्याकर्षणहोमेषु स्वाहान्तः सिद्धिदायकः ॥ २३० ॥ वषट्पल्लवसंयुक्तो मन्त्रः पुष्ट्यादिसाधनः ॥ हुंकारपल्लवोपेतो मारणे ब्राह्मणं विना ॥ २३१ ॥ यन्त्रभञ्जनकार्येषु सुघोरभयनाशने ॥ वौषडन्तः प्रकल्प्यस्तु ग्रहबाधाविनाशकः ॥२३२॥ उच्चाटनेषु

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

संप्रोक्तो मन्त्रः फट्पल्लवान्वितः ॥ न्यासहीनो भवेन्मूको मृतः स्याच्छिरसा विना ॥ २३३ ॥ अपल्लवस्तु नग्नः स्यात्सुप्तः स्यादासनं विना ॥ गुरुं विना वृथा मन्त्रमार्च्यजाप्यस्तु शून्यकः ॥ २३४ ॥ निर्बीजो दुष्टदत्तः स्यात्सोऽन्यबीजस्तु कीलितः ॥ देवच्छन्दर्षिहीनोऽयं समुच्चोक्तो भुजंगमः ॥ २३५ ॥ पार्वत्युवाच ॥ नीलकण्ठ विरूपाक्ष कृपयाऽऽशु वदाच्युत ॥ ग्रथितादिप्रयोगांश्च वद मे करुणाकर ॥ २३६ ॥ ईश्वर उवाच ॥ साधु साधु महादेवि जय पन्नगकङ्कणे ॥ ग्रथितादिप्रयोगाश्च मन्त्राणां सिद्धिकारणम् ॥ २३७ ॥ ग्रथितं संपुटं ग्रस्तं समस्तं च विदर्भितम् ॥ तथा क्रान्तममाद्यन्तं गर्भस्थं सर्वतोदधृतम् ॥२३८॥ तथा युक्तिविदर्भं च विदर्भग्रथितं मया ॥ इत्येकादशधा मन्त्रौ प्रयुक्तौ सर्वं सद्धिदौ ॥ २३९ ॥ साध्यनामार्णमेकैकं मन्त्रार्णं संप्रयोजयेत् ॥ ग्रथितं तत्त्वमाद्यन्तं वश्याकर्षणकं परम् ॥ २४० ॥ मन्त्रमादौ पठेत्सर्वं साध्यसंज्ञा तदन्तरम् ॥ विपरीतं तदस्यान्ते मन्त्रं संपुटितं स्मृतम् ॥ २४१ ॥ सर्वशिष्टकरं ज्ञेयं त्रैलोक्यैश्वर्यदायकम् ॥ अथ वर्णं तथाऽऽद्यन्ते मन्त्रं कुर्याद्विचक्षणः ॥ २४२ ॥ मध्ये साध्यं भवेद्द्वारं ग्रन्थमित्यभिधीयते ॥ अभिचारेषु सर्वेषु यो जपेन्मारणेषु च ॥२४३॥ रणमारणकृत्येषु साध्यसिद्धिकरं कृतौ ॥ अभिधाने वदेत्पूर्वं पश्चात्स्यान्मत्रमुद्धरेत् ॥ २४४ ॥ एतत्समस्तमीशानि शत्रूच्चाटनकारकम् ॥ द्वौ द्वौ मन्त्राक्षरं मध्ये एकैकं साध्यवर्णकम् ॥ २४५ ॥ विदर्भितांकुशं प्रोक्तं दुष्टघ्नं शिष्टरक्षणम् ॥ मन्त्राणां त्वरितं साध्यं समन्तात्तिष्ठते यदि ॥२४६॥ आक्रान्तमभिजानीयात्सत्यं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥ सकृत्पूर्वं वदेन्मन्त्रमन्ते देवं तथा पुनः ॥ २४७ ॥ मध्ये चैव भवत्यर्धमाद्यन्तमिति तद्द्वयोः ॥ अन्योऽन्यप्रीतियुक्तानां रामलक्ष्मणयोरपि ॥ २४८ ॥ सद्यो विद्वेषणं चैव जायते नात्र संशयः ॥ आदौ चान्ते तथा मन्त्रं द्विवारं संप्रयोजयेत् ॥ २४९ ॥ साध्यनाम सकृन्मध्ये गर्भस्थं चतुरुच्यते ॥ मारणोच्चाटनं वश्यं प्रयुक्तं तु मया नृणाम् ॥ ॥ २५० ॥ गतिर्जिह्वा गर्भरिपुं कुर्यात्स्तम्भनसंमतम् ॥ त्रिधा मन्त्रं वदेत्पूर्वं तथा चान्ते त्रिधा मनुम् ॥ २५१ ॥ सकृत्साध्यं भवेन्मृत्योस्तद्विद्यात्सर्वतो रजः ॥ सर्वोपसर्गशमनं महामृत्युनिवारणम् ॥ ३५२ ॥ सर्वसौभाग्यजननं मुत्युं वाचाऽमृतप्रदम् ॥ आदौ

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मन्त्रं ततो नाम पुनर्मन्त्रं समुच्चरेत् ॥ २५३ ॥ वीरमन्त्रं त्रिधा कृत्वा भवेद्युक्तिविदार्भितम् ॥ सर्वविद्याहरं प्रोक्तं भूतापस्मारमर्दनम् ॥ ॥ २५४ ॥ दुःखपीडारोगहरं सर्वसौख्यप्रदं नृणाम् ॥ एकैकं साध्यवर्णं तु कृत्वा मन्त्रं विदर्भितम् ॥ २५५ ॥ पूर्ववद्ग्रथितं च स्यात्तस्मादन्ते प्रकल्पयेत् ॥ विदर्भग्रथितो नाम मन्त्रलक्षणमुत्तमम् ॥ २५६ ॥ सर्वकर्महरं प्रोक्तं सर्वैश्वर्यफलप्रदम् ॥ एवं तन्त्रेषु ग्रथितं पुरा तान्त्रिक एव च ॥ २५७ ॥ एतत्प्रयोगकर्माणि कृत्वा सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ तत्प्रयोगं विना देवि यः करोति च साधकः ॥ २५८ ॥ प्रयोगाणि च षट् कर्म कृत्वा सिद्धिः कलौ युगे ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ग्रथितानि च साधयेत् ॥ २५९ ॥ ज्ञातव्यं गुरु मार्गेण सिद्धिर्भवति शाश्वती ॥ २६० ॥ अथ दुर्गामन्त्रः तन्त्रसारे ॥ अथ दुर्गामनुं वक्ष्ये दृष्टादृष्टफलप्रदम् ॥ मायाद्रिकर्णबिन्द्वा ढ्यो भूयोऽसौ सर्गवान्भवेत् ॥ २६१ ॥ पश्चान्तकः प्रतिष्ठावान्मारुतो भौतिकासनः ॥ तारादिहृदयान्तोऽयं मन्त्रो वस्वक्षरात्मकः ॥ ॥ २६२ ॥ अद्रिर्दकारः कर्ण उकारः पश्चान्तको गकारः प्रतिष्ठा आकारः मारुतो यकारः भौतिक ऐकारः ॥ तारो माया स्वबीजं च दुर्गायै हृदयं ततः ॥ २६३ ॥ इति भट्टः ॥ अथ पूजाप्रयोगः ॥ प्रातःकृत्यादि पीठकन्यासान्तं विधाय केसरेषु मध्ये च पीठशक्तीर्न्यसेत् ॥ तद्यथा ॥ आं प्रभायै ईं मायायै ऊं जयायै एं सूक्ष्मायै ऐं विशुद्धायै ओं नन्दिन्यै औं सुप्रभायै अं विजयायै अः सर्वसिद्धिदायै नमः सर्वत्र तदुपरि वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहासनाय हुंफट् नमः इति न्यसेत ॥ तथा च निबन्धे ॥ प्रभा माया जया सूक्ष्मा विशुद्धा नन्दिनी पुन ॥ सुप्रभा विजया सर्व सिद्धिदा नवशक्तयः ॥ ततः ऋष्यादिन्यासः ॥ ततः शिरसि नारद ऋषये नमः ॥ मुखे गायत्रीछन्दसे नमः ॥ हृदि दुर्गादेवतायै नमः ॥ तथा च निबन्धे ॥ ऋषिः स्यान्नारदश्छन्दो गायत्री देवता मनोः ॥ दुर्गा समीरिता सद्भिर्दुरितापन्निवारिणीति ॥ २६४ ॥ ततः कराङ्गन्यासौ ॥ ह्रां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ह्रीं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ ह्रूं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै मध्यमाभ्यां वषट् ॥ ह्रैं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै अनामिकाभ्यां हुम् ॥ ह्रौं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॥ ह्रः ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

एवं हृदयादिषु ॥ ह्रां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै हृदयाय नम इत्यादि ॥ तथा च निबन्धे ॥ नमस्कारविमुक्तेन मूलमन्त्रेण साधकः ॥ ह्रामाद्यैः सह कुर्वीत षडङ्गानि यथाविधि ॥ २६५ ॥ आगमकल्पद्रुमे ॥ नमःस्थाने च दीर्घाढ्यं शक्तिबीजं नियोजयेत् ॥ षडंगानि विधेयानि मूलमन्त्रेण साधकैः ॥ २६६ ॥ इति वचनात् ॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः इत्याद्यपि वदन्ति ॥ ततो ध्यानम् ॥ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः शङ्खं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ॥ आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीक्वणन्नूपुरा दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वामानसैःसंपूज्यशङ्खस्थापनं कुर्यात् ॥ ततः पीठपूजां कृत्वा केसरेषु मध्ये च आं प्रभायै ईं मायायै ऊं जयायै एं सूक्ष्मायै ऐं विशुद्धायै ओं नन्दिन्यै औं सुप्रभायै अं विजयायै अः सर्वसिद्धिप्रदायै तदुपरि वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुंफट् नम इति पूजयेत् ॥ तथा च निबन्धे ॥ आभिर्ह्रस्वत्रयक्लीबरहितैः पूजयेदिमाः ॥ प्रणवानन्तरं वज्रनखदंष्ट्रायुधाय च ॥ २६७ ॥ महासिंहाय वर्मास्त्रं नतिः सिंहमनुर्मतः ॥ दद्यादासनमेतेन मूर्तिं मूलेन कल्पयेत् ॥२६८॥ ततः पुनर्ध्यात्वाऽऽवाहनादिपञ्चपुष्पाञ्जलिदानपर्यन्तं विधायावरणपूजामारभेत् ॥ तद्यथा ॥ अग्निनिर्ऋतिवाय्वीशानकोणेषु मध्ये दिक्षु च ॥ ह्रां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै हृदयाय नमः इत्यादिना पूजयेत् ॥ ततः पत्रेषु पूर्वादिषु जं जयायै विं विजयायै किं कीर्त्यै पं प्रीत्यै पं प्रभायै शुं शुद्धायै मं मेधायै शं श्रुत्यै पत्राग्रेषु ॐ शंखाय नमः॥ एवं चक्राय गदायै खड्गाय अङ्कुशाय चापाय शराय तद्बाह्ये इंद्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत् ॥ ततो धूपादिविसर्जनान्तं कर्म समापयेत् ॥ अस्या बलिमन्त्रस्तु एहि एहि पदद्वन्द्वम् ॥ मदीयं च बलिं देवि ललाय कपद्वयम् ॥ साधयद्वितयं ब्रूयात् खादय द्वितयं पुनः॥ सर्वसिद्धिप्रदं देवी ततः स्वाहापदं भवेत् ॥ बलिदानस्य मन्त्रोऽयं मन्त्रिण्या परिकीर्तितः ॥ अस्य पुरश्चरणमष्टलक्षजपः तथा च ॥ वसुलक्षं जपेन्मन्त्रं तिलैर्मधुरलोडितैः ॥ पयोऽन्नमासां जुहुयात्तत्सहस्रं जितेन्द्रियः ॥ तेन वाचनिकोऽष्टसहस्रहोमः ॥ २६९ ॥ अथ सप्ताक्षरः श्रीदुर्गामन्त्रः ॥ *ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः ॥ अस्य नारद ऋषिः । गायत्री छन्दः । दुर्गा देवता । दुं बीजम् । गां शक्तिः । ह्रीं कीलकम् ।*

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अभीष्टार्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै ह्रां हृ० ॐ ह्रीं दु० ह्रीं शि० ॐ ह्रीं दु० ह्रूं शि० ॐ ह्रीं दु० ह्रैं क० ॐ ह्रीं दु० ह्रौं नेत्र० ॐ ह्रीं दु० ह्रः अस्त्राय फट् ॥ ॐह्रीं दुर्गायै ह्रां ह्रीं इत्यादि दुं बीजेन सह हुंकल्पनेति द्वितीयम् ॥२७०॥ सिंहस्था शशिशेखरा मरकत प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः शङ्खं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ॥ आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणलसत्काञ्चीक्वणन्नूपुरा दुर्गा दुर्गविनाशिनी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ॥२७१॥ घृताक्तेन पायसेन त्रिमधुराक्तैस्तिलैर्दशांशहोमः ॥२७२॥ अथ दुर्गायन्त्रोद्धारः ॥ दुर्गा यन्त्रं प्रवक्ष्यामि शृणुष्व हरवल्लभे त्रिकोणं विन्यसेत्पूर्वं नवकोणसमन्वितम् ॥ २७३ ॥ त्रैबिम्बसहितं सर्वमष्टपत्र समन्वितम् ॥ त्रिरेखासहितं वज्रनूपुरद्वयसंयुतम् ॥ २७४ ॥ समीकृत्य यथोक्तेन विलिखेद्विधिनाऽमुना ॥ ननास्त्रसंयुतं लेख्यं चक्रं मन्त्रविभूषितम् ॥ २७५ ॥ तत्र तां पूजयेद्देवीं मूलप्रकृतिरूपिणीम् ॥ अथ दुर्गाध्यानम् ॥ सिंहस्कन्धसमारूढां नानालङ्कारभूषिताम् ॥२७६॥ चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ॥ रक्तवस्त्रपरीधानां बालार्कसदृशीतनूम् ॥ २७७ ॥ नारदाद्यैर्मुनिगणैः सेवितां भवगेहिनीम् ॥ त्रिवलीवलयोपेतनाभिनालसुवेशिनीम् ॥ २७८ ॥ रत्नद्वीपे महाद्वीपेसिंहासनसमन्विते ॥ प्रफुल्लकमलारूढां ध्यायेतां भवगेहिनीम ॥ २७९ ॥ अथ तन्त्रान्तरोक्तदुर्गामन्त्रः ॥ ॐ रात्रीं प्रपद्ये पुनर्भूं मयोभूं कन्यां शिखण्डिनीं पाशहस्तां युवतीं कुमारिणीम् ॥ ॥ २८० ॥ अथ दुर्गानवार्णमहामन्त्रः ॥ ॐअस्य श्रीनवार्णमहामन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ॥ महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताः ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि ॥ नन्दाशाकंभरीभीमाः शक्तयः ॥ रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि ॥ अग्निवायुसूर्या स्तत्त्वानि ॥ जपपूजादौ विनियोगः ॥ अथ बीजन्यासः ॥ ॐ क्लींवामनेत्रे ॥ ॐ चां दक्षिकर्णे ॥ ॐ मुं वामकर्णे ॥ ॐ डां नासिकायाम् ॐ यैं मुखे ॥ ॐ विं लिङ्गे॥ॐच्चें पादयोः ॥२८१॥ अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा करकमलधृतेष्टाभीतीयुग्माम्बुजा च ॥ मणिमुकुटविचित्राऽलंकृताऽऽकल्पजातैर्भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रिये नः ॥ २८२ ॥ इन्दुप्रख्यामिन्दुखण्डार्धमौलिं शङ्खाभीष्टाभीतिहस्तां त्रिनेत्राम् ॥ हेमाब्जस्थां पीतवस्त्रां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि ॥ २८३ ॥ पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोः



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पादहृत्कुक्षिवक्षोदेशां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ॥ अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरां तीक्ष्णपद्मासनस्था मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरा भारतीं तां नमामि ॥ २८४ ॥ इति ध्यात्वा ॥ अथ मन्त्रं जपेत् ॥ ए ह्रीं महादुर्गे नवाक्षरि नवदुर्गे नवात्मिके नवचण्डि महामाये महामोहे महायोगनिद्रे जये मधुकैटभविद्राविणि महिषासुरमर्दिनि धूम्रलोचनसंहन्त्रि चण्डमुण्डविनाशिनि रक्तबीजान्तके निशुम्भविध्वंसिनि शुम्भदर्पघ्नि देवि अष्टादशबाहुके कपालकट्वाङ्गशूलखड्गखेटक धारिणि छिन्नमस्तकधारिणि रुधिरमांसभोजिनि समस्तभूतप्रेतादियोगध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादिस्तुते देवि मां रक्षय २ मम शत्रून् नाशय २ ह्रीं फट् हूं फट् ॐ ऐं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ २८५ ॥ अथ संपुटितपाठहोमेऽपि आहुतीसंख्यां सप्तशतवत्याह ॥ प्रयोगसंग्रहे ॥ कदाचित्संपुटैर्युक्तं पठेत्सप्तशतीस्तवम् ॥ ससंपुटं पठेद्धोमे हुनेत्सप्तशताहुतीः ॥ २८६ ॥ अथैकस्मिन्दिने संपूर्ण पाठकरणशक्तौ पा १ ठो २ऽयं १ द्वि ४ प्र २ का १ रः २ एवं क्रमेण सप्तभिर्दिनैरेकावृत्तिः एकैकं चरित्रमेकैकस्मिन्दिने इति त्रिभिर्दिनैरेकः पाठ इति केरलाः क्वचित् ॥ २८७ ॥ अथ सप्तशत्या शापोद्धारो त्कीलने कात्यायनीतन्त्रोक्ते ॥ त्रयोदशाध्यायं पठित्वा प्रथमं पठेत् ॥ ततो द्वादशद्वितीयौ तत एकादशतृतीयौ चतुर्थदशमौ पञ्चमनवमौ षष्ठाष्टमौ सप्तमं द्विवारमिति पाठेन शापोद्धारः ॥ २८८ ॥ प्रथमं मध्यम चरित्रं पठित्वा ततः प्रथमतृतीयौ पठेदित्युत्कीलनमिति क्वचित् दृश्यते केरलसंप्रदायनाम्ना तत्र मूलं मृग्यम् ॥ कीलकग्रन्थे तु ॥ अष्टम्यां वा चतुर्दश्यां कृष्णायां वा समाहितः ॥ ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति ॥ २८९ ॥ इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितमिति सप्तशतीस्तोत्रे शिवशापतदुद्धारावुक्तौ ॥ २९० ॥ अथ स्तोत्रपठनविधिः ॥ तत्र सप्तशत्या मानसपाठनिषेधः ॥ प्रणवं पूर्वमुच्चार्य स्तोत्रं वा संहितां पठेत् ॥ अन्ते च प्रणवं दद्यादित्युवाचादिपूरुषः ॥ २९१ ॥ न मानसं पठेत्स्तोत्रं वाचिकं तु प्रशस्यते ॥ यत्तु कीलके ॥ शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सपत्तिरुच्चकैरिति तदत्युच्चैःपाठनिषेधकं त्वरानिषेधकं च ॥ २९२ ॥ *अथ पुस्तकं विना पाठनिर्णयः* ॥ पुस्तके वाचनं शस्तं सहस्रादधिकं यदि ॥ ततो न्यूनस्य तु भवेद्

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वाचनं पुस्तकं विना ॥२९३॥ विनाऽपीत्यर्थः ॥ ऋषिच्छन्दोऽङ्गं विन्यस्य पठेत्स्तोत्रं समाहितः ॥ स्तोत्रेण दृश्यते यत्र प्रणवन्यास माचरेत् ॥ २९४ ॥ भीष्मपर्वणि या गीता सा प्रशस्ता कलौ युगे ॥ विष्णोः सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं पापप्रणाशनम् ॥ २९५ ॥ गजेन्द्रमोक्षणं चव तथा कारुण्यकस्तवः ॥ नारसिंहं तथा स्तोत्रं स्तोत्रं श्रीरामसंज्ञकम् ॥ २९६ ॥ देव्याः सप्तशतीस्तोत्रं तथा नामसहस्रकम् ॥ श्लोकाष्टकं नैलकण्ठं शैवं नामसहस्रकम् ॥ २९७ ॥ त्रिपुरायाः प्रसादाख्यं सूर्यस्य स्तवराजकम् ॥ पैत्रो रुचि स्तवो यश्च इन्द्राक्षीस्तोत्रमेव च ॥ २९८ ॥ वैष्णवं च महालक्ष्म्याः स्तोत्रमिन्द्रेण भाषितम् ॥ भार्गवाख्येन रामेण शप्तान्यन्यानि कारणात् ॥ २९९ ॥ अनेन गीतासप्तशत्यादीनां शापाभावो लभ्यते ॥ ३०० ॥ शुद्धेनाचलचित्तेन पठितव्यं प्रयत्नतः ॥ न स्वयं लिखितं स्तोत्रं नाब्राह्मणलिपिं पठेत् ॥ ३०१ ॥ न च स्वयंकृतं स्तोत्रं तथाऽन्येन च यत्कृतम् ॥ यतः कलौ प्रशंसन्ति ऋषिभि र्भाषितं तु यत् ॥३०२॥ रुद्रयामले चरितत्रयरहस्यत्रयनिर्णयः ॥ प्रथमं चरितं प्रोक्तं मधुकैटभघातनम् ॥ द्वितीयं विद्धि चरितं महि षासुरघातनम् ॥ ३०३ ॥ उत्तरं चरितं ज्ञेयं शुम्भदैत्यवधान्वितम् ॥ चरितानि जपेत्त्रीणि सरहस्यान्यतन्द्रितः ॥ ३०४ ॥ रहस्यं मन्त्रान्त्याध्यायद्वयं त्रयं वा ॥ चरितं मध्यमं वाऽपि जपेद्वा चण्डिकामयम् ॥ ३०५ ॥ नमो देव्या इमं मन्त्रं जपेद्वा कालिका प्रियम् ॥ इति मार्कण्डेयपुराणखिलत्वेन प्रसिद्धे ग्रन्थे तूक्तम् ॥ ३०६ ॥ नित्यचण्डचादिजाप्यस्य विधानं ते वदाम्यहम् ॥ शुक्ल भूतामवष्टभ्य मायां प्रतिदिनं जपेत् ॥ ३०७ ॥ सकृद्रहस्यसंयुक्तं चण्डिकाचरितत्रयम् ॥ रहस्यमन्त्रस्य स्तोत्रस्य भुक्तिमुक्ति प्रदत्वप्रतिपादकमन्त्यमध्यायद्वयम् ॥ तदर्थस्य देवीमात्रवेद्यत्वाद्रहस्यत्वम् ॥ ३०८ ॥ दशांशहोमसहितं सोच्यते नित्यचण्डिका ॥ धनपुत्रयशोदात्री महाव्याधिविनाशिनी ॥ इति क्वचित्पठ्यते ॥ ३०९ ॥ अथ प्रत्यध्याये प्रतिमन्त्रे वा जपहोमतर्पणपूजादौ विशेषसूचनामाह नागोजीभट्टीये ॥ केचित्तु ॥ मन्त्रं पठित्वा तत्तदध्यायदेवतायै स्वाहेत्येवं तत्तदध्यायहोमे ॥ तत्तदध्यायदेवतां तर्पयामि इति तर्पणे ॥ तत्तदध्यायदेवतायै नम इति पूजने इत्याहुः ॥ परार्थप्रयोगे तु ॥ सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ इति

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

प्रतिश्लोकं प्रत्यध्यायं वा पठेत् ॥ इदं सर्वत्र परार्थप्रयोगे बोध्यम् ॥ ३१० ॥ अथ तर्पणविधिः ॥ अयं तर्पणप्रयोगः दीपदान प्रसंगेऽपि उक्तः होमदशांशतर्पणेऽपि विज्ञेय इति ॥ त्रयोदशाध्यायदेवतानिमित्तं त्रयोदश पात्राणि दुग्धेनापूर्य तत्पात्रेषु देवता मावाह्याद्यन्तयोः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा प्रतिश्लोकं नाम प्रतिमन्त्रं प्रथमाध्यायदेवतां तर्पयामीति प्रयोगेण तर्पयेत् तथा होमे त्रयोदशस्वग्निषु क्रमात्तत्तदध्यायदेवता आवाह्य संपूज्य प्रतिमन्त्रमों प्रथमाध्यायदेवतायै नमः स्वाहेति मन्त्रेण पायसेन तत्त दध्यायदेवताद्रव्येण वा जुहुयात् ॥ ३११ ॥ अथ प्रत्यध्यायान्ते महाहुतिमन्त्राः ॥ ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ३१२ ॥ साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै वाग्भवबीजा धिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ ३१३ ॥ इत्यनेन कपित्थफलं नागवल्लीदलद्वयसहितं कुङ्कुमा क्षतपुष्पैरभ्यर्चितं सघृतं होमयेत् इति ॥ ३१४ ॥ एवं द्वितीयाध्यायान्ते ॥ नमो० १ साङ्गायै लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै महा लक्ष्म्यै महाहुतिं० २ इत्यनेन नारिकेलफलं प्रथमाध्यायवत् ॥ ३१५ ॥ ततस्तृतीयाध्यायान्ते नमो० १ साङ्गायै० अष्टा विंशतिवर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै महाहुतिं० २ इत्यनेन मधुपुष्पाणि प्रथमाध्यायवत् ॥ ३१६ ॥ ततश्चतुर्थाध्यायान्ते नमो० १ साङ्गायै० त्रिवर्णात्मिकायै शक्तिलक्ष्म्यै महाहुतिं २ इत्यनेन पूगीफलं प्रथमाध्यायवत् ॥ ३१७ ॥ ततः पञ्चमाध्यायान्ते नमो० १ साङ्गायै० विष्णुमायादित्रयोविंशतिदेवतायै महाहुतिं २ इत्यनेन बीजपूरफलं पूर्ववत् ॥ ३१८ ॥ ततः षष्ठाध्यायान्ते नमो० १ साङ्गायै० शताक्ष्यै धूम्राक्ष्यै महाहुतिं० इत्यनेन नारिङ्गफलं पूर्ववत् ॥ ३१९ ॥ ततः सप्तमाध्यायान्ते नमो १ साङ्गायै१ कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै कालीचामुण्डायै देव्यै महाहुतिं० २ इत्यनेन कूष्माण्डफलखण्डं पूर्ववत् ॥ ३२० ॥ ततोऽष्टमान्ते नमो० १ साङ्गायै० अष्टमातृकासहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै महाहुतिं० २ इत्यनेनेक्षुदण्डखण्ड पूर्ववत् ॥ ३२१ ॥ ततो नवमान्ते नमो० १ साङ्गायै वाग्भवबीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महाहुतिं० २ इत्यनेन पुनः कूष्माण्डखण्डमिक्षुखण्डं वा पूर्ववत् ॥३२२॥ ततो दशमान्ते

CC-0. Jammu Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नमो देव्यै० १ साङ्गायै० सिंहवाहनायै त्रिशूलपाशधारिण्यै महाहुतिं० २ इत्यनेन मातुलिङ्गफलं पूर्ववत् ॥ ३२३ ॥ ततः एकादशाध्यायान्ते नमो० १ साङ्गायै० सर्वनारायण्यै महाहुतिं० इत्यनेन दाडिमफलं पूर्ववत् ॥ ३२४ ॥ ततो द्वादशान्ते नमो० १ साङ्गायै० बालात्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं० २ इत्यनेन बिल्वफलं पूर्ववत् ॥ ३२५ ॥ ततस्त्रयोदशाध्यायान्ते नमो० १ साङ्गायै० श्रीत्रिपुरसुन्दर्यं श्रीविद्यायै महाहुतिं० इत्यनेन कदलीफलं प्रथमाध्यायोक्तवद्धोमयेदिति ॥ ३२६ ॥ अथ पुनः शापोत्कीलनविषये निर्णयः ॥ आदौ प्राणं तथा शापमुत्कीलं च जपेत्पुनः ॥ पश्चात्षोडश संस्कारान्सप्तशत्याश्च सिध्यति ॥ ३२७ । कीलकं मध्यमादौ च पश्चात्कवचमेव च ॥ प्रथमं चरितं जप्त्वा ततश्चरितमुत्तमम् ॥ ३२८ ॥ ततः परं चार्गलां च कीलकं च ततः परम् ॥ एवमुत्कीलनं प्रोक्तं पुरातनमहर्षिभिः ॥ ३२९ ॥ प्रयोगं च पठित्वा तु चानुलोमं जपेत्ततः ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सर्वकामार्थसिद्धये ॥ ३३० ॥ अथ प्रकारान्तरेण रात्रिसूक्तविचारः सामविधिब्राह्मणे ॥ अथ यः कामयते पुनर्न प्रत्याजायेयमित्यपुनर्भवमधिकृत्य तदनुसंधेयोऽस्या मन्त्र उक्तः ॥ रात्रिं प्रपद्ये पुनर्भूं मयोभूं कन्यां शिखण्डिनीं पाशहस्तां युवतीं कुमारिणीमादित्यः । श्रीचक्षुषे वाऽन्तः प्राणाय सोमो गन्धायापः स्नेहाय मनोऽनुज्ञाय पृथिव्यै शरीरमिति ॥ अस्य रात्रौ जपमात्रात्सिद्धिः ॥ अस्य फलं मरणकालज्ञानं परमफलं तु मोक्ष इति तत्रैवोक्तम् । अयं च देवीविषयो मन्त्रः ॥ कन्यकुमारि धीमहि इति तद्गायत्र्यर्थस्य कन्याकुमारिणीमित्यत्र प्रत्यभिज्ञानात् रात्रिं तद्रूपाम् ॥ अस्यास्तनुस्तमोद्वारा निशादिवसनाशिनीति देवीमुपक्रम्य हरिवंशोक्तेः ॥ पुनर्भूः असुरवधार्थं नानावतारपरिग्रहात् ॥ अत एव मयोभूः प्राणिनां सुखदात्री कन्या अजातपुंस्पर्शरतिधृष्या चाति सुन्दरीति शैवोक्तेः ॥ शिखण्डिनी मयूरपिच्छभूषणा मयूरकलापध्वजा च ॥ भूषणैस्तु मयूराणामङ्गैर्दीर्घैश्च भास्वरा ॥ ध्वजेन शिखिबर्हाणामुच्छ्रितेन समावृता॥इति हरिवंशोक्तेः॥ पाशहस्ता असुरबन्धनार्थं तथा युवतिः नित्यं बाल्यवार्धक्यावस्थारहिता कंसमोहनावतारे क्षणं शैशवाभिनयेऽपि तदानीमेव यौवनाविष्करणोक्तेः ॥ कुमारिणी कुत्सितान् मारयतीति तच्छीला एवंभूताया रात्र्य

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मनस्तदधिष्ठात्री देवता अनुज्ञाय अनु भिमानिदेवतायाः प्रभावादादित्यश्चक्षुषे चक्षू रक्षितुं यत्नवान् भवतु इति क्रमेणार्थः ॥ मनस्तदधिष्ठात्री देवता अनुज्ञाय अनु
भिमानिदेवतायाः प्रभावादादित्यश्चक्षुषे चक्षू रक्षितुं यत्नवान् भवतु इति क्रमेणार्थः ॥ पृथिव्यै शरीरमित्यस्य विभक्तिविपरिणामेन पृथिवी शरीरायेत्यर्थः ॥ एवं रात्रौ रात्रिसूक्तजपो
ज्ञानं ज्ञानमात्रं रक्षितुं भवतु ॥ पृथिव्यै शरीरमित्यस्य विभक्तिविपरिणामेन पृथिवी शरीरायेत्यर्थः ॥ एवं रात्रौ रात्रिसूक्तजपो
ऽप्येतत्फलक इति ऋग्विधाने स्पष्टम् ॥ समसज्ञाबलाद्ब्रह्मकृतप्रथमाध्यायान्तर्गतस्तुतिपाठोऽप्येतत्फलक इति परे ॥ ३३१ ॥ अथ
वैदिकदुर्गाराधनम् ॥ शान्तिसारे शौनकः ॥ जातवेदस इत्येतत्सूक्तं सर्वार्थसाधकम् ॥ आयुरारोग्यसुखदं भूमिदं शत्रुनाशनम् ॥
॥ ३३२ ॥ यद्यद्वाञ्छति वा विप्रस्तत्तदाप्नोत्यसंशयम् ॥ सूक्तेनानेन जुहुयाच्छुक्लाम्बरधरः शुचिः ॥ ३३३ ॥ जपेद्वा नियतो मन्त्रं
हविष्याशी जितेन्द्रियः ॥ पशुपुत्रधनार्थी च प्रत्येकं लक्षमभ्यसेत् ॥ ३३४ ॥ सर्वेषामेव देवानां विशिष्टं देवतालयम् ॥ तस्माद्
देवालये कुर्वन्विशिष्टं फलमश्नुते ॥ ३३५ ॥ ततः प्राची प्रशस्ता दिगाग्नेयी च विशेषतः ॥ प्रतीची वायवीया च श्रेष्ठा सौम्या
दिशाऽथवा ॥ ३३६ ॥ वश्यान्विताभिचारे च विजयोऽपि विशिष्यते ॥ कुण्डे वा स्थण्डिले वाऽपि होमं कुर्यादतन्द्रितः ॥३३७॥
चतुरस्रं भवेत्कुण्डं मेखलाद्वयसंयुतम् ॥ स्थण्डिलाद्याज्यभागान्तं यज्ञतन्त्रं प्रकल्पयेत् ॥ ३३८ ॥ महाद्विजः शुचिर्दान्तः सर्व
भूतहिते रतः ॥ दुर्गामावाहयेत्कुम्भे सायुधाष्टमहाभुजाम् ॥ ३३९ ॥ नीलोत्पलदलश्यामां किरीटाद्यैर्विभूषिताम् ॥ ततश्चा
राध्य तां देवीं तस्मिंस्तीर्थोदकान्विते ॥ ३४० ॥ आवाहनेन हविषा समिद्भिश्च पृथक्पृथक् ॥ मन्त्रेणानेन जुहुयादष्टोत्तरशता
हुतीः ॥ ३४१ ॥ ततः स्विष्टकृतं चैव होमशेषं समापयेत् ॥ उत्थाप्य च जपेन्मन्त्रमेतं श्रद्धासमन्वितः ॥ ३४२ ॥ यदा दुर्गा
च वरदा त्वत्प्रसादाच्च पार्वति ॥ ३४३ ॥ अथ सप्तशतीस्तोत्रान्तर्गतमन्त्राणां कामनापरत्वेन कात्यायनीतन्त्रोक्तप्रयोगादि
लिख्यते ॥ नागोजीभट्टव्याख्यायां प्रतिश्लोकमाद्यन्तयोः प्रणवेन जपेन्मन्त्रसिद्धिः ॥३४४॥ अग्रे सर्वत्र श्लोकपदं मन्त्रोपलक्षणम् ॥
शतावृत्तिपाठेऽतिशीघ्रं मन्त्र सप्रणवमनुलोमव्याहृतित्रयमादौ अन्ते तु विलोमं तदित्येवं प्रतिश्लोकं कृत्वा महास्तोत्रं पठेत् ॥
सिद्धिः ॥ ३४५ ॥ प्रणवं व्याहृतित्रयं च श्लोकादौ पठित्वा जपेन्मन्त्रसिद्धिः ॥ ३४६ ॥ सप्तव्याहृतिसंपुटितं ॥ श्लोकं कृत्वा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

जपेन्मन्त्रसिद्धिः ॥ ३४७ ॥ सप्तव्याहृतिपूर्वकं श्लोकं कृत्वा महास्तोत्रं जपेन्मन्त्रसिद्धिः ॥ ३४८ ॥ सप्तव्याहृतिकां गायत्रीमादावन्ते वा कृत्वा श्लोकं जपेत् ॥ तदा महाफलम् ॥ ३४९ ॥ प्रतिश्लोकं व्याहृतित्रययुतां गायत्रीं जपेत् तदेव ॥ ३५० ॥ प्रतिश्लोकमादावन्ते जातवेदस इति ऋचं जपेत् ॥ सर्वकामसिद्धिः ॥ ३५१ ॥ अपमृत्युवारणाय शताक्षरत्र्यम्बकमन्त्रेण संपुटीकृत्य मन्त्रं पठेत् ॥ रोगरिक्षयमृत्यून्मूलनमभीप्सितो जपः शताक्षरो मन्त्रः ॥ सर्वापद्विनिवारणः गायत्री० जातवेदसे० त्र्यम्बकेति शताक्षरः ॥ ३५२ ॥ प्रतिश्लोकं शरणागतदीनार्त इति श्लोकं पठेत् सर्वकार्यसिद्धिः ॥ प्रतिश्लोकं करोतु सा नः शुभेत्यर्धं पठेत् सर्वकामाप्तिः ॥३५३॥ स्वाभीष्टवरप्राप्त्यै एवं देव्या वरं लब्ध्वेतिश्लोकं प्रतिश्लोकं पठेत् ॥३५४॥ सर्वापत्तिवारणाय प्रतिश्लोकं दुर्गे स्मृतेति पठेत् ॥ अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः ॥ ३५५ ॥ सर्वाबाधा इत्यस्य लक्षजपे श्लोकोक्तं फलम् ॥ ३५६ ॥ इत्थं यदा यदेति श्लोकस्य लक्षजपे महामारीशान्तिः ॥ ३५७ ॥ ततो वव्रे नृपो राज्यमिति मन्त्रस्य लक्षजपे पुनः स्वाराज्यप्राप्तिः ॥ ३५८ ॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसीत्यनेन सदीपबलिदानघण्टाबन्धनेन बालग्रहशान्तिः ॥ ३५९ ॥ आद्यावृत्तिमनुलोमेन पठित्वा ततो विपरीतक्रमेण द्वितीयां कृत्वा पुनरनुलोमेनेत्येवमावृत्तिमनुलोमेनेत्येवं दशाध्यायं पठित्वा ततो विपरीततमावृत्तित्रये उक्तेषु प्रकारेषु शीघ्रं कार्यसिद्धिः ॥ ३६० ॥ पुनः सर्वापत्तिनिवारणाय दुर्गे स्मृतेत्यर्धं ततो यदन्ति यच्च दूरके इत्यृचं तदन्ते दारिद्र्यदुःखेत्यर्धम् एवं कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः ॥ ३६१ ॥ कांसोस्मीत्यृचं प्रतिश्लोकं पठेल्लक्ष्मीप्राप्तिः ॥ ३६२ ॥ प्रतिश्लोकमनृणा अस्मिन्नित्यृचं पठेत् ऋणपरिहारः ॥ ३६३ ॥ मारणार्थमेवमुक्त्वा समुत्पत्त्येति प्रतिश्लोकं पठेत् ॥ मारणोक्तावृत्तिभिः फलसिद्धिः ॥ ३६४ ॥ ज्ञानिनामपि चेतांसीति श्लोकजपमात्रेण सद्यो मोहनमित्यनुभवसिद्धम् ॥ प्रतिमन्त्रं तत्तच्छ्लोकपाठे त्ववश्यश्च ॥३६५॥ रोगानशेषानिति श्लोकस्य प्रतिश्लोकं पाठे सकलरोगनाशः तन्मन्त्रजपेऽपि सः ॥३६६॥ इत्युक्त्वा सा तदा देवी गम्भीरेति प्रतिश्लोकं पाठे पृथक्पृथक् जपे वा विद्याप्राप्तिः ॥

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वाग्वैकृतनाशश्च ॥ ३६७ ॥ भगवत्या कृतं सर्वमित्यादिर्द्वादशोत्तरशताक्षरो मन्त्रः सर्वकामदः सर्वापन्निवारणश्च ॥ ३६८ ॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे इति श्लोकस्य यथाकार्यं लक्षायुतसहस्रशतान्यतमे जपे प्रतिश्लोकं पाठे वा सर्वापन्निवृत्तिः सर्वकामाप्तिश्च ॥ ३६९ ॥ एषु प्रयोगेषु प्रतिश्लोकं दीपाग्रे केवलमेव वा नमस्कारकरणे अतिशीघ्रं सिद्धिः ॥ ३७० ॥ प्रतिश्लोकं क्लीं कामबीजसंपुटितस्यैक चत्वारिंशद्दिनं त्रिरावृत्तौ पुत्रप्राप्तिः ॥ ३७१ ॥ एकविंशतिदिनपर्यन्तमुक्तरीत्या प्रत्यहं दशावृत्त्या वशीकरणम् ॥ ३७२ ॥ ह्रीं मायाबीजपुटितस्य फट्पल्लवसहितस्य सप्तदिनपर्यन्तं त्रयोदशावृत्तौ उच्चाटनसिद्धिः ॥ ३७३ ॥ तादृशस्यैव दिनचतुष्टयमेका दशावृत्तौ सर्वोपद्रवनाशः ॥ ३७४ ॥ एकोनपञ्चाशद्दिनपर्यन्तं प्रतिश्लोकं श्रीबीजसंपुटितस्य पञ्चदशावृत्तौ लक्ष्मीप्राप्तिः ॥ ३७५ ॥ प्रतिश्लोकमैंबीजसंपुटितस्य शतावृत्त्या विद्याप्राप्तिः ॥३७६॥ अत्र कामनाभेदेन ध्यानभेद उक्तः ॥ वश्ये रक्ततरं ध्यानम् ॥३७७॥ पौष्टिके कर्बुरम् ॥ ३७८ ॥ उच्चाटने धौम्रम् ॥ ३७९ ॥ मारणे कृष्णम् ॥ ३८० ॥ सन्तानेच्छायां नीलोत्पलश्यामम् ॥ ३८१ ॥ सर्वकामनायां रक्ताकारध्यानम् ॥ ३८२ ॥ वश्ये तु विशेषः ॥ ॐ रक्तचामुण्डे तुरु तुरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा ॥ अनेन प्रत्य ध्यायमाद्यन्तयोः पूजा ॥ सर्वान्ते अयुतं जपः ॥ अयुतमन्त्रश्च ॥ होमयेत्कटुतैलेन रक्तचन्दनराजिकाः ॥ सहस्राहुतिमात्रेण राजानं वशमानयेत् ॥ ३८३ ॥ मधुनाऽशोकपुष्पैश्च रात्रौ हुत्वा तु पूर्ववत् ॥ चक्रवर्ती भवेद्वश्यश्चण्डीमन्त्रप्रभावतः ॥ अन्ते शतं ब्राह्मणाः कुमार्यश्च भोजनीयाः ॥ ३८४ ॥ अपरश्च नवार्णस्य बिल्वमूले मासं जपः ॥ बिल्वदलैर्मधुरत्रययुतैर्मासहोमः दशांशेन क्षीर संयुतैः कमलैर्होमो वा लक्ष्मीप्राप्तिफलोऽयं प्रयोगः ॥ ईदृशे स्थले नमो देव्या इत्यादिमन्त्रैरेव दशांशेन होमः कार्य इति संप्रदायः ॥ ॥ ३८५ ॥ किंच रात्रिसूक्तं जपेपादौ मध्ये सप्तशतीस्तवम् ॥ अन्ते च देवीसूक्तानि रहस्यं तदनन्तरम् ॥ ३८६ ॥ चरिते चरिते राजन् जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम् ॥ शतमादौ शतं चान्ते विधानेन तु सुव्रत ॥ ३८७ ॥ प्रणवं पूर्वमुच्चार्य बीजतत्त्वं समुच्चरेत् ॥ ततः श्लोकं पठित्वा तु श्लोकान्ते पूर्ववज्जपेत् ॥ ३८८ ॥ प्रतिलोमं सर्वत्रापि तद्यथा ॥ ॐ ह्सौं नमः मः न ह्सौं ॐ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

इति प्रतिरक्तदन्तिकाबीजम् इत्यर्थः ॥ अनन्तभद्रं भुवनमिन्दुबिन्दुयुगान्वितम् ॥ पराबीजमिति ज्ञेयं नाल्पस्य तपसः फलम् ॥ ३८९ ॥ तथा च मार्कण्डेयः ॥ चन्द्रबीजं सुचन्द्राय हसौं बीजं तु सुसंस्थितम् ॥ एतत्परात्परं तत्त्वं येन सिध्यति चोत्तमः ॥ ३९० ॥ विना बीजं महास्तोत्रं न सिध्यति कदाचन ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन बीजयुक्तं सदा जपेत् ॥ ३९१ ॥ प्रथमचरित्रे ऋष्यादिकमुच्चार्य पराबीजेन षडङ्गमिति नतमुद्रां च प्रदर्शयेत् ॥ प्रथमचरितम् ॥ प्रणवं पूर्वमुच्चार्य मायाबीजं ततः परम् ॥ एवं संपुटितं कुर्यान्नमोऽन्तं मध्यमं जपेत् ॥ ३९२ ॥ मायाबीजं ह्रीं ॥ मध्यमचरित्रे ऋष्यादिकमुच्चार्य मायाबीजेन षडङ्गमष्टादशमुद्राः प्रदर्श्य संपुटितं जपेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ ह्रीं नमः ऋषिरुवाच ॥ मः न ह्रीं ॐ इति मध्यमचरितम् ॥ प्रणवं पूर्वमुच्चार्य कामबीजं ततः परम् ॥ एतत्संपुटितं कुर्यान्नमोऽन्तमुत्तमं जपेत् ॥३९३॥ कामबीजं क्लीं ॥ उत्तमचरित्रे ऋष्यादिकमुच्चार्य कामबीजेन षडङ्गमष्टादशमुद्राश्च प्रदर्श्य संपुटितं जपेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ क्लीं नमः ऋषिवाच ॥ मः न क्लीं ॐ इति उत्तमचरितम् ॥ अथास्य कामनाप्रयोगाः ॥ पुत्रकामनया एकचत्वारिंशद्दिनपर्यन्तं कामबीजपुटितं त्रिरावृत्तिः ॥ ३९४ ॥ वश्यार्थे एकविंशद्दिनपर्यन्तं कामबीजेन पुटितं पञ्चावृत्तिः ॥ ३९५ ॥ आकर्षणार्थे द्विचत्वरिंशद्दिनपर्यन्तं कामपुटित दशावृत्तिः ॥ ३९६ ॥ उच्चाटनार्थे त्रिसप्तदिनपर्यन्तं मायापुटितं फट्पल्लवेनावृत्तिः ॥ ३९७॥ सर्वोपद्रवनाशार्थेचतुश्चत्वारिंशद्दिन पर्यन्तं मायादौ कूर्चबीजेन संपुटितं एकादशावृत्तिः ॥ ३९८ ॥ द्रव्यकामार्थे रमाद्यन्तं नवचत्वारिंशद्दिनपर्यन्तं द्विरावृत्तिः ॥३९९॥ अथ शीघ्रकार्यसिद्धयै प्रत्यहं नवचण्डीनिर्णयः ॥ आदौ अनुलोमं त्रयोदशाध्यायान् पठित्वा पश्चाद्विलोमेन पठित्वा पुनः शापोद्धार वत्पठित्वा एवं क्रमेण प्रत्यहं नवचण्डीं कुर्यात् ॥ अल्पकार्ये नवदिनपर्यन्तं मध्यमकार्ये एकविंशतिदिनपर्यन्तं महत्कार्येत्रयस्त्रिंशद्दिन पर्यन्तं मन्त्रं सिद्धयनन्तरं जपेत् ॥ जपान्ते पायसतिलाज्यमधुपुष्परसजातीपत्रफलयवव्रीहिसितशर्करायुतैर्दशांशेन नवार्णपीठ युतेऽग्नौ जुहुयात् ॥ तद्दशांशेन हरिद्राकुंकुमजलेन संतर्पयेत् ॥ तद्दशांशेन पायसलड्डुकपञ्चखाद्यैर्भोजयेत् ॥ पञ्चखाद्यानि यथा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

प्रियालखण्डखर्जूरैर्नारिकेलैः सगोस्तनैरिति ॥ अत्र न मार्जनम् ॥एवं कृते शीघ्रं कार्यसिद्धिः॥४००॥प्रतिमन्त्रं प्रणवपुटितं जपेत् ॥ ॥ ४०१ ॥ व्यस्तसमस्तव्याहृत्यनुलोमप्रतिलोमेन प्रणवपुवितं जपेत् ॥ शीघ्रतरकार्यसिद्धिः ॥ अत्र त्रिमध्वक्तमलैर्होमः ॥ अत्र विप्रतीर्थतोयैर्वा ब्राह्मणभोजनान्ते मार्जनं कुर्यात् ॥ ४०२ ॥ श्रीबीजयुतेन सद्यो मोहनसिद्धिः ॥ ४०३ ॥ मायाश्रीकामेन पुटिते सर्वेष्टसिद्धिः ॥ ४०४ ॥ मम वैरिवशं यातः इति मन्त्रेण प्रतिश्लोकं संपुटिते श्लोकोक्तं फलम् ॥ ४०५ ॥ इत्थं निशम्य देवानां श्लोकं त्रिंशत्सहस्रं जपेत् ॥ संपत्समृद्धिर्भवति ॥ ४०६ ॥ अथ कामनापरत्वेन मन्त्रसूचनामाह ॥ बंदिमोचने अध्यायः १ मन्त्र श्लोकः ९७ राजवश्ये अ० १ श्ला० ४५ जनवश्ये अ०१श्लो०५५सर्वजनमोहने अ० १श्लो०५६ सर्वकार्यसिद्ध्यैअ०१श्लो०७६ दुर्जनमोहनेअ० १श्लो८९सुखप्राप्त्यैदारिद्र्यदुःखभयमोचनेअ०४श्लो०१०सकलकर्मसुकृतेअ०४श्लो०१६शत्रुपरिहारेअ०४श्लो०७६ दिग्बन्धनेअ०४श्लो०२५ वाक्सिद्ध्यै अ०४श्लो०११धनप्राप्तौअ०४श्लो० ३४अपद्वेषनाशनेअ०५श्लो०६ शत्रुपरीभवार्थम् अ०५ श्लो०३८मनोत्सवप्राप्त्यर्थं अ०५ श्लो०६०परप्रयोगशमने अ०९ श्लो०२९ आरोग्यप्राप्तौ अ०११श्लो०२९सर्वबाधाशमनेअ०११६ श्लो०३९ स्तवने अ०११ श्लो० १० पीडापरिहारे अ०११ श्लो०१२ उपसर्गशमने अ०११ श्लो०३६ भयमोचने अ०११श्लो०२६ विषमचित्तशमे अ० ११ श्लो० ४३ पुत्रप्राप्तौ अ० १२ श्लो० २९ शत्रुमुखस्तम्भने अ० १२ श्लो० २९ देवतामुखस्तम्भने अ० १२ श्लो० ८ सर्वबाधानाशने अ० १२ श्लो०९ धनधान्यसुखप्राप्त्यै अ०१२ श्लो०१३ दुःस्वप्नपीडापरिहारे अ० १२ श्लो०१६ मनः सिद्धिप्राप्त्यै अ०१३ श्लो०१३ देवीसंतोषप्राप्तौ अ०१३ श्लो० १० गतप्रयोगप्राप्तौ अ० १३ श्लो० १३ इति प्रयोगसूचकमन्त्राः ॥ ४०७ ॥ अथ दुर्गानामप्राप्तिजयन्तीतिथिः ॥ तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥ दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ॥ ४०८ ॥ तथा च हिङ्गुलाद्रिखण्डे उत्तरसंहितायाम् ॥ आश्विने तु सिताष्टम्यां सङ्गवे तु हतोऽसुरः ॥ तया देव्या महाविष्णोस्त्रैलोक्यसुखहेतवे ॥ ४०९ ॥ रुरुदैत्यस्य पुत्रो यो दुर्गमस्तोऽतितापदः ॥ तन्नाशकरणेनैव दुर्गा नामाभवत्किल ॥४१०॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अथ दुर्गाविधानं मार्कण्डेयपुराणे कथं नोक्तम् ॥ तत्रानुक्तत्वादस्य मन्त्रस्य विधानस्य वा कथं प्रामाण्यमिति चेत् सत्यम् ॥ मार्कण्डेयपुराणे पुराणलक्षणत्वेनोच्यमानमन्वन्तरप्रसङ्गादष्टममनुः सावर्णिको देव्याः प्रसादात्सूर्याज्जन्म प्राप्य लोके बभूवेति वक्तुं तस्य पूर्वजन्मनि महाराजत्वसार्वभौमत्वयुद्धपराजयवनगमनर्षिदर्शनदेवीमाहात्म्यश्रवणतदाराधनतद्दर्शनानि तस्याः सकाशाद्वरप्राप्तिः पुनः स्वराज्यप्राप्तिस्तद्देहावसाने सूर्याज्जन्म मनुत्वप्राप्तिरित्यादि पुराणकथाप्रसङ्गेनोक्तं तत्र देवीमाहात्म्यमुक्त्वा तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥ आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदेति ऋषिणोक्तत्वात् ॥ कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् ॥ अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैरिति ॥ एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥ परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिकेति च पुराणकृतोक्तत्वाच्च राजवैश्याभ्यां विधिवद्देव्याराधनं कृत्वैव स्वं स्वमभीष्टं प्राप्तमित्यवगम्यते ॥ विधिदृष्टं तु यत्कर्म करोत्यविधिना नरः ॥ फलं न किं तदाप्नोति क्लेशमात्रं हि तस्य तदिति याज्ञवल्क्यवचनादविधिनाऽऽराधनस्य फलाभावात् ॥ अत एव देवीमाहात्म्यकथनानन्तरमृषिणा तामुपैहि महाराज शरणमित्युक्तस्य समये ॥ भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः ॥ एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन्प्रधानं वक्तुमर्हसि ॥ आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन तद्द्विज ॥ विधिना सकलं ब्रूहि यथावत्प्रणतस्य मे इति राज्ञा विधिरवश्यं पृष्ट एव ॥ ऋषिणाऽपि तस्य डामरतन्त्रोक्तः स विधिरुपदिष्ट एव ॥ स विधिर्मार्कण्डेयपुराणस्यैवाध्यायसप्तकरूपः सर्वदेशेष्वपि प्रचरति ॥ तस्य पुराणान्तर्गतत्वेऽपि पुराणसंख्याबहिर्भूतत्वात्तत् खिलं नाम शिष्टा वदन्ति ॥ यथा वेदेषु हरिश्चन्द्रोपाख्यानश्रीसूक्तचरणव्यूहादयः परिशिष्टाः खिलाः प्रचरन्ति ॥ परिशिष्टत्वमेतेषां वेदान्तर्गतत्वेऽपि व्यासकृतशाखाग्रन्थसंख्याबहिर्भूतत्व तथाऽत्रापि ॥ यथा भारते हरिवंशः खिलस्तथैवेति तेषु सप्तस्वध्यायेषु आदितोऽध्यायत्रये रहस्याख्ये देव्या मूर्तिभेदा उक्तास्तदनन्तरमध्यायत्रये नवाक्षरमन्त्रस्तन्न्यासपूजादिकमुक्तं सप्तमे मन्त्रप्रस्तारक्रम उक्तः ॥ एवमध्यायसप्तकमपि मार्कण्डेयपुराणोक्तदेवीमाहात्म्याख्यमहामालामन्त्रोपासनायां

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

विनियुक्तमिति ॥ ४११ ॥ देवीभागवते नवमस्कन्धे विशेषः ॥ यन्त्रमस्याः शृणु प्राज्ञ त्र्यस्रषट्कोणसंयुतम् ॥ ततोऽष्टदलपद्मं च चतुर्विंशतिपत्रकम् ॥ ४१२ ॥ भूगृहेण समायुक्तं यन्त्रमेवं विचिन्तयेत् ॥ शालग्रामे घटे वाऽपि यन्त्रे वा प्रतिमासु वा ॥ ४१३ ॥ बाणे लिङ्गेऽथवा सूर्ये यजेद्देवीमनन्यधीः ॥ जयादिशक्तिसंयुक्ते पीठे देवीं प्रपूजयेत् ॥ ४१४ ॥ पूर्वकोणे सरस्वत्या सहितं पद्मजं यजेत् ॥ श्रिया सह हरिं तत्र नैर्ऋते कोणके यजेत् ॥ ४१५ ॥ पार्वत्या सहितं शंभुं वायुकोणे समर्चयेत् ॥ देव्या उत्तरतः पूज्यः सिंहो वामे महासुरम् ॥ ४१६ ॥ महिषं पूजयेदन्ते षट्कोणेषु यजेत्क्रमात् ॥ नन्दजां रक्तदन्तां च तथा शाकंभरीं शिवाम् ॥ ४१७ ॥ दुर्गां भीमां भ्रामरीं च ततो वसुदलेषु च ॥ ब्राह्मीं माहेश्वरीं चैव कौमारीं वैष्णवीं तथा ॥ ४१८ ॥ वाराहीं नारसिंहीं च ऐन्द्रीं चामुण्डकां तथा ॥ पूजयेच्च ततः पश्चात्तत्त्वपत्रेषु पूर्वतः ॥ ४१९ ॥ तत्त्वपत्रेषु चतुर्विंशतिपत्रेषु पूर्वतः देव्यग्रपत्रमारभ्य विष्णुमाया चेतना च बुद्धिर्निद्रा क्षुधा तथा ॥ छाया शक्तिः परा तृष्णा क्षान्तिर्जातिश्च लज्जया ॥ ४२० ॥ शान्तिः श्रद्धा कीर्तिलक्ष्म्यौ धृतिर्वृत्तिः श्रुतिः स्मृतिः ॥ दया तुष्टिस्ततः पुष्टिर्माता भ्रान्तिरिति क्रमात् ॥ ४२१ ॥ ततो भूपुरकोणेषु गणेशं क्षेत्रपालकम् ॥ बटुकं योगिनीश्चापि पूजयेन्मतिमान्नरः ॥ ४२२ ॥ इन्द्राद्यानपि तद्बाह्ये वज्राद्यायुधसंयुतान् ॥ पूजयेदनया रीत्या देवीं सावरणां ततः ॥ ४२३ ॥ तद्बाह्ये भूपुरे ॥ राजोपचारान्विविधान्दद्यादम्बाप्रतुष्टये ॥ ततो जपेन्नवार्णं च मन्त्रं मन्त्रार्थपूर्वकम् ॥ ४२४ ॥ मन्त्रार्थपूर्वकमिति ॥ अथ मन्त्रार्थः ॥ मन्त्रे बीजत्रयं क्रमेण महासरस्वतीमहालक्ष्मीमहाकालीनां वाचकम् ॥ विच्चे इत्यत्रापि वित् च इ इति पदत्रयं क्रमेण चित्सदानन्दानां वाचकं तच्च संबोधनान्तं बीजत्रयस्य क्रमेण विशेषणं चामुण्डापदं ब्रह्मविद्यावाचकं तादर्थ्ये चतुर्थी अनुसंदध्महे इति शेषः ॥ तथा चायमर्थः ॥ हे चिद्रूपिणि महासरस्वति हे सद्रूपिणि महालक्ष्मि हे आनन्दरूपिणि महाकालि त्वां चामुण्डायै ब्रह्मविद्याप्राप्त्यर्थम् अनुसंदध्महे ध्यायाम इत्यर्थः ॥ तदयं संग्रहः ॥ महासरस्वती चेति महालक्ष्मि सदात्मिके ॥ महाकाल्यानन्दरूपे तत्तत्त्वज्ञानसिद्धये अनुसंदध्महे इति । अयमर्थो गुप्तवत्यामस्ति ॥ ततः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सप्तशतीस्तोत्रं देव्या अग्रे तु संपठेत् ॥ नानेन सदृशं स्तोत्रं विद्यते भुवनत्रये ॥ ४२५ ॥ ततश्चानेन देवेशीं तोषयेत्प्रत्यहं नरः ॥ धर्मार्थ काममोक्षाणामालयं जायते नरः ॥ ४२६ ॥ नवरात्रे पठेदेतद्देव्यग्रे तु समाहितः ॥ देवीभागवतं सर्वं नवमस्कन्धमेव वा ॥ ४२७ ॥ परितुष्टा जगद्धात्री भवत्येव हि निश्चितम् ॥ नित्यमेकैकमध्यायं पठेद्यः प्रत्यहं नरः ॥ ४२८ ॥ तस्य वश्या भवेद्देवी देवीप्रिय करो हि सः ॥ शकुनांश्च परीक्षेत नित्यमस्मिन्यथाविधि ॥ ४२९ ॥ कुमारिदिव्यहस्तेन यद्वा बटुकराम्बुजात् ॥ मनोरथं तु संकल्प्य पुस्तकं पूजयेत्ततः ॥ ४३० ॥ देवीं च जगदीशानीं प्रणमेच्च पुनः पुनः ॥ सुस्नातां कन्यकां तत्रानीयाभ्यर्च्य यथाविधि ॥ ४३१ ॥ शलाकां रोपयेन्मध्ये तथा स्वर्णेन निर्मिताम् ॥ शुभं वाऽप्यशुभं तत्र यदायाति च तद्भवेत् ॥ ४३२ ॥ उदासीने ह्युदासीनं कार्यं भवति निश्चितम् ॥ एवं सप्तशतीग्रन्थे शकुनं च विलोकयेत् ॥ ४३३ ॥ अत्र शकुनावलोकने विशेषो मया प्रश्नस्कन्धे प्रतिपादित स्तत्र द्रष्टव्य इति ॥ ४३४ ॥ नारायण उवाच ॥ राजा येन क्रमेणैव भजेत्तां प्रकृतिं पराम् ॥तच्छ्रूयतां महाभाग वेदोक्तं क्रममेव च ॥ ॥ ४३५ ॥ स्नात्वाऽऽचम्य महाराजःकृत्वा न्यासत्रयं तदा ॥ स्वकराङ्गाङ्गमन्त्राणां भूतशुद्धिं चकार सः ॥४३६॥ प्राणायामं तदा कृत्वा कृत्वा च स्वाङ्गशोधनम् ॥ ध्यात्वा देवीं मृन्मयीं च चकारावाहनं तदा॥४३७॥ पुनर्ध्यात्वा च भक्त्या च पूजयामास भक्तितः ॥देव्याश्च दक्षिणे भागे संस्थाप्य कमलालयाम् ॥४३८॥ संपूज्य भक्तिभावेन भक्त्या परमधार्मिकः ॥ देवषट्कं समावाह्य देव्याश्च पुरतो घटे ॥ भक्त्या च पूजयामास विधिपूर्वं च नारद ॥ गणेशं च दिनेशं च वह्निं विष्णुं शिवं शिवाम् ॥ ४३९ ॥ तदा ध्यायन् महादेवीं ध्यानेनानेनभक्तितः॥ ध्यानं च सामवेदोक्तं परं कल्पतरुं मनुः ॥ ४४० ॥ ध्यायेन्नित्यां महादेवीं मूलप्रकृतिमीश्वरीम् ॥ ब्रह्मविष्णुशिवा दीनां पूज्यां वन्द्यां सनातनीम् ॥ ४४१ ॥ नारायणीं विष्णुमायां वैष्णवीं विष्णुभक्तिदाम् ॥ सर्वस्वरूपां सर्वेशां सर्वाधारां परात्पराम् ॥ ॥ ४४२ ॥ तप्तकाञ्चनवर्णाभां सूर्यकोटिसमप्रभाम् ॥ ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां भक्तानुग्रहकातराम् ॥ ४४३ ॥ दुर्गां शतभुजां देवीं भक्तदुर्गार्तिनाशिनीम् ॥ त्रिलोचनप्रियां साध्वीं त्रिगुणां च त्रिलोचनाम् ॥ ४४४ ॥ बिभ्रतीं कबरीभारं मालतीमाल्यमण्डितम् ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वर्तुलं वामवक्रं च शंभोर्मानसमोहनम् ॥ ४४५ ॥ नासादक्षिणभागेन बिभ्रतीं गजमौक्तिकम् ॥ सिन्दूरबिन्दुनादश्चेद्भालमध्यस्थ लोज्ज्वलाम् ॥ ४४६ ॥ वह्निशुद्धांशुकाधानां गन्धचन्दनचार्चिताम् ॥ बिभ्रतीं स्तनयुग्मं च कस्तूरीचित्रशोभितम् ॥ ४४७ ॥ विधातुश्च विधात्रीं च सर्वधात्रीं च शांकरीम् ॥ सृष्टौ स्रष्टुः शिल्परूपां दयां पातुश्च पालने ॥ ४४८ ॥ संहारकाले संहर्तुः परां संहाररूपिणीम् निशुम्भशुम्भमथिनीं महिषासुरमर्दिनीम् ॥ ४४९ ॥ इति ध्यत्वा स्वशिरसि पुष्पं दत्त्वा विचक्षणः ॥ पुनर्ध्यात्वा च भक्त्या च कुर्यादावाहनं ततः ॥ ४५० ॥ प्रकृतेः प्रतिमां ध्यात्वा मन्त्रमेवं पठेत्ततः ॥ जीवन्यासं ततः कुर्यान्मनुनाऽनेन यत्नतः ॥ ४५१ ॥ एह्येहि भगवत्यम्ब शिवलोकात्सनातनि ॥ गृहाण मम पूजां च शारदीयां सुरेश्वरि ॥ ४५२ ॥ इहागच्छ जगत्पूज्ये तिष्ठ तिष्ठ महेश्वरि ॥ हे मातरस्यामर्चायां सन्निरुद्धा भवाम्बिके ॥ ४५३ ॥ इहागच्छन्तु तत्प्राणाश्चाधःप्राणैः सहा च्युते ॥ इहागच्छन्तु त्वरितं तत्रैव सर्वशक्तयः ॥ ४५४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं च दुर्गायै वह्निजायान्तमेव च ॥ समुच्चार्योरसि प्राणाः संतिष्ठन्तु सदा शिवे ॥ ४५५ ॥ सर्वेन्द्रियाधिदेवास्ते इहागच्छन्तु चण्डिके ॥ इहागच्छतु ते शक्त्या इहागच्छन्तु चेश्वरः॥ ॥ ४५६ ॥ इत्यावाह्य महादेवीं परिहारं करोति च ॥ मन्त्रेणानेन विप्रेन्द्र तच्छृणुष्व समाहितः ॥ ४५७ ॥ स्वागतं भगवत्यम्ब शिवलोकाच्छिवप्रिये ॥ प्रसादं कुरु मां भद्रे भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ ४५८ ॥ धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं सफलं जीवनं मम ॥ आगताऽसि यतो मातर्माहेश्वरि ममालयम् ॥ ४५९ ॥ अद्य मे सफलं जन्म सार्थकं जीवनं मम ॥ पूजयामि यतो दुर्गां पुण्य क्षेत्रे च भारते ॥ ४६० ॥ इति कृत्वा परीहारं देव्या वामे च साधकः ॥ त्रिपद्या उपरिष्टाच्च कुर्याच्च शङ्खस्थापनम् ॥ ४६१ ॥ तत्र दत्त्वा जलं पूर्णं दूर्वां पुष्पं च चन्दनम् ॥ धृत्वा दक्षिणहस्तेन मन्त्रमेवं पठेन्नरः ॥ ४६२ ॥ शङ्खस्त्वं शङ्खपुण्यानां मङ्गलानां च मङ्ग लम् ॥ प्रभवः शङ्खचूडस्य पुरा कल्पे पवित्रकम् ॥ ३६३ ॥ ततोऽर्घ्यपात्रं संस्थाप्य विधिनाऽनेन पण्डितः ॥ दत्त्वा संपूजयेद्देवी मुपचाराणिषोडश ॥ ४६४ ॥ त्रिकोणं मण्डलं कृत्वा सजलेन कुशेन च ॥ कूर्मं शेषं धरित्रीं च संपूज्य तत्र धार्मिकः ॥ ४६५ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

त्रिपदीं स्थापयेत्तत्र त्रिपद्यां शङ्खमेव च ॥ शंखे त्रिभागतोयं च दत्त्वा संपूजयेत्ततः ॥ ४६६ ॥ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ ४६७ ॥ वह्निं सूर्यं च चन्द्रं च विष्णुं च वरुणं शिवम् ॥ पूजयेत्तत्र तोये च तुलस्या चन्दनेन च ॥ ४६८ ॥ नैवेद्यानि च सर्वाणि प्रोक्षयेत्तज्जलेन च ॥ आसनं वसनं पाद्यं स्नानीयमनुलेपनम् ॥ ४६९ ॥ मधुपर्कं गन्धमर्घ्यं पुष्पं नैवेद्यमीप्सितम् ॥ पुनराचमनियं च ताम्बूलं वस्त्रभूषणम् ॥ ४७० ॥ धूपः प्रदीपस्तल्पं चेत्युपचारास्तु षोडश ॥ अमूल्यरत्ननिर्माणं नानाचित्रविराजितम् ॥ ४७१ ॥ वरं सिहासनं श्रेष्ठं गृह्यतां शंकरप्रिये ॥ अतन्तुसूत्रप्रभवमीश्वरेच्छाविनिर्मितम् ॥ ४७२ ॥ ज्वलदग्निविशुद्धं च वसनं गृह्यतां शिवे ॥ अमूल्यरत्नपात्रस्थं निर्मलं जाह्नवीजलम् ॥ ४७३ ॥ पादप्रक्षालनार्थाय दुर्गे पाद्यं च गृह्यताम् ॥ सुगन्ध्यामलकीस्निग्धद्रव्यमेव सुदुर्लभम् ॥ ४७४ ॥ सुपक्वविष्णुतैलं च गृह्यतां परमेश्वरि ॥ कस्तूरीकुङ्कुमाक्तं च सुगन्धि चन्दनं द्रवम् ॥ ४७५ ॥ सुवासितं जगन्मातर्गृह्यतामनुलेपनम् ॥ माध्वीको रत्नपात्रस्थः सुपवित्रः सुमङ्गलः ॥ ४७६ ॥ मधुपर्को महादेवि गृह्यतां प्रीतिपूर्वकम् ॥ पवित्रः शङ्खपात्रस्थः सुपवित्रः सुमङ्गलः ॥ ४७७ ॥ मधुपर्को महादेवि दूर्वापुष्पाक्षतान्वितः ॥ स्वर्गमन्दाकिनीतोयमर्घ्यं चण्डि गृहाण मे ॥ ४७८ ॥ मालत्यादिपुष्पमाला गृह्यतां परमेश्वरि ॥ दिव्यं स्निग्धान्नसामान्नं पिष्टकं पायसादिकम् ॥ ४७९ ॥ मिष्टान्नं लड्डुकफलं नैवद्यं गृह्यतामुमे ॥ सुवासितं शीतोयं कर्पूरादिसुसंस्कृतम ॥ ४८० ॥ मया निवेदितं भक्त्या गृह्यतां शैलकन्यके ॥ गुवाकपर्णचूर्णं च कर्पूरादिसमन्वितम् ॥ ४८१ ॥ सर्वभोगपरं रम्यं ताम्बूलं देवि गृह्यताम् ॥ एवं संपूज्य तां दुर्गां दद्यात्पुष्पाञ्जलिं मुने ॥ ४८२ ॥ ततोऽष्ट नायिका देव्या यत्नतः परिपूजयेत् ॥ उग्रचण्डां प्रचण्डां च चण्डोग्रां चण्डनायिकाम् ॥ ४८३ ॥ अतिचण्डां च चामुण्डां चण्डां चण्वतीं तथा ॥ पद्मस्याष्टदले चैताः प्रागादिक्रमशस्ततः ॥ ४८४ ॥ पञ्चोपचारैः संपूज्य भैरवान्मध्यदेशतः ॥ आदौ महाभैरवं च संहारभैरवं तथा ॥ ४८५ ॥ असिताङ्गं भैरवं च रुरुभैरवमेव च ॥ ततः कालं भैरवं च क्रोधं भैरवमेव च ॥ ४८६ ॥ एतान् संपूज्य

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मध्ये च नवशक्तिश्च पूजयेत् ॥ततः पद्मं चाष्टदले मध्ये च भक्तिपूर्वकम् ॥ ४८७ ॥ वैष्णवीं चैव ब्रह्माणीं रौद्रीं माहेश्वरीं तथा ॥ नारसिंहीं च वाराहीमिन्द्राणीं कार्तिकीं तथा ॥ ४८८ ॥ सर्वशक्तिस्वरूपां च प्रधानं सर्वमङ्गलम् ॥ शंकरं कार्तिकेयं च सूर्यं सोमं हुताशनम् ॥ ४८९ ॥ वायुं च वरुणं चैव देव्याश्चेटिं बटुं तथा ॥ चतुःषष्टियोगिनीश्च संपूज्य विधिपूर्वकम् ॥४९०॥ यथाशक्ति बलिं दत्त्वा करोति स्तवनं बुधः ॥ कवचं च गले बद्ध्वा पठित्वा भक्तिपूर्वकम्॥४९१॥ततः कृत्वा परीहारं नमस्कुर्याद्विचक्षणः॥४९२॥इति श्रीहरिकृष्णविरचिते बृ० ध० उपासनास्तबके दुर्गोपासनाध्यायेऽनेकतन्त्रगृहीतसप्तशतिदुर्गापटलनिरूपणं नाम त्रिंशं प्रकरणम् ॥३०॥

अथ नित्यचण्डीविधानं तत्रैव ॥ नित्यचण्डयादिजाप्यस्य विधानं ते वदाम्यहम् ॥ क्रमेण सर्वकार्याणां सिद्धये यज्ञपुण्यदम् ॥ १ ॥ पूर्वोक्तविधिना कृत्वा चण्डिकातर्पणादिकम् ॥ शुक्लभूतामवष्टभ्य मासं प्रतिदिनं जपेत् ॥ २ ॥ रहस्यत्रयसंयुक्तं चण्डिका चरितत्रयम् ॥ दशांशहोमसहितं सोच्यते नित्यचण्डिका ॥ ३ ॥ धनपुत्रयशोदात्री महाव्याधिविनाशिनी ॥ महाभयमहादुःख हन्त्री सौख्यप्रदायिनी ॥ ४ ॥ अथास्याः प्रयोगः ॥ तत्र साधकः कृतनित्यक्रियः पूजास्थानं प्रविश्य पूर्वाभिमुख स्वासने समुपविश्य कुशहस्तः प्राणानायम्य स्वेष्टदेवतां स्मरन् अद्यामुकमासपक्षतिथिवारर्क्षयोगकरणादिषु अमुकराशिगते सवितरि शुक्ल पक्षे चतुर्दश्यां विशेषक्षेत्रे अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहममुकफलाप्तये अद्यारभ्य मासमात्रं नित्यचण्डिजपं करिष्ये इति संकल्प्य प्राग्वत्पूजादिकं कृत्वा प्राग्वन्मूलमन्त्रं जपित्वा देव्या यच्चारितत्रयं नवार्णादिन्यासपूर्वकं सरहस्यं सकृज्जपेत् ॥ कवचार्गला कीलककपूर्वकमपि पठेत् ॥ इति डामरे ॥ आदौ नारायणं नमस्कृत्येति पठित्वा पाठः कार्यः ॥ तत्र चरितत्रयस्य ऋष्यादिकं पठित्वा पाठं कुर्यात् ॥ एवमेकमासं जपित्वा मासानन्तरं वक्ष्यमाणविना कुण्डे स्थण्डिले वाऽग्निं संस्थाप्य सघृतपायसैस्तिल मिश्रैर्मूलमन्त्रस्य जपदशांशहोमपुरःसरं वक्ष्यमाणविधिना हुत्वा पूर्णाहुतिं च हुत्वा ब्राह्मणान् कुमारिकाः सुवासिनीश्च संपूज्य भोजयित्वा ताम्बूलदक्षिणादिभिः परितोष्य प्रणम्य विसृजेत् ॥ एवं स्वयं कर्तुमशक्तश्चेद्ब्राह्मणद्वारा कारयित्वा तं वस्त्रालंकारा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दिभिर्दक्षिणाभिर्भूयसीभिः परितोषयेत् ॥ इति महालक्ष्मीपूजाक्रमकल्पवल्ल्यां नित्यचण्डीविधानम् ॥ अथ नित्यनवचण्डी विधानं दुर्गापटले मया प्रतिपादितं तत्र द्रष्टव्यमिति ॥ इति श्रीहरिकृष्ण० बृ० ध० उपासनास्तबके दुर्गोपासनाध्याये नित्य चण्डीविधानप्रयोगकथनं नामैकत्रिंशं प्रकरणम् ॥३१॥ अथ नवरात्रिनवचण्डी दुर्गाविधानम् ॥ उक्तं च नागोजीभट्टीये ॥ अथातः संप्र वक्ष्यामि नवरात्रिविधानकम् ॥ जपेदेकोत्तरां वृद्धिं दिनानि नव संख्यया ॥ १ ॥ नवाक्षरीविधानेन संपूज्याथ विचक्षणः ॥ सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रं प्रत्येकं च यथाविधि ॥ २ ॥ मध्ये चैकोत्तरां वृद्धिं जपेद्देव्याः स्तवं मनुम् ॥ हुत्वा दशांशतो होमं तत्र सिद्धिं समाप्नुयात् ॥ ३ ॥ आश्विनस्य सिते पक्ष आरभ्याग्नितिथिं सुधीः ॥ अष्टम्यन्तं जपेल्लक्षं दशांशं होममाचरेत् ॥ ४ ॥ अथ नवदुर्गाविधिः ॥ महालक्ष्मीपूजाक्रमकल्पवल्ल्याम् ॥ शुक्लाष्टमीमवष्टभ्य यावच्छुक्लचतुर्दशी ॥ नवदुर्गा विधातव्या सर्व कामफलार्थिभिः ॥ ५ ॥ अथ प्रयोगः ॥ तत्र साधकः कृतनित्यक्रियः प्राग्वत्तिथ्याद्युल्लेखनं कृत्वा नवदुर्गाविधानमहं करिष्य इति संकल्प्य प्राग्वद्देवीं संपूज्य देव्यग्रे शालिपुञ्जोपरि स्वर्णादिरचितं कुम्भं नवतन्तुना वेष्टितं चन्दनादिचर्चितं सुधूपितं सहि रण्यं वज्रमुक्ताफलपद्मरागनीलमरकतैः पञ्चरत्नैः समायुक्तम् ॥ मही द्यौरिति भूमिं स्पृष्ट्वा ॥ ओषधयः समिति मन्त्रेण धान्यराशिं स्पृष्ट्वा ॥ आजिघ्र कलशम् इति कलशं संस्थाप्य ॥ इमं मे गङ्गे इति जलेनापूर्य ॥ तत्र कुङ्कुमागरुकर्पूरचन्दनपङ्कं सुकुसुमानि च निक्षिप्य तस्य मुखे आम्रदलानि निधाय तदुपरि नालिकेरफलाढ्यं सतन्दुलं कलशजातीयं पात्रं निधाय पूर्णा दर्वीति मन्त्रेण मन्त्रयेत् ॥ युवा सुवासा इति रक्तवस्त्रेणावेष्ट्य कुम्भस्य दशदिक्षु पूर्वादिक्रमेणेन्द्रादिदशदिक्पालान् संपूज्य स्वयं चन्दनागरुकुङ्कुमादिलिप्ताङ्गः सुवस्त्रमाल्याद्यलंकृतः प्राग्वत्कृतन्यासः सप्तशतीपाठं मूलमन्त्रजपपुरःसरं मौनी ध्यानपरायणः प्रत्यहमेकैकामावृत्तिं पठित्वा दशमे दिवसे वक्ष्यमाणविधिना कुण्डादावग्निं संस्थाप्य प्राग्वद्धोमं कृत्वा ब्राह्मणान् कुमारिकाः सुवासिनीश्च पूजाभोजनताम्बूलदक्षिणादिभिः परितोष्य प्रणम्य विसृजेत् ॥ अत्रापि स्वयमशक्तश्चेद्ब्राह्मणद्वारा यथोक्तविधिना

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

जपादि कारयित्वा तं दक्षिणादिभिः परितोषयेदिति ॥ एतस्यैव विधानस्य कृष्णपक्षे षष्ठ्यादिचतुर्दश्यन्तं क्रियमाणस्य काल रात्रिरिति नाम उक्तं तत्रैव ॥ यद्ययं क्रियते जाप्यः कालरात्रिरुदीरिता ॥ महाकालोद्भवं खं कालरात्रिर्व्यपोहति ॥ नवदुर्गाविधानेऽपि यत्फलं परिकीर्तितम् ॥ कालरात्रिविधानेऽपि तत्फलं लभते ध्रुवम् ॥ एतत्त्रिगुणितं सर्वं नवदुर्गा जपे फलम् ॥ कथितं तदवाप्नोति नित्यचण्डीजपे कृते ॥ इति नवदुर्गाविधिः ॥ अथ नवचण्डीविधिः ॥ तत्रैव शर द्दताविषे मासे शुक्लपक्षे नृपोत्तम ॥ प्रतिपत्तिथिमारभ्य नवचण्डीं समारभेत् ॥ १ ॥ तोरणाढ्ये शुभे स्थाने सुविताने स्वलंकृते ॥ पूर्वादिक्रमयोगेन दिग्देवीभ्यो बलिं हरेत् ॥ २ ॥ गन्धपुष्पाक्षतैर्धूपैर्दीपैश्चरुभिरुत्तमैः ॥ अथ प्रयोगः ॥ तत्रा श्विनशुक्लप्रतिपदि पूर्वाह्णे तिलतैलेन कृताभ्यङ्गो यजमानः साधकः कृतनित्यक्रियः सुसंस्कृते शुभे स्थाने सुरम्ये गृहे तोरणा द्यलंकृते कदलीस्तम्भमण्डिते सुधूपद्रव्यधूपिते सुदीपप्रकाशाढ्ये स्वासने प्राङ्मुखः समुपविश्याचम्य प्राणानायम्य सुमुखश्चे त्यारभ्य एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं वा कालीसरस्वतीप्रीत्यर्थं सकलमनोरथफलावाप्त्यर्थं चतु र्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं नवचण्डीविधानमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य गणेशपूजनादि कृत्वा तस्मिन् गृहे पूर्वस्यां दिशि कादम्बरीं गजवाहनां ध्यात्वा कादम्बरि देवि इहागच्छेत्यावाह्य क्वचित्पीठे संस्थाप्य श्रीकादम्बरि एष ते गन्धः ॥ एवम् इमानि ते पुष्पाणि वौषट् ॥ एष ते धूपो नमः ॥ एष ते दीपो नमः ॥ तदग्रे पात्रान्तरे घृतशर्करासहितं पायसं नानाव्यञ्जनादिसहितं निधाय ॥ श्री कादम्बरि एष ते बलिर्नमः इति बलिमुत्सृज्य क्षमस्वेति प्रणमेत् ॥ एवमाग्नेय्यामुल्कामजवाहनां संपूज्य बलिं दत्त्वा ॥ दक्षिणे महिषारूढां करालीं संपूज्य बलिं दत्त्वा ॥ नैर्ऋते प्रेतवाहनां रक्ताक्षीं संपूज्य बलिं दत्त्वा ॥ पश्चिमे श्वेतकौलीरवाहनां श्वेतां संपू ज्य ॥ वायव्ये मृगवाहनां हरिताम् ॥ उदीच्यां सिंहवाहनां यक्षिणीम् ॥ ईशान्यां वृषवाहनां कङ्कालीं संपूज्य ॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये हंसवाहनां सुरज्येष्ठामावाह्य सं० ॥ निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये अहिवाहनां सर्पराज्ञीं संपूज्य बलिं दत्त्वा ॥ दशदिक्षु यथाक्रमेणेन्द्रादी

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नपि संपूज्य गृहमण्डले स्वशाखोक्तविधिना नव ग्रहान् यथास्थानं संपूज्य चतुरस्रचतुर्हस्तवेदिकायां सर्वतोभद्रं वाऽष्टदलं विधाय तत्र मही द्यौरिति वरुणपूजान्तं कलशस्थापनं कुर्यात् ॥ कलशस्तु देव्यग्रे शालिपुञ्जोपरि स्वर्णादिरचितो नवतन्तुना वेष्टितश्चन्दनादिचर्चितः सुधूपितः ॥ तत्र वज्रमुक्ताफलनीलपद्मरागमरकताख्यपञ्चरत्नानि क्षिपेत् ॥ मुखे आम्रदलानि निधाय तदुपरि नालिकेरफलाढ्यं सतन्दुलं कलशसजातीयमुत्तमं वा पात्रं निधाय ॥ रक्तवस्त्रेणावेष्ट्य कुम्भदशदिक्षु पूर्वादिक्रमेणेन्द्रादि दशदिक्पालान्संपूज्य तत्र देवीप्रतिमायामग्न्युत्तारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा स्थापयेत् ॥ महिषासुरमर्दिनीमूर्तिलक्षणं मूर्तिलक्षणा ध्याये प्रतिपादितम् ॥ तादृशं ध्यात्वा ॥ एहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थं मम सर्वदा ॥ आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थसिद्धये ॥ अस्यां मूर्तौ समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥ रक्षां कुरु सदा भद्रे विश्वेश्वरि नमोऽस्तु ते ॥ इति आवाहनम् ॥ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ अनेन पूजां कुर्यात् ॥ उपासनापद्धतिज्ञान वांश्चेत्पूर्वोक्तप्रकारेण न्यासादिपात्रासादनपूजनावरणपूजनानि कुर्यात् ॥ ततः प्रार्थयेत् ॥ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्ड मालिनि ॥ द्रव्यमारोग्यविजयं देहि देवि नमः सदा ॥ भूतप्रेतपिशाचेभ्यो रक्षोभ्यश्च महेश्वरि ॥ देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च भयेभ्यो रक्ष मां सदा ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये० रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे ॥ पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामान् प्रदेहि मे ॥ इति संप्रार्थ्य मूलमन्त्रजपं कृत्वा आदौ नारायणादीन् नमस्कृत्य कवचार्गलाकीलकपूर्वकं चण्डीचरित्रत्रयं रहस्यत्रययुतं जपित्वा स्वयमशक्नुवंश्चेद्ब्राह्मणं संपूज्य चण्डीपाठार्थं त्वामहं वृणे ॥ इति पूगीफलं सदक्षिणं तत्करे दत्त्वा जापयित्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा नमस्कुर्यात् ॥ अथ कुमारीपूजनम् ॥ पूजादिनात्पूर्वदिने गन्धपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमन्त्रिताऽसि मां कृतार्थयेति निमन्त्रितां प्रातराहूयाभ्यङ्गादिपरिष्कृतां समलंकृतां पूजागृहं नीत्वा अष्टदलपद्मोपरि सपादपीठे समुपवेश्य तस्याः पादावुष्णेन वारिणा मण्डलोपरि प्रक्षाल्य वस्त्रेण प्रोञ्छ्य स्वस्तिकासनोपविष्टां तां महालक्ष्मीस्वरूपां ध्यायेत् ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातॄणां रूपधारिणीम् ॥ नव दुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ इत्यावाह्य आवाहनादिपरमीकरणान्ता मुद्राः प्रदर्श्य ध्यानपुरःसरं मूलमन्त्रेण दीपान्तं संपूज्य षड्रसोपेतं पञ्चविधं नैवेद्यं समर्प्य यावद्भोजनं करोति तावन्मौनी नवाक्षरं मूलं जपेत् ॥ पानीयं दत्त्वा हस्तप्रक्षालनं करोद्वर्त्तनम् आचमनं च समर्प्य सकर्पूरताम्बूलविशिष्टवस्तुदक्षिणाप्रदक्षिणानमस्कारैः संतोष्य हर्षपूर्वकं तां विसर्जयेदिति कुमारीपूजनविधिः ॥ अत्र कुमारीलक्षणम् ॥ नामानि कामनाभेदेन पूजनमन्त्राश्च अस्मिन् ग्रन्थे कुमारीपूजनाध्याये प्रतिपादिता द्रष्टव्याः ॥ कुमारीपूजनफलं डामरे ॥ यं यं प्रार्थयते कामं देवानामपि दुर्लभम् ॥ कुमारीपूजनं कृत्वा तं तं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥ शतक्रतुफलं तस्य यः कुमारीं प्रपूजयेत् ॥इत्यादि॥ ततः श्रीगुरुपूजनं यथावत्कृत्वा ब्राह्मणपूजनं विधाय ब्राह्मणान् भोजयित्वा ताम्बूलदक्षिणादिभिः परितोषयेत् ॥ एवं प्रतिपत्कृत्यं विधायैवमेव द्वितीयायां द्विगुणं त्रिगुणं तृतीयायां चतुर्गुणं चतुर्थ्यामेवमेकोत्तरवृद्ध्या कुमारीपूजनं ब्राह्मणसमाराधनं च नवम्यन्तं नवम्यां नवगुणं यथा भवति तथा कुर्यात् ॥ ततो नवम्यां कृतजपदशांशहोमः कार्यः ॥ तत्र नवचण्ड्यां हस्तमात्रं समन्ताच्चतुर्विंशत्यंगुलं कुण्डं स्थण्डिलं वा विधाय ॥ तत्र पायसतिलाज्यद्रव्याणि फलपुष्पादिसंभारान् संपाद्य पूर्वोच्चारितैवंगुणविशेषण० मया कृतस्य कारितस्य वा जपस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थं दशांशेन तिलाज्यपायसादिद्रव्यैः होमं करिष्य इति संकल्प्य ॥ स्वगृह्योक्तविधिना आगमोक्तविधिना वा अग्निमुखं कुर्यात् ॥ तत्र आगमोक्तं यथा मूलेन कुण्डं वीक्ष्यास्त्रेण संप्रोक्ष्य तेनैव दर्भैः संताड्य कवचेनाभ्युक्ष्य अश्वत्थसमिधो मूलेन प्रागग्रा उदगग्राश्च तिस्रो लेखाः कृत्वा प्रागग्रासु विष्णुशिवशक्रान् उदगग्रासु ब्रह्मयमचन्द्रान् अभ्यर्च्य मध्ये त्र्यस्रषट्कोणाष्टदलवृत्तचतुरस्राणि लिखित्वा योगपीठे वागीश्वरीं च संपूज्याग्नेर्वीक्षणादि कृत्वा यथा वामनासया ह्रीमिति आकृष्य भ्रूमध्यस्थेन जठरस्थेन एकीकृत्य ह्रीमिति अंकुशमुद्रया रेचकेन अं ह्रीं वह्निचैतन्याय नम इति बहिरग्नौ प्रविष्टं ध्यात्वा मूलेनाभिमन्त्र्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्यास्त्रेण संरक्ष्य कवचेनावगुण्ठ्य गन्धाद्यैः संपूज्य मूलेन प्रतिष्ठाप्य ॐ चित्पिङ्गल हन २ दह २ पच २ सर्वं ज्ञापय २ स्वाहा ॥ ज्वालिनी

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मुद्रां प्रदर्श्य मध्यमे मीलितं कृत्वा तन्मध्येऽङ्गुष्ठकौ क्षिपेत् ॥ मुद्रेयं सप्तजिह्वा स्याद्दर्शयेज्जातवेदसे ॥ इति ॥ इन्धनैः समिधाऽस्त्रेण प्रज्वाल्य दर्व्याः कंकणं बद्ध्वा अग्नेर्गर्भाधानादिसंस्कारान्कुर्यात् ॥ प्रतिसंस्कारं मूलेनाज्येन त्रिर्जुहुयात् ॥ नामकर्मणि तु शतमङ्गला नामाऽसि त्वं हुताशनेति नाम कृत्वा जुहुयात् ॥ अथ स्वदेहे न्यासः ॥ ॐ स्त्र्यूं पद्मरागायै नमोऽग्निजिह्वायै नमः लिङ्गे ॥ ॐ श्रूं सुवर्णायै नमोऽग्निजिह्वायै नमः हृदये ॥ ॐ श्यूं भद्रलोहितायै नमोऽग्निजिह्वायै नमः शिरसि ॥ ॐ लूं लोहितायै नमोऽग्निजिह्वायै नमः मुखे ॥ ॐ ल्यूं श्वेतायै नमोऽग्निजिह्वायै नमः घ्राणे ॥ ॐ म्रूं धूमिन्यै नमोऽऽग्निजिह्वायै नमः नेत्रयोः ॥ ॐ मूं करात्यै नमोऽग्निजिह्वायै नमः सर्वाङ्गे ॥ अथ षडङ्गन्यासः ॥ ॐ सहस्रार्चिषे नमः हृदयाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति पूर्णाय नमः शिरसे स्वाहा ॥ ॐ उत्तिष्ठ पुरुषाय नमः शिखायै वषट् ॥ ॐ धूमव्यापिने नमः कवचाय हुम् ॥ ॐ सप्तजिह्वाय नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ धनुर्धराय नमः अस्त्राय फट् ॥ अथाङ्गन्यासः ॥ ॐ अग्नये जातवेदसे नमः मूर्ध्नि ॥ ॐ अग्नये सप्तजिह्वाय नमः दक्षिणांसे ॥ ॐ अग्नये हव्यवाहनाय नमः दक्षिणकटचाम् ॥ ॐ अग्नये अश्वोदराय नमः लिङ्गे ॥ ॐ अग्नये वैश्वानराय नमः वामकटचाम् ॥ ॐ अग्नये कौमारतेजसे नमः वामपार्श्वे ॥ ॐ अग्नये विश्वमुखाय नमः वामांसे ॥ ॐ अग्नये देवमुखाय नमः शिखायाम् ॥ ततोऽग्निं चत्वारि शृङ्गेति ध्यात्वा परिसमुह्य परिस्तीर्य पर्युक्ष्य मेखलासु क्रमेण ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् योनौ गौरीं च संपूज्य वह्नौ यन्त्रं विचिन्त्य आग्नेयादिषट्कोणेषु पुरतः पश्चात् मध्ये च स्त्र्यूं पद्मरागायै नमः इत्यादिपूर्वोक्तसप्तजिह्वाः संपूज्याग्नेयादिकोणेषु पुरतः पश्चाच्च सहस्रार्चिषे इत्यादिषडङ्गानि संपूज्य पूर्वाद्यष्टदलेषु अग्नये जातवेदसे नम इत्याद्यष्टौ मूर्तीः संपूज्य चतुरस्रे इन्द्रादीन् सायुधान् संपूज्य कुण्डं नवसूत्र्या संवेष्टच पात्रासादनादि स्वगृह्योक्तं कृत्वा निर्वापादिना प्रभूतं पायसं श्रपयित्वाऽऽज्यं चरुं ह्रीमित्यभिमन्त्र्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य स्विष्टकृन्मौनी वह्नौ तिस्रः समिधोऽभ्याधाय वामदक्षिणयोरिडां पिङ्गलां मध्ये सुषुम्नां च ध्यात्वा चक्षुषी हुत्वा अग्नीषोमाभ्याम् अग्नये स्विष्टकृते मध्ये च हुत्वा पूर्वोक्त

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सप्तजिह्वाभ्यः मूर्तिभ्यश्च तत्तन्मन्त्रैरेककामाज्याहुतिं हुत्वा सर्पेभ्यः पितृभ्यो गन्धर्वेभ्यः पक्षिभ्यो नागेभ्यः पिशाचेभ्यो राक्षसेभ्यो हुत्वा श्रीगणेशमन्त्रेण जुहुयात् ॥ ततः पूर्वोक्तसर्वन्यासान् कृत्वा वह्नौ पीठपूजां कृत्वा देवीमावाह्यावाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य षडङ्गं कृत्वा षोडशोपचारैः संपूज्य मूलेन शतमेकादशाधिकमाज्याहुतीर्हुत्वा नवग्रहेभ्यो लोकपालेभ्यश्च तत्तन्मन्त्रैः समिदाज्य चरून् हुत्वा पायसतिलपालाशपुष्पसर्षपपूगीफललाजादूर्वांकुरयवबिल्वफलरक्तगुग्गुलद्रव्याणि तिलमिश्रपायसमेव वा कवचार्गलाकीलकरहस्यैः प्रतिश्लोकं हुत्वा जपस्य दशांशेन प्रतिश्लोकं सप्तशतीमन्त्रोक्तद्रव्याणि तिलपायसं वा जुहुयात् ॥ अध्याय समाप्तौ उवाचस्थले च पत्रपुष्पफलैर्होमः ॥ यद्वा तिलैर्देव्या इत्यनेन नवार्णेन वा जपदशांशहोमः॥एवं प्रधानहोमं कृत्वा नामभिः स्रुवेणाज्यं पायसं च जुहुयात् ॥ यथा ॐ कादम्बर्यै स्वाहा ॥ ॐ उल्कायै स्वाहा ॥ ॐ करालयै० ॥ ॐ श्वेतकौबेर्यै० ॥ ॐ हरितायै० ॥ ॐ यक्षिण्यै० ॥ ॐ कङ्कालयै० ॥ ॐ सुरश्रेष्ठायै ॥ ॐ सर्पराज्यै० ॐ ब्राह्म्यै० ॥ ॐ माहेश्वर्यै० ॥ ॐ कौमार्यै० ॥ ॐ वैष्णव्यै० ॥ ॐ वाराह्यै० ॥ ॐ ऐन्द्र्यै० ॥ ॐ नारसिंह्यै० ॥ ॐ चामुण्डायै० ॥ ॐ धात्रे० ॥ ॐ विधात्रे०॥ ॐ शङ्खनिधये० ॥ ॐ पद्मनिधये० ॥ ॐ द्वारश्रियै० ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय० ॥ ॐ ऐरावताय० ॐ पुण्डरीकाय० ॥ ॐ वामनाय० ॥ ॐ कुमुदाय० ॥ ॐ अञ्जनाय० ॥ ॐ पुष्पदन्ताय० ॥ ॐ सार्वभौमाय० ॥ ॐ सुप्रतीकाय० ॥ ॐ दमनाय० ॥ ॐ पुण्डरीकाय० ॥ ॐ गुग्गुलाय० ॥ ॐ कुरण्टकाय० ॥ ॐ ऋग्वेदाय० ॥ ॐ यजुर्वेदाय० ॥ ॐ सामवेदाय० ॥ ॐ अथर्वणवेदाय० ॥ नवग्रहाणां दिक्पालानां च नामभिः ॥ ॐ असिताङ्गभैरवाय० ॥ ॐ रुरुभैरवाय० ॥ ॐ चण्डभैरवाय० ॥ ॐ क्रोधभैरवाय० ॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय० ॥ ॐ कपालभैरवाय० ॥ ॐ भीषणभैरवाय० ॥ ॐ संहारभैरवाय० ॥ ततः पूर्वोक्ताधारशक्त्यादिपीठदेवताभ्यः आवरणदेवताभ्यश्च हुत्वा स्विष्टकृतं हुत्वा ॥ ॐ ह्रीं ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही नारसिंही ऐन्द्री चामुण्डायै विच्चे स्विष्टकृते स्वाहा इति स्विष्टकृतं हुत्वाऽऽज्यं जुहुयात् ॥ ॐ ह्रीं नन्दायै विच्चे स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै० ॐ ह्रीं शाकंभर्यै० ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ ह्रीं दुर्गायै० ॥ ॐ ह्रीं भीमायै० ॥ ॐ ह्रीं भ्रामर्यै० ॥ ॐ ह्रीं कालिकायै० ॥ ॐ ह्रीं शिवदूत्यै० ॥ ॐ ह्रीं प्रजापते स्वाहेति हुत्वा प्रायश्चित्ताज्याहुतीर्हुत्वा दिक्पालनवग्रहविनायकादिक्षेत्रपालादिभ्यो माषभक्तबलीन्दत्त्वा द्वादशगृहीतेनाज्येन समुद्रादूर्मिरिति मंत्रेण मूर्धानं दिवो०पुनस्त्वाऽऽदित्या० पूर्णा दर्वि० सप्त ते अग्ने० धामन्ते० इत्येतैर्मूलेन च पूर्णाहुतिं हुत्वा इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये महालक्ष्म्यै च न ममेति त्यजेत् वसोर्धारां जुहुयात् । संस्रवान् प्राश्य प्रणीताविमोकः ॥ कर्मशेषं समाप्य मूलमन्त्रेण होमदशांशेन दुग्धेन जलेन वा तर्पणं कृत्वा तद्दशांशेन मार्जयेत् ॥ ततः श्रेयःसंपादनम् ॥ तत आचार्यादीन्वस्त्राद्यैः संपूज्याचार्याय शतं तदर्धं तदर्धमष्टौ वा गोमिथुनानि सुवर्णचतुष्टयं दद्यात् ॥ ब्रह्मणे निष्कद्वयं गोद्वयं च ऋत्विग्भ्यः प्रत्येकं निष्कत्रयं गोमिथुनं च सहस्रचण्डयां तदर्धं शतचण्डयां तदर्धं नवचण्डयामशक्तौ सुवर्णं ततः दानान्याचार्यादिभ्योऽन्येभ्यो वा दद्यात् ॥ कपिलाधेनुं नीलरत्नं श्वेताश्वं छत्त्रं चामरं भूमिं शय्यां सप्त धान्यानि दद्यात् तेषां मन्त्राः दुर्गामखोत्सवे प्रतिपादिता द्रष्टव्याः ॥ ततो द्वारपालकेभ्योऽन्येभ्यश्च दक्षिणां दद्यात् ॥ ततः सर्वकलशोदकेन यजमानं सपरिवारं वेदोक्तमन्त्रैः पौराणैश्चाभिषिञ्चेयुः ॥ ततो यजमानो नवग्रहाणामुत्तरपूजां कृत्वा विसृज्य आचार्यहस्ते दत्त्वा देवीं संपूज्य बलिं दद्यात् ॥ तत्र क्षत्रियादिनाऽश्वमेषच्छागमहिषाणामन्यतमो देयः विप्रेण तु कूष्माण्डं बिल्वमिक्षुश्च देयः ॥ यथा देवीं द्रोणपुष्पबिल्वाम्रदलजातिचम्पकैः संपूज्य उदङ्मुखः कर्ता पूर्वाभिमुखं देवीमुखं वा बलिं गन्धाद्यैरभ्यर्च्य । पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादुपस्थितः ॥ प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ॥ चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम् ॥ चामुण्डाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमोऽस्तु ते ॥ यज्ञार्थे बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ॥ अतस्त्वांघातयाम्यद्य यस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ इत्यभिमन्त्र्य ऐं ह्रीं श्रीमिति तत्र पुष्पं क्षिप्त्वा रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधिका ॥ ॐ हीं ह्रीं खड्ग आं फट् इति खड्गं वाऽन्यं शस्त्रं संपूज्य ॐ ॐ कालि कालि यज्ञेश्वरि लोहदण्डायै नमः इति च्छेदयित्वा ह्रीं ऐं ॐ कौशिकीरूपिण्याप्यायतामिति

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

देव्यै निवेद्य शेषं गृहीत्वा ॥ ॐ पूतनायै नमः ॥ ॐ चरक्यै० ॐ विदार्यै० ॥ ॐ पापराक्षस्यै नम इति निवेद्य माषपिष्टमयशत्रुं कृत्वा खड्गेन छेदयित्वा स्कन्दाय० ॥ विशाखाय० ॥ दत्त्वा शेषं रक्षोभ्यो हरेत् ॥ मन्त्रस्तु ॥ ॐ ह्रीं स्फुर २ कुम्भ २ स्तन २ गुलु २ धनु २ मारय २ विद्रावय २ कम्पय ३ कम्पातय २ कन्तापय २ पूरय २ ॐ ह्रीं ॐ हूं क्रुं फट् २ हं मर्दय २ हुं इति ॥ ततः शेषेण बलिं दद्यात् ॥ तत्र मन्त्राः बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा ॥ मरुतो येऽश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ॥ डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥ जृम्भिकाः सिद्धगन्धर्वा मल्लविद्याधरा नगाः ॥ दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनाशकाः ॥ जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ॥ सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेतसुखावहाः ॥ इति ॥ ततः स्नात्वा तिलकं धृत्वा खड्गिनी शूलिनी त्येकेन शूलेन पाहि नो देवीति चतुष्टयेन नमो देव्यै इति पञ्चकेन सर्वस्वरूपे इति पञ्चभिश्च स्तुत्वा नमस्कृत्य पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा प्रार्थयेत ॥ रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे ॥ पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ततः गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि प्रसादात्तव सुन्दरि ॥ इति देव्यै निवेद्य मूलेन पुष्पेण देवीमुद्वास्य नासया हृदि प्रविष्टां विभाव्य षडङ्गं कृत्वा उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते इति विसृज्य ॥ आचार्याय दत्त्वा मन्त्रं पठेत् ॥ त्रैलोक्यमातर्देवि त्वं सर्वभूतदयान्विते ॥ दानेनानेन संतुष्टा सुप्रीता वरदा भवेति ॥ नवरात्रकृतनवचण्डर्च्यां दशम्यां देवीं विसर्जयेत् ॥ मन्त्रस्तु ॥ उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च ॥ कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सहेति ॥ उत्थाप्य ॥ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चण्डिके ॥ व्रज स्रोतोजलं वृद्ध्यै स्थीयतां च जले त्विह ॥ दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते ॥ संवत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै ॥ इमां पूजां मया देवि यथा शक्त्युपपादिताम् ॥ रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम् ॥ इति जलेन प्रवाहयेत् ॥ ततोऽग्निं संपूज्य विभूतिं धृत्वा गच्छ

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

गच्छेति विसृज्य कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथाशक्ति महालक्ष्मीप्रीत्यर्थं ब्राह्मणान् भोजयिष्ये इति संकल्प्य ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या० प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्० ॥ इति श्लोकौ पठित्वा पूर्णतां ब्राह्मणैर्वाचयित्वा सर्वं कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा सुब्राह्मणान् भोजयित्वा हीनदीनान्धकृपणेभ्योऽन्नं दत्त्वा ताम्बूलदक्षिणादिभिः सन्तोष्य सुहृद्युतो भुञ्जीत ॥ इति उकलकर–गोविन्दकृतनवरात्रवार्षिकपूजाविधिनिरूपणम् ॥ अथ नियमग्रहणमन्त्रः ॥ नवरात्रं निराहारः स्थास्यामि नियतः शुचिः ॥ ततो भोक्ष्ये नवम्यां तु तव प्रीत्यै महेश्वरि ॥ १ ॥ अथ नियममोचनमन्त्रः ॥ इदं व्रतं मया देवि कृतं प्रीत्यै तव प्रभो ॥ न्यूनं संपूर्णतां यातु त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ २ ॥ विधिनाऽविधिना वाऽपि कृतमेतन्मया व्रतम् ॥ सर्वदेवस्वरूपा मे प्रीयतां परमेश्वरी ॥ ३ ॥ देवीसन्तोषणार्थं तु मया सो नियमः कृतः ॥ तमद्याहं विमुञ्चामि तव तुष्ट्यै महेश्वरि ॥ ४ ॥ अथ नवरात्रिशारदोत्सवघटस्थापनादिनिर्णयः ॥ उक्तं च समयमयूखे हेमाद्रौ च ॥ आश्विने शुक्लपक्षे तु कर्तव्यं नवरात्रकम् ॥ प्रतिपदादिक्रमेणैव यावच्च नवमी भवेत् ॥ ५ ॥ तत्र सा पूर्वाह्णव्यापिनी ग्राह्या ॥ आश्विनस्य सिते पक्षे नवरात्रमुपोषितः ॥ सुस्नातस्तिलतैलेन पूर्वाह्णे पूजयेच्छिवाम् ॥ ६ ॥ इति देवीपुराणे तस्य कर्मकालतोक्तेः ॥ कर्मणो यस्य यः कालस्तत्कालव्यापिनि तिथिरित्यनेन कर्मकालव्यापिन्यामेव कर्तव्योक्तेः ॥ न चात्रोपवासानुरोधेन निर्णयः ॥ तस्य नवरात्रमुपोषितः पूजयेदित्यादिदेवीपुराणादौ सहितो भवति ॥ नखानि निकृन्तति स्नातीत्यादिवत्फलसंस्कारत्वेन पूजाङ्गत्वावगमात् ॥ अतः प्रधानभूतपूजाकालस्य पूर्वाह्णव्यापित्वेनैव निर्णयः ॥ पूजायास्तु प्राधान्यं फलसंबन्धात् सा च स्कान्दे ॥ आश्विने मासि मेघान्ते महिषासुरमर्दिनीम् ॥ देवीं संपूजयित्वा ये अर्धरात्रेऽष्टमीषु च ॥ ७ ॥ क्रीडन्ति विविधैर्भोगैर्देवलोके सुदुर्लभे ॥ नाधयो व्याधयस्तेषां न च शत्रुभयं भवेदिति ॥ ८ ॥ यत्तु गोविन्दार्णवे देवीपुराणे ॥ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी ॥ सा कार्योदयगामिन्यां न तिथेस्तत्र युग्मतेति ॥ ९ ॥ तत्रोदयगामित्वमपि प्रायः पूर्वाह्णव्यापित्व एव भवतीति



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

न विरोधाशङ्का ॥ युग्मता युग्मवाक्यानुरोधेन निर्णय इत्यर्थः ॥ वार्षिकीत्यनेन संवत्सरस्यादौ चैत्रशुक्लप्रतिपद्युपक्रम्य नवम्यन्ता पूजाऽभिधीयते ॥ ततश्च शरद्वसन्तयोस्तुल्य एव दुर्गोत्सवः कार्यः ॥ यानि तु–यो मां पूजयते नित्यं द्वितीयादिगुणान्विताम् ॥ प्रतिपच्छारदे ज्ञात्वा सोऽश्नुते सुखमव्ययम् ॥ १० ॥ यदि कुर्यादमायुक्ता प्रतिपत्स्थापने मम ॥ तस्य शापायुतं दत्त्वा भस्मशेषं करोम्यहम् ॥ ११ ॥ आग्रहात्कुरुते यस्तु कलशस्थापनं मम ॥ तस्य संपद्विनाशः स्याज्ज्येष्ठः पुत्रो विनश्यति ॥ १२ ॥ तथा ॥ न दर्शकलया युक्ता प्रतिपच्चण्डिकार्चने ॥ उदये द्विमुहूर्ताऽपि ग्राह्या सोदयगामिनी ॥ १३ ॥ या चाश्वयुजमासे स्यात्प्रतिपद्दर्शयाऽन्विता ॥ शुद्धमम्बार्चनं तस्यां शतयज्ञफलप्रदमित्यमायोगनिषेधकानि ॥ १४ ॥ यानि च ॥ द्वितीयाशेषसंयुक्ता प्रतिपच्चण्डिकार्चने ॥ मोहादथोपदेशाद्वा कृता पुत्रविनाशिका ॥ १५ ॥ आरम्भे नवरात्रस्य द्वितीया त्रुटिसंयुता ॥ न केवलं तिथिं हन्ति वेधात्सा पुत्रसंपदमित्यादीनि द्वितीयायोगनिषेधकानि ॥ १६ ॥ तान्युभयविधान्यपि सर्वाणि निर्मूलानि ॥ समूलत्वेऽपि परस्परं सत्प्रतिपक्षत्वादनिर्णायकानि ॥ चन्द्रप्रकाशे ॥ प्रातरावाहयेद्देवीं प्रातरेव प्रवेशयेत् ॥ प्रातः प्रातश्च संपूज्य प्रातरेव विसर्जयेदित्युक्तम् ॥ १७ ॥ सति संभवे प्रतिपदः आद्यं नाडीषोडशकं त्यक्त्वा कलशं स्थापयेत् ॥ आद्याः षोडश नाडीस्तु लब्ध्वा यः कुरुते नरः ॥ १८ ॥ कलशस्थापनं तत्र ह्यरिष्टं जायते ध्रुवमिति देवीपुराणवचनात् ॥ कलशस्थापने वैधृतिचित्रादियोगनिषेधकानि वचनानि निर्मूलानि ॥ यथा तानि–भद्रायुता चेत्प्रतिपत्तु लभ्यते विरुद्धयोगैरपि संगता सती ॥ सैवापराह्णे विबुधैर्विधेया स्त्रीपुत्रराज्यादिविवृद्धिहेतुरिति ॥ १९ ॥ कलशस्थापनं तु दिवैव कार्यम् ॥ न रात्रौ तदुक्तं मात्स्ये ॥ न रात्रौ स्थापनं कार्यं न च कुम्भाभिषेचनमिति ॥ अत्र त्रिरात्रमप्युक्तं धौम्येन ॥ त्रिरात्रं चापि कर्तव्यं सप्तम्यादि यथाक्रममिति ॥ २० ॥ अथ विस्तरेण नवरात्रकृत्यम् ॥ देवीपुराणे ॥ कन्यासंस्थे रवौ शुक्रशुक्लामारभ्य नन्दिकाम् ॥ अयाचित्वाऽथवैकाशी नक्ताशी वाऽथ वाय्वदः ॥२१॥ प्रातःस्नायी जितद्वन्द्वस्त्रिकालं शिवपूजकः ॥ जपहोमसदायुक्तः कन्यकां भोजयेन्मुदा ॥२२॥ शिवश्च शिवा च शिवौ

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तयोः पूजकः ॥ नन्दा च प्रतिपदेव प्रथमोपस्थिततत्वात् ॥ भविष्ये ॥ त्रिरात्रं चापि कर्तव्यं सप्तम्यादि यथाक्रमम् ॥ तत्र प्रतिपदि पूर्वाह्ने तिलतैलेन स्नातो यजमानो गणपतिं संपूज्य देशकालौ निर्दिश्य नवमीपर्यन्तमुपवासाद्यन्यतरनियमोपेतो दुर्गापूजनममुक फलकामः परिसंकल्पयेत्॥ततः कदलीस्तम्भवस्त्रादिमण्डिते गृहे चतुरस्रचतुर्हस्तवेदिकोपरि सर्वतोभद्रादिमण्डलं विधाय तत्र महीद्यौ रित्यादिवरुणपूजान्तं कलशस्यापनं कुर्यात् ॥ सौवर्णादिप्रतिमापूजार्थं पूज्या मण्डलकुम्भस्थेति देवीपुराणात् ॥ मृन्मयादिका कलशस्य पश्चादासने स्थाप्या वेदिकोणेष्वपि चत्वारः कलशाः स्थाप्याः॥चतुरः कलशान्यस्तु दद्याद्देवगृहे नरः ॥ चतुःसमुद्रवलयां स तु भुङ्क्ते वसुंधरामिति॥२३॥विष्णुधर्मोत्तरात् ॥ प्रतिमा च हेमादिमयी देवीपुराणे ॥ हेमराजतमृद्धातुशैलचित्रार्पिताऽपि वा॥ खड्गे शूलार्चिता देवी सर्वकामफलप्रदा॥२४॥मृन्मयीं प्रतिमां कृत्वा बिल्वे वा यस्तु पूजयेत् ॥ आत्मवित्तानुसारेण स लभेन्मौक्तिकं फलमिति॥२५॥प्रतिमालक्षणम् ॥ मत्स्यपुराणे ॥ जटाजूटसमायुक्तामर्धेन्दुकृतलक्षणाम् ॥ लोचनत्रयसंयुक्तां पद्मेन्दुसदृशाननाम् ॥२६॥ अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम् ॥ नवयौवनसंपन्नां सर्वाभरणभूषिताम्॥२७॥सुचारुदर्शनां तद्वत्पीनोन्नतपयोधराम्॥त्रिभङ्गस्थानसंस्थानां महिषासुरमर्दिनीम्॥२८॥त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात्खड्गं चक्रं तथैव च ॥ तीक्ष्णं बाणं तथा शक्तिं वामतोऽपि निवेशयेत्॥ ॥ २९ ॥ खेटकं पूर्णचापं च पाशमंकुशमूर्धजम् ॥ घण्टां वा परशुं वाऽपि वामतः सन्निवेशयेत् ॥ ३० ॥ अधस्तान्महिषं तद्वद्विशिरस्कं प्रदर्शयेत् ॥ शिरश्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खड्गपाणिनम् ॥ ३१ ॥ हृदि शूलेन निर्भिन्नं निर्यदन्त्रविभूषितम् ॥ रक्तरक्तीकृताङ्गं च रक्तविस्फारितेक्षणम् ॥ वेष्टितं नागपाशेन भ्रुकुटीभीषणाननम् ॥ ३२ ॥ सपाशवामहस्तेन धृतकेशं च दुर्गया ॥ वमद्रुधिरवक्त्रं च देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत् ॥ ३३ ॥ देव्यास्तु दक्षिणं पादं समं सिंहोपरि स्थितम् ॥ किंचिदूर्ध्वं तथा वाममंगुष्ठं महिषोपरि ॥ ३४ ॥ स्तूयमानं च तद्रूपममरैः सन्निवेशयेदिति ॥ ध्यानमप्येवम् ॥ एहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थं मम सर्वदा ॥ ३५ ॥ आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थसिद्धये ॥ अस्यां मूर्तौ समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥ ३६ ॥ रक्षां कुरु सदा भद्रे विश्वे

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

श्वरि नमोऽस्तु ते ॥ ३७ ॥ इत्यावाहनम् ॥ भगवति दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ इह सन्निधेहि स्थिरा भव सुप्रसन्ना भव इत्यपि पठन्ति ॥ पूजादिमन्त्रश्च कुर्याद्देव्याश्च मन्त्रेण इत्यभिधाय ॥ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ ३८ ॥ अनेनैव तु मन्त्रेण जपहोमादि कारयेदिति पुराणोक्तेः ॥ तल्लिङ्गैः पूजयेन्मन्त्रैः सर्वदेवान् समाहितः ॥ ३९ ॥ अग्निपुराणाद्वैदिक आगमिको वा ॥ नाम्नां सर्वं समापयेदिति साधारणवाक्यात्प्रणवादिचतुर्थ्यन्तनमोऽन्तनाम मन्त्रो वा ॥ स्कान्दे तु दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्तिनाशिनीम् ॥ ४० ॥ अनेनैव तु मन्त्रेण जपहोमादि कारयेत् ॥ छत्रचामरादिभी राजोपचारैः पूजा ॥ तदन्ते प्रणम्य देवीं प्रार्थयेदनेन मन्त्रेण ॥ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि ॥ ४१ ॥ द्रव्यमारोग्यविजयं देहि देवि नमः सदा ॥ भूतप्रेतपिशाचेभ्यो रक्षोभ्यश्च महेश्वरि ॥ ४२ ॥ देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च भयेभ्यो रक्ष मां सदा ॥ ४३ ॥ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४४ ॥ रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे ॥ पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥ ४५ ॥ ततो दुर्गामन्त्रं वैदिकमागमिकं वा जपेत् ॥ दुर्गाग्रतो जपेन्मन्त्रमेकचित्तः समाहित इति देवीपुराणात् ॥ यद्वा माहात्म्यं भगवत्यास्तु पुराणादिषु कीर्तितम् ॥ पठेच्च शृणुयाद्वाऽपि सर्वकामसमृद्धये ॥ ४६ ॥ तथा एकोत्तराभिवृद्ध्या तु नवमीं यावदेव हि ॥ चण्डीपाठं जपेच्चैव जापयेद्वा विधानतः ॥ ४७ ॥ यद्यपि देवीपुराणे जपपूजादिवद्धोमोऽपि प्रत्यहमुक्तस्तथापि अष्टम्यां नवम्यामेव वा कार्यः ॥ ब्रह्मपुराणे तत्राष्टम्यां भद्रकालीत्युपक्रम्य होमैर्ब्राह्मणतर्पणैरित्यष्टमीकृत्यमध्ये पाठात् ॥ नवम्यां बलिदानं च कर्तव्यं वै यथाविधि ॥ जपं होमं च विधिवत्कुर्यात्तत्र विभूतये ॥ ४८ ॥ इति कालिकापुराणात् ॥ शिष्टाचाराच्च ॥ बलिदानमप्यष्टमीनवम्योरेव वा ॥ पुनः पूजां तथाऽष्टम्यां विशेषेण समाचरेत् ॥ ४९ ॥ जागरं च स्वयं कुर्याद्बलिदानं महानिशि ॥ प्रभूतबलिदानं च नवम्यां विधिवच्चरेत् ॥ इति कालिकापुराणवचनात् ॥ ५० ॥ अत्र यद्यपि शिष्टपरिगृहीतकालिका

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पुराणादिषु मद्यस्वगात्ररुधिरपशुघातादिकमुक्तम् ॥ तथापि ब्राह्मणस्य न भवति ॥ मद्यं दत्त्वा ब्राह्मणस्तु ब्राह्मण्यादेव हीयते ॥ स्व गात्ररुधिरं दत्त्वा ब्रह्महत्यामवाप्नुयादिति कालिकापुराण एव निषेधात् ॥ ५१ ॥ सात्त्विकी जपयज्ञाद्यैर्नैवेद्यैश्च निरामिषैरित्येतत्प्र कारकसात्त्विकपूजाया भगवद्गीतादिषु ब्राह्मणाधिकारिकृताया एवोक्तेः ॥ पशुबलिदानस्य विजयार्थं नृपोत्तम इति राजपुरस्का रेणैव विहितत्वाच्च ॥ ब्रह्महत्यामवाप्नुयादिति कालिकापुराणे निषिद्धत्वात् ॥ अतो माषभक्तादिना तेन बलिदानं कार्यम् ॥ माष कुल्माषमांसाद्यैर्देयो दिक्षु बलिर्निशि ॥ कूष्माण्डश्चेक्षुदण्डश्च मद्यमासव एव च ॥ ५२ ॥ एते बलिसमा ज्ञेयास्तृप्तौ छागसमाः स्मृता इति कालिकापुराणात् ॥ ५३ ॥ अथ देवीगृहे दीपा अहोरात्रं ज्वालनीयाः ॥ मत्स्यपुराणे ॥ गीतवादित्रनिर्घोषं देवस्याग्रे च कारयेत् ॥ घण्टा भवेदशक्तस्य सर्ववाद्यमयी यत इति ॥ ५४ ॥पूजा च प्रत्यहं त्रिकालं कार्या ॥ त्रिकालं शिवपूजक इति. पूर्वोक्तदेवीपुराणात् ॥ ज्योतिःशास्त्रे सप्तम्यां बिल्वशाखापूजोक्ता ॥ आश्विनस्य सिते पक्षे सुमुहूर्तेन सप्तमी ॥ तस्यां च पत्रिका पूजा कर्तव्या नवनायकैः ॥ ५५ ॥ प्रशस्तां सफलां बिल्वशाखामाहृत्य पूजयेदिति ॥ ५६ ॥ अथ बोधनप्रकारः ॥ तत्कालो लिङ्गपुराणे ॥ कन्यायां कृष्णपक्षे तु पूजयित्वाऽऽरभेद्दिवा ॥ नवम्यां बोधयेद्देवीं महाविभवविस्तरैः ॥ ५७ ॥ भविष्ये ॥ षष्ठ्यां बिल्वतरौ बोधं सायं संध्यासु कारयेत् ॥ देवीपुराणे ज्येष्ठानक्षत्रयुक्तायां षष्ठ्यां बिल्वाभिमन्त्रणम् ॥ ५८ ॥ बिल्ववृक्षाय नम इति बिल्वतरुं संपूज्य बिल्ववृक्षे जयन्तीत्यादि०॥ दुर्गे इहागच्छेत्यादिना दुर्गामावाह्य पूजयित्वा गीतवाद्यघोषपुरःसरं देवीं विबोधयेत् ॥ मन्त्रस्तु ॥ रावणस्य वधार्थाय रामस्यानुग्रहाय च ॥ अकाले ब्रह्मणा बोधो देव्यास्त्वयि कृतः पुरा ॥ ५९ ॥ इषे मासि सिते पक्षे नवम्यां मार्गयोगतः ॥ श्रीवृक्ष बोधयामि त्वां यावत्पूजां करोम्यहमिति ॥ ६० ॥ षष्ठ्यां तु इष इत्यादेः स्थाने अह मप्याश्विने षष्ठ्यां सायाह्ने बोधयाम्यत इति ॥ ततो बिल्वतरोरामन्त्रणम् ॥ मेरुमन्दारकैलासहिमवच्छिखरे गिरौ ॥ जातः श्रीफलवृक्ष त्वमम्बिकायाः सदा प्रियः ॥ ६१ ॥ श्रीशैलशिखरे जातः श्रीफलं श्रीनीकेतनः ॥ नेतव्योऽसि मया

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वृक्ष पूज्यो दुर्गास्वरूपत ॥६२॥ इति ॥ अपरेद्युः पुनरपि संपूज्य कृताञ्जलिःप्रसादयेत्॥ बिल्ववृक्षमहाभाग सर्वदा शंकरप्रिय ॥६३॥ गृहीत्वा तव शाखां तु दुर्गापूजां करोम्यहम् ॥ शाखाच्छेदोद्भवं दुःखं न च कार्यं त्वया प्रभो ॥ ६४ ॥ ततः फलयुतामपराजिता दिग्गतामेकां शाखां छेदयेद्वानस्पत्येन मन्त्रेण ॥ क्वचित्तु छिन्धि फट् ॐ हुंफट् ॐ हुंफट् स्वाहेति मन्त्रः ॥ ततः शाखां गृहे आनीय बिल्वशाखायै नम इति पूजयित्वा बिल्वशाखायां मृन्मयप्रतिमायां च देवीमावाहनपुरःसरं पूजयित्वा माषभक्तादि बलिं च दत्त्वा दोलादिना शाखां प्रतिमां च पूजागृहद्वारदेशे स्थापयित्वा माषभक्तादिबलिं दत्त्वा पूजागृहस्थानि भूतानि भूतेभ्यो नम इति गन्धादिभिः संपूज्य ॥ भूताः प्रेताः पिशाचाश्च ये वसन्त्यत्र भूतले ॥ ते गृह्णन्तु मया दत्तो बलिरेप प्रसाधितः ॥ ६५ ॥ पूजिता गन्धपुष्पाद्यैर्बलिभिस्तर्पितास्तथा ॥ देशादस्माद्विनिःसृत्य पूजां पश्यन्तु मत्कृताम् ॥ ६६ ॥ भूतेभ्य एष माषभक्तबलिर्नम इति बलिं दत्त्वा ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिपालकाः ॥ भूतानामविरोधेन पूजाकर्म करोम्यहम् ६७ ॥ फडिति तान्यपसारयेत् ॥ स्थितेषु तत्र भूतेषु नैवेद्यं मण्डलं तथा ॥ विलुम्पन्ति महालुब्धा न च गृह्णन्ति देवताः ॥ ६८ ॥ तस्माद्यत्नेन कर्तव्यं भूतनामपसारणमिति कालिकापुराणात् ॥ सर्षपादींश्च विकिरेत् ॥ ततः पुनः शाखायां प्रतिमायां च देवीं संपूज्य गीत वाद्यादिपुरःसरं पूजागृहं प्रवेश्य ॥ आरोपिताऽसि दुर्गे त्वं मृन्मये श्रीफलेऽपि च ॥ कैलासशिखराद्देवि विन्ध्याद्रेर्हिमपर्वतात् ॥६९॥ आगत्य बिल्वशाखायां चण्डिके कुरु सन्निधिम् ॥ भगवति दुर्गे इहागच्छेत्युभयोरावाह्य ॥ स्थापिताऽसि मया देवि श्रीफले मृन्मयेऽपि च ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ७० ॥ भगवति दुर्गे इह तिष्ठेति स्थापयित्वा ॥ दुर्गे दुर्गस्वरूपाऽसि सुरतेजो महाबले ॥ सदानन्दकरे देवि प्रसीद मम सिद्धये ॥७१॥ एह्येहि भगवत्यम्ब शत्रुक्षयजयप्रदे ॥ भक्तितः पूजयामि त्वां दुर्गे देवि सुरार्चिते ॥ ७२ ॥ पल्लवैश्च फलोपेतैः पुष्पैश्च सुमनोहरैः ॥ पल्लवे संस्थिते देवि पूजये त्वां प्रसीद मे ॥ ७३ ॥ दुर्गे देवि इहा गच्छ सान्निध्यमिह कल्पय ॥ यज्ञभागान्गृहाण त्वं योगिनीकोटिभिः सह ॥ ७४ ॥ इति कृताञ्जलिः पठेत् ॥ ततो जयन्त्यादिदुर्गायै

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नमः ॥ इदं पाद्यपुष्पगन्धाक्षतकुङ्कुमदधिदूर्वांकुशतिलबिल्वपत्रसहितजलेनार्घ्यमाचमनीयं पञ्चामृतस्नानीयपुनराचमनीयवस्त्र पुनराचमनीयानुलेपनादि दत्त्वा ॥ ॐ दुर्गायै नम इति पुष्पाञ्जलित्रयं दद्यात् ॥ ततः अमृतोद्भवं श्रीवृक्षोत्थं शंकरस्य सदा प्रियम् ॥ बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥ ७५ ॥ इति बिल्वपत्रम् ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनां द्रोणपुष्पं सदा प्रियम् ॥ तत्ते दुर्गे प्रयच्छामि सर्वकामार्थसिद्धये ॥ ७६ ॥ इति द्रोणपुष्पं च निवेद्य ॥ जयन्तीत्यादिना पुष्पधूपदीपनैवेद्यपुनराचमनीयताम्बूलानि दत्त्वा ॥ पूजासाद्गुण्यार्थं दक्षिणां दत्त्वा स्तुतिभिः स्तुत्वा प्रणम्य बद्धांञ्जलिः प्रार्थयेत् ॥ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि ॥ द्रव्यमारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ७७ ॥ कुंकुमेन समालब्धे चन्दनेन विलेपिते ॥ बिल्वपत्रकृतापीडे दुर्गेऽहं शरणं गतः ॥ ७८ ॥ सर्वमङ्गलेति रूपं देहि इति च श्लोकं पठेत् ॥ बलिं च दद्यात् ॥ एवमेव महाष्टम्यामपि देवीपूजनं विशेषतस्त्वर्धरात्रे जागरणं च राजा विजयकामोऽर्धरात्रे विशेषपूजापूर्वकं बलिं दद्यात् ॥ तदर्धयामिनीशेषे विजयार्थं नृपोत्तमः ॥ पञ्चाब्दं लक्षणोपेतं गन्धधूपस्रगार्चितम् ॥ ७९ ॥ विधिवत्कालि कालीति जप्त्वा खड्गेन घातयेत् ॥ इति देवीपुराणात् ॥ पञ्चाब्दं महिषमजं वा ॥ तत्रैव शस्त्रादिपूजनं च कुर्यात् ॥ महानवम्यामेव पूजाबलिदानं होमश्च ॥ होममन्त्रश्च जयन्तीत्यादिः ॥ अनेनैव तु मन्त्रेण जपहोमादि कारयेदिति देवीपुराणात् ॥ द्रव्यं च तत्रैवोक्तम् ॥ पूजयेत्तिलहोमैश्च दधिक्षीरघृतादिभिः ॥ ८० ॥ केचित्तु प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषेति रहस्यग्रन्थवचनात् सप्तशतीस्तवेन प्रतिश्लोकं च तिलसर्पिर्मिश्रपायसेन होमं कुर्वन्ति ॥ राज्ञा त्वश्वपीडाशान्तये ब्रह्मपुराणोक्ता रैवतपूजाऽपि कार्या ॥ स च वडवारूपायां मुखायां सूर्यादुत्पन्नो वाजिगणाधिपतिः॥ पूजामन्त्रः शालिहोत्रे ॥ नमो देवाधिदेवाय तुरङ्गबलचारिणे ॥ सूर्यपुत्राय देवाय तुरङ्गसहिताय च ॥८१॥ तुरङ्गपरिपद्यस्य नृगजोपरि धावति ॥ साश्वमश्वाधिपं रक्ष सतूणं त्वां व्रजाम्यहम् ॥८२॥ मन्त्रेणानेन देवं तं पाद्याद्यैरर्चयेत्सुधीः ॥ प्रातर्दशम्यां पूजां च विधाय च विसर्जयेत् ॥ ८३ ॥ संपूज्य प्रेषणं कुर्याद्दशम्यां शाबरोत्सवैरिति भविष्यपुराणात् ॥ तत संप्रेषिता देवी दशम्यां शाबरोत्सवैरिति

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

कालिकापुराणाच्च ॥ ८४ ॥ एवं पूजां विधाय प्रणम्य ॥ दुर्गां शिवां शान्तिकरीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम् ॥ सर्वलोकप्रणेत्रीं च प्रणमामि सदा शिवाम् ॥८५॥ मङ्गलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम् ॥ विश्वेश्वरीं विश्ववन्द्यां चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥८६॥ सर्वदेवमयीं देवीं सर्वरोगभयापहाम् ॥ ब्रह्मेशविष्णुनमितां प्रणमामि सदा उमाम् ॥ ८७ ॥ विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां दिव्यस्थाननिवासिनीम् ॥ योगिनीं योगविद्यां च चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥ ८८ ॥ ईशानमातरं देवीमीश्वरीमीश्वरप्रियाम् ॥ प्रणतोऽस्मि सदा दुर्गां संसारार्णवतारिणीम् ॥ ८९ ॥ य इदं पठति स्तोत्रं शृणुयाद्वाऽपि यो नरः ॥ स मुक्तः सर्वपापेभ्यो दुर्गया सह मोदते ॥ ९० ॥ इत्यादिभिः स्तोत्रैः स्तुत्वा बद्धाञ्जलिर्महिषघ्नीत्यादिश्लोकचतुष्टयेन प्रार्थ्य ॥ विधिहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यदर्चितम् ॥ पूर्णं भवतु तत्सर्वं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ ९१ ॥ इति प्रसाद्य क्षमस्वेत्युक्त्वा एकं पुष्पम् ॐ दुर्गायै नमः इत्यैशान्यां निक्षिप्य न्विसृज्य ॥ उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च ॥ कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ ९२ ॥ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चण्डिके ॥ व्रज स्रोतोजले वृद्ध्यै तिष्ठ गेहे च भूतये ॥ ९३ ॥ इत्युत्थाप्य गीतवाद्यब्रह्मघोषपुरःसरं स्रोतोजलसमीपं नीत्वा दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते ॥ संवत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै ॥ ९४ ॥ इमां पूजां मया देवि यथाशक्ति निवेदिताम् ॥ रक्षणार्थं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तममिति प्रवाहयेत् ॥ ९५ ॥ ततो देवीपूजास्थाने शान्तिकलशोदकेन ब्राह्मणैरभिषिक्तस्तेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा ब्राह्मणान्भोजयित्वा बन्धुभिः सार्धं भुञ्जीत ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उपासनास्तबके दुर्गोपासनाध्याये नवरात्रीनवचण्डीदुर्गाविधानप्रयोगनिरूपणं नाम द्वात्रिंशं प्रकरणम् ॥३२॥ अथ शतचण्डीविधानम् ॥ उक्तं च क्रोडतन्त्रे ॥ यदा यदा सतां हानिरात्मनो ग्लानिरेव च ॥ तदा कार्या शतावृत्ती रिपुघ्ना भूतिवर्धना ॥ १ ॥ दुःस्वप्नदर्शने घोरे महामारीसमुद्भवे ॥ पुष्टिप्रदा शतावृत्तिः कार्या चायुःक्षये तथा ॥ २ ॥ महाभये छेदयोगे दुर्भिक्षे मरणेऽपि च ॥ कुर्यात्तत्र शतावृत्तिं देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ ३ ॥ अद्भुते च समुत्पन्ने बान्धवानां महोत्सवे ॥ कुर्याच्चण्डीशतावृत्तिं सर्वसंपत्तिकाम

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

त्रिपञ्चसप्तभिरिति ॥ एतच्छ्लोकत्रयं क्रोडतन्त्रनाम्ना पठ्यते तत्तु निर्मूलमिति नागोजीभट्टेन स्वकृतदुर्गाव्याख्यायां प्रतिपादितं तत्र मूलं मृग्यम्

णम् ॥ ४ ॥ शतावृत्त्या भवेदायुः शतावृत्त्या समागमः ॥ वश्या भवन्ति राजानः श्रियमाप्नोति संपदाम् ॥ ५ ॥ धनार्थी प्राप्नुयादर्थं पुत्रकामो लभेत्सुतम् ॥ विद्यार्थी प्राप्नुयाद्विद्यां रोगी रोगात्प्रमुच्यते ॥ ६ ॥ चतुर्वर्गफलावाप्तिकारणं रिपुनाशनम् ॥ चण्डीशतावृत्तिफलं नास्ति यज्ञे वरानने ॥ ७ ॥ विधिमत्र प्रवक्ष्यामि शृणुष्व वरवर्णिनि ॥ निमन्त्रयेत पूर्वेद्युर्विप्रान्विद्यासमन्वितान् ॥ ॥ ८ ॥ अलोलुपानृजून् शान्तान् देव्या भक्तिसमन्वितान् ॥ मन्त्रोपतन्त्रतन्त्रज्ञान् शतावृत्तौ नियोजयेत् ॥ ९ ॥ उत्तराशास्थिते हंसे शुक्लपक्षे तथा शुभे ॥ ज्ञार्केन्दुभृगुजीवेषु सुयोगे सुतिथौ तथा ॥ १० ॥ पातकक्रकचघण्टादिदोषहीने स्थिरोदये ॥ स्थापयेदव्रणं कुम्भमुत्तराभिमुखं स्वयम् ॥ ११ ॥ न विदध्याद्धरौ सुप्ते भूकम्पाकालवर्षणे ॥ वज्रपाते महोत्पाते गुर्वादित्यादिके तथा ॥ १२ ॥ महागुरौ विपन्ने च संवेशे कार्यवस्तुनः ॥ शतावृत्त्यादियागं तु न विदध्यात्कदाचन ॥ १३ ॥ त्रिपञ्चसप्तभिर्वाऽपि नवैकादशभिस्तथा ॥ अदीर्घदिवसैः क्षिप्रं विदध्याच्चण्डिकामखम् ॥ १४ ॥ अयुग्मब्राह्मणैः कार्या शतावृत्ति सुसिद्धये ॥ त्रिपञ्चसप्तनवभिर्दिनैः पक्षेण वा पुनः ॥ १५ ॥ देवीमाहात्म्यपठनं युग्मविप्रकृतं तु यत् ॥ निष्फलं च भवेत्सर्वं भूतिनाशः प्रजायते ॥ १६ ॥ अष्टमी नवमी वाऽपि यदि स्याद्वा चतुर्दशी ॥ शतावृत्तिर्नवावृत्तिः पक्षावृत्तिः क्रमेण च ॥ १७ ॥ शताश्वमेधगोमेधवाजपेयफलप्रदा ॥ अतः किं बहुनोक्तेन चण्डीपाठफलं प्रिये ॥ १८ ॥ प्रत्येकावर्तनं देवि हयमेधेन संमितम् ॥ त्रिरावृत्त्या लभेत्कामान्पञ्चावृत्त्या रिपूञ्जयेत् ॥ १९ ॥ अथ मन्त्रमहोदधौ ॥ शतचण्डीविधानं तु प्रवक्ष्ये प्रीतये नृणाम् ॥ नृपोपद्रव आपन्ने दुर्भिक्षे भूमिकम्पने ॥ २० ॥

॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ शतेति तत्र निमित्तान्याह -नृपोपद्रव इति ॥ २० ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ अथ प्रयोगः ॥ शास्त्रोक्तावधिना शंकरालये भवान्यालये वा मण्डपं वेदिमध्यं निर्माय प्रतीच्यां कुण्डं मध्ये कृत्वा कृतनित्यक्रियोऽमुककामः शतचण्डीविधानमहं करिष्य इति संकल्पं विधाय मातृस्थापननान्दीश्राद्धे विधाय स्वस्तिवाचनं कृत्वा

अतिवृष्ट्यामनावृष्टौ परचक्रभये क्षये॥ सर्वे विघ्ना विनश्यन्ति शतचण्डीविधौ कृते ॥२१॥ रोगाणां वैरिणां नाशो धनपुत्रसमृद्धयः॥ शंकरस्य भवान्या वा प्रासादनिकटे शुभम् ॥२२॥ मण्डपद्वारवेद्याढ्य कुर्यात्सध्वजतोरणम् ॥ तत्र कुण्डं प्रकुर्वीत प्रतीच्यां मध्यतोऽपि वा ॥२३॥ स्नात्वा नित्यकृतिं कृत्वा वृणुयाद्दश वाडवान् ॥ जितेन्द्रियान्सदाचारान्कुलीनान्सत्यवादिनः ॥२३॥ व्युत्पन्नांश्चण्डिकापाठरतांल्लज्जादयावतः ॥ मधुपर्कविधानेन वस्त्रस्वर्णादिदानतः ॥ २५ ॥ जपार्थमासनं मालां दद्यात्तेभ्योऽपि भोजनम्॥ ते हविष्यान्नमश्नन्तो मन्त्रार्थगतमानसाः ॥२६॥ भूमौ शयानाः प्रत्येकं जपेयुश्चण्डिकास्तवम् ॥ मार्कण्डेयपुराणोक्तं दशकृत्वः सुचेतसः ॥२७॥ अथ कुमारिकापूजने मन्त्रादिकं कुमारीपूजनाध्याये द्रष्टव्यम् ॥ नवार्णं चण्डिकामन्त्रं जपेयुश्चायुक्तं पृथक् ॥ यजमानः पूजयेच्च कन्यानां दशकं शुभम् ॥२८॥ वेद्यां विरचिते रम्ये सर्वतोभद्रमण्डले ॥ घटं संस्थाप्य विधिवत्तत्रावाह्यार्चयेच्छिवम् ॥ २९ ॥ तदग्रे कन्यकश्चापि पूजयेद्ब्राह्मणानपि ॥ उपचारैस्तु विविधैः पूर्वोक्तावरणान्यपि ॥ ३० ॥ एवं चतुर्दिनं कृत्वा पञ्चमे होममाचरेत् ॥ पायसान्नैस्त्रिमध्वक्तैर्द्राक्षारम्भाफलैरपि ॥ ३१ ॥ मातुलिङ्गैरिक्षुखण्डैर्नारिकेलैः पुरैस्तिलैः ॥ जातीफलैराम्रफलैर्वन्यैर्मधुरवस्तुभिः ॥ ३२ ॥ सप्तशत्या दशावृत्त्या प्रतिश्लोके हुतं चरेत् ॥ अयुतं च नवार्णेन स्थापिताग्नौ विधानतः ॥ ३३ ॥ कृत्वाऽऽवरणदेवानां होमं तन्नाममन्त्रतः ॥ कृत्वा पूर्णाहुतिं सम्यग्देवमग्निं विसृज्य च ॥ ३४ ॥ अभिषिञ्चेच्च यष्टार विप्रौघः कलशोदकैः ॥ निष्कं सुवर्णमथवा प्रत्येकं दक्षिणां दिशेत् ॥ ३५ ॥ भोजयेच्च शतं विप्रान्भक्ष्यभोज्यैः पृथग्विधैः ॥ तेभ्योऽपि दक्षिणां दत्त्वा गृह्णीयादाशिषस्ततः ॥ ३६ ॥ एवं कृते जगद्वश्यं सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः ॥ राज्यं धनं यशः पुत्रानिष्टमन्यल्लभेत सः ॥ ३७ ॥

उक्तलक्षणान् दश विप्रान् मधुपर्कं वस्त्रहेमदानादिना वृणुयात् ॥ ते च यजमानदत्तासनेषु दत्तमालाभिः समाहिताः सुमनसो भगवतीं स्मरन्तः सप्तशतीमूलमन्त्रेण वेद्यां कुम्भं स्थापयित्वा तत्र दुर्गां मावाह्य षोडशोपचारैः संपूज्य तदग्रे प्रत्येक दशकृत्वः सप्तशतीमयुतं च नवार्णं जपेयुः। हविष्यभोज्यभोजनब्रह्मचर्यभूशयनास्पृश्यास्पर्शादिनियमांश्चरेयुः ॥ २७ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अथ गोविन्दकृतकल्पवल्ल्युक्तशतचण्डीप्रयोगः ॥ तत्र अनावृष्ट्याद्यखिलदुरितशान्त्यर्थं राज्यावाप्त्यादिसकलकामनासिद्ध्यर्थं यजमानः शिवालयसमीपे सुसमे भूप्रदेशे मण्डपं चिकीर्षुर्गणेशकूर्मशेषवसुधानां पूजनं कृत्वा शतचण्ड्यां षोडशहस्तं सहस्र चण्ड्यां विंशतिहस्तं मण्डपं प्रसाध्य तदाग्नेयस्तम्भे वडवागणेशकूर्मशेषवसुधानां पूजां कृत्वा ताम्रपात्रेऽर्घ्यमादाय जानुभ्यामवनीं गत्वा आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारीणि ॥ उद्धृताऽसि वराहेण सशैलवनकानना ॥ मण्डपं कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्वे शुभलक्ष णम् ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्ना शुभदा भवेति भूम्यै अर्घ्यं दत्त्वा मण्डपं विधाय तन्मध्ये ईशान्यां हस्तमात्रां द्व्यङ्गुलवप्रां ग्रहवेदीं कृत्वा तत्पश्चिमे शतचण्ड्यां द्विहस्तं सहस्रचण्ड्यां चतुर्हस्तं कुण्डं स्थण्डिलं वा चतुरस्रं पद्मकुण्डं वा कुर्यात् ॥ कुण्डं कुण्डग्रन्थोक्तविधिना कृत्वा शतचण्ड्यां पलेन सहस्रचण्ड्यां पलपञ्चकेन मूर्त्यध्यायोक्तध्यानप्रतिपादितां महिषमर्दिनीप्रतिमां कारयित्वा प्रारम्भदिने कर्ता सपत्नीकस्तिलतैलेन कृताभ्यङ्गो भूषिताङ्गः संपूर्णकलशहस्तो भद्रं कर्णेभिरिति मण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण प्रविश्योपविश्य देशकालौ स्मृत्वा ममामुककामनासिद्ध्यर्थं सनवग्रहमखां शतचण्डीं सहस्रचण्डीं वा ब्राह्मणद्वारा कार यिष्ये ॥ तदङ्गतया विहितं गणेशपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं चाहं करिष्ये इति संकल्प्य तानि यथावत्कृत्वा आचार्यं वृत्वा प्रार्थयेत् ॥ आचार्यः सर्वदेवानां० ततो ब्रह्माणं सदस्यमृत्विजश्च वृत्वा प्रार्थयेत् ॥ अत्र शतचण्डीजपे ऋत्विजो नव आचार्यो दशमः सहस्रचण्ड्यां शतमृत्विजः अष्टौ लोकपालाः सर्वेषां मधुपर्कादिना पूजां कृत्वा वृत्वा वस्त्रद्वयम् ॥ आसनम् ॥ अर्घ्यपात्रजलपात्राङ्गुलीयककर्णभूषणादि दद्यात् ॥ आचार्याय तु द्विगुणम् ॥ ततः आचार्यः यदत्र संस्थितं भूतं० ॥ इत्युक्त्वा सर्षपान्विकीर्य पञ्चगव्यैः कुशैः आपो हि ष्ठेति त्र्यृचेन मण्डपं प्रोक्ष्य स्वस्त्ययनम् इति मन्त्रद्वयं पठेत् ॥ ततः पूर्वस्याम् ॥ ॐ कादम्बरि गजारूढे वज्रहस्ते एह्येहि गन्धपुष्पसहितमिमं क्षीरान्नं बलिं गृहाण २ ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहेति बलिं दत्त्वा द्वारशाखयोः ब्राह्म्यै नमः ॥ माहेश्वर्यै नमः ॥ चिच्छक्त्यै नमः ॥ मायाशक्त्यै नमः ॥ धात्रे नमः ॥ विधात्रे नमः ॥ शङ्खनिधये

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नमः ॥ पद्मनिधये नमः ॥ द्वारश्रियै नम इति संपूज्य ॥ अधः वास्तुपुरुषमसिताङ्गभैरवं च संपूज्य ॥ आग्नेय्याम् ॥ उल्के अजारूढे शक्तिहस्ते एह्येहि गन्धपुष्पसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृहाण २ ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा ॥ तत्र रुरुभैरवं च संपूज्य ॥ दक्षिणस्याम् ॥ करालि महिषारूढे दण्डहस्ते एह्येहि० स्वाहा ॥ इति बलिं दत्त्वा द्वाग्शाखयोः ॥ कौमार्यै नमः ॥ वैष्णव्यै नमः ॥ चिच्छक्त्यै नमः ॥ मायाशक्त्यै नमः ॥ धात्रे नमः ॥ विधात्रे नमः ॥ शङ्खनिधये नमः ॥ पद्मनिधये नमः ॥ चण्डभैरवाय नमः ॥ इत्यधः पूजयेत् ॥ नैर्ऋत्यै ॥ रक्ताक्षि प्रेतवाहने खड्गहस्ते एह्येहि० स्वाहा ॥ इति बलिं दत्त्वा क्रोधभैरवाय नमः इति संपूज्य ॥ पश्चिमायाम् ॥ कौबेरि अश्वारूढे पाशहस्ते एह्येहि० स्वाहा ॥ इति बलिं दत्त्वा द्वारशाखयोः ॥ वाराह्यै नमः ॥ ऐन्द्र्यै नमः ॥ चिच्छक्त्यै नमः ॥ मायाशक्त्यै नमः ॥ धात्रे नमः ॥ विधात्रे नमः ॥ शङ्खनिधये नमः ॥ पद्मनिधये नमः ॥ इति संपूज्य ॥ उन्मत्तभैरवं च संपूज्य ततो वायव्यां हारिते मृगवाहने अङ्कुशहस्ते एह्येहि० स्वाहा इति बलिं दत्त्वा ॥ कपालभैरवाय नमः ॥ इति संपूज्य ॥ उत्तरस्यां यक्षिणि सिंहवाहने गदाहस्ते एह्येहि० स्वाहा ॥ इति बलिं दत्त्वा द्वारशाखयोः चामुण्डायै नमः ॥ महालक्ष्म्यै नमः ॥ चिच्छक्त्यै नमः ॥ मायाशक्त्यै नमः ॥ धात्रे नमः ॥ विधात्रे नमः ॥ शङ्खनिधये नमः ॥ पद्मनिधये नमः भीषणभैरवाय नमः ॥ इति संपूज्य ॥ ईशान्यां कालि वृषारूढे शूलहस्ते एह्येहि० स्वाहा इति बलिं दत्त्वा संहारभैरवं च संपूज्य॥ ईशानपूर्वयोर्मध्ये वैष्णवि गरुडारूढे चक्रहस्ते एह्यहि० स्वाहा इति बलिं दत्त्वा भूमिं संपूज्य ॥ ततः पूजावेद्यामाग्नेय्यां हंसवाहने अक्षसूत्रकमण्डलुहस्ते एह्येहि० स्वाहा इति बलिं दत्त्वा ॥ अन्तरिक्षाय नमः ॥ इति संपूज्य ॥ ततः पूजावेद्यामाग्नेय्यां विष्णवे नमः ॥ पूर्वस्यामिन्द्राय नमः ॥ ईशान्यां ब्रह्मणे नमः ॥ पश्चिमायां गणेशाय नमः ॥ मध्ये महाकाल्यै महालक्ष्म्यै महासरस्वत्यै नमः इड़ि संपूज्य बृहद्ध्वजो रक्तः सिंहाङ्कितः । ध्वजपताकोच्छ्रयणं कृत्वा । आचार्यो ग्रहवेद्यां ग्रहान् संस्थाप्य संपूज्य मध्यवेद्यां पीठे सुखासने उपविश्य ॥ ॐ गुं गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥ द्वारश्रियै नमः ॥ दुं दुर्गायै नमः ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ह्रः अस्त्राय फट् ॥ वास्तुपुरुषाय नमः ॥ श्रीमहालक्ष्म्यै नमः ॥ इति नत्वा पूर्वोक्तनित्यपूजापद्धतिप्रकारेण आसनादिभूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृकादिमूलविद्यान्यासान् पूर्वोक्तान्सर्वान्कृत्वा श्रीमहालक्ष्मीध्यानं कृत्वा किंचित् जपं कृत्वा देव्यै निवेद्यान्तर्यागं कृत्वा वेद्यां सर्वतोभद्रं कृत्वा तत्र देवताः स्थापयेत् ॥ मध्ये ब्रह्माणणमुत्तरादिषु सोमादीन् वायुसोममध्यादिक्रमेण अपः वसून् रुद्रान् द्वादशादित्यान् यक्षान् सर्पान् अप्सरसः गन्धर्वान् ब्रह्मसोममध्ये कुमारमृषभमदितिं ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये दुर्गां विष्णुं ब्रह्माग्निमध्ये स्वधां ब्रह्मयममध्ये मृत्युं रोगं ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये गणपतिं ब्रह्मवरुणमध्ये अपः ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः ब्रह्मपादमूले भूमिं तत्रैव गङ्गादिनदीः धाम्नोधाम्न इति सप्त सागरान् बहिः सोमादिसंनिधौ क्रमेण गदां त्रिशूलं वज्रं शक्तिं दण्डं खड्गं पाशमङ्कुशं पुनरुत्तरादिषु गौतमं भरद्वाजं विश्वामित्रं कश्यपं जमदग्निं वासिष्ठमत्रिमरुन्धतीं च पूर्वादिषु ऐन्द्रीं कौमारीं ब्राह्मीं वाराहीं चामुण्डां वैष्णवीं माहेश्वरीं वैनायकीम् इत्यावाह्य संपूज्य बलिं दत्त्वा तन्मध्ये मही द्यौरिति भूमिं स्पृष्ट्वा धान्यमसीति सप्त धान्यानि क्षिप्त्वा तदुपरि आकलशेष्विति हैमराजतताम्रमृन्मयान्यतमं वा कलशं संस्थाप्य इमं मे वरुण इति जलेनापूर्य गन्धद्वारामिति गन्धं या ओषधीरिति सर्वौषधीः काण्डात्काण्डादिति दूर्वाः अश्वत्थे वो इति पञ्चपल्लवान् स्योना पृथिवीति सप्त मृदः याः फलिनीरिति फलं परिवाजपतिरिति पञ्चरत्नानि हिरण्यगर्भ इति हिरण्यं युवा सुवासा इति रक्तवस्त्रेण संवेष्ट्य पूर्णा दर्वीति पात्रं निधाय तत्र रक्तवस्त्रे यन्त्रं लिखेत् ॥ तद्यथा चतुर्द्वारं चतुरस्रं यन्त्रं कृत्वा मध्ये त्रिकोणं कृत्वा तत्पश्चिमार्धे त्रिकोणं व्यस्तं कृत्वा पूर्वस्य पश्चिमरेखासंलग्नमन्यत्रिकोणं कृत्वा तत्कोणसंलग्नान्यन्यानि त्रिकोणानि कृत्वा तेन बहिः षट् कोणाः मध्ये षट्काश्च संपद्यन्ते ॥ तन्मध्ये चान्यत्रिकोणमिति यन्त्रं विलिख्य शतचण्ड्यां पलेन सहस्रचंड्यां पञ्चपलेन तदर्धेन तदर्धार्धेन वा प्रतिमां पूर्वोक्तध्यानयुतां कारयित्वा अग्न्युत्तारणप्रतिष्ठापूर्वकं तस्मिन्कलशे यन्त्रं स्थापयित्वा नित्यपूजाप्रकारेण पात्रासादनपूर्वकं पीठपूजनावरणदेवतापूजनयुतं श्रीमहालक्ष्मीपूजनं कृत्वा राजोपचारान् निवेद्य नीराजनं कृत्वा प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा चतुःषष्टियोगिनीपूजामारभेत ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तत्र देव्यग्रे रक्तवस्त्रे अष्टौ पत्राणि कृत्वा तस्योपरि उपरि एवमष्टौ पत्रपङ्क्तीः विधाय तत्र शुक्लवर्णे शूलडमरुपाशासिधरे सवा लंकारभूषिते ससैन्यजये इहागच्छागच्छेमं पायसबलिं गृहाण२ स्वाहा इत्यावाह्य संपूज्य पायसबलिं दत्त्वा १ एवं विजये २जयन्ति ३ अपराजिते ४ दिव्ययोगिनि ५ महायोगिनि ६ सिद्धयोगिनि ७ गणेश्वरि ८ इति प्रथमाष्टकम् ॥१॥ ततो गौरवर्णे अक्षमालांकुश पुस्तकवीणाधरे प्रेतासने एह्येहि इमं पायसबलिं गृहाण २ स्वाहा १ एवं डाकिनि २ कालि ३ कालरात्रि ४ निशाचारि ५ टंका रिणि ६ रुद्रवेतालिनि ७ हुंकारिणि ८ इति द्वितीयाष्टकम् ॥ २ ॥ ततो रक्तवर्णे ज्वालाशक्त्यभयवरदे ऊर्ध्वकेशि एह्येहीत्यादि प्राग्वत्स्वाहान्तमुच्चार्य बलिं निवेद्य १ एवं विरूपाक्षि २ शुष्काङ्गि ३ नरभोजिनि ४ फट्कारिणि ५ वीरभद्रे ६ धूमाङ्गि ७ कलह प्रिये ८ इति तृतीयाष्टकम् ॥ ३ ॥ ततो विद्युत्सन्निभे ध्वजबाणधनुष्पाशहस्ते राक्षसि एह्येहि० स्वाहान्तमुच्चार्य बलिं निवेद्य १ एवं रक्ताक्षि २ विश्वरूपे ३ भयंकरि ४ वीरकौमारि ५ चण्डिके ६ वाराहि ७ मुण्डधारिणि ८ इति चतुर्थाष्टकम् ॥ ४ ॥ तत आ दित्यवर्णे कमलाक्षमालाभयवरदकरे भैरवि एह्येहि० स्वाहा बलिं निवेद्य १ एवं ध्वाङ्क्षिणि २ धूम्राङ्गि ३ प्रेतवाराहि ४ खड्गिनि ५ दीर्घलम्बोष्ठि ६ मालिनि ७ मन्त्रयोगिनि ८ इति पञ्चमाष्टकम् ॥ ५ ॥ ततः सुनीले शङ्खचक्रगदाभयकरे कालिनि एह्येहि० स्वाहा इति बलिं निवेद्य १ एवं चक्रिणि २ कङ्कालि ३ भुवनेश्वरि ४ शटकि ५ महामारि ६ यमदूति ७ करालिनि ८ इति षष्ठाष्टकम् ॥ ६ ॥ ततोऽञ्जननिभे खड्गखेटपट्टिशपरशुहस्ते केशिनि एह्येहि० स्वाहा इति बलिं निवेद्य १ एवं मर्दिनि २ रोमजङ्घे ३ निद्रा रिणि ४ विशालिनि ५ कार्मुकि ६ लोलि ७ अधोमुखि ८ इति सप्तमाष्टकम् ॥ ७ ॥ ततो धूम्रवर्णे कुन्तखेटभिण्डिपालमाला करे मुण्डाग्रधारिणि एह्येहि० स्वाहा इति बलिं निवेद्य १ एवं व्याघ्रि २ कांक्षिणि ३ प्रेतरूपिणि ४ धूर्जटि ५ घोरि ६ करालि ७ विषलम्बिनि ८ इति अष्टमाष्टकम् ॥८॥ इति चतुःषष्टियोगिनीबलिक्रमः ॥ एवं चतुःषष्टियोगिनीपूजां विधाय बलिं दत्त्वा गणपतये नमः बं बटुकाय पिंगलभासुरनेत्राय बलिं गृहाण २ भक्ष २ कन्दन २ ह्रौं हूं स्वाहा इति बटुकाय क्षेत्रपालाय च बलिं दत्त्वा भूतबलिं दद्यात् ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तत्र मन्त्रः ॥सर्वपीठोपपीठानि द्वारोपस्तरणेऽपि च ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंदोहः सर्वं दिग्भागसंस्थिताः॥१॥योगिनीयोगवीरेन्द्राः सर्वे यन्त्रसमागताः॥ नगरे त्वथवा ग्रामे अटव्यां सरितस्तटे ॥२॥ वापीकूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे ॥नानारूपधरा ये च बटुरूपधराश्च ये॥३॥ सर्वे तत्रैव संतुष्टा बलिं गृह्णन्तु मे सदा ॥ शरणागतोऽस्म्यहं तेषां ते सर्वे मे सुखप्रदाः ॥४॥ बलिदानेन संतुष्टाः प्रयच्छन्तु ममेप्सितम् ॥ सर्वकार्याणि कुर्वन्तु दोषांश्च घ्नन्तु मे सदा ॥५॥ इति सर्वेभ्यो बलिं दद्यात् ॥ ततः कुमार्यः प्रत्यहं शतं नव वा पूज्याः ॥ तल्लक्षणादीनि कुमारीपूजनाध्याये द्रष्टव्यानि ॥ एवं कुमारीपूजनं सुवासिनीपूजनं च विधाय ॥ द्वितीयदिने द्विगुणं तृतीये त्रिगुणं चतुर्थे चतुर्गुणम् इति शतचण्डचां सहस्रचण्डचां दशोत्तरा वृद्धिः कार्या ॥ पूजां देव्यै समर्प्य सर्वे विप्राः कृताङ्गन्यासाः शतं नवार्णमन्त्रं कवचार्गलाकीलकानि सकृज्जपित्वा सप्तशतीं जपित्वाऽन्ते रहस्यानि नवार्णं शतं जपेयुः ॥ कवचादीनां प्रत्यावृत्तौ नावृत्तिः ॥ एवं प्रथमे एकाऽऽवृत्तिः १ द्वितीये २ तृतीये ३ चतुर्थे ४ एवं शतसहस्रावृत्तयः संपद्यन्ते ॥ नित्यं क्षीरान्नभोजनमशक्तौ हविष्यान्नं सर्वेषां प्रत्यहं शतं सहस्रं वा ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ पञ्चमेऽह्नि होमः कार्यः ॥ नवरात्रे तु नवम्यामेव होमः ॥ होमस्तु नवचण्डीविधानोक्तप्रकारेण कार्यः ॥ पूजास्विष्टकृदादि सर्वं तद्वत्कुर्यात् ॥ अथ शतचण्डीसहस्रचण्डचादौ पूजासामग्री ॥ अशीतिगुञ्जाप्रमाणा कस्तूरी तावन्मानं केशरं तावज्जातीफलं तावान् कर्पूरः एतच्चतुष्टयं पलमात्रं चन्दनेन घर्षयेत् तेन पलद्वयमनुलेपनं भवति पलं तु विंशत्युत्तरत्रिंशद्गुञ्जामितं वस्त्रस्य तु मानानुक्तेः स्त्रीजनपरिधानयोग्यं ग्राह्यं गद्याणत्रयहेमनिर्मितालंकाराः स्त्रीजनोचिताः गद्याणमानं तु लौकिकतौलस्यार्धं पुष्पाणि २५००० पलद्वयमितः गुग्गुलुः दीपा विंशतिर्घृतपूरिताः कुम्भप्रमाणं घृतं कुम्भस्तु विंशतिद्रोणः द्रोणस्तु खार्याः खलु षोडशांशः कुडवद्वयमात्रं हविष्यान्नभोजनं नैवेद्यं पलचतुष्कं कुडवः शतद्वयं नागवल्लीदलं तदनुरूपं पूगीफलादिकं कर्पूरादि च ग्राह्यम् ॥ इति पूजासामग्री ॥ अन्यापि ग्राह्या ॥ इति गोविन्दकृतकल्पवल्ल्युक्तशतचण्डीसहस्रचंडीप्रयोगः ॥ शान्तिसारे रुद्रयामले विशेषः ॥ शतचण्डीविधानं च प्रोच्यमानं शृणुष्व

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तत् ॥ सर्वोपद्रवनाशार्थं शतचण्डीं समारभेत् ॥१॥ षोडशस्तम्भसंयुक्तं मण्डपं पल्लवोज्ज्वलम् ॥ वसुकोणयुतां वेदीं मध्ये कुर्यात्रिभागतः ॥ २ ॥ पक्वेष्टकचितां रम्यामुच्छ्राये हस्तसंमिताम् ॥ पञ्चवर्णरजोभिश्च कुर्यान्मण्डलकं शुभम् ॥ ३ ॥ आचार्येण समं विप्रान्वरयेद्दश सुव्रतान् ॥ ईशान्यां स्थापयेत्कुम्भं पूर्वोक्तविधिनाऽऽहरेत् ॥ ४ ॥ वारुण्यां च प्रकर्तव्यं कुण्डं लक्षणसम्मितम् ॥ मूर्तिं देव्याः प्रकुर्वीत सुवर्णस्य पलेन वै ॥५॥ तदर्धेन तदर्धेन तदर्धेन महामते ॥ अष्टादशभुजां देवीं कुर्याद्वाऽष्टकरामपि ॥६॥ पट्टकूलयुगच्छन्नां वेदीमध्ये निधापयेत् ॥ देवीं संपूज्य विधिवज्जपं कुर्युर्दश द्विजाः ॥ ७ ॥ शतमादौ शतं चान्ते जपेन्मन्त्रं नवार्णकम् ॥ चण्डीसप्तशतीमध्ये संपुटोऽयमुदाहृतः ॥ ८ ॥ एकं द्वे त्रीणि चत्वारि जपेद्दिनचतुष्टयम् ॥ रूपाणि क्रमशस्तद्वत्पूजनादिकमाचरेत् ॥ ९ ॥ पञ्चमे दिवसे प्रातर्होमं कुर्याद्विधानतः ॥ गुडूचीं पायसं दूर्वास्तिलाञ्छुक्लान्यवानपि ॥ १० ॥ चण्डीपाठस्य होमे तु प्रतिश्लोकं दशांशतः ॥ होमं कुर्याद्ब्रह्मादिभ्यश्चर्वाज्यसमिधैः क्रमात् ॥११॥ हुत्वा पूर्णाहुतिं दद्याद्विप्रेभ्यो दक्षिणां क्रमात् ॥ कपिलां गां नीलमणिं श्वेताश्वं छत्रचामरम् ॥ १२ ॥ अभिषेकं ततः कुर्युर्यजमानस्य ऋत्विजः ॥ एवं कृतेऽमरेशान सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥१३॥ इति श्रीह० बृ० ध० उपासनास्तबके दुर्गोपासनाध्याये शतचण्डीविधानप्रयोगकथनं नाम त्रयस्त्रिंशं प्रकरणम् ॥ ३३ ॥ अथ सहस्रचण्डीविधानम् ॥ उक्तं च मन्त्रमहोदधौ ॥ एतद्दशगुणं कुर्याच्चण्डीसाहस्रजं विधिम् ॥ विद्यावतः सदाचारान्ब्राह्मणान्वृणुयाच्छतम् ॥ १ ॥ प्रत्येकं चण्डिकापाठम् विदध्युस्ते दिशामितान् ॥ अयुतं प्रजपेयुस्ते प्रत्येकं नववर्णकम् ॥ २ ॥ पूर्वोक्ताः कन्यकाः पूज्याः पूर्वमन्त्रैः शतं शुभाः ॥ एवं दशाहं संपाद्य होमं कुर्युः प्रयत्नतः ॥ ३ ॥

सहस्रचण्डीविधानमाह--एतद्दशगुणमिति ॥ शतचण्डीविधानमित्यर्थः ॥ तत्र शतविप्रवरणम् ॥ १ ॥ ते शतविप्राः दशदशसप्तशतीपाठान् कुर्युः ॥ अयुतमयुतं नवार्णजपं कुर्युः ॥ २ ॥ शतं कन्याश्च भोज्याः पूज्याः एवं दशादिनेषु संपाद्य एकादशेऽह्नि सप्तशतीशतावृत्त्या प्रतिश्लोकं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सप्तशत्याः शतावृत्त्या प्रतिश्लोकं विधानतः ॥ लक्षसंख्यं नवार्णेन पूर्वोक्तैर्द्रव्यसंचयैः ॥ ४ ॥ होतृभ्यो दक्षिणां दत्त्वा पूर्वोक्तान्भोजयेद्द्विजान् ॥ सहस्रसंमितान्साधून् देव्याराधनतत्परान् ॥ ५ ॥ एवं सहस्रसंख्याके कृते चण्डीविधौ नृणाम् ॥ सिद्ध्यत्यभीप्सितं सर्वं दुःखौघश्च विनश्यति ॥ ६ ॥ मारीदुर्भिक्षरोगाद्या नश्यन्ति व्यसनोच्चयाः ॥ नेमं विधिं वदेद्दुष्टे खले चौरे गुरुद्रुहि ॥ ७ ॥ साधौ जितेन्द्रिये दान्ते वदेद्विधिमिमं परम् ॥ एवं सा चण्डिका तुष्टा वक्तॄञ्छ्रोतॄंश्च रक्षति ॥ ८ ॥ शान्तिसाररुद्रयामले ॥ सहस्रचण्डीं विधिवच्छृणु विष्णो महामते ॥ राज्यभ्रंशो ह्यकस्माच्चेज्जनमारे महाभये ॥ ९ ॥ गजमारेऽश्वमारे च परचक्रभये तथा ॥ इत्यादिविविधे दुःखे क्षयरोगादिजे भये ॥ १० ॥ सहस्रं चण्डिकापाठं कुर्याद्वा कारयेत्तथा ॥ जापकास्तु शतं प्रोक्ता विंशद्धस्तस्तु मण्डपः ॥ ११ ॥ भोज्याः सहस्रं विप्रेन्द्रा गोशतं दक्षिणां दिशेत् ॥ गुरवे द्विगुणं देयं शय्यादानं तथैव च ॥ ॥ १२ ॥ सप्तधान्यं च भूदानं श्वेताश्वं च मनोहरम् ॥ पञ्चनिष्कमिता मूर्तिः कर्तव्या वर्धमानतः ॥१३॥ अष्टादशभुजां देवी सर्वायुधविभूषिताम् ॥ अन्नं वारि च दातव्यं सहस्रं प्रत्यहं विभो ॥ १४ ॥ शतं वा नियताहारः पयोमानेन वर्तयेत् ॥ एवं यश्चण्डिकापाठं सहस्रं तु समाचरेत् ॥ १५ ॥ तस्य स्यात्कार्यसिद्धिस्तु नात्र कार्या विचारणा ॥१६॥ अन्येऽपि विशेषाः योगिनीभैरवीवाराहीतन्त्रेषु देवीकालिकापुराणयोश्चानुसंधेयाः ॥ ते च प्रयोगे स्पष्टाः ॥ वयं तु यामलाद्युक्तं नानुतिष्ठामहे यामलस्य मोहनशास्त्रत्वेनाप्रामाण्यात् ॥ १७ ॥ इति शान्तिसारोक्ता सहस्रचण्डी ॥ अन्यत्र एतद्दशगुणो विधिरयुतचण्ड्यां एतद्दशगुणो विधिर्लक्षचण्ड्यां शतब्राह्मणैरेव वा चत्वारिंशद्दिनैरयुतचंडी कार्या ॥ तत्र प्रथमदशके एकैवावृत्तिः द्वितीयदशके द्वे तृतीये तिस्रः चतुर्थे चतस्रः तैरेव

तल्लक्षसंख्यं नवार्णेन च होमः ॥३॥४॥ ऋत्विग्भ्योऽपि दशदशनिष्कमितं सुवर्णं प्रत्येकं दद्यात् शेषं पूर्वोक्तवत् ॥ इति सहस्रादिविधिः ॥ ५ ॥ एतत्फलमाह--एवं सहस्रसंख्याकम् इति ॥ एतदयुतचण्डीविधानलक्षचण्डीविधानयोरुपलक्षकं सहस्रचण्डीदशगुणोऽयुतचण्डीविधिः ॥ तद्दशगुणो लक्षचण्डीविधिः जपे होमे दक्षिणायां कन्यासुवासिनीविप्रभोजने च दशगुणत्वम् ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

चतुःशतदिनैर्वा लक्षचण्डीत्यादि बोध्यम् ॥ १८ ॥ शेषं शतचण्डीवत् ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते० बृ० ध० उ० स्त० दुर्गोपासनाध्याये सहस्रायुतलक्षचण्डीविधानकथनं नाम चतुस्त्रिंशं प्रकरणम्॥३४॥अथ दुर्गामखमहोत्सवः प्रारभ्यते॥ तत्रादौ नित्यचण्डीनवचण्डयादिविधानं स्पष्टीक्रियते ॥ अथ नवार्णविधानपद्धतिं व्याख्यास्यामः ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि श्रीलक्ष्म्याः पद्धतिं शुभाम् ॥ साधकानां सपर्यार्थं संक्षेपादुच्यते मया ॥ १ ॥ डामरोक्तदुर्गाकल्पे ॥ अत्र मूलवचनानि अपेक्षितानि चेत्पूर्वं दुर्गाकल्पे प्रतिपादितानि तत्र द्रष्टव्यानि ॥ प्राचीनदुर्गामखमहोत्सवपुस्तके तु मूलवचनसहितं पुस्तकं लिखितं सर्वत्र वर्तते ॥ मया तु मूलवचनानि त्यक्त्वा केवलं प्रयोगो लिखितः ॥ यतोऽस्मिन्नध्याये दुर्गाकल्पः संपूर्णः प्रतिपादितोऽस्ति तेनात्र खण्डित इति शङ्का न कार्या ॥ राजोवाच ॥ पुनस्त्वां परिपृच्छामि चण्डिकापूजनं शुभम् ॥ नित्यचण्डयादिजाप्यस्य विधानं च द्विजोत्तम ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच परिपृच्छसि यत्नेन चण्डिकापूजनादि यत् ॥ तदहं ते प्रवक्ष्यामि यथावदनुपूर्वशः ॥ ३ ॥ ततो दीक्षाकालनियमाः ॥ चैत्रे मासि जपं कुर्यात्पुत्रलाभो भवेद् ध्रुवम् ॥ वैशाखे धनधान्यं स्याज्ज्येष्ठे श्रेष्ठफलं लभेत् ॥ ४ ॥ आषाढे सर्वनाशः स्याच्छ्रावणे लभते सुखम् ॥ भाद्रे मासि प्रजानाश आश्विने संपदः श्रियः ॥ ५ ॥ कार्त्तिके ज्ञानसिद्धिः स्यान्मार्गशीर्षे बहुप्रजाः ॥ पौषे तु ज्ञाननाशः स्यान्माघे मेघाविवर्धनम् ॥ ६ ॥ फाल्गुने सर्वसिद्धिः स्यात्क्षयाधिकौ तु मृत्युदौ ॥ रवौ गुरौ सिते सोमे कर्तव्यं बुधशुक्रयोः ॥ ७ ॥ शुभयोगे शुभे लग्ने सुप्रसन्ने प्रसन्नधीः ॥ शुक्लपक्षे शुभे चन्द्रे दीक्षा कार्या सदा बुधैः ॥ ८ ॥ आकर्षणं वसन्ते च ग्रीष्म विद्वेषणं स्मृतम् ॥ जारणोच्चाटनं मौनं वर्षर्तौ योजयेद् बुधः ॥ ९ ॥ शरद्यां शान्तिकं कर्म हेमन्ते च सपौष्टिकम्॥ प्रावृट्काले ऽभिचारे च शिशिरे मारणं तथा ॥ १० ॥ शीघ्रं प्रयोगसिद्धयर्थमृतवः परिकीर्तिताः ॥ स्थिराश्विकर्णद्वयपौष्णसौम्यमघार्कचित्रानिलमूलधिष्ण्यैः ॥ कुजार्किरिक्ताकुलिकादिदोषैर्हीनः शुभः शान्तिककर्महोमः ॥ ११ ॥ यदा कदाचिच्छुभमासि शुक्लचतुर्दशीमारभ्य पुनः शुक्लचतुर्दशीपर्यन्तं त्रिंशद्दिनात्मिका नित्यचंडी कर्तव्या ॥ आश्विनशुक्लप्रतिपदमारभ्य नवमीपर्यन्तं नव

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दिनात्मकं नवरात्रिविधानं नवचण्डी च कर्तव्या ॥ यस्मिन्कस्मिन्नुत्तमे मासि शुक्लषष्ठीमारभ्य शुक्लचतुर्दशीपर्यन्तं नवदुर्गा विधानं कर्तव्यं च ॥ तथैव कृष्णषष्ठीमारभ्य कृष्णचतुर्दशीपर्यन्तं नवदिनात्मकं कालरात्रिविधानं कर्तव्यम् ॥ अथोदगयन आपूर्य माणपक्षेऽथवा शरत्काले उक्ते मास्युक्तर्क्षे सुमुहूर्ते चन्द्रताराबलान्विते पुण्याहे सद्व्रती भूत्वा भगवतीमहोत्सवं कुर्यात् ॥ अन्यतमे शुभदिने वाऽक्षरकल्पप्रयोगेण च सप्तशतीमाहात्म्यमालास्तोत्रपाठेन शतसहस्रलक्षकोटिचण्डिकाविधानं कर्तव्यमिति न्यायक्रमः ॥ एवं भगवतीमहोत्सवं यःकरोति स कर्ता सर्वेप्सितभोक्ता भवति ॥ आदौ नत्वा महालक्ष्मीं कर्तुं कर्त्रीं सदोदिताम् ॥ यन्नमस्कारतो यज्ञा भवन्ति सुकृताः सकृत ॥ अथ मन्त्रोद्धारस्तु दुर्गाकल्पे ज्ञेयः ॥ मन्त्रप्रकाशः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ अथ ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय महालक्ष्मीं मनसा ध्यात्वा गुरुचरणौ स्मृत्वा नत्वा च ॥ सहस्रदलपङ्कजे सकलशीतरश्मिप्रभं वराभय कराम्बुजं विमलगन्धपुष्पाम्बरम् ॥ प्रसन्नवदनेक्षणं सकलदेवतारूपिणं स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधानपूर्वं गुरुम् ॥ १ ॥ प्रातः शिरसि शुक्लाब्जं द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुम् ॥ वराभयकरं शान्तं स्मरेत्तन्नामपूर्वकम् ॥ २ ॥ तत्पादोदकजा धारा निपतन्तु स्वमूर्धनि ॥ चिन्तयेद्ब्रह्मरन्ध्रेण प्रविशन्तीं स्वकां तनुम् ॥ ३ ॥ तनुं संक्षालयेन्नित्यमन्तर्देहगतं मलम् ॥ तत्क्षणाद्विरजा मन्त्री जायते स्फटिको पमः ॥ ४ ॥ इत्यवं गुरुपादुकां ध्यात्वा ॥ सदाचाराः कुलीनाश्च ह्रीमन्तः सत्यवादिनः ॥ चण्डिकापाठसंपूर्णा दयावन्तो जिते न्द्रियाः ॥ ५ ॥ ईदृग्लक्षणसंपूर्णा दम्भमोहविवर्जिताः ॥ दश विप्राः समभ्यर्च्या महालक्ष्मीस्वरूपिणः ॥ ६ ॥ ब्रह्मचारिणौ समाहूय सोपाध्यायौ विशेषतः ॥ एवं द्वादशसंख्याकान्नवार्णेन समन्वितान् ॥ ७ ॥ विद्यागमसमायुक्तान्मन्त्रविद्याविशारदान् ॥ इति विप्रान् समाहूय तैलाभ्यञ्जनपूर्वकम् ॥ ८ ॥ ततः सभार्यः ससुतः सबान्धवः कर्ता तैलस्नानं कुर्यात् ॥ पट्टकूलक्षीरोदशुक्ल वाससां परिधानं कृत्वा नित्यकर्म विधाय अथानन्तरं देव्यागारे स्वमन्दिरे शुचौ देशे गोमयलिप्ते रङ्गमालाभिरलंकृत्य तत्र मण्डपं षोडशस्तम्भनिर्मितं यथोक्तसंख्याकं चतुर्दिक्षु चतुर्द्वारोपशोभितम् ॥ तोरणानि यथोक्तानि सुवितानध्वजपताकादिभिरलंकृतयच्छत्र

Chinmа. Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

चामरमण्डितानि तन्मध्ये वेदिकामुक्तलक्षणां कुर्यात् ॥ ततः पूजोपचारानादाय उपवेशनार्थं विष्टरद्वयं प्रतिब्राह्मणम् ॥ अर्घ्य दानार्थं शङ्खः ॥ आचमनार्थं ताम्रकृतकमण्डलुं पादप्रक्षालनार्थं कांस्यपात्रं पयोदधिघृतमधुशर्करासहितं पञ्चामृतं स्नानार्थमुष्णो दकं शीतोदकं च चन्दनादीनि च दशपदानि आसाद्य तत्र भूमौ तन्दुलाष्टदलं विरचय्य तस्योपरि कलशद्वयं विन्यस्य ॥ उक्तं च ॥ सुस्नातस्तिलतैलेन पूर्वाह्णे च नृपोत्तम ॥ पुण्याहवाचनं कृत्वा द्विजांश्चैव प्रपूजयेत् ॥ ९ ॥ ततश्च कारयेद्वेदीं सप्तधान्य युतां नृप ॥ स्थापयेत्पूर्णकलशं पञ्चरत्नसमन्वितम् ॥ १० ॥ वस्त्रे चारक्तके चैव संलिखेद्यन्त्रमुत्तमम् ॥ गर्भे संस्थापयेद्देवीं चण्डिकां हेमरूपिणीम् ॥ ११ ॥ पञ्चामृताद्यैः सुस्नातां चर्चितां गन्धकुंकुमैः ॥ तथा रक्तेन वस्त्रेण प्रच्छन्नां भक्तवत्सलाम् ॥१२॥ गुरूपदेशविधिना पूजनीया प्रयत्नतः ॥ नवरात्रविधिरयं कलशस्थापनं स्मृतम् ॥ १३ ॥ अथ यजमानः साङ्गमण्डपयागपश्चिम द्वारं प्रविश्य पाणिभ्यां महाफलं गृहीत्वा पित्रोपार्जितं देवाय समर्प्य उक्तासने प्राङ्मुख उपविश्य ब्रह्माचार्यावुदङ्मुखावुप वेशयेत् ॥ १४ ॥ ॐ गणपतयेनमः ॥ ॐ कुलदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्योब्राह्मणेभ्यो नमः ॥ इति सर्वान्प्रत्येकं नमस्कृत्य महा काल्यादिदेवतात्रयं मनसा ध्यात्वा प्रयोगमारभेत् ॥ देशकालौ स्मृत्वा तत्त्वत्रयेणाचम्य प्राणायामत्रयं कृत्वा शिखां बद्ध्वा कर्मा रम्भेषु सर्वेषु आचम्यासून्नियम्य च ॥ कार्योद्देशप्रयत्नेन ततः संकल्पमारभेत् ॥ एवंगुणविशेषणविशिष्टे कालेऽस्मिन्पुण्याहे अस्य यजमानस्य सकलपरिवारस्यायुरारोग्यैश्वर्यसंपदां वृद्ध्यर्थं पुत्रपौत्रादिसमृद्ध्यर्थं सर्वेप्सितसिद्ध्यर्थं धनधान्यसमृद्ध्यर्थं सकलमनो रथावाप्त्यर्थं आधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थं मम जन्मराशेः सकाशाद्दुष्टस्थानस्थिता ग्रहाः ये के चित्क्रूर ग्रहास्तत्सर्वारिष्टोपशान्त्यर्थं तृतीयैकादशफलप्राप्त्यर्थं सर्वकामनासंपूर्णतासिद्ध्यर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थं मया च ऋत्विग्द्वारा अमुककामनया यथोक्तं नवचण्डीमखं शतचण्डीमखं सहस्रचण्डीमखं लक्षचण्डीमखं कोटिचण्डीमखं करिष्य

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

इति सकामसंकल्पः ॥ तथा निष्कामसंकल्पस्मरणम् ॥ मया च ऋत्विग्द्वारा कृतसंकल्पसिद्ध्येऽधुना वा अमुकचण्डीमखं महा काल्यादिप्रीत्यर्थं करिष्ये तदङ्गभूतमादौ ब्राह्मणप्रार्थनामर्घ्यदानं च करिष्ये ॥ पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः ॥ अनु गृह्णन्तु मामद्य महाचण्डचाख्यकर्मणि ॥ १५ ॥ चण्डीकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः ॥ श्रोत्रियाः सत्यवादाश्च देवध्यान रताः पराः ॥ १६ ॥ यद्वाक्यामृतसंसिक्ता ऋद्धिं यान्ति नरद्रुमाः ॥ अङ्गीकुर्वन्तु मत्कर्म कल्पद्रुमसमाश्रिताः ॥ १७ ॥ यथोक्त नियमैर्युक्ता मन्त्रार्थस्थिरबुद्धयः ॥ मत्कृपालोचनात्सर्वा वृद्धयो ऋद्धिमाप्नुयुः ॥ १८ ॥ महाचण्डीजपे पूज्याः सन्तु मे नियमा न्विताः ॥ अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मवादिनः ॥ १९ ॥ चण्डीध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥ माऽलीकभाषिणः सन्तु मा सन्तु परवादकाः ॥ २० ॥ ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ॥ इति विप्रानपि स्तुत्वा कृत्वा चार्घ्यं निवेदयेत् ॥ तत्रा ङ्गणेकुङ्कुमेन चतुरस्रं मण्डलं हस्तमात्रं विधाय ॥ तत्र ब्रह्मादीनां चरणौ स्थाप्य तच्चरणेसमीपे अर्घ्यं दत्त्वा ॥ स्वागतं भो द्विज श्रेष्ठा मदनुग्रहकारकाः ॥ इदमर्घ्यमिदं पाद्यं भवद्भिः प्रतिगृह्यताम् ॥ यथावृद्धि निधातव्यं पादक्षालनमृत्विजाम् ॥ आत्मनश्च रणौ धृत्वा गत्वा मण्डपमध्यतः ॥२१॥ पुनरुपविश्याचम्य प्राणानाम्य देशकालौ स्मृत्वा प्रारिप्सितकर्मणोऽङ्गभूतमादौ निर्विघ्नता सिध्यर्थं गणपतिपूजनं करिष्ये ॥ गणेशं संपूज्य मातृपूजनमारभेत्॥कर्मारम्भेषु सर्वेषु मातरःसगणाधिपाः॥पूजनीयाःप्रयत्नेन पूजिताः पूजयन्ति ताः ॥ २२ ॥ तासामधिष्ठानमाह ॥ प्रतिमासु च शुभ्रासु लिखित्वा वा पटादिषु ॥ अथवाऽक्षतपुञ्जेषु पृथग्विधैः ॥ २३ ॥ ताश्च ॥ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ॥ देवसेना स्वधा स्वाहा मातरोलोकमारः ॥ २४ ॥ धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टि रात्मनः कुलदेवता ॥ गौर्यादितुष्टिपर्यन्ता आत्मदेवतया सह ॥२५॥ गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्चतुर्दश॥इति॥ब्राह्मी माहेश्वरीचैव कौमारीवैष्णवी तथा ॥ वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा चण्डिकेति च ॥२६॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ॥ बुद्धि र्लज्जा श्रिया कान्तिः शान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥२७॥ एताश्चतुर्दशाख्याताः कुण्डचाख्या मातरः शुभाः ॥ इति ॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृमेधा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

बुद्धिः प्रज्ञा सरस्वती ॥ आज्यमातरस्तथैव स्युर्वसोर्धारासमन्विताः ॥ २८॥ इति ॥ महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती तथा ॥ वाग्भवं तारया कामं न्यसेद्बीजानि कालिके ॥ इति ॥ अत्र पृथक्प्रतिष्ठापूजनम् ॥ प्रारिप्सितकर्मणोऽङ्गभूतं मातृकाप्रतिष्ठापूजनं करष्ये ॥ इति संकल्प ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौरि इहागच्छेह तिष्ठ गन्धाद्युपचारान्समर्पयामि नमः १ एवं ॐ भू० पद्मे इहा० २ ॐ भू० शचीहा० ३ ॐ भू० मेधे इहा० ४ ॐ भू० सावित्रि इहा० ५ ॐ भू० विजये इहा० ६ ॐ भू० जये इहा० ७ ॐ भू० देवसेने इहा० ८ ॐ भू० स्वधे इहा० ९ ॐ भू० स्वाहे इहा० १० ॐ भू० मातर्लोकमातरिहा० ११ ॐ भू० धृते इहा० १२ ॐभू० पुष्टे इहा० १३ ॐ भू० तुष्टे इहा० १४ ॐ भू० आत्मकुलदेवते इहा० १५ ॐ भू० गणेश इहा० १६ एवं गौर्यादिषोडश मातृकाः तथा ॐ भू० ब्राह्मि इहा० १ ॐ भू० माहेश्वरि इहा० २ ॐ भू० कौमारि इहा० ३ ॐ भू० वैष्णवि इहा० ४ ॐ भू० वाराहि इहा० ५ ॐ भू० इन्द्राणि इहा० ६ ॐ भू० चामुण्डे इहा० ७ ॐ भू० चण्डिके इहा० ८ एवं ब्राह्म्याद्यष्टस्थलमातृकाः तथा ॐ भू० कीर्ते इहागच्छ इह तिष्ठ० १ ॐ भू० लक्ष्मि इहा० २ ॐ भू० धृते इहा० ३ ॐ भू० मेधे इहा० ४ ॐ भू० पुष्टे इहा० ५ ॐ भू० श्रद्धे इहा० ६ ॐ भू० क्रिये इहा० ७ ॐ भू० मते इहा० ८ ॐ भू० बुद्धे इहा० ९ ॐ भू० लज्जे इहा० १० ॐ भू० श्रीरिहा० ११ ॐ भू० शान्ते इहा० १२ ॐ भू० कान्ते इहा० १३ ॐ भू० तुष्टे इहा० १४ एवं कीर्त्यादिकुड्यचतुर्दश मातृकाः तथा च ॐ भू० कीर्ते इहागच्छ० १ ॐ भू० लक्ष्मि इहा० २ ॐ भू० धृते इहा० ३ ॐ भू० मेधे इहा० ४ ॐ भू० बुद्धे इहा० ५ ॐ भू० प्रज्ञे इहा० ६ ॐ भू० सरस्वति इहा० ७ एवं वसोर्धारासप्तघृतमातृकाः तथा च प्रधानमातृकाः ॐ भू० ऐं महा कालि विच्चे इहा० १ ॐ भू० ह्रीं महालक्ष्मि विच्चे इहा० २ ॐ भू० क्लीं महासरस्वति विच्चे इहा० ३ एवं प्रतिष्ठाप्य गन्धादिभि रुपचारैः संपूज्य ततः प्रणामः ॥ हस्तैः पद्मं रथाङ्गं गुणमथ हरिणं पुस्तकं वर्णमालां टङ्कं शूलं कपालं दरममृतलसद्धेमकुम्भं वह न्तीम् ॥ मुक्ताविद्युत्पयोधेः स्फटिकनवजपावन्धुरैः पञ्चवक्त्रैस्त्र्यक्षैर्वक्षोजनम्रां सकलशशिनिभां मातृकां तां नमामि ॥ अस्य श्री

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मातृकापूजनविधेर्न्यूनातिरिक्तं ब्राह्मणनां प्रसादात्सर्वं संपूर्णमस्तु इति मातृकापूजनम् ॥ अद्य पूर्वोक्तैवंगुणविशेषणविशिष्टायां पुण्य तिथौ प्रारिप्सितकर्मणोऽङ्गभूतं ब्राह्मणैः सह स्वस्तिपुण्याहवाचनमहं करिष्ये इत्यक्षतोदकेन संकल्प्य समाप्य तथा नान्दीश्राद्धं कृत्वा समाप्य ॥ तत्र ब्राह्मणवरणम् ॥ आवाहयामि देवेशं ब्रह्माणं कमलोद्भवम् ॥ सप्तब्रह्माण्डयोर्मध्ये यः कुर्याद्धौतकर्मभिः ॥ ६४ ॥ दक्षिणे अक्षसूत्रं च वामे चैव कमण्डलुम् ॥ याम्ये पाणौ स्रुवो यस्य स्रुचिर्वामे धृता प्रभो ॥ ६५ ॥ आज्यस्थालीं कुशमुष्टिं होम द्रव्याणि सर्वशः ॥ ६६ ॥ हंसासनसमारूढ ब्रह्मन लोकपितामह ॥ ६७ ॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ चत्वारि वेदवक्त्राणि नानाध्यानपरायणम् ॥ ६८ ॥ यद्गोत्रप्रवरं विप्र स्वशाखाध्ययने रतम् ॥ कर्मिणं विष्णुशर्माणं ब्रह्माणं त्वामहं वृणे ॥ ६९ ॥ तत्र अमुकचण्डयाख्ये कर्मणि कृताकृतावेक्षणार्थममुकसगोत्रममुकसप्रवरान्वितममुकशर्माणम् अमुकशाखाध्यायिन मेभिः पुष्पचन्दनवासोऽलंकरणादिभिर्ब्रह्मपदत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मीति प्रतिवाच्यम् ॥ अथाचार्यवरणम् ॥ आवाहयामि देवेशमाचार्यं विविधैर्गुणैः ॥ पादप्रक्षालने प्रोक्तं आचार्यः पूर्वमेव हि ॥ ७० ॥ गुरुणा नामशेषं च शिवनिर्माणदीक्षितम् ॥ स्मृतयो ऽष्टादशविधा अष्टादशपुराणकम् ॥ ७१ ॥ चत्वारो वेदाः साङ्गाश्च शास्त्रं चैवमनेकधा ॥ पद्मपत्रविशालाक्ष ब्रह्मवंशसमु द्भव ॥ ७२ ॥ अमुकगोत्राभिधानाख्यमाचार्यं त्वामहं वृणे ॥ यजुर्वेदमधीयानं शाखां वाजसनेयिनाम् ॥ महाचण्डीजपार्थं च जापकं कृष्णसंज्ञकम् ॥ ७३ ॥ उत्तमश्रीसुखाप्त्यर्थमाचार्यं त्वामहं वृणे ॥ तत्रामुकचण्डयाख्ये कर्मणि तदङ्गभूतं सकलकर्म कर्तु ममुकसगोत्रममुकसप्रवरान्वितममुकशर्माणममुकशाखाध्यायिनं नवार्णसमन्वितसप्तशतीमालासहितैः एभिः पुष्पचन्दनवासोऽलंक रणादिभिराचार्यत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मीति प्रतिवाच्यम् ॥ एवद्द्विगुणितमाचार्याय दत्त्वा वरयेत् ॥ अथ ऋत्विग्वरणम् ॥ एवं यस्य च यद्गोत्रं यथावत्प्रवरं वरम् ॥ यद्वेदाध्यायिनं विप्रं यच्छाखाध्यायिनं पुनः ॥ जपिनं शतचण्डीनामृत्विजं त्वामहं वृणे ॥ ७४ ॥ वृतोऽस्मीति द्विजेनोक्ते ब्रुवते वर्णकारणात् ॥ तत्रामुकसगोत्रममुकसप्रवरान्वितममुकशाखाध्यायिनममुकशर्माणम् ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अस्मिन् शतचण्डयाख्ये कर्मणि सप्तशतीमालाजपार्थमेभिः पुष्पचन्दनवासोऽलंकरणादिभिः ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे वृतोऽस्मीति प्रतिवाच्यम् ॥ एवं सर्वेषामृत्विजां वरणं कुर्यात् ॥ ततः कर्ता अमुकसगोत्रममुकप्रवरान्वितममुकशाखाध्यायिनममुकशर्माणमस्मिन् कर्मणि दाताऽहम् इति विप्राः नवार्णोपासका वरणीयाः ॥ एवं वरणं समाप्य मधुपर्केणार्चयिष्ये ॥ ततः सर्वेषां मधुपर्कपूजनं कुर्युः ॥ सुगुप्ते शोभने स्थाने स्वरूपं यज्ञमण्डपे ॥ आसयेदासने विप्रान्कोमले रक्तकम्बले ॥७५॥ प्राङ्मुखाय नमः कर्ता ब्राह्मणास्ते उदङ्मुखाः ॥ विशिष्टकालपर्यन्तं कालज्ञानं प्रकीर्तयेत् ॥ ७६ ॥ ततश्चण्डीकलशं पूर्वोक्तवत्प्रतिष्ठाप्य कुमारीपूजनमारभेत् ॥ तत्र कुमारीलक्षणम् ॥ एकवर्षा तु या कन्या पूजार्थं तां विवर्जयेत् ॥ गन्धपुष्पफलादीनां प्रीतिस्तस्या न विद्यते ॥ ७७ ॥ द्विवर्षोत्तरमारभ्य दशवर्षावधि क्रमात् ॥ पूजयेत्सर्वकार्येषु यथाविध्युक्तमार्गतः ॥ ७८ ॥ कुमारिका द्विवर्षा तु त्रिवर्षा च त्रिमूर्तिनी ॥ चतुर्वर्षा तु कल्याणी पञ्चवर्षा तु रोहिणी ॥७९॥ षड्वर्षा तु भवेत्काली सप्तवर्षा तु चण्डिका ॥ शांभवी चाष्टवर्षा तु दुर्गा तु नवमी स्मृता ॥८०॥ दशवर्षा सुभद्रेति नामभिः परिकीर्तिताः ॥ तत्तत्कामनया वयोऽवस्थाविशेषेण पूजनम् ॥ दुःखदारिद्र्यनाशाय शत्रूणां नाशहेतवे ॥ ८१ ॥ आयुष्यबलवृद्ध्यर्थं कुमारीं पूजयेन्नरः ॥ आयुष्कामस्त्रिमूर्तिं तु त्रिवर्गस्य फलाप्तये ॥ ८२ ॥ अपमृत्युव्याधिपीडादुःखानामपनुत्तये ॥ सौख्यधान्यधनारोग्यपुत्रपौत्रादिवृद्धये ॥८३॥ कल्याणीं पूजयेद्धीमान् नित्यं कल्याणवृद्धये ॥ आरोग्यसुखकामी च जयकामी तथैव च ॥८४॥ यशस्कामी नरो नित्यं रोहिणीं परिपूजयेत् ॥ विद्यार्थी च जयार्थी च राज्यार्थी च विशेषतः ॥ ॥ ८५ ॥ शत्रूणां च विनाशार्थं कालिकां पूजयेन्नरः ॥ ऐश्वर्यशुभकामी च स्वर्गकामी च यो नरः ॥ ८६ ॥ संग्रामे जयकामी च चण्डिकां परिपूजयेत् ॥ दुःखदारिद्र्यनाशाय नृपसमोहनाय च ॥८७॥ महापापविनाशाय शांभवीं च प्रपूजयेत् ॥ सबलोत्कटशत्रूणामुग्रसाधनकर्मणि ॥ ८८ ॥ दुर्गां दुर्गविनाशाय पूजयेद्यत्नतो बुधः ॥ सौभाग्यधनधान्यादिवाञ्छितार्थफलाप्तये ॥ ८९ ॥ सुभद्रां पूजयेन्मर्त्यो दासीदासविवृद्धये ॥ ९० ॥ पूज्यापूज्यस्वरूपमाह ॥ हीनाधिकाङ्गीं कुष्ठीं च विलासकुलसंभवाम् ॥ ग्रन्थिस्फुटित

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

शीर्णाङ्गीं रक्तपूयव्रणाङ्किताम् ॥ ९१ ॥ जात्यन्धां केकरां काणीं कुरूपां तनुरोमशाम् ॥ संत्यजेद्रोगिणीं कन्यां दासीगर्भसमुद्भवाम् ॥ ९२ ॥ अरोगिणीं सुपुष्टाङ्गीं सुरूपां व्रणवर्जिताम् ॥ एकवंशसमुद्भूतां कन्यां सम्यक् प्रपूजयेत् ॥९३॥ ब्राह्मणीं सर्वकार्येषु जयार्थे नृपवंशजाम् ॥ लाभार्थे वैश्यवंशोत्थां सुतार्थे शूद्रवंशजाम् ॥ ९४ ॥ दारुणे चान्त्यजातीयां पूजयेद्विधिना नरः ॥ ९५ ॥ रुद्रां चण्डां प्रचण्डां च चण्डोत्थां चण्डनायकाम् ॥ चण्डावतीं चण्डरूपां सहचण्डां प्रपूजयेत् ॥ ९६ ॥ उग्रचण्डां च तामष्टादशहस्तामलंकृताम् ॥ खड्गबाणत्रिशूलानि मुसलं चक्रमंकुशम् ॥ ९७ ॥ शक्तिमुद्गरवज्राणि बिभ्रतीं दक्षिणे करे ॥ खेटकं च धनुर्दण्डं घण्टां परशुतर्जनीम् ॥ ९८ ॥ महापाशं च डमरुं बिभ्रतीं वामपाणिना ॥ पीताऽरुणा च कृष्णा च नीला शुभ्रा च धार्मिका ॥ ९९ ॥श्यामा श्वेता च विज्ञेया सिन्धुज्वाला च सा क्रमात् ॥ वृत्रस्था चात्र पात्रस्था पूज्या सर्वोपचारतः ॥ १०० ॥ पूजकं पूजयेत्सा तु सर्वसंपद्विवृद्धिभिः ॥ निन्दकं निर्दहत्याशु दारिद्र्यव्याधिवह्निभिः ॥ १०१ ॥ तत्र मण्डपाभ्यन्तरे कुंकुमादिभिर्विरचितेऽष्टदले तदुपरि स्थापितपीठे कुमारीमुपवेश्य स्वयमासन उपविश्य प्राणानायम्य समयस्मरणं विधाय कुमारीपूजनं करिष्ये इति संकल्प्य पाद्यादिभिरुपचारैः पूजयेत् ॥ कंचुकैश्चैव वस्त्रैश्च गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ॥ नानाविधैर्भक्ष्यभोज्यैर्भोजयेत्पायसादिभिः ॥१०२॥ आवाहयेत्ततः कन्यां मन्त्रेणानेन सुव्रत ॥ ततस्तु पूजयेद्धीमान् मन्त्रैरेभिः पृथक्पृथक् ॥ कुमारीणां तैलाभ्यङ्गं कुर्यात् ॥ तत्रापि प्रत्येकं कुमारीपूजने आवाहनमन्त्रा उक्ताः ॥ मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातॄणां रूपधारिणीम् ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम् ॥१०३॥ अनेनाद्यवर्षाऽऽवाहनमन्त्रः ॥ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥ १०४ ॥ अनेन द्विवर्षावाहनमन्त्रः ॥ त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं मार्गज्ञानस्वरूपिणीम् ॥ त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥१०५॥ अनेन तृतीयाम् ॥ कालिकां तु कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् ॥ कल्याणजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ १०६ ॥ अनेन चतुर्थीम् ॥ अणिमादिगुणोदारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् ॥ अनन्तशक्तिभेदां तां कामाख्यां



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पूजयाम्यहम् ॥१०७॥ अनेन पञ्चमीम् ॥ कामचारीं महामायां कारुण्यहृदयां शिवाम् ॥ कामदां करुणोदारां गायत्रीं पूजयाम्यहम् ॥१०८॥ अनेन षष्ठीम् ॥ चण्डवीरां महामायां चण्डमुण्डप्रभञ्जिनीम् ॥ तां नमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम् ॥१०९॥ अनेन सप्तमीम् ॥ सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मिकां देवीं शांभवीं पूजयाम्यहम् ॥११०॥ अनेनाष्टमीम् ॥ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुर्गविनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्तिहारिणीम् ॥१११॥ अनेन नवमीम् ॥ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाङ्गीं सुखसौभाग्यदायिनीम् ॥ सन्तोषजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥११२॥ अनेन दशमीम् ॥ इत्यावाहनमन्त्राः ॥ कुमारीं लक्ष्मीस्वरूपां ध्यात्वा तत्र कुमार्या दक्षिणभागे ब्रह्मचारिणमेकं वामे चैकं तथैकं पुरतः एवं बटुकत्रयं ध्यात्वा वक्ष्यमाणमन्त्रेण पाद्यादिभिरुपचारैः संपूज्य ॥ ॐ हं हः अनेन मन्त्रेण सर्वेषां वस्त्रालंकारादीनि दत्त्वा गन्धपुष्पधूपदीपैर्नैवेद्योपहारैर्नानाफलैः पञ्चखाद्यैश्च ताम्बूलनीराजनैः पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा ॥ एवमभ्यर्चनं कुर्यात्कुमारीणां प्रयत्नतः । इति कुमारीपूजनं समाप्यानन्तरं सुवासिनीर्हरिद्रोद्वर्तनादिभिः संपूज्य ब्राह्मणांश्च संपूज्य ॥ तत्र नवरात्रनवदुर्गाकालरात्रीपूजासु प्रतिदिनमेका कुमारी तथा प्रतिदिनं बटुकत्रयं प्रतिदिनं सुवासिन्येका प्रतिदिनमेकं ब्राह्मणमेवं प्रतिदिनमेकोत्तरवृद्ध्या कार्या ॥ शतचण्ड्यादिपूजायां प्रत्यहं दशोत्तरवृद्ध्या कुमार्यादि ॥ एवं सप्तशतिकामः रूपशतं कुमारीणामपि शतम् ॥ ब्राह्मणतर्पणं तावदेव ॥ तदुक्तं कल्पे ॥ कुमार्यो दश संभोज्या भोज्या विप्रा दशोत्तमाः ॥ भोजयेत्परया भक्त्या देशिकादिदशद्विजान् ॥ ११३ ॥ ततो बन्धुसमायुक्तो भुञ्जीयाद्यज्ञकृत्पुमान् ॥ सत्कथाभिः सुगीतैश्च सर्ववादित्रनिःस्वनैः ॥ ११४ ॥ पूजनैः प्रदक्षिणीयैश्च वेदपाठैर्निशां नयेत् ॥ द्वितीये दिवसे स्नात्वा विधिवत्ते द्विजा दशेति ॥ ११५ ॥ इति कुमारीपूजनम् ॥ ततो द्विजमुखादाशीर्ग्रहणम् ॥ ततः पूजासंभृतसंभारो यजमानः बलिप्रदानार्थं दध्यक्तमोदनं दीपांश्च गृहीत्वा सर्वे महानद्यादौ व्रजेयुः ततो वक्ष्यमाणविधिप्रकारेण स्नानं विधाय ॥ पुण्यागारे महारम्भे स्वं स्वमासनमास्थिताः ॥ जपन्ति

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

जय चण्डीति नवदुर्गाप्रपूजनम् ॥ ११६ ॥ अथ होमद्रव्याणि ॥ कुङ्कुमं केसरं चैव चन्दनं रक्तचन्दनम् ॥ कस्तूरी गह्वला द्राभ्यां कर्पूरं नागकेशरम् ॥ ११७ ॥ नखं कृष्णागरुं बाला गोरोचनमतः परम् ॥ हरिद्राद्वयसिन्दूरं गौरसर्षपगुग्गुलम् ॥ ११८ ॥ नारिकेलं लवङ्गैलादशाङ्गं पञ्चखाद्यजम् ॥ जातीफलं जातिपत्रं गन्धराजादिकं तथा ॥ ११९ ॥ तजपत्रं जटामांसी मोहं चैव शतौषधी ॥ कूष्माण्डमिक्षुदण्डं च जम्बीरं दाडिमं तथा ॥ १२० ॥ रम्भाफलानि निम्बानि पुष्पाणि नागवल्लिका ॥ गलसरी चोलिकादि पूगानि अम्बराणि च ॥ पायसं शर्करायुक्तं दधिमध्वाज्यसंयुतम् ॥ पञ्चामृतमिदं प्राहुः पञ्चगव्यं तथा खलु ॥ १२१ ॥ धान्यानि मृत्तिकाः सप्त पञ्चपल्लवबिल्वजम् ॥ शाल्योदनं च दध्यक्तं क्षीरान्नं घृतसंयुतम् ॥ १२२ ॥ बलिप्रदानार्थमिदं माषमुद्गसदीपकान् ॥ एतान्यादाय ॥ इति श्रीडामरतन्त्रसारे चण्डीमखमहोत्सवे प्रारम्भविधिर्नाम प्रथमावसरः ॥ १ ॥ अथादौ ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय श्रीगुरुपादौ स्मृत्वा श्रीमहाकाल्यादिदेवतात्रयं ध्यात्वा नत्वा च तदनुज्ञया नित्यकर्मानुष्ठानं कृत्वा नैर्ऋत्यदिशं गत्वा तृणान्तरितभूमौ मलमूत्रादिविसर्जनं विधाय ततः शौचादिकं स्मृत्युक्तमार्गेण निर्वर्त्यानिषिद्धकाष्ठेनाथवा जात्यादिना च मूलजैर्दन्तान् संशोध्याचम्य मुखं प्रक्षाल्य तत्प्रकारमाह ॥ विध्युक्तं शौचमादाय कुर्याद्दन्तविशोधनम् ॥ दन्तकाष्ठग्रहणमन्त्रः॥ आयुर्बलं० इति मूलेन वा प्रार्थ्य वाग्भवबीजेन दन्तधावनं कुर्यात् ॥ ततः कामराजबीजेन प्रक्षालितमुखो नद्यादौ विधिवत्स्नात्वा नाभिमात्रेऽम्भसि स्थितः दशाञ्जलिभिरात्मानं नवबीजेन पावयेत् ॥ कृत्वा माध्याह्निकं सर्वमुदकान्ते समाहितः ॥ तर्पणाय महालक्ष्म्याः षडङ्गन्यासमाचरेत् ॥ १२३ ॥ इति डामरोक्तम् ॥ ततो महानद्यादौ वापीकूपतडागादीनां तीरमागत्यानेन प्रकारेण पाणिपादौ विशोध्याचम्य मूलेन प्राणानायम्य देशकालसंकीर्तनपूर्वकं प्रयोगं स्मृत्वा ॥ यथा अद्यपूर्वोक्तैवंगुणविशिष्टेऽस्मिन् पुण्याहे अस्य यजमानस्य सर्वेप्सितसिद्ध्यर्थं चण्डीविधानशुद्ध्यर्थं तत्रादौ स्वसूत्रोक्तविधिना स्नानमहं करिष्ये ॥ तथा च शत

---

कचोरा । २ हलद और दारुहलद ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

चण्डीपूजनाङ्गनवार्णविधिना स्नानं करिष्ये इति संकल्पपूर्वकं स्वसूत्रोक्तविधिना वैदिकमन्त्रैः संस्नाय पश्चान्नवार्णमन्त्रेण स्नानं कुर्यात् तद्यथा नाभिमात्रेऽम्भसि स्थित्वा नवबीजेन प्राणानायम्य उपास्यदेवताप्रीतयेऽहं स्नास्ये तत्रादौ प्राणायामं कृत्वा यथा ॥ अथास्य श्रीनवाक्षरमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः ॥ नन्दाशाकंभरीभीमाः शक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि आत्मनः सर्वकामनासिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाल्यादिदेवतात्रयप्रीत्यर्थं प्राणायामादिकरणे विनियोगः ॥ मूलेन प्राणायामत्रयं विधाय ततोऽर्कमण्डलाद्वा स्वहृदयान्मूलेन वा क्रोमित्यङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य ॥ आधारः सर्वभूतेषु शक्तेरतुलतेजसः ॥ तद्रूपाश्च ततो ज्ञाता आपस्तत्प्रणमाम्यहम् ॥ १२४ ॥ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ॥ तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥ १२५ ॥ आवाहयामि देवि त्वां स्नानार्थमिह सुन्दरि ॥ एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥ १२६ ॥ गङ्गे च० सन्निधौ भवेति ॥ तत्रात्मनः पुरतः जले त्रिकोणं तदुपरि षट्कोणं चतुरस्रं च चतुर्द्वारसहितं यन्त्रमालिख्य तत्र मूलविद्यां विभाव्य मूलमन्त्रेण देवतां संचिन्तयेत् ॥ ततो मुद्रां संप्रदर्श्य ॥ यथा महाकाल्यादिदेवतात्रयमूलसहिताऽत्र स्वागता भवेति संस्थाप्य सन्निहितो भव सन्निरुद्धो भव सम्मुखो भव ततो महामुद्रां मूलसमन्वितः दर्शयेत् ॥ तज्जलं वमिति बीजेन धेनुमुद्रया उदकमाप्लाव्य कवचेनावगुण्ठ्य हुंफडित्यस्त्रमन्त्रेण संरक्ष्य ततो धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य ततो दक्षिणपाणिना तज्जलं मूलेन द्वादशवारमभिमन्त्र्य ततो जलस्थमण्डलात्स्वदेहे षडङ्गं विन्यस्य मायाबीजेन यथा च ॥ ॐ ह्रीं चण्डिकायै हृदया० ॥ ॐ ह्रीं चण्डिकायै शिरसे० ॥ ॐ ह्रीं चण्डिकायै शिखा० ॥ ॐ ह्रीं चण्डिकायै कवचा० ॥ ॐ ह्रीं चण्डिकायै नेत्र० ॥ ॐ ह्रीं चण्डिकायै अस्त्रा० ॥ एवमंगुष्ठादिषु न्यसेत् ॥ अनन्तरं जलस्थयन्त्रदेवतानां स्वहृदये ऐक्यं विभाव्य ॥ अहमस्मि ॥ चण्डीरूपोऽहमस्मि इति संभाव्यैवं तत्त्वत्रयेणाचम्य ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः ॥ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वधा ॥ एवमाचम्याथ

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मूलेन त्रिः प्राणायामं विधाय ॥ तत ओं नमश्चण्डिकायै इति मन्त्रमेकवारं जपन्निमज्ज्योन्मज्ज्याचम्य ततो दक्षिणपाणिना वाम करतले जलं निधाय तत्करस्थजलगलितोदकेन मूलेन द्वादशवारं वक्ष्यमाणप्रकारेण स्वाङ्गं मार्जयेत् ॥ ततश्चण्डिकायै नवबीजेन दशाञ्जलिभिः कलशमुद्रया सर्वाङ्गमात्मानमभिषिच्य ततस्तीर्थोदकेन मूलेन शङ्खमुद्रया द्वादशवारं स्वशिरसि अभिषिच्य तथा योनिमुद्रया षड्वारं बाहुभ्यां प्रोक्ष्य तथा धेनुमुद्रया षड्वारं चक्षुर्भ्यां प्रोक्ष्य तथाऽङ्कुशमुद्रया त्रिप्रकारेण हृत्संप्रोक्ष्य तथा कुम्भ मुद्रया आपादमस्तकावधि त्रिवारमभिषिञ्चेत् ॥ ततो मूलेन निमज्ज्योन्मज्ज्याचम्य ततो जलमन्त्रोपरि जलतर्पणं कार्यम् ॥ यथा ऐं आत्मतत्त्वव्यापिन्यै महाकाल्यम्बादेव्यै नमस्तर्पयामि ॥ ह्रीं विद्यातत्त्वव्यापिन्यै श्रीमहालक्ष्म्यम्बादेव्यै स्वाहा तर्प यामि ॥ क्लीं शिवतत्त्वव्यापिन्यै श्रीमहासरस्वत्यम्बादेव्यै स्वधा तर्पयामि ॥ इति तत्त्वत्रयेण जलतर्पणं विधायोत्तीर्य धौते वाससा परिधाय मूलेन तत्रोपविश्याचम्य मूलेन वामकरतले तिलकं निधाय सव्यहस्तकनिष्ठिकया तिलकोपरि त्रिकोणषट्कोणचतु ष्कोण यन्त्रं विलिख्य षट्कोणे षडङ्गानि विन्यस्य अष्टाविंशतिवारं मूलेनाभिमन्त्र्य यथोक्तं तिलकं धारयेत् ॥ चन्दनादीनाह चन्दनमृगमदकुंकुमकेशरैः सर्वाङ्गमनुलिप्य तथा चोक्तम् ॥ कस्तूरी कुकुमं चैव चन्दनं च यथेच्छया ॥ सर्वाङ्गमनुलिप्यं च मार्कण्डेयो वचोऽब्रवीत् ॥ १२७ ॥ न तिर्यङ् मृत्तिका धार्या न चोर्ध्वं भस्मना क्वचित् ॥ न शून्यमस्तकं चैव ऋषीणां च वचो यथा ॥ १२८ ॥ एवं तिलकधारणं कृत्वाऽनन्तरं मन्त्रसन्ध्यामुपास्य पूर्ववत्तत्त्वत्रयेणाचम्य मूलेन षड्वारं वा त्रिवारं यथा संभावितप्राणायामं कुर्यात् ॥ पूर्ववदृषिच्छन्दोदेवता उच्चार्य षडङ्गं कुर्यात् ॥ ततो दक्षिणहस्ते जलमादाय वामकरतले निधाय पुनः दक्षिणपाणिना तज्जलमाच्छाद्य मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य तद्दक्षिणपाणिनाऽङ्गुष्ठानामिकाभ्यां मुखादिना प्रत्येकं संप्रोक्ष्य यथा जलेन मुखं प्रमृज्य तथा नासिकायां चक्षुर्भ्यां श्रोत्राभ्यां बाहुभ्यां शिरश्च शिखायां जलं प्रमृज्य ततःशेषोदकं दक्षिणे गृहीत्वा नासाग्रसमीपमानीय वामनासया अन्तराकृष्य देवीं ध्यात्वा क्षालितैः पापसंचयैस्तदुदकं कृष्णवर्णं दक्षिणनासया रेचितं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ध्यात्वाऽस्त्राय फडिति मन्त्रेण वज्रशिलायां जलं क्षिपेत् ॥ अन्यज्जलं दक्षिणे गृहीत्वा मूलेन सकृदभिमन्त्र्य मूलमन्त्रेण सकृत्प्राश्या चम्य ततः सूर्यमण्डलस्थायै देव्यै नम इति त्रिवारं जलमुत्क्षिपेत्॥ततोमूलगायत्र्या त्रिरर्घ्यं दत्त्वा पुनराचम्यादि यथाच ऐं महाकालीवि द्महे ह्रीं महालक्ष्मी धीमहि ॥ क्लीं तन्नः सरस्वती प्रचोदयात् ॥स्वग्रहतिथिनक्षत्रयोगकरणसपरिवारायै सूर्यमण्डलस्थश्रीमहाकाल्यै नम इदमर्घ्यं समर्पयामि एवं श्रीमहालक्ष्म्यै नम इद० एवं महासरस्वत्यै नम इद० इत्यर्घ्यत्रयं दत्त्वा पुनराचम्यादित्याभिमुखस्तिष्ठन् जातवेदस इति दुर्गासूक्तेनोपस्थाय सोऽहमस्मीत्यन्नमुपसंहृत्याचम्य मूलेन प्राणानायम्य प्राग्वत्षडङ्गं कृत्वा आवो देवेत्यावाह्य गायत्रीं संप्रार्थ्य आयातु वरदा देवीत्यनेन तत्र यन्त्रसमीपे कात्यायनायेति दुर्गागायत्रीं दशवारं जपित्वा यथाशक्त्या तत आदित्याभिमुखस्तिष्ठन् गायत्रीं शतशो जपेत् ॥ गायत्र्या नित्यमुक्तस्य ज्ञानमुत्पद्येऽचिरात् ॥ उत्तिष्ठ देवि गन्तव्यं प्रविश्य हृदयं मम ॥ इति एह्येहि महाकालि महालक्ष्मि महासरस्वति मम हृदयं प्रविश्य स्वाहा ॥ यथा च दुर्गा गायत्री ॥ कात्या यनाय विद्महे कन्यकुमारि धीमहि ॥ तन्नो दुर्गिः ॥ प्रचोदयात् अनया गायत्र्या यथाशक्तिसंख्याकाः श्रीमहाकाल्यादिदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ एवं दुर्गागायत्रीं विज्ञाप्य संप्रार्थ्य ध्यायेत् ॥ एवं न्यासक्रियां ध्यात्वा महिषमर्दिनीम् ॥ चण्डिकां त्रिजग द्धात्रीं ब्रह्माद्यमरवन्दिताम् ॥ १२९ ॥ इति ध्यात्वा विसृजेत् ॥ ततस्तर्पणमाचरेत् ॥ पूर्ववत्तत्त्वत्रयेणाचम्य स्नानवत्तीर्थमाकृष्य ततः जलयन्त्रोपरि तर्पणं कृत्वोत्तरास्यः दर्भपवित्रीकृतपाणिः शुचिर्भूत इति संभाव्य पूर्ववदृष्यादि स्मृत्वा षडङ्गं विन्यस्य पश्चा न्महिषमर्दिनीं पूर्वोक्तां ध्यात्वा चण्डितर्पणं करिष्य इति संकल्प्य आवाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य ततो नवबीजमन्त्रान्ते चण्डिका तृप्यताम् इति जलाञ्जलीनष्टशतं सुगन्धकुसुमान्वितान् ॥ अशक्तश्चेत्तदर्धेन तदर्धेनाथवा पुनः ॥ महालक्ष्मीं तर्पयित्वा प्रार्थितान्प्राप्य मन्त्रविदित्युक्तम् ॥ गन्धपुष्पसहितान् जलाञ्जलीन्नवबीजमन्त्रान्ते तृप्यतामिति अष्टोत्तरशतं तदर्धं तदर्धं वाऽष्टाविंशति वारं वाऽष्टवारं वा यथाशक्ति तर्पयेत् ॥ एवं समाप्याथ सूर्यपूजां समारभेत् ॥ यथा हि तत्रैव ॥ ततो भूमौ रक्तचन्दनेनाष्टदलं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

विलिख्य वा रक्ततन्दुलेन तत्राष्टनामभिरभ्यर्च्य तानि यथा ॥ मार्तण्डं भानुमादित्यं हंसं सूर्यं दिवाकरम् ॥ तपनं भास्करं चैव दलेष्वेतांश्च पूजयेत् ॥ तथा च तत्रैव मार्तण्डभैरवं वक्ष्यमाणमन्त्रेण संपूज्य ॥ यथा ॥ ऐं ह्रां ह्रीं ह्रूं मार्तण्डभैरवाय नम इति गन्धपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत् तत्र कर्णिकायां प्रत्येकां परमेश्वरी मूलमन्त्रेणार्चयेत् इति सूर्यपूजां विधाय ॥ ततः मौनी भूत्वा पूजाद्रव्याणि सम्पाद्य संगृह्य बाह्यजनं नावलोकयेत् ॥ यागमन्दिरमागत्य बहिः पाणिपादौ प्रक्षाल्याचम्य ॥ इति श्रीडामरादितन्त्रसारे चण्डीमखमहोत्सवे स्नानसन्ध्यातर्पणसूर्यपूजाविधिर्नाम द्वितीयावसरः ॥ २ ॥ अथ मण्डपपक्षे देवतागारं मण्डपादिकदलीस्तम्भविराजितं नानावितानशोभितं सतोरणं मण्डपं कृत्वा तन्मध्ये वेदिकाम्रुक्तलक्षणां बहुदीपविराजितां नानापुष्पप्रकरशोभाढ्यां दिव्यधूपधूपितांकृत्वा उक्तं च–प्रविश्य देवतागारं वितानोपरिशोभितम् ॥ पुष्पप्रकरशोभाढ्यं पूजाद्रव्यैः प्रपूरितम् ॥ १२० ॥ बहुदीपप्रकाशाढ्यं दिव्यधूपैः सुधूपितम्॥ एवं मण्डपद्वारदेशमागत्य औं हः द्वारार्घं साधयामीति मन्त्रेण तत्र जलमापूर्य अंकुशमुद्रया गंगे च यमुने चैवेतिमन्त्रेण तीर्थान्यावाह्य मूलबीजेन गन्धपुष्पे निक्षिप्य धेनुमुद्रयाऽभिमन्त्रयेत् ॥ तेन जलेन मण्डपोरि ॥ ॐ श्रियै नमः ॥ मण्डपाधः ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय० ॥ मण्डपदक्षिणांसे ॥ ॐ मायाशक्त्यै० ॥ ॐ दुर्गायै० ॥ ॐ गंगायै० ॥ ॐधात्रे० ॥ॐ पद्मनिधाये० ॥ मण्डपवामांसे ॥ ॐ चिच्छक्त्यै० ॥ ॐ क्षेत्रपालाय० ॥ ॐ यमुनायै० ॥ ॐ विधात्रे० ॐ शङ्खनिधये० ॥ एवं तिष्ठन्सन्मण्डपार्चां विधायाथ दक्षिणपादपुरःसरं वामांगसंकोचनेनान्तः प्रविश्य यागमण्डपं गत्वा मण्डपाय नम इति संपूज्य द्वारपूजामारभेत् ॥ तत्रादौ पूर्वद्वारे ॥ ॐ श्रियै० ऊर्ध्वे देहल्यै० दक्षिणवामशाखयोः न्यग्रोधमध्ये संपूज्य ऐं ह्रीं क्लीं गं गणपतिनाथपादुकां पूजयामि नमः ॥ तद्वल्लभाम्बापादुकां० ॥ तत्र दक्षिणवामौ द्वौ कलशौ ॥ ॐ गं गंगायै० ॥ ॐ यं यमुनायै० ॥ ततो दक्षिणद्वारे ॥ ॐ श्रियै० ऊर्ध्वे देहल्यै० ॥ दक्षिणवामशाखयो रौदुम्बरमध्ये संपूज्य ॥ ऐं ह्रीं क्लीं बं बटुकनाथश्रीपादुकां० ॥ तद्वल्लभाम्बाश्रीपादुकां० ॥ तत्र दक्षिणवामौ द्वौ कलशौ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ गं गंगायै० ॥ ॐ यं यमुनायै० ॥ ततः पश्चिमद्वारे ॥ ॐ श्रियै० ॥ ऊर्ध्वं देहल्यै० ॥ दक्षिणवामशाखयोः अश्वत्थतोरणमध्ये संपूज्य० ॥ ऐं ह्रीं क्लीं कामनाथदेवश्रीपादुकां० ॥ तद्वल्लभाम्बापादुकां० ॥ तत्र दक्षिणवामौ द्वौ कलशौ ॥ ॐ गं गंगायै० ॥ ॐ यं यमुनायै० तत उत्तरद्वारे ॥ ॐ श्रियै०॥ऊर्ध्वदेहलीं देहल्यै नमःइतिपूजयेत् ॥ दक्षिणवामशाखयोः पालाशतोरणे ऐं ह्रीं क्लीं क्षेत्रनाथश्रीपादुकां० ॥ तद्वल्लभाम्बापादुकां० ॥ तत्र दक्षिणावामौ द्वौ कलशौ ॥ ॐ गं गंगायै० ॥ ॐ यं यमुनायै० ॥ मण्डपाधः ॥ ॐ श्रियै० ॥ ऊर्ध्वदेहलीमध्ये ऐं ह्रीं क्लीं वं वसन्तनाथश्रीपादुकां० ॥ तद्वल्लभाम्बाश्री० ॥ एवं पूर्वद्वारादिक्रमेण चतुर्द्वारपालपूजां समाप्यानन्तरं पूर्वाद्यष्टदिक्षु क्रमेण ब्राह्म्याद्यष्टदेवताः संपूज्य ताः यथा ॐ ब्राह्म्यै० ॥ ॐ माहेश्वर्यै० ॥ ॐ कौमार्यै० ॥ ॐ वैष्णव्यै० ॥ ॐ वाराह्यै० ॥ ॐ ऐन्द्र्यै ॥ चामुण्डायै० ॥ ॐ चण्डिकायै० ॥ एवं संपूज्यानन्तरं मण्डप पश्चिमद्वारं प्रविशेत् ॥ आचार्यप्रमुखऋत्विग्भ्यो जपार्थं देव्या अनुज्ञां लब्ध्वा कामक्रोधादीन् त्यक्त्वा धृतिमान् श्वेतकम्बलाद्यासनात्पश्चात्प्रत्येकमुपविश्य स्वस्वासनपूजां कुर्यात् ॥ उत्पतन्त्विह भूतानि पृथिव्यन्तरवासिनाम् ॥ आसनं कल्पितं यन्मे सर्वकर्म समारभेत् ॥ १२१ तत्रोपविश्य विधिना पूजयित्वा हरीश्वरौ ॥ चतुरस्रे समे शुद्धे सर्वदोषविवर्जिते ॥ १२२ ॥ लिखेदष्टदलं पद्मं चन्दनागरुकुंकुमैः ॥ पद्ममध्ये लिखेच्चक्रं षट्कोणं चण्डिकामयम् ॥ १२३ ॥ षट्कोणचक्रमध्यस्थमाद्यबीजत्रयं न्यसेत् ॥ पूर्वादिषट्सु कोणेषु बीजान्यन्यानि विन्यसेत् ॥ १२४ ॥ गुदमेढ्रान्तरं वामपादमूलेन पीडितम् ॥ वामपादोपरि स्थाप्य दक्षिणं चरणं दृढम् ॥ १२५ ॥ एतद्ब्रह्मासनं नाम जरामरणवर्जितम् ॥ मौनी बद्धासनी ज्ञानी निश्चलविग्रहः ॥ १२६ ॥ अनाहताद्विशुध्याज्ञां भेदयित्वा यथाक्रमम् ॥ स्वशरीराद्विनिर्गत्य सूक्ष्मरूपार्धमार्गतः ॥ १२७ ॥ एतद्देव्यासनलक्षणम् ॥ एवं देव्यासनादीनि पूजयेत् ॥ यथा च ॐ नागाधिपतये नमः ॥ ॐ कूर्मासनाय० ॥ ॐ वराहाय० ॥ ॐ पृथिव्यै० ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आधारशक्त्यासनाय० ॥ ॐ अनन्तासनाय० ॥ ॐ विमलासनाय० ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ पद्मासनाय० ॥ ॐ सिंहासनाय० ॥ ॐ कमलासनाय० ॥ इत्यासनेषु कुशान्दद्यात् ॥ एवं कृत्वा स्वासने प्राङ्मुखाः पद्मासनस्था उदङ्मुखा वा उपवेशयेत्स्वासनेषु निश्चलां महालक्ष्मीं ध्यायेत् ॥ ततः पृथ्वि त्वयेति मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः ॥ पृथ्वि त्वया० कुरु चासनमिति मन्त्रेणासने उपविश्य ॥ ततः सर्षपाक्षतान्गृहीत्वा निर्विघ्नभूतानु त्सार्य ॥ अपसर्पन्तु० ह्रः अस्त्राय फट् ॥ इत्यनेन मन्त्रेण दशदिक्षु वामपार्ष्णिघातत्रयेणोर्ध्वं तालत्रयं कृत्वा सुदर्शनेनावोरेण वाऽष्ट दिक्षु सर्षपैर्भूतोत्सारणं कृत्वा ॥ ततो वामपादपार्ष्णिना त्रिवारं भूमेस्ताडनं कृत्वा भौमभूतान् अस्त्रमन्त्राभिमन्त्रितजलेन परितः क्षिप्त्वाऽन्तरिक्षचरान् ऊर्ध्वमधः अष्टदिक्षु दिव्यदृष्टिनिरीक्षणेन दिव्यान् भूतान् छोटिकया उत्सार्य तत्र सुदर्शनमन्त्रेण अन्तरित रक्षोन्तरिता अरातयः शारङ्गाय सुदर्शनाय अस्त्राय हुंफट् स्वाहा ॥ अनेन मन्त्रेण सुदर्शनं नमस्कृत्य भूतादीनि निर्गतानि स्मृत्वा निर्गच्छतां भूतानां वामाङ्गसंकोचनेन मार्गं दत्त्वाऽस्त्रमन्त्रेण तालत्रयं विधाय ॥ ततोऽनुज्ञामनुप्राप्य वेद्यामाचार्यसन्निधौ शुभ्रे भूद्रा सने सर्वान् ब्राह्मणानुपवेशयेदिति ॥ १२८ ॥ ततस्तीक्ष्णदंष्ट्र० भैरवानुज्ञां लब्ध्वा क्षेत्रपालं नमेत् ॥ तत्र मन्त्रो यथा ॥ क्षेत्र स्य पतिना० इशे इति ॥ ततः नाराचमुद्रां प्रदर्श्य गणेशादिकान् यजेत् ॥ यथा स्वदक्षिणभुजे ॥ ॐ गं गणपतये० ॥ वामभुजे दुं दुर्गायै० ॥ दक्षिणजान्वोः क्षं क्षेत्रपालाय० ॥ वामजान्वोः सं सरस्वत्यै० ॥ स्वशिरसि मं महाकाल्यै० ॥ मुखे पं परमात्मने० ॥ हृदये मं मातृभ्यो नमः ॥ पं पितृभ्यो नमः ॥ अं आचार्येभ्यो नमः ॥ गुं गुरुभ्यो नमः ॥ पं परमगुरुभ्यो० ॥ पं परमेष्ठि गुरुभ्यो० इति गुरुत्रयं वामस्कन्धे न्यस्य ॥ श्री नाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं सिद्धेभ्यो बटुकत्रयं पदयुगं दूतिक्रमं शाम्भ वम् ॥ वीरे चाष्टचतुष्कषष्टिवनकं वीरावलीसप्तमं श्रीमन्मालिनि मन्त्रराजसहितं वन्दे गुरुरोर्मण्डलम् ॥ १२९ ॥ इति श्रीडामरादि तन्त्रसारे चण्डीमखमहोत्सवे मण्डपप्रवेशादिविधिर्नाम तृतीयावसरः ॥३॥ गुर्वादीनेवं नत्वाऽनन्तरं पापपुरुषं दहेत् ॥ यथा ॥ अथास्य शरीरस्यात्मा ऋषिः प्रतिपुरुषश्छन्दः सत्यं देवता देहस्य सुयोग्यतासिद्ध्यर्थे विनि० ॥ ब्रह्महत्याशिरस्कं च स्वर्णस्तेयभुज

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

द्वयम् ॥ सुरापानहृदा युक्तं गुरुतल्पकटिद्वयम् ॥ १४० ॥ तत्संयोगिपदद्वन्द्वमङ्गप्रत्यङ्गपातकम् ॥ उपपातकरोमाणं दग्धश्मश्रु विलोचनम् ॥ १४१ ॥ अचेतनमधोवक्त्रं दग्धपादपसन्निभम् ॥ दग्धवामधरं कृष्णं कुक्षौ पापं विचिन्तयेत् ॥ १४२ ॥ एवं पाप पुरुषं संचिन्त्य ॥ ततः स्वशरीरे एवं वक्ष्यमाणभावनां संभावयेत् ॥ हृदि स्थितं पङ्कजमष्टपत्रं सकर्णिकं केसरपद्मनालम् ॥ अधो मुखं तु हृत्पद्मं प्रणवेनोर्ध्वमुन्नयेत् ॥ तत्रस्थं चिन्तयात्मानं हंसोऽहमिति भावयेत् ॥ १४३ ॥ पार्श्वघातकरस्फोटं दिग्धदृष्टिविलो चनम् ॥ ततः प्रणवेनोर्ध्वमुखीकृत्य प्रणवेन विकासीकृत्य ॥ ॐ मूलाधार उत्थितां प्राणशक्तिं ॐ ह्रीं हंसः सोऽहमिति मन्त्रेण सुषुम्ना मार्गेण ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा तत्र परमात्मनि संयोज्य स्थूलदेहोपसंहारं भावयेत् ॥ अथ तत्त्वत्रयेण पूर्ववदाचम्य मूलेन वारत्रयं प्राणा नायम्य देशकालौ संस्मृत्य ॥ कर्ताऽमुकनामधेयस्य मम सकलमनोरथावाप्त्यर्थमभीष्टदेवतामुद्दिश्य महाकाल्यादिदेवतात्रयप्रीत्यर्थं महाकाल्यादिप्रतिष्ठापूजनं करिष्ये ॥ तदङ्गमादौ जपयोग्यदिव्यदेहावाप्तये भूतशुद्धिं करिष्ये ॥ तथा च प्राणप्रतिष्ठाऽन्तर्मातृका बहिर्मातृकान्यासपूर्वकान् कल्पोक्तन्यासानहं करिष्य इति संकल्प्य ॥ अथ भूतशुद्धिमारभेत् ॥ पादादिजानुपर्यन्तं पृथ्वीस्थानं चतु रस्रं पीतवर्णं वज्रलाञ्छितं तन्मध्ये लं बीजं ध्यायेत ॥ पार्थिवमन्त्रस्य अत्रिऋषिः गायत्री च्छन्दः ॥ भूमिर्देवता पार्थिवाख्य भूतशुद्ध्यर्थे जपे वि० ॥ ॐ लं फट् ॥ इति तेन पञ्चगुणा पृथ्वी अप्सु उपसंहरामि षडुद्घातप्रयोगेण शोषयेत् ॥ जान्वादिनाभिपर्यन्त मपां स्थानं तत्र वरुणमण्डलं धनुराकारमुभयोः कटयोः श्वेतवर्णं पद्मलाञ्छितं तन्मध्ये वं बीजं ध्यायेत् ॥ वरुणमन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः वरुणो देवता वरुणाख्यभूतशुद्ध्यर्थं जपे वि० ॥ ॐ वं हुंफट् ॥ इति तेन चतुर्गुणा आपः रमग्निमुपसंहरामि पञ्चोद्घात प्रयोगेण प्लावयेत् ॥ नाभ्यादिहृदयपर्यन्तमग्निस्थानं तत्र त्रिकोणमण्डलं रक्तवर्णं स्वस्तिकाङ्कितं तन्मध्ये रं बीजं ध्यायेत् ॥ अग्नि बीजस्य ब्रह्मा ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता आग्नेयाख्यभूतशुद्ध्यर्थे जपे वि० ॥ ॐ यं हुंफट् ॥ इति तेन द्विगुणं वायुमाकाशे उपसंहरामि त्रिरुद्घातप्रयोगेण पिण्डीं कारयेत् ॥ भ्रूमध्यादारभ्य ब्रह्मरन्ध्रान्तमाकाशस्थानं वृत्तमण्डलं षड्बिन्दुलाञ्छितं धूम्रवर्णं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तन्मध्ये हं बीजं ध्यायेत् ॥ आकाशबीजस्येश्वर ऋषिः जगती छन्दः महदाकाशो देवता आकाशाख्यभूतशुद्धयर्थे जपे वि० ॥ ॐ हुं हुफट् ॥ इति सर्ववर्णं तेनैकगुणं नभो द्विरुद्धातप्रयोगेण आकाशमहङ्कारे उपसंहरामि ॥ एवं स्वशरीरे पञ्चमहाभूतानि ज्ञात्वा वायु बीजेन शोषयेत् ॥ अमृतबीजेनाप्लावयेत् ॥ अग्निबीजेन दाहयेत् ॥ पृथ्वीबीजेन पिण्डीं कारयेत् ॥ आकाशबीजेन देहं निष्पादयेत् ॥ अस्मन्मनोवाक्कायकृतपापस्य शोषणाप्लावनदहनपिण्डीकरणदेहस्थापनानि करिष्ये ॥ हंस इति मन्त्रस्य हंस ऋषिः अव्यक्तगायत्री छन्दः परमहंसो देवता हंस इति बीजं सोऽहमिति शक्तिः ब्रह्मबीजं मायाशक्तिः जीवो बीजं बुद्धिः शक्तिः उदानो बीजं सुषुम्ना शक्तिः सर्वमन्त्राङ्गत्वे जपे वि० ॥ तत्र हंसस्य षडङ्गन्यासः ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा हृद० ॥ ॐ सोमाय स्वाहा शिर०॥ ॐ निरञ्जनाय स्वाहा शिखा०॥ॐ निराभासाय स्वाहा कव०॥ॐ अतनतनुसूक्ष्मतनुनेत्र०॥प्रचोदयादस्त्राय०॥ॐ हंसः सोऽहमिति मन्त्रः ॥ ॐ अग्नीषोमाभ्यां वौषट् ॥ अनेन सर्वाङ्गव्यापकमेवमंगुष्ठादिन्यासेन कूर्परादिकरतलान्तं न्यसेत् ॥ एवं न्यासं कृत्वा ततः सोऽहमिति मंत्रेण द्वादशान्त स्थितं जीवत्वं नाशय सहपरमात्मानं स्वहृदये अष्टदले समानीय प्रकाशयेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ अग्नीषोमौ पक्षौ ॥ ॐ कारशक्तिं बिन्दुत्रिनेत्रं मुखं रुद्रः रुद्रो रुद्राणी चरणौ ॥ कालश्चाग्निश्च उभे पार्श्वे सोऽहं हंसः परमहंसो भानुकोटिसहस्रप्रकाशात् येनेदं व्याप्तम्॥ इत्यनेन ध्यात्वा ततो वासनामयं पापपुरुषं कृष्णं भीमम् इति वामकुक्षौ विचिन्त्य पूरकेण वायुबीजम् ॥ ॐ यं हुंफट् इति षोडश वारं ध्यात्वा शोषयेत् ॥ वरुणबीजम् ॥ ॐ वं हुंफट् इति षोडशवारं पूरकेण ध्यात्वा प्लावयेत्॥ ॐ रं हुंफट् इत्यग्निबीजं कुम्भकेन चतुःषष्टिवारं ध्यात्वा पापं दग्धं विचिन्त्य ॥ ॐ यं फडिति द्वात्रिंशद्वारं ध्यात्वा तेन वायुना तद्भस्म रेचकेन दक्षिणनाड्या बहिर्निर्गतं विचिन्त्य ॥ ॐ वं हुंफट् इत्यमृतबीज मस्तके ध्यात्वाऽमृतधारासंजीवनीं विचिन्त्य इत्याधारे ॥ ॐ लं फट् इति पृथ्वीबीजं तेन देहपिण्डं विचिन्त्य ॥ ॐ हं फट् इत्याकाशबीजं तेन देहाकारानवयवान् ध्यात्वा हृदये च स्वजीवकलां ह्रीं सोऽहं हंस इति मंत्रेण स्वदेहोपविष्टं ध्यात्वा ॥ श्रीमहालक्ष्मीरूपा ब्रह्मणः प्रकृतेर्महत् महतोऽहंकारः अहंकारादाकाशः आकाशा

www.saraswatiprakashan.com

Chinmai, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

द्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्या ओषधयः ओषधीभ्योऽन्नम् अन्नाद्रेतः रेतसः पुरुषः इति क्रमाद्देहादिरूपेण परमात्मरूपेण श्रीमहालक्ष्मीरूपोऽहमिति ध्यायेत् एतेभ्यः पञ्चमहाभूतेभ्यः सकाशात्स्वशरीरं तेजोमयं पुण्यात्मकं सर्वरूपार्थ साधनं देवताराधनं स्वपरामुत्पन्नमिति ॥ उक्तम् आकाशाद्वायुरिति श्रुतिः ॥ इति भूतशुद्धिः ॥ अथ प्राणप्रतिष्ठान्यासः ॥ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामाथर्वाणि छन्दांसि सकलशक्तिकरी चैतन्यस्वरूपिणी प्राणशक्ति र्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं स्वाहा शक्तिः हं बीजं सः शक्तिः अस्य प्राणप्रतिष्ठाकरणे वि० तत्र करषडङ्गः ॐ आं ह्रीं क्रों अं कं खं गं घं ङं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने नमः ॥ आं क्रों ह्रीं आं ॐ अंगु०हृद०॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने० ॥ ई क्रों ह्रीं आं ॐ तर्ज० शिरसे० ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों उं टं ठं डं ढं णं त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राण प्राणात्मने० ऊं क्रों ह्रीं आं ॐ मध्य० शिखायै० ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने० ऐं क्रों ह्रीं आं ॐ अना० कवचाय हुम् ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों ओं पं फं बं भं मं वचमादानगमनविसर्गानन्दात्मने० औं क्रों ह्रीं आं ॐ कनि०नेत्र० ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मने० ॥ अः क्रों ह्रीं आं ॐ कर० अस्त्रा० ॥ अथ ध्यानम् ॥ रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवनमथगुणानङ्कुशं पञ्चबाणान् ॥ बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥ एवं ध्यात्वाऽनन्तरं प्राणप्रतिष्ठा कार्या ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं सोऽहं हंसः हंसः सोऽहम् इति मन्त्रं जपित्वाऽन्ते मम प्राणाः मम जीव इह स्थितः मम सर्वेन्द्रियाणि मम वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा एवं हृदये हस्तं दत्त्वा वारत्रयं जपेत् इति प्राणप्रतिष्ठा ॥ अथान्तर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः मातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः छं कीलकं मातृकान्यासे विनियोगः ॥ ॐ अं कं ५ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः हृदयाय० ॐ इं चं ५ ईं तर्जनीभ्यां

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नमः शिर० ॐ उं टं ५ ऊं मध्यमाभ्यां नमः शिखायै० ॐ एं तं ५ ऐं अना० कवचाय हुं ॐ ओं पं ५ औं कनिष्ठि० नेत्र० ॐ अं यं० अः कर० नमोऽस्त्राय फट् ॥ इति करषडङ्गः ॥ पुनः अकारादिषोडशस्वराः कण्ठपद्मे अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कण्ठे वं शं षं सं अपाने बं भं मं यं रं लंलिङ्गे डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं नाभौ कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं हृदये हं भ्रूमध्ये क्षं ब्रह्मरन्ध्रे एवं न्यासं कृत्वाऽन्ते ध्यात्वा ॥ व्योमेन्दौ रसवर्णिकर्णिकमचद्वन्द्वे स्फुरत्केशरं पात्रान्तर्गत पञ्चवर्गयशलावर्णादिवर्गक्रमात् ॥ आशास्वस्त्रिषु लांनलाङ्गवियुतक्षोणीपुरेणावृतं वर्णाब्यं शिवसस्थितं विषगतप्रध्वंसिमृत्युञ्जयम् ॥ इत्यन्तर्मातृकान्यासः ॥ अथ बहिर्मातृकान्यासस्य प्रासाद्यनारायण ऋषिः निवृत् गायत्री छन्दः बहिर्मातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः बिन्दवः कीलकं बहिर्मातृकान्यासे वि० ॥ अथ स्नानलक्षणमाह ॥ आद्यौ मौलिरथापरो मुखमि ई नेत्रे च कर्णौ उ ऊ नासावंशपुटे ऋ ॠ तदनुजौ वर्णौ कपोलद्वये ॥ दन्ताश्चोर्ध्वमधस्तथौष्ठयुगलं संध्यक्षराणि क्रमाज्जिह्वामूलमुदग्र बिन्दुरपि च ग्रीवा विसर्गः स्वराः ॥ एतत्प्रकटीकृतम् अं शिरसि आं मुखे इं ईं नेत्रयोः उं ऊं कर्णयोः ऋं ॠं नासापुटयोः ऌं ॡं कपोलद्वये एं ऐं दन्तपंक्तौ ओं औं ओष्ठयुग्मे अं जिह्वामूले अः ग्रीवायाम् ॥ अथ वर्गमातृकान्यासः ॥ कांदिर्दक्षिणतो भुजस्तद परो वर्गश्च वामो भुजष्टादिस्तादिरनुक्रमेण चरणौ कुक्षिद्वयं ते पफौ ॥ वंशः पृष्ठिभवोऽथ नाभिहृदयं वादित्रयं धातवो याद्याः सप्त समीरणश्च पुरतः क्षक्रोध इत्यम्बिके ॥ एतत्प्रकटीकृतं कं दक्षिणबाहुमूले खं दक्षिणकूर्परे गं दक्षिणमणिबन्धे घं याम्याङ्गुलि मूले ॥ ङं दक्षिणाङ्गुल्यग्रेषु चं वामबाहुमूले छं वामकूर्परे जं वाममणिबन्धे झं वामांगुलिमूले ञं वामाङ्गुल्यग्रेषु टं दक्षिणपाद मूले ठं दक्षजानुनि डं दक्षिणगुल्फे ढं दक्षिणपादाङ्गु लमूले णं दक्षिणपादङ्गुल्यग्रेषु तं वादपादमूले थं वामजानुनि दं वामगुल्फे धं वामपादाङ्गुलिमूले नं वामपादाङ्गुल्यग्रेषु पं दक्षिणपार्श्वे फं वामपार्श्वे बं पृष्ठिवंशे भं नाभौ मं हृदये यं त्वगात्मने नमः॥ग्रीवा मूले रं असृगात्मने० ॥ ग्रीवादिदक्षिणभागे लं मांसात्मने नमः ॥ ग्रीवादिपृष्ठिवंशे वं मेदात्मने० ॥ अंसादिदक्षिणहस्ते शं अस्थ्या

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

त्मने० ॥ श्रीवोत्तरभागे पं मज्जात्मने० ॥ वामहस्ते सं शुक्लात्मने० दक्षिणपादमूलादग्रपर्यन्तं न्यसेत् ॥ हं प्राणात्मने० ॥ वामपादमूलादारभ्य मस्तकपर्यन्तं क्षं परमात्मने० ॥ मस्तकादिचरणपर्यन्तं न्यसेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ पञ्चाशद्वर्णं० ॥ इति बहिर्मातृकावर्णमातृकान्यासः ॥ इति डामरादितन्त्रसारे चण्डीमखमहोत्सवे भूतशुद्ध्यादिवर्णमातृकान्यासान्तविधिर्नाम चतुर्थोऽवसरः ॥ ४ ॥ अथैकादशन्यासक्रमः ॥ तत्रादौ मातृकान्यासः प्रथमः ॥ अकारादिक्षकारान्ता मायाबीजयुक्ताः सृष्टिमातृकोक्तस्थानेषु न्यसेत् ॥ तद्यथा अस्य श्रीमातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः दैवी गायत्री च्छन्दः श्रीमातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अनुष्ठीयमानचण्डीमखसिद्धयर्थं नवार्णमन्त्राङ्गत्वेन मातृकान्यासे वि० ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अं कं ५ आं अङ्गु० हृ० ॐ ऐं ह्रीं क्लीं इं चं ५ ईं तर्ज० शिरसे० ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उं टं ५ ऊं मध्य० शिखा० ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं एं तं० ५ ऐं अना० कव० ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ओं पं० ५ औं कनि० नेत्र० ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अं यं ५ अः कर० अस्त्रा० इति करषडङ्ग ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं इति अग्रे सर्वत्र योजयेत् ॥ यथा च ४ अं नमः शिरसि ४ आं नमः मुखे ४ इं नमः दक्षिणनेत्रे ४ इं नमः वामनेत्रे ४ उं नमः दक्षिणकर्णे ४ ऊं नमः वामकर्णे ४ ऋं नमः दक्षिणनासापुटे ४ ॠं नमः वामनासापुटे ४ ऌं नमो दक्षिणगण्डे नमः वामगण्डे ४ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ४ ऐं नमः अधरोष्ठे ४ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ ४ अं नमः अधोदन्तपङ्क्तौ ४ अं नमः जिह्वायाम् ४ अः नमः ब्रह्मरन्ध्रे ४ कं खं गं घं ङं दक्षिणहस्ते ४ चं ५ नमः वामहस्ते ४ टं ५ नमः दक्षिणपादे ४ तं ५ नमः वामपादे ४ पं नमः दक्षिणकुक्षौ ४ फं नमः वामकुक्षौ ४ बं नमः पृष्ठवंशे ४ भं नमः नाभौ ४ मं नमः उदरे ४ यं त्वगात्मने नमः आधारे ४ रं असृगात्मने ० स्वाधिष्ठाने० ४ लं मांसात्मने० मणिपूरके ४ वं स्नाय्वात्मने नमः अनाहते ४ शं अस्थ्यात्मने नमो विशुद्धौ ॥ ॐ ३ षं मज्जात्मने नमः तालौ ॥ ॐ ३ सं शुक्लात्मने नमः आज्ञाचक्रे ४ हं प्राणात्मने नमो ललाटे ४ क्षं क्रोधात्मने नमो ब्रह्मरन्ध्रे ॥ इति मातृकान्यासः प्रथमः ॥ अयं ते मातृकान्यासः प्रथमः परिकीर्तितः ॥ साङ्गवेदसमाभक्तिर्भूषितो येन

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मान्त्रिकः ॥ अथ सारस्वतो न्यासो द्वितीयस्तु प्रकथ्यते ॥ उक्तमन्त्रस्य बीजानां नवानां देवतार्चने ॥ ततः वाग्भवमायाकाम राजबीजानि प्रणवपूर्वकानि नामाक्षराणि नमोऽन्तानि कनिष्ठिकादि अंगुष्ठान्तं करतलपृष्ठाभ्यां च कराभ्यां कूर्पराभ्यां मणि बन्धाभ्यां च हृदि मूर्ध्नि शिखायां कवचनेत्रत्रयास्त्रदिग्बन्धान्तं न्यासं प्रवक्ष्ये ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चां नमः कनि० ॥ ओं ३ मुं नमः अना० ॥ ॐ ३ डां नमो मध्य० ॥ ॐ ३ यैं नमस्तर्ज० ॥ ॐ ३ विं नमोऽगु० ॥ ॐ ३ च्चें नमः करतल० ॥ एवं विपरीतषडङ्गः ॥ ॐ ३ चां मुं नमः कराभ्यां नमः ॥ ॐ ३ डां यैं नमः कूर्परयोर्नमः ॥ ॐ ३ विं च्चें नमः मणिबन्धाभ्यां० ततः हृदयादि॥ॐ३ चां नमो हृद० ॐ ३ मुं नमः शिरसि ॥ ॐ ३ डां नमः शिखायै व० ॥ ॐ ३ यैं नमः कवचा० ॥ ॐ ३ विं नमो नेत्रत्रया० ॥ ॐ ३ च्चें नमोऽस्त्राय फट् ॥ ॐ फडिति सर्वासु दिक्षु दिग्बन्धः ॥ भृशं सारस्वतो न्यासो महत्यस्मिन्कृते सति ॥ त्वरितं विलयं याति जाड्यं प्राक्पाप संभवम् ॥ इति सारस्वतन्यासो द्वितीयः॥तृतीयं ते प्रवक्ष्यामि न्यासं मातृगणान्वितम्॥मायाबीजसमायुक्तं सर्वदेवप्रियो यतः॥ब्राह्म्या द्यष्टसु पूर्वादीन् ब्रह्माणी पातु ते नमः ॥ एवमीशानपर्यन्तमष्टौ मातॄः प्रपूजयेत् ॥ ऊर्ध्वं व्योमेश्वरी पातु सप्तदीपेश्वरी भुवि॥नागेश्वरी च पाताले न्यासकर्ता सुनिर्भयः ॥ जायते त्रिषु लोकेषु सर्वदेवप्रियोयतः ॥ ॐ ह्रीं ब्राह्म्यै नमः ब्रह्माणी पातु पूर्वे॥ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरी पातु आग्नेय्याम्॥ॐ ह्रीं कौमार्यै नमः कौमारी पातु दक्षिणस्याम् ॥ ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमःवैष्णवी पातु नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ ह्रीं वाराह्यै नमः वाराही पातु पश्चिमायाम्॥ॐ ह्रीं ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्री पातु वायव्याम् ॥ ॐ ह्रीं चामुण्डायै नमः चामुण्डा पातु उत्तरस्याम्॥ ॐ क्ष्म्रौं नारसिंह्यै नमः नारसिंही पातु ईशान्याम् ॥ ॐ ह्रीं व्योमेश्वर्यै नमः व्योमेश्वरी पातु ऊर्ध्वे ॥ ॐ ह्रीं सप्तद्वीपेश्वर्यै नमः सप्तद्वीपे श्वरी पातु भुवि ॥ ॐ ह्रीं नागेश्वर्यै नमःनागेश्वरी पातु पाताले ॥ इति मातृगणन्यासस्तृतीयः ॥ अथ षड्देवीन्यास श्चतुर्थः ॥ षड्दवीनां पुनर्न्यासं चतुर्थं वच्मि भूमिप ॥ पूर्वाङ्गं नन्दजा पातु कमलांकुशमण्डिता ॥ खड्गपात्रधरा पातु दक्षाङ्गं रक्तदन्ति का ॥ पुष्पपल्लवमूलादिहस्ता शाकंभरी परा ॥ धनुर्बाणधरा दुर्गा वामे दुर्गार्तिनाशनी ॥ शिरःपात्रधरा भीमा मस्तकाच्चरणा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वधि ॥ चरणाद्याशिरो यावत् भ्रामरी चित्रकान्तिभृत् ॥ श्वेतानना नीलबाहुः पातु मां खड्गधारिणी॥ शताक्षी व्यापके पातु सहस्रै रक्षरैश्चिता ॥ अनेन न्यासयोगेन जरामरणवार्जितः निर्भयश्चाग्निचोराभ्यां मान्त्रिकस्तत्क्षणाद् भवेत ॥ एतत् प्रकटीकृतम् ॥ ॐ ह्रीं नं नन्दजायै नमः पूर्वाङ्गं पातु ॥ ॐ ह्सौं रं रक्तदन्तिकायै नमःदक्षिणा पातु ॥ ॐ ह्रीं शां शाकंभर्यै नमः पश्चिमांगं पातु ॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः उत्तराङ्गं पातु॥ ॐह्रीं भीं भीमायै नमः मस्तकाच्चरणपर्यन्तं पातु ॥ ॐ भ्रां भ्रामर्यै नमः पादादारभ्य शिरःपर्यन्तं पातु ॥ ॐ ह्रीं शं शताक्ष्यै वमः सर्वांग व्यापकं पातु ॥ अथ विरञ्च्यादिहरिहरन्यासः पञ्चमः ॥ पादादि नाभिपर्यन्तं ब्रह्मा पातु सव्यं ततः ॥ नाभेर्विशुद्धिपर्यन्तं पातु नित्यो जनार्दनः ॥ विशुद्धेस्तु शिखामूले पातु रुद्रस्त्रिलोचनः ॥ हंसः पातु पद द्वन्द्वं वैनतेयः करद्वयम् ॥ चक्षुषी वृषभः पातु सर्वाङ्गानि गजाननः ॥ एवं परंपरां पातु सर्वानन्दमयो हरिः ॥ मस्तकाच्चरणपर्यन्तं चरणान्मस्तकावधि ॥ अभेद्यः पञ्चमो न्यासः कर्तृकामदुघाफलः ॥ एतत्स्पष्टम् ॥ ॐ ह्रीं ऐं ब्रं ब्रह्मणे नमः पादाभ्यां नाभिपर्यन्तं पातु ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जं जनार्दनाय नमः नाभोर्विशुद्धिपर्यन्तं पातु ॥ ॐ ह्रीं हं हंसाय नमः पादद्वयं पातु ॥ ॐ ह्रीं वैं वैनतेयाय नमः करद्वयं पातु ॥ ॐ ह्रीं वृं वृषभाय नमः चक्षुषी पातु ॥ ॐ ह्रीं गं गजाननाय नमः सर्वाङ्गानि पातु ॥ ॐ ह्रीं रं रत्यै हरि भ्यां मस्तकाच्चरणान्तं चरणान्मस्तकपर्यन्तं व्यापकं पातु ॥ अथ वैकुण्ठमुखन्यासः षष्ठः ॥ महापापोपपापाभ्यां प्रायश्चित्त मसौ भवेत् ॥ मध्यं पातु महालक्ष्मीरष्टादशभुजा ध्रुवम् ॥ ऊर्ध्वं सरस्वती पातु भुजैरष्टाभिहार्जिता ॥ अधः पातु महाकाली त्रिशल्लोचनमण्डिता ॥ सिंहो हस्तद्वयं पातु परहंसोऽक्षिमण्डलम् ॥ माहिषेण समायुक्तं प्रेत पातु पदद्वयम् ॥ सर्वाङ्गानि महेशान श्चण्डिका च परंपराम् ॥ वैकुण्ठमुखकृन्न्यासः षष्ठः कष्टोपशान्तये ॥ एतत्स्पष्टम् ॥ ॐ ह्रीं मं महालक्ष्म्यै नमः मध्यं पातु ॥ ॐ ह्रीं मं महासरस्वत्यै नमः ऊर्ध्वं पातु ॥ ॐ ह्रीं क्लीं मं महाकाल्यै नमः अधः पातु ॥ ॐ क्ष्म्रौं सं सिंहाय नमः हस्तद्वयं पातु ॥ ॐ हं हंसाय नमः नाभिमण्डलं पातु ॥ ॐ ह्रं प्रेतमहिषाभ्यां नमः पादाभ्यां पातु ॥ ॐ मं महेशाय नमःसर्वाङ्गं पातु ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ ह्रीं चं चण्डिकायै नमः मस्तकाच्चरणपर्यन्तं चरणान्मस्तकपर्यन्तं व्यापकं पातु ॥ अथ सप्तमो बीजन्यासः ॥ ब्रह्मरन्ध्रात्पायुपर्यन्तं नवद्वारेषु विन्यसेत् ॥ उक्तमन्त्रस्य बीजानि प्रणवाद्यं पृथक्पृथक् ॥ ॐ ऐं नमो ब्रह्मरन्ध्रे ॥ ॐ ह्रीं नमो दक्षिणनेत्रे ॥ ॐ क्लीं नमो वामनेत्रे ॥ ॐ चां नमो दक्षिणकर्णे ॥ ॐ मुं नमो वामकर्णे ॥ ॐ डां नमो दक्षिणनासापुटे ॥ ॐ यैं नमो वामनासपुटे ॥ ॐ विं नमो मुखे ॥ ॐ च्चें नमः पायौ ॥ अथाष्टमो विपरीतन्यासः ॥ पायुतो ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्तं विन्यसेत्तानि पूर्ववत् ॥ न्यासद्वयमिदं प्रोक्तं सुगोप्यं सप्तमाष्टमम् ॥ महाभयान्महाव्याधिशत्रुचोरविघातिने ॥ महारक्षोगणानां च कल्पं नातिसमं भवेत् ॥ ॐ ऐं नमः पायौ ॥ ॐ ह्रीं नमो मुखे ॥ ॐ क्लीं नमो वामनासापुटे ॥ ॐ चां नमो दक्षिणनासापुटे ॥ ॐ मुं नमो वामकर्णे ॥ ॐ डां नमो दक्षिणकर्णे ॥ ॐ यैं नमो वामनेत्र ॥ ॐ विं नमो दक्षिणनेत्रे ॥ ॐ च्चें नमो ब्रह्मरन्ध्रे ॥ अथ समग्रमन्त्रन्यासो नवमः ॥ पूर्वाङ्गं विन्यसेन्मन्त्रं मस्तकाच्चरणावधि ॥ दक्षिणे पश्चिमे वामे तथा लोमविलोमयोः ॥ अस्मिन्न्यासे कृते राजन्नवमे देववद् भवेत् ॥ समग्रं शिरसि समग्रं ललाटे समग्रं भ्रुवोर्मध्ये समग्रं मुखे समग्रं दन्तपङ्क्तौ समग्रं जिह्वायां समग्रं कण्ठे समग्रं हृदये समग्रं नाभौ समग्रं लिङ्गे एवं पूर्वाङ्गम् ॥ समग्रं दक्षिणगण्डे समग्रं दक्षिणनेत्रे समग्रं दक्षिणकर्णे समग्रं दक्षिणस्कन्धे समग्रं दक्षिणबाहुमूले समग्रं दक्षिणभुजे समग्रं दक्षिणकूर्परे समग्रं दक्षिणमणिबन्धे समग्रं दक्षिणाङ्गुलिमूले समग्रं याम्याङ्गुल्यग्रे समग्रं याम्यकुक्षौ समग्रं याम्यस्तने समग्रं याम्यजानुनि समग्रं याम्योरौ समग्रं याम्यमेढ्रे समग्रं याम्यगुल्फे समग्रं याम्यपादे समग्रं याम्यपादांगुलिमूले समग्रं याम्यपादांगुल्यग्रेषु एवं दक्षिणाङ्गम् ॥ समग्रं वामगण्डे समग्रं वामनेत्रे समग्रं वामकर्णे समग्रं वामस्कन्धे समग्रं वामबाहुमूले समग्रं वामभुजे समग्रं वामकूर्परे समग्रं वाममणिबन्धे समग्रं वामांगुलिमूले समग्रं वामांगुल्यग्रे समग्रं वामकुक्षौ समग्रं वामस्तने समग्रं वामकट्यां समग्रं वामजानुनि समग्रं वामोरौ समग्रं वाममेढ्रे समग्रं वामगुल्फे समग्रं वामपादे समग्रं वामपादांगुलिमूले समग्रं वामपादांगुल्यग्रेषु एवं वामाङ्गम् ॥ समग्रं शिरःपश्चिमे समग्रं पृष्ठभागे समग्रं सर्वपश्चिमाङ्गं यः कश्चिदशक्तश्चेत्तदा कार्यो

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वक्ष्यमाणन्यासः ॥ नव बीजान्युच्चार्य मस्तकाच्चरणपर्यन्तं पूर्वांगे न्यसेत् ॥ पुनर्मूलेन मस्तकाच्चरणपर्यन्तं दक्षिणांगे न्यसेत् ॥ पुनस्तथैव वामांगे न्यसेत् ॥ पुनर्मूलेन पश्चिमांगे न्यसेत् ॥ अथ मन्त्रषडंगन्यासो विशेषन्यासो दशमः ॥ हृच्छिरःशिखास्वेवं कवचे लोचनद्वये ॥ अस्त्रे सर्वासु काष्ठासु पृथङ्मन्त्रं विनिक्षिपेत् ॥ नमोऽन्तं प्रथमं प्रोक्तं स्वाहाऽन्तं तत्परं न्यसेत् ॥ वषडन्तं च हूमन्तं वौषडन्तं फडन्तकम् ॥ पूज्यस्त्रैलोक्यदेवानां दशमेऽस्मिन्कृते सति ॥ कृतन्यासः प्रविष्टो वै यद्वदेत्तत्तथा भवेत्॥यत्पश्यति यथा दृष्ट्वा तद्भवेत्तादृशं किल ॥ तेन सार्धं महालक्ष्मीः स्वयं वदति यत्फलम् ॥ भविष्यमभविष्यं वा तं पालयति पुत्रवत् ॥ ब्रह्मविष्णुशिवास्त्वेनं पालयन्त्यात्मनः सदा ॥ त्रिषु लोकेषु पश्यन्ति तदाधिक्यं न किंच यत् ॥ दशन्यासे कृते पापं दशजन्मार्जितं क्षणात् ॥ सुतीव्रं विलयं याति तामिस्रं तु रवौ यथा॥सन्नद्धो दशभिर्न्यासैश्चण्डीसप्तशतीं जपन् ॥ असाध्यं साधयत्याशु कार्यं लोकत्रयेऽपि यत् ॥ माधवे मासि मध्याह्ने तपन्तं निर्मलं रविम् ॥ दिवान्धास्तं न पश्यन्ति सर्वदा सर्वथा यथा ॥ चण्डीसप्तशतीजाप्ये दशन्यासैः समुज्ज्वलम् ॥ त्रिलोक्यां सर्वदुष्टास्तं न पश्यन्ति सदा तथा ॥ हृदयादिक्रमेण षडङ्गः ॥ नव बीजान्युच्चार्य हृदयाय नमः ॥ पुनर्मूलेन शिरसे स्वाहा ॥ पुनर्मूलेन शिखायै वषट् ॥ पुनर्मूलेन कवचाय हुम् ॥ पुनर्मूलेन नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ पुनर्मूलेन अस्त्राय फट् ॥ ॐ ९ शिरसे नमः मूलेन ॥ ॐ ९ मूलेन मुखे स्वाहा ॥ ॐ ९ हृदये वषट् ॥ ॐ ९ बाह्वोः हुम् ॥ ॐ ९ उदरे वौषट् ॥ ॐ ९ नाभौ फट् पुनस्तथैव ॥ ॐ ९ कूर्परयोर्नमः ॥ ॐ ९ कर्णयोः स्वाहा ॥ ॐ ९ नेत्रयोर्वषट् ॥ ॐ ९ कपोलयोः हुम् ॥ ॐ ९ गुदे वौषट् ॥ ॐ ९ लिङ्गे फट् पुनस्तथैव ॥ ॐ ९ पादयोर्नमः ॥ ततः नव बीजान्युच्चार्य प्रणवादि पृथक् पृथक् कनिष्ठिकादि अंगुष्ठान्तं करतल पृष्ठान्तमेवं कार्यं तथा च ॥ ॐ ९ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ९ अनामि० ॥ ॐ९ मध्यमा० ॥ ॐ९ तर्जनी० ॥ ॐ ९ अंगु० ॥ ॐ ९ कर ० ॥ इति दशमन्यासः ॥ अथैकादशन्यासः ॥ चण्डीसप्तशतीजाप्ये सरहस्ये नृपोत्तम ॥ न्यासं ते संप्रवक्ष्यामि ब्रह्मविष्णुशिवैः कृतम् ॥ अंगेषु सर्वसिद्ध्यर्थं वज्रामृतमनःसुखम् ॥ अस्मिन्न्यासे दश श्लोका ब्रह्मविष्णुशिवोदिताः ॥ खड्गिनी

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

शूलिनी श्लोकमाद्यं कृष्णतरं न्यसेत् ॥ शूलेन पाहि नो देवि पुनः श्लोकचतुष्टयम् ॥ बालार्कसदृशं न्यासे चिन्तनीयं महत्तरम् ॥ सर्वस्वरूप इत्यादिश्लोकानां पञ्चकं पुनः ॥ शुद्धस्फटिकसङ्काशं न्यासं त्रैलोक्यकामदम् ॥ ॐ ३ खड्गिनी शूलिनीत्येकश्लोकेन दशभुजां दशाननां महाकालीं कृष्णतरां विचिन्त्य कनिष्ठिकाभ्यां नमो हृदयाय नमः ॥ ॐ ३ शूलेन पाहि नो देवीत्यादि चतुर्भिः श्लोकैः अष्टादशभुजां बालार्कप्रभां महालक्ष्मीं विचिन्त्य अनामिकाभ्यां नमः शिरसे स्वाहा ॥ ॐ ३ सर्वस्वरूपे सर्वेशे इत्यादिपञ्चभिः श्लोकैः अष्टभुजां शुद्धस्फटिकसन्निभां महासरस्वतीं विचिन्त्य मध्य० शिखायै० ॥ ॐ ३ खड्गिनी शूलिनीत्येक श्लोकेन दशभुजां दशाननां महाकालीं कृष्णतरां विचिन्त्य तर्जनीभ्यां नमः कवचाय हुम् ॥ ॐ ३ शूलेन पाहि नो देवीत्यादि चतुर्भिः श्लोकैः अष्टादशभुजां बालार्कप्रभां महालक्ष्मीं विचिन्त्य अंगु० नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ३ सर्वस्वरूपे सर्वेशे इत्यादि पञ्चभिः श्लोकैः अष्टभुजां शुद्धस्फटिकसन्निभां महासरस्वतीं विचिन्त्य करतलकरपृष्ठाभ्यां नमोऽस्त्राय फट् एवं देवतात्रय ध्यानपूर्वकं षडंगन्यासं विधायानन्तरमंगन्यासमारभेत् ॥ ॐ ३ खड्गिनी शूलिनी घोरा दक्षिणपादतले ॥ ॐ ३ गदिनी चक्रिणी तथा दक्षिणपादार्धे ॥ ॐ ३ शंखिनी चापिनी बाणा वामपादजानुनि ॥ ॐ ३ भुशुण्डीपरिघायुधा वामपादमूले ॥ ॐ ३ खड्गिनी शूलिनी इत्येकश्लोकेन शिरसि ॥ ॐ ३ शूलेन पाहि नो देवि इत्येकश्लोकेन दक्षिणनेत्रे ॥ ३ ॐ प्राच्यां रक्षेत्येकेन वामनेत्रे ॥ ॐ ३ सौम्यानि यानि रूपाणीत्येकेन दक्षिणकर्णे ॥ ॐ ३ खड्गशूलगदादीनीत्येकेन वामकर्णे ॥ ॐ ३ सर्वतःपाणिपादान्तेति दक्षिणनासापुटे ॥ ॐ ३ सर्वस्वरूपे सर्वेशे इत्येकेन वामनासापुटे ॥ ॐ ३ हिनस्ति दैत्यतेजांसीत्येकेन लिंगे ॥ ॐ असुरासृग्वसापंकेति आधारे ॥ ॐ ३ खड्गिनी शूलिनीति शिरसि ॥ ॐ ३ शूलेन पाहि नो देवीति ललाटे ॥ ॐ ३ प्राच्यां रक्षेति मुखे ॥ ॐ ३ सौम्यानि यानीति हृदये ॥ ॐ ३ खड्गशूलगदादीनीति उदरे ॥ ॐ सर्वतःपाणिपादान्तेति नाभौ ॥ ॐ ३ सर्वस्वरूपे इति कट्याम् ॥ ॐ ३ एतत्ते वदनमित्यूर्वोः ॥ ॐ ३ ज्वालाकरालेति जङ्घयोः ॥ ॐ ३ असुरासृग्वसेति मस्तकाच्चरणावधि पुनर्न्यासः ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ २ खड्गिनीति ह्रीं जयायै नमः पूर्वांगे ॥ ॐ २ सौम्यानीति ह्रीं विजयायै नमः पृष्ठे ॥ ॐ २ यच्च किंचिदिति ह्रीं अजितायै नमः ऊर्ध्वं पातु ॥ ॐ २ शूलेनेति ह्रीं जयन्त्यै नमो वामपार्श्वे ॥ ॐ यया त्वयेति ह्रीं अपराजितायै नमो दक्षिणपार्श्वे ॥ ॐ २ विष्णुः शरीरग्रहणमिति ह्रीं व्यापिन्यै नमः सर्वांगं पातु ॥ ॐ २ प्राच्यां रक्षेति मुखे ॥ ॐ२सौम्यानीति हृदये॥ॐ२खड्ग शूलेति नाभौ ॥ ॐ २ सर्वस्वरूपे इति लिंगे ॥ ॐ २ एतत्ते इत्यूर्वोः ॥ ॐ २ ज्वालाकरालेति जंघयोः ॥ ॐ २ हिनस्ति दैत्यतेजांसीति गुल्फयोः ॥ ॐ २ असुरासृग्वसेति पादयोः ॥ अथ महाकाल्यादिदेवतां ध्यायेत ॥ श्वेतानना नीलभुजा इत्यादि रहस्योक्तां ध्यात्वा ॥ तत्र प्रणामः ॥ लक्ष्मीं कोल्हापुरस्थां भुवि गणपतिनाऽग्रे च पार्श्वद्वये तां काल्या वाण्या समन्तात्परिजन निकरैः सेवितां देवताभिः ॥ नागं लिङ्गं च योनिं स्वशिरसि दधतीं मातुलिङ्गं गदां तत्खेटं श्रीपानपात्रं त्रिभुवनजननीं नौमि दोर्भिश्चतुर्भिः ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा एकाकारां मूर्तिं मनसा ध्यात्वा मनसा संपूज्य संप्रार्थ्य नमेत् ॥ दशन्यासकृतौ यद्यज्जपकर्ता फलं लभेत् ॥ तत्सर्वं लभते पुण्यमस्मिन्नेकादशे कृते ॥ नवाक्षरस्य मन्त्रस्य जाप्ये सर्वफलप्रदे ॥ एते न्यासाः प्रकर्तव्याश्चण्डी सप्तशतीं जपेत् ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा सृष्टिमुद्रां विलोकयेत् ॥ तस्या विलोकने राजन् कृतो न्यासः स्थिरो भवेत् ॥ अयमेका दशो न्यासः ॥ इति श्रीडामरादितन्त्रसारे चण्डीमखमहोत्सवे एकादशन्यासविधिर्नाम पञ्चमावसरः ॥ ५ ॥ अथ कामकला न्यासः ॥ प्रणवादिबीजत्रयसहितं सर्वत्र योजयेत् ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रद्धायै नमो दक्षपादे एवं प्रीत्यै नमो दक्षजङ्घायां रत्यै नमो दक्षजानुनि स्मृत्यै नमो दक्षोरौ कात्यायन्यै नमो दक्षवक्षसि मनोरमायै नमो दक्षबाहौ मनोहरायै नमो दक्षमुखे मनोरथायै नमो दक्ष मस्तके ॥ अथैतद्विपरीतं पुनः मायायै नमो वाममस्तके मोहिन्यै नमो वाममुखे दीपिन्यै नमो वामबाहौ शेषिण्यै नमो वामवक्षसि शांकर्यै नमो वामोरौ रजन्यै नमो वामजानुनि सुभगायै नमो वामजङ्घायां प्रीत्यै नमो वामपादे ॥ इति कामकलान्यासः॥ पुष्पायै नमो दक्षपृष्ठवंशे यशोवत्यै नमो दक्षपृष्ठे यशायै नमो दक्षग्रीवायां प्रीत्यै नमो दक्षिणनेत्रे धृत्यै नमो दक्षनासायां हृद्यै नमो दक्षललाटे

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सौम्यायै नमो दक्षमस्तके पुनः पूर्ववदुत्क्रमः ॥ मरीच्यै नमो वाममस्तके अंशुमालिन्यै नमो वामललाटे गिरायै नमो वामनासा पुटे शङ्खिन्यै नमो वामनेत्रे छायायै नमो वामकर्णे संपूर्णमण्डलायै नमो वामग्रीवायां तुष्ट्यै नमो वामपृष्ठे अमृतायै नमो वाम पृष्ठवंशे ॥ अयं तु रतिकलान्यासः ॥ अथानन्तरं देव्यगारमण्डपे जपस्थले वा स्वपुरतः उक्तलक्षणां वेदिकां विधाय तत्र सप्त धान्यानि मिलित्वा राशिं कृत्वा तदुपरि ताम्रकलशं कृत्वा निर्मलोदकपूरितं गङ्गाद्यावाहितमभिमन्त्र्य पञ्चपल्लवान्वितपञ्चरत्नसमन्वितोक्त द्रव्यान्वितरक्तवस्त्रवेष्टितं चन्दनपुष्पाद्यलंकृतं विधाय तस्योपरि पूर्णपात्रं विन्यस्य तन्मध्ये दुकूलादिवस्त्रं विरचय्य तत्र चण्डिका यन्त्रं वक्ष्यमाणप्रकारेण गोरोचनकेशरकुङ्कुमचन्दनेन वा संलिख्य देवीमूर्तिं संस्थाप्य वक्ष्यमाणविधिनाऽर्चयेत् ॥ तत्र यन्त्रो द्धारः ॥ चतुरस्रे समे शुद्धे चन्दनागरुकुङ्कुमैः ॥ लिखेदष्टदलं तत्र मध्ये देवीं प्रपूजयेत् ॥ शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि चण्डिका यन्त्रमुत्तमम् ॥ वस्त्रे चारक्तके चैव संलिखेद्यन्त्रमुत्तमम् ॥ यन्त्रोद्धारं प्रयत्नेन ज्ञातव्यं भो नृपात्मज ॥ चतुरस्राष्टकं षट्कं त्रिकोणं संलिखेत्ततः ॥ षट्कोणचक्रमध्यस्थमाद्यबीजत्रयं न्यसेत् ॥ पूर्वादिषट्सु कोणेषु बीजान्यन्यानि वेशयेत् ॥ प्रथमं च चतुर्द्वारं सुन्दरं भूगृहं लिखेत् ॥ तथा चोक्तं विशेषो गन्धः ॥ कुङ्कुमागरुकर्पूरैश्चन्दनैश्च सितासितैः ॥ चम्पकैर्मल्लिकाभिश्च तथा कस्तूरिका दिभिः ॥ केसरैर्विलिखेद्यन्त्रं हेमाभा लेखनी शुभेति चण्डिकायन्त्रोद्धारः ॥ तत्र प्रतिमालक्षणम् ॥ आमाषात्पलपर्यन्ता चण्डिका प्रतिमा बुधैः ॥ कर्तव्या च तदर्धा तु यथाशक्त्या नराधिप ॥ मध्ये तु स्थापयेद्देवीं चण्डिकां हेमरूपिणीम् ॥ पञ्चामृताद्यैः सुस्नातां चर्चितां चन्दनोत्तमैः ॥ तथा रक्तासने वस्त्रे प्रसन्नां भक्तवत्सलाम् ॥ गुरूपदेशमार्गेण पूजनीया प्रयत्नतः ॥ इति लक्षणमुक्तम् ॥ अथ पूजाविधिर्लिख्यते ॥ स्वपुरतः देवतायाः वामभागे ताम्रकृतकमण्डलौ तीर्थोदकपूरिताम्रप्रक्षालितमूलमन्त्रेण संस्थाप्य तेनैव मन्त्रेणार्कमण्डलादिदशमुद्रया गङ्गादीनावाह्य ॥ गङ्गे च यमुने चैवेति गन्धादि निक्षिप्य ॐ वारिधान्यै नम इति संपूज्य ततो देवीदक्षिणभागे प्रक्षालितगन्धाक्षतपुष्पाद्यर्चितं शङ्खं मूलमन्त्रपुरःसरं कलशोदकेनापूर्य गन्धपुष्पादिना शङ्खजलमर्चयेत् ॥ तत्राद्य

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वावाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य आवाहनी स्थापनी संनिरोधिनी सन्निधिः सम्मुखी चेति ॥ एताः पञ्च मुद्राः कलशशङ्खाभ्यां दर्शयित्वा शिखामन्त्रेण मालिनीमुद्रया निर्विषत्वं भाव्य गरुडमुद्रया सुपरिपूर्णं भव सुरभिमुद्रया इदममृतीभवेति अमृतमुद्रां च दर्शयेत् ॥ एवं कलशशङ्खाभ्यां मुद्रा दर्शयित्वाऽनन्तरं शङ्खस्थितजले त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्रमण्डलं मत्स्यमुद्रया दक्षिणकरेण संभाव्य पुनः शङ्खमुद्रामाबध्य तत्र यन्त्रेष्वधिष्ठितदेवताः गन्धपुष्पाक्षतादिभिर्यजेत् ॥ तथा च तत्र त्रिकोणमध्ये च प्रागादिक्रमेण १ रं वह्निदशकलात्मने नमो मध्ये प्रागादि ८ धूम्रायै० ऊष्मायै० ज्वलिन्यै० ज्वालिन्यै० विस्फुलिङ्गिन्यै० श्रियै० सुश्रियै० स्वरूपायै० कपिलायै० हव्यवाहनायै० कव्यवाहनायै०इत्यनेन त्रिकोणं समभ्यर्च्य ततः षट्कोणेषु समग्रनवबीजेनाग्नेय्यादिकोणेषु हृदयादिकवचचतुष्टयम् ॥ तेनैव पुरतो नेत्रमूलेनास्त्रं तिर्यक् एवं षट्कोणे षडङ्गानि विन्यस्य ततो वृत्तेषु प्रागादि भुवं पूजयेत् ॥ यथा हं भानुद्वादशकलात्मने० तपिन्यै तापिन्यै० धूम्रायै० मरीच्यै० ज्वालिन्यै० रुचिरायै० सुषुम्नायै० भोगदायै० विश्वायै० बोधिन्यै० धारिण्यै० क्षमायै० ततश्चतुरस्रे प्रागादिक्रमेण यजेत् ॥ अं नमः ॥ आं० इं० ईं० उं० ऊं० ऋं० ॠं० लृं० ॡं० एं० ऐं० ओं० औं० अं० अः नमः ॥ एवं प्रतिलोममातृकाः समभ्यर्च्य ततश्चतुरस्राद्बाह्यपरिधौ प्रागादिक्रमेण उं सोमः षोडशकलात्मने० अमृतायै० मानदायै० पूषायै० तुष्ट्यै० रत्यै० धृत्यै० शशिन्यै० चन्द्रिकायै० कान्त्यै० ज्योत्स्नायै० श्रियै० प्रीत्यै० अङ्गदायै० पूर्णायै० पूर्णामृतायै० कामदायै० ॥ १८ ॥ इत्येवं शङ्खजलमभ्यर्च्य शङ्खं गन्धादिना संपूज्य ततः मूलेन जलगतदोषं दग्धं संभाव्य वं बीजेन धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य ततः नयनमन्त्रमुच्चरन् अमृतदृष्ट्या संवीक्ष्य ॐ ह्रीं चामुण्डायै विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ इति नयनमन्त्रः ॥ कवचमन्त्रमुच्चारयन् संव्याप्य संकलीकृत्य ॥ ऐं चामुण्डायै विच्चे कवचाय हुं इति कवचमन्त्रः ॥ अस्त्रमन्त्रेण दिग्बन्धः ॥ ॐ क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फडित्यस्त्रमन्त्रः॥हृदयमन्त्रेण गन्धं शिरोमन्त्रेणाक्षतान् शिखामन्त्रेण पुष्पं शिखामन्त्रेणैव तेजोमयं ध्यात्वा यथा च ॥ ॐ ऐं चामुण्डायै विच्चे हृदयाय नमः॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

इति हृदयमन्त्रः ॥ ॐ ह्रीं चामुण्डायै विच्चे शिरसे स्वाहा इति शिरोमन्त्रः ॥ ॐ क्लीं चामुण्डायै विच्चे शिखायै वषट् ॥ इति शिखा मन्त्रः ॥ ततः शङ्खं हस्तेनाच्छाद्य मूलेनाष्टवारमभिमन्त्र्य चक्रमुद्रया संरक्ष्य ततस्तच्छङ्खस्थं किंचिज्जलं कलशे मिश्रयित्वा तत्क लशजलं पूर्ववन्मुद्राभिः संस्कृत्य संप्रदृश्य मूलेनाभिमन्त्र्य ततः पुनः शङ्खजलेनात्मानं च यागभुवं पूजोपकरणानि द्रव्याणि अस्त्र मन्त्रमुच्चारयन् फडन्तेनादिप्रणवेन संप्रोक्ष्य मूलेन षडङ्गं विधाय ततः गन्धपुष्पाक्षतैः आत्मानं संकलीकृत्य ततः पीठपूजनमारभेत्॥ पञ्चामृतैः संस्नाप्य कलशवारिणा जलं प्रोक्ष्य गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपान् प्रकल्प्य मूलमुच्चारयन् अमृतमास्थाय नैवेद्यं प्रकल्प्य उप चारादिकं दद्यात् ॥ ततो नीराजनं दर्शयेत् ॥ मूलमन्त्रेण त्रिभिर्देवतापीठशिरसि पुष्पाञ्जलिं विधाय देवताविग्रहः सन् मूलमन्त्रं यथाशक्ति जपेत् ॥ जपं देवतायै निवेदयेत् ॥ ततः पुष्पादिकमाघ्राय कुम्भोदराय नमः इति वामभागे निक्षिप्य हस्तप्रक्षालनं स्थलशुद्धिं च विधाय ततः पूजामूर्तेर्मलापकर्षस्नानं कृत्वा ॥ यथा च मूलमन्त्रेण पञ्चगव्येन पृथक्त्वेन मूर्तिं मार्जयेत् ॥ ततः सप्तमृत्तिकाभिः संघर्षणं मूले ओषधिभिरेव हरिद्रातैलोद्वर्तनं कृत्वा उष्णोदकेन स्नापयित्वा तां मूर्तिं पीठे अष्टदले स्थापयित्वा तत्र पुष्पादिकं प्रक्षिप्य पीठपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा तत्र देव्या दक्षिणभागे इष्टदेवतामयं स्वगुरुं ध्यात्वा गन्धादिभिरभ्यर्च्य गुरु पंक्तिं यजेत् ॥ प्रणवं सर्वत्र योजयेत् ॥ गुरवे० परमगुरवे० परमेष्ठिगुरवे० गुरुपंक्तौ० मातापितृभ्यां० उपमन्युनारदसनकव्यासादिभ्यो० ततो वामभागे गं गणपतये० दुं दुर्गायै० सं सरस्वत्यै० क्षं क्षेत्रपालाय० । ततो मध्ये आधारशक्त्यै० मूलप्रकृत्यै० कालाग्नि रुद्राय० तदुपरि आदिकूर्माय० अनन्ताय० आदिवराहाय० तद्दंष्ट्रोपरि पृथिव्यै० तदुपरि अमृतार्णवाय० रत्नद्वीपाय० हेमगिरये० नन्दनोद्यानाय० कल्पवृक्षाय० मणिभूतलाय० दिव्यमण्डपाय० स्वर्णवेदिकायै० रत्नसिंहासनाय० तत्पादेषु पुरः दक्षिणपादे आग्नेय्यादिकोणे धर्माय० दक्षिणाधरपादे ज्ञानाय० उत्तराधरपादे वैराग्याय० उत्तराग्रपादे ऐश्वर्याय० पीठपूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तर भागेषु अधर्माय० अज्ञानाय० अवैराग्याय० अनैश्वर्याय तन्मध्येऽष्टदलं तस्य दलकेसरकर्णिकासु सं सत्त्वाय० प्रबोधात्मने० रं रजसे०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

प्रकृत्यात्मने० तं तमसे० मोहात्मने० सोममण्डलाय० सूर्यमण्डलाय० वह्निमण्डलाय० मं मायातत्त्वाय विं विद्यातत्त्वाय० शं शिव तत्त्वाय० ब्रह्मणे० विष्णवे० महेश्वराय० आत्मने० अन्तरात्मने० परमात्मने० जीवात्मने० ज्ञानात्मने० कं कन्दाय० नं नीलाय० पं पद्माय० महापद्माय० दलेभ्यो० केसरेभ्यो० कर्णिकायै० एवं मण्डलादिपीठदेवताः संपूज्य ततः पूर्वाद्यष्टदलेषु कर्णिकायां तत्त त्कल्पोक्तनवशक्तीः पूजयेत् ॥ यथा नन्दायै० भगवत्यै० रक्तदन्तिकायै०शाकंभर्यै० दुर्गायै० भीमायै० कालिकायै० भ्रामर्यै० शिव दूत्यै० तत्पीठमन्त्रेण गन्धादिभिः पीठं पूजयेत् ॥ परिषिञ्चति पूजार्थं द्रव्याणि नवबीजकम् ॥ तलपृष्ठोद्भवां मुद्रां दत्त्वाऽस्त्रेणावगुण्ठ येत् ॥ अर्घ्यपात्रं प्रतिष्ठाप्य पूजयेच्छुभवारिणा ॥ गन्धपुष्पाक्षतांस्तत्र विन्यसेन्नृपनन्दन ॥ ध्यात्वा सर्वाणि तीर्थानि हस्तौ दत्त्वाऽभि मन्त्रयेत् ॥ रक्षार्थं तस्य कर्तव्या चक्रमुद्राऽस्त्रसंयुता ॥ अर्घ्योदकेन संस्कारं पूजाद्रव्यस्य पूर्ववत् कृत्वा लोमविलोमाभ्या मात्मानं सम्यगर्चयेत् ॥ प्रत्यर्घ्यं संप्रतिष्ठाप्य मध्ये पीतार्घपात्रयोरिति ॥ एतत्स्पष्टम् ॥ अथ देव्या वामभागे पात्रचतुष्टयं पात्राणि संस्थाप्य तच्चैवाह ॥ ततोऽर्घ्यपाद्याचमनमधुपर्कार्थं चत्वारि पात्राण्यासाद्य तत्पात्रचतुष्टयमानीय फडन्तेन प्रक्षालितद्रव्याणि मूलमन्त्रेण प्रक्षिप्य तथा च देव्याः पुरतः दक्षिणोदगायतपंक्तिक्रमेण षट् पात्राण्यानीय अस्त्रप्रक्षालितमूलमन्त्रेणासाद्य तानि कानि गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलानि एतानि पात्राणि दशपरिमितानि पीतत्रिकोणोपरि स्थापितानि पूर्वोक्तशङ्खजलस्थगन्धादिभिः मूलेन संस्कृत्याभिमन्त्रयेत् ॥ तत्र गन्धाक्षतपुष्पयवपञ्चकुशाग्रबिल्वसर्षपदूर्वाष्टद्रव्याणि अर्घ्यपात्रजले प्रक्षिपेत ॥ दूर्वाविष्णु क्रान्ताश्यामाकपद्मानि पाद्यपात्रजले विनिक्षिपेत ॥ जातीफलकङ्कोललवङ्गान्याचमनपात्रजले प्रक्षिपेत् ॥ पयोदधिघृतमधुखण्डं मधुपर्कपात्रे प्रक्षिपेत् ॥ एवं पात्रचतुष्टयप्रयोगः ॥ तथा चोक्तं गन्धाष्टकं भविष्ये ॥ चन्द्रचन्दनकस्तूरीरोचनागरुकुंकुमम् ॥ कपि चोरजटामांसी शक्तिगन्धाष्टकं स्मृतम् ॥ ( कर्पूर चन्दन कस्तूरी गोरोचन अगरु कुंकुम केसर रक्तचन्दन जटामांसी ) ॥ फेत्कार तन्त्रे विकल्प उक्तः ॥ रोचनाकपिकाश्मीरमांसीत्वगरुचन्दनैः ॥ कचोरैरपि गन्धोऽयं शैवे शाक्ते च शस्यते ॥ गोरोचना

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

रक्तचन्दनकेशरजटामांस्यगरुचन्दनकचोरकर्पूरैः एभिरुक्ताष्टगन्धैरासाद्य जात्यादिऋतुकालोद्भवैः पुष्पैः पल्लवैश्च दिव्यवासां स्याभरणानि धूपार्थं दशाङ्गं दीपवर्तिकाऽऽज्याक्ता षड्रसौदनादि पक्वं लेह्यपेयात्मकं नैवेद्यं लक्षणोक्तं ताम्बूलं सौवर्णी दक्षिणां कर्पूरनीराजनं पञ्चरत्नानि पुष्पाञ्जलिमेवं पूजामासाद्य ततोऽगुष्ठाद्यङ्गुलिदशकमुभयकरात्तमुभयकरबाह्ययोरुभयकरपार्श्वयोः फडन्तेन मन्त्रेण व्यापकन्यासरूपां करशुद्धिं जलेन कृत्वा ततः फडन्तमन्त्रेणाधऊर्ध्वंतालत्रयं कृत्वा ॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट् इत्यनेन दश दिशो बद्ध्वा त्रैलोक्यं रक्ष २ हुं फट् स्वाहेति मन्त्रेणाग्निप्राकारत्रयं कृत्वा पीठस्थयन्त्रेऽष्टाऽऽवरणदेवताः स्थापयेत् ॥ तद्यथा उक्तं च ॥ षट्कोणचक्रमध्यस्थां मध्यबीजव्यवस्थिताम् ॥ महाकाल्या सरस्वत्याऽलंकृतां दक्षिणान्ययोः ॥ संयुक्तां दक्षिणे वामे सिंहेन महिषेण च ॥ अष्टादशभुजां ध्यात्वा महालक्ष्मीं प्रणम्य च ॥ पीठादिपूजनं कुर्यात्स्वबीजेन पृथक् पृथक् ॥ ॐकार बीजमध्यस्थं नामधेयाद्यमक्षरम् ॥ देवतानां स्वबीजं तत्पूजायामृद्धिदम् ॥ ॐकारः प्रथमं पीठं पूर्णपीठं ततः परम् तृतीयं कामपीठं च पूज्येत्संप्रदायतः ॥ कोणत्रयेऽपि संन्यासः कर्तव्यं पीठकत्रयम् ॥ चतुरस्रे पूर्वदिशि न्यसेदुड्यानपीठकम् ॥ नाथं मुण्डेश्वरं चैव मुण्डाम्बापादुकां तथा ॥ न्यसेच्च मातृकापीठमाग्नेय्यां पृथिवीपते ॥ मातृकेश्वरोपनाथं मातृकाम्बोपपादुकाम् ॥ पीठं जालन्धरं चैव दक्षिणे तु तथैव च ॥ नाथं ज्वालामुखं चापि ज्वालाम्बापादुकां तथा कोल्हापुरोपपीठं च नैर्ऋत्ये विन्यसेन्नृप ॥ कोल्हेश्वरोपनाथं च कोल्हाराम्बोपपादुकाम् पीठं पूर्णगिरीशं च पश्चिमे स्थापयेन्नृप नाथं पूर्णेश्वरं चैव पूर्णाम्बापादुकां तथा ॥ सौहारमुपपीठं तु वायव्यां चैव पूजयेत ॥ सौहारमुपनाथं च सौहाराम्बोपपादुकाम् ॥ कोल्हागिरिभवं पीठं सौम्ये चैव तु पूजयेत् ॥ नाथं कोल्हेश्वरं चापि कोल्हाम्बापादुकां तथा ॥ कामरूपोपपीठं च ईशान्ये पूजयेत्ततः ॥ रामेश्वरोपनाथं च कामा म्बा चोपपादुकाम् पूर्वादिदिक्षु पीठस्य गणेशादिचतुष्टयम् ॥ गणेशक्षेत्रपालौ च पादुके बटुकत्रयम् ॥ आग्नेय्यादिचतुष्कोणे पूज्यं देवीचतुष्टयम् । आद्या तत्र जया प्रोक्ता द्वितीया विजया स्मृता ॥ जयन्ती तत्परा भूप चतुर्थी चापराजिता ॥ पूज्या



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नामपदैर्देवी पीठपङ्कजमध्यगा ॥ आग्नेय्यादिक्रमेणैव वेतालानां चतुष्टयम् ॥ आग्नेय्यामग्निमुखं चैव नैर्ऋत्यां प्रेतवाहनम् ॥ ज्वाला मुखं च वायव्यां धूम्राक्षं त्वीशतस्तथा ॥ कोणे चतुष्टये चापि वेतालानां चतुष्टयम् ॥ पूर्वपत्रादितः पूज्यं मातॄणां मण्डलं शिवम् ॥ रहस्यकथितैर्बीजैः स्वबीजेनाथवा नृप ॥ आद्यपत्रे समभ्यर्च्या ब्रह्माणी हंसवाहिनी ॥ माहेश्वरी वृषारूढा पूज्या सा हुत भुग्दले ॥ मयूरवाहना पूज्या कौमारी दक्षिणे दले ॥ नैर्ऋत्ये वैष्णवी पूज्या गरुडोपरि संस्थिता ॥ पश्चिमे यज्ञवाराही दंष्ट्रोद्धृत वसुंधरा ॥ समीरणदले स्थाप्या नारसिंही विभीषणा ॥ गजराजसमारूढा इन्द्राणी सौम्यदिग्दले ॥ गणनाथपरीवारा सदा रुद्रेण संयुता ॥ ईशपत्रे समभ्यर्च्या चामुण्डा चण्डमुण्डिता ॥ नन्दाद्याः कर्णिकामध्ये क्रमात्षट्कोणपूजने ॥ नन्दजा हेमवर्णाभा सुरक्ता रक्तदन्तिका ॥ नीला शाकंभरी दुर्गा सर्वरूपाऽऽर्तिहारिणी ॥ दंष्ट्रार्चितरवी भीमा नीलपात्रशिरोधरा ॥ तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रमरी वरदाऽर्चिता ॥ चक्रे त्वष्टदले चैव शक्त्यष्टकमुदाहृतम् ॥ यक्षिणी कालिका चैव सुरश्रेष्ठा दशानना ॥ रतिः प्रीतिश्च विश्वेष्टा दशभुजा मनोभवा ॥ अणिमा महिमा चैव लघिमा गरिमा तथा॥प्राप्तिः प्राकाम्येशिता च वशिता चाष्ट सिद्धयः ॥ चक्रे त्वष्टदला ग्रेषु सिद्ध्यष्टकमितीरितम् ॥ भैरवाष्टकं च ततो लोकपालाष्टकं तथा ॥ असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोध उन्मत्तभैरवः ॥ कपाली भीषणश्चैव संहारश्चाष्ट भैरवाः ॥ इन्द्रश्चाग्निर्यमश्चैव नैर्ऋतो वरुणस्तथा ॥ वायुः सोमस्तथेशानो लोकपालाः प्रकीर्तिताः ॥ गुरुं परमगुरुं च परमेष्ठिगुरुं तथा ॥ गणेशं हरिहरौ च षड्दले चैव पूजयेत् ॥ बाह्ये त्रिकोणके चक्रे प्रधानस्य च पृष्ठतः ॥ पूजयेच्च महाकालीं रुद्रो गौर्या तथा सह ॥ महालक्ष्म्या हृषीकेशो लक्ष्म्या च सहितस्तथा ॥ सरस्वत्याः पृष्ठभागे विरञ्चिः स्वरया सह ॥ कालश्च दक्षिणे पूज्यो रुद्रश्चापि नृपात्मज ॥ सिंहश्चापि नृणामत्र पूजनीयः प्रयत्नतः ॥ मृत्युर्वामे च विजया गणेशो महिष स्तथा ॥ मातृकामन्ततश्चापि त्रिकोणे बाह्यतस्तथा ॥ मध्ये त्रिकोणके चक्रे प्रधानं चण्डिकां नृप ॥ अधिदेवीं महाकालीं दक्षिणे चैव पूजयेत् ॥ प्रत्यधिदेवतां चैव वामभागे सरस्वतीम् ॥ पूजयेच्च नृपश्रेष्ठ वेदगर्भामनिन्दिताम् ॥ एवं यन्त्रावरणदेवताः संपूज्य

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अनन्तरं चतुरस्राद्बाह्यपरिधौ प्रगादिक्रमयोगेन पञ्च षट् षट् च षट् ॥ तथा ॥ प्रथमा विष्णुमाया च द्वितीया चेतना स्मृता ॥ बुद्धिर्निद्रा क्षुधा छाया शक्तिस्तृष्णाऽष्टमी भवेत् ॥ क्षान्तिर्जातिस्तथा लज्जा शान्तिः श्रद्धा त्रयोदशी ॥ कान्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्वृत्तिः स्मृतिरेव दया तथा ॥ तुष्टिः पुष्टिश्च माता च भ्रान्तिर्नाम पदक्रमः ॥ त्रयोविंशति संख्योऽयं ब्रह्मणा पूजितः स्तुतः ॥ नालमूले च संपूज्यमाधारादिचतुष्टयम् ॥ आधारःकूर्मशेषौ च चतुर्थीपृथिवी नृप ॥ ततः पद्मं महापद्मं सुसंपूज्य प्रयत्नतः ॥ दलेभ्यश्चैव पत्रेभ्यः केसरेभ्योऽथ कर्णिका ॥ एताः ख्याता मया राजन् यन्त्रे संपूज्य यत्नतः ॥ ॥ तत्रादौ त्रिकोणाग्रे ॥ ॐकारपीठाय० ॥ पूर्णपीठाय० ॥ ॐ कामपीठाय० ततश्चतुरस्रे न्यसेत् ॥ तत्र प्राच्याम् ॥ उं उड्यानपीठाय० १ उड्यानेश्वरोपनाथाय० २ उड्यानाम्बापादुकां पू० ३ ॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ मं मातृपीठा० ४ मातृपीठेश्वरोपनाथा० ५ मातृकाम्बापा० ६ ॥ याम्यायाम् ॥ ॐ जं जालन्धरपीठाय० ७ जालन्धरेश्वरोपनाथा ० ८ जालन्धराम्बापा० ९ ॥ नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ कं कोल्हापुरोपपीठा० १०॥ कोल्हापुरपीठोपनाथाय० ११ कोल्हापुर पीठाम्बापा० १२ ॥ वारुण्याम् ॥ ॐ पूर्णगिरिपीठा० १३ पूर्णगिरिपीठेश्वरोपनाथा० १४ पूर्णगिरिपीठाम्बा० १५ ॥ वायव्याम् ॥ ॐ सौहारोपपीठा० १६ सौहारोपपीठोपनाथा० १७ सौहारोपपीठोपनाथाम्बापा० १८ ॥ उदीच्याम् ॥ ॐ कं कोल्हागिरिभव पीठाय० १९ कोल्हागिरिपीठोपनाथा० २० कोल्हागिरिभवपीठेश्वराम्बापा० २१ ॥ ईशान्याम् ॥ ॐ कं कामरूपोपपीठा० २२ कामरूपोपपीठनाथाय० २३ कामरूपपीठेश्वर्यम्बापा० २४ धौतचतुरस्रे तदन्तराले गणेशचतुष्टयं प्रागादि ॥ गं गणेशाय० १ क्षं क्षेत्रपालाय० २ पं पादुकेभ्यो० ३ बं बटुकत्रयाय० ४ ॥ ततश्चतुरस्रे तदन्तराले आग्नेयादिकोणेषु देवीचतुष्टयम् ॥ जं जयायै १ विं विजयायै० २ जं जयन्त्यै० ३ अं अपराजितायै० ४ ॥ तथा तत्रैव वेतालचतुष्टयम् ॥ आग्नेयादिकोणे अं अग्निमुखवेताला य० १ प्रं प्रेतवाहनवेतालाय० २ जं ज्वालामुखवेतालाय० ३ धूं धूम्रमुखवेतालाय० ४ ॥ ततश्चतुरस्रे तदन्तराले ब्राह्म्या द्यष्टमातृकाः प्रागादि ॥ ॐ ऐं हंसवाहिन्यै० ब्राह्म्यै विच्चे नमः १ ह्स्रैं वृषवाहिन्यै० मं माहेश्वर्यै विच्चे नमः २ ॐ क्लीं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मयूरवाहिन्यै० कं कौमार्यै विच्चे नमः ३ ॥ ॐ श्रीं गरुडवाहिन्यै० वं वैष्णव्यै वि० ४ ॥ ॐ हुं दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरायै० वां वाराह्यै विच्चे नमः ५ ॥ ॐ क्ष्म्रौं स्तम्भोद्भवायै मं महानारसिंह्यै विच्चे नमः ६ ॥ ॐ लौं गजवाहिन्यै० ऐं ऐन्द्र्यै विच्चे नमः ७ ॥रव्फ्रें गणनाथपरिवारायै सदा रुद्रेण संवृतायै चण्डमुण्डमण्डितायै सिंहारूढायै चां चामुण्डायै विच्चे नमः ८ ॥ षट्कोणकर्णिकायां नन्दाद्याः षट् न्यसेत ॥ ॐ ह्रीं हेमगर्भायै० नं नन्दायै० विच्चे नमः १ ॥ ॐ ह्रीं सुरक्तायै० रं रक्तदन्तिकायै० विच्चे नमः २ ॥ ह्रीं नीलायै० शां शाकंभर्यै विच्चे० ३ ॥ ॐ ह्रीं सर्वरूपार्तिहारिण्यै० दुं दुर्गायै विच्चे नमः ४ ॥ ॐ ह्रीं दष्ट्राचिंतमुखायै नील पात्रशिरोधरायै० भीं भीमायै विच्चे नमः ५ ॥ ॐ ह्रीं तेजोमण्डलदुर्द्धर्षायै० भ्रां भ्रामर्यै विच्चे नमः ६ ॥ ततोऽष्टदले प्रागादि शक्त्यष्टकं न्यसेत् ॥ यं यक्षिण्यै नमः १ कं कालिकायै० २ सं सुरश्रेष्ठायै० ३ दं दशाननायै० ४ रं रत्यै० ५ प्रं प्रीत्यै० ६ वं विश्वेश्वर्यै ७ अं अष्टादशभुजां मनोभवायै० ८ ततः सिद्ध्यष्टकं दलाग्रेषु प्रागादि ॥ अणिमायै० १ महिमायै० २ लघिमायै ० ३ गरिमायै० ४ प्राप्त्यै० ५ प्राकाम्यै० ६ ईशितायै० ७ वशितायै० ८ ॥ अथाष्टदलकर्णिकायां भैरवाष्टकं प्रगादिषु ॥ ॐ अं असिताङ्गभै० १ रुं रुरुभै० २ चं चण्डभै० ३ कं क्रोडभैरवा० ४ उं २ उन्मत्तभैर० ५ कं कपालभै० ६ भीं भीषणभै ० सं संहारभै० ८ ॥ पुनस्तत्रैव इन्द्राद्यष्टलोकपालाः लं वज्रहस्ताय सुराधिपतये इन्द्राय० १ रं शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतयेऽग्नये० २ मं दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये यमाय० ३ क्षं खड्गहस्ताय रक्षोधिपतये निर्ऋतये० ४ वं पाशहस्ताय जलाधिपतये वरुणाय० ५ वं अंकुशहस्ताय सुराधिपतये वायवे० ६ सं गदाहस्ताय नक्षत्राधिपतये सोमाय० ७ इं त्रिशूलहस्ताय विद्याधिपतये ईशानाय०८ ॥ ततः षड्दले गुं गुरुभ्यो० १ पं परमगुरुभ्यो २ पं ० परमेष्ठिगुरुभ्यो० ३ गं गणपतये० ४ हं हरये ५ हं हराय० ६ ॥ अथ त्रिकोणमध्ये देव्याः पुरत ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै विच्चे नमः १ ॥ तद्दक्षिणभागे ॐ ऐं महाकाल्यै विच्चे० २ ॥ देव्या वामभागे ॐ क्लीं महासरस्वत्यै वि० ३ पुनस्तत्रैव दक्षिणभागे ॐ क्ष्म्रौं सिंहाय० ॥ देव्या वामभागे ॐ हूं महिषाय० २ तत्र देव्याः पृष्ठ

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

भागे महाकालीसांनिध्ये ॐ ह्स्रौं हस्रौं गौरीरुद्राय० ३ ॥ देव्याः पृष्ठभागे लक्ष्मीसान्निध्ये ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीहृषीकेशाय ० ४ ॥ देव्याः पृष्ठभागे ॐ ऐं स्वराविरिञ्च्यै० ५ ॥ तथा देव्याः दक्षिणे ॐ हूं कं कालाय० १ ॐ रुं रुद्राय० २ ॐ सं सिंहाय० ३ ॥ तथा वामे मं मृत्यवे० ४ वं विजयाय०५गंगणेशाय ६मं महिषाय० ७ ॥ पुरतस्त्रिवेदभैरवाय०८ ॥ ततश्चतुरस्राद्बाह्यपरिधौ प्रागादि विष्णुमायाद्याश्चतुरस्रभुवि त्रयोविंशतिमातृकाः स्थापयेत् ॥ ताश्च प्रणवादि सर्वत्र ॥ ॐ विष्णुमायायै०चेतनायै० बुद्ध्यै० निद्रायै० क्षुधायै० एताः पञ्च पूर्वे ॥ छायायै० शक्त्यै० तृष्णायै० क्षान्त्यै० जात्यै० लज्जायै० एताः षड्दक्षिणे॥शान्त्यै०श्रद्धायै०कान्त्यै० लक्ष्म्यै० धृत्यै० वृत्यै० एताः षट् पश्चिमे ॥ स्मृत्यै० दयायै० तुष्ट्यै० पुष्ट्यै० मात्रे० भ्रान्त्यै० एताः षडुत्तरे ॥ अथ षड्दल मूले षडंगानि विन्यसेत् ॥पश्चिमायाम् ॐ ह्स्रां हृदयाय० १ ॥आग्नेय्याम् ॐ ह्स्रीं शिरसे० २ ॥ ईशान्याम्ॐह्स्रूंशिखायै० ३॥ नैर्ऋत्याम् ॐ ह्स्रैं कवचाय० ४ ॥ वायव्याम् ॐ ह्स्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ पुरतः ॐ ह्स्रः अस्त्राय० ६ ॥ अथभूगृहंसमभ्यर्च्य नालाद्यष्टकं पूर्वादि ॥ नालाय० नमः १ मूलाय २ पद्माय० ३ महापद्माय०४आधारशक्तये०५कूर्माय० ६शेषाय०७पृथिव्यै० ८ ॥ सर्वाकारदलेषु दलेभ्यो० सर्वाकारपत्रेषु पत्रेभ्यो० सर्वाकारकेसरेषु केसरेभ्यो० सर्वाकारकर्णिकायां कर्णिकायै० ॥ ततो देव्याः पदस्थाने ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनयोगपीठात्मने नमः ॥ ॐ नमश्चण्डिकायै० सायुधायै सपरिवारायै साभरणायै सवाहनायै इह मण्डले एह्येह्यागच्छ २ श्रीचामुण्डायै नमः ॥ इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा जयजयशब्दान् कारयेत् ॥ इत्यावरणदेवताः संपूज्य ॥ अथ प्रतिबीजेन देवतां ध्यात्वा निश्चलं भूत्वा ॥ आद्यबीजे महाकालीं ध्यानपूर्वं समर्चयेत् ॥ तृतीयेऽष्टभुजां ध्यात्वा समभ्यर्च्य सरस्वतीम् ॥ ततः पृथक् पृथक् पूजां कृत्वा महिषसिंहयोः ॥ मध्यबीजे चिरं ध्यात्वा महालक्ष्मीं समात्मनः ॥ इत्यावरण देवताः संस्थाप्यानन्तरं वक्ष्यमाणविधिना देवीं ध्यायेत् ॥ योगनिद्रा हरेरुक्ता इत्यादिचतुर्भिः श्लोकैराद्यबीजपूर्वकं प्रणवादिं कृत्वा महाकालीं ध्यात्वा सर्वदेवशरीरेभ्य इत्यादिषड्भिः श्लोकैर्मध्यबीजपूर्वकं प्रणवादिं च महालक्ष्मीं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ध्यात्वा गौरीदेहात्समुद्भूतेत्यादिश्लोकत्रयाणां तृतीयबीजपूर्वकं प्रणवादिं च महासरस्वतीं ध्यात्वा एवं समग्रनवबीजेन योगनिद्रा हरेरुक्ता इत्यारभ्य त्रयोदशश्लोकैः पुनः पठित्वा महाकाल्यादिदेवतात्रयं चिरं ध्यात्वा स्वहृदयान्नासाग्रमानीय पुनर्नासाग्रा दूर्ध्वश्वासमार्गेण पीठमानीय आवाहनमुद्रया मध्यबीजेन महालक्ष्मीं भावयेत् ॥ ततो मूलं समग्रमुच्चार्य एह्येह्यागच्छा गच्छ सन्निधिं कुरु २ इत्यावाह्य प्रतिमायां विन्यस्य संभाव्य एतास्त्रिमूर्तयः एकाकारा ध्यात्वा प्रतिमायामावाह्य मूलमन्त्रपूर्वकं चण्डिके प्रतिष्ठिता भव सन्निहिता भव सन्निरुद्धा भव सम्मुखा भव सुप्रसन्ना भव वरदा भव इति क्रमेणोच्चरन्मुद्राः कृत्वा देव मूर्तेर्मूलमन्त्रेण षडंगन्यासं कृत्वा देवतामुद्रातदायुधमुद्राश्च दर्शयित्वा प्रणमेत् ॥ ततस्तां प्रतिमां ताम्रपात्रे संस्थाप्य समग्र मूलेन जलधारया अग्न्युत्तारणं कृत्वा तत आवाहनादि पूजनमारभेत् ॥ तथा चोक्तम् ॥ आह्वानपूर्वकं दद्यादासनं मणिभूषितम् ॥ मण्डलस्थास्तु या देव्यः पीठस्थाः सर्वतः स्थिताः ॥ महालक्ष्म्या सहैक्येन चिन्तयेद्योगमुद्रया ॥ एकाकारं महालक्ष्मीरूपं ध्यात्वा परात्परम् ॥ मुद्राभुजायुधाकारांश्चण्डिकाग्रे प्रदर्शयेत् ॥ अष्टादशाक्षमालाद्यास्ततः पाद्यं प्रकल्पयेत् ॥ वारिपुष्पाक्षतैर्युक्तं चन्दनेन प्रमोदितम् ॥ अर्घ्यं दत्त्वा महालक्ष्म्यै धेनुमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ संकल्पाचमनं भूप स्नानपुष्पाभिषेचनम् ॥ विदध्याच्छ्रेयसीं मुद्रां यथा माता प्रतुष्यति ॥ महार्हैर्विचित्रिते वस्त्रे चित्राण्याभरणानि च ॥ कस्तूरीकुंकुमोपेतं कर्पूरागरुचन्दनम् ॥ सुरभीणि सुपुष्पाणि बिल्वपत्राक्षतानि च ॥ निवेद्य चण्डिकां भूप दिव्यैर्धूपैः सुधूपयेत् ॥ ज्वलन्मणिशिखाकारैर्दीपैर्नीराजनैः शुभैः ॥ यथा वर्ण क्रमोपेतैर्नैवेद्यैः पायसादिभिः ॥ अनेकरसपक्वान्नैर्महालक्ष्मीं प्रतोषयेत् ॥ प्रणम्याचमनं दत्त्वा चन्दनं मुखवासनम् ॥ सकर्पूरं च ताम्बूलं भक्तिभावसमन्वितम् ॥ इति ॥ अथ पूजनम् समग्रं मूलमुच्चार्य प्रत्युपचारैः ॥ अथ ध्यानम् ॥ शाङ्र्गचक्रगदाहस्ते शुभ्र वर्णे शुभासने ॥ मम देवि वरं देहि सर्वसिद्धिप्रदायिनि ॥ अथासनम् ॥ नानावरप्रदां देवीं समाराधय सुव्रताम् ॥ पीताम्बरधरां देवीं पञ्चक्षोभविवर्जिताम् ॥ पूर्वस्थापितान्यर्घ्यपात्रादीनि तान्यपि संपूजयेत् ॥ एवं पूजिते पीठे स्वहृदयस्थितां मूलमन्त्रमारिणीं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

गुरुस्वरूपां ज्योतिर्मयीं सपरिवारां श्रीमहालक्ष्मीं श्वेताननां नीलभुजेत्यादिपूर्ववद्रहस्योक्तदेवतां ध्यात्वा दीपाद्दीपान्तर मिव तन्मूर्तेः सकाशान्निर्गतां देवतां देवतामूर्तिं सुषुम्नानाड्यां बहिर्निर्गमे पत्रपुष्पसहितमञ्जलौ तामानीय मूलमन्त्रपूर्वकं सर्वान्तर्यामिणीं गुरुस्वरूपां भक्त्यनुगृहीतविग्रहां ज्योतिर्मयीं सर्वमंगलात्मिकां सपरिवारां श्रीमहालक्ष्मीमस्मिन्महोत्सवे आवाहय पूजां गृहाण प्रतिष्ठा भव इत्युच्चरन्नावाहिन्या मुद्रया कलशस्थप्रतिमायामावाहयेत् ॥ आवाहनीस्थापनीसन्निधि करणीसन्निरोधिन्यवगुण्ठिनीसम्मुखीकरणीप्रसाधिनीयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत् ॥ अक्षमालाद्यष्टादशमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ ततोऽर्घ्य पात्रं गृहीत्वा मूलेन महालक्ष्म्यै नम इदमर्घ्यं समर्पयामि ॥ चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च वरसिंहार्यपाणिनीम् ॥ सिंहारूढां महादेवीं सर्व सिद्धिप्रदायिनीमित्यर्घ्यम् ॥ ततः पाद्यपात्रं गृहीत्वा पुनर्मूलेन महालक्ष्म्यै नम इदं पाद्यं समर्पयामि ॥ तप्तकाञ्चनसङ्काशां कमलां कमलालयाम् ॥ रक्ताम्बरधरां देवीं कमलाक्षीं वरप्रदाम् ॥ इति पाद्यम् ॥ अथाचमनपात्रं गृहीत्वा इदमाचमनीयं समर्प० ॥ विद्या धरीं महादेवीं पद्माक्षीं लोकमातरम् ॥ सर्वैश्वर्यप्रदां देवीमाचम्यादिषु पूजयेत् ॥ ततो मधुपर्कपात्रं गृहीत्वा मूलमन्त्रेण महालक्ष्म्यै नम इदं पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥ शङ्खोदकेन मूलमन्त्रेण महालक्ष्म्यै नमः शुद्धोदकस्नानमिदं समर्पयामि ॥ स्थापितकलशो दकेन श्रीसूक्तेन दुर्गासूक्तलक्ष्मीसूक्तदेवीसूक्तसरस्वतीसूक्तैर्देवीमभिषेचयेत् ॥ तुषारकिरणाभासां जलरूपां त्रिलोचनाम् ॥ हंसा रूढां महादेवीं शंकरार्धशरीरिणीम् ॥ इति शुद्धोदकस्नानम् ॥ पुनराचमनीयम् ॥ ततो वस्त्रं मूलेन महालक्ष्म्यै० इदं वस्त्रं स० नारायणीं महालक्ष्मीं शंकरार्धशरीरिणीम् ॥ जगन्मातां महाकालीं वन्दे तां विष्णुवल्लभाम् ॥ इति वस्त्रम् ॥ अथ कञ्चुकादि मूलेन महालक्ष्म्यै० इदं कञ्चुकादि सम० ॥ नानासिद्धिप्रदां देवीं नानागर्भप्रदायिनीम् ॥ नानामृत्रधरां देवीं सर्वलोक विवर्धिनीमिति वस्त्राणि विचित्राणि ॥ ततः मूलेन हरिद्रोद्वर्तनं कृत्वा परिमलसुगन्धतैलादिभिरुद्वर्तनमेव ॥ अथाभरणानि मूलेन दद्यात् ॥ ततश्चन्दनं गृहीत्वा मूलेन पूर्ववत् ॥ चन्दनागरुकस्तूर्या कुङ्कुमं रोचनं तथा ॥ कर्पूरादिसुगन्धाढ्यं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सर्वाङ्गेषु विलेपयेत् ॥ इति गन्धम् ॥ तथा अक्षताः ॥ अक्षतास्तन्दुलाश्चैव कुंकुमाक्ता मनोहराः ॥ गृहाण त्वं महालक्ष्मि सर्वसिद्धिप्रदा भवेत्यक्षताः ॥ सुरभीणि सुपुष्पाणि समर्प्य मूलेन महालक्ष्म्यै नमः इति पुष्पम् ॥ मन्दारपारिजाताद्य पाटली केतकी तथा ॥ मोगरं मरुपुष्पं च सर्वपुष्पैः सुशोभनैः ॥ इति पुष्पाणि ॥ अस्मिन्नवसरे महालक्ष्म्या अङ्गपूजा कर्तव्या ॥ चञ्चलायै नमः पादौ पू० ॥ आषाढायै नमो जानुद्वयं पू० ॥ कमलवासिन्यै नमः कटिं पू० ॥ जनन्यै नमो नाभिं पू० ॥ मन्मथायै नमः स्तनौ पू० ॥ एकनाभ्यै नमो हृदयं पू० ॥ ललितायै नमः पाणी पू० ॥ उन्मत्तकण्ठायै नमः कण्ठं पू० ॥ भूभृत्यै नमो मुखं पू० ॥ गौर्यै नमो नेत्रे पू० ॥ धात्र्यै नमो नासापुटौ पू० ॥ विधात्र्यै० नमः कर्णौ पू० ॥ सर्वसौवर्णायै नमो ललाटं पू० ॥ सर्वनिष्कलङ्कायै नमो मस्तकं पू० ॥ सर्वसिद्धिप्रदायै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि॥इत्यङ्गानि पुष्पैः संपूज्य ॥ धूपं दर्शयित्वा ॥ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनागरुसंयुतम् ॥ सर्वेषामुत्तमं धूपं महालक्ष्म्यै निवेदयेत् ॥ मूलेनैव महालक्ष्म्यै नम इदं धूपम् ॥ ततो दीपादि गृहीत्वा मूलेन महालक्ष्म्यै नमः इदं दीपं स० ॥ घृताद्यैर्वर्तितश्चैव महातेजोमयि ज्वलन् ॥ महान्तमन्धकारं च निवारयति भूतले ॥ इति दीपम् ॥ अथ पायसादि पूर्वोक्तं नैवेद्यं गृहीत्वा मूलेन अर्घोदकेन संप्रोक्ष्य कवचेनावगुण्ठ्य योनिमुद्रां दर्शयित्वा ॥ सर्वं भक्ष्यं च भोज्यं च सर्वरससमन्वितम् ॥ नैवेद्यं मनसाऽभीष्टं महालक्ष्म्यै निवेदयेत् ॥ इमं नैवेद्यं गृहाण स्वाहेति धेनुमुद्रया ग्रासमुद्रां दर्शयित्वा अथवा दक्षिणहस्तेन प्राणाग्निहोत्रोक्तमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ उदकं वामहस्तेन दत्त्वा करद्वयेनांगुष्ठद्वयानामिकाद्वयं स्पृष्ट्वाऽमृतमुद्रया परिवारदेवतातृप्तिं विभाव्य मध्ये पानीयमुत्तरापोशनं दत्त्वा हस्तप्रक्षालनार्थं चन्दनेन करोद्वर्तनं कृत्वा उष्णोदकेनाचामयित्वा ततः फलं समर्प्य ॥ फलं च पुरनारङ्गैः कदली मधुरं तथा ॥ नारिकेलसमायुक्तं फलं च प्रतिगृह्यतामिति फलम् ॥ ततस्ताम्बूलम् ॥ कर्पूरं नागवल्लीं च क्रमुकादि च संयुतम् ॥ विष्णुवक्षस्थले देवि ताम्बूलं च समर्पयेत् ॥ ततः सौवर्णां दक्षिणां दद्यात ॥ ततः कर्पूरयुक्तदीपैर्नीराजयेत् ॥ मूलेन पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥ ततो नमस्काराः ॥ दामोदरे नमस्तुभ्यं नमस्ते लोक

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नायिके॥नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि त्राहि मां परमेश्वरि॥इति नमस्कृत्य॥अथ प्रार्थना॥मूलाधारस्थितां देवीं व्यासादिमुनिसेविताम्॥ आगच्छ वरदे देवि वरत्रयमुदाहृताम्॥ जपकाले च सान्निध्यं प्रसादं कुरु मे सदा॥ इति प्रार्थ्य॥ ततः प्रदक्षिणैका कर्तव्या॥ तथा चोक्तम्॥ एका चण्डी रवेः सप्त तिस्रो दद्याद्विनायके॥ चतस्रः केशवं दद्याच्छिवस्यार्धप्रदक्षिणेति॥ एतत्कृतभगवतीपूजायां विनियोगं स्मृत्वा गन्धाक्षतपुष्पैर्युक्तचुलकोदकधारया श्रीमहालक्ष्मि कृतामिमां पूजां गृहाण स्वाहेति पूजां निवेदयेत्॥ इत्येवं देवीपूजां समाप्यानन्तरं कुमारीपूजनं कुर्यात्॥ प्राणानायम्य पूर्वोक्तन्यासान्संस्मृत्य चात्मवान्॥ नवाक्षरस्य मन्त्रस्य छन्दर्षि देवतां न्यसेत्॥ जपेन्नवाक्षरं मन्त्रमथवाऽष्टोत्तरं शतम्॥ शतमादौ शतं चान्ते मध्ये सप्तशतीं जपेत्॥ प्रतिरूपं विधानं च एवं जाप्यविधिर्नरैः॥ तथा सप्तशतीमालाछन्दर्षिदेवतास्तथा॥ चरितानां त्रयं स्मृत्वा विशेषो विनियोगकम्॥ प्रथमं चरितं प्रोक्तं मधुकैटभघातनम्॥ महिषासुरनिर्नाशं चरितं विद्धि मध्यमम्॥ चरितं चोत्तरं विद्धि निशुम्भादिवधाश्रितम्॥ चरितानि जपेत्त्रीणि सरहस्यान्यतन्द्रितः॥ चरितं मध्यमं चैषां जपेद्वा चण्डिकामयम्॥ तत्र कामश्चेत् शतमादौ शतं चान्ते जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम्॥ सकामः संपुटं जपेन्निष्कामः संपुटं विनेति॥अस्य श्रीनवाक्षरमन्त्रस्य हिरण्यगर्भवासुदेवरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः शेषाः शक्तयः परशिवलिङ्गं बीजम् अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि कार्यनिर्देशे जपे विनियोगः॥ अथ षडङ्गन्यासः॥ॐ ऐं चामुण्डायै विच्चे अंगु० हृद०॥ ॐ ह्रीं चामुण्डायै विच्चे तर्ज० शिर०॥ ॐ क्लीं चामुण्डायै विच्चे मध्य० शिखायै०॥ ॐ ऐं चामुण्डायै विच्चे अना० कवचा०॥ ॐ ह्रीं चामुण्डायै विच्चे कनि० नेत्र०॥ ओं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल० अस्त्रा०॥ एतद्विपरीतेन सृष्टिन्यासं विधाय॥ अथ तत्त्वन्यासः॥ॐ २ श्रीचण्डिकायै नमो हृदये॥ ॐ ३ मिथ्यातत्त्वव्यापिन्यै श्रीचण्डिकायै नमः शिरसि॥ॐ ४ सर्वतत्त्वव्यापिन्यै श्रीचण्डिकायै नमः सर्वाङ्गे इति तत्त्वन्यासः॥ ततो ध्यात्वा त्रिगुणा तामसी इत्यादिचतुर्दशश्लोकैर्महाकाल्यादिदेवतात्रयं ध्यात्वा॥ ततो जपः॥ एकाग्रमनाः संभाषणादि परि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

हरन् दिशोऽनवलोकयन् देवीं मनसा ध्यायन् ॥ संपूर्णवर्णस्वरोच्चारतत्पदमात्राविभक्तिविवेकज्ञानवान् पठेदिति ॥ तथा च ॐअस्य श्रीसप्तशतीमालामाहात्म्यस्य चरितत्रयाणां मार्कण्डेयमेधसत्यादयो ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः मध्ये नानाछन्दांसि अन्ते ऽनुष्टुप् छन्दः ॥ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः नन्दाशाकंभरीभीमाः शक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि ह्रूं इति शक्तिः ॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं स्वाहा इति बीजम् ॥ अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि श्रीचण्डिकाप्रीत्यर्थं कवचादि पूर्वकदेवीमाहात्म्यजपे विनियोगः ॥ अथ षडङ्गः ॥ ॐ ह्रां हृद० ॐ ह्रीं शिरसे० ॐ ह्रूं शिखा० ॐ ह्रैं कवचा० ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय० ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ॥ अयमेव करन्यासः अथ ध्यानम् ॥ प्रथमचरित्रेऽष्टादशभुजेत्यादि मध्यमचरित्रेऽष्टा दशभुजाम् उत्तमचरित्रेऽष्टभुजाम् एवं ध्यायञ्जपेद्व्रती रहस्योक्तां ध्यात्वा अनन्तरं जपारम्भः ॥ अथ नियमाः ॥ निराहारो यताहारो नक्तभोजी अधःशायी अविरोधी ब्रह्मचारीति यावत् ॥ ततः एवं गुणेत्यादि मम सकलकुटुम्बस्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं सकलदुरितो पशान्त्यर्थं शक्तित्रयप्रीत्यर्थं नवार्णमन्त्रजपपूर्वकसप्तशतीमालाया अमुकसंख्यया जपमहं वा ऋत्विग्द्वारा करिष्य इति संकल्प्य जप मारभेत ॥ नवचंडीसंकल्पे प्रतिपदमारभ्य नवमीपर्यन्तमेकोत्तरवृद्ध्या यथाकथंचिन्नित्यचंडीसंकल्पे अमुकसंख्याका एकोत्तरवृद्ध्या पञ्चचत्वारिंशद्रूपसंख्या वा यथाकथंचिच्छतचण्डीसंकल्पे प्रतिदिनं सकृद्रहस्यं कवचार्गलाकीलकं च ॥ सप्तशतीमालामन्त्रः प्रथमे ऽह्नि सकृत्सकृज्जपः द्वितीयेऽह्नि प्रत्येकंद्विरावृत्तिस्तृतीयेऽह्नि प्रत्येकं त्रिरावृत्तिश्चतुर्थेऽह्नि प्रत्येकं चतुरावृत्तिः सर्वं मिलित्वा रूपशतावृत्तिर्जपः कार्यः ॥ तथा च सहस्रचण्ड्यादिजपेऽप्येवम् ॥ सर्वं पृथक्पृथक् कृत्वा दिग्देवीपूजनादिकम् ॥ बहिर्भूतबलिं दत्त्वा कृत्वा देवीप्रदक्षिणाम् ॥ पूर्वस्मात्पूजनात्कुर्याद् द्विगुणं पूजनं क्रमात् ॥ आचार्यः सुस्थिरः शान्तश्चण्डिकायाः प्रतोषणम् ॥ सुकृते पूजने विप्रा जपेयुर्द्विगुणं जपम् ॥ द्विगुणं च प्रकर्तव्यं कुमारीद्विजतर्पणम् ॥ तृतीयेऽहनि कर्तव्यं त्रिगुणं च सजागरम् ॥ चतुर्थे दिवसे सर्वं सम्यगर्थं चतुर्गुणम् ॥ महाजागरणोपेतं होमः स्यात्पञ्चमेऽहनीति पूर्वादिक्रमयोगेन दिग्देवीभ्यो बलिं हरेत् ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

गन्धपुष्पाक्षताधूपदीपैश्चरुभिरुत्तमैः ॥ दध्यक्तं शालिभक्तं च माषमुद्गसमन्वितम् ॥ कादम्बरी गजारूढा पुनरुल्काऽजवाहिनी ॥ कराली महिषारूढा रक्ताक्षी प्रेतसंस्थिता ॥ श्वेतवक्त्रोरगारूढा हरिता मृगवाहिनी ॥ यक्षिणी सिंहपृष्ठस्था कङ्काली वृषवाहना ॥ हंसपृष्ठे सुरज्येष्ठा सर्पराड्यहिवाहिनी ॥ अनेन विधिना दत्त्वा दिग्देवीभ्यो बलिं जपी ॥ नवग्रहाँल्लोकपालान्दिक्पालांश्च प्रपूजयेत् ॥ कलशं सर्वरत्नाढ्यं हेमवस्त्रोदकान्वितम् ॥ संप्रतिष्ठाप्य संपूज्य चण्डिकार्चनमारभेत् ॥ पूर्वोक्तेन विधानेन गन्धपुष्पैरनुत्तमैः ॥ वस्त्रालंकारकस्तूरीसिन्दूरागरुकुङ्कुमैः ॥ धूपैर्बहुविधैर्दीपैर्नैवेद्यैर्वर्णसंख्यया ॥ कृत्वा च पूर्ववत्सर्वं जपेदेकाग्रमानसः ॥ सकृद्रहस्य संयुक्तं चण्डिकाचरितत्रयम् ॥ कुमारीं विप्रमुख्यांश्च भोजयेद्विधिपूर्वकम् ॥ यदाद्यदिवसे कुर्याच्चण्डिकापूजनादिकम् ॥ द्विगुणं तद् द्वितीयेऽह्नि त्रिगुणं तत्परेऽहनि ॥ नवमीतिथिपर्यन्तं कृत्वा पूजाजपादिकम् ॥ एकाहारं व्रती कुर्यात्सत्यादिनियमैर्युतः ॥ नव चण्ड्यादिकंकार्यमेवंविधि नरैरिति ॥ अथ बलिदानं प्रागादि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गजारूढे कादम्बरि एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचार सहितसदीपमाषभक्तबलिर्नमः १ ॥ ॐ भू० अजारूढे उल्के एह्येह्यागच्छागच्छ० २ ॥ ॐ भू० महिषारूढे करालि एह्ये ० ३ ॥ ॐ भू० प्रेतारूढे रक्ताक्षि एह्ये० ४ ॥ ॐ भू० उरगारूढे श्वेतवक्त्रे एह्ये० ५ ॥ ॐ भू० मृगारूढे हरिते एह्ये० ६ ॥ ॐ भू० सिंहारूढे यक्षिणि एह्ये० ७ ॥ ॐ भू० वृषारूढे कङ्कालि एह्ये० ८ ॥ ॐ भू० हंसारूढे सुरज्येष्ठे एह्ये० ९ ॥ ॐ अहिवाहिनि सर्प राज्ञि एह्ये० १० ॥ एवं दिग्देवीनां बलिदानम् ॥ अथ नवग्रहाणां बलिदानम् ॥ मध्ये वृत्तमण्डले सप्ताश्वरथारूढ ॐ भू० सूर्य एह्ये० १ ॥ आग्नेयकोणे चतुरस्रपीठे ॐ भू० मृगारूढ सोम एह्ये० २ ॥ दक्षिणे त्रिकोणे पीठे ॐ भू० मेषारूढ अङ्गारक एह्ये०३॥ ईशान्यकोणे बाणाकृतिपीठे ॐ भू० सिंहारूढ सौम्य एह्ये० ४ ॥ उत्तरे पट्टिशाकारपीठे ॐ भू० हयारूढ आङ्गिरस एह्ये० ५ ॥ प्राच्यां पञ्चकोणपीठे ॐ भू० श्वेताश्वारूढ भार्गव एह्ये० ६ ॥ पश्चिमे धनुराकारपीठे ॐ भू० गृध्रारूढ मन्द एह्ये ० ७ ॥ नैर्ऋत्यकोणे शूर्पाकारपीठे सिंहारूढ राहो एह्ये० ८ ॥ वायुकोणे ध्वजाकारपीठे केतो एह्ये० ९ ॥ ततः पञ्चलोकपालानां नैर्ऋत्ये

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

शूर्पाकृतिपीठे उन्दुरारूढ गणेश एह्येहि० १ ॥ पश्चिमे धनुराकृतिशनिपीठे सिंहारूढे दुर्गे एह्येहि० २ ॥ मध्ये वृत्ताकृतिपीठकेसरेषु कृष्णमृगसमारूढ वायो एह्येहि० ३ ॥ नैर्ऋत्ये शूर्पाकारराहुपीठे आकाश एह्येहि० ४ ॥ वायव्ये ध्वजाकृतिकेतुपीठे अश्विनीकुमारौ एतम् ०५ ॥ ततो दिक्पालानां प्रागादि ॥ ॐ भू० कौशिक गजारूढ इन्द्र एह्येहि० १ ॥ ॐ भू० मेषारूढ अग्ने एह्येहि० २ ॥ ॐ भू० महिषारूढ यम एह्येहि० ३ ॥ ॐ भू० कौशिकारूढ नैर्ऋते एह्येहि० ४ ॥ ॐ भू० मकरारूढ वरुण एह्येहि० ५ ॥ ॐ भू० मृगारूढ वायो एह्येहि० ६ ॥ ॐभू० दशाश्वसमारूढ कुबेर एह्येहि० ७ ॥ ॐभू० वृषारूढ ईश्वर एह्येहि०८ ॥ ॐभू०हंसारूढ ब्रह्मन् एह्येहि० ९ ॥ ॐभू० गरुडारूढ अनन्त एह्येहि० १० ॥ इति बलिदानं समाप्य ॥ ततः पूर्ववत्कलशं प्रतिष्ठाप्य ॥ तत्र कलशे वरुणं संपूज्य तेनोदकेन पूर्ववच्चण्डिकार्चनं कृत्वाऽष्टगन्धैः संपूज्य वासोऽलंकरणादिभिः पूजयेत् ॥ पूर्वं देवतास्त्रिमूर्तीरेकाकारा ध्यात्वा एकाग्रमना भूत्वा वक्ष्यमाणलक्षणोक्तजपं कुर्यात् ॥ कवचार्गलाकीलकं सकृज्जपित्वा ततः सप्तशतीमालास्तोत्रं त्रयोदशाध्यायात्मकं जपेत्संपुटीकरणं रहस्यत्रयेण कृत्वा एवमेकरूपकं भवति ॥ नवचण्डीप्रीत्यर्थमेवं प्रतिदिनमेकसंख्यापरिमितरूपकं कृत्वा सर्वं मिलित्वा नवरूपसंख्यां कृत्वा दशमरूपेण होमं कृत्वा शतमादौ शतं चान्ते नवार्णं कामनया जपित्वा ॥ एवं नवचण्डीविधाने ॥ नित्यचण्डीविधानेऽप्येवं नवदुर्गाविधानेऽप्येवं कालरात्रिविधानेऽप्येवम् ॥ अथ शतचण्ड्यादिविधाने रूपकप्रत्येकं कवचार्गलकीलकादि कृत्वा मध्ये चरितत्रयमालां कृत्वा रहस्यसहितां जपित्वा शतावृत्तिजपं कृत्वा तद्दशगुणितं सहस्रचण्ड्यादिविधानेऽप्येवम् ॥ शतमादौ शतं चान्ते जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम् ॥ सकामः संपुटं जपेन्निष्कामः संपुटं विनेति ॥ इति डामरादितन्त्रसारे भगवतीमहोत्सवे कामकलान्यासादिजपलक्षणविध्यन्तविधिर्नाम षष्ठावसरः ॥ ६ ॥ अथ यागभूमिं संशोध्य षोडशस्तम्भसहितं मण्डपं सवितानं चतुर्द्वारे तोरणवेष्टितं कृत्वा दिव्यवस्त्रपट्टदुकूलादीनि देवतागारं श्रीगिरिं कृत्वा कदलीस्तम्भविराजितं सुमनोहरं पुष्पमालोपशोभितं मण्डपं विधाय तन्मध्ये होमानुसारतः कुण्डं चतुरस्रं मेखलात्रययुतं योनिसहितं यथोक्तं कुर्यात् ॥ ततोऽन्यवेदिकां कुर्यात् ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तद्यथा ॥ ईशान्ये चण्डिकापीठं ग्रहपीठं तु पूर्वतः ॥ आग्नेय्यां मातृकापीठं हस्तमुच्चं समन्ततः ॥ नैर्ऋते वास्तुपीठं तु सर्वयज्ञेष्वयं विधिः ॥ कुण्डात्पश्चिमतः कार्या स्वस्तिवाचनवेदिका ॥ यथोक्तोच्छ्रायविस्तारवेदिकानामयं क्रमः ॥ ततो यजमानः सुस्नातः कलत्रपुत्रादियुतः शुचिः स्त्रियः वस्त्राभरणगन्धपुष्पैरलंकृत्य गलितस्वादुजलं कलशं संपूर्य ॥ तन्मुखे महाफलं प्रतिष्ठाप्य पाणिभ्यां गृहीत्वा मन्त्रवाद्यघोषेण कर्ताऽभीष्टदेवतां ध्यात्वा यागभूमिगत्य पश्चिमद्वारमण्डपं प्रविशेत् ॥ कलशं कुण्डात्पश्चिमे तन्दुलाष्टदलोपरि संस्थाप्य एवं गन्धादिभिः शान्तिकलशं संपूज्य तत्र देवतां विन्यसेत् ॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ ॐ सं सरस्वत्यै नमः ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय नमः ॥ एवं पञ्चदेवताः संपूज्य स्थिरासनं संभाव्य ॥ इति शान्तिकलशप्रतिष्ठापूजनम् ॥ ततः पूर्वोक्तासने कर्मभूमावुपविश्य पूर्वोक्तप्रकारेण गणेशादीन् नमस्कृत्य तत्त्वत्रयेणाचम्य मूलेन प्राणानायम्य प्राणायामत्रयं विधाय समयस्मरणं विधाय देशकालौ संकीर्त्य अस्मिन् पुण्याहे श्रीमहाकाल्यादिदेवतात्रयप्रीतये मया अमुककामनया ब्राह्मणद्वारा कृतजपदशांशेन क्रियमाणामुकचण्डीयागसिद्धये होममहं करिष्य इत्यक्षतोदकेन संकल्प्य तदङ्गभूतमादौ गणेशपूजनं भूमिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं ब्राह्मणप्रार्थनापूर्वकं करिष्ये ॥ तत्रादौ ब्राह्मणप्रार्थना ॥ ब्राह्मणाः सन्तु मे शस्ताः पापात्पान्तु समाहिताः ॥ देवानां चैव दातारस्त्रातारः सर्वदेहिनाम् ॥ इति संप्रार्थ्य ततः गणेशपूजनादि क्रमेण कुर्यात् ॥ पूर्वोक्तैवं गुण० प्रारिप्सितकर्मणोङ्गऽभूतां मण्डपशुद्धिं कुण्डशुद्धिं च करिष्ये ॥ ततः स्थापितकलशोदकमन्यपात्रे गृहीत्वा औदुम्बरशमीदूर्वासहितजलेन भूमिं त्रिवारं प्रोक्ष्य ॥ तत्र मन्त्रः ॥ यदत्र० १ अपक्रामन्तु० २ ॥ तथा तेनोदकेन मण्डपं प्रोक्ष्य आपो हिष्ठेति तिसृभिः शन्न इन्द्राग्नी इति मन्त्रेण ततो गौरसर्षपैः सर्वतो मण्डपान्तः विकिरेत् ॥ रक्षोहणं वलगहनमित्यादिना तथा प्राच्यां रक्ष० सौम्यानि यानि० सर्वत इत्यनेन दिग्बन्धनं कुर्यात् ॥ ततः पञ्चगव्यमन्त्रैः पञ्चगव्येन मण्डपं प्रोक्ष्य ॥ अथ कुण्डं प्रार्थ्य ॥ हे कुण्ड तव निर्माणं यथामति मया कृतम् ॥ कृपया भव संपूर्णं कुरु सिद्धिं नमो

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ऽस्तु ते ॥ ततः कृताञ्जलिः स्वस्ति नः इति मन्त्रं जपेत् ॥ कुण्डं गन्धादिना संपूज्य ततः कुण्डमेखलासु महाकाल्यदिदेवतात्रयं संचिन्त्य संभाव्य संपूज्य ॥ कुंकुमाक्षतपुष्पैर्मण्डपदेवताः संपूज्य ॥ यथा मण्डपेषु ॥ ॐ रत्नमण्डपाय० दक्षिणवामशाखायाम् ॥ ॐ द्वारश्रियै० गं गणपतये० मण्डपोपरि ॥ ॐ तत्त्वमण्डपाय० देहल्याम् ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय० मण्डपान्तः ॐ ब्रह्मणे० इति संपूज्य ॥ अथ दध्योदनमाषभक्तसहितसदीपपात्राण्यादाय गन्धादिपात्रं जलपात्रं च गृहीत्वा मण्डपाद्बहिर्बलिदानं कुर्यात्॥ यथा च ॥ मण्डपस्य चतुर्दिक्षु दद्याद्भूतबलिं बहिः ॥ बलिं गृह्णन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा ॥ मरुतश्चाश्विनौ देवाः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ द्वौ द्वौ प्रागादि संपूज्य मम यज्ञसुखावहाः ॥ याम्योत्तरविभागेषु चतुर्द्वारैः पृथक् पृथक् एतत्स्पष्टतरम् ॥ तत्र भूमौ कुशानास्तीर्य बलिं दत्त्वा ॐ देवेभ्यो नमःगन्धाद्युपचारसहितसदीपदध्योदन एतन्माषभक्तबलिर्नमः १ आदित्येभ्यो० २ इति प्राग्द्वारे दक्षिणवामशाखयोः ॥ अथ याम्यद्वारे दक्षि० ॥ ॐ वसुभ्यो० ३ ॥ ॐ मरुद्भ्यो० ४ ॥ ततः पश्चिमद्वारे दक्षि० ॥ ॐ अश्विभ्यां देवाभ्यां० ५ ॥ ॐ सुपर्णेभ्यो० ६ ॥ तत उत्तरद्वारे दक्षि० ॥ ॐ पन्नगेभ्यो० ७ ॥ ॐ ग्रहेभ्यो० ८ ॥ एवं चतुर्दिक्षु क्षेत्रबलिः ॥ तथा च पूर्वोक्तवद्दिग्देवीनां बलिदानं ग्रहाणां लोकपालानां दिक्पालानां यथाक्रमेण पूर्वोक्तवत्कुर्यात् ॥ तत आचम्य प्राणानायम्य वास्तुपीठसमीपे गत्वा वास्तुमण्डले वास्तुमूर्तिं प्रतिष्ठाप्य संपूज्य तत्र यथोक्त बलिदानं कृत्वा समाप्य ॥ अथानन्तरं साचार्यब्रह्मर्त्विक् सपवित्रकरो यजमानः सपत्नीकः ब्रह्मादीनां प्रार्थनां कुर्यात् यथा ॥ ॐ उत्तिष्ठन्तु महाभागा अर्चिताः प्रार्थिता मया ॥ ऋद्ध्यर्थं कर्मणस्त्वस्य कुरुध्वं मण्डपं शुभम् ॥ इति संप्रार्थ्य मण्डपप्रतिष्ठां समारभेत ॥ पूर्वोक्तव गुणेति० ॥ श्रीमहाकाल्यादिदेवतात्रयप्रीत्यर्थम् अमुकचण्डीमहोत्सवसिद्ध्यर्थं षोडश स्तम्भप्रतिष्ठां तोरणप्रतिष्ठां ध्वजं पताकां प्रतिष्ठाप्य चतुर्दिक्षु द्वारपालकसहितकलशसुप्रतिष्ठा अत्र प्रतिष्ठितदेवतानां पूजनं बलिदानं च करिष्य इत्यक्षतोदकेन संकल्प्य ॥ ईशानस्तम्भे० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः प्रथमस्तम्भे ब्रह्मन्निहागच्छ प्रतिष्ठितो भव ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तत्राधिदेवताः संपूज्य सावित्र्यै नमः ॥ वास्तुपुरुषाय नमः ॥ ब्राह्म्यै० ॥ स्तम्भशिरसि नागमात्रे नमः ब्रह्मणस्पते त्वमस्येति गृत्समद ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः ब्रह्मा देवता पूजने विनियोगः ॥ ब्रह्मणस्पते त्वमस्य० मन्त्रः ॐ ब्रह्मणे वेदाधिपतये पद्महस्ताय हंसासनसमारूढाय साङ्गाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः ब्रह्मा प्रीयतां ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ १ ॥ अथ आग्नेयस्तम्भे ॥ ॐ भू० द्वितीयस्तम्भे ॥ विष्णो इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव ॥ तत्राधिदेवताः संपूज्य ॥ लक्ष्म्यै० ॥ आदित्यनन्दायै० ॥ वैष्णव्यै० ॥ स्तम्भशिरसि नागमात्रे० ॥ इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दः विष्णुर्देवता पूजने विनियोगः ॥ इदं विष्णु० ॥ मन्त्रः ॥ ॐ विष्णवे यज्ञाधिपतये चक्रहस्ताय गरुडासनसमारूढाय सांगाय० विष्णुः प्री० विष्णुः सुप्रीतो भव० ॥ २ ॥ अथ नैर्ऋतस्तम्भे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तृतीयस्तम्भे रुद्र इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव ॥ तत्राधिदेवताः संपूज्य ॥ गौर्यै० ॥ शोभनायै० ॥ माहेश्वर्यै० ॥ स्तम्भशिरसि नागमात्रे० ॥ परिणो रुद्रस्येति गृत्समद ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता पूजने वि० परि णो रुद्रस्य हेतिः० मन्त्रः ॥ ॐ रुद्राय विद्याधिपतये त्रिशूलहस्ताय वृषकन्ध समारूढाय सांगाय० रुद्रः प्रीय० रुद्रः सुप्रीतो० ॥ ३ ॥ ततो वायव्यस्तम्भे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चतुर्थस्तम्भे इन्द्र इहागच्छ प्र० तत्राधिदेवताः संपूज्य इन्द्राण्यै० आनन्दायै० विभूत्यै० स्तम्भशिरसि० नागमात्रे० इन्द्र आसां नेतेति अप्रतिरथ ऋषिःत्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता पूजने वि० ॥ इन्द्र आसाम्० मन्त्रः ॥ ॐ इन्द्राय सुराधिपतये वज्रहस्ताय ऐरावतसमारूढाय सांगाय० इन्द्रः प्री० इन्द्रः सुप्री० ॥ ४ ॥ पुनस्तद्बहिरीशानकोणे ॥ ॐ भुंवः स्वः पञ्चमस्तम्भे सूर्य इहागच्छ प्र० तत्राधिदेवताः संपूज्य ॥ सौर्यै ॥ भूत्यै० सावित्र्यै० मंगलायै० ॥ स्तम्भशिरसि नागमात्रे० चित्रं देवानामिति कुत्सांगिरस ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता पूजने वि० ॥ चित्रं देवानामु० मन्त्रः ॐ सूर्याय ग्रहाधिपतये पद्महस्ताय अश्वगृष्टिसमधिरूढाय सांगाय० सूर्यः प्री० सूर्यः सुप्रीतो० ॥ ५ ॥ तत ईशप्राच्यन्तराले ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः षष्ठस्तम्भे गणपते इहागच्छ प्र० तत्राधिदेवताः संपूज्य सिद्ध्यै० बुद्ध्यै०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

विघ्नहारिण्यै० जयायै० स्तम्भशिरसि नागमात्रे० गणानां त्वेति गृत्समद ऋषिः गायत्री छन्दः गणपतिर्देवता पूजने वि० ॥ ॐ गणानां त्वा० मन्त्रः ॥ गणपतये अङ्कुशहस्ताय चतुर्दशविद्याप्रदायकाय विघ्नहराय मूषकसमधिरूढाय सांगाय० गणपतिः प्री० गणपतिः सुप्रीतो० ॥ ६ ॥ ततः पूर्वाग्नेयान्तराले ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तमस्तम्भे धर्मराज इहागच्छ प्र० तत्राधिदेवताःसंपूज्य धर्म राज्यै० प्राक्सन्ध्यायै० अञ्जनायै० क्रूरायै० स्तम्भशिरसि नागमात्रे० ॥ यमाय त्वेति प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री छन्दः यमो देवता पूजने वि० ॥ यमाय त्वा० मन्त्रः ॥ ॐ धर्मराजाय प्रेताधिपतये दण्डहस्ताय महिषस्कन्धसमधिरूढाय सांगाय० धर्मराजः प्री० धर्मराजः सुप्रीतो भव ॥ ७ ॥ अथाग्नेय कोणे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टमस्तम्भे नागराज इहागच्छ प्र० ॥ तत्राधिदेवताःसंपूज्यमध्यम सन्ध्यायै० पद्मिन्यै महापद्मिन्यै० अंगनायै० स्तम्भशिरसि नागमात्रे० नमोऽस्तु सर्पेभ्य इति प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप्छन्दःनाग राजो देवता पूजने वि० नमोऽस्तु सर्पेभ्यः० मन्त्रः ॥ नागाधिपतयेनागकन्यासमन्विताय धरापृष्ठसमधिरूढाय सांगाय० नागराजः प्री० नागराजः सुप्रीतो०॥ ८ ॥ ततः आग्नेययाम्यान्तराले ॥ ॐ भू० नवमस्तम्भे स्कन्द इहागच्छ प्र० तत्राधिदेवताः संपूज्य स्कन्दप्रियायै० पश्चिमसन्ध्यायै० स्तम्भशिरसि नागमात्रे० यदक्रन्देति भार्गव ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः स्कन्दो देवता पूजने विनियोगः ॥ यदक्रन्दः० मन्त्रः ॥ ॐ स्कन्दाय सेनाधिपतये शक्तिहस्ताय मयूरसमाधिरूढाय साङ्गाय० स्कन्दः प्री० स्कन्दः सुप्रीतो० ॥ ९ ॥ ततो याम्यनैर्ऋत्यान्तराले ॥ ॐ भू० दशमस्तम्भे वायो इहागच्छ प्र० तत्राधिदेवताः संपूज्य ॥ वायुप्रियायै० वायव्यै० कौमार्यै० स्तम्भशिरसि नागमात्रे० वायो ये ते इति गृत्समद ऋषिः गायत्री छन्दः वायुर्देवता पूजने विनियोगः॥ वायो ये ते० मन्त्रः ॥ ॐ वायवे प्राणाधिपतये ध्वजहस्ताय मृगपृष्ठसमाधिरूढाय साङ्गाय० वायुः प्री० वायुः सुप्रीतो० ॥ १० ॥ ततो नैर्ऋत्यकोणे ॥ ॐ भू० एकादशस्तम्भे सोम इहागच्छ प्र० तत्राधिदेवताः संपूज्य सोमप्रियायै० सौम्यै० अमृतकलायै० विज यायै० स्तम्भशिरसि नागमात्रे० वयँ सोमेति बन्धुर्ऋषिः गायत्री छन्दः सोमो देवता पूजने वि० वयँ सोम० मन्त्रः ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये गदाहस्ताय मृगवाहनाय साङ्गाय० सोमः प्री० सोमः सुप्री० ॥ ११ ॥ ततो निर्ऋतिवरुणान्तराले ॐ भूः द्वादशस्तम्भे वरुण इहागच्छ प्र० ॥ तत्राधिदेवताः संपूज्य ॥ वरुणप्रियायै० वारुण्यै० बृहस्पत्यै० स्तम्भशिरसि नाग मात्रे० ॥ तत्त्वा यामीति शुनःशेप ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः वरुणो देवता पूजने विनियोगः ॥ तत्त्वा यामि० मन्त्रः ॥ ॐ वरुणाय जलाधिपतये पाशहस्ताय मकरवाहनसमधिरूढाय साङ्गाय० वरुणः प्री० वरुणः सुप्रीतो० ॥ १२ ॥ ततः पश्चिमवायव्यान्तराले ॥ ॐ भू० त्रयोदशस्तम्भे वसवः इहागच्छत प्र० तत्राधिदेवताः संपूज्य सिध्यमृकायै० विततायै० विभूत्यै० स्तम्भशिरसि नागमात्रे नमः ॥ निवेशन इत्यग्निर्ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः वसवो देवताः पूजने विनियोगः ॥ निवेशनः संगमनो० मन्त्रः ॐ वसुभ्यः उत्कृष्ट पराक्रमेभ्यः अष्टसिद्धयधिपतिभ्यः शरहस्तेभ्यः साङ्गेभ्यः साभरणेभ्यः सशक्तिभ्यः एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनयुक्तमाष भक्तबलिर्नमः वसवः प्रीयन्तां वसवः प्रीता वरदा भवन्तु ॥१३॥ ततो वायुकोणे ॥ ॐ भू० चतुर्दशस्तम्भे बलदेव इहागच्छ प्र० तत्राधिदेवताः संपूज्य तत्प्रियायै० आदित्यै० लघिम्न्यै नमः सिनीवाल्यै० स्तम्भशिरसि नागमात्रे नमः॥बण्महामिति जमदग्निर्ऋषिः बृहती छन्दः बलदेवो दे० पूजने वि० ॥ बण्महाँऽअसि० मन्त्रः ॥ बलदेवाय रेवत्यधिपतये लाङ्गलहस्ताय रत्नाङ्कितरथयुक्ताश्व समधिरूढाय सांगाय० बलदेवः प्री० बलदेव सुप्री० ॥१४॥ ततः वायव्योदीच्यन्तराले ॥ ॐ भू० पञ्चदशस्तम्भे बृहस्पते इहागच्छ प्र० तत्राधिदेवताः संपूज्य पौर्णमास्यै० सावित्र्यै० स्तम्भशिरसि नागमात्रे० बृहस्पत इति गृत्समद ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः बृहस्पतिर्देवता पूजने विनियोगः ॥ ॐ बृहस्पतेऽअति० मन्त्रः ॥ ॐ बृहस्पतये सर्वदेवेन्द्राधिपतये पुस्तकस्रुक्स्रुवहस्ताय हंसपृष्ठसमधिरूढाय साङ्गाय० बृहस्पतिः प्रीय०बृहस्पतिः सुप्रीतो० ॥१५॥अथोदगीशान्यन्तराले ॥ ॐ भू० षोडशस्तम्भे विश्वकर्मन्निहागच्छ प्र० तत्राधि देवताः संपूज्य गायत्र्यै० वास्तव्यै० स्तम्भशिरसि नागमात्रे नमः ॥ विश्वकर्मन्हविषेति विश्वकर्मा भौवन ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः विश्व कर्मा देवता पूजने वि० ॥ ॐ विश्वकर्मन्हविषा० मन्त्रः ॥ ॐ विश्वकर्मणे विश्वाधिपतये दण्डहस्ताय साङ्गाय० विश्वकर्मा प्री०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

विश्वकर्मा सुप्री० ॥ १६ ॥ इति स्तम्भप्रतिष्ठा ॥ अथ तोरणध्वजपताकाप्रतिष्ठापूजाबलिदानम् ॥ पूर्वद्वारे ॥ सुदृढतोरणं पूर्वे न्यग्रोधं काञ्चनप्रभम् ॥ रक्षार्थं चैव बध्नीयाच्चण्डीपूजाख्यकर्मणि ॥ ॐ अग्निमीले पुरोहितमिति मन्त्रं जपेत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वद्वारे सुदृढप्रीतये इमं न्यग्रोधतोरणं चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः सुदृढः प्री० सुदृढः सुप्री० ॥ १ ॥ तत्रैव दक्षिणवामशाखयोर्ध्वजपताका उच्छ्रयामि स्थापयामि नमः ॥ धनुः प्रभापताकां च सिन्दूरारुणभं ध्वजम् ॥ स्थापयामि महेन्द्राय शक्तियुक्ताय वज्रिणे ॥ आशुः शिशान इति मन्त्रद्वयेन ध्वजपताकयोर्महेन्द्र इहागच्छ प्र० ॥ ॐ भू० महेन्द्राय ऐरावतसहिताय इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्न ममेदं महेन्द्रः प्री० महेन्द्रः सुप्री० ॥ २ ॥ तत्र देवताः सं० पूर्वद्वारपार्श्वे ॥ ॐ कादम्बर्यै गजारूढायै वज्रहस्तायै एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्य २ मम ईप्सितं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ३ ॥ तत्र द्वारदक्षिणांसे ॐ ब्राह्मि इहागच्छ प्र० दण्डं कमण्डलुं पश्चादक्षसूत्रमथाभयाम् ॥ बिभ्रतीं कनकच्छायां ब्राह्मीं बालां च कृष्णभाम् ॥ ह्रीं ऐं ब्राह्मि एह्येह्यागच्छागच्छ वामे शूलं परश्वधं क्षुद्रदुन्दुभिनृकरोटीनावहन्तीं हेमसङ्काशां ध्यायन्निमं क्षीरान्नबलिं गृह्य २ मम ईप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ ४ ॥ तत्र द्वारवामांसे माहेश्वरि शुभा इहागच्छ प्र० ह्रीं ऐं माहेश्वरि एह्येह्यागच्छागच्छ ॥ ततः पूर्वद्वारे कलशद्वयं संस्थाप्य मही द्यौरित्यादि सरत्नप्रक्षेपगतं पूजयेत् ॥ कलशद्वये गङ्गायै० यमुनायै० ॥ ॐ अग्निमीले तत्र ऋग्वेदिनौ ऋत्विजौ पूर्वद्वारे शान्तिसूक्तजपार्थं युवामहं वृणे ॥ ऋग्वेदः । पद्मपत्राक्ष० गन्धाद्युपचारसहितम् एहि इमं क्षीरान्नबलिं गृह्य२ मम ईप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ ५ ॥ तत्रैव पुनर्दक्षिणांसे आवाहयाम्यहं धात्रे निधीनां पतये प्रभो ॥ इहागत्य बलिं गृह्य यज्ञविघ्नं निवारय ॥ ॐ भू० धात्रे एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्य २ मम ईप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥६॥ तत उत्तरांसे ॥ विकृतिः प्रकृतिर्यस्य विधाता विश्वकृत्प्रभो ॥ स मे भवतु सुप्रीतो यज्ञविघ्नं निवारय ॥ ॐ भू० विधात्रे एह्येह्या० ॥ ७ ॥ तत्र द्वारस्य पुनर्दक्षिणभागे ॥ वेदीमध्ये ललितकमले कर्णिकायान्तरस्थः सप्ताश्वोऽर्कोऽरुणरुचिरवपुः सप्तरज्जुर्द्विबाहुः । गोत्रे मे

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ऽस्मिन् बहुविधगुणः काश्यपाख्ये प्रसूतः कालिङ्गाख्याविषयजनितः प्राङ्मुखः पद्महस्तः ॥ ॐ भू० सूर्य अधिदेवताप्रत्यधि देवतासहित एह्येह्यि० ॥ ८ ॥ तत्र द्वारस्य वामभागे शुक्रं यजेत् ॥ प्राच्यां भृगुर्भोजकटे प्रजातः सभार्गवः पूर्वमुखः सिताभः ॥ सपञ्चकोणे सरथाधिरूढो दण्डाक्षमालावरदाङ्कपत्रः ॥ ॐ भू० शुक्र अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येहि० ॥९॥ तन्त्रद्वारतः देवताद्वयं यजेत् ॥ तत्र दक्षिणभागे ॥ पानपात्रं च खड्गं च अक्षमालां कमण्डलुम् ॥ त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम् ॥ ॐ भू० दिगम्बर एह्येह्यि० ॥ १० ॥ ततः उत्तरभागे ॥ ब्रह्माणीशक्तिसंयुक्तं हंसवाहनभूषितम् ॥ श्वेतवर्णमहं वन्दे असिताङ्गं च भैरवम् ॥ ॐ भू० असिताङ्गभैरव एह्येह्यि० ॥ ११ ॥ तत्र गन्धपुष्पाक्षतैश्चिच्छक्त्यादिदेवताः संपूज्य यथा ॥ ॐ चिच्छक्त्यै० ॐ मायाशक्त्यै० द्वारपार्श्वे ॥ ॐशङ्खनिधये० द्वारपुरतः ॥ ॐपद्मनिधये० ऊर्ध्वे ॥ ॐ श्रियै० अधो देहल्याम् ॥ ॐ वास्तुपुरु षाय० इति देवताः संपूज्याभिवन्द्य ॥ इति पूर्वद्वारे बलिदानम् ॥ अथाग्नेयकोणेषु ॥ प्राणानायम्य उं उलके अजारूढे शक्तिहस्ते एह्येहीत्यादि ॥ रक्तां पताकामाग्नेये ध्वजं चैवाग्निसन्निभम् ॥ स्वाहायुक्ताय देवाय स्थापयामि हविर्भुजे ॥ त्वन्नोऽअग्ने इति रक्तां पताकां रक्तध्वजं च पञ्चहस्तदण्डे उच्छ्रयेत् ॥ ततः त्वन्नोऽअग्ने इति मन्त्रेणाग्निं गन्धादिभिः संपूज्य पुण्डरीकं दिग्गजं लक्ष्मीगजमावाह्य ॥ ॐ भू० अग्नये पुण्डरीकदिग्गजसहिताय अयं गन्धाद्युपचारसहितः क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः अग्निः प्रीयताम् ॥ अग्निः सु० तु ॥ आग्नेये ॥ अनादिपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः ॥ धूमकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ रुरुभैरवाय अयं गन्धाद्युपचारसहितः क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः भैरवः प्रीयतां भैरवः सुप्रीतो० तु ॥ प्रत्यङ्मुखचतुरस्र पीठे यमुनातीरोद्भवमात्रेयगोत्रं सोममधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितमाप्यायस्वेति मन्त्रेण पूजयेत् ॥ अनादिपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयो हि सः ॥ धूमकेतुरनाध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ त्वन्नो अग्ने इत्यग्निमावाह्य ॥ रं अग्नये एह्येहीत्यादि ॥ परश्वधायुधधर्तारं खड्गपात्रधरं तथा ॥ त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम् ॥ माहेशीशक्तिसंयुक्तं वृषवाहनभूषितम् ॥ शुद्धस्फटिकसङ्काशं वन्देऽहं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

रुरुभैरवम् ॥ ततः दक्षिणद्वारे ॥ औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम् ॥ रक्षार्थं चैव बध्नामि चण्डीपूजाख्यकर्मणि ॥ इषे त्वेति मन्त्रेण ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षिणद्वारे विकटप्रीतये अयम् औदुम्बरतोरणचन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्त बलिर्नमः विकटः प्रीयतां विकटः सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ तत्रैव दक्षिणवामशाखयोः ध्वजपताका उच्छ्रयामि स्थापयामि नमः॥ धूम्र वर्णपताकां च कृष्णवर्णध्वजं तथा ॥ यमाय स्थापयामीति निहन्त्रे कर्मसाक्षिणे ॥ स इषुहस्तैः० ॥ आयं गौरिति मन्त्रेण भूर्भुव० यमाय वामनदिग्गजसहिताय अयं गन्धाद्युपचारसहितः क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः यमः प्रीयतां० यमः सु० ॥ तत्र देवताः सं० दक्षिणद्वारपार्श्वे ॥ ॐ कं करालि महिषारूढे दण्डहस्ते एह्येहि इमं गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण २ मम ईप्सितं कुरु२ स्वाहा ॥ तत्र द्वारदक्षिणांसे ॥ ॐ अङ्कुशं दण्डखट्वाङ्गौ पाशं च दधतीं करैः ॥ ध्येयां बन्धूकसङ्काशां कौमारीं कामदायिनीम् ॥ ॐ ह्रीं क्लीं कौमारि एह्येहि इमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण २ मम ईप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ तत्र द्वारवामांसे ॥ ॐ ह्रीं श्रीं वैष्णवि एहि २ गन्धाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण २ मम ईप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ पूर्ववत् कलशावावाह्य स्थाप येत् ॥ द्वारस्थितकलशद्वये गोदायै नमः कृष्णायै० ॥ ततो यजुर्वेदिनौ ऋत्विजौ शान्तिसूक्तजपार्थत्वेन युवामहं वृणे ॥ इषे त्वोर्जे त्वेति गन्धादिभिः उपचारैः प्रपूजयेत् ॥ याम्ये गदाशक्तिगदांश्च शूरो वरप्रदो याम्यमुखोऽतिरक्तः ॥ कुजोऽस्त्यवन्तीविषये त्रिकोणे तस्मिन् भरद्वाजकुले प्रसूतः ॥ ततः दक्षिणे त्रिकोणे त्र्यङ्गुलमण्डले दक्षिणमुखं भौमं गन्धपुष्पाक्षतैः अग्निर्मूर्धा विरूपोऽङ्गारको गायत्री अङ्गारकावाहने वि० ॥ ॐ अग्निमूर्धा० मन्त्रः ॥ ॐ भू० अवन्तिसमुद्भवं भारद्वाजगोत्रं भौमं प्रपूजयेत्॥ धनुर्बाणधरं देवं खड्गपात्रधरं तथा ॥ त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम् ॥ दिगम्बर एह्येहि० ॥ कौमारीशक्तिसंयुक्तं शिखि वाहनभूषितम् ॥ गौरवर्णधरं देवं वन्दे श्रीचण्डभैरवम् चण्डभैरव एह्येहि० ॥ ततः गन्धपुष्पाक्षतैः चिच्छक्त्यादिदेवताः संपूज्य ॥ तद्यथा ॥ ॐ चिच्छक्त्यै० ॐ मायाशक्त्यै० द्वारपार्श्वे ॥ ॐ शङ्खनिधये० द्वारपुरतः ॥ ॐ पद्मनिधये० ऊर्ध्वे ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ श्रियै० अधोदेहल्यै० ॐ वास्तुपुरुषाय० ॥ इति देवताः संपूज्याभिवन्द्य ॥ इति दक्षिणद्वारे बलिदानम् ॥ ततः नैर्ऋतीं दिश मागत्य प्राणानायम्य संक० रक्ताक्षि प्रेतारूढे खड्गहस्ते एह्येहि० ॥ पताकां निर्ऋतीशाय कृष्णनीलमयं ध्वजम् ॥ स्थापयामि सदा रक्षोगणाधीशाय चैव हि ॥ ॐ बृहस्पते परि दीं० मन्त्रः ॥ ॐ असुन्वन्तेति निर्ऋतिप्रीत्यर्थं कृष्णनीलध्वजपताकाः स्थाप यामि ॥ तत्र कुमुदं दिग्गजं पुण्डरीकं लक्ष्मीगजमावाह्य ॥ पैठीनसो बर्बरदेशजातः शूर्पासने सिंहगमः सुधूम्रः ॥ याम्याननो रक्ष गणस्तु मह्यं वरप्रदः शूलसचर्मखड्गः ॥ पुष्पाक्षतैः कया नो वामदेवो राहुर्गायत्री गह्वावाहने विनियोगः ॥ ॐ कया नः० मन्त्रः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठीनसगोत्र राहो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येहि इमं क्षीरान्नसहितबलिं० नमः राहुः प्रीयतां राहो सु० ॥ शङ्खचक्रधरं देवं पानपात्रगदाधरम् ॥ त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम् ॥ कुमार दिगम्बर एह्येहि० ॥ वैष्णवीशक्ति संयुक्तं गरुडासनभूषितम् ॥ नीलवर्णधरं देवं वन्दे श्रीक्रोधभैरवम् ॥ क्रोधभैरव एह्येहि ॥ भैरवः प्रीयतां भैरवःसु०॥ततः पश्चिमद्वारे ॥ अश्वत्थं पश्चिमे भीमे तोरणं रत्नसन्निभम् ॥ रक्षार्थं चैव बध्नामि चण्डीपूजाख्यकर्मणि ॥ अग्न आयाहि० मन्त्रं जपेत् ॥ ॐ भू० पश्चिम द्वारे भीमप्रीतये अयमश्वत्थतोरणचन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः भीमः प्रीयतां भीमः सु० ॥ तत्रैव दक्षिण वामशाखयोर्ध्वजपताका उच्छ्र्यामि स्थापयामि नमः । श्वेतवर्णपताकां च ध्वजं पीतमयं तथा ॥ वरुणाय जलेशाय स्थापयामि शुभाय मे ॥ बलविज्ञायः०॥ इमं मे वरुण० ॥ वरुणाय श्वेतवर्णां पताकां पीतमयध्वजं च० वरुणः प्रीयताम् ॥ वरुणः सुप्रीतो भवतु ॥ तत्र देवताः संपूज्य ॥ पश्चिमद्वारे ॥ कौबेरि श्वेतश्वारूढे पाशहस्ते एह्येहि इमं गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्य २ मम ईप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ तत्र द्वारदक्षिणांसे ॥ ॐ मुसलं करवालं च खेटकं दधती हलम् ॥ करैश्चतुर्भिर्वाराही ध्येया कालघनच्छविः ॥ ह्रीं हूं वाराहि एह्येहि इमं क्षीरान्नबलिं गृह्य २ मम ईप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ पूर्ववत्कलशमावाह्य स्थापयेत् ॥ द्वारस्थितकलशद्वये रेवायै नमः ॥ ताप्यै नमः ॥ ततः सामवेदिनौ ऋत्विजौ शान्तिसूक्तजपार्थत्वेन युवामहं वृणे ॥ सामवेदस्तु

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पिङ्गाक्षो जागतः शक्रदैवतः ॥ भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥ गन्धाद्युपचारैः पूजयेत् ॥ तत्र अञ्जनं दिग्गजमावाह्य ॥ चापासनो गृध्रमयः सुनीलः प्रत्यङ्मुखः काश्यपजः प्रतीच्याम् ॥ समूलचापेषुवरप्रदश्च सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च सौरी ॥ ॐ शं नो देवी० मन्त्रेण ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र शनैश्चरेहागच्छेत्यावाह्य पूजयेत् ॥ शनैश्चराय अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित क्षी० ॥ नमः शनैश्चरः प्रीयताम् शनैः० सु० ॥ वरुणो धवलो विष्णुः पुरुषो निर्मलो नभः ॥ पाशहस्तो महाभीमस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ॐ तत्त्वा यामीति मन्त्रेण० ॥ वरुण एह्येहि० ॥ खट्वाङ्गं मुसलं चैव करवालं च पात्रकम् ॥ त्रिनेत्रं वरदं भीमं कुमारं च दिगम्बरम् ॥ कुमार दिगम्बर एह्येहि० ॥ हेमवर्णधरं देवं तथा महिषवाहनम् ॥ वाराहीशक्तिसंयुक्तं वन्दे उन्मत्तभैरवम् ॥ उन्मत्तभैरव एह्ये० ॥ ततश्चिच्छक्त्यादिदेवताः संपूज्य ॥ तद्यथा ॥ ॐ चिच्छक्त्यै० ॥ ॐ मायाशक्त्यै० ॥ द्वारपार्श्वे ॥ ॐ शङ्खनिधये० ॥ द्वारपुरतः ॥ ॐ पद्मनिधये० ॥ ऊर्ध्वे ॥ ॐ श्रियै० ॥ अधोदेहल्यां वास्तुपुरुषाय० ॥ इति देवताः संपूज्याभिवन्द्य ॥ इति पश्चिमद्वारे बलिदानम् ॥ अथ वायव्ये ॥ हं हरितमृगवाहिनि अङ्कुशहस्ते एह्येहि० ॥ पताकां वायवे श्वेतां ध्वजं पीतमयं तथा ॥ स्थापयाम्यनुचक्षुर्द्र्प्राणदाय सदैव हि ॥ ॐ गोमदूषुणा० ॥ आनो नियुद्भिः० ॥ वायुप्रीत्यर्थं श्वेतां पताकां पीतं ध्वजं स्थापयामि ॥ वायवे अयं गन्धाद्युपचारसहितसघृतक्षीरान्नसहितमाषभक्तबलिर्नमः वायुः प्रीयतां वायुः सु० ॥ तत्र पुष्पदन्तदिग्गजं लक्ष्मीसहितमावाह्य ॥ ध्वजासनो जैमिनिगोत्रजातोऽन्तर्वेद्यधीशोऽथ विचित्रवर्णः ॥ याम्ये गतो वायुदिशीन्द्रखड्गश्चर्मं सुरा चाष्टशतोऽन्धनेकः ॥ केतुं कृण्वन्निति मन्त्रेण भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिसगोत्र केतो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्ये० ॥ इमं० नमः केतुः प्रीयताम् केतुः सु० ॥ वायुमाकाशगं चैव पवनं वेगवद्गतिम् ॥ आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ तव वायवृतस्पते० वायवे इमं० नमः वायुः प्रीयतां वायुः सु० ॥ *कुमार दिगम्बर एह्येहि० कपालभैरव एह्येहि० इमं ग० नमः ॥ ततः* उत्तरद्वारे आचम्य प्राणा० सुप्रभं तोरणं प्लाक्षमुत्तरे च शशि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

प्रभम् ॥ रक्षार्थं चैव बध्नामि चण्डीपूजाख्यकर्मणि ॥ ॐ शन्नो देवीति मन्त्रेण पूजयेत् ॥ ॐ भूः सुप्रभतोरणप्रीतये अयं प्लाक्ष तोरणचन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः ॥ सुदृढः प्रीयतां सु० प्री० ॥ तत्रैव दक्षिणवामशाखयो र्ध्वजपाताकामुच्छ्रयामि स्थापयामि ॥ श्वेतार्णवपताकां च पद्माभवध्वजं तथा ॥ सोमाय स्थापयाम्येव धनधान्यसमृद्धये ॥ ॐ वयᳬ सोम० ॥ अभि गोत्राणि० मन्त्रद्वयेन कुबेरप्रीत्यर्थं हरितध्वजं हरितपताकां च० कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ॐ कुबे राय सार्वभौमदिग्गजसहिताय अयं गन्धाद्युपचारसहितः क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः कुबेरः प्रीयतां कुबेर सुप्रीतो भव ॥ उत्तरद्वारपार्श्वे यं यक्षिणि सिंहवाहिनि गदाहस्ते एह्येहि आगच्छागच्छ गन्धपुष्पधूपदीपसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण २ मम ईप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ तत्र द्वारदक्षिणांसे ॥ अक्षस्रजं बीजपूरं कपालं पङ्कजं करैः ॥ वहन्तीं हेमसङ्काशां महालक्ष्मीं समी समाम् ॥ ॐ ह्रीं क्ष्म्रौं नारसिंहि एह्येहि इमं ग० सहितं क्षीरान्नबलिं गृह्ण २ मम ईप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ ह्रीं ख्फ्रें चामुण्डे एह्येहि इमं स्वाहा ॥ पूर्ववत्कलशाराधनं स्थापयेत् ॥ उत्तरद्वारस्थितकलशद्वये वाण्यै० वेण्यै० ॥ कर्मनिष्ठौ तपोयुक्तौ ब्राह्मणौ वेद पारगौ ॥ सरस्वतीसूक्तपाठार्थं द्वारे भवत ऋत्विजौ ॥ शन्नो देवीरिति मन्त्रेण अथर्ववेदऋत्विजौ उत्तरद्वारे शान्तिसूक्तजपार्थत्वेन युवामहं वृणे ॥ बृहन्नेत्रोऽथर्ववेदोऽनुष्टुभो रुद्रदैवतः ॥ वैशम्पायन विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे सखे भव ॥ प्रत्येकं पूजनं कृत्वा सार्व भौमदिग्गज एह्येहि ॥ सौम्येत्यदीर्घे चतुरस्रपीठे रथेऽङ्गिराः सौम्यमुखः सुपीतः ॥ दण्डाक्षमालाम्बुजपात्रहस्तः सिन्ध्वाख्य देशो वरदः सुजीवः ॥ पुष्पाक्षतैः बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप् बृहस्पत्यावाहने वि० ॥ ॐ बृहस्पते अति० ॐ भू० सिंधुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ इमं गन्धा० नमः ॥ शूलायुधं चण्डमत्तं शक्तिं चैव च पात्रकम् ॥ त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम् ॥ शान्त कुमार दिगम्बर एह्येहि० ॥ चामुण्डाशक्तिसंयुक्तं प्रेतवाहनभूषितम् ॥ रक्तवर्णधरं देवं वन्दे भीषणभैरवम् ॥ भीषणभैरव एह्येहि० ॥ ततश्चिच्छक्त्यादिदेवताः संपूज्य ॥ तद्यथा ॥ ॐ चिच्छ

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

क्त्यै० ॥ ॐ मायाशक्त्यै० द्वारपार्श्वे ॥ ॐ शङ्खनिधये नमः द्वारपुरतः ॥ ॐ पद्मनिधये० ऊर्ध्वे ॥ ॐ द्वारश्रियै० अधः ॥ वास्तुपुरुषाय० इति उत्तरद्वारे ॥ अथैशान्ये ॥ कङ्कालि वृषभारूढे शूलहस्ते एह्येहि० ॥ ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां चैव वै तथा ॥ स्थापयामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने ॥ ॐ आवो राजानम्० ॥ ॐ तमीशानं० ॥ ईशानप्रीत्यर्थं श्वेतपताकां स्थापयामि ॥ ईशानाय अयं गन्धाद्युपचारसहितसघृतक्षीरान्नसहितः बलिर्नमः ईशानः प्रीयताम् ॥ ईशानः सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ तत्र सुप्रतीकं दिग्गजं लक्ष्मीगजमावाह्य ॥ उदङ्मुखो मागधजो हरिस्थश्चात्रेयगोत्रः शरमण्डलस्थः ॥ सखड्ग चर्मोऽपि गदाधरो ज्ञस्त्वीशानभागे वरदः सुपीतः ॥ पुष्पाक्षतैः उद्बुध्यस्व सौम्यो बुधस्त्रिष्टुप् बुधावाहने विनियोगः ॥ ॐ उद्बुध्यस्व० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र बुध इहागच्छ इह तिष्ठ ईशान एह्येहि० ॥ शूलं डमरुगं चैव शङ्खं चक्रं गदाधरम् ॥ खड्गपात्रं च खट्वांगपाशाङ्कुशधरं तथा दिगम्बरं कुमारं च सिंहवाहनभूषितम् ॥ दंष्ट्राकरालवदनमष्टैश्वर्य सुखप्रदम् ॥ दिगम्बर कुमार एह्येहि० ॥ धारयन्तं मदोन्मत्तं वडवानलभैरवम् ॥ चण्डिकाशक्तिसंयुक्तं वन्दे संहारभैरवम् ॥ ॐ संहारभैरव एह्येहि० ॥ ततःईशानपूर्वमध्ये सं सर्वगज्यचक्रहस्त एह्येहि ॥ भूमे त्वं सर्वलोकानामाधारशिरसि प्रदे ॥ पञ्चवर्ण पताकां च स्थापयामि ध्वजं तथा ॥ ॐ अमीषां चित्तं० ॥ ॐ मही द्यौः० भूमिप्रीत्यर्थं ध्वजं पताकां स्थापयामि ॥ विशाल वसुधा भूमी रत्नगर्भा रयिप्रदा ॥ विष्णुप्रिये जगद्धंसवाहने अक्षसूत्रकमण्डलुहस्ते एह्येहि० ॥ स्थापयाम्यन्तरिक्षाय पताकां सार्ववर्णिकाम् ॥ कनकाकाररूपाय निराकाराय च ध्वजम् ॥ ब्रह्मणे सार्ववर्णिकां कनकरूपां ध्वजं स्थापयामि ब्रह्मा प्रीयतां ब्रह्मन् सुप्रीतो भव ॥ ततो मण्डपमध्यदेशे ॥ आदित्या वसवो रुद्रा वषट्कारः प्रजापतिः ॥ ध्वजं चित्रपताकां च स्थापयामि हि भो सुराः ॥ आदित्यादिदेवताप्रीत्यर्थं ध्वजं पताकां स्थापयामि ॥ आदित्यादिदेवताभ्यः अयं गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपसघृतक्षीरान्नसहितमाषभक्तबलिर्नमः ॥ आदित्यादिदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ आदित्याद्या देवताः सुप्रसन्ना वरदा भवन्तु ॥ प्रार्थना ॥ यज्ञभागभुजो देवाः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सर्वकर्मफलप्रदाः ॥ यज्ञं पातुमिहागत्य नमस्तेभ्यो मयाऽद्य वै ॥ इति श्रीडामरादितन्त्रसारे भगवतीमहोत्सवे षोडशस्तम्भप्रतिष्ठा तोरणप्रतिष्ठा ध्वजपताकाप्रतिष्ठा चतुर्दिक्षु द्वारपालकसहितकलशप्रतिष्ठा अत्र प्रतिष्ठितदेवतापूजा बलिविधानादिविधिर्नाम सप्तमोऽवसरः ॥ ७ ॥ अथातः कुण्डं सव्यं प्रदक्षिणीकृत्य कुण्डस्य पश्चिमभागे उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य समयस्मरणं विधाय मया सह ब्राह्मणैः कृतानां कारितानां च अमुकचण्डीजपानां संपूर्णतासिद्ध्यर्थं जपदशांशेन उक्तहविर्द्रव्यैर्होममहं करिष्ये ॥ तदङ्गभूतमादावस्मिन्कुते विध्युक्तमार्गेण परिसमूहनादिसंस्कारान्करिष्ये इति संकल्प्य ॥ तत आचार्यो मूलमन्त्रेण कुण्डं वीक्ष्य ततः ॐ इति तोरणकुण्डभुवं त्रिभिर्दर्भैः परिमार्जयेत् ॥ गोमयेनोपलिप्य ॐ क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फडित्यस्त्रमन्त्रेण गोमयोदकं संप्रोक्ष्य ॥ ॐ ऐं चामुण्डायै विच्चे हृदयाय नम इति हृदयमन्त्रेण कुण्डे कुशमूलेन वा स्रुवमूलेन प्रागग्रा वोदगग्रास्तिस्रो रेखाः कार्याः । तत्र प्रागग्ररेखासु मुकुन्दपुरन्दरावभ्यर्च्य उदगग्ररेखासु ब्रह्मवैवस्वतेन्दूनभ्यर्च्य तैरेव दर्भैः संताड्य ॥ ॐ चामुण्डायै विच्चे कवचाय हुमित्यनेन मन्त्रेण दक्षिणत आरभ्योदक्संस्थं प्रतिरेखायामनामिकाङ्गुष्ठेनोद्धृत्य पुरोभागे क्षिपेत् ॥ मूलेन सर्वानभ्युक्ष्य ॥ एवं पंचमसंस्काराः ॥ ततः मायाबीजेन कुण्डं गन्धादिना पूज्य इति षष्ठः ॥ तत आवाहनादिसप्त मुद्राः प्रदर्शयेदिति सप्तमः ॥ अस्त्रेणावगुण्ठ्य इति कुण्डेऽष्टमसंस्कारः ॥ ततस्तन्मध्ये त्रिकोणषट्कोणवृत्तसाष्टपत्रचतुरस्रयन्त्रं संलिखेत् ॥ तन्मध्ये सुवर्णस्य नाभिशकलं विधाय गन्धादिना संपूज्य तत्र कुण्डेऽष्ट संस्कारा मायाबीजेन कर्तव्याः ॥ ॐ ह्रीमिति ॥ तदुक्तं—संस्कारैरष्टभिः कुण्डं संस्कृत्याग्निं प्रतिष्ठयेत् ॥ मायाबीजसमायोगैस्तत्कुर्यात्तत्र साधकः ॥ कुण्डमध्ये भुवं दर्भैः परिमार्ज्योपलेपयेत् ॥ प्रागग्राः स्रुवमूलेन रेखास्तिस्रः समुल्लिखेत् ॥ पांशुमुद्धृत्य रेखाणामभ्युक्षणमतः परम् ॥ कुण्डस्य पूजने षष्ठः सप्तमः सप्तमुद्रया ॥ अस्त्रावगुण्ठनं कुण्डे संस्कारश्चाष्टमः स्मृत इति ॥ तत्र कुण्डस्थयन्त्रे योगपीठाख्यं विधाय तद्योगपीठं प्रोक्ष्य तोरणं पूजयित्वा ॥ तत्र वागीश्वरीमृतुस्नातां नीलेन्दीवरसुप्रभाम् ॥ वागीश्वरेण संयुक्तामुपचारैः प्रपूजयेत् ॥ सूर्यकान्तादिसंभूतं यद्वा श्रोत्रिय



Chinmna, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

गेहजम् ॥ आनीयाग्निं च पात्रेण क्रव्यादांशं परित्यजेत् ॥ तत इति सूर्यकान्तोद्भवं श्रोत्रियागाराद्वा पात्रेण वह्निं समानीय क्रव्यादांशं परित्यज्य वह्नेः संस्कारो वीक्षणादिभिः कार्यः ॥ औदार्यचैवाग्निभ्यां भौमस्य श्रोत्रियागारादानीतस्य वह्नेरैक्यं स्मरन्नित्यनेन १ ॥ तद्यथा वामनाड्या प्राणपूरणसमं मायाबीजेन संहारमुद्रया तमग्निमन्तः समाकृष्य भ्रूमध्ये बिन्दुसंबन्धिनाऽग्निना जठराग्निना चैकीकृत्य उद्भवमुद्रया मायाबीजेन पिङ्गलया रेचयेत् ॥ ॐ ह्रीं वह्निचैतन्याय नमः ॥ इत्यनेन मन्त्रेण बहिः स्थिते वाऽग्नौ चैतन्यं जनयेत ॥ ततो मूलेनाभिमन्त्र्य धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य अस्त्रमन्त्रेण संरक्ष्य कवचेनावगुण्ठ्य गंधादिभिरभ्यर्च्य कुण्डस्योपरि त्रिर्भ्राम्य भूमिस्थजानुकः देशिकः मूलमन्त्रपूर्वकमात्मसंमुखं वह्निं शिवबीजधिया देव्या योनौ विनिक्षिपेत् ॥ शतमङ्गलनामानं कुण्डे अग्निं संप्रतिष्ठापयेत्॥ततस्तत्साग्निमत् कुण्डं नवसूत्रेण वेष्टयेदिति॥त्रिसूत्रीकरणमित्यन्ये ॥ अथाग्निजननम् ॥ कुण्डमध्ये नाभेरुपरि यन्त्रं तदुपरि प्रतिष्ठापयेत् ॥ पश्चाद्देवस्य देव्याश्च आचमना दिकं दद्यात् ॥ ततः प्रज्वालनं कृत्वा तत्र मन्त्रः ॥ ॐ चित्पिङ्गले हन२पच२ दह २ सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा ॥ इत्यनेन मन्त्रेण प्रज्वालिन्या मुद्रया प्रज्वालनम् ॥ ततः गर्भसंरक्षणार्थमिन्धनैराच्छाद्य ॥ तत उपस्थानं कृत्वा अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ॥ सुवर्णवर्णमनलं समृद्धं विश्वतोमुखम् ॥ इत्यनेन मन्त्रेणोपस्थानं वह्नेः कार्यम् ॥ ततो देशिकः स्वशरीरे विभावसोर्जिह्वां वक्ष्यमाणमन्त्रैर्विन्यसेत् ॥ न्यासस्थानान्याह ॥ लिङ्गपायुशिरोवक्त्रघ्राणनेत्रेषु सर्वतः इति॥ अथ मन्त्रप्रकारः ॥ वह्निरार्चीशसंयुक्ताः सादियान्ताः सबिन्दवः ॥ मन्त्रवर्णाः समुद्दिष्टा जिह्वानां सप्त देशिकैः ॥ अस्यार्थः ॥ वह्निरकारः ईकारो यकारः अर्चीशः उकारः एतद्वर्णत्रयं प्रातिलोम्येन सप्तसु वर्णेषु संधितं कृत्वा बिन्दुना युक्तं योजयेत् ॥ अथ जिह्वाः पद्मरागादीत्यादिदेशिकाङ्कः समन्त्रो जिह्वान्यासः कर्तव्यः ॥ यथा च ॥ अथ यन्त्रस्थापनप्रकारमाह ॥ मध्ये षट्स्वपि कोणेषु जिह्वा ज्वाला ऋचो यजेत् ॥ केसरेषूक्तमार्गेण पूजयेदङ्गदेवताः ॥ दलेषु पूजयेन्मूर्तीः शक्तिस्वस्तिकधारिणीः ॥ लोक पालांस्तथा दिक्षु पूजयेदुक्तलक्षणादिति जिह्वा सादिना यन्त्रस्थापनविचारणया कर्तव्या ॥ यन्त्रषड्दले ॥ ॐ स्यूँ पद्मरागायै

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अग्निजिह्वायै नमो लिङ्गे १ ॥ ॐ ह्यूँ सुवर्णायै अग्निजि० पायौ २॥ॐ श्रूँ भद्रलोहितायै अग्निजि० शिरसि ३॥ॐ ह्यूँ लोहितायै अग्निजि० मुखे ४ ॥ ॐ ल्यूं श्वेतायै अग्निजि० घ्राणे ५ ॥ ॐ ह्यूँ धूमिन्यै अग्निजि० नेत्रयोः ६ ॥ ॐ र्यूँ कटालिन्यै अग्निजि० सर्वाङ्गव्यापके ७ ॥ षड्दलकर्णिकायां जिह्वाधिदेवताः संपूजयेत् ॥ अमर्त्यपितृगन्धर्वयक्षनागपिशाचकाः ॥ राक्षसाः सप्तजिह्वानामीरिता अधिदेवताः ॥ इति तत्र षड्दलकेसरेष्वप्यङ्गदेवताः पूजयेत्सहस्रशीर्षेत्यादिषडंगः ॥ यथा ॥ ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय० १ ॥ ॐ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा २ ॥ ॐ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै० ३ ॥ ॐ धूमव्यापिने कव० ४ ॥ ॐ सप्तजिह्वाय नेत्रत्र०५॥ॐधनुर्धरायास्त्राय०६॥इत्यग्निषडङ्गं न्यसेत् । अग्निशरीरे तन्नामभिः कुर्यात् ॥ ततः वह्नेरष्टौ मूर्तयोदेशिकः स्वशरीरे प्रादक्षिण्येन भागद्वये न्यसेज्जातवेदसेऽग्नय इत्यादि ॥ यथा ॥ ॐ अग्नये जातवेदसे नमो मूर्ध्नि ॥ ॐ अग्नये सप्तजिह्वाय नमो दक्षिणांगे ॥ ॐ अग्नये हव्यवाहनाय नमः कटचाम् ॥ ॐ अग्नये अश्वोदराय नमो लिंगे ॥ ॐ अग्नये वैश्वानराय नमो वामांसे ॥ ॐ अग्नये कौमारतेजसे नमो वामकटचाम् ॥ ॐ अग्नये विश्वमुखाय नमः इत्यंघ्र्योः ॥ ॐ अग्नये देवमुखाय नमः शिखायाम् ॥ इत्यष्टमूर्तिन्यासः ॥ अथाष्टदलाग्रेष्विन्द्रादीन् लोकपालान्सायुधानष्टदिक्षु पूजयेत् ॥ यथा ॥ ॐ इन्द्राय सुराधिपतये वज्रहस्ताय नमः ॥ ॐ वह्नये तेजोऽधिपतये छागवाहनाय शक्तिहस्ताय० ॥ ॐ यमाय प्रेताधिपतये दण्डहस्ताय० ॥ नैर्ऋतये रक्षोऽधिपतये खड्गहस्ताय० ॥ ॐ वरुणाय जलाधिपतये पाशहस्ताय० ॥ ॐ वायवे प्राणाधिपतये ध्वजहस्ताय० ॥ ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये गदाहस्ताय० ॥ ॐ ईशानाय विद्याधिपतये त्रिशूलहस्ताय० इति ॥ अथाग्निं ध्यायेत् ॥ इष्टं शक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चैर्दीर्घैर्दोर्भिर्धारयन्तं जपाभम् ॥ हैमं कल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः ॥ १ ॥ जिह्वा सप्तैव देहे वदनयुगयुतं नेत्रषट्कं त्रिनासं शृङ्गैर्युक्तैश्चतुर्भिस्तिसृभिरिह वृतं मेखलाभिस्त्रिपादम् ॥ दक्षे हस्ते चतुर्भिस्तिसृभिरपि भुजैर्वामनं मेषवाहं शक्त्याऽग्निं स्रुक्स्रुवांश्च व्यजनमु दधतं तोमरं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

चान्यपात्रम् ॥ २ ॥ वामे पार्श्वे स्वधाढ्यं तदनु च सहितं स्वाहया दक्षपार्श्वे दीप्ताभिश्चोर्ध्वगाभिर्विलसितममलं संस्तुवंस्तच्छि खाभिः ॥ पिङ्गाक्षं स्वर्णवर्णं मणिमुकुटजटाभूषणाढ्यं सुदीप्तं विप्राःप्रत्यक्शिरस्कं स्मरत यजत भो हव्यवाहं सुसिद्ध्यै ॥ ३ ॥ इत्यग्निं ध्यात्वा वक्ष्यमाणमन्त्रेणाग्निं गन्धादिना सम्पूज्य ॥ ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इति कृत्वाऽनन्तरं कुण्डयोन्यां परिस्तीर्य मेखलात्रयं च ऊर्ध्वाधःक्रमेण ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् गन्धादिना संपू जयेन्नाममन्त्रेण ॥ संग्रहे जपकाले आवरणदेवतापूजनं प्रतिदिनं न कृतं चेत्तर्हि अग्निस्थापनानन्तरं संग्रहपीठपूर्वकं च पीठदेवतापूजनं च कर्तव्यं पूर्ववत् देवताभिध्यानं कर्तव्यम् ॥ तत्र वैकल्पिकावधारणं पूर्वेण ब्रह्मणो गमनमग्नेरुत्तरतः पश्चाद्वा पात्रासादनं द्वे पवित्रे मृन्मयी आज्यस्थाली ताम्रमयी चरुस्थाली पालाश्यः समिधः अन्यसमिधः प्राश्चावाघारा भागौ समिद्धतमे आज्यभागौ वरो दक्षिणा तिलाज्यादि हविर्द्रव्यमेतान्वैकल्पिकान्पदार्थानहं करिष्य इति संकल्पयेत् ॥ अथ पात्रासादनमारभेत ॥ कुण्डं नवसूत्रेण संवेष्ट्य ब्रह्माणं दक्षिणे उपवेश्य संप्रदायाद्ब्रह्मवरणमिति केचित् ॥ तदनु कुण्डादुत्तरभागे प्रणीतासने कुशानास्तीर्य तत्र प्रणीतामुदकपूर्णां निदध्यात् ॥ तदुत्तरतः पश्चिमत आरभ्य पात्राणि द्वन्द्वशो ऽधोमुखानि पश्चादुत्तानानि यावत्प्राचीं स्थापयेत् ॥ प्रणीतापात्रात्पूर्वतः पात्राण्यासादयेत् ॥ ईशानादिप्रागग्रैरुदगग्रैर्वा कुशाना स्तीर्य पवित्रच्छेदनार्थं दर्भास्त्रयः पवित्रे द्वे प्रोक्षणीपात्रम् आज्यस्थाली चरुस्थाली समार्गकुशाः उपयमनकुशाः शतदर्भसंख्याकं कुशपूलकं समिधः पालाश्यः स्रुक्स्रुवौ आज्यं गव्यं पूर्णपात्रं पवित्रकरणं ततः प्रोक्षणीसंस्कारः प्रोक्षण्या पात्रान्तरेण प्रणीतोदक मादाय वक्ष्यमाणमन्त्रेण सप्तद्वीपेश्वरीं ध्यात्वेति ॥ ततः देवतां मनसि ध्यायन् तं कुशपूलकं गृहीत्वा वारुणं बीजमुच्चरेत्॥ प्रोक्षणीपात्रे निक्षिपेत् ॥ तेन दर्भपूलकेन प्रोक्षणीपात्रवारिणा हृन्मन्त्रेण क्रमात्पात्रगणं प्रोक्षयेत् ॥ तदुक्तम् आगमसंग्रहे अथवा स्वगृह्योक्तविधानेन पात्रासादनं कर्तव्यं देवताभिधानं च ॥ तत्र प्रजापतिं इन्द्रमग्निं सोममेता आघारावाज्यभागौ आज्येन

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

रविं चन्द्रं भौमं बुधं गुरुं शुक्रं शनिं राहुं केतुं रुद्रं गौरीं स्कन्दं विष्णुं ब्रह्माणमिन्द्रं यमं कालं चित्रगुप्तमपः भूमिं नारायण मिन्द्राणीं वरुणं सर्पं ब्रह्माणमनन्तं वासुकिं तक्षकं कर्कोटकं पद्मं महापद्मं शङ्खपालं कम्बलं पुलकं गणपतिं दुर्गां वायुमाकाश मश्विनौ देवौ एता अर्कादिसमिधादिभिस्तिलाज्यैर्वा ॥ अथ मण्डूकाद्याः ॥ मण्डूकं कालं रुद्रं कूममाधारशक्तिमनन्तं शेषं पृथ्वीं पद्मनालं धर्मं ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्यमधर्ममज्ञानमवैराग्यमनैश्वर्यं सं सत्त्वं रं रजसं तं तमसं षोडशकलात्मकं रविमण्डलं द्वादशकला त्मकं चन्द्रमण्डलं दशकलात्मकं वह्निमण्डलमात्मानमन्तरात्मानं परमात्मानं ज्ञानात्मानं मायातत्त्वं कलातत्त्वं विद्यातत्त्वं परम तत्त्वं गुरुं परमगुरुं परमेष्ठिगुरुं गणेशं दुर्गां सरस्वतीं क्षेत्रपालं वेदिकां रत्नसिंहासनं दिव्यसिंहासनं कमलासनं योगपीठासनं रत्नमण्डपं वास्तुपुरुषमेताः आज्येन ॥ अथ मुख्यावरणदेवताः ॥ ॐकारपीठं पूर्णपीठं कामपीठं ॥ ॐकारपीठोपनाथम् ॥ ॐकारे श्वराम्बापादुकाभ्याम् उड्डाणेश्वरपीठमुड्डाणेश्वरोपनाथमुड्डाणाम्बापादुकाभ्यां मां मातृपीठं मातृकेश्वरोपनाथं मातृकेश्वरोपनाथाम्बापादु काभ्यां जां जालन्धरपीठं जालन्धरेश्वरोपनाथं जालाम्बापादुकाभ्यां कोल्हागिरिपीठं कोल्हेश्वरोपनाथं कोल्हेश्वराम्बापादु काभ्यां पुं पूर्णगिरिपीठं पूर्णगिरीश्वरोपनाथं पूर्णाम्बापादुकाभ्यां सौहारपीठं सौहारपीठोपनाथं सौहाराम्बापादुकाभ्यां कोल्हा पुरपीठं कोल्हापुरपीठोपनाथं कोल्हापुरेश्वर्यम्बापादुकाभ्यां कामगिरिपीठं कामगिर्युपनाथं कामगिर्युपनाथाम्बापादुकाभ्यां गणेशं दुर्गां सरस्वतीं क्षेत्रपालं पादुकाभ्यां बटुकत्रयं जं जयां विं विजयां जं जयन्तीम् अं अपराजिताम् अग्निमुखवेतालं प्रेत वाहनवेतालं जं ज्वालामुखवेतालं धूं धूम्राक्षवेतालं हंसवाहिनीं ब्राह्मीं स्तम्भोद्भवां नारसिंहीं गजवाहिनीमैन्द्रीं गणनाथपरिवार सहितां चण्डमुण्डमण्डितां सिंहारूढां चामुण्डां हेमगर्भायै नं नन्दायै सुरक्तायै रं रक्तदन्तिकां नीलायै शां शाकंभरीं सर्वरूपार्ति हारिण्यै दुर्गां दंष्ट्रांचितमुखायै नीलपात्रशिरोधरां भीमायै तेजोमण्डलदुर्धर्षायै वरदायै भ्रामर्यै यक्षिणीं कालिकां सुरश्रेष्ठां दशाननां रतिं प्रीतिं विश्वेश्वरीम् अष्टादशभुजां मनोभवम् अणिमां महिमां लघिमां गरिमां प्राप्तिं प्राकामीमीशितां

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वशितां भैरवाष्टकम् असिताङ्गभैरवं रुरुभै० चण्डभै० क्रोधभै० उन्मत्तभै० कपालभैरवं भीषणभै० संहारभैरवम् इन्द्राद्यष्टलोक पालान् इन्द्रमग्निं यमं निर्ऋतिं वरुणं वायुं सोममीशानं ततः षड्देवताः गुं गुरुं पं परमगुरुं पं परमेष्ठिगुरुं गं गणेशं हं हरिं हं हरं ततस्तिस्रः महालक्ष्मीं महाकालीं महासरस्वतीं ततः आवाहनं सिंहं महिषं गौरीरुद्रं लक्ष्मीहृषीकेशं स्वराविरञ्चिं कालीरुद्रं सिंहं मृत्युं विजयां गणेशं महिषं त्रिस्त्रिर्नैदभैरवं ततः विष्णुमायाद्याश्चतस्रः भुवं विष्णुमायां चेतनां बुद्धिं निद्रां क्षुधां छायां शक्तिं तृष्णां कान्तिं जातिं लज्जां शान्तिं श्रद्धां क्रान्तिं लक्ष्मीं धृतिं वृत्तिं स्मृतिं दयां तुष्टिं पुष्टिं मातरं भ्रान्तिमिमेताः देवता एकैकाभि श्चरुतिलाज्याहुतिभिः शेषेणाग्निं स्विष्टकृतम् ॥ अग्निं वायुं सूर्यमग्नीवरुणौ २ अग्निं वरुणं मरुतः स्वर्कान् वरुणं प्रजापतिमेताः देवताः आज्येन अस्मिन्कर्मण्यहं यक्ष्ये ॥ ततः ब्रह्मवरणादिपर्युक्षणान्तं कर्म कृत्वा ततः गर्भाधानादिसंस्कारान् कुर्यात् ॥ मूलेन प्रणवेन वा गर्भाधानं संपद्यतां स्वाहा ॥ मूलेन पुंसवनं सं० मूलेन सीमन्तोन्नयनं० जातकर्म० ततः शतमङ्गलनामासि हुताशनेति नाम कृत्वा नामकर्म० निष्क्रमणं सं० अन्नप्राशनादिविवाहान्तदशकर्माणि च आघारावाज्यभागौ जुहुयात् ॥ ब्रह्मणाऽन्वारब्धः ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० ॥ॐइन्द्राय० इदमिन्द्राय न मम ॥ॐ अग्नये०इदमग्नये०॥ॐसोमाय०इदं सोमाय०॥ततः सप्त जिह्वादिमूर्तिभ्यस्तन्मन्त्रैरेकैकामाज्याहुतिं हुत्वा तद्यथा ॥ ॐ स्त्र्यूं पद्मरागायै अग्निजिह्वायै स्वाहा इदं पद्मरागायै न मम ॥ ॐस्त्र्यूं सुवर्णायै अग्निजिह्वायै स्वाहा इदं०॥ॐश्र्यूं भद्रलोहितायै अग्निजिह्वायै स्वाहा इदं भद्रलोहितायै॥ॐब्र्यूं लोहितायै अग्निजिह्वायै०॥ इदं लोहितायै अग्निजिह्वायै० ल्यूं श्वेतायै अग्निजिह्वायै० इदं श्वेतायै अ० ॥ ॐ ब्र्यूं धूमिन्यै अग्निजिह्वायै० इदं धूमिन्यै अ० ॥ ॐ त्र्यूं करालिन्यै अ० ॥ इदं करालिन्यै अ० ॥ ततः अमयुपितृगन्धर्वयक्षनागपिशाचकाः ॥ राक्षसाः सप्तजिह्वानामीरिता अधि देवता इति ॥ चतुर्गृहीतं गृहीत्वा वैश्वानर जातवेद० इडावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय २ स्वाहा गणेशमन्त्रेण गणपतये स्वाहा ततः पूर्वोक्तसर्वन्यासांश्च कृत्वा वह्नौ पीठपूजां कृत्वा देवीमावाह्यावाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य षडङ्गं कृत्वा षोडशोपचारैः संपूज्य

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मूलेन शतमेकादशाधिकमाज्याहुतीर्हुत्वा नवग्रहेभ्यो लोकपालेभ्यस्तत्तन्मन्त्रैः समिदाज्यचरून् हुत्वा पायसतिलपलाशपुष्प सर्षपपूगीफललाजादूर्वाङ्कुरयवबिल्वफलरक्तचन्दनगुग्गुलद्रव्याणि तिलमिश्रपायसमेव वा कवचार्गलाकीलकरहस्यैः प्रतिश्लोकं हुत्वा कृतस्य जपस्य दशांशेन प्रतिश्लोकं सप्तशतीमन्त्रेणोक्तद्रव्याणि तिलपायसं वा जुहुयात् ॥ अध्यायसमाप्तौ उवाचस्थले च पत्रपुष्पफलैर्होमः यद्वा नमो देव्या इत्येतेन नवार्णेन वा जपदशांशहोमः एवं प्रधानहोमं कृत्वा ततः नामभिः स्रुवेणाज्यं पायसं च जुहुयात् ॥ यथा ॥ ॐ कादम्बर्यै० उल्कायै० कराल्यै० रक्तायै० श्वेतकौबेर्यै० हरितायै० यक्षिण्यै० कङ्काल्यै० सुरश्रेष्ठायै० सर्पराज्ञ्यै० ब्राह्म्यै० माहेश्वर्यै० कौमार्यै० वैष्णव्यै० वाराह्यै० ऐन्द्र्यै० नारसिंह्यै० चामुण्डायै० धात्रे० विधात्रे० शङ्खनिधये० पद्मनिधये० द्वारश्रियै० वास्तुपुरुषाय० ऐरावताय० पुण्डरीकाय० वामनाय० कुमुदाय० अञ्जनाय० पुष्पदन्ताय० सार्वभौमाय० सुप्रतीकाय० दमनकाय० पुण्डरीकाय० गुग्गुलाय० कुरण्टकाय० ऋग्वेदाय० यजुर्वेदाय० सामवेदाय० अथर्ववेदाय० ॥ अथ नवग्रहाः ॥ आदित्याय० सोमाय० भौमाय० बुधाय० बृहस्पतये० शुक्राय० शनैश्चराय० राहवे० केतवे० रुद्राय० गौर्यै० स्कन्दाय० विष्णवे० ब्रह्मणे० इन्द्राय० यमाय० कालाय० चित्रगुप्ताय० अग्नये० अद्भ्यः स्वाहा० भूम्यै० नारायणाय० इन्द्राय० इन्द्राण्यै० वरुणाय० सर्पाय० ब्रह्मणे० अनन्ताय० वासुकये० तक्षकाय० कर्कोटकाय० पद्माय० महापद्माय० शङ्खपालाय० कम्बलाय० कुलिकाय० गणपतये० दुर्गाय० वायवे० आकाशाय० अश्विभ्यां देवाभ्यां स्वाहा० ॥ अथ मण्डूकाद्याः ॥ ॐ मण्डूकाय० कालाग्निरुद्राय० कूर्माय० आधारशक्तये० अनन्ताय० शेषाय० पृथिव्यै० पद्माय० नालाय० धर्माय० ज्ञानाय० वैराग्याय० ऐश्वर्याय० अधर्माय० अज्ञानाय० अवैराग्याय० अनैश्वर्याय० सं सत्त्वाय० रं रजसे० तं तमसे० षोडशकलात्मने रविमण्डलाय० द्वादशकलात्मने चन्द्रमण्डलाय० दशकलात्मने वह्निमण्डलाय० आत्मने० अन्तरात्मने० परमात्मने० ज्ञानात्मने० मायातत्त्वाय० कलातत्त्वाय० विद्यातत्त्वाय० परतत्त्वाय० गुरवे० परमगुरवे० परमेष्ठिगुरवे० गणेशाय० दुर्गायै० सरस्वत्यै० क्षेत्र

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पालाय० वेदिकायै० रत्नसिंहासनाय० दिव्यसिंहासनाय० कमलासनाय० योगपीठासनाय० रत्नमण्डपाय० वास्तुपुरुषाय० ॥ अथावरणदेवताः ॥ ॐ कारपीठाय० पूर्णपीठाय० कामपीठाय० उड्याणपीठाय० स्वा० उड्याणेश्वरोपनाथाय० उड्याणाम्बा पादुकाभ्यां० मातृपीठाय० मातृपीठेश्वरोपनाथाय० मातृकाम्बापादुकाभ्याम् ॥ ॐ जालन्धरपीठाय० जालन्धरेश्वरोपना थाय० जालन्धराम्बापादु० ॥ ॐ कं कोल्हापुरोपपीठाय० कोल्हापुरपीठेश्वरोपनाथाय० कोल्हापुरपीठाम्बापादुका० पूर्णगिरि पीठाय० पूर्णगिरिपीठेश्वरोपनाथाय० पूर्णगिरिपीठाम्बापा० ॥ ॐ सौहारोपपीठाय० सौहारपीठोपनाथाय० सौहारपीठोपनाथा म्बापा० ॥ ॐ कोल्हागिरिभवपीठाय० कोल्हागिरिभवपीठोपनाथाय० कोल्हागिरिभवपीठेश्वर्यम्बापा० ॥ ॐ कामरूपोपपीठाय० कामरूपोपपीठनाथाय० कामरूपपीठेश्वर्यम्बापादुकाभ्यां ॥ गं गणेशाय० क्षं क्षेत्रपालाय० पं पादुकाभ्यां० बं बटुकत्रयाय० जं जयायै० विं विजयायै० जं जयन्त्यै० अं अपराजितायै० अं अग्निमुखवेतालाय० प्रं प्रेतवाहनवेतालाय० जं ज्वालामुखवे० धूं धूम्राक्षवे० ऐं हंसवाहिन्यै० ब्रं ब्राह्म्यै० विच्चे नमः स्वाहा ॥ ॐ हस्रैं वृषभवाहिन्यै मं माहेश्वर्यै विच्चे नमः स्वाहा ॥ ॐ क्रीं मयूरवाहिन्यै कं कौमाय विच्चे नमः स्वाहा ॥ ॐ श्रीगरुडवाहिन्यै वं वैष्णव्यै वि० ॥ ॐ ह्रूँ दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरायै वां वाराह्यै वि० ॥ ॐ क्ष्म्रौं स्तम्भोद्भवायै नारसिंह्यै वि० ॥ ॐ लौं जगवाहिन्यै ऐं ऐन्द्र्यै वि० ॥ खें गणनाथपरिवाराय सदा रुद्रेण संयु तायै चण्डमुण्डमण्डितायै सिंहारूढायै चामुण्डायै वि० ८ ॥ ॐ ह्रीं हेमगर्भायै नं नन्दायै वि० १ ॥ ॐ ह्रीं सुरक्तायै रं रक्त दन्तिकायै चामुण्डायै वि० २ ॥ ॐ ह्रीं नीलायै शाकंभर्यै वि० ३ ॥ ॐ ह्रीं सर्वरूपार्तिहारिण्यै दुं दुर्गायै विच्चे० ४ ॥ ॐ ह्रीं दंष्ट्राञ्चितमुखायै नीलपात्रशिरोधरायै भीं भीमायै वि० ५ ॥ ॐ ह्रीं तेजोमण्डलदुर्धर्षायै वरदायै भ्रां भ्रामर्यै वि० ६ ॥ यं यक्षिण्यै० १ कं कालिकायै० २ सं सुरश्रेष्ठायै० ३ दं दशाननायै० ४ रं रत्यै०५ प्रं प्रीत्यै० ६ वं विश्वेश्वर्यै० ७ अं अष्टा दशभुजामनोभवायै० ८ ॥ अणिमायै० १ महिमायै० २ लघिमायै० ३ गरिमायै० ४ प्राप्त्यै० ५ प्राकाम्यै० ६ ईशितायै० ७

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वशितायै० ८ ॥ अं असिताङ्गभैरवाय० १ रुं रुरुभैरवाय० २ चं चण्डभैरवाय० ३ क्रं क्रोधभैरवाय० ४ उं उन्मत्तभैरवाय० ५ कं कपालभैरवाय० ६ भं भीषणभैरवाय० ७ सं संहारभैरवाय० ८ ॥ पुनस्तत्रैवमिन्द्राद्यष्टौ लोकपालाः ॥ लं वज्रहस्ताय सुराधिपतये इन्द्राय० १ रं अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतयेऽग्नये० २ मं दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये यमाय० ३ क्षं खड्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये निर्ऋतयै० ४ वं पाशहस्ताय जलाधिपतये वरुणाय० ५ यं अंकुशहस्ताय प्राणाधिपतये वायवे ६ सं गदाहस्ताय नक्षत्राधिपतये सोमाय० ७ हं त्रिशूलहस्ताय विद्याधिपतये ईशानाय० ८ गुं गुरुभ्यो० १ पं परमगुरु० २ पं परमेष्ठिगुरु० ३ गं गणेशाय० ४ हं हरये० ५ हं हराय० ६ ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै विच्चे नमः १ तद्दक्षिणभागे ॐ ऐं महाकाल्यै विच्चे० २ देव्या वामभागे ॥ ॐ क्लीं महासरस्वत्यै विच्चे० ३ पुनस्तत्रैव देव्या दक्षिणभागे ॥ ॐ क्ष्म्रौं सिंहाय० १ ॐ हूं महिषाय २ ॐ ह्स्रैं ह्स्रौं गौरीरुद्राय० ३ देव्याः पृष्ठभागे लक्ष्मीसान्निध्ये ॥ ॐ श्रीलक्ष्मीहृषीकेशाय० ४ देव्याः पृष्ठभागे ॐ ऐं स्वराविरञ्चये० ५ ॐ हूं कङ्कालाय० ॥ ॐ रुं रुद्राय० ॥ ॐ मं सिंहाय० ॥ ॐ मं मृत्यवे० ॥ ॐ वं विजयाय० ॥ ॐ गं गणेशाय० ॥ ॐ मं महिषाय० ॥ ॐ त्रिवेद भैरवाय० ॥ ॐ विष्णुमायायै० ॥ ॐ चेतनायै० ॥ ॐ बुद्ध्यै० ॥ ॐ निद्रायै० ॥ ॐ क्षुधायै० ॥ ॐ छायायै० ॥ ॐ शक्त्यै० ॥ ॐ तृष्णायै० ॥ ॐ क्षान्त्यै० ॥ ॐ जात्यै० ॥ ॐ लज्जायै ॥ ॐ शान्त्यै० ॥ ॐ श्रद्धायै० ॥ ॐ कान्त्यै० ॥ ॐ लक्ष्म्यै० ॥ ॐ धृत्यै० ॥ ॐस्मृत्यै० ॥ ॐदयायै० ॥ॐ तुष्ट्यै० ॥ ॐपुष्ट्यै० ॥ ॐमात्रे० ॥ॐ भ्रान्त्यै०॥ॐ ह्स्रां हृ०॥ ॐ ह्स्रीं शिरसे० ॥ ह्स्रूं शिखायै० ॥ ॐ ह्स्रैं कव० ॥ ॐ ह्स्रौं० नेत्रत्र० ॥ ॐ ह्स्रः अस्त्राय फट् ॥ ॐ नालाय० ॥ ॐ मूलाय० ॥ ॐपद्माय० ॥ ॐमहापद्माय० ॥ ॐआधारशक्तये० ॥ ॐकूर्माय० ॥ॐशेषाय० ॥ ॐ पृथिव्यै० ॥ सर्वाकारदलेषु सर्वाकारपत्रेषु सर्वाकारकेसरेषु ॥ केसरेभ्यः ॥ सर्वाकारकर्णिकायां कर्णिकायै० ॥ ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनयोगपीठात्मने० ॥ ॐ नमश्चण्डिकायै सायुधायै सपरिवारायै सवाहनायै साभरणायै० श्रीचण्डिकायै नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा जयजयशब्दान् कार

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

येत् ॥ इत्यावरणदेवताहोमः ॥ ततः अग्निपूजनं ग्रहपूजनं पीठे वरुणदेवतापूजनं कृत्वा ॥ ततः स्विष्टकृद्धोमः—ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥ ततश्च प्राजापत्यान्ता नवाहुतयः ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ ॐस्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ॐत्वन्नो अ० स्वाहा इदमग्नीवरु० ॐस त्वन्नो अ०इदमग्नीवरु०॥अयाश्चा ग्नेऽस्य० स्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥ ये ते शतं वरुण० स्वाहा इदं वरुणाय सवि० ॥ उदुत्तमं० स्वाहा इदं वरुणाय अदितये० ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये० ॥ तदनन्तरं दिक्पालनवग्रहविनायकादिक्षेत्रपालादिभ्यो माषभक्तबलिं दत्त्वा ॥ आयतनस्य समन्ताद्दिक्षु विदिक्षु च माषभक्तबलिं सदीपं दिक्पालेभ्यो दद्यात् ॥ त्रातारमिति मन्त्रेण इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष सदीपमाषभक्तबलिर्न मम ॥ भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम यजमानस्याभ्युदयं कुरु ॥ आयुष्कर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता तुष्टिदः पुष्टिदो भव ॥ पुष्पाक्षतजलं पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्॥त्वन्नो अग्ने० अग्नये०साङ्गाय० भो अग्ने दिशं अग्निः प्रीयताम् अग्ने सुप्रीतो वरदो भव ॥ सुगं नु पन्थामिति मन्त्रेण यमाय० भो यम दिशं० यमः प्रीयतां यमः सु० ॥ असुन्वन्तमिति मन्त्रेण निर्ऋतये० सा० भो निर्ऋते दि० नैर्ऋतिः प्री० निर्ऋते सु० ॥ तत्त्वा यामीति मन्त्रेण वरुणाय० भो वरुण० वरुणः प्री० वरुण सु० ॥ आ नो नियुद्भिरिति मन्त्रेण वायवे० भो वायो० वायुः प्रीयतां वायो सु० ॥ वयश्सोमेति मन्त्रेण०सोमाय० भो सोम दिशं० सोमः प्री० सोम सु० ॥ तमीशानमिति मन्त्रेण ईशानाय सा० भो ईशान० ईशानः प्रीयतामीशान सु० अस्मे रुद्रा इति मन्त्रेण ब्रह्मणे० साङ्गाय० इमं सदीपं० भो ब्रह्मन् दिशं० ब्रह्मा प्रीयतां ब्र० सु० ॥ स्योना पृथि० इति मन्त्रेण अनन्ताय सा० भो अनन्त दिशं० अनन्तः प्री० अ० सु०॥आकृष्णेनेति मन्त्रेण०अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्याय इमं सदीपं मा०भो सूर्य दिशं० इमं देवा इति मन्त्रेण सोमाय० भो सोम० अग्निर्मूर्धा दिव इति मन्त्रेण भौमाय० भो भौम दि० उद्बुध्यस्वेति मन्त्रेण बुधाय० ॥ भो बुध दिशं० बृहस्पते इति मन्त्रेण० बृहस्पतये० सा० भो बृहस्प० अन्नात्परिस्रुत इति मन्त्रेण शुक्राय० भो शुक्र शन्नो देवीरिति

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मन्त्रेण० शनैश्चराय० भो शनै० कया नश्चित्रेति मन्त्रेण राहवे० केतुं कृण्वन्निति मन्त्रेण केतवे सा० त्र्यम्बक इति मन्त्रेण त्र्यम्बकाय० वास्तोष्पते इति मन्त्रेण वास्तोष्पतये साङ्गाय० योगेयोगे इति मन्त्रेण जयादियोगिनीभ्यः इमं सघृतं माषान्नपायसान्नक्षीरसहितमिमं बलिं गृह्य २ मम ईप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ इति योगिनीभ्यः बलिं दत्त्वा ॥ ततः नवरात्रनिर्णयोक्तविधिना माषभक्तकूष्माण्डादिबलिं दत्त्वा पूजां समर्पयेत् ॥ ततो महाबलिं कुंकुमादिपुष्पयुतं सदीपं दक्षिणासहितं क्षेत्रपालाय दद्यात् ॥ ॐ न हि स्पशेति मन्त्रेण० ॥ ॐ नमो भगवते क्षेत्रपालाय भूतप्रेतपिशाचराक्षसशाकिनीडाकिनीवेतालादिपरिवारयुताय इमं सदीपं माषान्नसहितं बलिं गृह्य २ मम ईप्सितं कुरु २ स्वहा बलिं समर्पयामि ॥ भो भो क्षेत्रपाल मम यजमानस्य च आयुष्कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिदस्तुष्टिदो भव ॥ इमं बलिं शूद्रेण दुर्ब्राह्मणेन वा चतुष्पथे क्षिपेत् ॥ ततः प्रक्षालितपाणिपादः आचम्य देशकालौ स्मृत्वा कृतस्य अमुकचण्डीहोमस्य संपूर्णतासिद्ध्यर्थं पूर्णाहुतिहोममहं करिष्ये ॥ निरुप्याज्यमधिश्रित्य स्रुक्स्रुवं संमृज्योद्वास्योत्पूयावेक्ष्य चतुर्गृहीतं गृहीत्वा वस्त्रयुतं नारिकेलादिफलं चन्दनमालादियुतं तदुपरि निधाय यजमानान्वारब्ध आचार्यो जुहुयात् ॥ तत्र मन्त्रः सप्त ते अग्ने० पूर्णा दर्वीति मन्त्रेण० धामं ते इत्येतैर्मूलेन च पूर्णाहुतिं हुत्वा ॥ इदमग्नये वैश्वानराय तेभ्यः शतक्रतवे सप्तवतेऽग्नये महालक्ष्म्यै न मम ॥ ततो वसोर्धारां हुत्वा वैदिकैर्मन्त्रैर्वा लक्ष्मीसूक्तेन वा चण्डीस्तोत्रैर्वा जुहुयात् ॥ संस्रवप्राशनमाचम्य पवित्रयोर्मार्जनान्ते अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः प्रणीताविमोकादिकं कर्मशेषं समाप्य मूलमन्त्रेण होमदशांशेन गोदुग्धेन जलेन वा तर्पयित्वा तद्दशांशेन मार्जयेत् ॥ ततः श्रेयः संपाद्याचार्यादीन्वस्त्राद्यैः संपूज्य आचार्याय शतं तदर्धं तदर्धमष्टौ च गोमिथुनानि सुवर्णचतुष्टयं च दद्यात् ॥ ब्रह्मणे निष्कद्वयं गोद्वयं च ऋत्विग्भ्यः प्रत्येकं निष्कत्रयं गोमिथुनं च दद्यात् ॥ इदं सहस्रचण्ड्यां तदर्धं शतचण्ड्यां तदर्धं नवचण्ड्यामशक्तौ सर्वेभ्यः सुवर्णम् ॥ ततो दानान्याचार्यादिभ्योऽन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दद्यात् ॥ यथा विप्रं संपूज्य कपिलां गां सुवर्णादियुक्तां दद्यात ॥ आदित्यपुराणे ॥ कपिलां ये प्रयच्छन्ति

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

चैलच्छन्नां स्वलंकृताम् ॥ स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां मुक्तालाङ्गूलभूषिताम् ॥ श्वेतवस्त्रपरिच्छन्नां घण्टास्वनरवैर्युताम् ॥ घण्टास्वनरवैः कोलाहलैः ॥ सहस्रं यो गवां दद्यात्कपिलां चापि सुव्रत ॥ सममेव पुरा प्राह ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ॥ यावन्ति रोमकूपानि कपि लाङ्गे वसन्ति हि ॥ तावत्कोटिसहस्राणि वर्षाणां दिवि मोदते ॥ यमः ॥ रुक्मशृङ्गीं रौप्यखुरां मुक्तालाङ्गूलभूषिताम् ॥ कांस्योपदो हनां धेनुं वस्त्रच्छन्नामलंकृताम् ॥ दानं दत्त्वा द्विजेन्द्राय स्वर्गलोके महीयते ॥ दशधेनुप्रदानेन तुल्यैका कपिला मता ॥ याज्ञ वल्क्यः ॥ हेमशृंगी शफै रौप्यैः सुशीला वस्त्रसंयुता ॥ सकांस्यपात्रा दातव्या क्षीरिणी गौः सदक्षिणा ॥ दाता च स्वर्गमाप्नोति वत्स रान् रोमसंमितान् ॥ कपिला चेत्तारयति भूयस्त्वासप्तमं कुलम् ॥ व्यासः ॥ रुक्मशृङ्गीं रौप्यखुरां वस्त्रकांस्योपदोहनाम् ॥ सवत्सां कपिलां दत्त्वा वंशान् सप्त समुद्धरेत् ॥ यावन्ति तस्या रोमाणि सवत्साय भवन्ति हि ॥ सुरभीलोकमासाद्य रमते तावतीः समाः ॥ कालोत्तरे ॥ घण्टाचामरसंयुक्ता किङ्किणीजालमण्डिता ॥ दिव्यवस्त्रसमायुक्ता हेमदर्पणभूषिता ॥ पयस्विनी सुशीला च तरुणी वत्सकान्विता ॥ कपिला च प्रदातव्या शिवस्याग्रे विधानतः ॥ दानमन्त्रस्तु मत्स्यपुराणे ॥ कपिले सर्वभूतानां पूज नीया शिरोमणे ॥ तीर्थदेवमयी यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ इति कपिलादानविधिः ॥ कूर्मपुराणे–दशसौवर्णिके शृंगे खुराः पञ्चपलान्विताः ॥ पञ्चाशत्पलिकं ताम्रं कांस्यं वै तावदेव तु ॥ वस्त्रं तु त्रिगुणं धेन्वा दक्षिणा च चतुर्गुणा ॥ एतैरलंकृतां धेनुं घण्टाभरणभूषिताम् ॥ कपिलां विप्रमुख्याय दत्त्वा मोक्षमवाप्नुयात् ॥ द्विगुणोपस्करोपेता महती कपिला स्मृता ॥ दत्ता सा विप्र मुख्याय स्वर्गमोक्षफलप्रदा ॥ सप्तजन्मकृतात्पापान्मुच्यते दशसंयुतः ॥ यान्यान्प्रार्थयते कामांस्तांस्तान्प्राप्नोति मानवः ॥ अन्ते स्वर्गापवर्गौ च फलं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥ इति महाकपिलादानविधिः ॥ ततः रत्नदानम् ॥ यथा रत्नेषु सर्वेषु सर्वे देवाः व्यवस्थिताः ॥ तथा शान्तिं प्रयच्छन्तु रत्नदानेन मे सुराः ॥ इति नीलमणिदानम् ॥ अथ श्वेताश्वदानम् ॥ विप्रं संपूज्य ॥ अश्वं हेमपल्याण रौप्यकण्ठगजदन्तवज्रनेत्रताम्रमयखुरक्षौमपुच्छसस्वर्णललाटपट्टसुकक्षास्वायुधग्रैवेयसुवस्त्रयुतं धान्यरत्नोपरिस्थं कृत्वा मन्त्रः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मार्तण्डायुधवेगाय काश्यपाय त्रिमूर्तये ॥ जगद्दीपाय सूर्याय त्रिवेदाय नमो नम इत्युक्त्वाऽमुकशर्मणे अमुकशाखाध्यायिने सूर्य लोकनिवासकामनया देवीप्रीतिकामनया वा श्वेताश्वं तुभ्यमहं संप्रददे न ममेत्युक्त्वा दक्षिणकर्णं विप्रहस्ते दत्त्वा मन्त्रं पठेत् ॥ महार्णवे समुत्पन्न उच्चैःश्रवसपुत्रक ॥ मया त्वं विप्रमुख्याय दत्तो हय सुखी भव ॥ इमं विप्र नमस्तुभ्यमश्वं ते प्रतिपादितम् ॥ प्रतिगृह्णीष्व विप्रेन्द्र मया दत्तं सुशोभनमिति ॥ ततः सुवर्णदक्षिणां दद्यात् ॥ ततः छत्रदानम् ॥ छत्रं वर्षातपत्राणं भूषणं सर्व संपदाम् ॥ वामनप्रीतये दत्तं ब्राह्मणाय मया सह ॥ इति छत्रदानम् ॥ अथ चामरदानम् ॥ शशाङ्ककरसङ्काशं हिम डिण्डीरपाण्डुरम् ॥ प्रोत्सारयाशु दुरितं चामरं वल्लभेति च ॥ इति चामरम् ॥ अथ भूमिदानम् ॥ नमस्ते देवदेवश त्वमेव भगवान् पतिः ॥ सर्वभूतधरा धात्री जगन्मातस्त्वमेव वा ॥ वायुरग्निश्च वसवः शक्राद्याः सर्वदेवताः ॥ खेचरा भूचराः सर्वे त्वमेव परमेश्वरि ॥ एताभिर्मूर्तिभिः पाहि देवि संसारसागरात् ॥ भूप्रार्थना ॥ सर्वसस्याश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता ॥ अनन्त सस्यफलदा अतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ इति भूमिदानम् ॥ अथ शय्यादानम् ॥ अशून्यं शयनं नित्यं विष्णोः प्रीतिकरं शुभम् ॥ प्राणिनां सुखदं नित्यमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ इति शय्यादानम् ॥ अथ धान्यदानम् ॥ तृप्ति करोति भूताना मिह लोके परत्र च ॥ तस्मात्प्रदीयते धान्यमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ सप्तधान्यानि दद्यात् ॥ ततो द्वारजापकेभ्योऽन्य ब्राह्मणेभ्यश्च दक्षिणां दद्यात् ॥ ततः सर्वकलशोदकेन सामात्यं संसिच्य यजमानं देवस्य त्वेत्यादिभिर्वेदमन्त्रैः सुरास्त्वेत्यादि पौराणैश्चाभिषिञ्चेयुः ॥ ततो यजमानो नवग्रहाणामुत्तरपूजां कृत्वा विसृज्याचार्यहस्ते दत्त्वा ॥ ततः देवीं संपूज्य बलिं दत्त्वा ॥ तत्र क्षत्रियादिनाऽश्वमेषच्छागमहिषाणामन्यतरद्देयम् ॥ विप्रेण तु कूष्माण्डं बिल्वमिक्षवश्च देयाः ॥ यथा ॥ देवीं द्रोणपुष्पबिल्वाम्र दलजातिचम्पकैः इति ब्राह्मणान् संपूज्य ॥ उदङ्मुखः कर्ता पूर्वमुखं देवीमुखं वा बलिं गन्धादिनाऽभ्यर्च्य ॥ पशुस्त्वं बलि रूपेण मम भाग्यादवस्थितः ॥ प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ॥ चंडिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम् ॥ चामुण्डा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

बलिरूपाय बले तुभ्यं नमोऽस्तु ते ॥ यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ॥ अतस्त्वां घातयाम्यद्य तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः इत्यभिमन्त्र्य ऐं ह्रीं श्रीमिति तत्र पुष्पं क्षिप्त्वा ॥ रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधकः ॥ ह्रीं ह्रीं खड्ग आं हुंफट् फडिति खडिति खड्गमन्यद्वा शस्त्रं०संपूज्य ॐ कालिकाकालियज्ञेश्वरीलोहदण्डायै नम इति छेदयित्वा ॥ ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं कौशिकी रुधिरेण तृप्यतामिति देव्यै निवेद्य शेषं गृहीत्वा पूतनायै चरक्यै विदार्यै पापराक्षस्यै च निवेद्य माषपिष्टमयं शत्रुं कृत्वा खड्गेन छेदयित्वा स्कन्दाय विशाखाय च दत्त्वा बलिशेषं रक्षोभ्यो हरेत् ॥ मन्त्रस्तु ॥ ॐ ह्रीं स्फुर २ कुम्भ २ मुन २ गुल २ धनु २ मारय २ विद्रावय २ कम्पय २ कम्पातय २ कन्तापय २ पूरय २ ॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं हुं फट् फट् ॥ मर्दय मर्दय हुं इति ॥ ततः शेषेण बहिर्दद्यात् ॥ तत्र मन्त्रः बलिं गृह्णन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा ॥ मरुतोऽथाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ॥ डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥ जृम्भिकाः सिद्धगन्धर्वा माला विद्याधरा नगाः ॥ दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ॥ जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ॥ मा विघ्नं मां च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ॥ सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः ॥ ततः स्नात्वा तिलकं धृत्वा शूलिनीत्येकेन शूलेन पाहि नो देवीति चतुष्टयेन नमो देव्या इति पञ्चकेन प्रार्थयेत् ॥ रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे ॥ पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥ एतत्क्षत्रियविषयं बलिदानं न ब्राह्मणविषयम् ॥ ततः गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि प्रसादं कुरु सुंदरि इति ॥ देव्यै निवेद्य मूलेन पुष्पेण देवीमुद्वास्य नासाग्रं नीत्वा अवघ्राणं कृत्वा हृदि प्रविष्टां विभाव्य षडङ्गं कृत्वा उत्तिष्ठ० अभ्यार० विसृज्याचार्याय दत्त्वा मन्त्रं पठेत् ॥ त्रैलोक्यमातर्देवि त्वं सर्वभूतदयान्विते ॥ दानेनानेन संतुष्टा सुप्रीता वरदा भव ॥ नवरात्रे तु विशेषः दशम्यां देवीं विसर्जयेत् ॥ मन्त्रस्तु–उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च ॥ कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

शक्तिभिः सह ॥ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चण्डिके ॥ संवत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै ॥ इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम् ॥ रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम् ॥ जले प्रवाहयेत् ॥ ततोऽग्निं संपूज्य विभूतिं धृत्वा गच्छ गच्छेति विसृज्य ततो ब्राह्मणानां भोजनम् ॥ सहस्रचण्ड्यां सहस्रब्राह्मणानां भोजनम् ॥ लक्षचण्ड्यां लक्षब्राह्मणानां भोजनम् ॥ कोटिचण्ड्यां तथैव च ॥ शतचण्ड्यां शतम् ॥ नवचण्ड्यां नवब्राह्मणानां भोजनम् ॥ यथाशक्ति वा ब्राह्मणान्संभोज्य एवं सुवासिनीनां भोजनं पूजनं च कुमार्यादिपूजनं च ॥ तत्र सुगन्धतैलेनाभ्यङ्गं कारयित्वा अलंकृत्य पीठे उपवेश्य देशकालौ स्मृत्वाऽमुकफलसिद्ध्यर्थममुककर्मणि कुमारीणां पूजनं करिष्ये ॥ मूलेन षडङ्गं कृत्वा मूलमन्त्रमुच्चार्य ॥ मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम् ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ आवाह्यासनं पाद्यं च दत्त्वा उष्णोदकेन पादौ प्रक्षाल्यार्घ्याचमनं स्नानं पट्टदुकूलवस्त्रं कञ्चुकालंकारादि दत्त्वा सुगन्धेनानुलिप्य हरिद्राकुङ्कुमसिन्दूरालक्तकाञ्जनपुष्पमालाभिरभ्यर्च्य धूपदीपौ दत्त्वा पायसान्नैर्भक्ष्यैर्भोजयेत् ॥ भोजनकाले च मूलमन्त्रं सप्तशतीं वा पठेत् ॥ ततो नानाफलताम्बूलदक्षिणानीराजनपुष्पाञ्जलीन्दद्यात् ॥ एवमन्याः पूजयेत् ॥ आवाहने तु मन्त्रभेदः—मन्त्राक्षरमयीमिति सर्वत्रोक्त्वा जगत्पूज्येति० ताश्च प्रत्यहं शतं वा नव वा पूज्याः ॥ ब्राह्मणीं सर्वकार्येषु जयार्थे नृपवंशजाम् ॥ लाभार्थे वैश्यवंशोत्थां सुतार्थे शूद्रवंशजाम् ॥ दारुणे चान्त्यजातीयां पूजयेद्विधिना नर इत्युक्ता ग्राह्याः ॥ नवभिर्लभते भूमिमैश्वर्यं द्विगुणेन तु ॥ एकवृद्ध्या लभेत्क्षेममेकैकेनाश्रयं लभेत् ॥ वर्जयेत्सर्वकार्येषु दासीगर्भसमुद्भवामिति ब्राह्मणभोजनं सुवासिनीभोजनं कुमार्या भोजनं पूजनं च नवरात्रेऽपि प्रत्यहं कार्यम् ॥ यस्य स्मृत्या च० ॥ प्रमादात्कुर्वतामिति जपित्वा पूर्णतां वाचयित्वा कर्म ईश्वरार्पणं कृत्वा सुहृद्युतो भुञ्जीत ॥ इदमेव पूजाहोमबल्यादिविधानं नवरात्रेऽपि ज्ञेयम् ॥ इति श्रीडामरादितन्त्रसारे चण्डीमखमहोत्सवे नित्यचण्डीनवचण्डीशतचण्डीसहस्रचण्डीलक्षचण्डीकोटिचण्डीविधानम् ॥ एतत् सर्वं नवचण्डीवद्धोमविधानं नामाष्टमोऽवसरः ॥८॥ इति हरिकृष्णवि० बृ०ध०उ० दुर्गोपासनाध्याये पञ्चत्रिंशं प्रकरणम् ॥३५॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अथ दुर्गादीपदानविधिः ॥ नागोजीभट्टीये ॥ पूर्वाह्णे षोडशाङ्गुलमितां चतुरङ्गुलोन्नतां मृदा चतुरस्रां वेदीं स्थण्डिलं कृत्वा तत्र शुद्धगो घृतेन एकस्मिन्पात्रे त्रयोदशमुखान् त्रयोदशदीपान् सूत्रवर्तिषु प्रत्येकं दीपे रुद्रवर्तिषु वा ( अनेन त्रिचत्वारिंशदुत्तरशतवर्तिर्भवति वा त्रयोदश वर्तयः ) प्रज्वाल्य प्रथमदीपे प्रथमाध्यायदेवतामावाह्यासनपाद्यार्घ्याचमनस्नानगन्धदानान्तां पूजां कृत्वा पुष्पसमर्पण समये वक्ष्यमाणैर्नवभिः श्लोकैः प्रतिश्लोकं पुष्पाणि समर्पयेत् ॥ ततः प्रथमाध्यायं पठित्वा प्रथमाध्यायसमाप्तौ तैरेव वक्ष्यमाणै र्नवभिः श्लोकैः प्रतिश्लोकं पुष्पाणि समर्प्य धूपदीपौ दत्त्वा पायसं नैवेद्यं दत्त्वा ताम्बूलं च दत्त्वा नीराज्य एकं ब्राह्मणं कुमारीं सुवासिनीं च भोजयेत् ॥ संकल्पयेद्वा सद्यः भोजयिष्ये समयान्तरेण भोजयिष्ये इति वा संकल्पः ॥ १ ॥ एवं तत्तदध्याय देवतावाहनादिब्राह्मणभोजनपर्यन्तं प्रत्यध्यायं कुर्यात् ॥ अन्ते प्रभूतनैवेद्यादिभिर्महापूजा अनुग्रहे पूर्वाह्णे पूजासमाप्तिः निग्रहे अप राह्णे समाप्तिः ॥ श्लोकास्तु ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ १ ॥ एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ॥ २ ॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ ३ ॥ या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ४ ॥ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलो क्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ ५ ॥ अत्र वैरिविनाशनमित्यत्र रोगविनाशनमित्याद्यूहः कार्यः ॥ एवं दैत्यतापितैरित्यत्रापि ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ ६ ॥ सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि ॥ गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते ॥ ७ ॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ ८ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥ ९ ॥ एते अनुग्रहे नव श्लोकाः धनार्थं बिल्वदलैः पूजा वश्यार्थं करवीरैर्जपाकुसुमैर्वा पुत्रार्थं तुलसीदलैः पुष्ट्यर्थं पङ्कजैः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

महाकार्यार्थं प्रयोगे तु षोडशमाषैः स्वर्णमूर्तिं कृत्वा कलशस्थापनं कृत्वा अग्न्युत्तारणं प्रतिमाप्राणप्रतिष्ठां पूजनं च कृत्वा तदग्रे घण्टार्गलयन्त्रे षट्कोणयन्त्रे वा दीपं स्थापयेत् ॥ यावत्प्रयोगसमाप्तिः तावत्कलशस्थापनम् ॥ गोघृतेन दीपः ॥ पायसनैवेद्यं यन्त्रमन्त्रसर्वसाधारणं महति कार्ये तूनपञ्चाशद्दिनानि मध्ये चतुर्विंशतिः तदर्धमल्पे एवमेव मूर्तेः स्वर्णपरिमाणमपि बोध्यम् ॥ ब्राह्मणास्त्रयो महत्कार्ये प्रयोगकर्तारः ॥अल्पे एकः ॥निग्रहे तु सर्वाबाधाप्रशमनमित्यस्याग्रे एवमुक्त्वा समुत्पन्नेति पठेत् ॥ अत्र प्रयोगे क्वचित्तर्पणमप्युक्तम् ॥ तत्प्रयोगश्च पटले प्रतिपादितो द्रष्टव्यः ॥ अत्र त्रयोदशपात्रेषु त्रयोदश दीपा इत्युत्तमः पक्षः ॥ एकपात्रे त्रयोदश दीपा इति मध्यमः पक्षः ॥ एकस्मिन्नेव दीपपात्रे त्रयोदशदीपा इत्यधमः पक्षः ॥ पक्षोऽयं विधिर्दीपेषु अक्षतपुञ्जेषु जलपात्रेषु अग्निषु कुमारीषु वा कार्य इत्युपदेशः ॥ प्रत्यहं यावत्प्रयोगसमाप्तिस्त्रयोदश ब्राह्मणाः सुवासिनी कुमार्येको्ऽनुपनीतोऽष्टवर्ष एक उपनीत श्च भोजनीयः इति श्रीहृ० बृ० ध० उ० दुर्गोपा० दुर्गादीपदानविधिः नाम षट्त्रिंशं प्रकरणम् ॥३६॥ अथ दुर्गानित्यार्चनपद्धतिः ॥उक्तं च श्रीनिवासभट्टकृतचण्डीसपर्याक्रमकल्पवल्ल्याम् ॥ तत्र श्रीमत्साधको रजनीतुर्ययामे विशुध्यावश्यकं कृत्वा हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य धौते वाससी परिधायाचम्यासने समुपविश्य स्वशिरसि श्वेतसहस्रारविन्दगुरुचरणारविन्दे ध्यात्वा ॥ नमोऽस्तु गुरवे तस्मै इष्टदेव स्वरूपिणे ॥ यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ॥ इति प्रणम्य ॥ मानसोपचारैः संपूज्य मूलादिब्रह्मरन्ध्रान्तं मूलमन्त्रं तेजोमण्डलमयमुद्यत्सूर्यसहस्रभासुरं ध्यात्वा तत्तेजसा व्याप्तं स्वशरीरं परिचिन्त्य हृदयकमले महालक्ष्मीं वक्ष्यमाणरूपां ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य मूलमन्त्रं यथाशक्ति जपित्वा जपं समर्प्य स्तुत्वा प्रणम्य भगवति नित्यानुष्ठानार्थमाज्ञां देहीति प्रार्थ्य समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले ॥ विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ इति भूमिं प्रणम्य श्वासानुसारेण तस्यां पादं निधायोत्थाय बहिर्निर्गत्य विहितशौचाचमनक्रियः क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः इति मन्त्रेण दन्तधावनं विधाय मूलमन्त्रेण मुखं प्रक्षाल्याचम्य मृद्गोमयकुशतिलादिकं गृहीत्वा जलाशयं गत्वाऽस्त्राभिमन्त्रितजलेन तीरं प्रक्षाल्य तत्रास्त्राभि

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मन्त्रितं कुशादिकं निधाय तैः स्वशाखोक्तं वैदिकस्नानं विधाय तान्त्रिकस्नानं कुर्यात् ॥ तत्र नाभिमात्रजले स्थित्वा मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा मूलमन्त्रस्य ऋष्यादिकरषडङ्गन्यासांश्च कृत्वा स्वपुरतो मूलमन्त्रेण हस्तमात्रं चतुरस्रं तीर्थं परिकल्प्य क्रोमित्यङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलं भित्त्वा ॥ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ इति सूर्यमण्डलात्तीर्थमावाह्य पुरः कल्पिततीर्थमण्डले मूलमन्त्रेण संयोज्य वमित्याप्लाव्य कवचेनावगुण्ठ्या स्त्रेण संरक्ष्य धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य मूलेनाष्टवारमभिमन्त्र्य तत्र स्वेष्टदेवतां ध्यायंश्चरणतले देवतामन्त्रस्मरणपूर्वकं त्रिानमज्ज्यो न्मज्ज्य कुम्भमुद्रया मूलेन स्वशिरसि दशवारमभिषिच्य मूलेन स्वाहान्तं त्रिराचम्य मूलेनैव त्रिर्देवतां सन्तर्प्य तीरमागत्य धौते वाससी परिधायाचम्य ऊरू करौ च मृदाऽद्भिः प्रक्षाल्य मूलमन्त्राभिमन्त्रिततीर्थमृदादिनोर्ध्वमृदं विधाय मूलमन्त्रेणाभि मन्त्रितचन्दनादिसुगन्धद्रव्येण त्रिपुण्ड्रधारणं विधाय वैदिकसन्ध्यां कृत्वा तान्त्रिकसन्ध्यां कुर्यात् ॥ तत्र मूलमन्त्रेण शिखां बद्ध्वा मूलेनैव प्राणायामत्रयं कृत्वा मूलमन्त्रस्य ऋष्यादिकरषडङ्गन्यासान्विन्यस्य तत्पुरतो धेनुमुद्रया जलममृतीकृत्य मूलमन्त्रेणाष्टवार मभिमन्त्र्य तज्जलबिन्दुभिः कुशैरकारादिक्षकारान्तैरेकपञ्चाशदक्षरैः सबिन्दुभिः प्रत्यक्षरं स्वशिरः प्रोक्ष्य मूलेन च त्रिः प्रोक्ष्य सूर्यमण्डले यथोक्तरूपां देवीं ध्यात्वा दक्षिणकरे जलमादाय वामकरेण स्पृशन् लं वं रं यं हं इति पाञ्चभौतिकैर्बीजैः सप्तवार मभिमन्त्र्य मूलमन्त्रेण च त्रिरभिमन्त्रेय तज्जलं वामकरे निधाय तद्गलितविन्दुभिर्मूलमन्त्रेण च दक्षिणकराग्रेण स्वशिरसि प्रोक्ष्या वशिष्टं वामकरस्थं जलं वामानासासमीपं नीत्वा तेजोरूपं वामनासारन्ध्रेण स्वदेहान्तःप्रविष्टं ध्यात्वा तेन जलेन स्वदेहस्थं सकल कलुषं प्रक्षाल्य कृष्णवर्णं तज्जलं दक्षिणनासारन्ध्रेण विनिर्गतं विभाव्य दक्षिणकरेणादाय स्ववामभागे ज्वलद्वज्रशिलां ध्यात्वाऽस्त्र मन्त्रेण तस्यामास्फाल्य हस्तौ प्रक्षाल्य पुनर्दक्षिणकरेण जलमादाय दक्षिणनासारन्ध्रेण प्रविश्य ब्रह्मरन्ध्रस्थं चिच्चन्द्रमण्डल मध्यगतपीयूषवारिधौ मिलित्वा तन्मयेन राजदत्तविवरान्नेत्राभ्यां विनिर्गतं विभाव्य तज्जलं वामकरे निधाय तज्जलं बिन्दुभिः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ अमृतमालिनि स्वाहा इति मन्त्रेण त्रिः शिरः प्रोक्ष्य मूलमन्त्रेण त्रिराचम्याञ्जलिना जलमादायोत्थाय वक्ष्यमाणगायत्री मुच्चार्य भगवति एष तेऽर्घः स्वाहा इति त्रिधाऽञ्जलिं सूर्याभिमुखमुत्क्षिप्य मूलमुच्चार्य श्रीमहालक्ष्मीस्तृप्यतामिति त्रिः संतर्प्य प्राग्वत्प्राणायामादिकं कृत्वा सूर्यमण्डले देवीं ध्यायेत् ॥ ॐ कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारि धीमहि ॥ तन्नो दुर्गिः प्रचोद यात् ॥ इति गायत्रीं यथाशक्ति जपित्वा मूलमन्त्रमष्टोत्तरशतवारं जपित्वा जपं समर्प्य स्तुत्वा सूर्यमण्डलात्स्वहृदि देवीं विसृज्य श्रीगुरुं प्रणमेदिति त्रिषु कालेषु तान्त्रिकसन्ध्याविधिः ॥ इयं गायत्री त्रैवर्णिकैरेव जाप्या ॥ वस्तुतस्तु अस्य मन्त्रोपास नायां शूद्राणामधिकारो नास्त्येव सप्तशतीपाठस्यात्र प्रधानत्वात् ॥ सप्तशतीपाठे शूद्राणामधिकाराभावात् ॥ तथा च कालिका पुराणे ॥ मोहाद्वा कामतः शूद्रः पुराणं संहितां स्मृतिम् ॥ पठन्नरकमाप्नोति पितृभिः सह पापकृदिति शूद्राणां पुराणस्तव पाठनिषेधदर्शनात् ॥ ततः प्रातःसन्ध्यानन्तरं वैदिकतर्पणं विनिर्वर्त्य स्वपुरतो जलमेवमिति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य तत्र सचक्रां साङ्गावरणां देवीं ध्यात्वा मूलमन्त्रमुच्चार्य श्रीचण्डिका तृप्यतामित्यष्टोत्तरशतवारं तदर्धमष्टाविंशतिवारं वा देवीमुखकमले परामृतबुद्ध्या तत्तीर्थजलैः सन्तर्प्याङ्गावरणदेवताश्चामुकयस्तृप्यन्तामिति सन्तर्प्य देवीं स्वहृदि विसृज्य तीर्थं च सूर्ये विसृज्य गुरुदिक्प्रतिग्रहणात् प्रणम्य शुद्धोदकपूर्णपात्रमादाय हृदि स्वेष्टदेवतां स्मरन् मौनी स्वपदमात्रदृष्टिः स्तोत्रादिकं पठन् स्वगृहं गच्छेत् ॥ ततो द्वारे स्थितः स्वपापं स्मरन् ॥ ॐ देव त्वं प्रकृतं चित्तं पापाक्रान्तमभून्मम ॥ तन्निःसारय चित्तान्मे पापं फट् फट् कृते मम ॥ १ ॥ सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पञ्च च ॥ एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः ॥ इति पठित्वा हुं फडिति क्रोधदृष्ट्या पार्श्वद्वयमूर्ध्वमधश्चावलोक्य सुमना भूत्वा गृहान्तः प्रविश्याङ्गणे स्थित्वा पादौ प्रक्षाल्याचम्याङ्गणभूमौ गोमयोप लिप्तायां सिन्दूरादिना रचितवृत्तमण्डलमध्ये स्वासनमास्तीर्य ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नम इत्यासनं संपूज्य तत्र प्राङ्मुख उपविश्य वक्ष्यमाणसूर्यमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा शिरसि अजाय ऋषये नमः हृदये सूर्याय नमः देवतायै नम इति विन्यस्य सूर्या

Chinmа, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

यार्घ्यदाने विनियोगः इति कृताञ्जलिर्विदेत् ॥ अंगुष्ठयोःह्रां हृदयाय नमः॥तर्जन्योः ह्रीं शिरसे स्वाहा॥मध्यमयोःह्रूं शिखायै वषट्॥ अनामिकयोः ह्रैं कवचाय हुम् ॥ कनिष्ठयोः ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ करतलपृष्ठयोः ह्रः अस्त्राय फट् ॥ इति करयोर्विन्यस्य हृदयादि षडङ्गेष्वपि न्यसेत्॥ततोऽस्त्रमन्त्रेण तालत्रयं दशदिग्बन्धनं च कृत्वा ॥ रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं भानुं समस्तजगतामधिपं भजामि ॥ पद्मद्वयाभयवरान्दधतं कराब्जैर्माणिक्यमौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम् ॥ इति सूर्यं तन्मण्डले साङ्गावरणं ध्यात्वा स्वपुरत श्चतुरस्रवृत्तत्रिकोणात्मकं मण्डलं कृत्वा श्रीसूर्यात्मकाधारमण्डलाय नमः ॥ इति मण्डलं संपूज्य तत्र साधारं प्रस्थजलग्राहिताम्रपात्रं निधाय सूर्यमन्त्रेण शुद्धोदकेनापूर्य तिलयवसर्पिःश्यामाककुशाग्रगन्धाक्षतरक्तपुष्पचन्दनानि निक्षिप्य कुशैराच्छाद्य तत्पात्रं कराभ्या माच्छादयन् सूर्यमन्त्रमष्टोत्तरशतवारं जपित्वा जानुभ्यामवनीं गतस्तत्पात्रं कराभ्यामामस्तकमुद्धृत्य पूर्वोक्तरूपं सूर्यं निजेष्टदेवतो द्भेदे ध्यायन् ॥ ह्रीं हीं सः ग्रहशशिनक्षत्रयोगकरणपरिवृतासनसंस्थित श्रीसूर्य एष तेऽर्घः स्वाहा इति सूर्यायार्घ्यं दत्त्वा सूर्यमन्त्रं यथाशक्ति जपित्वा जपं समर्प्य सूर्यं स्तुत्वा प्रणम्य पूजामण्डपद्वारं गत्वा तत्र वक्ष्यमाणविधिना सामान्यार्घ्यं संस्थाप्य तदशक्तौ ताम्रादिपात्रस्थं जलं धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य विंशतिः अनेन जलेन पूजामण्डपस्य मूलमन्त्रेणाष्टवारमभिमन्त्र्य पश्चिमद्वारं प्रोक्ष्य द्वारस्योर्ध्वशाखायां मध्ये ॐ विं विघ्नराजाय नमः ॥ दक्षिणे मं महालक्ष्म्यै नमः ॥ पुनर्मध्ये द्वां द्वारश्रियै नमः ॥ द्वारस्य वाम दक्षिणशाखयोः ॐ गं गणपतये नमः ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ॐ शं शङ्खनिधिवसुधाराभ्यां नमः ॥ ॐ पं पद्मनिधिवसु मतीभ्यां नमः ॥ ॐ गं गंगायै नमः ॥ ॐ यं यमुनायै नमः ॥ ॐ धां धात्र्यै नमः ॥ ॐ वं विधात्रे नमः ॥ इति द्वन्द्वक्रमेणा धोऽधः संपूज्याधः दं देहल्यै नमः ॥ तस्या वामदक्षिणपार्श्वयोः आं ब्रह्माण्यै नमः ॥ ईं माहेश्वर्यै नमः ॥ इति द्वारपालिके संपू ज्योत्तरद्वारं गत्वा तदर्घाम्बुनाऽभ्युक्ष्य प्रागदेहल्यन्तं संपूज्य द्वारपार्श्वयोः कुं कौमार्यै नमः ॥ ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः ॥ इति संपूज्य पूर्वद्वारं गत्वा तथैवाभ्युक्ष्य तत्र विघ्नादिदेहल्यन्तमभ्यर्च्य द्वारपार्श्वयोः लं वाराह्यै नमः ॥ ऐं इन्द्राण्यै नमः इति द्वार

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पालिकां संपूज्य दक्षिणद्वारं गत्वा तथैवार्घ्यादिभिरभ्युक्ष्य विघ्नादिदेहल्यन्तं संपूज्य द्वारपार्श्वयोः ॐ चामुण्डायै नमः ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ इति द्वारपालिके संपूज्य पुनः पश्चिमद्वारे गत्वाऽस्त्रेण तालत्रयपूर्वकं द्वारमुद्घाट्य सर्षपाक्षतभस्मकुशकुसुमान्यादायास्त्रमन्त्रेण सप्तधाऽभिमन्त्र्य ॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेतगुह्यकाः ॥ ये चात्र निवसन्त्यन्ये देवता भुवि संस्थिताः ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ इत्येतदस्त्रमन्त्रान् जपन् नाराचमुद्रया मण्डपान्तः प्रक्षिप्य ॥ तस्मान्निर्गच्छतां विघ्नसंघानां स्ववामाङ्गसंकोचेन मार्गं दत्त्वाऽस्त्रमन्त्रं स्मरन् वामपार्ष्णिघातत्रयेण भौमानूर्ध्वोर्ध्वतालत्रयेणान्तरिक्षगान् तीक्ष्णदृष्ट्यवलोकनेन दिव्यानिति त्रिविधविघ्नानुत्सार्य वामपादपुरस्सरं देहलीमुल्लंघ्य वाससा द्वारमाच्छाद्य पञ्चगव्यार्घतोयाभ्यां घण्टावादनपूर्वकं मण्डपाभ्यन्तरं प्रोक्ष्य मण्डपस्य नैर्ऋतिकोणे वां वास्तुपुरुषाय नमः ॥ तत्रैव वास्त्वधीश्वराय ब्रह्मणे नमः ॥ इति संपूज्य मण्डपस्येशानकोणे रक्तवर्णाय रक्तद्वादशशक्तिसहिताय श्रीदीपनाथाय नमः ॥ इति दीपनाथं संपूज्य ॥ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥ इति भैरवाज्ञां गृहीत्वा अः फट् इति पूजावेदीं गत्वा तत्र स्थित्वा शिरसि मेरुपृष्ठाय ऋषये नमः ॥ मुखे सुतलाय छन्दसे नमः ॥ हृदये पृथिव्यै देवतायै नमः ॥ इति न्यस्यासनार्थं पृथिवीप्रार्थने विनियोग इति कृताञ्जलिर्वदेदिति ऋष्यादिकं विन्यस्य पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ इति पृथिवीं प्रार्थ्य स्वासनस्थानं मूलमन्त्रेण वीक्ष्यास्त्रेण प्रोक्ष्यास्त्रेणैव कुशैः संताड्य कवचेनाभ्युक्ष्य तत्र चैलाजिनकुशकम्बलनिर्मितं हस्तद्वयमात्रं चतुरस्रं चतुरंगुलोच्छ्रितं स्वासनमास्तीर्य मूलमन्त्रेण दशधाऽभिमन्त्रितजलेनाभ्युक्ष्य ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥ इत्यासनं संपूज्य तत्र प्राङ्मुखः पद्मस्वस्तिकसिद्धवीराद्यन्यतमेनासनेनोपविश्य आसनस्य दक्षिणाग्रे चतुष्कोणेषु प्रादक्षिण्येन गं गणपतये नमः ॥ दुं दुर्गायै नमः सं सरस्वत्यै नमः ॥ क्षं क्षेत्रपालाय नमः इतिः संपूज्य गन्धपुष्पाक्षतादीनि स्वदक्षिणहस्ते निधाय ह्रां हुं फडिति दिव्यदृष्ट्या

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

विलोक्य कर्पूरादिवासितशुद्धोदकपूर्णं वामभागस्थं कुम्भम् आं इति वामपाणिं संस्पृश्य दक्षिणकरांगुल्यग्रेण क्ष्रौं इति कुम्भस्थं जलं संस्पृश्य रं इति दीपशिखां स्पृष्ट्वा हस्तं प्रक्षाल्य कृताञ्जलिः वामे गुरुभ्यो नमः ॥ दक्षिणे गणपतये नमः ॥ अग्रे श्रीमहा लक्ष्म्यै नमः इतिप्रणम्य शरीरे पादादिजान्वन्तं जान्वादिनाभ्यन्तं नाभ्यादिकण्ठान्तं कण्ठादिभ्रूमध्यान्तं भ्रूमध्यादिब्रह्मरध्रान्तंच पृथिव्यादिपञ्चभूतानि ध्यात्वा स्वहृदयकमले जीवात्मानं प्रदीपकलिपकाभ्यासुरमाराग्रमात्रं ध्यात्वा तं सुषुम्नामार्गेण ब्रह्म रन्ध्राद्बहिः परमाकाशे निःसार्य सोऽहं मन्त्रेण परमशिवे संयोज्य पृथिव्यादिशिवान्तानि षट्त्रिंशत्तत्त्वानि च तत्रैव विलीना नीति विभाव्य केवलदेहे वामकुक्षौ पापपुरुषं ध्यायेत् ॥ यथा ॥ वामकुक्षिस्थितं पापपुरुषं कज्जलप्रभम् ॥ ब्रह्महत्याशिरः स्कन्धं स्वर्णस्तेयभुजद्वयम् ॥ सुरापानहृदा युक्तं गुरुतल्पकटिद्वयम् ॥ तत्संसार्गिपदद्वन्द्वमङ्गप्रत्यंगपातकम् ॥ उपपातक रोमाणं रक्तश्मश्रुविलोचनम् ॥ खड्गचर्मधरं क्रुद्धमनादिभवसंभवमिति ध्यात्वा वामनासापुटेन वमिति वायुमापूर्य नाभिस्थं षट् कोणाकारवायुमण्डले संयोज्य तत्र जं बीजं कृष्णवर्णं ध्यायन्कुम्भकेन यं बीजमावर्तयन् तदुत्पन्नेन महावायुना सपापपुरुषं स्वदेहं पोषयित्वा तं वायुं दक्षिणया विरेच्य पुनर्दक्षिणनासया रमिति वायुमापूर्य स्वाधिष्ठानस्थं वह्निमण्डलं संयोज्य तत्र रं बीजं रक्तवर्णं स्मरन्कुम्भकेन रं बीजमावर्तयन् तदुद्भूतेन महावह्निना सपापपुरुषं स्वदेहं संदह्य पापपुरुषभस्मना संहतं वायुं वामनासया विरेच्य पुनर्वामया वमिति वायुमापूर्य ब्रह्मरन्ध्रस्य चन्द्रमण्डले संयोज्य तत्र वं बीजं शुक्लवर्णं स्मरन् कुम्भकेन वं बीजमावर्तयंस्तन्निर्गतामृतधारया स्वदेहं भस्म संसिच्य पुनस्तं वायुं दक्षिणया विरेच्य पुनर्दक्षिणया लमिति वायुमापूर्य मूला धारे पार्थिवमण्डले चतुरस्रे संयोज्य तत्र लं बीजं पीतवर्णं संचिन्त्य कुंभकेन लं बीजमावर्तयन्नमृतप्लावितं स्वदेहभस्म घनीकृत्य तं वायुं वामया विरेच्य पुनर्वामया वायुमापूर्य मूलाधारे संयोज्य तत्र मायाबीजमुद्यत्सूर्यसमप्रभं संचिन्त्य कुंभकेन मायाबीजमावर्तयन् तेन करचरणादिनिखिलावयवसमेतं स्वदेहं विभाव्य तं वायुं दक्षिणया विरेच्य परमशिवे योजितं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

जीवात्मानं हंस इति मन्त्रेण हृदयकमलमानीय संस्थाप्य शिवादिक्षित्यन्तानि च षट्त्रिंशतत्त्वानि स्वस्वस्थाने स्थापयेत् ॥ इति भूतशुद्धिं विधाय शिरसि ब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्यः ऋषिभ्यो नमः मुखे ऋग्यजुःसामभ्यश्छन्दोभ्यो नमः हृदये श्रीप्राणशक्त्यै देवतायै नमः गुह्ये आं बीजाय नमः पादयोः ह्रीं शक्तये नमः नाभौ क्रों कीलकाय नमः इति विन्यस्य प्राणप्रतिष्ठार्थे विनियोगः ॥ इति कृताञ्जलिरुक्त्वा ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं अं कं ५ आकाशवाय्वग्निसलिलपृथिव्यात्मने आं हृदयाय नमः ॥ ॐ आंह्रींक्रौंइं चं ५ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं उं टं ५ श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं शिखायै वषट् ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं एं तं ५ वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम् ॥ ॐ आंह्रींक्रौंओं पं फं बं भं मं वचनादानविसर्गगमनानन्दात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐआं ह्रीं क्रौं अं यं १० मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट् ॥ इति मन्त्रानंगुष्ठादितलान्तं करयोर्विन्यस्य हृदयादिषडङ्गेष्वपि विन्यस्य ॥ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशाविक्षुशरासबाणान् ॥ शूलं कपालं दधतीं कराब्जै रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम् ॥ वामाद्यूर्ध्वयोराद्ये तदाद्यधस्थयोरपरे इत्यायुधध्यानम् ॥ बाणान् पुष्पबाणान् इक्षुशरासनयोगादिति ॥ इति ध्यात्वा ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हों हंसः सोऽहं मम प्राणा इह प्राणा मम जीवइहस्थितः मम सर्वेन्द्रियाणि मम वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ इति मन्त्रं हृदयं स्पृशन् जपेदिति ॥ ततो मातृकावर्णैः प्राणायामत्रयं कृत्वा मातृकान्यासं कुर्यात् ॥ तत्र स्वरैः पूरकः काद्यैः कुम्भको याद्यैः रेचक इति मातृका प्राणायामो ज्ञेयः ॥ ततः शिरसि ब्रह्मणे ऋषये नमः ॥ मुखे गायत्रीछन्दसे नमः ॥ हृदि मातृकासरस्वत्यै देवतायै नमः ॥ गुह्ये हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः ॥ पादयोः स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः ॥ नाभौ व्यक्तये कीलकाय नम इति विन्यस्य मम मातृकान्यासे विनियोगः इति कृताञ्जलिरुक्त्वा ॥ ॐ अं कं ५ आं हृदयाय नमः ॥ ॐ इं चं ५ ईं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ उं टं ५ ऊं शिखायै वषट् ॥ ॐ एं तं ५ ऐं कवचाय हुम् ॥ ॐ ओं पं ५ औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ अं यं १० अः अस्त्राय फट् ॥ इत्यंगुष्ठादितलान्तं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

करयोर्विन्यस्य हृदयादिषडङ्गेष्वपि न्यसेत् ॥ ततः पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादयुक्कुक्षिवक्षोदेशां भास्वत्कपर्दाकलित शशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ॥ अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरा त्रीक्षणां पद्मसंस्थामच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि ॥ दक्षोर्ध्वकरमारभ्य दक्षाधःकरपर्यन्तमायुधध्यानं चिन्तालिखितं पुस्तकं कुम्भः सुधाकुम्भ इति ध्यात्वा शिरसि अं नमः मुखावृत्ते आं नमः दक्षनेत्रे इं नमः वामनेत्रे ईं दक्षिणकर्णे उं वामकर्णे ऊं दक्षनासापुटे ऋं वामे ॠं दक्षगण्डे लृं वामगण्डे लॄं ओष्ठे एं अधरे ऐं ऊर्ध्वदन्ते ओं अधोदन्ते औं जिह्वाग्रे अं तालुमूले अः दक्षबाहुमूले कं कूर्परे खं मणिबन्धे गं अंगुलीमूले घं अंगुल्यग्रे ङं वामबाहुमूले चं कूर्परे छं मणिबन्धे जं अंगुलिमूले झं अंगुल्यग्रे ञं दक्षिणमूले टं जानुनि ठं गुल्फे डं अंगुलीमूले ढं अंगुल्यग्रे णं वामपादमूले तं जानुनि थं गुल्फे दं अंगुलीमूले धं अंगुल्यग्रे नं दक्षपार्श्वे पं वामपार्श्वे फं पृष्ठे बं नाभौ भं उदरे मं हृदि यं दक्षिणांसे रं ककुदि लं वामांसे वं दक्षभुजे शं वामे षं दक्षपादे सं वामे हं उत्तरे लं सर्वाङ्गे क्षम् ॥ यद्वा हृदय एव यकारादि दशाक्षराणि ॥ त्वगसृग्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्र ऊर्जप्राणशक्त्याख्येऽप्येकमेकमक्षरं न्यसेत ॥ यथा त्वचि यं असृजि रं इत्यादि न्यसेदिति मातृकां विन्यस्य मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा शिरसि ब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्यः ऋषिभ्यो नमः ॥ मुखे गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दोभ्यो नमः ॥ गुह्ये परमशिवलिङ्गाय बीजाय नमः ॥ पादयोः कालीशिवदूतीभ्य अजावतीभ्यः शक्तिभ्यो नम इति विन्यस्य मम सर्वाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ इति कृताञ्जलिरुक्त्वा ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हृदयाय नमः ॥ एवं शिरसे स्वाहा शिखायै वषट् कवचाय हुं नेत्रत्रयाय वौषट् अस्त्राय फट्॥इति कनिष्ठिकादितलांतं करयोर्विन्यस्य हृदयादिषडंगेष्वपि न्यसेत्॥अत्र करन्यासैः कर तलकरपृष्ठकरभमणिबन्धेष्वस्त्रं न्यसेदिति विवेकः ॥ अथ पूर्वाङ्गे ॐ ह्रीं ब्रह्माणि मे पूर्वे पातु नमः ॥ आग्नेये ॐ ह्रीं माहेश्वरी मे अग्नेये पातु नमः ॥ एवं कौमारी मे दक्षिणे पातु० वैष्णवी मे नैर्ऋत्यां पातु० वाराही मे पश्चिमे पातु० इन्द्राणी मे वायव्यां पातु० चामुण्डा मे उत्तरे पातु महालक्ष्मीर्मे ईशान्यां पातु० व्योमेश्वरी मे ऊर्ध्वं पातु० सप्तद्वीपेश्वरी मे मध्यं पातु० नागेश्वरी मे

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अधः पातु० नमः इति ॥ स्वशरीरे पूर्वाद्यष्टदिक्कल्पनया स्वाग्राद्यष्टस्थानानि प्रादक्षिण्येन परिकल्पितेषु स्थानेषु शिरो गुह्यपादेषु चैकादशस्थानेष्वेकादश देवीर्न्यसेत् ॥ इति प्रथमो न्यासः ॥ १ ॥ ततः पूर्वाङ्गे ॥ ॐ ह्रीं मम पूर्वाङ्गं नन्दजा पातु नमः एवं दक्षिणांगं रक्तदन्तिका पश्चिमांगं शाकंभरी वामांगं दुर्गा मूर्धादिपादान्तं भीमा पादादिमूर्धान्तं भ्रामरी इति द्वितीयो न्यासः ॥ २ ॥ पादादिनाभिपर्यन्तं ब्रह्मा पातु नमः ॥ नाभेः कण्ठपर्यन्तं विष्णुः पातु नमः ॥ कण्ठाद्ब्रह्मरन्ध्रान्तं रुद्रः पातु नमः ॥ पादयोः हंसः पातु नमः ॥ करद्वये वैनतेयः पातु नमः ॥ नेत्रयोः वृषभः पातु नमः ॥ सर्वांगे जनार्दनः पातु नमः ॥ ब्रह्मरन्ध्रे हरिः पातु नमः ॥ इति तृतीयो न्यासः ॥ ३ ॥ मध्यदेशे महालक्ष्म्यै नमः ॥ मस्तके सरस्वत्यै नमः ॥ पादयोः महाकाल्यै नमः ॥ करयोः सिंहाय नमः ॥ नेत्रयोः परमहंसाय नमः ॥ पादयोः महिषसहिताय प्रेताय नमः ॥ सर्वांगे महेशाय नमः ॥ पुनः सर्वांगे चण्डिकायै नमः ॥ इति चतुर्थो न्यासः ॥ ४ ॥ ब्रह्मरन्ध्रे ॥ ॐऐं नमः दक्षकर्णे ॥ ॐ ह्रीं नमः वामे ॥ ॐ क्लीं नमः दक्षनेत्रे ॥ ॐ चां नमो वामे ॥ ॐ मुं नमः दक्षनासायाम् ॥ ॐ डां नमः वामे ॥ ॐ यैं नमः मुखे ॥ ॐ विं नमः लिंगे ॐ च्चें नमः गुदे ॥ इति पञ्चमन्यासः ॥ ५ ॥ ॐ ऐं नमः लिंगे ॥ ॐ ह्रीं नमः मुखे ॥ ॐ क्लीं नमः वामनासायाम् ॥ ॐ चां नमः दक्षनासायाम् ॥ ॐ मुं नमः वामनेत्रे ॥ ॐ डां नमः दक्षनेत्रे ॥ ॐ यैं नमः वामकर्णे ॥ ॐ विं नमः दक्षकर्णे ॥ ॐ च्चें नमः० इति षष्ठन्यासः ॥ ६ ॥ स्वपूर्वांगे मूर्द्धादिपादान्तं मूलमन्त्रमुच्चार्य नमः ॥ एवं दक्षपार्श्वे पृष्ठभागे वामभागे पुनर्वामे पृष्ठे दक्षभागे पूर्वांगे च व्यापकत्वेन न्यसेत् ॥ इति सप्तमः ॥ ७ ॥ ततो मूलमन्त्रमुच्चार्य हृदयाय नमः ॥ एवं शिरसे स्वाहेत्यादिषडंगक्रम मुच्चार्य हृदयाय नमः एवं शिरसे स्वाहेत्यादिषडङ्गक्रमयोगेन न्यसेत् ॥ इति अष्टमः ॥ ८ ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणा भुशुण्डी परिघायुधा ॥ इति ध्यात्वा श्लोकं कृष्णवर्णं ध्यायन्सर्वांगे मूर्धादिपादान्तं व्यापकत्वेन विन्यस्य पुनः शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥ १ ॥ प्राच्यां



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी ॥ २ ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विच रन्ति ते ॥ यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ ३ ॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसंगीनि तैरस्मान्रक्ष सर्वतः ॥ ४ ॥ इति श्लोकचतुष्टयं बालार्कवर्णं ध्यायन् व्यापकत्वेन विन्यस्य पुनः सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसम न्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ॥ १ ॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तुते ॥ २ ॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोस्तु ते ॥ ३ ॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ ४ ॥ असुरासृग्वसापङ्कचर्चित स्ते करोज्वलः ॥ शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ ५ ॥ इति श्लोकपञ्चकम् ॥ शुद्धस्फटिकसङ्काशं शुद्धविद्या प्रदायकम् ॥ शुद्धपूर्णचिदानन्दं सदाशिवमहं भजे ॥ ६ ॥ ध्यायन्सर्वांगे व्यापकत्वेन विन्यस्य योनिमुद्रां बद्ध्वा स्वात्मानं देवीरूपं ध्यायन् दर्शयित्वा हृदि महालक्ष्मीं ध्यायेत् ॥ इति नवमः ॥ ९ ॥ अत्र पूर्वोक्तमातृकान्यासषडङ्गन्यासाभ्यां सह एकादश न्यासा बोद्धव्याः ॥ अथ ध्यानम् ॥ तत्र स्वहृदये वक्ष्यमाणं पूजापीठं विभाव्य तन्मध्ये वक्ष्यमाणं मूलमन्त्रस्य बीजत्रयं ध्यात्वा तत्र मध्य बीजेन श्रीमहालक्ष्मीं सर्वदेवशरीरतेजसोद्भूतां ध्यायेत् ॥ यथा सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूताऽमितप्रभा ॥ त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला ॥ रक्तमध्या रक्तपादा रक्तजङ्घोरुरुन्मदा ॥ विचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा ॥ चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ॥ आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात् ॥ अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा ॥ चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः ॥ शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः ॥ अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनम् ॥ सर्वदेव मयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप ॥ पूजयन्सर्वदेवानां लोकानां च प्रभुर्भवेत् ॥ इति महालक्ष्मीं स्वैक्येन ध्यात्वा तस्या

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दक्षिणे प्रथमबीजे महाकालीं ध्यायेत् ॥ दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाऽञ्जनप्रभा ॥ त्रिशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया ॥ स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपाऽपि भूमिप ॥ रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियाम् ॥ खड्गबाणगदाशूलचक्रपाश भुशुण्डिभृत् ॥ परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्चोतद्रुधिरं दधौ ॥ एषा सा वैष्णवी माया कालरात्रिर्दुरत्यया ॥ आराधिता वशीकुर्यात्पूजा कर्तुश्चराचरम् ॥ इति महाकालीं ध्यात्वा महालक्ष्म्या वामभागे सरस्वतीं तृतीयबीजे ध्यायेत् ॥ यथा–गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणान्विता ॥ साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ दधौ साऽष्टभुजा बाणान्मुसलं चक्रशूलभृत् ॥ शङ्खं च लाङ्गलं घण्टां कार्मुकं वसुधाधिप ॥ एषा संपूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति ॥ दक्षिणाधःकरक्रमादिति तिसृणामपि देवाना मायुधध्यानं ज्ञेयम् ॥ दक्षिणाधःकरादि वामाधःकरान्तमित्यर्थः ॥ ९ ॥ इति श्रीमहासरस्वतीं ध्यात्वा वक्ष्यमाणपीठपूजा पुरःसरं महालक्ष्मीं सांगां सावरणां मानसैरुपचारैः संपूज्य स्वमूलाधारे आत्मान्तरात्मपरमात्मज्ञानात्मरूपं चतुरस्रकुण्डं कुण्डल्यग्निं समुज्ज्वलं ध्यात्वा मूलमन्त्रमुच्चार्य अहन्तां जुहोमि स्वाहा ॥ पुनर्मूलम् असत्यं जुहोमि स्वाहा ॥ इत्येवमहन्ता ऽसत्यपैशुन्यकामक्रोधलोभमोहमदमत्सर्याणि सुषुम्नास्रुग्युक्तमनःस्रुवेण पृथक्पृथग्घुत्वा निर्दग्धनिखिलवैरिगणः स्थिरचित्तो मूलमन्त्रं यथाशक्ति जपित्वा जपं देव्यै समर्प्य बाह्यपूजामारभेत् ॥ तत्र स्वर्णादिरचिते पीठे चन्दनकुंकुमकर्पूरादिसुगन्धद्रव्यैः कर्णिकाकेसरदलदलाग्रपरिशेषयुक्तमष्टदलकमलं निर्माय तत्कर्णिकायां षट्कोणमण्डलं कृत्वा तन्मध्ये मूलमन्त्रस्याद्यबीजत्रयं स्ववामादिक्रमेण पङ्क्त्याकारेण विलिख्य स्वाग्रादिषट्कोणेषु प्रादक्षिण्येन चतुर्थवर्णाद्यक्षरषट्कं विलिख्य बहिश्चतुर्द्वारयुक्तचतु रस्रत्रयेण वेष्टयेदिति पूजाचक्रं निर्माय स्वपुरतः चन्दनादि पीठे संस्थाप्य तदुपरि मूलमन्त्रेण कृताञ्जलिं निक्षिप्य स्ववामाग्रे चन्दनेनालिप्तभूमौ चतुरस्रावर्तं अष्टदलषट्कोणत्रिकोणमण्डलं कृत्वा तन्मध्ये मूलमुच्चार्य श्रीमहालक्ष्म्या अर्घाधारमण्डलाय नमः इत्यभ्यर्च्य त्रिषु कोणेष्वाद्यबीजत्रयेण संपूज्य षट्कोणेषु शिष्टवर्णैः संपूज्य चतुरस्रे अग्नीशासुरवायव्यकोणेषु मध्ये चतु

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दिंक्षु च क्रमेण षडंगानि संपूज्य मूलमन्त्रेणाधारं प्रक्षाल्य ॐ महालक्ष्म्या अर्घाधारं संस्थापयामीति मण्डलमध्ये संस्थाप्य ॐ मं वं वह्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहालक्ष्म्या अर्घाधाराय नमः ॥ इत्याधारं संपूज्य तत्र धूम्रार्चिरित्यादिवह्नेर्दशकला इहागच्छत तिष्ठतेति वह्नेर्दश कलाः समावाह्य संस्थाप्य तत्र पूर्वोक्तप्राणप्रतिष्ठामन्त्रे ममपदस्थाने धूम्रार्चिरादीनामिति पदं दत्त्वा प्राणप्रतिष्ठामन्त्रजपं तासां प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा ॥ यं धूम्रार्चिषे नमः ॥ रं ऊष्माय नमः ॥ लं ज्वलिन्यै नमः ॥ वं ज्वालिन्यै नमः ॥ शं विस्फुलिंगिन्यै नमः ॥ षं सुश्रियै नमः ॥ सं सुरूपायै नमः ॥ हंकपिलायै नमः॥ ळं हव्यवाहायै नमः ॥ क्षंकव्यवाहायै नमः ॥ इति वृत्ताकारेण वामादिप्रादक्षिण्येन संपूज्य स्वर्णादिरचितं पात्रमस्त्रेण क्षालितं धूपवासितं गृहीत्वा महालक्ष्म्या अर्घ पात्रं संस्थापयामीति तस्मिन्नाधारं संस्थाप्य अं अर्कमण्डलायार्घप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहालक्ष्म्या अर्घपात्राय नम इति संपूज्य तत्र भूमौ लिखितं मण्डलं विभाव्य तथैव मध्यादिचतुरस्रान्तं सम्पूज्य तत्र सूर्यस्य द्वादश कलाः समावाह्य संस्थाप्य प्राग्वत्तापिन्यादिना प्राणप्रतिष्ठां विधाय वृत्ताकारेण ॐ कं भं तपिन्यै नमः ॐ खं बं तापिन्यै नमः ॥ ॐ गं फं धूम्रायै नमः ॥ ॐ घं पं मरीच्यै नमः ॥ ॐ ङं नं ज्वालिन्यै नमः ॥ चं धं रुच्यै नमः ॥ ॐ छं दं सुषुम्नायै नमः ॥ ॐ जं थं भोगदायै नमः॥ॐ झं तं विश्वायै नमः ॥ ॐ ञं णं बोधिन्यै नमः ॥ टं ठं धारिण्यै नमः ॥ ॐ डं ढं क्षमायै नमः ॥ इति प्रादक्षिण्येन संपूज्य कुम्भस्थं जलं पात्रान्तरेणादाय मूलमुच्चार्य ॥ क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं इति विलोममातृकान्ते पुनर्मूलमन्त्रमुच्चारयन् तेन जलेनार्घपात्रमापूर्य ॐ सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहालक्ष्म्या अर्घामृताय नमः ॥ इत्यर्घजलं संपूज्य तत्र प्रागुक्तमण्डलं विभाव्य तथैव संपूज्य तत्र सोमस्य अमृतादिषोडशकलाः प्राग्वद्वाह्य संस्थाप्य प्राग्वत्तासां प्राणप्रतिष्ठां विधाय बहिर्वृत्ताकारेण ॥ ॐ अं अमृतायै नमः ॐ आं मानदायै नमः ॥ ॐ इं इषायै नमः ॥ ॐ ईं तुष्ट्यै नमः ॥ ॐ उं पुष्ट्यै नमः ॥ ॐ ऊं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

रत्यै नमः ॥ ॐ ॠं धृत्यै नमः ॥ ॐ ॠं वशिन्यै नमः ॥ ॐ ऌं चण्डिकायै नमः ॥ ॐ ॡं कान्त्यै नमः॥ ॐ एं ज्योत्स्नायै नमः॥ ॐ ऐं श्रियै नमः ॥ ॐ ओं प्रीत्यै नमः ॥ ॐ औं अङ्गदायै नमः ॥ ॐ अं पूर्णायै नमः ॥ ॐ अः पूर्णामृतायै नमः ॥ इति प्रादक्षिण्येन सोमस्य षोडश कलाः संपूज्य तत्र प्राग्वत्सूर्यमण्डलात्तीर्थमावाह्य तत्र मूलमन्त्रेण योनिमुद्रया संयोज्य शिखा मन्त्रेण ज्वालिनीमुद्रां प्रदर्श्य तत्र देवीं ध्यात्वा षडङ्गानि विन्यस्य शङ्खमुद्रयाऽऽवष्टभ्य योनिमुद्रयोद्दिश्य धेनुमुद्रयाऽमृती कृत्य मूलमन्त्रेणाष्टवारमभिमन्त्र्यास्त्रमन्त्रेण चक्रमुद्रया संरक्ष्य मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छादयेदित्यर्घपात्रं संस्थाप्य तस्योत्तरतस्त्रिकोण मण्डलत्रयं कृत्वा मण्डलत्रये साधारं सजलं पात्रद्वयं दधिमधुघृतयुक्तकांस्यपात्रमेकमिति पात्रत्रयं संस्थाप्य तेषु किंचित्किंचिदर्घ्योदकं गन्धादिकं च दत्त्वा मूलेन पृथक्पृथगष्टवारमभिमन्त्रयेत् ॥ अत्र तृतीयं मधुपर्कपात्रं ततः स्वदक्षिणाग्रे त्रिकोणमण्डलद्वये साधारं सजलं पात्रं निधाय तत्रार्घजलपात्रान्तरेणोद्धृत्य किंचित्किंचिद्दत्त्वा गन्धाक्षताभिराक्षिप्य मूलेनाष्टवारमित्यभिमन्त्रयेदिति पुनराचमनीयपात्रं प्रोक्षणीपात्रं च संस्थाप्य प्रोक्षणीजलेन स्वात्मानं पूजोपकरणानि च प्रोक्ष्य स्वशरीरं गन्धादिभिरलंकृत्य स्वात्मानं देवीरूपं ध्यायन् शिरोहृदयगुह्यपादसर्वाङ्गेषु पुष्पाञ्जलीन्मूलेन दत्त्वा पूर्ववन्मूलाधारे चतुरस्रकुण्डं संचिन्त्य तत्र तथैव कुण्डलिनीं वह्निरूपां विभाव्य मूलमन्त्रान्तर्धर्माधर्मे हि विदीप्त आत्माग्ने मनसा स्तुत्वा सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम् ॥ पुण्यं जुहोमि स्वाहा एवं पुण्यापुण्यकृत्याकृत्यसंकल्पविकल्पधर्मान्पृथक्पृथग्घुत्वा पुनर्मूलमुच्चार्य प्रकाशामर्शहस्ताभ्यामवलम्ब्यात्मनि स्रुचं धर्माधर्मकलास्नेहं पूर्णवह्नौ जुहोम्यहम् ॥ अधर्मं जुहोमि स्वाहा ॥ इति पूर्णाहुतिं हुत्वा श्रीमहालक्ष्म्या रूपमात्मानं ध्यायेत् ॥ मूलमन्त्रमष्टोत्तरशतं जपित्वा जपं समर्प्य पूजापीठमर्घोदकेनाभ्युक्ष्य षट्कोणे ॐ ओंकाराय पीठाय नमः ॥ अष्टदल कमले ॐ पूर्णगिरिपीठाय नमः ॥ चतुरस्रे ॐ कां कामरूपपीठाय नमः ॥ इति संपूज्य पूजापीठस्य बहिश्चतुर्दिक्षु स्वाग्रमारभ्य प्रादक्षिण्येन ॐ गं गणेशाय नमः ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ ॐ बं बटुकाय नमः ॥ इति संपूज्य पीठस्या

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ग्रेयकोणेषु ॐ जं जयायै नमः ॥ ॐ विं विजयायै नमः ॥ ॐ अं अपराजितायै नमः ॥ ततः पद्मनालमूले ॐ आं आधार शक्तये नमः ॥ ॐ कूं कूर्माय नमः ॥ ॐ शें शेषाय नमः ॥ ॐ पृं पृथिव्यै नमः ॥ ॐ नां नालाय नमः ॥ॐ पं पद्माय नमः ॥ इति संपूज्याष्टदलकर्णिकायां षट्कोणाद्बहिः पूर्वदिशि स्वदक्षिणादिवामान्तम् ॐ विं विष्णुमायायै नमः ॥ ॐ चें चेतनायै नमः ॥ ॐ बुं बुद्ध्यै नमः॥ ॐ निं निद्रायै नमः ॥ ॐ क्षुं क्षुधायै नमः ॥ इति पञ्च शक्तीः संपूज्य दक्षिणदिशि ॐ छां छायायै० ॥ ॐ शं शक्त्यै० ॥ तृं तृष्णायै० ॥ ॐ क्षां क्षान्त्यै० ॥ ॐ श्रं श्रद्धायै० ॥ ॐ कां कान्त्यै० ॥ ॐ लं लक्ष्म्यै० ॥ॐ धृं धृत्यै० ॥ ॐ वृं वृत्त्यै नम इति संपूज्योत्तरदिशि ॐ स्मृं स्मृत्यै० ॥ ॐ दं दयायै० ॥ ॐ तुं तुष्ट्यै ॥ ॐ पुं पुष्ट्यै० ॥ ॐ मां मात्रे० ॥ ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः इति षट् शक्तीः संपूजयेत् ॥ इति प्रादक्षिण्येन त्रयोविंशद्देवताः संपूज्य कर्णिकामध्यस्य मध्यबीजे मूल मुच्चार्य श्रीमहालक्ष्म्या मूर्तिं ध्यायामि नमः ॥ इति ध्यानोक्तमूर्तिं परिकल्प्य पुनर्मूलमुच्चार्य श्रीमहालक्ष्म्या मूर्तये नमः ॥ इति मूर्तिं संपूज्य कराभ्यां पुष्पाञ्जलिमादाय हृदयकमले यथोक्तरूपां साङ्गां सावरणां महालक्ष्मीं ध्यात्वा तेजोरूपामावाह्यापाद्य सुषु म्नावर्त्मना ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा प्रवहन्नासारन्ध्रेण करस्थपुष्पाञ्जलिं मूलेनैतत्तेजः समानीय ॥ ॐ महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्द विग्रहे ॥ सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि ॥ इति पठित्वा मूलमुच्चार्य श्रीमहालक्ष्मि इहागच्छागच्छेति कल्पितमूर्तेः शिरसि पुष्पा ञ्जलिप्रक्षेपेण तत्तेजस्तस्यां मूर्तौ ब्रह्मरन्ध्रे संयोज्यावाहनीं मुद्रां प्रदर्श्य ॥ ॐ देवेशि भक्तिसुलभे सर्वावरणसंयुते ॥ यावत्त्वां पूज यिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भवेति प्रार्थ्य मूलमुच्चार्य श्रीमहालक्ष्मि इह तिष्ठ तिष्ठेति स्थापनीमुद्रां प्रदर्श्य मूलं श्रीमहालक्ष्मीः इह सन्निधेहि इति सन्निधापनमुद्रया सन्निधाप्य पुनर्मूलं श्रीभगवति इह सन्निरुद्धा भव सन्निरुद्धा भवेति सन्निरोधनीमुद्रया सन्निरुध्य पुन र्मूलं श्रीभगवति इह संमुखीभव संमुखीभवेति संमुखीकरणमुद्रया संमुखीकृत्य पुनर्मूलं श्रीभगवति इहावगुण्ठिता भवेत्यवगुण्ठनमुद्र याऽवगुण्ठ्य देव्या अङ्गेषु षडङ्गानि विन्यस्य मूलमुच्चार्य श्रीभगवति संकलीकृता भवेत्युक्त्वा पुनर्मूलं श्रीभगवत्यमृतीकृता भवेति

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

देव्याः शिरसि धेनुमुद्रां प्रदर्शयन्नमृतवृष्टिं सञ्चिन्त्य पुनर्मूलं श्रीभगवति परमीकृता भवेति परमीकरणमुद्रां बद्ध्वा परमामृतमयीं भाव येदिति नव मुद्रा प्रदर्श्यार्घोदकेन देवीं संप्रोक्ष्य पूर्वोक्तप्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण मम पदस्थाने श्रीमहालक्ष्म्या इति पदं दत्त्वा प्राण प्रतिष्ठामन्त्रं जपन् देव्या हृदयं स्पृशन् देव्याः प्राणप्रतिष्ठां विधाय अक्षमालाकमण्डलुबाणखड्गवज्रगदाचक्रत्रिशूलपरशुशङ्ख घण्टापाशशक्तिदण्डचर्मचापपानपात्रकमण्डल्वाख्या अष्टादश मुद्राः प्रदर्श्य मूलेन संपूज्य योनिमुद्रां च प्रदर्श्य मूलमुच्चार्य श्रीमहालक्ष्म्यै नमः इति पुष्पाञ्जलित्रयेण संपूज्य मूलमुच्चार्य श्रीभगवति एतत्ते आसनं नम इति पुष्पादिकमासनं दत्वा मूलेन देवीं संपूज्य पुनर्मूलं श्रीभगवति एष तेऽर्घः स्वाहा इत्यर्घपात्रात्पात्रान्तरेण जलमुद्धृत्य देव्याः शिरसि धेनुमुद्रां प्रदर्श्य पुनर्मूलं देवीं संपूज्य पुनर्मूलं श्रीभगवति एतत्ते पाद्यं नमः इति पाद्यपात्राज्जलमुद्धृत्य देव्याः पादयोर्दत्त्वा पुनर्मूलेन देवीं संपूज्य पुनर्मूलमुच्चार्य श्रीभगवति एतत्ते आचमनीयं सुधेत्याचमनीयपात्राज्जलमुद्धृत्य देव्या मुखकमले दत्त्वा पुनर्मूलेन संपूज्य पुनर्मूलं श्रीभगवति एष ते मधुपर्कः सुधेति देव्या मुखकमले दधिमधुघृतात्मकं मधुपर्कं दत्त्वा पुनर्मूलेन देवीं संपूज्य पुनराचमनीयपात्रात्पूर्ववदाचमनीयं निवेद्य तथैव संपूज्य श्रीभगवति एतत्ते स्नानीयं नमः इति सुगन्धघृततैलेनाभ्यज्य सुगन्ध कमलाद्युद्वर्तनं परिकल्प्य शुद्धजलैरभिषिच्य प्राग्वदाचमनीयं दत्त्वा प्राग्वमूलेन संपूज्य श्रेयसीं मुद्रां प्रदर्श्य मूलं श्रीभग वति एतत्ते वासो नमः इति चित्रदुकूलद्वयं परिधाप्य प्राग्वदाचमनीयं दत्त्वा मूलेन संपूज्य श्रीभगवति एष ते गन्धो नमः इति गन्धं समर्प्य गन्धमुद्रां प्रदर्श्य पुनर्मूलेन सपूज्य श्रीभगवति इमानि पुष्पाणि वौषडिति नानाविधानि सुगन्धपुष्पाणि समर्प्य पुष्पमुद्रां प्रदर्श्य श्रीभगवति परिवारपूजार्थमनुज्ञां देहीति प्रार्थ्य देव्या दक्षिणभागे प्रथमबीजे स्थितां महाकालीं प्राग्वत् ध्यात्वा ॐ ऐं काल्यै नम इति गन्धादिभिः संपूज्य देव्या वामभागे तृतीयबीजे स्थितां महासरस्वतीं पूर्वोक्तरूपा ध्यात्वा ॐ क्लीं महासरस्वत्यै नम इति गन्धादिभिः संपूज्य महालक्ष्म्याः पृष्ठे ॐ ब्रह्मसरस्वतीभ्यां नमः महाकाल्याः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पृष्ठे ॐ रुद्रगौरीभ्यां नमः महासरस्वत्याः पृष्ठे ॐ हृषीकेशलक्ष्मीभ्यां नमः इति संपूज्य महालक्ष्म्यग्रदक्षाग्रे ॐ सिंहाय नमः वामाग्रे ॐ महिषासुराय नमः षट्कोणेषु देव्यग्रकोणमारभ्य प्रादक्षिण्येन ॐ नं नन्दजायै नमः ॥ ॐ रं रक्त दन्तिकायै नमः ॥ ॐ शां शाकंभर्यै नमः ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ ॐ भीं भीमायै नमः ॥ ॐ भ्रां भ्रामर्यै नमः इति संपूज्य षट्कोणाद्बहिः कर्णिकायामेव आग्नेये ॥ ॐ आद्यबीजत्रयं हृदयाय नमः एवमेव ईशाने शिरसे नमः ॥ नैर्ऋत्यां शिखायै नमः ॥ वायव्यां कवचाय नमः ॥ देव्यग्रे नेत्रत्रयाय नमः ॥ देव्यग्रादिचतुर्दिक्षु अस्त्राय नमः इति षडङ्गानि संपूज्याष्टदले देव्यग्रमारभ्य प्रादक्षिण्येन ॐ ब्रं ब्रह्माण्यै नमः ॥ ॐ मां माहेश्वर्यै नमः ॥ ॐ कौं कौमार्यै नमः ॥ ॐ वैं वैष्णव्यै नमः ॥ ॐ वां वाराह्यै नमः ॥ ॐ नां नारसिंह्यै नमः ॥ ॐ इं इन्द्राण्यै नमः ॥ ॐ चां चामुण्डायै नमः ॥ इति संपूज्य चतुरस्रप्रथमवीथ्यां देव्यग्रमारभ्य प्राद क्षिण्येन ॐ लं इन्द्राय नमः ॥ ॐ रं अग्नये नमः ॥ ॐ टं यमाय नमः ॥ क्षं निर्ऋतये नमः ॥ ॐ वं वरुणाय नमः ॥ ॐ यं वायवे नमः ॥ ॐ सं सोमाय नमः ॥ ॐ ईं ईशानाय नमः ॥ इति संपूज्य पूर्वेशानयोर्मध्ये आं ब्रह्मणे नमः ॥ निर्ऋतिवरुण योर्मध्ये ह्रीं अनन्ताय नमः ॥ इति संपूज्य वीथ्याम् ॐ वं वज्राय नमः॥ ॐ शं शक्त्यै०॥ ॐ दं दण्डाय०॥ ॐ खं खड्गाय०॥ ॐ पां पाशाय नमः ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥ ॐ गं गदायै नमः ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥ ॐ चं चक्राय नमः इति संपूज्य मूलमुच्चार्य साङ्गायै सपरिवारायै श्रीमहालक्ष्म्यै नम इति त्रिः पुष्पाञ्जलिं संपूज्य मूलमुच्चार्य श्रीभगवति एष ते धूपो नमः ॥ इति धूपं निवेद्य धूपभाजनं स्वदक्षिणाग्रे निवेश्य धूपमुद्रां प्रदर्श्य मूलेन देवीं संपूज्य मूलमुच्चार्य श्रीभगवति एष ते दीपो नम इति दीपं निवेद्य स्ववामाग्रे दीपभाजनं निवेश्य दीपमुद्रां प्रदर्श्य नानाविधं नैवेद्यं स्वर्णादिपात्रे निधाय देव्याः पुरतः चतुरस्रे मण्डले साधारं पात्रं संस्थाप्य अस्त्रेण प्रोक्ष्य वमिति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य मूलेनाष्टवारमभिमन्त्र्य हस्तेनार्घोदकमादाय ॥ हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम् ॥ पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि इति नैवेद्योपरि चुलुकोदकं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

समर्प्य ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहेति जलं दत्त्वा प्राणादिपञ्चमन्त्रैस्तत्तन्मुद्रया पञ्च ग्रासान्ग्राहयित्वा देवीं भुञ्जानां भावयन् मूलं दशवारं जपित्वा स्वर्णादिपात्रे कर्पूरादिसुवासितं सुशीतं जलमानीय मूलेन भगवत्यै निवेद्य स्मार्ताग्नौ मूलमन्त्रेण पञ्चविंशत्याहुतीर्हुत्वा षडङ्गमन्त्रैः षडाहुतीरावरणदेवतानां तत्तन्नाममन्त्रैरेकैकाहुतीर्हुत्वा पूजास्थानमागत्य स्ववामाग्रे त्रिकोणं यन्त्रं विभाव्यान्नव्यञ्जनयुतं साधारं बलिपात्रं निधाय शुद्धोदकेनापूर्य गन्धपुष्पादिकं निक्षिप्य बलिपात्रं तत्र सर्वभूतानि ध्यात्वा सर्वभूतेभ्यो बलिमिति गन्धाक्षतैः संपूज्य ॐ भूता ये विविधाकारा दिग्विदिक्षु स्थिताश्च ये ॥ पातालतलसंस्थाश्च ये चापि गगनाश्रिताः ॥ योगिन्योऽप्युग्ररूपाश्च गणानामधिपाश्च ये ॥ सर्वेऽप्येते सुमनसो भूता गृह्णान्त्वमं बलिम् ॥ इति भूतेभ्यो बलिं दत्त्वा पुष्पाञ्जलिमादाय भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवच्च तानि संतोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे क्षमन्तु तान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः ॥ इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा क्षमाप्य नाराचमुद्रया भूतानि विसृज्य मूलमन्त्रेण शुद्धजलेनात्मानमभ्युक्ष्य देव्यै ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहेति उत्तरापोशनजलं दत्त्वा करस्य क्षालनं गण्डूषान्कारयित्वा आचमनीयं दत्त्वा सकर्पूरं ताम्बूलं निवेद्य छत्रचामरादिराजोपचारान्निवेद्य कांस्यादिबृहत्स्थाल्यां चन्दनादिनाऽष्टदलं कृत्वा तन्मध्येऽष्टसु दलेषु पिष्टमयान्नव दीपान् घृतपूर्णान्कर्पूरगर्भवर्तिसहितान्निक्षिप्य ह्रीमिति प्रज्वाल्य क्वचिच्चतुरस्रमण्डलं निधाय वमिति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्यास्त्रमन्त्रेण चक्रमुद्रया संरक्ष्य श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं म्लूं न्लूं प्लूं ह्रीं श्रीं इति रत्नेश्वरीविद्यया मूलमन्त्रेण च पृथक्पृथगभ्यर्च्य तत्पात्रं कराभ्यामादायोत्थाय मूलमुच्चरन् देव्याश्चरणान्मूर्धान्तं मूर्धादिचरणान्तं च पुनः पुनर्भ्रामयन् नवकृत्वो नीराजयेत् इति आरार्तिकं कृत्वा मूलमन्त्रेण प्राणामत्रयं कृत्वा प्रागुक्तऋष्यादिन्यासं विधाय देवीं ध्यायन् मूलमन्त्रमष्टोत्तरसहस्रं तदर्धं त्रिशतमष्टोत्तरशतं वा जपित्वा जपं समर्प्य ऋषिच्छन्दोदेवतादिन्यासपूर्वकं देवीमाहात्म्यचरितत्रयं रहस्यसहितं पठित्वा तदशक्तौ मध्यमचरितं वा पठित्वा पुनः पुनः प्रागवन्मूलमन्त्रं जपित्वा तत्सर्वं भगवत्यै समर्प्य शूलेन पाहि नो देवीत्यादिचतुर्भिः श्लोकैः प्रदक्षिणानि कृत्वा नमो

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

देव्यै इत्यादिभिः पञ्चभिः श्लोकैः पञ्चनमस्कारैः परितोष्य पुनः पुनः प्रणम्य सर्वस्वरूप इत्यादिषड्भिः कृताञ्जलिरिष्टार्थानां प्रार्थना कृत्वा कुमारीं सुवासिनीं वक्ष्यमाणविधिना संपूज्य भोजनादिभिः परितोष्य प्रणम्य ताम्बूलादिकं दत्त्वा विसृज्य अर्घ्यपात्रं संस्थाप्य साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ॥ तत्सर्वं भगवत्यम्ब गृहाणाराधनं परमिति देव्यै किंचिदर्घोदकं दत्त्वा पुनः प्राग्वदर्घोदकं दत्त्वा तत्पात्रं स्वस्थाने निवेश्य तज्जलं किंचिद्वामकरे निधाय पूजावशिष्टगन्धमिश्रं तन्मूलेन त्रिरभिमन्त्र्य तेन स्वात्मानं प्रोक्ष्य पुष्पाञ्जलिमादाय रश्मिरूपा महादेव्यः सन्तु सर्वाः शुभोदयाः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा देव्यङ्गे परिवारदेवतां विलीनां विभाव्य देवीं तेजोरूपां ध्यायन् संहारमुद्रया निर्माल्यपुष्पेण सह तत्तेजः समुद्धृत्य ॥ ॐगच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदमित्युच्चार्य वहन्नासारन्ध्रेण ब्रह्मरध्रं नीत्वा सुषुम्नामार्गेण ब्रह्मरन्ध्रात् हृदयकमल मानीय ॥ ॐ तिष्ठ तिष्ठ परे स्थाने स्वस्थाने परमेश्वरि ॥ यत्र ब्रह्मादयः सर्वे सुरास्तिष्ठन्ति मे हृदि ॥ इति संस्थाप्य यथोक्त रूपां देवीं ध्यायन् तन्मयः सुखं विहरेदिति ॥ अथ नित्यपूजाफलमाह ॥ अनेन विधिना नित्यं यः कुर्याच्चण्डिकार्चनम् ॥ तस्य तुष्टा महालक्ष्मीयच्च दद्याच्छृणुष्व तत् ॥१॥ महदैश्वर्यमतुलं त्रैलोक्ये तस्य जायते ॥ धर्मराजसमायुक्तं पुत्रपौत्रसमाकुलम् ॥ २ ॥ तं करोति महालक्ष्मीर्ब्रह्मविष्णुशिवोपमम् ॥ रिपवः संक्षयं यान्ति तत्स्थानाच्छतयोजनम् ॥ ३ ॥ तेनैक्येन वसन्तोऽपि न तं पश्यन्ति दस्यवः ॥ तस्य स्मरणमात्रेण विघ्नानां जायते क्षयः ॥४॥ त्रिषु लोकेषु यत्किंचित्ससुरासुरदुर्लभम् ॥ तत्सर्वं तं समायाति महालक्ष्मीप्रसादतः ॥ ५ ॥ यो जपेत्परया भक्त्या महालक्ष्मीं तु पूजयन् ॥ स नरो लभते नित्यं पूजाफलमनुत्तमम् ॥ ६ ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उपा० श्रीदुर्गोपा० श्रीनिवासविरचितदुर्गापद्धतिनि० सप्तत्रिंशत्प्र० ॥ ३७ ॥ अथ दुर्गानैमित्तिककाम्यार्चन पद्धतिः ॥ उक्तं तत्रैव ॥ साधकैर्नैमित्तिकं काम्यं चार्चनं कार्यं तत्रादौ नैमित्तिकार्चनं तच्च विशेषदिवसेषु रात्रौ कार्यं नित्यार्चनं दिवा कुर्याद्रात्रौ नैमित्तिकार्चनम् ॥ उभयोः कर्माणि चेति शास्त्रस्य निर्णयः ॥ इति कुलार्णववचनात् ॥ विशेषदिवसास्तु

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

गुरुपरमगुरुपरमेष्ठिगुरूणां दिनं च अष्टमीनवमीकृष्णचतुर्दशीपूर्णिमाऽमावस्यारविमंक्रमणेषु पुष्यनक्षत्ररविवासरयुगादिमन्वादी त्यादिपुण्यदिनानि तेषु नित्यपूजानन्तरं विशेषेण नानाविधैर्गन्धपुष्पादिभिर्महतीं पूजां कृत्वा नित्यजपात्त्रिगुणं जपं रहस्यचण्डी पाठादिकं च कुर्यात ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उपा० स्त० दुर्गोपा० दुर्गानैमि० पद्धति० अष्टत्रिंशं प्रकरणम्॥३८॥अथ दुर्गादमनपूजा पद्धतिः ॥ उक्तं चण्डीसपर्याक्रमकल्पवल्ल्याम् ॥ तत्र चैत्रे वैशाखे ज्येष्ठे वा मासे पक्षद्वयस्याष्टमीनवमीचतुर्दशीपूर्णिमाऽन्यतम तिथौ सा कार्या ॥ तत्र पूजादिनात्पूर्वेद्युः सायंकाले साधकः कृतनित्यक्रियः सामयिकैः सार्धं दमनसमीपं गत्वा शिवप्रसाद संभूत अत्र सन्निहितो भव ॥ शिवकार्यें समुच्छिद्य नेतव्योऽसि शिवाज्ञया ॥१॥ इति दमनमामन्त्र्य तत्र कामदेवं रतिं च वक्ष्यमाण तत्तन्मन्त्रेण संपूज्य गृहमागच्छेततः पूजादिनात्पूर्वदिने कृतनित्यक्रियः समयिभिः सार्धं पुनर्दमनसमीपं गत्वाऽस्त्रमन्त्रेण दमनं समूलमुत्पाटच शस्त्रेण वा गृहमानीय अघोरे ऐं ॐ घोरे ह्रीं घोर घोरतर श्रीसर्वतः शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः ह्रीं श्रीं इति मन्त्रेण दमनमभ्युक्ष्य पूजास्थाने क्वचित्पात्रे दमनं नवधा विभज्य मध्ये चाष्टसु दिक्षु च संस्थाप्य हृन्मन्त्रेण चन्दना गरुकर्पूरकुङ्कुमादिपङ्कैरालिप्य मध्यमारभ्य स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन नवधा विभक्तं दमनम् ॐ हं नमः ॥ ॐ सं नमः ॥ ॐ क्षं नमः ॥ ॐमं नमः ॥ ॐलं नमः ॥ ॐवं नमः ॥ ॐयं नमः ॥ ॐरं नमः॥ ॐमं नमः॥ इति संपूज्यास्त्रमन्त्रेण संरक्ष्य कराभ्यां त्रिशूलमुद्रां बद्ध्वा कवचमन्त्रेण दमनोपरि भ्रामयित्वा नूतनवस्त्रेणाच्छाद्य रहसि स्थापयेदित्यधिवासनं रात्रौ कुर्यात् ॥ तत्रास्त्र मन्त्रहृन्मन्त्रकवचमन्त्रादयो मूलमन्त्रस्य षडङ्गप्रोक्ता ज्ञेयाः ॥ एवं पूर्वदिने निमन्त्रणाधिवासने न कृते चेत्पूजादिने वा तद्द्वयं कार्यमिति ॥ ततः पूजादिने प्रातः साधकः स्नानादिनित्यपूजां निर्वर्त्य समयिभिः सह स्वस्तिवाचनपूर्वकं दमनं पूजास्थानमानीय शुचिस्थसिन्दूरेण चतुरस्रवृत्तद्वयवेष्टितमष्टदलकमलं विधाय तन्मध्येऽष्टसु दलेषु च स्वर्णादिरचितान्नव कलशान्वक्ष्यमाणविधिना संस्थाप्य तदशक्तौ एकं वा कुम्भं मध्ये संस्थाप्य स्वासनपूजादिपीठपूजान्तं प्रागुक्तविधिना कृत्वा स्वदक्षिणभागे सर्वतोभद्रमण्डलं

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

प्राग्वदष्टदलं कमलं वा सिन्दूरादिना कृत्वा तन्मध्ये पञ्चवर्णरजोभिरशोकतरुं कृत्वा तस्याभितस्त्रिकोणमण्डले कामदेवं तरुणमरुण वर्णं रक्तवस्त्राभरणमाल्यानुलेपनालंकृतं ध्यात्वा वं वसन्ताय नमः इति मन्त्रेण पञ्चोपचारैः संपूज्य पुनः कामदेवं तन्मन्त्रेण संपूज्याष्टदलकेसरेषु अग्नीशासुरवायव्यमध्ये चतुर्दिक्षु च क्लां हृदयाय नमः ॥ क्लीं शिरसे नमः ॥ क्लूं शिखायै नमः ॥ क्लैं कवचाय नमः ॥ क्लौं नेत्राय नमः ॥ क्लः अस्त्राय नमः ॥ इति षडङ्गानि संपूज्याष्टदलकेसरेषु देवाग्रादिप्रादक्षिण्येन ॐ कामाय नमः ॥ ॐ भस्मशरीराय नमः ॥ ॐ अनङ्गाय नमः ॥ ॐ मन्मथाय नमः ॥ ॐ वसन्ताय नमः ॥ ॐ स्मराय नमः ॥ ॐ यक्ष धनुर्धराय नमः ॥ ॐ पुष्पबाणाय नमः ॥ इत्यष्टौ कामान्संपूज्य चतुरस्रे लोकपालांस्तदस्त्राणि च संपूज्य पुनः कामदेवं तन्मन्त्रेणाभ्यर्च्य धूपदीपादिताम्बूलान्तानुपचारानुपचर्य प्रणम्य कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि ॥ तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ॥ इति कामगायत्रीं यथाशक्ति जपित्वा जपं समर्प्य ॥ नमोस्तु पुष्पबाणाय जगदानन्ददायिने ॥ मन्मथाय जगन्नेत्रे रतिप्रीतिप्रियाय च ॥ इति कामदेवं प्रणम्य ऋष्यादिन्यासं कृत्वा मध्यकुम्भे देवीमावाह्य प्राग्वत्सर्वोपचारैः साङ्गां सावरणां मदनैः संपूज्य ॥ आवाहिताऽसि देवेशि सद्यःकाले मया शिवे ॥ कर्तव्यं तु यथालाभं पूर्णं पूर्वं त्वदाज्ञया इति विज्ञाप्य साङ्गां सावरणां देवीं दमनैः संपूज्य धूपदीपनैवेद्यैर्नित्यहोमविधिना यदुक्तं द्रव्यं तत्त्रिगुणसंख्यं हुत्वा नित्यजपसंख्यातः त्रिगुणसंख्यं जपं च कृत्वा पूजाशेषं च समाप्य स्वगुरुं वित्तादिभिः परितोष्य कुमारिका ब्राह्मणांश्चान्ना दिभिः परितोषयेदिति दमनपूजाविधिः ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उ० श्रीदु० दमनपूजाविधिनि० एकोनचत्वारिंशं प्रकरणम् ॥३९॥

अथ दुर्गापवित्रारोपणप्रयोगस्तत्रैव ॥ तत्र मिथुनसंक्रममारभ्य तुलासङ्क्रमणावधि मासचतुष्टयं च पक्षद्वयगते चतुर्थ्यष्टमीनवमी चतुर्दशीपूर्णिमाऽन्यतमतिथौ पवित्रैर्देवीं पूजयेत् ॥ पवित्राणि तु स्वर्णरजतताम्रपट्टसूत्रसरित्पद्मसूत्रदर्भमुञ्जशणवल्कल कार्पाससूत्रेष्वन्यतमसूत्रैः कुर्यात् ॥ कार्पाससूत्रं चेत्कामिनीभिः सधवाभिः कर्तितं त्रिगुणं त्रिगुणीकृत्य नवसूत्रस्यैकसरत्वेन कल्पि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तैरुक्तसंख्यैः सूत्रैः पवित्राणि कुर्यात् ॥ तत्राष्टोत्तरशतं सूत्रैरुत्तमानि चतुष्पञ्चाशद्भिर्मध्यमानि सप्तविंशतिभिः कनिष्ठानि तावत्तावदंगुलदैर्घ्याणि दशदशग्रन्थियुक्तानि पवित्राणि कुर्यात् ॥ इत्थं पूजावरणदेवतावृन्दसमसंख्यानि पवित्राणि कृत्वाऽष्टोत्तरशतसरग्रन्थियुक्तं वितानात्पूजाविष्टरमानदैर्घ्यमेकं बृहत्पवित्रं कृत्वाऽऽत्मनश्चागमनज्ञानां क्रमज्ञानां शिष्याणां च स्कन्धादिनाभिपर्यन्तं दैर्घ्ययुक्तं पक्षत्रये चैकपक्षानुसारग्रन्थियुक्तानि पवित्राणि कुर्यात् ॥ अन्येषां सामान्यपवित्राणि एकग्रन्थियुक्तानि यथेष्टसंख्यातन्तुभिः परिधानप्रमाणदैर्घ्याणि पवित्राणि कुर्यात् ॥ अत्र ग्रन्थिषु सूत्रवेष्टनसंख्या तूत्तमपवित्रे षट्त्रिंशन्मध्येषु चतुर्विंशतिः कनिष्ठेषु द्वादशेति कवचमन्त्रेण ग्रन्थयः कार्याः ॥ इत्थं पवित्राणि विधाय पवित्रारोपणदिनात्पूर्वदिने साधकः कृतनित्यक्रियो रात्रौ समयिभिः सार्धं पत्राणि पूजास्थानमानीय तत्र सिन्दूरकुंकुमरक्तचन्दनकस्तूरीकर्पूरलाक्षागैरिकाद्यैर्ग्रन्थिस्थानेषु विचित्राणि पवित्राणि संस्थाप्य तेषां सूत्रेषु ॐकाराय नमः ॥ चन्द्रमसे नमः ॥ वह्नये नमः ॥ ब्रह्मणे नमः ॥ नागाय नमः॥ गुरवे नमः ॥ रवयेनमः ॥ सदाशिवायनमः ॥ सर्वदेवेभ्यो नमः ॥ इति संपूज्य शिरोमन्त्रेणाभिमन्त्र्य हृन्मन्त्रेणाभ्युक्ष्यास्त्रमन्त्रेणावरुध्य तेषां दशग्रन्थिषु ॐ क्रियायै नमः ॥ ॐ पौरुष्यै नमः ॥ ॐ वीरायै नमः ॥ ॐ गायत्र्यै नमः ॥ ॐ अपराजितायै नमः ॐ विजयायै नमः ॥ ॐ जयायै नमः ॥ ॐ मुक्तिदायै नमः ॥ ॐ सदाशिवायै नमः ॥ ॐ मनोन्मन्यै नमः॥इतिदशशक्तीःसंपूज्यपवित्रेणमूलमन्त्रेण षडंगमन्त्रैश्च संपूज्य सुगन्धपुष्पाणि पञ्च रत्नानि सर्वौषधीश्च निक्षिप्य नूतनवस्त्रद्वयेनाच्छादयेदित्यधिवासनंविधाय परेद्युः साधकः कृतनित्यक्रियः समयिभिः सार्धं पूजास्थानं वितानादिभिरलंकृतं प्रविश्य पूजाविष्टरादूर्ध्ववितानात्पूजाविष्टरपर्यन्तं बृहत्पवित्रमालम्बयित्वा स्वासनपूजादिन्यासजातं विधाय दमनकपूजावत्कुम्भं स्थापयित्वाऽर्घ्यस्थापनाद्यात्मपूजां पीठपूजां च तन्त्रोक्तविधिना विधाय तस्मिन्कुम्भे देवीमावाह्य सांगां सावरणां संपूज्य देव्यै मूलमन्त्रेण पवित्रं सर्वांगावृतिदेवतानां च पवित्राणि समर्प्य धूपदीपनैवेद्यनैमित्तिकहोमान्कृत्वा गुरुं सन्तोष्य तस्मै पवित्रं दत्त्वा पूर्णाहुतिं दत्त्वाऽग्नये पवित्रं समर्प्य गुर्वनुज्ञया स्वयमपि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पवित्रधारणं सामयिकानन्यानपि ब्राह्मणादीन् पवित्रदानदक्षिणादिभिः परितोष्य पूजाशेषं समाप्य ब्राह्मणादीन्संभोज्यभूरिदक्षिणादिभिः परितोषयेदिति ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उ० श्रीदुर्गापवित्रारोपणप्रयोगनि० चत्वारिंशं प्रकरणम् ॥ ४० ॥ अथ जयदुर्गामन्त्रविधानम् ॥ उक्तं च शारदातिलके ॥ तारो दुर्गे युगं रक्तमतष्ठान्तं सलोचनम् ॥ द्विठान्ता जयदुर्गेयं विद्या वेददशाक्षरी ॥ १ ॥ तारादि दुर्गे हृदयं दुर्गे शिर उदीरितम् ॥ दुर्गायै स्याच्छिखा वर्म भूतरक्षिणि कीर्तितम् ॥ २ ॥ तारादि दुर्गे युगलं रक्षण्यस्त्रमुदीरितम् ॥ तारादि दुर्गे द्वितयं रक्षिण्यक्षि समीरितम् ॥ ३ ॥ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिमाबद्धरेखां शङ्खं चक्रं कपालं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ॥ सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्ती ध्यायेद्दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥ ४ ॥ बाणलक्षं जपेन्मन्त्रं घृतेन जुहुयात्ततः ॥ दशांशं संस्कृते वह्नौ ब्राह्मणानपि भोजयेत् ॥ ५ ॥ अष्टाक्षरोदिते पीठे पूजयेत्पूर्ववत्सुधीः ॥ मन्त्रं जपन्विशेद्युद्धं शत्रून्हन्यादशेषतः ॥ ६ ॥ प्रजपेद्दशधा रात्रौ तत्रापि विजयी भवेत् ॥ अस्त्रयेदस्त्रशस्त्राणि जयार्थी विद्ययाऽनया ॥ ७ ॥ अस्य पूजाप्रयोगः तन्त्रसारे ॥ प्रातःकृत्यादि दुर्गामन्त्रोक्तऋष्यादिन्यासान्तं कर्म कृत्वा कराङ्गन्यासौ कुर्यात् ॥ यथा ॐ दुर्गे अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ दुर्गे तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ ॐ दुर्गे मध्यमाभ्यां वषट् ॥ ॐ भूतरक्षिणि अनामिकाभ्यां हुम् ॥ ॐ दुर्गे दुर्गेरक्षिणि कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॥ ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥ ८ ॥ तथा निबन्धे ॥ तारादि दुर्गे हृदयं दुर्गे च शिर ईरितम् ॥ दुर्गायै स्याच्छिखा वर्म भूतरक्षिणि कीर्तितम् ॥ तारादि दुर्गे द्वितयं रक्षिण्यस्त्रमुदाहृतम् ॥ ९ ॥ ततो ध्यानम् ॥ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां शङ्खं चक्रं कृपाण त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ॥ सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं ध्याये दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥ १० ॥ एवं ध्यात्वा मानसैरुपचारैः संपूज्यार्घस्थापनं कुर्यात् ॥ ततः पूर्वोक्तपीठपूजां विधाय पूर्ववत्पूजां कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं पञ्चलक्षजपः ॥ घृतेन दशांशहोमः ॥ तथा निबन्धे ॥ बाणलक्षं जपेन्मन्त्रं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

घृतेन जुहुयात्ततः ॥ ११ ॥ दशांशं संस्कृते वह्नौ ब्राह्मणानपि भोजयेत् ॥ अष्टाक्षरोदिते पीठे पूजयेत्पूर्ववत्सुधीः ॥ १२ ॥ अथ जयदुर्गामन्त्रो दशाक्षरः मन्त्रकोशे ॥ ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा ॥ ऋषिच्छन्दसी न दृष्टे जयदुर्गा देवता इष्टार्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ दुर्गे हृ० दुर्गे शि० रक्षिणि शि० स्वाहा क० दुर्गे रक्षिणि अस्त्रं मन्त्रान्तरैरिति पञ्चाङ्गं दुर्गे दुर्गे नेत्रमिति तेन शारदायां षडङ्गं ध्यानम् ॥ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां शङ्खं चक्रं कपालं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ॥ सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा प्लावयन्तीं ध्यायेद्दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिणुतां सेवितां सिद्धवन्द्यै ॥ लक्षं पुरश्चरणं घृतेन पायसेन वा दशांशहोमः ॥ मन्त्रं जपित्वा शत्रुघ्नं शत्रून् हन्यादशेषतः ॥ आहवे प्रविशेद्यो वै तत्रापि विजयी भवेत् ॥ ॐ नमो दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा इत्यपि कथयन्ति द्वादशाक्षरं मन्त्रम् ॥ ऋष्यादिकं पूर्ववत् ॥ ॐ नमो हृ० दुर्गे शि० दुर्गे शि० रक्षिणि० क० स्वाहा नेत्र० ॥ ॐ नमो दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा अस्त्रं पूर्ववद्ध्यानादिकं कार्यम् ॥ अस्मिन्पक्षे अष्टभुजा ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उपासनास्तबके दुर्गोपासनाध्याये जयदुर्गामन्त्राराधनविधानप्रयोगवर्णनं नाम एकचत्वारिंशं प्रकरणम् ॥ ४१ ॥

अथ दुर्गाषोडशनामस्तोत्रम् ॥ उक्तं च ब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतिखण्डे ॥ नारद उवाच ॥ सर्वाख्यानं श्रुतं ब्रह्मन्नतीव परमाद्भुतम् ॥ अधुना श्रोतुमिच्छामि दुर्गोपाख्यानमुत्तमम् ॥ १ ॥ दुर्गा नारायणीशाना विष्णुमाया शिवा सती ॥ नित्या सत्या भगवती शर्वाणी सर्वमङ्गला ॥ २ ॥ अम्बिका वैष्णवी गौरी पार्वती च सनातनी ॥ नामानि कौथुमोक्तानि शुभानि शुभदानि च ॥ ३ ॥ अर्थं षोडशनाम्नां च सर्वेषामीप्सितप्रदम् ॥ ब्रूहि वेदविदां श्रेष्ठ वेदोक्तं सर्वसंमतम् ॥ ४ ॥ केन वा पूजिता साऽऽदौ द्वितीये केन वा पुरा ॥ तृतीये वा चतुर्थे वा केन वा सर्वपूजिता ॥ ५ ॥ नारायण उवाच ॥ अर्थं षोडशनाम्नां च विष्णुर्वेदे चकार सः ॥ पुनः पृच्छसि ज्ञात्वा च कथयामि यथागमम् ॥ ६ ॥ दुर्गे दैत्यमहाविघ्ने भवबन्धे कुकर्मणि ॥ शोके दुःखे च नरके यमदण्डे च जन्मनि ॥ ७ ॥ महाभयेऽतिरोगे वै चाशब्दो हन्तृवाचकः ॥ एतान् हन्त्येव या देवी सा दुर्गा परिकीर्तिता ॥ ८ ॥ यशसा तेजसा रूपैर्नारायण

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

समा गुणैः ॥ शक्तिर्नारायणस्येयं तेन नारायणी स्मृता ॥ ९ ॥ ईशानः सर्वसिद्धार्थश्चाशब्दो दातृवाचकः ॥ प्रिये दातरि चा शब्दः शिवा तेन प्रकीर्तिता ॥ १० ॥ सद्बुद्ध्यधिष्ठातृदेवी विद्यमाना युगे युगे ॥ सृष्टा माया पुरा सृष्टा विष्णुना परमात्मना ॥ ॥ ११ ॥ मोहितं च यया विश्वं विष्णुमाया च कीर्तिता ॥ शिवा कल्याणरूपा च शिवदा च शिवप्रिया ॥ १२ ॥ प्रिये दातरि चाशब्दः शिवा तेन प्रकीर्तिता ॥ पतिव्रता सुशीला या सा सती परिकीर्तिता ॥ १३ ॥ यथा नित्यो हि भगवान् नित्या भगवती तथा ॥ स्वमायया तिरोभूता तत्रेशे प्राकृते लये ॥ १४ ॥ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं सर्व मिथ्यैव कृत्रिमम् ॥ दुर्गा सत्यस्वरूपा सा प्रकृतिर्भगवान्यथा ॥ १५ ॥ सिद्धैश्वर्यादिकं सर्वं यस्यामस्ति युगे युगे ॥ सिद्धादिके भगो ज्ञेयस्तेन भगवती स्मृता ॥ १६ ॥ सर्वान्मोक्षं प्रापयति जन्ममृत्युजरादिकम् ॥ चराचरांश्च स्वस्थानं शर्वाणी तेन कीर्तिता ॥ १७ ॥ मङ्गलं मोक्षवचनं चाशब्दो दातृवाचकः ॥ सर्वान्मोक्षाय ददति सा एवं सर्वमङ्गला ॥ १८ ॥ हर्षे संपत्तिकल्याणे मङ्गलं परिकीर्तितम् ॥ तान्ददाति च सा देवी सा एवं सर्वमङ्गला ॥ १९ ॥ अम्बेति मातृवचना वन्दने पूजनेऽपि च ॥ पूजिता वन्दिता माता जगतां तेन साऽम्बिका ॥ २० ॥ विष्णुभक्तिर्विष्णुरूपा विष्णोः शक्तिस्वरूपिणी ॥ सृष्टौ च विष्णुना सृष्टा वैष्णवी तेन कीर्तिता ॥ २१ ॥ गौरपीते च निर्लिप्ते परे ब्रह्मणि निर्मले ॥ तस्यात्मनः शक्तिरियं गौरीति तेन कीर्तिता ॥ २२ ॥ गुरुः शंभुश्च सर्वेषां तस्य शक्तिः प्रिया सती ॥ गुरुः कृष्णश्च तन्माया गौरीति तेन कीर्तिता ॥ २३ ॥ तिथिभेदे कल्पभेदे सर्ववेदप्रभेदके ॥ तद्व्याप्तौ तेषु विख्याता पार्वती तेन कीर्तिता ॥ पर्वतस्य सुता देवी साऽऽविर्भूता च पर्वते ॥ २४ ॥ पर्वताधिष्ठातृदेवी पार्वती तेन कीर्तिता ॥ सर्वकाले सना प्रोक्ता विद्यमाना सनातनी ॥ २५ ॥ सर्वत्र सर्वकाले सा विद्यमाना सनातनी ॥ अर्थः षोडशनाम्नां च कीर्तितश्च महामुने ॥ २६ ॥ यथागमं च वेदोक्तमाख्यानं च निशामय ॥ प्रथमे पूजिता सा च कृष्णेन परमात्मना ॥ २७ ॥ वृन्दावने च सृष्ट्यादौ गोलोके रासमण्डले ॥ मधुकैटभभीतेन ब्रह्मणा सा द्वितीयके ॥ २८ ॥ त्रिपुरप्रेरितेनैव तृतीये त्रिपुरारिणा ॥ भ्रष्टश्रिया महेन्द्रेण शापाद्दुर्वाससः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पुरा ॥ २९ ॥ चतुर्थे पूजिता देवी भक्त्या भगवती सती ॥ तदा मुनीन्द्रैः सिद्धेन्द्रैर्देवेन्द्रैर्मनुना नरैः ॥ ३० ॥ पूजिता सर्वविश्वेषु बभूव सर्वतः सदा ॥ तेजःसु सर्वदेवानां साऽऽविर्भूता पुरा मुने ॥ ३१ ॥ सर्वे देवा ददुस्तस्यै शस्त्राणि भूषणानि च ॥ दुर्गादयश्च दैत्याश्च निहता गदया तया ॥ ३२ ॥ दत्तं स्वराज्यं देवेभ्यो वरं च यदभीप्सितम् ॥ कल्पान्तरे पूजिता सा सुरथेन महात्मना॥३३॥इति श्रीबृ० बृ० घ० उपा० स्त० श्रीदुर्गोपा० ध्या० ब्रह्मवै० दुर्गाषोडशनामस्तोत्रनिरूपणं नाम द्विचत्वारिंशं प्रकरणम्॥ ॥ ४२ ॥ अथ दुर्गास्तोत्रं तत्रैव ॥ परशुराम उवाच ॥ श्रीकृष्णस्य च गोलोके परिपूर्णतमस्य च ॥ आविर्भूता विग्रहतः परा सृष्ट्युन्मुखस्य च ॥ ॥ १ ॥ सूर्यकोटिप्रभायुक्ता रत्नालङ्कारभूषिता ॥ वह्निशुद्धांशुकाधाना सस्मिता सुमनोहरा ॥ २ ॥ नवयौवनसंपन्ना सिन्दूरबिन्दुशोभिता ॥ ललिता कबरीभारमालतीमाल्यमण्डिता ॥ ३ ॥ अहो निर्वचनीया त्वं चार्वां मूर्तिं च बिभ्रती ॥ मोक्षप्रदा मुमुक्षूणां महाविष्णुर्विधिः स्वयम् ॥ ४ ॥ मुमोह क्षणमात्रेण दृष्ट्वा त्वां सर्वमोहिनीम् ॥ रासे संभूय सहसा सस्मिताऽऽराधिता पुरा ॥ ५ ॥ सद्भिः ख्याता तेन राधा मूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ कृष्णस्त्वां सहसाऽऽज्ञाय वीर्याधानं चकार ह ॥ ६ ॥ ततो डिम्भं महो जज्ञे यतो भूतो महाविराट् ॥ यस्यैव लोमकूपेषु ब्रह्माण्डान्यखिलानि च ॥ ७ ॥ तच्छृङ्गारश्रमेणैव त्वन्निश्वासो बभूव ह ॥ ततस्त्वं पञ्चधा भूत्वा पञ्चमूर्तिं च बिभ्रती ॥८॥ प्राणाधिष्ठात्री या मूर्तिः कृष्णस्य परमात्मनः ॥ कृष्णप्राणाधिकां राधां तां विदन्ति पुराविदः ॥९॥ वेदाधिष्ठात्री या मूर्तिर्वेदशास्त्रप्रसूरपि ॥ तां सावित्रीं शुद्धरूपां प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ १० ॥ ऐश्वर्याधिष्ठात्री मूर्तिर्या शान्तिः शान्तिरूपिणी ॥ लक्ष्मीं विदन्ति सन्तस्त्वां शुद्धसत्त्वस्वरूपिणीम् ॥११॥ रागाधिष्ठात्री या देवी शुक्लमूर्तिसुताप्रसूः ॥ सरस्वतीं तां शास्त्रज्ञाः प्रवदन्ति अहो भुवि ॥१२॥ बुद्धिर्विद्या सर्वशक्तिर्ज्या मुक्तिरधिदेवता ॥ सर्वमङ्गलरूपाणि सर्वमङ्गलकारिणी ॥१३॥ सर्वमंगलबीजस्य शिवस्य मदिरेऽधुना ॥ शिवे शिवस्वरूपा त्वं लक्ष्मीर्नारायणान्तिके ॥ १४ ॥ सरस्वती च सावित्री वेदसूर्ब्रह्मणः प्रिया ॥ राधा रासेश्वरस्यैव परिपूर्णतमस्य च ॥१५॥ परमानन्दरूपाणि च्छाया चन्द्रस्य रोहिणी ॥ शची शक्रस्य कामस्य

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

कामिनी रतिरीश्वरी ॥ १६ ॥ वरुणानी जलेशस्य वायोःस्त्री प्राणवल्लभा ॥ वह्नेः प्रिया या स्वाहा च कुबेरस्य च सुन्दरी ॥ १७ ॥ यमस्य च सुशीला च नैर्ऋतस्य च कोटभी ॥ ईशानस्य शशिकला शतरूपा मनोः प्रिया ॥ १८ ॥ देवहूतिः कर्दमस्य वसिष्ठस्याप्यरुन्धती ॥ अदितिर्देवमाता या मुद्राऽगस्त्यमुनेः प्रिया ॥ १९ ॥ अहल्या गौतमस्यापि सर्वाधारा वसुधरा ॥ गंगा च तुलसी चापि पृथिव्यां या सरिद्वरा ॥ २० ॥ एताः सर्वाश्च या अन्याः सर्वास्त्वत्कलयाऽम्बिके ॥ गृहलक्ष्मीगृहे नृणां राजलक्ष्मीश्च राजसु ॥ २१ ॥ तपस्विनां तपस्या त्वं गायत्री ब्राह्मणस्य च ॥ सतां सत्यस्वरूपा त्वं ह्यसतां कलहांकुरा ॥२२॥ ज्योतिरूपा निर्गुणस्य शक्तिस्त्वं सगुणस्य च ॥ सूर्ये प्रभास्वरूपा त्वं दाहिका च हुताशने ॥ २३ ॥ जले शैत्यस्वरूपा च शोभारूपा निशाकरे ॥ त्वं भूमौ गन्धरूपा च गगनाकाशरूपिणी ॥२४॥ स्मृतिर्मेधा च बुद्धिर्वा ज्ञानशक्तिर्विपश्चिताम् ॥ कृष्णेन विद्या या दत्ता सर्वज्ञानप्रसूः शुभा ॥२५॥ शूलिने कृपया सा त्वं यतो मृत्युञ्जये शिवे ॥ सृष्टिपालनसंहारशक्तयस्त्रिविधाश्च याः ॥ २६ ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानां सा त्वमेव नमोऽस्तु ते ॥२७॥ मधुकैटभभीतौ च त्रस्तो धाता प्रकम्पितः ॥ स्तुत्वा मुमोच यां देवीं तां मूर्ध्ना प्रणमाम्यहम् ॥ २८ ॥ मधुकैटभयोर्युद्धे प्राप्तोऽसौ विष्णुरीश्वरि ॥ बभूव शक्तिमान् स्तुत्वा यां दुर्गां तां नमाम्यहम् ॥ २९ ॥ त्रिपुरस्य महायुद्धे सरथे पतिते शिवे ॥ यां तुष्टुवुः सुराः सर्वे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम् ॥ ३० ॥ विष्णुना वृषरूपेण स्वयं शंभुः समुत्थितः ॥ जघान त्रिपुरान्स्तुत्वा यां दुर्गां तां नमाम्यहम् ॥ ३१ ॥ कलाचक्रं च जगति शश्वद्भ्रमति वेगतः ॥ मृत्युश्चरति जन्त्वोघे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम् ॥ ३२ ॥ स्रष्टा सृजति सृष्टं च पाता पाति यदाज्ञया ॥ संहर्ता संहरेत्काले तां दुर्गां प्रणमाम्यहम् ॥ ३३ ॥ ज्योतिःस्वरूपो भगवान् श्रीकृष्णो निर्गुणः स्वयम् ॥ यया विना न शक्तश्च सृष्टिं कर्तुं नमामि ताम् ॥ ३४ ॥ रक्ष रक्ष जगन्मातरपराधान् क्षमस्व मे ॥ शूलिनामपराधेन तांश्च माता न कुप्यति ॥ ३५ ॥ इत्युक्त्वा पर्शुरामश्च तां प्रणम्य रुरोद च ॥ तुष्टा दुर्गा संभ्रमेण चाभयं च वरं ददौ ॥३६॥ अमरो भव रे पुत्र वत्स सुस्थिरतां व्रज ॥ सर्वप्रसादात्सर्वत्र जयोऽस्तु तव

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

संततम् ॥ ३७ ॥ सर्वान्तरात्मा भगवांस्तुष्टोऽस्तु सततं हरिः ॥ भक्तिर्भवतु ते कृष्णे शिवदे च शिवे गुरौ ॥ ३८ ॥ इष्टदेवे गुरौ यस्य भक्तिर्भवति शाश्वती ॥ तं हन्तुं न हि शक्ताश्च रुष्टाश्च सर्वदेवताः ॥ ३९ ॥ श्रीकृष्णस्य च भक्तस्त्वं शिष्यस्त्वं शङ्करस्य च॥ गुरुपत्नी भयात्सा हि कस्त्वां हन्तुं महेश्वरः ॥ ४० ॥ अहो न कृष्णभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ॥ अन्यदेशेषु भक्ता वा न भक्ता वा निरङ्कुशाः ॥ ४१ ॥ चन्द्रमा बलवांस्तुष्टो येषां भाग्यवतां भृगो ॥ तेषां तारागणा रुष्टाः किं कुर्वन्ति च दुर्बलाः ॥ ४२ ॥ यस्य तुष्टः सभायां चेन्नरदेवो महान् सुखी ॥ तस्य किं वा करिष्यन्ति रुष्टा भृत्याश्च दुर्बलाः ॥४३॥ इत्युक्त्वा पार्वती तुष्टा दत्त्वा रामं शुभाशिषम् ॥ जगन्मातुः पुरं तूर्णं हरिशब्दो बभूव ह ॥ ४४ ॥ काण्वशाखोक्तस्तोत्रं च पूजाकाले च यः पठेत् ॥ यत्राकाले च प्रातर्वा वाञ्छितार्थं लभेद् ध्रुवम् ॥४५॥ पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी कन्यकां लभेत् ॥ विद्यार्थी लभते विद्यां प्रजार्थी लभते प्रजाम्॥ ॥ ४६ ॥ भ्रष्टराज्यो लभेद्राज्यं धनं भ्रष्टधनो लभेत् ॥ यस्य तुष्टो गुरुर्देवो राजानो बान्धवास्तथा ॥४७॥ तस्य तुष्टश्च वरदः स्तोत्र राजप्रसादतः ॥ दस्युग्रस्तोऽहिग्रस्तश्च शत्रुग्रस्तो भयानकः ॥ ४८ ॥ व्याधिग्रस्तो भवेन्मुक्तः स्तोत्रस्मरणमात्रतः ॥ राजद्वारे श्मशाने च कारागारे च बन्धने ॥ ४९ ॥ जलराशौ निमग्नश्च मुक्तो भवति स्तोत्रतः ॥ स्वामिभेदे पुत्रभेदे मित्रभेदेऽतिदारुणे ॥५०॥ स्तोत्र स्मरणमात्रेण वाञ्छितार्थं लभेद् ध्रुवम् ॥ कृत्वा हविष्यं वर्षं च स्तोत्रराजं शृणोति या ॥५१॥ भक्त्या दुर्गां च संपूज्य महावन्ध्या प्रसू यते ॥ लभते सा दिव्यपुत्रं ज्ञानिनं चिरजीविनम् ॥ ५२ ॥ असौभाग्या च सौभाग्यं षण्मासश्रवणाल्लभेत् ॥ नवमासं काक वन्ध्या मृतवत्सा च भक्तितः ॥ ५३ ॥ स्तोत्रराजं या शृणोति सा पुत्रं लभते ध्रुवम् ॥ कन्यामाता पुत्रहीना पञ्चमासं शृणोति या ॥ ५४ ॥ घटे संपूज्य दुर्गां च सा पुत्रं लभते ध्रुवम् ॥ ५५ ॥ इति श्रीवृ० बृ० ध० उपासनास्तबके दुर्गोपासनाध्याये परशुराम प्रोक्तं दुर्गास्तोत्रं नाम त्रिचत्वारिंशं प्रकरणम् ॥४३॥ अथ दुर्गाकवचं तत्रैव ॥ नारद उवाच ॥ कवचं कथितं ब्रह्मन् पद्मायाश्च मनो हरम् ॥ परं दुर्गतिनाशिन्याः कवचं कथय प्रभो ॥ १ ॥ पद्माक्षः प्राणतुल्यं च जीवनाय चकार यम् ॥ कवचानां च यत्सारं दुर्ग

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नाशनकारणम् ॥ २ ॥ नारायण उवाच ॥ शृणु नारद वक्ष्यामि दुर्गायाः कवचं शुभम् ॥ श्रीकृष्णेनैव यद्दत्तं गोलोके ब्रह्मणे पुरा ॥ ३ ॥ ब्रह्मा त्रिपुरसंग्रामे शंकराय ददौ पुरा ॥ जघान त्रिपुरं रुद्रो यद्धृत्वा भक्तिपूर्वकम् ॥ ४ ॥ हरो ददौ गौतमाय पद्माक्षाय च गौतमः ॥ यतो बभूव पद्माक्षः सप्तद्वीपेश्वरो महान् ॥ ५ ॥ यद्धृत्वा पठनाद्ब्रह्मा ज्ञानवान् शक्तिमान्प्रभुः ॥ शिवो बभूव सर्वज्ञो योगिनां च गुरुर्यतः ॥ ६ ॥ शिवतुल्यो गौतमश्च बभूव मुनिसत्तमः ॥ यतो बभूव पद्माक्षः सप्तद्वीपेश्वरो जयी ॥ ७ ॥ ब्रह्माण्डविजयस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः ॥ ऋषिश्छन्दश्च गायत्री देवी दुर्गतिनाशिनी ॥ ८ ॥ ब्रह्माण्डविजयेष्वेव विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ पुण्यजीवश्च महतां कवचं परमाद्भुतम् ॥ ९ ॥ दुर्गादुर्गतिनाशिन्यै स्वाहा मे पातु मस्तकम् ॥ ह्रीं मे पातु कपालं च ऐं ह्रीं श्रीं पातु लोचने ॥ १० ॥ पातु मे कर्णयुग्मं च दुं दुर्गायै नमः सदा ॥ ऐं ह्रां श्रीं इति नासां मे सदा मां पातु सर्वतः ॥ ११ ॥ दुर्गे दुर्गे रक्षणीति स्वाहा चास्यं सदाऽवतु ॥ श्रीं ह्रीं क्लीं इति दन्तालीं पातु ह्रीमोष्ठयुग्मकम् ॥ १२ ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं पातु कण्ठं च दुर्गे रक्षतु गण्डकम् ॥ स्कन्धं दुर्गविनाशिन्यै स्वाहा पातु निरन्तरम् ॥ १३ ॥ वक्षो विपद्विनाशिन्यै स्वाहा मे पातु सर्वतः ॥ दुर्गे दुर्गे रक्षणीति स्वाहा नाभिं सदाऽवतु ॥ १४ ॥ दुर्गे दुर्गे रक्ष रक्ष पृष्ठं मे पातु सर्वतः ॥ ॐ दुं दुर्गायै स्वाहा च हस्तौ पादौ सदाऽवतु ॥ १५ ॥ श्रीं ह्रां दुर्गायै स्वाहा च सर्वाङ्गं मे सदाऽवतु ॥ प्राच्यां पातु महामाया चाग्नेय्यां पातु कालिका ॥ १६ ॥ दक्षिणे दक्षकन्या च नैर्ऋत्यां शिवसुन्दरी ॥ पश्चिमे पार्वती पातु वाराही वारुणे सदा ॥ १७ ॥ कुबेरमाता कौबेर्यामीशान्यामीश्वरी सदा ॥ ऊर्ध्वं नारायणी पातु ह्यम्बिकाऽधः सदाऽवतु ॥ १८ ॥ ज्ञानं ज्ञानप्रदा पातु स्वप्ना स्वप्ने सदाऽवतु ॥ इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघविग्रहम् ॥ १९ ॥ ब्रह्माण्डविजयं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥ स स्नातः सर्वतीर्थेषु सर्वपानेषु यत्फलम् ॥२०॥ सर्वव्रतोपवासे च तत्फलं लभते नरः ॥ गुरुमभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालंकारचन्दनैः ॥२१॥ कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ कवचं धारयेत्तु यः ॥ कवचं कण्वशाखोक्तमुक्तं नारद सुन्दरम् ॥२२॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपनीयं सुदुर्लभम् ॥ २३ ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उपासना

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

स्तबके दुर्गोपासनाध्याये गणपतिखण्डोक्तदुर्गाकवचनि० नाम चतुश्चत्वारिंशं प्रकरणम् ॥४४॥ अथ दुर्गासहस्रनामस्तोत्रम् ॥ उक्तं च कुलार्णवे ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ मम नामसहस्रं च शिवपूर्वविनिर्मितम् ॥ तत्पठ्यतां विधानेन तदा सर्वं भविष्यति ॥ १ ॥ इत्युक्त्व पार्वती देवी श्रावयामास तच्च तान् ॥ तदेव नामसहस्रं दकारादि वरानने ॥ २ ॥ रोगदारिद्र्यदौर्भाग्यशोकदुःखविनाशकम् ॥ सर्वास पूजितं नाम श्रीदुर्गा देवता मता ॥ ३ ॥ निजबीजं भवेद्बीजं मन्त्रं कीलकमुच्यते ॥ सर्वाशापूरणे देवी विनियोगः प्रकीर्तितः ॥४॥ दुंदुर्गा दुर्गतिहरा दुर्गाचलनिवासिनी ॥ दुर्गमार्गानुसंचारा दुर्गमार्गनिवासिनी ॥ ५ ॥ दुर्गमार्गप्रविष्टा च दुर्गमार्गप्रवेशिनी ॥ दुर्गमार्गकृतावासा दुर्गमार्गजयप्रिया ॥ ६ ॥ दुर्गमार्गगृहीतार्चा दुर्गमार्गस्थितात्मिका ॥ दुर्गमार्गस्तुतिपरा दुर्गमार्गस्मृतिः परा ॥ ७ ॥ दुर्गमार्गसदास्थाली दुर्गमार्गरतिप्रिया ॥ दुर्गमार्गस्थलस्थाना दुर्गमार्गविलासिनी ॥ ८ ॥ दुर्गमार्गत्यक्तवस्त्रा दुर्गमार्गप्रवर्तिनी ॥ दुर्गासुरनिहन्त्री च दुर्गासुरनिषूदिनी ॥ ९ ॥ दुर्गासुरहरा दूती दुर्गासुरविनाशिनी ॥ दुर्गासुरवधोन्मत्ता दुर्गासुरवधोत्सुका ॥१०॥ दुर्गासुरवधोत्साहा दुर्गासुरवधोद्यता ॥ दुर्गासुरवधप्रेप्सुर्दुर्गासुरमखान्तकृत् ॥ ११ ॥ दुर्गासुरध्वंसतोषा दुर्गदानवदारिणी ॥ दुर्गविद्रावणकरी दुर्गविद्रावणी सदा ॥ १२ ॥ दुर्गविक्षोभणकरी दुर्गशीर्षनिकृन्तनी ॥ दुर्गविध्वंसनकरी दुर्गदैत्यनिकृन्तनी ॥ १३ ॥ दुर्गदैत्यप्राणहरा दुर्गदैत्यान्तकारिणी ॥ दुर्गदैत्यहरत्राता दुर्गदैत्यासृगुन्मदा ॥ १४ ॥ दुर्गदैत्याशनकरी दुर्गचर्माम्बरावृता ॥ दुर्गयुद्धोत्सवकरी दुर्गयुद्धविशारदा ॥ १५ ॥ दुर्गयुद्धासवरता दुर्गयुद्धविमर्दिनी ॥ दुर्गयुद्धहास्यरता दुर्गयुद्धाट्टहासिनी ॥ १६ ॥ दुर्गयुद्धमहामत्ता दुर्गयुद्धानुसारिणी दुर्गयुद्धोत्सवोत्साहा दुर्गदेशनिषेविणी ॥१७॥ दुर्गदेशवासरता दुर्गदेशविलासिनी॥दुर्गदेशार्चनरता दुर्गदेशजनप्रिया॥१८॥ दुर्गमस्थानसंस्थाना दुर्गमध्यानुसाधना॥ दुर्गमा दुर्गमध्याना दुर्गमात्मस्वरूपिणी॥१९॥ दुर्गमागमसंधाना दुर्गमागमसंस्तुता ॥ दुर्गमागमदुर्ज्ञेया दुर्गमश्रुतिसंमता ॥ २० ॥ दुर्गमश्रुतिमान्या च दुर्गमश्रुतिपूजिता ॥ दुर्गमश्रुतिसुप्रीता दुर्गमश्रुतिहर्षदा ॥ २१ ॥ दुर्गमश्रुतिसंस्थाना दुर्गमश्रुतिमानिता ॥ दुर्गमाचारसन्तुष्टा दुर्गमाचारतोषिता ॥ २२ ॥ दुर्गमाचारनिर्वृत्ता दुर्गमाचारपूजिता ॥ दुर्ग

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

माचारकलिता दुर्गमस्थानदायिनी ॥ २३ ॥ दुर्गमप्रेमनिरता दुर्गमद्रविणप्रदा ॥ दुर्गमाम्बुजमध्यस्था दुर्गमाम्बुजवासिनी ॥ २४ ॥ दुर्गनाडीमार्गगतिदुर्गनाडीप्रचारिणी ॥ दुर्गनाडीपद्मरता दुर्गनाड्यम्बुजस्थिता ॥ २५ ॥ दुर्गनाडीगतायाता दुर्गनाडीकृतास्पदा ॥ दुर्गनाडीरतरत दुर्गनाडीशसंस्तुता ॥ २६ ॥ दुर्गनाडीश्वररता दुर्गनाडीशचुम्बिता ॥ दुर्गनाडीशक्रोडस्था दुर्गनाड्युत्थितोत्सुका ॥ ॥ २७ ॥ दुर्गनाड्यारोहणा च दुर्गनाडीनिषेविता ॥ दरिस्थाना दरिस्थानवासिनी दनुजान्तकृत् ॥ २८ ॥ दरीकृततपस्या च दरी कृतहरार्चना ॥ दरीजापितदिष्टा च दरीकृतरतिक्रिया ॥ २९ ॥ दरीकृतहरार्हा च दरीक्रीडितपुत्रिका ॥ दरीसंदर्शनरता दरीरोपित वृश्चिका ॥ ३० ॥ दरीगुप्तिकौतुकाढ्या दरीभ्रमणतत्परा ॥ दनुजान्तकरी दीना दनुसंतानदारिणी ॥ ३१ ॥ दनुजध्वंसिनी दूना दनुजेन्द्रविनाशिनी ॥ दानध्वंसिनी देवी दानवानां भयंकरी ॥ ३२ ॥ दानवी दानवाराध्या दानवेन्द्रवरप्रदा ॥ दानवेन्द्र निहन्त्री च दानवद्वेषिणी सती ॥ ३३ ॥ दानवारिप्रेमरता दानवारिप्रपूजिता ॥ दानवारिकृतार्चा च दानवारिविभूतिदा ॥ ३४ ॥ दानवारिमहानन्दा दानवारिरतिप्रिया ॥ दानवारिदानरता दानवारिकृतास्पदा ॥ ३५ ॥ दानवारिस्तुतिरता दानवारिस्मृतिप्रिया ॥ दानवार्याहाररता दानवारिप्रबोधिनी ॥ ३६ ॥ दानवारिधृतप्रेमा दुःखशोकविमोचिनी ॥ दुःखहन्त्री दुःखदात्री दुःखनिर्मूल कारिणी ॥ ३७ ॥ दुःखनिर्मूलनकरी दुःखदार्यरिनाशिनी ॥ दुःखहरा दुःखनाशा दुःखग्रामा दुरासदा ॥ ३८ ॥ दुःखहीना दुःख धारा द्रविणाचारदायिनी ॥ द्रविणोत्सर्गसन्तुष्टा द्रविणत्यागतोषिका ॥ ३९ ॥ द्रविणस्पर्शसन्तुष्टा द्रविणस्पर्शमानदा ॥ द्रविण स्पर्शहर्षाढ्या द्रविणस्पर्शतुष्टिदा ॥ ४० ॥ द्रविणस्पर्शनकरी द्रविणस्पर्शनातुरा ॥ द्रविणस्पर्शनोत्साहा द्रविणस्पर्शसाधिता ॥ ॥ ४१ ॥ द्रविणस्पर्शनमता द्रविणस्पर्शपुत्रिका ॥ द्रविणस्पर्शरक्षिणी द्रविणस्तोमदायिनी ॥ ४२ ॥ द्रविणाकर्षणकरी द्रविणौघ विसर्जनी ॥ द्रविणाचलदानाढ्या द्रविणाचलवासिनी ॥ ४३ ॥ दीनमाता दीनबन्धुर्दीनविघ्नविनाशिनी ॥ दीनसेव्या दीनसिद्धा दीन साध्या दिगम्बरी ॥ ४४ ॥ दीनगेहकृतानन्दा दीनगेहविलासिनी ॥ दीनभावप्रेमरता दीनभावविनोदिनी ॥ ४५ ॥ दीनमानव

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

चेतःस्था दीनमानवहर्षदा ॥ दीनदैन्यनिघातेच्छुर्दीनद्रविणदायिनी ॥ ४६ ॥ दीनसाधनसंतुष्टा दीनदर्शनदायिनी ॥ दीनपुत्रादि दात्री च दीनसंपद्विधायिनी ॥ ४७ ॥ दत्तात्रेयध्यानरता दत्तात्रेयप्रपूजिता ॥ दत्तात्रेयर्षिसंसिद्धा दत्तात्रेयविभाविता ॥ ४८ ॥ दत्तात्रेयकृतार्हा च दत्तात्रेयप्रसाधिता ॥ दत्तात्रेयहर्षदात्री दत्तात्रेयसुखप्रदा ॥ ४९ ॥ दत्तात्रेयस्तुता चैव दत्तात्रेयनुता सदा ॥ दत्तात्रेयप्रेमरता दत्तात्रेयानुमानिता ॥ ५० ॥ दत्तात्रेयसमुद्गीता दत्तात्रेयकुटुम्बिनी ॥ दत्तात्रेयप्राणतुल्या दत्तात्रेयशरीरिणी ॥ ५१ ॥ दत्तात्रेयकृतानन्दा दत्तात्रेयांशसंभवा ॥ दत्तात्रेयविभूतिस्था दत्तात्रेयानुसारिणी ॥ ५२ ॥ दत्तात्रेयगीतिरता दत्तात्रेयधनप्रदा ॥ दत्तात्रेयदुःखहरा दत्तात्रेयवरप्रदा ॥ ५३ ॥ दत्तात्रेयज्ञानदात्री दत्तात्रेयभयापहा ॥ देवकन्या देवमान्या देवदुःखविनाशिनी ॥ ५४ ॥ देवसिद्धा देवपूज्या देवेज्या देववन्दिता ॥ देवमान्या देवधन्या देवविघ्नविनाशिनी ॥ ५५ ॥ देवरम्या देवरता देवकौतुकतत्परा ॥ देवक्रीडा देवव्रीडा देववैरिविनाशिनी ॥ ५६ ॥ देवकामा देवरामा देवद्विष्टविनाशिनी ॥ देवदेवप्रिया देवी देवदानववन्दिता ॥ ॥ ५७ ॥ देवदेवरतानन्दा देवदेववरोत्सुका ॥ देवदेवप्रेमरता देवदेवप्रियंवदा ॥ ५८ ॥ देवदेवप्राणतुल्या देवदेवनितम्बिनी ॥ देवदेवहृतमना देवदेवसुखावहा ॥ ५९ ॥ देवदेवक्रोडरता देवदेवसुखप्रदा ॥ देवदेवमहानन्दा देवदेवप्रचुम्बिता ॥ ६० ॥ देवदेवोपभुक्ता च देवदेवानुसेविता ॥ देवदेवगतप्राणा देवदेवगतात्मिका ॥ ६१ ॥ देवदेवहर्षदात्री देवदेवसुखप्रदा ॥ देवदेवमहानन्दा देवदेवविलासिनी ॥ ६२ ॥ देवदेवधर्मपत्नी देवदेवमनोगता ॥ देवदेववधूर्देवदेवदेवार्चनप्रिया ॥ ६३ ॥ देवदेवाङ्कनिलया देवदेवाङ्गशायिनी ॥ देवदेवाङ्गसुखिनी देवदेवाङ्गवासिनी ॥ ६४ ॥ देवदेवाङ्गभूषा च देवदेवाङ्गभूषणा ॥ देवदेवप्रियकरी देवदेवाप्रियान्तकृत् ॥ ॥ ६५ ॥ देवदेवप्रियप्राणा देवदेवप्रियात्मिका ॥ देवदेवार्चकप्राणा देवदेवार्चकप्रिया ॥६६॥ देवदेवार्चकोत्साहा देवदेवार्चकप्रिया ॥ देवदेवार्चकाविघ्ना देवदेवप्रसूरपि ॥६७॥ देवदेवस्य जननी देवदेवविधायनी ॥ देवदेवस्य रमणी देवदेवहृदाश्रया ॥६८॥ देवदेवेष्टदेवी च देवतापसपातिनी ॥ देवताभावसंतुष्टा देवताभावतोषिता ॥६९॥ देवताभाववरदा देवताभावसिद्धिदा ॥ देवताभावसंसिद्धा देवता

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

भावसंभवा॥ ७० ॥ देवताभावसुखिनी देवताभाववन्दिता देवताभावसुप्रीता देवताभावहर्षदा ॥ ७१ ॥ देवताविघ्नहन्त्री च देवता दिष्टनाशिनी ॥ देवतापूजितपदा देवताप्रेमतोषिता ॥ ७२ ॥ देवतागारनिलया देवतासौख्यदायिनी ॥ देवतानिजभावा च देवता हृतमानसा ॥ ७३ ॥ देवताकृतपादार्चा देवताहृतभक्तिका ॥ देवतागर्वमध्यस्था देवतादेवतातनुः ॥ ७४ ॥ दुं दुर्गायै नमो नाम्नी दुंफण्मन्त्रस्वरूपिणी ॥ दूं नमो मन्त्ररूपा च दूं नमो मूर्तिकात्मिका ॥ ७५ ॥ दूरदर्शिप्रिया दुष्टा दुष्टभूतनिषेविता ॥ दूरदर्शिप्रेमरता दूरदर्शिप्रियंवदा ॥ ७६ ॥ दूरदर्शिसिद्धिदात्री दूरदर्शिप्रतोषिता ॥ दूरदर्शिकण्ठसंस्था दूरदर्शिप्रहर्षिता ॥ ७७ ॥ दूरदर्शिगृहीतार्चा दूरदर्शिप्रतर्पिता ॥ दूरदर्शिप्राणतुल्या दीर्घदर्शिसुखप्रदा ॥ ७८ ॥ दूरदर्शिभ्रान्तिहरा दूरदर्शिहृदास्पदा ॥ दूरदर्श्यरिविद्भावा दीर्घ दर्शिप्रमोदिनी ॥ ७९ ॥ दीर्वदर्शिप्राणतुल्या दीर्घदर्शिवरप्रदा ॥ दीर्घदर्शिहर्षदात्री दीर्घदर्शिप्रहर्षिता ॥ ८० ॥ दीर्घदर्शिमहानन्दा दीर्घदर्शिगृहालया ॥ दीर्घदर्शिगृहीतार्चा दीर्घदर्शिहृताहर्णा ॥ ८१ ॥ दया दानवती दात्री दयालुर्दीनवत्सला ॥ दयार्द्रा च दया शीला दयाढ्या च दयात्मिका ॥ ८२ ॥ दया दानवती दात्री दयालुर्दीनवत्सला ॥ दयार्द्रा च दयाशीला दयाढ्या च दया त्मिका ॥ ८३ ॥ दयाम्बुधिर्दयासारा दयासागरपारगा ॥ दयासिन्धुर्दयाभारा दयावत्करुणाकरी ॥ ८४ ॥ दयावद्वत्सला देवी दया दानरता सदा ॥ दयावद्भक्तिसुखिनी दयावत्परितोषिता ॥ ८५ ॥ दयावत्स्नेहनिरता दयावत्प्रतिपादिका ॥ दयावत्त्राणकर्त्री च दयावन्मुक्तिदायिनी ॥ ८६ ॥ दयावद्भावसंतुष्टा दयावत्परितोषिता ॥ दयावत्तारणपरा दयावत्सिद्धिदायिनी ॥ ८७ ॥ दया वत्पुत्रवद्भावा दयावत्पुत्ररूपिणी ॥ दयावद्देहनिलया दयाबन्धुर्दयाश्रया ॥ ८८ ॥ दयालुवात्सल्यकरी दयालुसिद्धिदायिनी ॥ दयालु शरणाशक्ता दयालुदेहमन्दिरा ॥ ८९ ॥ दयालुभक्तिभावस्था दयालुप्राणरूपिणी ॥ दयालुसुखदा दम्भा दयालुप्रेमवर्षिणी ॥ ९० ॥ दयालुवशगा दीर्घा दीर्घाङ्गी दीर्घलोचना ॥ दीर्घनेत्रा दीर्घचक्षुर्दीर्घबाहुलतात्मिका ॥ ९१ ॥ दीर्घकेशी दीर्घमुखी दीर्घ घोणा च दारुणा ॥ दारुणासुरहन्त्री च दारुणासुरदारिणी ॥ ९२ ॥ दारुणाहवकर्त्री च दारुणाहवहर्षिता ॥ दारुणाहवहोमाढ्या

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दारुणाचलनाशिनी ॥ ९३ ॥ दारुणाचारनिरता दारुणोत्सवहर्षिता ॥ दारुणोद्यतरूपा च दारुणारिनिवारिणी ॥ ९४ ॥ दारुणेक्षणसंयुक्ता दोश्चतुष्कविराजिता ॥ दशदोष्का दशभुजा दशबाहुविराजिता ॥ ९५ ॥ दशास्त्रधारिणी देवी दशदिक्ख्यातविक्रमा ॥ दशरथार्चितपदा दाशरथिप्रिया सदा ॥ ९६ ॥ दाशरथिप्रेमतुष्टा दाशरथिरतिप्रिया ॥ दाशरथिप्रियकरी दाशरथिप्रियंवदा ॥ ९७ ॥ दाशरथीष्टसंदात्री दाशरथीष्टदेवता ॥ दाशरथिद्वेषिनाशा दाशरथ्यानुकूल्यदा ॥ ९८ ॥ दाशरथिप्रियतमा दाशरथिप्रपूजिता ॥ दशाननारिसंपूज्या दशाननारिदेवता ॥ ॥९९॥ दशाननारिप्रमदा दशाननारिजन्मभूः ॥ दशाननारिरतिदा दशाननारिसेविता ॥ १०० ॥ दशाननारिसुखदा दशाननारिवैरिहृत् ॥ दशाननारीष्टदेवी दशग्रीवारिवन्दिता ॥ १ ॥ दशग्रीवारिजननी दशग्रीवारिभाविनी ॥ दशग्रीवारिसहिता दशग्रीवसभाजिता ॥ २ ॥ दशग्रीवारिरमणी दशग्रीववधूरपि ॥ दशग्रीवनाशकर्त्री दशग्रीववरप्रदा ॥ ३ ॥ दशग्रीवपुरस्था च दशग्रीववधोत्सुका ॥ दशग्रीवप्रीतिदात्री दशग्रीवविनाशिनी ॥ ४ ॥ दशग्रीवाहवकरी दशग्रीवानपायिनी ॥ दशग्रीवप्रिया वन्द्या दशग्रीवहृता तथा ॥ ५ ॥ दशग्रीवाहितकरी दशग्रीवेश्वरप्रिया ॥ दशग्रीवेश्वरप्राणा दशग्रीववरप्रदा ॥ ६ ॥ दशग्रीवेश्वररता दशवर्षीयकन्यका ॥ दशवर्षीयबाला च दशवर्षीयवासिनी ॥ ७ ॥ दशपापहरा दम्या दशहस्तविभूषिता ॥ दशशस्त्रलसद्दोष्का दशदिक्पालवन्दिता ॥ ८ ॥ दशावताररूपा च दशावताररूपिणी ॥ दशविद्याभिन्नदेवी दशप्राणस्वरूपिणी ॥ ९ ॥ दशविद्यास्वरूपा च दशविद्यामयी तथा ॥ दृक्स्वरूपा दृक्प्रदात्री दृग्रूपा दृक्प्रकाशिनी ॥ ११० ॥ दिगन्तरा दिगन्तस्था दिगम्बरविलासिनी ॥ दिगम्बरसमाजस्था दिगम्बरप्रपूजिता ॥ ११ ॥ दिगम्बरसहचरी दिगम्बरकृतास्पदा॥ दिगम्बरहृतचित्ता दिगम्बरकथाप्रिया ॥ १२ ॥ दिगम्बरगुणरता दिगम्बरस्वरूपिणी ॥ दिगम्बरशिरोधार्या दिगम्बरहृताश्रया ॥ १३ ॥ दिगम्बरप्रेमरता दिगम्बररतातुरा ॥ दिगम्बरीस्वरूपा च दिगम्बरीगणार्चिता ॥ १४ ॥ दिगम्बरीगणप्राणा दिगम्बरीगणप्रिया ॥ दिगम्बरीगणाराध्या दिगम्बरगणेश्वरी ॥ १५ ॥ दिगम्बरगणस्पर्शामदिरामानविह्वला ॥ दिगम्बरीकोटिवृता



Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दिगम्बरीगणावृत्ता ॥ १६ ॥ दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा ॥ दुरन्तदानवद्वेष्ट्री दुरन्तदनुजान्तकृत् ॥ १७ ॥ दुरन्त पापहन्त्री च दस्रनिरतारकारिणी ॥ दस्रमानससंस्थाना दस्रज्ञानविवार्धिनी ॥ १८ ॥ दस्रसंभोगजननी दस्रसंभोगदायिनी ॥ दस्र संभोगभवना दस्रविद्याविधायिनी ॥ १९ ॥ दस्रोद्वेगहरा दस्रजननी दस्रसुन्दरी ॥ दस्रभक्तिविधाज्ञाना दस्रद्विष्टविनाशिनी ॥ ॥ १२० ॥ दस्रापकारदमनी दस्रसिद्धिविधायिनी ॥ दस्रताराराधिता च दस्रमातृप्रपूजिता ॥ २१ ॥ दस्रदैन्यहरा चैव दस्रतातनिषे विता ॥ दस्रपितृशतज्योतिर्दस्रकौशलदायिनी ॥२२॥दशशीर्षारिसहिता दशशीर्षारिकामिनी ॥ दशशीर्षपुरी देवी दशशीर्षसभाजिता ॥ २३ ॥ दशशीर्षारिसुप्रीता दशशीर्षवधूप्रिया ॥ दशशीर्षशिरश्छेत्री दशशीर्षनितम्बिनी ॥ २४ ॥ दशशीर्षहरप्राणा दशशीर्ष हरात्मिका ॥ दशशीर्षहराराध्या दशशीर्षरिवन्दिता ॥ २५ ॥ दशशीर्षारिसुखदा दशशीर्षकपालिनी ॥ दशशीर्षज्ञानदात्री दश शीर्षारिदेहिनी ॥ २६ ॥ दशशीर्षवधोपात्तश्रीरामचन्द्ररूपता ॥ दशशीर्षराष्ट्रदेवी दशशीर्षारिसारिणी ॥ २७ ॥ दशशीर्षभ्रातृतुष्टा दशशीर्षवधूप्रिया ॥ दशशीर्षवधूप्राणा दशशीर्षवधूरता ॥ २८ ॥ दैत्यगुरुरता साध्वी दैत्यगुरुप्रपूजिता ॥ दैत्यगुरूपदेष्ट्री च दैत्य गुरुनिषेविता ॥ २९ ॥ दैत्यगुरुगतप्राणा दैत्यगुरुतापनाशिनी ॥ दुरन्तदुःखशमनी दुरन्तदमनी तमी ॥ १३० ॥ दुरन्तशोकशमनी दुरन्तरोगनाशिनी ॥ दुरन्तवैरिदमनी दुरन्तदैत्यनाशिनी ॥ ३१ ॥ दुरन्तकलुषघ्नी च दुष्कृतिस्तोमनाशिनी ॥ दुराशया दुराधारा दुर्जया दुष्टकामिनी ॥ ३२ ॥ दर्शनीया च दृश्या च दृश्या च दृष्टिगोचरा ॥ दूतीयागप्रिया दूती दूतीयागकरप्रिया ॥ ३३ ॥ दूतीयागकरानन्दा दूतीयागसुखप्रदा ॥ दूतीयागकरायाता दूतीयागप्रमोदिनी ॥ ३४ ॥ दुर्वासःपूजिता चैव दुर्वासोमुनिभाविता ॥ दुर्वासोऽर्चितपादा च दुर्वासोमौनभाविता ॥ ३५ ॥ दुर्वासोमुनिवन्द्या च दुर्वासोमुनिदेवता ॥ दुर्वासोमुनिमाता च दुर्वासोमुनि सिद्धिदा ॥ ३६ ॥ दुर्वासोमुनिभावस्था दुर्वासोमुनिसेविता ॥ दुर्वासोमुनिचित्तस्था दुर्वासोमुनिमण्डिता ॥ ३७ ॥ दुर्वासो मुनिसंचारा दुर्वासोहृदयंगमा ॥ दुर्वासोहृदयाराध्या दुर्वासोहृत्सरोजगा ॥ ३८ ॥ दुर्वासस्तापसाराध्या दुर्वासस्तापसाश्रया ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दुर्वासस्तापसरता दुर्वासस्तापसेश्वरी ॥ ३९ ॥ दुर्वासोमुनिकन्या च दुर्वासोद्भुतसिद्धिदा ॥ दररात्री दरहरा दरयुक्ता दरापहा ॥ ॥ १४० ॥ दरघ्नी दरहन्त्री च दरयुक्ता दराश्रया ॥ ४१ ॥ दरस्मेरा दरापांगी दया दात्री दयाश्रया ॥ दस्रपूज्या दस्रमाता दस्र देवी दुरोन्मदा ॥ ४२ ॥ दस्रसिद्धा दस्रसंस्था दस्रतापविमोचिनी ॥ दस्रक्षोभहरा नित्या दस्रलोकगतात्मिका ॥ ४३ ॥ दैत्य गुर्वंगनावन्द्या दैत्यगुर्वंगनाप्रिया ॥ दैत्यगुर्वंगनासिद्धा दैत्यगुर्वंगनोत्सुका ॥ ४४ ॥ दैत्यगुरुप्रियतमा देवगुरुनिषेविता ॥ देव गुरुप्रसूरूपा देवगुरुकृतार्हणा ॥ ४५ ॥ देवगुरुप्रेमयुता देवगुर्वनुमानिता ॥ देवगुरुप्रभावज्ञा देवगुरुसुखप्रदा ॥ ४६ ॥ देवगुरुज्ञान दात्री देवगुरुप्रमोदिनी ॥ दैत्यस्त्रीगणसंपूज्या दैत्यस्त्रीगणपूजिता ॥ ४७ ॥ दैत्यस्त्रीगणरूपा च दैत्यस्त्रीचित्तहारिणी ॥ देवस्त्री गणपूज्या च देवस्त्रीगणवन्दिता ॥ ४८ ॥ देवस्त्रीगणचित्तस्था देवस्त्रीगणभूषिता ॥ देवस्त्रीगणसंसिद्धा देवस्त्रीगणतोषिता ॥ ४९ ॥ देवस्त्रीगणहस्तस्थचारुचामरवीजिता ॥ देवस्त्रीगणहस्तस्थचारुगन्धविलेपिता ॥ १५० ॥ देवांगनाधृतादर्शदृष्ट्यर्थमुखचन्द्रमाः ॥ देवांगनोत्सृष्टनागवल्लीदलकृतोत्सुका ॥ ५१ ॥ देवस्त्रीगणहस्तस्थ दीपमाला विलोकना ॥ देवस्त्रीगणहस्तस्थधूपघ्राणविनोदिनी ॥ ५२ ॥ देवनारीकरगतवासकासवपायिनी ॥ देवनारीकङ्कतिकाकृतकेशनिमार्जना ॥ ५३ ॥ देवनारीसेव्यगात्रा देवनारीकृतो त्सुका ॥ देवनारीविरचितपुष्पमालाविराजिता ॥ ५४ ॥ देवनारीविचित्रांगी देवस्त्रीदत्तभोजना ॥ देवस्त्रीगणगीता च देवस्त्री गीतसोत्सुका ॥ ५५ ॥ देवस्त्रीनृत्यसुखिनी देवस्त्रीनृत्यदर्शिनी ॥ देवस्त्रीयोजितलसद्रत्नपादपदाम्बुजा ॥ ५६ ॥ देवस्त्रीगणविस्तीर्ण चारुतल्पनिषेदुषी ॥ देवनारीचारुकराकलितांघ्र्यादिदेहिका ॥ ५७ ॥ देवनारीकरव्यग्रतालवृन्तमरुत्सुखा ॥ देवनारीवेणुवीणा नादसोत्कण्ठमानसा ॥ ५८ ॥ देवकोटिस्तुतिनुता देवकोटिकृतार्हणा ॥ देवकोटिगीतगुणा देवकोटिकृतस्तुतिः ॥ ५९ ॥ दन्त दष्टचोद्वेगफला देवकोलाकुला ॥ द्वेषरागपरित्यक्ता द्वेषरागविवर्जिता ॥ १६० ॥ दामपूज्या दामभूषा दामोदरविलासिनी ॥ दामोदरप्रेमरता दामोदरभगिन्यपि ॥ ६१ ॥ दामोदरप्रसूर्दामोदरपत्नीपतिव्रता ॥ दामोदराभिन्नदेहा दामोदररतिप्रिया ॥ ६२ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दामोदराभिन्नतनुर्दामोदरकृतास्पदा ॥ दामोदरकृतप्राणा दामोदरगतात्मिका ॥ ६३ ॥ दामोदरकौतुकाढ्या दामोदरकलाकला ॥ दामोदरालिंगितांगी दामोदरकुतूहला ॥ ६४ ॥ दामोदरकृताह्लादा दामोदरसुचुम्बिता ॥ दामोदरसुताकृष्टा दामोदरसुखप्रदा ॥ ६५ ॥ दामोदरसहाढ्या च दामोदरसहायिनी ॥ दामोदरगुणज्ञा च दामोदरवरप्रदा ॥ ६६ ॥ दामोदरानुकूला च दामोदर नितम्बिनी ॥ दामोदरजलक्रीडाकुशला दर्शनप्रिया ॥ ६७ ॥ दामोदरजलक्रीडात्यक्तस्वजनसौहृदा ॥ दामोदरलसद्रासकेलि कौतुकिनी तथा ॥ ६८ ॥ दामोदरभ्रातृका च दामोदरपरायणा ॥ दामोदरधरा दामोदरवैरिविनाशिनी ॥ ६९ ॥ दामोदरोपजाया च दामोदरनिमन्त्रिता ॥ दामोदरपराभूता दामोदरपराजिता ॥ १७० ॥ दामोदरसमाक्रान्ता दामोदरहताशुभा ॥ दामोदरोत्सव रता दामोदरोत्सवावहा ॥ ७१ ॥ दामोदरस्तन्दात्री दामोदरगवेषिता ॥ दमयन्तीसिद्धिदात्री दमयंतीप्रसाधिता ॥ ७२ ॥ दम यन्तीष्टदेवी च दमयन्तीस्मरूपिणी ॥ दमयन्तीकृतार्चा च दमनर्षिविभाविता॥७३॥दमनर्षिप्राणतुल्या दमनर्षिस्वरूपिणी ॥ दमनर्षि स्वरूपा च दम्भपूरितविग्रहा ॥ ७४ ॥ दम्भहन्त्री दम्भधात्री दम्भलोकविमोहिनी ॥ दम्भशीला दम्भहरा दम्भवत्परिमर्दिनी ॥ ॥ ७५ ॥ दम्भरूपा दम्भकरी दम्भसन्तानदारिणी ॥ दत्तमोक्षा दत्तधना दत्तारोग्या च दाम्भिका ॥ ७६ ॥ दत्तपुत्रा दत्तदारा दत्त हारा च दारिका ॥ दत्तभोगा दत्तशोका दत्तहस्त्यादिवाहना ॥७७॥ दत्तमतिर्दत्तभार्या दत्तशास्त्रावबोधिका ॥ दत्तपाना दत्तदाना दत्तदारिद्र्यनाशिनी ॥ ७८ ॥ दत्तसौधावनीवासा दत्तस्वर्गा च दासदा ॥ दास्यतुष्टा दास्यहरा दासदासीशतप्रदा ॥ ७९ ॥ दाररूपा दारवासा दारवसिहृदास्पदा ॥ दारवासिजनाराध्या दारवासिजनप्रिया ॥ १८० ॥ दारवासिविनिर्मिता दारवासिसमर्चिता ॥ दारवास्याहृतप्राणा दारवास्यरिनाशिनी ॥ ८१ ॥ दारवासिविघ्नहरा दारवासिविमुक्तिदा ॥ दाराग्निरूपिणी दारा दारकार्यरिनाशिनी ॥ ८२ ॥ दम्पती दम्पतीष्टा च दम्पतीप्राणरूपिका ॥ दम्पतीस्नेहनिरता दाम्पत्यसाधनप्रिया ॥ ८३ ॥ दाम्पत्यसुखसेना च दाम्पत्यसुखदायिनी ॥ दम्पत्याचारनिरता दम्पन्यामोदमोदिता ॥ ८४ ॥ दम्पत्यामोदसुखिनी दाम्पत्याह्लादकारिणी ॥ दम्पती

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ष्टपादपद्मा दाम्पत्यप्रेमरूपिणी ॥ ८५ ॥ दाम्पत्यभोगभवना दाडिमीफलभोजिनी ॥ दाडिमीफलसंतुष्टा दाडिमीफलमानसा ॥ ॥ ८६ ॥ दाडिमीवृक्षसंस्थाना दाडिमीवृक्षवासिनी ॥ दाडिमीवृक्षरूपा च दाडिमीवनवासिनी ॥ ८७ ॥ दाडिमीफलसाम्योरुपयोधरसमन्विता ॥ दक्षिणा दक्षिणारूपा दक्षिणारूपधारिणी ॥ ८८ ॥ दशकन्या दक्षपुत्री दक्षमाता च दक्षसूः ॥ दक्षगोत्रा दक्षसुता दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ८९ ॥ दक्षयज्ञनाशकर्त्री दक्षयज्ञान्तकारिणी ॥ दक्षप्रसूतिर्दक्षेज्या दक्षवंशैकपावनी ॥ १९० ॥ दक्षात्मजदक्षसूनुर्दक्षजा दक्षजातिका ॥ दक्षजन्मा दक्षजनुर्दक्षदेहसमुद्भवा ॥ ९१ ॥ दक्षजनिर्दक्षयागध्वंसिनी दक्षकन्यका ॥ दक्षिणाचारनिरता दक्षिणाचारतुष्टिदा ॥ ९२ ॥ दक्षिणाचारसंसिद्धा दक्षिणाचारभाविता ॥ दक्षिणाचारसुखिनी दक्षिणाचारसाधिता ॥ ९३ ॥ दक्षिणाचारमोक्षाप्तिर्दक्षिणाचारवन्दिता ॥ दक्षिणाचारशरणा दक्षिणाचारहर्षिता ॥ ९४ ॥ द्वारपालप्रिया द्वारवासिनी द्वारसंस्थिता ॥ द्वाररूपा द्वारसंस्था द्वारदेशनिवासिनी ॥ ९५ ॥ द्वारकरी द्वारधात्री दोषमात्रविवर्जिता ॥ दोषाकरा दोषहरा दोषराशिविनाशिनी ॥ ९६ ॥दोषाकरविभूषाढ्या दोषाकरकपालिनी ॥ दोषाकरसहस्राभा दोषाकरसमानना ॥ ९७ ॥ दोषाकरमुखी दिव्या दोषकरकराग्रजा ॥ दोषाकरसमज्योतिर्दोषाकरसुशीतला ॥ ९८ ॥ दोषाकरश्रेणिदोषसदृशापाङ्गवीक्षणा ॥ दोषाकरेष्टदेवी च दोषाकरनिषेविता ॥ ९९ ॥ दोषाकरप्राणरूपा दोषाकरमरीचिका ॥ दोषाकरोल्लसद्भाला दोषाकरसुहर्षिणी ॥ २०० ॥ दोषाकरशिरोभूषा दोषाकरवधूप्रिया ॥ दोषाकरवधूप्राणा दोषाकरवधूमता ॥ १ ॥ दोषाकरवधूप्रीता दोषाकरवधूरपि ॥ दोषापूज्या तथा दोषापूजिता दोषहारिणी ॥२॥ दोषाजापमहानन्दादोषाजापपरायणा ॥ दोषापुरश्चाररता दोषापूजकपुत्रिणी ॥ ३ ॥ दोषापूजकवात्सल्यकारिणी जगदम्बिका ॥ दोषापूजकवैरिघ्नी दोषापूजकविघ्नहृत् ॥ ४ ॥ दोषापूजकसंतुष्टा दोषापूजकमुक्तिदा ॥ दमप्रसूनसंपूज्या दमपुष्पप्रिया सदा ॥ ५ ॥ दुर्योधनप्रपूज्या च दुःशासनसमार्चिता ॥ दण्डपाणिप्रिया दण्डपाणिमाता दयानिधिः ॥ ६ ॥ दण्डपाणिसमाराध्या दण्डपाणिप्रपूजिता ॥ दण्डपाणिगृहासक्ता दण्डपाणिप्रियंवदा ॥ ७ ॥ दण्डपाणिप्रियतमा दण्डपाणिमनोहरा ॥ दण्डपाणिहृतप्राणा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दण्डपाणिसुसिद्धिदा ॥ ८ ॥ दण्डपाणिपरामृष्टा दण्डपाणिप्रहर्षिता ॥ दण्डपाणिविघ्नहरा दण्डपाणिशिरोधृता ॥ ९ ॥ दण्डपाणि प्राप्तचर्चा दण्डपाण्युन्मुखी सदा ॥ दण्डपाणिप्राप्तपदा दण्डपाणिवरोन्मुखी ॥ २१० ॥ दण्डहस्ता दण्डपाणिर्दण्डबाहुर्दरान्तकृत् ॥ दण्डदोष्का दण्डकरा दण्डचित्तकृतास्पदा ॥ ११ ॥ दण्डिविद्या दण्डिमाता दण्डिखण्डकनाशिनी ॥ दण्डप्रिया दण्डिराज्या दण्डि सन्तोषदायिनी ॥ १२ ॥ दस्युपूज्या दस्युरता दस्युद्रविणदायिनी ॥ दस्युवर्गकृतार्हा च दस्युवर्गविनाशिनी ॥ १३ ॥ दस्युनिर्णा शिनी दस्युकुलनिर्णाशिनी तथा ॥ दस्युप्रियकरी दस्युनृत्यदर्शनतत्परा ॥ १४ ॥ दुष्टदण्डकरी दुष्टवर्गविद्राविणी तथा ॥ दुष्टवर्ग निग्रहार्हा दूषकप्राणनाशिनी ॥ १५ ॥ दूषकोत्तापजननी दूषकारिष्टकारिणी ॥ दूषकद्वेषणकरी दाहिका दहनात्मिका ॥१६॥ दारुकारि निहन्त्री च दारुकेश्वरपूजिता ॥ दारुकेश्वरमाता च दारुकेश्वरवन्दिता ॥ १७ ॥ दर्भहस्ता दर्भयुता दर्भकर्मविवर्जिता ॥ दर्भमयी दर्भतनुर्दर्भसर्वस्वरूपिणी ॥ १८ ॥ दर्भकर्माचाररता दर्भहस्तकृतार्हणा ॥ दर्भानुकूला दार्भर्या दर्वीपात्रानुदामिनी ॥ १९ ॥ दमघोष प्रपूज्या च दमघोषवरप्रदा ॥ दमघोषसमाराध्या दावाग्निरूपिणी तथा ॥ २२० ॥ दावाग्निरूपा दावाग्निनिर्णाशितमहाबला ॥ दन्त दंष्ट्रासुरकला दन्तचर्चितहस्तिका ॥२१॥ दन्तदंष्ट्रस्यन्दना च दन्तिनिर्णाशितासुरा ॥ दधिपूज्या दधिप्रीता दधीचिवरदायिनी ॥२२॥ दधीचीष्टदेवता च दधीचिमोक्षदायिनी ॥ दधीचिदैन्यहन्त्री च दधीचिदरदारिणी ॥ २३ ॥ दधीचिभक्तिसुखिनी दधीचिमुनिसेविता ॥ दधीचिज्ञानदात्री च दधीचिगुणदायिनी ॥२४॥ दधीचिकुलसंभूषा दधीचिभुक्तिमुक्तिदा ॥ दधीचिकुलदेवी च दधीचिकुलदेवता॥२५॥ दधीचिकुलगम्या च दधीचिकुलपूजिता ॥ दधीचिसुखदात्री च दधीचिदैन्यहारिणी ॥ २६ ॥ दधीचिदुःखहन्त्री च दधीचिकुल सुन्दरी ॥ दधीचिकुलसंभूता दधीचिकुलपालिनी ॥ २७ ॥ दधीचिदानगम्या च दधीचिदानमानिनी ॥ दधीचिदानसंतुष्टा दधीचि दानदेवता ॥ २८ ॥ दधीचिजपसंप्रीता दधीचिजपमानसा ॥ दधीचिजपपूजाढ्या दधीचिजपमालिका ॥ २९ ॥ दधीचिजप संतुष्टा दधीचिजपतोषिणी ॥ दधीचितापसाराध्या दधीचिशुभदायिनी ॥ २३० ॥ दूर्वा दूर्वादलश्यामा दूर्वादलसमद्युतिः ॥ ३१ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नाम्नां सहस्रं दुर्गाया दादीनामिति कीर्तितम् ॥ यः पठेत्साधकाधीशः सर्वसिद्धीर्लभेत्तु सः ॥ ३२ ॥ प्रातर्मध्याह्नकाले च संध्यायां नियतः शुचिः ॥ तथाऽर्धरात्रसमये स महेश इवापरः ॥ ३३ ॥ शक्तियुक्तो महारात्रौ महावीरः प्रपूजयेत् ॥ महादेवीं मकराद्यैः पञ्चभिर्द्रव्यसत्तमैः ॥ ३४ ॥ यः संपठेत्स्तुतिमिमां स च सिद्धिस्वरूपधृक् ॥ देवालये श्मशाने च गङ्गातीरे निजे गृहे ॥ ३५ ॥ वाराङ्गनागृहे चैव श्रीगुरोः सन्निधावपि ॥ पर्वते प्रान्तरे घोरे स्तोत्रमेतत्सदा पठेत् ॥ ३६ ॥ दुर्गानामसहस्रं हि दुर्गां पश्यति चक्षुषा ॥ शतावर्तनमेतस्य पुरश्चरणमुच्यते ॥ स्तुतिसारो निगदितः किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ २३७ ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उपासनास्तबके दुर्गोपासनाध्याये कुलार्णवोक्तश्रीदुर्गादकारादिसहस्रनामस्तोत्रनिरूपणं नामपञ्चचत्वारिंशं प्रकरणम् ॥ ४५ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

# अथ श्रीदुर्गाया दकारादिसहस्रनामावलिः ।

ॐअस्यश्री दुर्गासहस्रनामस्तोत्र मन्त्रस्य शिव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीदुर्गा देवता निजंबीजं मन्त्रः कीलकं सर्वाशापूरकश्री दुर्गादेवीप्रीत्यर्थमेभिर्नामभिरमुकपुष्पाक्षतसमर्पणे विनयोगः ॥

१ ॐ दुं दुर्गायै नमः
२ ॐ दुर्गतिहरायै नमः
३ ॐ दुर्गाचलनिवासिन्यै०
४ ॐ दुर्गमा र्गानुसंचारायै०
५ ॐ दुर्गमार्गनिवासिन्यै०
६ ॐ दुर्गमार्गप्रविष्टायै०
७ ॐ दुर्गमार्गप्रवेशिन्यै०
८ ॐ दुर्गमार्गकृतावासायै०
९ ॐ दुर्गमार्गजयप्रियायै०
१० ॐ दुर्गमार्गगृहीतार्चायै०
११ ॐ दुर्गमार्गस्थितात्मिका०
१२ ॐ दुर्गमार्गस्तुतिपरायै०
१३ ॐ दुर्गमार्गस्मृतिपरायै०
१४ ॐ दुर्गमार्गसदास्थाल्यै०
१५ ॐ दुर्गमार्गरतिप्रियायै०
१६ ३० दुर्गमागस्थलस्थाना०
१७ ॐ दुर्गमार्गविलासिन्यै०
१८ ॐ दुर्गमार्गत्यक्तवस्त्रायै०
१९ ॐ दुर्गमार्गप्रवर्तिन्य०
२० ॐ दुर्गासुरनिहन्त्र्यै०
२१ ॐ दुर्गासुरनिषूदिन्यै०
२२ ॐ दुर्गासुरहरायै नमः
२३ ॐ दूत्यै नमः
२४ ॐ दुर्गासुरविनाशिन्यै०
२५ ॐ दुर्गासुरवधोन्मत्तायै०
२६ ॐ दुर्गासुरवधोत्कायै०
२७ ॐ दुर्गासुधोत्साहायै०
२८ ॐ दुर्गासुरवधोत्सहायै०
२९ ॐ दुर्गासुरवधप्रेप्सवे नमः
३० ॐ दुर्गासुरमखान्तकृते०
३१ ॐ दुर्गासुरध्वंसतोषायै०
३२ ॐ दुर्गदानवदारिण्यै नमः
३३ ॐ दुर्गविद्रावणकर्यै नमः
३४ ॐ दुर्गविद्राविण्यै नमः
३५ ॐ दुर्गविक्षोभणकर्यै नमः
३६ ॐ दुर्गशीर्षनिकृन्तिन्यै०
३७ ॐ दुर्गविध्वंसनकर्यै नमः
३८ ॐ दुर्गदैत्यनिकृन्तिन्यै०
३९ ॐ दुर्गदैत्यप्राणहरायैनमः
४० ॐ दुर्दैत्यान्तकारिण्यै०
४१ ॐ दुर्गदैत्यहरत्रात्रे नमः
४२ ॐ दुर्गदैत्यासृगुन्मदायै०
४३ ॐ दुर्गदैत्याशनकर्यै नमः
४४ ॐ दुर्गचर्माम्बरावृतायै०
४५ ॐ दुर्गयुद्धोत्सवकर्यै नमः
४६ ॐ दुर्गयुद्धविशारदायैनमः
४७ ॐ दुर्गयुद्धासवरतायैनमः
४८ ॐ दुर्गयुद्धविमर्दिन्यै नमः
४९ ॐ दुर्गयुद्धहास्यरतायै०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

५० ॐ दुर्गयुद्धाट्टहासिन्यै०
५१ ॐ दुर्गयुद्धमहामत्तायै०
५२ ॐ दुर्गयुद्धानुसारिण्यै०
५३ ॐ दुर्गयुद्धोत्सवोत्साहायै०
५४ ॐ दुर्गदेशनिषेविण्यै०
५५ ॐ दुर्गदेशवासरतायै०
५६ ॐ दुर्गदेशविलासिन्यै०
५७ ॐ दुर्गदेशार्चनरतायै०
५८ ॐ दुर्गदेशजनप्रियायै०
५९ ॐ दुर्गमस्थानसंस्थाना०
६० ॐ दुर्गमध्यानुसाधनायै०
६१ ॐ दुर्गमायै नमः
६२ ॐ दुर्गमध्यानायै नमः
६३ ॐ दुर्गमात्मस्वरूपिण्यै०
६४ ॐ दुर्गमागमसंधानायै०
६५ ॐ दुर्गमागमसंस्तुतायै०
६६ ॐ दुर्गमागमदुर्ज्ञेयायै०
६७ ॐ दुर्गमश्रुतिसंमतायै०
६८ ॐ दुर्गमश्रुतिमान्यायै०
६९ ॐ दुर्गमश्रुतिपूजितायै०
७० ॐ दुर्गमश्रुतिसुप्रीतायै०
७१ ॐ दुर्गमश्रुतिहर्षदायै०
७२ ॐ दुर्गमश्रुतिसंस्थानायै०
७३ ॐ दुर्गमश्रुतिमानितायै०
७४ ॐ दुर्गमाचारसंतुष्टायै०
७५ ॐ दुर्गमाचारतोषितायै०
७६ ॐ दुर्गमाचारनिर्वृतायै०
७७ ॐ दुर्गमाचारपूजितायै०
७८ ॐ दुर्गमाचारवशितायै०
७९ ॐ दुर्गमस्थानदायिन्यै०
८० ॐ दुर्गमप्रेमनिरतायै०
८१ ॐ दुर्गमद्रविणप्रदायै०
८२ ॐ दुर्गमाम्बुजमध्यस्थायै०
८३ ॐ दुर्गमाम्बुजवासिन्यै०
८४ ॐ दुर्गनाडीमार्गगत्यै०
८५ ॐ दुर्गनाडीप्रचारिण्यै०
८६ ॐ दुर्गनाडीपद्मरतायै०
८७ ॐ दुर्गनाड्यम्बुजस्थिता०
८८ ॐ दुर्गनाडीगतायातायै०
८९ ॐ दुर्गनाडीकृतास्पदायै०
९० ॐ दुर्गनाडीरतरतायै०
९१ ॐ दुर्गनाडीशसंस्तुतायै०
९२ ॐ दुर्गनाडीश्वररतायै०
९३ ॐ दुर्गनाडीशचुम्बितायै०
९४ ॐ दुर्गनाडीशक्रोडस्थायै०
९५ ॐ दुर्गनाड्युत्थितोत्सुका०
९६ ॐ दुर्गनाड्यारोहणायै०
९७ ॐ दुर्गनाडीनिषेवितायै०
९८ ॐ दरिस्थानायै नमः
९९ ॐ दरिस्थानवासिन्यै०
१०० ॐ दनुजान्तकृते नमः
१०१ ॐ दरीकृततपस्यायै०
१०२ ॐ दरीकृतहरार्चनायै०
१०३ ॐ दरीजापितदिष्टायै०
१०४ ॐ दरीकृतरतिक्रियायै०
१०५ ॐ दरीकृतहरार्हायै०
१०६ ॐ दरीक्रीडितपुत्रिकायै०
१०७ ॐ दरीसंदर्शनरतायै०
१०८ ॐ दरीरोदितवृश्चिकायै०
१०९ ॐ दरीगुप्तिकौतुकाढ्या०
११० ॐ दरीभ्रमणतत्परायै०
१११ ॐ दनुजान्तकर्यै नमः
११२ ॐ दीनायै नमः
११३ ॐ दनुसंतानदारिण्यै०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

११४ ॐ दनुजध्वंसिन्यै०
११५ ॐ दूनायै नमः
११६ ॐ दनुजेन्द्रविनाशिन्यै०
११७ ॐ दानवध्वंसिन्यै नमः
११८ ॐ देव्यै नमः
११९ ॐ दानवानां भयंकय०
१२० ॐ दानव्यै नमः
१२१ ॐ दानवाराध्यायै०
१२२ ॐ दानवेन्द्रवरप्रदायै०
१२३ ॐ दानवेन्द्रनिहन्त्र्यै०
१२४ ॐ दानवद्वेषिणीसत्यै०
१२५ ॐ दानवारिप्रेमरतायै०
१२६ ॐ दानवारिप्रपूजितायै०
१२७ ॐ दानवारिकृताचायै०
१२८ ॐ दानवारिविभूतिदा०
१२९ ॐ दानवारिमहानन्दा०
१३० ॐ दानवारिरतिप्रियायै०
१३१ ॐ दानवारिदानरतायै०
१३२ ॐ दानवारिकृतास्पदा०
१३३ ॐ दानवारिस्तुतिरता०
१३४ॐदानवारिस्मृतिप्रियायै०
१३५ ॐ दानवार्याहाररतायै०
१३६ ॐ दानवारिप्रबोधिन्यै०
१३७ ॐ दानवारिधृतप्रेमायै०
१३८ ॐ दुःखशोचविमोचि०
१३९ ॐ दुःखहन्त्र्यै नमः
१४० ॐ दुःखदात्र्यै नमः
१४१ ॐदुःखनिर्मूलकारिण्यै०
१४२ ॐ दुःखनिर्मूलनकर्यै०
१४३ ॐदुःखदार्यरिनाशिन्यै०
१४४ ॐ दुःखहरायै नमः
१४५ ॐ दुःखनाशायै नमः
१४६ ॐ दुःखग्रामायै नमः
१४७ ॐ दुरासदायै नमः
१४८ ॐ दुःखहीनायै नमः
१४९ ॐ दुःखधारायै नमः
१५० ॐ द्रविणाचारदायिन्यै०
१५१ ॐद्रविणोत्सर्गसंतुष्टा०
१५२ ॐ द्रविणत्यागतोषिका०
१५३ ॐ द्रविणस्पर्शसंतुष्टा०
१५४ ॐद्रविणस्पर्शमानदायै०
१५५ ॐद्रविणस्पर्शहर्षाढ्यायै
१५६ ॐद्रविणस्पर्शतुष्टिदायै०
१५७ ॐद्रविणस्पर्शनकय०
१५८ ॐद्रविणस्पर्शनातुरायै०
१५९ ॐद्रविणस्पर्शनोत्साहा०
१६० ॐद्रविणस्पर्शसाधिताय
१६१ ॐद्रविणस्पर्शनमताय०
१६२ ॐद्रविणस्पर्शपुत्रिका०
१६३ ॐद्रविणस्पर्शरक्षिण्यै०
१६४ ॐ द्रविणस्तोमदायिन्यै०
१६५ ॐ द्रविणाकर्षणकर्यै०
१६६ ॐद्रविणौघविसर्जिन्य०
१६७ ॐद्रविणाचलदानाढ्या०
१६८ ॐद्रविणाचलवासिन्यै०
१६९ ॐ दीनमात्रे नमः
१७० ॐ दीनबन्धवे नमः
१७१ ॐदीनविघ्नविनाशिन्यै०
१७२ ॐदीनसेव्यायै नमः
१७३ ॐदीनसिद्धायै नमः
१७४ ॐदीनसाध्यायै नमः
१७५ ॐदिगम्बर्यै नमः
१७६ ॐदीनगेहकृतानन्दायै०
१७७ ॐदीनगेहविलासिन्यै०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

१७८ ॐ दीनभावप्रेमरतायै०
१७९ ॐ दीनभावविनोदिन्यै०
१८० ॐ दीनमानवचेतःस्था०
१८१ ॐ दीनमानवहर्षदायै०
१८२ ॐ दीनदैन्यविघातेच्छा०
१८३ ॐ दीनद्रविणदायिन्यै०
१८४ ॐ दीनसाधनसंतुष्टायै०
१८५ ॐ दीनदर्शनदायिन्यै०
१८६ ॐ दीनपुत्रादिदात्र्यै०
१८७ ॐ दीनसंपद्विधायिन्यै०
१८८ ॐ दत्तात्रेयध्यानरतायै०
१८९ ॐ दत्तात्रेयप्रपूजितायै०
१९० ॐ दत्तात्रेयर्षिसंसिद्धायै०
१९१ ॐ दत्तात्रेयविभावितायै०
१९२ ॐ दत्तात्रेयकृताहार्यै०
१९३ ॐ दत्तात्रेयप्रसाधितायै०
१९४ ॐ दत्तात्रेयहर्षदात्र्यै नमः
१९५ ॐ दत्तात्रेयसुखप्रदायै०
१९६ ॐ दत्तात्रेयस्तुतायै नमः
१९७ ॐ दत्तात्रेयसदानुतायै०
१९८ ॐ दत्तात्रेयप्रेमरतायै०
१९९ ॐ दत्तात्रेयानुमानिता०
२०० ॐ दत्तात्रेयसमुद्गीतायै०
२०१ ॐ दत्तात्रेयकुटुम्बिन्यै०
२०२ ॐ दत्तात्रेयप्राणतुल्यायै०
२०३ ॐ दत्तात्रेयशरीरिण्यै नमः
२०४ ॐ दत्तात्रेयकृतानन्दायै०
२०५ ॐ दत्तात्रेयांशसंभवायै०
२०६ ॐ दत्तात्रेयविभूतिस्थायै०
२०७ ॐ दत्तात्रेयानुसारिण्यै०
२०८ ॐ दत्तात्रेयगीतिरतायै०
२०९ ॐ दत्तात्रेयधनप्रदायै०
२१० ॐ दत्तात्रेयदुःखहरायै०
२११ ॐ दत्तात्रेयवरप्रदायै०
२१२ ॐ दत्तात्रेयज्ञानदात्र्यै०
२१३ ॐ दत्तात्रेयभयापहायै०
२१४ ॐ देवकन्यायै नमः
२१५ ॐ देवमान्यायै नमः
२१६ ॐ देवदुःखविनाशिन्यै०
२१७ ॐ देवसिद्धायै नमः
२१८ ॐ देवपूज्यायै नमः
२१९ ॐ देवेज्यायै नमः
२२० ॐ देववन्दितायै नमः
२२१ ॐ देवमान्यायै नमः
२२२ ॐ देवधान्यायै नमः
२२३ ॐ देवविघ्नविनाशिन्यै०
२२४ ॐ देवरम्यायै नमः
२२५ ॐ देवरतायै नमः
२२६ ॐ देवकौतुकतत्परायै०
२२७ ॐ देवक्रीडायै नमः
२२८ ॐ देवव्रीडायै नमः
२२९ ॐ देववैरिविनाशिन्यै०
२३० ॐ देवकामायै नमः
२३१ ॐ देवरामायै नमः
२३२ ॐ देवद्विष्टविनाशिन्यै०
२३३ ॐ देवदेवप्रियायै नमः
२३४ ॐ देव्यै नमः
२३५ ॐ देवदानववन्दितायै०
२३६ ॐ देवदेवरतानन्दायै०
२३७ ॐ देवदेववरोत्सुकायै०
२३८ ॐ देवदेवप्रेमरतायै०
२३९ ॐ देवदेवप्रियंवदायै०
२४० ॐ देवदेवप्राणतुल्यायै०
२४१ ॐ देवदेवनितम्बिन्यै०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

२४२ ॐ देवदेवहृतमनसे०
२४३ ॐ देवदेवसुखावहायै०
२४४ ॐ देवदेवक्रोडरतायै०
२४५ ॐ देवदेवसुखप्रदायै०
२४६ ॐ देवदेवमहानन्दायै०
२४७ देवदेवप्रचुम्बितायै०
२४८ ॐ देवदेवोपभुक्तायै०
२४९ ॐ देवदेवानुसेवितायै०
२५० ॐ देवदेवगतप्राणायै०
२५१ ॐ देवदेवगतात्मिकायै०
२५२ ॐ देवदेवहर्षदात्र्यै नमः
२५३ ॐ देवदेवसुखप्रदायै नमः
२५४ ॐ देवदेवमहानन्दायै०
२५५ ॐ देवदेवविलासिन्यै०
२५६ ॐ देवदेवधर्मपत्न्यै०
२५७ ॐ देवदेवमनोगतायै०
२५८ ॐ देवदेववधवे नमः
२५९ ॐ देवदेवार्चनप्रियायै०
२६० ॐ देवदेवाङ्गनिलयायै०
२६१ ॐ देवदेवाङ्गशायिन्यै०
२६२ ॐ देवदेवाङ्गसुखिन्यै०
२६३ ॐ देवदेवाङ्गवासिन्यै०
२६४ ॐ देवदेवाङ्गभूषायै०
२६५ ॐ देवदेवाङ्गभूषणाय०
२६६ ॐ देवदेवप्रियकर्यै०
२६७ ॐ देवदेवाप्रियान्तकृते०
२६८ ॐ देवदेवप्रियप्राणायै०
२६९ ॐ देवदेवप्रियात्मिकायै०
२७० ॐ देवदेवार्चकप्राणायै०
२७१ ॐ देवदेवार्चकप्रियायै०
२७२ ॐ देवदेवार्चकोत्साहायै०
२७३ ॐ देवदेवार्चकप्रियायै०
२७४ ॐ देवदेवार्चकाविघ्ना०
२७५ ॐ देवदेवप्रस्वे नमः
२७६ ॐ देवदेवस्य जनन्यै०
२७७ ॐ देवदेवविधायिन्यै०
२७८ ॐ देवदेवस्य रमण्यैः
२७९ ॐ देवदेवहृदाश्रयायै०
२८० ॐ देवदेवष्टदेव्यै नमः
२८१ ॐ देवतापसपातिन्यै०
२८२ ॐ देवताभावसंतुष्टायै०
२८३ ॐ देवताभावतोषितायै०
२८४ ॐ देवताभाववरदायै०
२८५ ॐ देवताभावसिद्धिदायै०
२८६ ॐ देवताभावसंसिद्धायै०
२८७ ॐ देवताभावसंभवायै०
२८८ ॐ देवताभावसुखिन्यै०
२८९ ॐ देवताभाववन्दितायै०
२९० ॐ देवताभावसुप्रीतायै०
२९१ ॐ देवताभावहर्षदायै०
२९२ ॐ देवताविघ्नहन्त्र्यै०
२९३ ॐ देवताद्विष्टनाशिन्यै०
२९४ ॐ देवतापूजितपदायै०
२९५ ॐ देवताप्रेमतोषितायै०
२९६ ॐ देवतागारनिलयायै०
२९७ ॐ देवतासौख्यदायिन्यै०
२९८ ॐ देवतानिजभावायै०
२९९ ॐ देवताहृतमानसायै०
३०० ॐ देवताकृतपादार्चायै०
३०१ ॐ देवताहृतभक्तिकायै॥
३०२ ॐ देवतागर्वमध्यस्थायै०
३०३ ॐ देवतायै नमः
३०४ ॐ देवतायै नमः
३०५ ॐ दनवे नमः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

३०६ॐदुं दुर्गायै नमोनाम्न्यै०
३०७ॐदुं फट् मन्त्रस्वरूपिण्यै
३०८ॐदूंनमो मन्त्रस्वरूपायै०
३०९ॐदूं नमो मूर्तिकात्मि०
३१०ॐदूरदर्शिप्रियायै नमः
३११ॐदुष्टायै नमः
३१२ॐदुष्टभूतनिषेवितायै०
३१३ॐदूरदर्शिप्रेमरतायै०
३१४ॐदूरदर्शिप्रियंवदायै०
३१५ॐदूरदर्शिसिद्धिदात्र्यै०
३१६ॐदूरदर्शिप्रतोषितायै०
३१७ॐदूरदर्शिकण्ठसंस्थायै०
३१८ॐदूरदर्शिप्रहर्षितायै०
३१९ॐदूरदर्शिगृहीतार्चायै०
३२०ॐदूरदर्शिप्रतर्पितायै०
३२१ॐदूरदर्शिप्राणतुल्यायै०
३२२ॐदूरदर्शिसुखप्रदायै०
३२३ॐदूरदर्शिभ्रान्तिहरायै०
३२४ॐदूरदर्शिहृदास्पदायै०
३२५ॐदूर दर्श्यरिविद्रावायै०
३२६ॐदीर्घदर्शिप्रमोदिन्यै०
३२७ॐदीर्घदर्शिप्राणतुल्या०
३२८ॐदीर्घदर्शिवरप्रदायै०
३२९ॐदीर्घदर्शिहर्षदात्र्यै०
३३०ॐदीर्घदर्शिप्रहर्षितायै०
३३१ॐदीर्घदर्शिमहानन्दा०
३३२ॐदीर्घदर्शिगृहालयायै०
३३३ॐदीर्घदर्शिगृहीतार्चायै०
३३४ॐदीर्घदर्शिहृतार्हणायै०
३३५ॐदयायै नमः
३३६ॐदानवत्यै नमः
३३७ॐदात्र्यै नमः
३३८ॐदयालवे नमः
३३९ॐदीनवत्सलायै नमः
३४०ॐदयार्द्रायै नमः
३४१ॐदयाशीलायै नमः
३४२ॐदयाढ्यायै नमः
३४३ॐदयात्मिकायै नमः
३४४ॐदयायै नमः
३४५ॐदानवत्यै नमः
३४६ॐदात्र्यै नमः
३४७ॐदयालवे नमः
३४८ॐदीनवत्सलायै नमः
३४९ॐदयार्द्रायै नमः
३५०ॐदयाशीलायै नमः
३५१ॐदयाढ्यायै नमः
३५२ॐदयात्मिकायै नमः
३५३ॐदयाम्बुधये नमः
३५४ॐदयासारायै नमः
३५५ॐदयासागरपारगायै०
३५६ॐदयासिन्धवे नमः
३५७ॐदयाभारायै नमः
३५८ॐदयावत्करुणाकर्यै०
३५९ॐदयावद्वत्सलायै नमः
३६०ॐदेव्यै नमः
३६१ॐदयायै नमः
३६२ॐदानरतायै नमः
३६३ॐदयावद्भक्तिसुखिन्यै०
३६४ॐदयावत्परितोषितायै०
३६५ॐदयावत्स्नेहनिरतायै०
३६६ॐदयावत्प्रतिपादिका०
३६७ॐदयावत्प्राणकर्त्र्यै नमः
३६८ॐदयावन्मुक्तिदायि०
३६९ॐदयावद्भावसंतुष्टायै०

Chinma. Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

३७० ॐ दयावत्परितोषितायै०
३७१ ॐ दयावत्तारणपरायै०
३७२ ॐ दयावत्सिद्धिदायिन्यै०
३७३ ॐ दयावत्पुत्रवद्भावायै०
३७४ ॐ दयावत्पुत्ररूपिण्यै०
३७५ ॐ दयावद्देहनिलयायै०
३७६ ॐ दयाबन्धवे नमः
३७७ ॐ दयाश्रयायै नमः
३७८ ॐ दयालुवात्सल्यकर्यै०
३७९ ॐ दयालुसिद्धि दायिन्यै०
३८० ॐ दयालुशरणासक्तायै०
३८१ ॐ दयालुदेहमन्दिरायै०
३८२ ॐ दयालुभक्तिभावस्था०
३८३ ॐ दयालुप्राणरूपिण्यै०
३८४ ॐ दयालुसुखदायै नमः
३८५ ॐ दम्भायै नमः
३८६ ॐ दयालुप्रेमवर्षिण्यै नमः
३८७ ॐ दयालुवशगायै नमः
३८८ ॐ दीर्घायै नमः
३८९ ॐ दीर्घाङ्ग्यै नमः
३९० ॐ दीर्घलोचनायै नमः
३९१ ॐ दीर्घनेत्रायै नमः
३९२ ॐ दीर्घचक्षुषे नमः
३९३ ॐ दीर्घबाहुलतात्मिका०
३९४ ॐ दीर्घकेश्यै नमः
३९५ ॐ दीर्घमुख्यै नमः
३९६ ॐ दीर्घघोणायै नमः
३९७ ॐ दारुणायै नमः
३९८ ॐ दारुणासुरहन्त्र्यै नमः
३९९ ॐ दारुणासुरदारिण्यै०
४०० ॐ दारुणाहवकर्त्र्यै नमः
४०१ ॐ दारुणाहवहर्षितायै०
४०२ ॐ दारुणाहवहोमाढ्यायै०
४०३ ॐ दारुणाचलनाशिन्यै०
४०४ ॐ दारुणाचारनिरतायै०
४०५ ॐ दारुणोत्सवहर्षितायै०
४०६ ॐ दारुणोद्यतरूपायै०
४०७ ॐ दारुणारिनिवारिण्यै०
४०८ ॐ दारुणेक्षणसंयुक्तायै०
४०९ ॐ दोश्चतुष्कविराजिता०
४१० ॐ दशदोष्कायै नमः
४११ ॐ दशभुजायै नमः
४१२ ॐ दशबाहुविराजितायै०
४१३ ॐ दशास्त्रधारिण्यै नमः
४१४ ॐ देव्यै नमः
४१५ ॐ दशदिक्ख्यातविक्र०
४१६ ॐ दशरथार्चितपदायै न०
४१७ ॐ दाशरथिप्रियायै नमः
४१८ ॐ दाशरथिप्रेमतुष्टायै०
४१९ ॐ दाशरथिरतिप्रियायै०
४२० ॐ दाशरथिप्रियकर्त्र्यै०
४२१ ॐ दाशरथिप्रियंवदायै०
४२२ ॐ दाशरथीष्टसंदात्र्यै०
४२३ ॐ दाशरथीष्टदेवतायै०
४२४ ॐ दाशरथिद्वेषिनाशा०
४२५ ॐ दाशरथ्यानुकूल्यदा०
४२६ ॐ दाशरथिप्रियतमायै०
४२७ ॐ दाशरथिप्रपूजितायै०
४२८ ॐ दशाननारिदेवतायै०
४२९ ॐ दशाननारिसंपूज्या०
४३० ॐ दशाननारिप्रेमदायै०
४३१ ॐ दशाननारिजन्मभु०
४३२ ॐ दशाननारिरतिदायै०
४३३ ॐ दशाननारिसेवितायै०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

४३४ ॐ दशाननारिसुखदायै०
४३५ ॐ दशाननारिवैरिहृते०
४३६ ॐ दशानानारीष्टदेव्यै०
४३७ ॐ दशग्रीवारिवन्दिता०
४३८ ॐ दशग्रीवारिजनन्यै०
३३९ ॐ दशग्रीवारिभाविन्यै०
४४० ॐदशग्रीवारिसहितायै०
४४१ ॐदशग्रीवारिसभाजिता०
४४२ ॐदशग्रीवारिरमण्यै०
४४३ ॐदशग्रीववध्वै नमः
४४४ ॐदशग्रीवनाशकर्त्र्यै०
४४५ ॐदशग्रीववरप्रदायै नमः
४४६ ॐदशग्रीवपुरस्थायै नमः
४४७ ॐदशग्रीववधोत्सुका०
४४८ ॐदशग्रीवप्रीतिदात्र्यै०
४४९ ॐदशग्रीवविनाशिन्यै०
४५० ॐदशग्रीवाहवकर्यै नमः
४५१ ॐदशग्रीवानपायिन्यै०
४५२ ॐदशग्रीवप्रियावन्द्या०
४५३ ॐदशग्रीवहृतायै०
४५४ ॐदशग्रीवाहितकायै०
४५५ ॐदशग्रीवेश्वरप्रियायै०
४५६ ॐदशग्रीवेश्वरप्राणायै०
४५७ ॐदशग्रीववरप्रदायै नमः
४५८ ॐदशग्रीवेश्वररतायै०
४५९ ॐदशवर्षीयकन्यकायै०
४६० ॐदशवर्षीयबालायै०
४६१ ॐदशवर्षीयवासिन्यै०
४६२ ॐदशपापहरायै०
४६३ ॐदम्यायै नमः
४६४ दशहस्तविभूषितायै०
४६५ ॐदशशस्त्रलसद्दोष्का०
४६६ ॐदशदिक्पालवन्दिता०
४६७ ॐ दशावताररूपायै०
४६८ ॐ दशावताररूपिण्यै०
४६९ ॐ दशविद्याभिन्नदेव्यै०
४७० ॐ दशप्राणस्वरूपिण्यै०
४७१ ॐ दशविद्यास्वरूपायै०
४७२ ॐ दशविद्यामय्यै०
४७३ ॐ दृक्स्वरूपायै०
४७४ ॐ दृक्प्रदात्र्यै नमः
४७५ ॐ दृग्रूपायै नमः
४७६ ॐ दृक्प्रकाशिन्यै नमः
४७७ ॐ दिगन्तरायै नमः
४७८ ॐ दिगन्तस्थायै नमः
४७९ ॐ दिगम्बरविलासिन्यै०
४८० ॐ दिगम्बरसमाजस्था०
४८१ ॐ दिगम्बरप्रपूजितायै०
४८२ ॐ दिगम्बरसहचर्यै नमः
४८३ ॐ दिगम्बरकृतस्पदा०
४८४ ॐ दिगम्बरहृतचित्तायै०
४८५ ॐ दिगम्बरकथाप्रिया०
४८६ ॐ दिगम्बरगुणरतायै०
४८७ ॐ दिगम्बरस्वरूपिण्यै०
४८८ ॐ दिगम्बरशिरोधार्या०
४८९ ॐ दिगम्बरहृताश्रयायै०
४९० ॐ दिगम्बरप्रेमरतायै०
४९१ ॐ दिगम्बररतातुरायै०
४९२ ॐ दिगम्बरीस्वरूपायै०
४९३ ॐ दिगम्बरीगणार्चिता०
४९४ ॐ दिगम्बरीगणप्राणायै०
४९५ ॐ दिगम्बरीगणप्रिया०
४९६ ॐ दिगम्बरीगणाराध्या०
४९७ ॐ दिगम्बरगणेश्वर्यै नमः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

४९८ॐ दिगम्बरगणस्पर्शामदिरापानविह्वलायै नमः
४९९ॐ दिगम्बरीकोटिवृता०
५००ॐ दिगम्बरीगणवृता०
५०१ॐ दुरन्तायै नमः
५०२ॐ दुष्कृतिहरायै नमः
५०३ॐ दुर्ध्येयायै नमः
५०४ॐ दुरतिक्रमायै नमः
५०५ॐ दुरन्तदानवद्वेष्ट्र्यै नमः
५०६ॐ दुरन्तदनुजान्तकृते०
५०७ॐ दुरन्तपापहन्त्र्यै नमः
५०८ॐ दस्रनिस्तारकारिण्यै०
५०९ॐ दस्रमानससंस्थाना०
५१०ॐ दस्रज्ञानविवर्धिन्यै०
५११ॐ दस्रसंभोगजनन्यै०
५१२ॐ दस्रसंभोगदायिन्यै०
५१३ॐ दस्रसंभोगभवनायै०
५१४ॐ दस्रविद्याविधायिन्यै०
५१५ॐ दस्रोद्वेगहरायै नमः
५१६ॐ दस्रजनन्यै नमः
५१७ॐ दस्रसुन्दर्यै नमः
५१८ॐ दस्रभक्तिविद्याज्ञाना०
५१९ॐ दस्रद्विष्टविनाशिन्यै०
५२०ॐ दस्रापकारदमन्यै नमः
५२१ॐ दस्रसिद्धिविधायिन्नै०
५२२ॐ दस्रताराराधितायै०
५२३ॐ दस्रमातृप्रपूजितायै०
५२४ॐ दस्रदैन्यहरायै नमः
५२५ॐ दस्रतातनिषेवितायै०
५२६ॐ दस्रपितृशतज्योतिषे०
५२७ॐ दस्रकौशलदायिन्यै०
५२८ॐ दशशीर्षारिसहितायै०
५२९ॐ दशशीर्षारिकामिन्यै०
५३०ॐ दशशीर्षपुर्यै नमः
५३१ॐ देव्यै नमः
५३२ॐ दशशीर्षसभाजितायै०
५३३ॐ दशशीर्षारिसुप्रीता०
५३४ॐ दशशीर्षवधूप्रियायै०
५३५ॐ दशशीर्षशिरश्छेत्र्यै०
५३६ॐ दशशीर्षनितम्बिन्यै०
५३७ॐ दशशीर्षहरात्मिकायै०
५३८ॐ दशशीर्षहरप्राणायै०
५३९ॐ दशशीर्षहराराध्यायै०
५४०ॐ दशशीर्षारिवन्दितायै०
५४१ॐ दशशीर्षारिसुखदायै०
२४२ॐ दशशीर्षकपालिन्यै०
५४३ॐ दशशीर्षज्ञानदात्र्यै०
५४४ॐ दशशीर्षारिदेहिन्यै०
५४५ॐ दशशीर्षवधोपात्तश्रीरामचन्द्ररूपतायै नमः
५४६ॐ दशशीर्षराष्ट्रदेव्यै०
५४७ॐ दशशीर्षारिसारिण्यै०
५४८ॐ दशशीर्षभ्रातृतुष्टायै०
५४९ॐ दशशीर्षवधूप्रियायै०
५५०ॐ दशशीर्षवधूप्राणायै०
५५१ॐ दशशीर्षवधूरतायै०
५५२ॐ दैत्यगुरुतासाध्व्यै०
५५३ॐ दैत्यगुरुप्रपूजितायै०
५५४ॐ दैत्यगुरूपदेष्ट्र्यै नमः
५५५ॐ दैत्यगुरुनिषेवितायै०
५५६ॐ दैत्यगुरुगतप्राणायै०
५५७ॐ दैत्यगुरुतापनाशिन्यै०
५५८ॐ दुरन्तदुःखशमन्यै०
५५९ॐ दुरन्तदमनीतम्यै०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

५६०ॐदुरन्तशोकशमन्यै०
५६१ॐदुरन्तरोगनाशिन्यै०
५६२ॐदुरन्तवैरिदमन्यै नमः
५६३ॐदुरन्तदैत्यनाशिन्यै०
५६४ॐदुरन्तकलुषघ्न्यै०
५६५ॐदुष्कृतिस्तोमनाशि०
५६६ॐदुराशयायै नमः
५६७ॐदुराधारायै नमः
५६८ॐदुर्जयायै नमः
५६९ॐदुष्टकामिन्यैनमः
५७०ॐदर्शनीयायै नमः
५७१ॐदृश्यायै नमः
५७२ॐअदृश्यायै नमः
५७३ॐदृष्टिगोचरायै नमः
५७४ॐदूतीयागप्रियायै नमः
५७५ॐदूत्यै नमः
५७६ॐदूतीयागकरप्रियायै०
५७७ॐदूतीयागकरानन्दा०
५७८ॐदूतीयागसुखप्रदायै०
५७९ॐदूतीयागकरायाता०
५८०ॐदूतीयागप्रमोदिन्यै०
५८१ॐदुर्वासःपूजितायै०
५८२ॐदुर्वासोमुनिभाविता०
५८३ॐदुर्वासोऽर्चितपादायै०
५८४ॐदुर्वासोमौनभाविता०
५८५ॐदुर्वासोमुनिवन्द्यायै०
५८६ॐदुर्वासोमुनिदेवतायै०
५८७ॐदुर्वासोमुनिमात्रेन०
५८८ॐदुर्वासोमुनिसिद्धिदा०
५८९ॐदुर्वासोमुनिभावस्था०
५९०ॐदुर्वासोमुनिसेवितायै०
५९१ॐदुर्वासोमुनिचित्तस्था०
५९२ॐदुर्वासोमुनिमण्डिता०
५९३ॐदुर्वासोमुनिसंचारा०
५९४ॐदुर्वासोहृदयङ्गमायै०
५९५ॐदुर्वासोहृदयाराध्या०
५९६ॐदुर्वासोहृत्सरोजगायै०
५९७ॐदुर्वासस्तापसाराध्या०
५९८ॐदुर्वासस्तापसाश्रया०
५९९ॐदुर्वासस्तापसरतायै०
६००ॐदुर्वासस्तापसेश्वर्यै०
६०१ॐदुर्वासोमुनिकन्यायै०
६०२ॐदुर्वासोऽद्भुतसिद्धिदा०
६०३ॐदररात्र्यै नमः
६०४ॐदरहरायैनमः
६०५ॐदरयुक्ताय नमः
६०६ॐदरापहायै नमः
६०७ॐदरघ्न्यै नमः
६०८ॐदरहन्त्र्यै नमः
६०९ॐदरयुक्तायै नमः
६१०ॐदराश्रयायै नमः
६११ॐदरस्मेरायै नमः
६१२ॐदरापाङ्ग्यै नमः
६१३ॐदयादात्र्यै नमः
६१४ॐदयाश्रयायै नमः
६१५ॐदस्रपूज्यायैनमः
६१६ॐदस्रमात्रे नमः
६१७ॐदस्रदेव्यै नमः
६१८ॐदरोन्मदायैनमः
६१९ॐदस्रसिद्धायै नमः
६२०ॐदस्रसंस्थायै नमः
६२१ॐदस्रतापविमोचिन्यै०
६२२ॐदस्रक्षोमहरानित्यायै०
६२३ॐदस्रलोकगतात्मिका०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

६२४ॐदैत्यगुर्वङ्गनावन्द्या०
६२५ॐदैत्यगुर्वङ्गनाप्रियायै०
६२६ॐदैत्यगुर्वङ्गनासिद्धायै०
६२७ॐदैत्यगुर्वंगनोत्सुकायै०
६२८ॐदैत्यगुरुप्रियतमायै०
६२९ॐदेवगुरुनिषेवितायैनमः
६३०ॐदेवगुरुप्रसूरूपायैनमः
६३१ॐदेवगुरुकृतार्हणायैनमः
६३२ॐदेवगुरुप्रेमयुतायैनमः
६३३ॐदेवगुर्वनुमानितायै०
६३४ॐदेवगुरुप्रभावज्ञायैनमः
६३५ॐदेवगुरुसुखप्रदायैनमः
६३६ॐदेवगुरुज्ञानदात्र्यै नमः
६३७ॐदेवगुरुप्रमोदिन्यै नमः
६३८ॐदैत्यस्त्रीगणसंपूज्या०
६३९ॐदैत्यस्त्रीगणपूजितायै०

६४०ॐदैत्यस्त्रीगणरूपायै०
६४१ॐ दैत्यस्त्रीचित्तहारिण्यै०
६४२ॐदैत्यस्त्रीगणपूज्यायै०
६४३ॐदेवस्त्रीगणवन्दितायै०
६४४ॐदेवस्त्रीगणचित्तस्था०
६४५ॐदेवस्त्रीगणभूषितायै०
६४६ॐदेवस्त्रीगणसंसिद्धायै०
६४७ॐदेवस्त्रीगणतोषितायै०
६४८ॐदेवस्त्रीगणहस्तस्थचा-- रुचामरवीजितायै०
६४९ॐदेवस्त्रीगणहस्तस्थचा- रुगन्धविलेपितायै०
६५०ॐ देवाङ्गनाधृतादर्शदृ- ष्ट्यर्थमुखचन्द्रमायै०
६५१ॐदेवाङ्गनोत्सृष्टनागव- ल्लीदलकृतोत्सुकायै०

६५२ॐदेवस्त्रीगणहस्तस्थदी- पमालाविलोकनायै०
६५३ॐदेवस्त्रीगणहस्तस्थ- धूपघ्राणविनोदिन्यै०
६५४ॐदेवनारीकरगतवास- कासवपायिन्यै०
६५५ॐदेवनारीकङ्कतिकाकृ- तकेशनिमार्जनायै०
६५६ॐदेवनारीसेव्यगात्रा०
६५७ॐदेवनारीकृतोत्सुकायै०
६५८ॐदेवनारीविरचितपुष्प- मालाविराजितायै०
६५९ॐदेवनारीविचित्राङ्ग्यै०
६६०ॐदेवस्त्रीदत्तभोजनायै०
६६१ॐदेवस्त्रीगणगीतायै०
६६२ॐदेवस्त्रीगीतसोत्सुका०

६६३ॐदेवस्त्रीनृत्यसुखिन्यै०
६६४ॐदेवस्त्रीनृत्यदर्शिन्यै०
६६५ॐदेवस्त्रीयोजितलसद्र- त्नपादपदाम्बुजायै०
६६६ॐदेवस्त्रीगणविस्तीर्ण- चारुतल्पनिषेदुष्यै०
६६७ॐदेवनारीचारुकराक- लिताङ्घ्र्यादिदेहिकायै०
६६८ॐदेवनारीकरव्यग्रताल- वृन्तमरुत्सुखायै नमः
६६९ॐदेवनारीवेणुवीणाना- दसोत्कण्ठमानसायै०
६७०ॐ देवकोटिस्तुतिनुतायै०
६७१ॐदेवकोटिकृतार्हणायै०
६७२ॐदेवकोटिगीतगुणायै०
६७३ॐदेवकोटिकृतस्तुत्यै०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

६७४ ॐ दन्तदष्ट्योद्वेगफलाये
६७५ ॐ देवकोलाहलाकुला०
६७६ ॐ द्वेषरागपरित्यक्तायै०
६७७ ॐ द्वेषरागविवर्जितायै०
६७८ ॐ ॐ दामपूज्यायै नमः
६७९ ॐ दामभूषायै नमः
६८० ॐ दामोदरविलासिन्यै०
६८१ ॐ दामोदरप्रेमरतायैनमः
६८२ ॐ दामोदरभगिन्यै नमः
६८३ ॐ दामोदरप्रस्वे नमः
६८४ ॐ दामोदरपत्न्यै नमः
६८५ ॐ दामोदरपतिव्रतायै०
६८६ ॐ दामोदराभिन्नदेहायै०
६८७ ॐ दामोदररतिप्रियायै०
६८८ ॐ दामोदरभिन्नतनवे०
६८९ ॐ दामोदरकृतास्पदायै०
६९० ॐ दामोदरकृतप्राणायै०
६९१ ॐ दामोदरगतात्मिका०
६९२ ॐ दामोदरकौतुकाढ्या०
६९३ ॐ दामोदरकलाकलायै०
६९४ ॐ दामोदरालिङ्गिता०
६९५ ॐ दामोदरकुतूहलायै०
६९६ ॐ दामोदरकृताह्लादायै०
६९७ ॐ दामोदरसुचुंबितायै०
६९८ ॐ दामोदरसुताकृष्टायै०
६९९ ॐ दामोदरसुखप्रदायै०
७०० ॐ दामोदरसहाढ्यायै०
७०१ ॐ दमोदरसहायिन्यै०
७०२ ॐ दामोदरगुणज्ञायै नमः
७०३ ॐ दामोदरवरप्रदायै नमः
७०४ ॐ दामोदरानुकूलायै०
७०५ ॐ दामोदरनितम्बिन्यै०
७०६ ॐ दामोदरजलक्रीडाकुशलायै नमः
७०७ ॐ दर्शनप्रियायै नमः
७०८ ॐ दामोदरजलक्रीडात्यक्तस्वजनसौहृदायै नमः
७०९ ॐ दामोदरलसद्रासकेलिकौतुकिन्यै नमः
७१० ॐ दामोदरभ्रातृकायै०
७११ ॐ दामोदरपरायणायै०
७१२ ॐ दामोदरधरायै नमः
७१३ ॐ दामोदरवैरिविनाशिन्यै नमः
७१४ ॐ दामोदरोपजायायै०
७१५ ॐ दामोदरनिमन्त्रिता०
७१६ ॐ बामोदरपराभूतायै०
७१७ ॐ दामोदरपराजितायै०
७१८ ॐ दामोदरसमाक्रान्ता०
७१९ ॐ दामोदरहताशुभायै०
७२० ॐ दामोदरोत्सवरतायै०
७२१ ॐ दामोदरोत्सवावहायै०
७२२ ॐ दामोदरस्तन्यदात्र्यै०
७२३ ॐ दामोदरगवेषितायै०
७२४ ॐ दमयन्तीसिद्धिदात्र्यै०
७२५ ॐ दमयन्तीप्रसाधिता०
७२६ ॐ दमयन्तीष्टदेव्यै नमः
७२७ ॐ दमयन्तीस्वरूपिण्यै०
७२८ ॐ दमयन्तीकृतार्चायै०
७२९ दमनर्षिविभावितायै०
७३० ॐ दमनर्षिप्राणतुल्या०
७३१ ॐ दमनर्षिस्वरूपिण्यै०
७३२ ॐ दमनर्षिस्वरूपायै०
७३३ ॐ दम्भपूरितविग्रहायै०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

७३४ ॐदम्भहन्त्र्यै नमः
७३५ ॐ दम्भदात्र्यै नमः
७३६ ॐ दम्भलोकमिवोहि०
७३७ ॐ दम्भशीलायै नमः
७३८ ॐ दम्भहरायै नमः
७३९ ॐ दम्भवत्परिमर्दिन्यै०
७४० ॐ दम्भरूपायै नमः
७४१ ॐ दम्भकर्त्र्यै नमः
७४२ ॐदम्भसन्तानदारिण्यै०
७४३ ॐ दत्तमोक्षायै नमः
७४४ ॐ दत्तधनायै नमः
७४५ ॐ दत्तारोग्यायै नमः
७४६ ॐ दाम्भिकायै नमः
७४७ ॐ दत्तपुत्रायै नमः
७४८ ॐ दत्तदारायै नमः
७४९ ॐ दत्तहारायै नमः

७५० ॐ दारिकायै नमः
७५१ ॐ दत्तभोगायै नमः
७५२ ॐ दत्तशोकायै नमः
७५३ ॐ दत्तहस्त्यादिवाहना०
७५४ ॐ दत्तमत्यै नमः
७५५ ॐ दत्तभार्यायै नमः
७५६ ॐदत्तशास्त्रावबोधिका०
७५७ ॐ दत्तपानायै नमः
७५८ ॐ दत्तदानायै नमः
७५९ ॐ दत्तदारिद्र्यनाशिन्यै०
७६० ॐ दत्तसौधावनीवासा०
७६१ ॐ दत्तस्वर्गायै नमः
७६२ ॐ दासदायै नमः
७६३ ॐ दास्यतुष्टायै नमः
७६४ ॐ दास्यहरायै नमः
७६५ ॐदासदासीशतप्रदायै०

७६६ ॐ दाररूपायै नमः
७६७ ॐ दारवासायै नमः
७६८ ॐदारवासिहृदास्पदा०
७६९ ॐदारवासिजनाराध्या०
७७० ॐ दारवासिजनप्रिया०
७७१ ॐ दारवासिविनिर्मिता०
७७२ ॐ दारवासिसमार्चिता०
७७३ ॐ दारवास्याहृतप्राणा०
७७४ ॐदारवास्यरिनाशिन्यै०
७७५ ॐ दारवासिविघ्नहरायै०
७७६ ॐ दारवासिविमुक्तिदा०
७७७ ॐ दाराग्निरूपिण्यै नमः
७७८ ॐ दारायै नमः
७७९ ॐ दारकार्यरिनाशिन्यै०
७८० ॐ दम्पत्यै नमः
७८१ ॐ दम्पतीष्टायै नमः

७८२ ॐ दम्पतीप्राणरूपिका
७८३ ॐदम्पतीस्नेहनिरतायै०
७८४ ॐदाम्पत्यसाधनप्रिया०
७८५ ॐ दाम्पत्यसुखसेनायै०
७८६ ॐदाम्पत्यसुखदायिन्यै०
७८७ ॐदम्पत्याचारनिरतायै०
७८८ ॐदम्पत्यामोदमोदिता०
७८९ ॐदम्पत्यामोदसुखिन्यै०
७९० ॐ दाम्पत्याह्लादकारि०
७९१ ॐदम्पतीष्टपादपद्मायै०
७९२ ॐदाम्पत्यप्रेमरूपिण्यै०
७९३ ॐदाम्पत्यभोगभवनायै०
७९४ ॐदाडिमीफलभोजिन्यै०
७९५ ॐदाडिमीफलसंतुष्टयै०
७९६ ॐ दाडिमीफलमानसा०
७९७ ॐदाडिमीवृक्षसंस्थाना०

Chinmai, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

७९८ ॐ दाडिमीवृक्षवासिन्यै०
७९९ ॐ दाडिमीवृक्षरूपायै०
८०० ॐ दाडिमीवनवासिन्यै०
८०१ ॐ दाडिमीफलसाम्योरु-
पयोधरसमन्वितायै नमः
८०२ ॐ दक्षिणायै नमः
८०३ ॐ दक्षिणारूपायै नमः
८०४ ॐ दक्षिणारूपधारिण्यै०
८०५ ॐ दक्षकन्यायै नमः
८०६ ॐ दक्षपुत्र्यै नमः
८०७ ॐ दक्षमात्रे नमः
८०८ ॐ दक्षस्वे नमः
८०९ ॐ दक्षगोत्रायै नमः
८१० ॐ दक्षसुतायै नमः
८११ ॐ दक्षयज्ञविनाशिन्यै०
८१२ ॐ दक्षयज्ञनाशकर्त्र्यैनमः
८१३ ॐ दक्षयज्ञान्तकारिण्यै०
८१४ ॐ दक्षप्रसूत्यै नमः
८१५ ॐ दक्षेज्यायै नमः
८१६ ॐ दक्षवंशैकपावन्यैनमः
८१७ ॐ दक्षात्मजायै नमः
८१८ ॐ दक्षसूनवे नमः
८१९ ॐ दक्षजायै नमः
८२० ॐ दक्षजातिकायै नमः
८२१ ॐ दक्षजन्मने नमः
८२२ ॐ दक्षजनुषे नमः
८२३ ॐ दक्षदेहसमुद्भवायै०
८२४ ॐ दक्षजनुषे नमः
८२५ ॐ दक्षयागध्वंसिन्यै०
८२६ ॐ दक्षकन्यकायै नमः
८२७ ॐ दक्षिणाचारनिरतायै०
८२८ ॐ दक्षिणाचारतुष्टिदा०
८२९ ॐ दक्षिणाचारसंसिद्धा०
८३० ॐ दक्षिणाचारभाविता०
८३१ ॐ दक्षिणाचारसुखिन्यै०
८३२ ॐ दक्षिणाचारसाधिता०
८३३ ॐ दक्षिणाचारमोक्षाप्त्यै०
८३४ ॐ दक्षिणाचारवन्दिता०
८३५ ॐ दक्षिणाचारशरणायै०
८३६ ॐ दक्षिणाचारहर्षितायै०
८३७ ॐ द्वारपालप्रियायै नमः
८३८ ॐ द्वारवासिन्यै नमः
८३९ ॐ द्वारसंस्थितायै नमः
८४० ॐ द्वाररूपायै नमः
८४१ ॐ द्वारसंस्थायै नमः
८४२ ॐ द्वारदेशनिवासिन्यै०
८४३ ॐ द्वारकर्त्र्यै नमः
८४४ ॐ द्वारधात्र्यै नमः
८४५ ॐ दोषमात्रविवर्जितायै०
८४६ ॐ दोषाकरायै नमः
८४७ ॐ दोषहरायै नमः
८४८ ॐ दोषराशिविनाशि०
८४९ ॐ दोषकरविभूषाढ्या०
८५० ॐ दोषाकरकपालिन्यै०
८५१ ॐ दोषाकरसहस्राभायै०
८५२ ॐ दोषाकरसमाननायै०
८५३ ॐ दोषाकरमुख्यै नमः
८५४ ॐ दिव्यायै नमः
८५५ ॐ दोषाकरकराग्रजायै०
८५६ ॐ दोषाकरसमज्योतिषे०
८५७ ॐ दोषाकरसुशीतला०
८५८ ॐ दोषाकरश्रेण्यै नमः
८५९ ॐ दोषसदृशापाङ्गवीक्ष०
८६० ॐ दोषाकरेष्टदेव्यै नमः

।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

८६१ ॐ दोषाकरनिषेवितायै०
८६२ ॐ दोषाकरसुहर्षिण्यै०
८६३ ॐ दोषाकरमरीचिकायै०
८६४ ॐ दोषाकरोल्लसद्भाला०
८६५ ॐ दोषाकसुहर्षिण्यै०
८६६ ॐ दोषाकरशिरोभूषाये०
८६७ ॐ दोषाकरवधूप्रियायै०
८६८ ॐ दोषाकरवधूप्राणायै०
८६९ ॐ दोषाकरवधूमतायै०
८७० ॐ दोषाकरवधूप्रीतायै०
८७१ ॐ दोषाकरवध्वै नमः
८७२ ॐ दोषापूज्यायै नमः
८७३ ॐ दोषापूजितायै नमः
८७४ ॐ दोषहारिण्यै नमः
८७५ ॐ दोषाजापमहानन्दा०
८७६ ॐ दोषाजापपरायणायै०
८७७ ॐ दोषापुरश्चाररतायै०
७७८ ॐ दोषापूजकपुत्रिण्यै०
८७९ ॐ दोषापूजकवात्सल्य-
कारिणीजगदम्बिका०
८८० ॐ दोषापूजकवैरिघ्न्यै०
८८१ ॐ दोषापूजकविघ्नह्रते०
८८२ ॐ दोषापूजकसंतुष्टायै०
८८३ ॐ दोषापूजकमुक्तिदायै०
८८४ ॐ दमप्रसूनसम्पूज्यायै०
८८५ ॐ दमपुष्पप्रियायै नमः
८८६ ॐ दुर्योधनप्रपूज्यायै०
८८७ ॐ दुःशासनसमार्चिता०
८८८ ॐ दण्डपाणिप्रियायै०
८८९ ॐ दण्डपाणिमात्रे नमः
८९० ॐ दयानिधये नमः
८९१ ॐ दण्डपाणिसमाश्रया०
८९२ ॐ दण्डपाणिप्रपूजिता०
८९३ ॐ दण्डपाणिगृहासक्ता०
८९४ ॐ दण्डपाणिप्रियंवदा०
८९५ ॐ दण्डपाणिप्रितमा०
८९६ ॐ दण्डपाणिमनोहरायै०
८९७ ॐ दण्डपाणिह्रतप्राणा०
८९८ ॐ दण्डपाणिसुसिद्धिदा०
८९९ ॐ दण्डपाणिपरामृष्टा०
९०० ॐ दण्डपाणिप्रहर्षितायै०
९०१ ॐ दण्डपाणिविघ्नहरायै०
९०२ ॐ दण्डपाणिशिरोधृता०
९०३ ॐ दण्डपाणिप्राप्तचर्या०
९०४ ॐ दण्डपाण्युन्मुख्यै नमः
९०५ ॐ दण्डपाणिप्राप्तदा०
९०६ ॐ दण्डपाणिवरोन्मुख्यै०
९०७ ॐ दण्डहस्तायै नमः
९०८ ॐ दण्डपायै नमः
९०९ ॐ दण्डबाहवे नमः
९१० ॐ दरान्तकृते नमः
९११ ॐ दण्डदोष्कायै नमः
९१२ ॐ दण्डकरायै नमः
९१३ ॐ दण्डचित्तकृतास्पदा०
९१४ ॐ दण्डविद्यायै नमः
९१५ ॐ दण्डमात्रे नमः
९१६ ॐ दण्डिखण्डकनाशि०
९१७ ॐ दण्डिमियायै नमः
९१८ ॐ दण्डिपूज्यायै नमः
९१९ ॐ दण्डिसंतोषदायिन्यै०
९२० ॐ दस्युपूज्यायै नमः
९२१ ॐ दस्युरतायै नमः
९२२ ॐ दस्युद्रविणदामिन्यै०
९२३ ॐ दस्युवर्गकृताहार्यैनमः

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

९२४ ॐ दस्युवर्गविनाशिन्यै०
९२५ ॐ दस्युनिर्णाशिन्यै०
९२६ ॐ दस्युकुलनिर्णाशि०
९२७ ॐ दस्युप्रियकर्यै नमः
९२८ ॐ दस्युनृत्यदर्शनतत्प०
९२९ ॐ दुष्टदण्डकर्यै नमः
९३० ॐ दुष्टवर्गविद्राविण्यै०
९३१ ॐ दुष्टवर्गनिग्रहार्हायै०
९३२ ॐ दूषकप्राणनाशिन्यै०
९३३ ॐ दूषकोत्तापजनन्यै०
९३४ ॐ दूषकारिष्टकारिण्यै०
९३५ ॐ दूषकद्वेषणकर्यै नमः
९३६ ॐ दाहिकायै नमः
९३७ ॐ दहनात्मिकायै नमः
९३८ ॐ दारुकारिनिहन्त्र्यै०
९३९ ॐ दारुकेश्वरपूजितायै०
९४० ॐ दारुकेश्वरमात्रे नमः
९४१ ॐ दारुकेश्वरवन्दितायै०
९४२ ॐ दर्भहस्तायै नमः
९४३ ॐ दर्भयुतायै नमः
९४४ ॐ दर्भकर्मविवर्जितायै०
९४५ ॐ दर्भमय्यै नमः
९४६ ॐ दर्भतनवे नमः
९४७ ॐ दर्भसर्वस्वरूपिण्यै०
९४८ ॐ दर्भकर्माचाररतायै०
९४९ ॐ दर्भहस्तकृतार्हणायै०
९५० ॐ दर्भानुकूलायै नमः
९५१ ॐ दार्भर्यायै नमः
९५२ ॐ दर्वीपात्रानुदामिन्यै०
९५३ ॐ दमघोषप्रपूज्यायै नमः
९५४ ॐ दमघोषवरदायै नमः
९५५ ॐ दमघोषसमाराध्या०
९५६ ॐ दावाग्निरूपिण्यै नमः
९५७ ॐ दावाग्निरूपायै नमः
९५८ ॐ दावाग्निनिर्णाशित-
महाबलायै नमः
९५९ ॐ दन्तदंष्ट्रासुरकला०
९६० ॐ दंतचर्चितहस्तिकायै०
९६१ ॐ दन्तदंष्ट्रस्यन्दनायै०
९६२ ॐ दन्तनिर्नाशितासुरा०
९६३ ॐ दधिपूज्यायै नमः
९६४ ॐ दधिप्रीतायै नमः
९६५ ॐ दधीचिवरदायिन्यै०
९६६ ॐ दधीचीष्टदेवतायै०
९६७ ॐ दधीचिमोक्षदायि०
९६८ ॐ दधीचिदैन्यहन्त्र्यै०
९६९ ॐ दधीचिदरदारिण्य०
९७० ॐ दधीचिभक्तिसुखिन्यै०
९७१ ॐ दधीचिमुनिसेविता०
९७२ ॐ दधीचिज्ञानदात्र्यै०
९७३ ॐ दधीचिगुणदायिन्यै०
९७४ ॐ दधीचिकुलसम्भूषा०
९७५ ॐ दधीचिभुक्तिमुक्तिदा०
९७६ ॐ दधीचिकुलदेव्यै नमः
९७७ ॐ दधीचिकुलदेवतायै०
९७८ ॐ दधीचिकुलगम्यायै०
९७९ ॐ दधीचिकुलपूजिता०
९८० ॐ दधीचिसुखदात्र्यै नमः
९८१ ॐ दधीचिदैन्यहारिण्यै०
९८२ ॐ दधीचिदुःखहन्त्र्यै०
९८३ ॐ दधीचिकुलसुन्दर्यै०
९८४ ॐ दधीचिकुलसंभूतायै०
९८५ ॐ दधीचिकुलपालिन्यै०
९८६ ॐ दधीचिदानगम्यायै०
९८७ ॐ दधीचिदानमानिन्यै०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

९८८ॐदधीचिदानसंतुष्टा०
९८९ॐदधीचिदानदेवतायै०
९९०ॐदधीचिजयसंप्रीतायै०
९९१ॐदधीचिजपमानसायै०
९९२ॐदधीचिजपपूजाढ्या०
९९३ॐदधीचिजपमालिका०
९९४ॐदधीचिजपसंतुष्टा०
९९५ॐदधीचिजपतोषिण्यै०
९९६ॐदधीचितापसाराध्या०
९९७ॐदधीचिशुभदायिन्यै०
९९८ॐदूर्वायै नमः
९९९ॐदूर्वादलश्यामायै०
१०००ॐदूर्वादलसमद्युतये०
इति श्रीहरिकृष्णविरचिते बृ० धर्मस्कन्धे उपासनास्तबके श्रीदुर्गोपासनाध्याये श्रीदुर्गासहस्रनामावलिकथनं नाम प्रकरणम् ४६

## अथ दुर्गाऽष्टोत्तरशत नामावली

१ॐदुर्गायै नमः
२ॐशिवायै नमः
३ॐमहालक्ष्म्यै नमः
४ॐमहागौर्यै नमः
५ॐचण्डिकायै नमः
६ॐसर्वज्ञायै नमः
७ॐसर्वलोकेशायै नमः
८ॐसर्वकर्मफलप्रदायै०
९ॐसर्वतीर्थमयायै नमः
१०ॐपुण्यायै नमः
११ॐदेवयोनये नमः
१२ॐअयोनिजायै नमः
१३ॐभूमिजायै नमः
१४ॐनिर्गुणायै नमः
१५ॐआधारशक्त्यै नमः
१६ॐअनीश्वर्यै नमः
१७ॐनिर्गुणायै नमः
१८ॐनिरहङ्कारायै नमः
१९ॐसर्वगर्वविमर्दिन्यै नमः
२०ॐसर्वलोकप्रियायै नमः
२१ॐवाण्यै नमः
२२ॐसर्वविद्याधिदेवतायै०
२३ॐपार्वत्यै नमः
२४ॐदेवमात्रे नमः
२५ॐवनीशायै नमः
२६ॐविन्ध्यवासिन्यै नमः
२७ॐतेजोवत्यै नमः
२८ॐमहामात्रे नमः
२९ॐकोटिसूर्यसमप्रभायै०
३० ॐ देवतायै नमः
३१ ॐ वह्निरूपायै नमः
३२ ॐ सदोजसे नमः
३३ ॐ वर्णरूपिण्यै नमः
३४ ॐ गुणाश्रयायै नमः
३५ ॐ गुणमध्यायै नमः
३६ ॐ गुणत्रयविवर्जितायै०
३७ ॐ कर्मज्ञानप्रदायै नमः
३८ ॐ कान्तायै नमः
३९ ॐ सर्वसंहारकारिण्यै नमः
४० ॐ धर्मज्ञानायै नमः
४१ॐधर्मनिष्ठायै नमः
४२ॐसर्वकर्मविवर्जितायै०
४३ॐकामाक्ष्यै नमः
४४ॐकामसंहर्त्र्यै नमः
४५ॐकामक्रोधविवर्जितायै०

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

४६ ॐ शाङ्कर्यै नमः
४७ ॐ शाम्भव्यै नमः
४८ ॐ शान्तायै नमः
४९ ॐ चन्द्रसूर्याग्निलोचना०
५० ॐ सुजयायै नमः
५१ ॐ जयभूमिष्ठायै नमः
५२ ॐ जाह्नव्यै नमः
५३ ॐ जनपूजितायै नमः
५४ ॐ शास्त्रायै नमः
५५ ॐ शास्त्रमयायै नमः
५६ ॐ नित्यायै नमः
५७ ॐ शुभायै नमः
५८ ॐ चंद्रार्धमस्तकायै०
५९ ॐ भारत्यै नमः
६० ॐ भ्रामर्यै नमः
६१ ॐ कल्पायै नमः
६२ ॐ कराल्यै नमः

६३ ॐ कृष्णपिङ्गलायै नमः
६४ ॐ ब्राह्म्यै नमः
६५ ॐ नारायण्यै नमः
६६ ॐ रौद्र्यै नमः
६७ ॐ चन्द्रामृतपरिस्रुतायै०
६८ ॐ ज्येष्ठायै नमः
६९ ॐ इन्दिरायै नमः
७० ॐ महामायायै नमः
७१ ॐजगत्सृष्ट्यादिकारिण्यै०
७२ ॐ ब्रह्माण्डकोटिसंस्थाना०
७३ ॐ कामिन्यै नमः
७४ ॐ कमलालयायै नमः
७५ ॐ कात्यायन्यै नमः
७६ ॐ कलातीतायै नमः
७७ ॐ कालसंहारकारिण्यै०
७८ ॐ योगनिष्ठायै नमः

७९ ॐ योगिगम्यायै नमः
८० ॐ योगिध्येयायै नमः
८१ ॐ तपस्विन्यै नमः
८२ ॐ ज्ञानिरूपायै नमः
८३ ॐ निराकारायै नमः
८४ ॐ भक्ताभीष्टफलप्रदायै०
८५ ॐ भूतात्मिकायै नमः
८६ ॐ भूतमात्रे नमः
८७ ॐ भूतेशायै नमः
८८ ॐ भूतधारिण्यै नमः
८९ ॐ स्वधानारीमध्यगतायै०
९० ॐ षडाधारादिवर्तिन्यै०
९१ ॐ मोहदायै नमः
९२ ॐ अंशुभवायै नमः
९३ ॐ शुभ्रायै नमः
९४ ॐ सूक्ष्मायै नमः

९५ ॐ मात्रायै नमः
९६ ॐ निरालसायै नमः
९७ ॐ निम्नगायै नमः
९८ ॐ नीलसंकाशायै नमः
९९ ॐ नित्यानन्दायै नमः
१०० ॐ हरायै नमः
१०१ ॐ परायै नमः
१०२ ॐ सर्वज्ञानप्रदायै नमः
१०३ ॐ अनन्तायै नमः
१०४ ॐ सत्यायै नमः
१०५ ॐ दुर्लभरूपिण्यै नमः
१०६ ॐ सरस्वत्यै नमः
१०७ ॐ सर्वगतायै नमः
१०८ ॐ सर्वाभीष्टप्रदायिन्यै०

इति श्रीह० बृ० घ० दुर्गोपासनाध्याये श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामावलिनिरूपणं नाम प्रकरणम् ॥४७॥



Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अथ श्रीदुर्गानीराजनम् ॥ जय देवी जय देवी जय महिषासुरमथिनी २ सुरवरईश्वरवरदे २ त्रैलोक्यजननी ॥ जय देवी० ॥ १ ॥ ( ध्रुवपदमेतत् ) बिन्दुत्रिकोणवसुदलषट्कोणाकारं २ बिन्दुमध्ये प्रणवं २ तदुपरित्रयबीजम् ॥ जय देवी० ॥२॥ द्वारचतुष्टय शोभितमैक्यानुभावं २ सर्वं सर्वातीतं २ यन्त्रं तव रूपम् ॥ जय देवी० ॥ ३ ॥ कोटिदिवाकरभूषणरक्ताम्बरवसनं २ नेत्रं कमलाकारं २ शतेन्दुमुखकमलम् ॥ जय देवी० ॥ ४ ॥अष्टादशभुजमूर्तिं कण्ठे रुण्डमालं २ सप्तशृङ्गनिवासिनि २ रुद्रात्मकशक्तिम् ॥ जय देवी० ॥ ५ दुर्गे दुर्गतिनाशिनि भवसागरतारी २ मृगेन्द्रवाहिनी गिरिजा २ दानवसंहारी ॥ जय देवी० ॥ ६ ॥ शुम्भनिशुम्भ ध्वंसिनि मधुकैटभशमनी २ भक्तानुग्रहकारिणी २ लम्बोदरजननी ॥ जय देवी० ॥ ७ ॥ चिन्मयपरमानन्दे ब्रह्मादिकवन्दे २ सनकादिकमुनिवन्दे २ इन्द्रादिकवन्दे ॥ जय देवी० ॥ ८ ॥ नारदतुम्बरुकिन्नरगीते सुरवन्दे २ शङ्करसुतराजेश्वर २ तव चरणं वन्दे ॥ जय देवी० ॥ ९ ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उ० स्त० श्रीदुर्गोपासनाध्याये श्रीदुर्गानीराजननिरूपणं नामाष्टचत्वारिंशं प्रकरणम् ॥ ४८ ॥ ( चित्र नं० १ )

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० १ )

गणपतिः सरस्वती ❀ ब्रह्मदेव. नारदः ❀ नवदुर्गामध्ये शैलपुत्री १ ❀ ब्रह्मचारिणी २



चन्द्रघण्टा ३ ❀ कूष्माण्डी ४ ❀ स्कन्दमाता ५ ❀ कात्यायनी ६



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

(चित्र नं० २)

कालरात्रि ७ ❀ गौरी ८ ❀ सिद्धिदा ९ ❀ रक्तदन्तिका स्वरूप









मार्कण्डेय ऋषि स्तुति करते हैं. ❀ शाकंभरी देवी नीलवर्णा. ❀ मार्कण्डेय ऋषि स्तुति करते हैं. ❀ शाकंभरी शिव पर्वती.









Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० ३ )

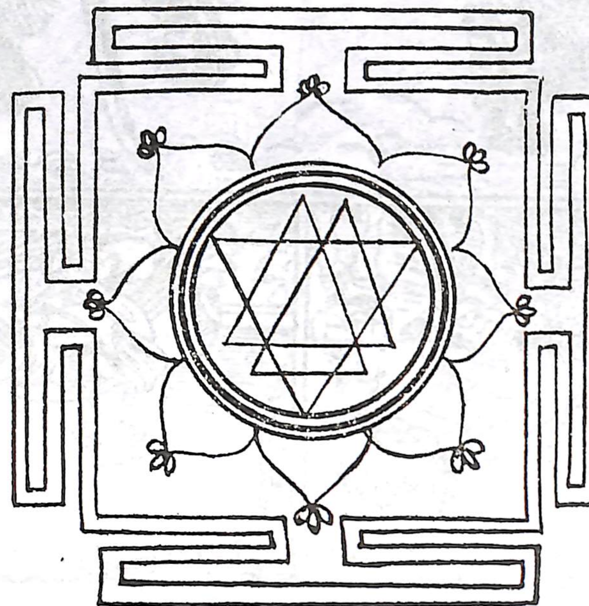


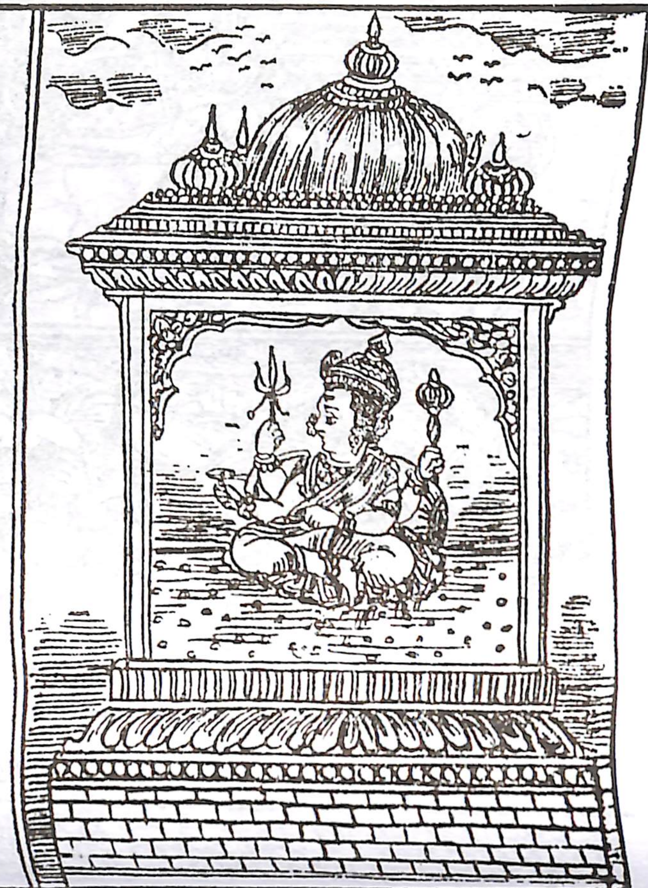

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० ४ )

पुजारी देवी भक्त. ❁ इदंदुर्गायंत्रं. ❁ दुर्गादेवी.







Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः श्रीसरस्वत्यै नमः ( श्रीबटुकभैरवाय नमः अथ दुर्गासप्तशतीपाठप्रकरणं प्रारभ्यते ॥ तत्रादौ दुर्गाब्रह्मकवचम् ॥ अर्गलाकीलकं चादौ पठित्वा कवचं पठेत् ॥ जपेत्सप्तशतीं चण्डीं क्रम एष शिवोदितः ॥ १ ॥ अर्गला दुरितं हन्ति कीलकं फलदं भवेत् ॥ कवचं रक्षयेन्नित्यं तस्मादेतत्त्रयं पठेत् ॥ २ ॥ अर्गला हृदये यस्य तस्मादर्गलवानसौ ॥ भविष्यति न संदेहो नान्यथा शिवभाषितम् ॥३॥कीलकं हृदये यस्य स कीलितमनोरथः ॥ कवचं हृदये यस्य स वज्रकवचः प्रभुः ॥४॥ ॐ अस्य श्रीदेव्या वज्रकवचमालामन्त्रोत्तमाङ्गस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्द ॐ ख्फ्रे चामुण्डाख्या महालक्ष्मीर्देवता ॐ ह्रीं ह्रस्रौं हस्क्लीं ह्रीं ह्रस्रौं अङ्गन्यस्ता देव्यः शक्तयः ॐ ऐं ह्रस्त्रीं ह्रस्क्लीं श्रीं ह्रस्यूं क्स्रौं लौं ख्फ्रें सायुधा मातरो देव्या बीजानि ॐ ऐं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ऐं ॐ ब्राह्म्यै नमः ॥ ह्स्रीं कं खं गं घं ङं ह्स्रीं ॐ माहेश्वर्यै नमः ॥ ॐ ह्स्क्लीं चं छं जं झं ञं हस्क्लीं ॐ कौमार्यै नमः ॥ ॐ श्रीं टं ठं डं ढं णं श्रीं ॐ वैष्णव्यै नमः ॥ ॐ ह्रस्व्युं तं थं दं धं नं ह्रस्व्युं ॐ वाराह्यै नमः ॥ ॐ क्स्रौं पं फं बं भं मं क्स्रौं ॐ नारसिंह्यै नमः॥ॐ लौं यं रं लं वं शं षं सं लौं ॐ ऐन्द्र्यै नमः ॥ ॐ ख्फ्रें ह्लं क्षं ख्फ्रें ॐ चामुण्डायै नमः ॥ ॐ लं इन्द्राय नमः ॥ ॐ रं अग्नये नमः ॥ ॐ टं यमाय नमः ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ॥ ॐ वं वरुणाय नमः ॥ ॐ यं वायवे नमः ॥ ॐ सं सोमाय नमः ॥ ॐ हौं ईशानाय नमः ॥ ॐ आं ब्रह्मणे नमः ॥ ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः ॥ एवं दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वं सर्वरक्षार्थे जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानं रहस्ये॥ रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा ॥ रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशाऽतिभीषणा ॥ १ ॥ रक्ततीक्ष्णनखा रक्तरसना रक्तदन्तिका ॥ पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम् ॥ २ ॥ वसुधेव विशालाक्षी सुमेरुयुगलस्तनी ॥ दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ ॥ ३ ॥ कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी ॥ भक्तान् संपाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ ॥ ४ ॥ खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा ॥ आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ॥ ५ ॥ अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥ इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् ॥ ६ ॥ इति ध्यानम् ॥ ॐ ऐं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ह्स्सौं ह्स्क्लौं ह्स्व्यूं क्ष्म्रौं लौं ख्फ्रें मूलं ख्फ्रें लौं क्ष्म्रौं ह्स्व्युं श्रीं ह्स्क्लौं ह्स्सौं ऐं ॐ एवं आदावन्तेऽष्टौ मातृकाबीजानि दत्त्वा लोम प्रतिलोमेन संपुटीकरणम् ॥ नारद उवाच ॥ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥ यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह॥१॥ ब्रह्मोवाच ॥ अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् ॥ देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ २ ॥ प्रथमं शैलपुत्रीति द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ॥ तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ ३ ॥ पञ्चमं स्कन्धमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ॥ सप्तमं कालरात्रिश्च महागौरीति चाष्टमम् ॥ ४ ॥ नवमं सिद्धिदा प्रोक्ता नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः ॥ उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥ ५ ॥ अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ॥ विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ॥ ६ ॥ न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसङ्कटे ॥ नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं नहि ॥ ७ ॥ यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां सिद्धिः प्रजायते ॥ प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ॥ ८ ॥ ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ॥ ९ ॥ ब्राह्मी हंस समारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥ लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ॥ १० ॥ इत्येता मातरः सर्वा सर्वयोगसमन्विताः ॥ नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥ ११ ॥ दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ॥ शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥ १२ ॥ खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ॥ कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥ १३ ॥ दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च ॥ धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ॥ १४ ॥ नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ॥ महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥ १५ ॥ त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनी ॥ प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्या मग्निदेवता ॥ १६ ॥ दक्षिणे रक्ष वाराहि नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी ॥ प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी ॥ १७ ॥ उदीच्यां रक्ष कौबेरी ईशान्यां शूलधारिणी ॥ ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ॥ १८ ॥ एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ॥

---

१ पाठान्तरम्—मार्कण्डेय उवाच । २ रात्रीति । ३ युधान्येवं ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥ १९ ॥ अजिता वामपार्श्वे च दक्षिणे चापराजिता ॥ शिखां मे द्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥ २० ॥ मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद्यशस्विनी ॥ त्रिनेत्रा नेत्रयोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ॥ २१ ॥ शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ॥ कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी ॥ २२ ॥ नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ॥ अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥ २३ ॥ दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठमध्ये च चण्डिका ॥ घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥ २४ ॥ कामाक्षी चिबुकं रक्षेद्वाचं मे सर्वमङ्गला ॥ ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठ वंशे धनुर्धरी ॥ २५ ॥ नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी ॥ खड्गधारिण्युभौ स्कन्धौ बाहू मे व्रजधारिणी ॥ २६ । हस्तौ तु दण्डिनी रक्षेदम्बिका चांगुलीस्तथा ॥ नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेन्नलेश्वरी ॥ २७ ॥ स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोक विनाशिनी ॥ हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥ २८ ॥ नाभिं च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ॥ कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी ॥ २९ ॥ जङ्घे महाबला प्रोक्ता सर्वकामप्रदायिनी ॥ गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठेऽमितौजसी ॥ ३० ॥ पादांगुलीः श्रीधरी च पादाधस्तलवासिनी ॥ दंष्ट्राकरालिनी रक्षेत्केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ॥ ३१ ॥ रोमकूपाणि कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥ रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ॥ ३२ ॥ अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥ पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ॥ ३३ ॥ ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु ॥ शुक्रं ब्रह्माणी मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ॥ ३४ ॥ अहङ्कारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मचारिणी ॥ प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ॥ ३५ ॥ वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना ॥ रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ॥ ३६ ॥ सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥ आयुर्मे रक्ष वाराहि धर्मं रक्षतु भैरवी ॥ ३७ ॥ यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च सदा रक्षन्तु मातरः ॥ गोत्रमिन्द्राणी मे रक्षेत्पशून्मे

पाठान्तरम्-१ प्राणकल्पं च ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

रक्ष चण्डिके ॥ ३८ ॥ पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ॥ धनेश्वरी धनं रक्षेत्कौमारी कन्यकास्तथा ॥ ३९ ॥ मार्गं क्षेमकरी रक्षेद्विजया सर्वतः स्थिता ॥ राजद्वारे महालक्ष्मीः संग्रामे जयवर्धिनी ॥ ४० ॥ सर्वरक्षाकरं पुण्यं कवचं सर्वदा जपेत् ॥ इदं रहस्यं विप्रर्षे भक्त्या तव मयोदितम् ॥ ४१ ॥ रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ॥ तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥ ४२ ॥ पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ॥ कवचेनावृत्तो नित्यं यत्र यत्र हि गच्छति ॥ ४३ ॥ तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सर्वकामिकः ॥ यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति लीलया ॥ ४४ ॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥ निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ॥ ४५ ॥ त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥ इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ४६ ॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयाऽन्वितः ॥ दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्ये त्वपराजितः ॥ ॥ ४७ ॥ जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥ नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ॥ ४८ ॥ स्थावरं जङ्गमं वाऽपि कृत्रिमं चापि यद्विषम् ॥ अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ॥४९॥ भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ॥ सहजा कुलजा माला डाकिनी[3] शाकिनी तथा ॥ ५० ॥ अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥ ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥ ॥ ५१ ॥ ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥ नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ॥ ५२ ॥ मानोन्नतिर्भवेद्राज्ञ[4]स्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥ यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ॥ ५३ ॥ जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ॥ यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ॥ ५४ ॥ तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ॥ देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ॥ ५५ ॥ प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ॥ ५६ ॥ इति श्रीवराहपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं देव्याः कवचं संपूर्णम् ॥ कवचेऽस्मिन् सार्धपञ्चाशत्संख्यश्लोकसंग्रह इत्युक्तम् ॥ अन्ये क्षेपकाः ॥ इति श्रीहरिकृष्णवि० बृ० ध० उ० श्रीदुर्गोपासना

पाठान्तरम्–१ अल्पमृत्यु । २ चापि ३ । शाकिनी डाकिनी । ४ राज्ञां तेजो । ५ कीर्तिं विन्दति । ६ कवचमादितः ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ऽध्याये ब्रह्मकवचं प्रथमाङ्कं नामएकोनपञ्चाशं प्रकरणम् ॥ ४९ ॥ अथार्गलास्तोत्रम् ॥ ॐ अस्य श्रीर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः महालक्ष्मीर्देवता नवार्णमन्त्रः शक्तिः मन्त्रोदिता देव्यो बीजानि सप्तशतीमन्त्रस्तत्त्वमिष्टार्थं जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानं रहस्ये ॥ शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना ॥ गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी ॥ १ ॥ सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्त पीनघनस्तनी ॥ मुष्टिं शिलीमुखापूर्णां कमलं कमलालया ॥ २ ॥ पुष्पपल्लवमूलादि फलाढ्यं शाकसञ्चयम् ॥ काम्यानन्त रसैयुक्तं क्षुत्तृण्मृत्युजरापहम् ॥ ३ ॥ कार्मुकं च स्फुरत्कान्तिबिभर्ति परमेश्वरी ॥ शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ ॥ ४ ॥ उमा गौरी सती चण्डी कालिका सापि पार्वती ॥ शाकम्भरीं स्तुवन्ध्यायन् जपन् संपूजयन्नमन् ॥ ५ ॥ अक्षय्य मश्नुते नित्यमन्नपानामृतादिकम् ॥ ६ ॥ इति ध्यानम् ॥ ततः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे त्रैलोक्यं वशं कुरु कुरु ॥ ॐ ऋषि रुवाच ॥ ॐ समलवरक्ष्रींचामुण्डायै विच्चे नमः ॥ एवं प्रतिश्लोके संपुटितं कार्यमिति ॥ ऋषिरुवाच ॥ या देवी स्तूयते नित्यं ब्रह्मेन्द्रमुनिकिन्नरैः ॥ सा मे भवतु जिह्वाग्रे ब्रह्मरूपा सरस्वती ॥ १ ॥ जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतोपकारिणि ॥ जय सर्वगते देवि कालरात्री नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ जयन्ती मङ्गला कृष्णा भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ मधुकैटभविद्रावि विधातृवरदे नमः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ४ ॥ महिषासुर निर्नाशविधात्रि वरदे नमः ॥ रूपं० ॥ ५ ॥ रक्तबीजवदे देवि चण्डमुण्डविमार्दिनि[1] ॥ रूपं० ॥ ६ ॥ निशुम्भशुम्भनिर्णाशि तथा धूम्राक्षमर्दिनि ॥ रूपं० ॥ ७ ॥ वन्दितांघ्रियुगे देवेदेवि[2] सौभाग्यदायिनि ॥ रूपं० ॥ ८ ॥ अचिन्त्यरूपरिते सर्वशत्रु विनाशिनि ॥ रूपं० ॥ ९ ॥ नतेभ्यःसर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे[3] ॥ रूपं ० ॥ १० ॥ स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके

---

पाठान्तरम्--१ विनाशिनि । २ देवदेवि । ३ प्रणताय मे ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

रक्ष चण्डिके ॥ ३८ ॥ पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ॥ धनेश्वरी धनं रक्षेत्कौमारी कन्यकास्तथा ॥ ३९ ॥ मार्गे क्षेमकरी रक्षेद्विजया सर्वतः स्थिता ॥ राजद्वारे महालक्ष्मीः संग्रामे जयवर्धिनी ॥ ४० ॥ सर्वरक्षाकरं पुण्यं कवचं सर्वदा जपेत् ॥ इदं रहस्यं विप्रर्षे भक्त्या तव मयोदितम् ॥ ४१ ॥ रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ॥ तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥ ४२ ॥ पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ॥ कवचेनावृत्तो नित्यं यत्र यत्र हि गच्छति ॥ ४३ ॥ तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सर्वकामिकः ॥ यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति लीलया ॥ ४४ ॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥ निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ॥ ४५ ॥ त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥ इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ४६ ॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयाऽन्वितः ॥ दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्ये त्वपराजितः ॥ ॥ ४७ ॥ जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥ नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ॥ ४८ ॥ स्थावरं जङ्गमं वाऽपि कृत्रिमं चापि यद्विषम् ॥ अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ॥४९॥ भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ॥ सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ॥ ५० ॥ अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥ ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥ ॥ ५१ ॥ ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥ नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ॥ ५२ ॥ मानोन्नतिर्भवेद्राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥ यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ॥ ५३ ॥ जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ॥ यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ॥ ५४ ॥ तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ॥ देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ॥ ५५ ॥ प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ॥ ५६ ॥ इति श्रीवराहपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं देव्याः कवचं संपूर्णम् ॥ कवचेऽस्मिन् सार्धपञ्चाशत्संख्यश्लोकसंग्रह इत्युक्तम् ॥ अन्ये क्षेपकाः ॥ इति श्रीहरिकृष्णवि० बृ० ध० उ० श्रीदुर्गोपासना

पाठान्तरम्–१ अल्पमृत्यु । २ चापि ३ । शाकिनी डाकिनी । ४ राज्ञां तेजो । ५ कीर्तिं विन्दति । ६ कवचमादितः ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ऽध्याये ब्रह्मकवचं प्रथमाङ्कं नामएकोनपञ्चाशं प्रकरणम् ॥ ४९ ॥ अथार्गलास्तोत्रम् ॥ ॐ अस्य श्रीर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः महालक्ष्मीर्देवता नवार्णमन्त्रः शक्तिः मन्त्रोदिता देव्यो बीजानि सप्तशतीमन्त्रस्तत्त्वमिष्टार्थं जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानं रहस्ये ॥ शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना ॥ गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी ॥ १ ॥ सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्त पीनघनस्तनी ॥ मुष्टिं शिलीमुखापूर्णां कमलं कमलालया ॥ २ ॥ पुष्पपल्लवमूलादि फलाढ्यं शाकसञ्चयम् ॥ काम्यानन्त रसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युजरापहम् ॥ ३ ॥ कार्मुकं च स्फुरत्कान्तिबिभर्ति परमेश्वरी ॥ शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ ॥ ४ ॥ उमा गौरी सती चण्डी कालिका सापि पार्वती ॥ शाकम्भरीं स्तुवन्ध्यायन् जपन् संपूजयन्नमन् ॥ ५ ॥ अक्षय्य मश्नुते नित्यमन्नपानामृतादिकम् ॥ ६ ॥ इति ध्यानम् ॥ ततः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे त्रैलोक्यं वशं कुरु कुरु ॥ ॐ ऋषि रुवाच ॥ ॐ समलवरफ्रींचामुण्डायै विच्चे नमः ॥ एवं प्रतिश्लोके संपुटितं कार्यमिति ॥ ऋषिरुवाच ॥ या देवी स्तूयते नित्यं ब्रह्मेन्द्रमुनिकिन्नरैः ॥ सा मे भवतु जिह्वाग्रे ब्रह्मरूपा सरस्वती ॥ १ ॥ जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतोपकारिणि ॥ जय सर्वगते देवि कालरात्री नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ जयन्ती मङ्गला कृष्णा भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ मधुकैटभविद्रावि विधातृवरदे नमः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ४ ॥ महिषासुर निर्नाशविधात्रि वरदे नमः ॥ रूपं० ॥ ५ ॥ रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविमार्दिनि ॥ रूपं० ॥ ६ ॥ निशुम्भशुम्भनिर्णाशि तथा धूम्राक्षमर्दिनि ॥ रूपं० ॥ ७ ॥ वन्दिताङ्घ्रियुगे देवैर्देवि[2] सौभाग्यदायिनि ॥ रूपं० ॥ ८ ॥ अचिन्त्यरूपरिते सर्वशत्रु विनाशिनि ॥ रूपं० ॥ ९ ॥ नतेभ्यःसर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ॥ रूपं ० ॥ १० ॥ स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके

---

पाठान्तरम्--१ विनाशिनि । २ देवदेवि । ३ प्रणताय मे ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

व्याधिनाशिनि ॥ रूपं० ॥ ११ ॥ चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ॥ रूपं० ॥ १२ ॥ देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि देवि परं सुखम् ॥ रूपं० ॥ १३ ॥ विदेहि देवि कल्याणं विदेहि विपुलां श्रियम् ॥ रूपं० ॥ १४ ॥ विदेहि द्विषतां नाशं विदेहि बल मुच्चकैः ॥ रूपं० ॥ १५ ॥ सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ॥ रूपं० ॥ १६ ॥ विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु[1] ॥ रूपं ॥ १ ॥प्रण्चडदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ॥ रूपं० ॥ १८ ॥ चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रे संस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं० ॥ १९ ॥ कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या त्वमम्बिके ॥ रूपं० ॥ २० ॥ हिमाचलसुतानाथसंस्तुतेपरमेश्वरि[3] ॥ रूपं० ॥२१॥ इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ॥ रूपं० ॥ २२ ॥ देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि ॥ रूपं० ॥२३ ॥ देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके रूपं० ॥ २४ ॥ पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥ रूपं० ॥ २५ ॥ पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ॥ तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ २६ ॥ इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ॥ स तु सप्तशतीसंख्या वरमाप्नोति संप दाम् ॥२७॥ इति आगमान्तरे विष्णु० अर्गलास्तुतिः संपूर्णा ॥ त्रयोविंशतिसंख्यानां श्लोकानामत्र संग्रहः इति उक्तम् ॥अन्य क्षेपकाः ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उ० श्रीदुर्गोपासनाध्याये दुर्गार्गलास्तोत्रनिरूपणं द्वितीयाङ्कं नाम पंचाशं प्रकरणम् ॥ ५० ॥अथ श्रीदुर्गाकीलकस्तोत्रम् ॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ ॐ अस्य श्रीकीलकाख्यस्तोत्रमन्त्रस्य शिव ऋषिः अनुष्टुपुछन्दः महासरस्वती देवता नवार्णमन्त्रः शक्तिः मन्त्रोदिताः देव्यो बीजं सप्तशतीमन्त्रस्तत्त्वमुत्कीलनार्थे जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम् ॥ शाकम्भरी नीलवर्णा इत्याद्यर्गलोक्तं ध्यानम् ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ ॐ मार्कण्डेय उवाच ॥ चामुण्डायैविच्चे क्लीं ह्रीं ऐं ॐ एवं प्रतिश्लोके लोमविलोमेन संपुटिकरणम् ॥ ॐ मार्कण्डेय उवाच ॥ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ॥ श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे ॥ १ ॥ सर्वमेतद्विना[3] यस्तु मन्त्राणामपि कीलकम् ॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥ २ ॥सिध्य

पाठान्तरम्-- १ च मां कुरु । २ चतुर्वक्त्रसंस्तुते । ३ नाथपूजिते । ४ दुःख । ५ संपदः । द्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम् ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

न्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि ॥ एतेन स्तुवतां देवीं स्तोत्रमन्त्रेण[1] सिद्ध्यति ॥ ३ ॥ न मन्त्रो[2] नौषधं तत्र न किंचिदपि वर्तते ॥ विना जाप्येन सिध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥ ४ ॥ समस्तान्यपि[3] सिद्ध्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः ॥ कृत्वा निमन्त्रया मास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥ ५ ॥ स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुह्यं चकार सः ॥ समाप्तिर्न च पुण्येन तां यथावन्नियन्त्रणाम् ॥६॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः ॥ कृष्णायां च[4] चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥ ७ ॥ ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति ॥ इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ८ ॥ यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ॥ स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते वने ॥ ९ ॥ न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते ॥ नापमृत्युवशं[5] याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ ॥ १० ॥ ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत ह्यकुर्वाणो विनश्यति ॥ ततो ज्ञात्वैव संपन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥ ११ ॥ सौभाग्यादि च यत्किंचिद्दृश्यते ललनाजने ॥ तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥ १२ ॥ शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन्स्तोत्रे संपत्तिरुच्चकैः ॥ भवत्येव समग्राऽपि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥ १३ ॥ ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसंपदः ॥ शत्रुहानिः परो मोक्षः सा न किं स्तूयते[6] जनैः ॥ १४ ॥ इदं स्तोत्रं पठित्वा तु जपेत्सप्तशतीं नरः ॥ सरहस्यार्गलोपेतं स सम्यक्फलमश्नुते ॥ १५ ॥ इति श्रीस्वायम्भुवागमे भगवत्याः कीलकं संपूर्णम् ॥ श्लोकश्चतुर्दशैवात्र कीलकेऽस्मिन्प्रतिष्ठिताः इति उक्तं नीलकण्ठभट्टाचार्यैः ॥ इति श्रीह०बृ०ध० उ० श्रीदुर्गोपासनाध्याये कीलकनिरूपणं तृतीयाङ्गं नाम एकपंचाशं प्रकरणम् ॥५१॥ अथ विविधन्यासप्रकरणम् ॥ तत्रादौ एकादशन्यासविधिः ॥ मूलेनाचम्य प्राणानायम्य ॥ ॐ अद्येत्यादि ॐ एकादशन्यासानहं करिष्ये ॥ ॐ अं नमः शिरसि ॥ ॐ आं नमो मुखे ॥ ॐ इं नमो दक्षिणनेत्रे ॥ ॐ ईं नमो वामनेत्रे ॥ ॐ उं नमो दक्षिणकर्णे ॥ ॐ ऊं नमो वामकर्णे ॥ ॐ ऋं नमो दक्षिणनासिकायाम् ॥ ॐ ॠं नमो वामनासिकायाम् ॥ ॐ लृं नमो दक्षिणगण्डे ॥ ॐ लॄं नमो वामगण्डे ॥ ॐ एं नम ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ ॥ ॐ ऐं नमोऽधोदन्तपङ्क्तौ ॥

पाठान्तरम्—१ स्तोत्रमात्रेण । २ न मंत्रमिति । ३ समग्राण्यपि सेत्स्यन्ति । ४ वा । ५ नाल्पमृत्यु । ६ स्तूयते सा न किं जनैः ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ ओं नम ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ॐ औं नमोऽधरोष्ठे ॥ ॐ अं नमो जिह्वायाम् ॥ ॐ अः नमो ग्रीवायाम् ॥ ॐ कं नमः खं नमः गं नमः घं नमः ङं नमः दक्षिणकरसन्धिष्वङ्गेषु ॥ ॐ चं नमः छं नमः जं नमः झं नमः ञं नमः वामकरसन्धिष्वङ्गेषु ॥ ॐ टं नमः ठं नमः डं नमः ढं नमः णं नमः दक्षिणचरणसन्धिष्वङ्गेषु ॥ ॐ तं नमः थं नमः दं नमः धं नमः नं नमः वामचरणसन्धिष्वङ्गेषु ॥ ॐ पं नमः फं नमः वामपार्श्वे ॥ बं नमः पृष्ठे ॥ भं नमः नाभौ ॥ मं नमः उदरे ॥ ॐ यं त्वगात्ममे नमः हृदि ॥ॐ रं असृगात्मने नमो दक्षांसे ॥ ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि ॥ ॐ वं मेदात्मने नमः वामांसे ॥ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्षहस्ताग्रान्तम् ॥ ॐ षं मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्ताग्रान्तम् ॥ ॐ सं शुक्रात्मने नमो दक्षपादाग्रान्तम् ॥ ॐ हं प्राणात्मने नमः हृदयादिवामपादाग्रान्तम् ॥ ॐ ळं शक्त्यात्मने नमः हृदयाद्युदरान्तम् ॥ ॐक्षं क्रोधात्मने नमः हृदयादिमुखान्तम् ॥ मूलेन व्यापकत्रयं विभाव्य ॥ अयं ते मातृकान्यासः प्रथमः परिकीर्तितः ॥ सामवेदसमो भाति सामो मातृकयाऽन्वितः ॥ १ ॥ इति प्रथमो न्यासः ॥ १ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चां नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ३ मुं नमः अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ३ डां नमः मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ ३ यैं नमः तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ ३ विं नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ३ च्चें नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ॐ ३ करमध्ये ॐ ३ पृष्ठे ॐ ३ मणिबन्धे ॐ ३ कूर्परे॥ॐ३चां नमःहृ०ॐ३मुं०शि०ॐ३ डां० शि० ॐ३ यैं० क० ॐ ३ विं० ने० ॐ ३ च्चें० अ० ॥ सर्वासु दिक्षु ॥ करयोर्मध्यतः पृष्ठे मणिबन्धे च कूर्परे ॥ सहृदयादिसद्धितीयजातियुक्तः षडङ्गकः ॥ १ ॥ एष सारस्वतो न्यासो महत्यस्मिन्कृते सति ॥ दुरितं विलयं याति जाड्यं प्राक्पाकसंभवम् ॥ २ ॥ इति द्वितीयो न्यासः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्माणी मां पूर्वतः पातु ॥ ॐ ह्रीं माहेश्वरी मामाग्नेय्यां पातु ॥ ॐ ह्रीं कौमारी मां दक्षिणस्यां पातु ॥ ॐ ह्रीं वैष्णवी मां नैर्ऋत्यां पातु ॥ ॐ ह्रीं वाराही मां पश्चिमायां पातु ॥ ॐ ह्रीं इन्द्राणी मां वायव्यां पातु ॥ ॐ ह्रीं चामुण्डा मामुत्तरस्यां पातु ॥ ॐ ह्रीं चण्डिका मामीशान्यां पातु ॥ ॐ ह्रीं व्योमेश्वरी मामूर्ध्वं पातु ॥ ॐ ह्रीं सप्तद्वीपेश्वरी

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मामधः पातु ॥ एवं पूर्वादीशानपर्यन्तं हृदयमारभ्य प्रादक्षिण्येन विन्यस्य मातृगणाख्यं तृतीयं न्यासं कृत्वा तु निर्भयः ॥ जायते त्रिषु लोकेषु सर्वदेवप्रियो भवेत् ॥१॥ इति तृतीयो न्यासः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं कमलांकुशधरा नन्दजा पूर्वांगं पातु ॥ ॐ ह्रीं खड्गपात्रधरा रक्तदन्तिका दक्षिणाङ्गं पातु ॥ ॐह्रीं पुष्पपल्लवमूलादिधारिणी शाकम्भरी पृष्ठे पातु ॥ ॐ ह्रीं धनुर्बाणधरा दुर्गा वामपार्श्वे पातु ॥ ॐ ह्रीं शिरःपात्रधरा भीमा मस्तकाच्चरणावधि पातु ॥ ॐ ह्रीं चित्रकान्तिधरा भ्रामरी पादाभ्यां शिरो यावत् पातु ॥ अनेन न्यासयोगेन जरामृत्युविवर्जितः ॥ निर्भयश्चाग्निचौराभ्यां मान्त्रिकस्तत्क्षणाद्भवेत् ॥ १ ॥ इति षड्देव्यात्मकचतुर्थन्यासः ॥ ४ ॥ ॐ ब्रह्मा पादाभ्यां नाभिपर्यन्तं पातु ॥ ॐ हंसः पादद्वयं पातु ॥ ॐ वैनतेयः करद्वयं पातु ॥ ॐ वृषभश्चक्षुषी पातु ॥ ॐ गजाननः सर्वाङ्गानि पातु ॥ ॐ नित्यानन्दमयो हरिः परावर उत्कृष्टं पातु ॥ अभेद्यःपञ्चमो न्यासः कर्तुः कामदुघाफलः ॥ महापापनिवृत्तेभ्यः प्रायश्चित्तमसौ भवेत् ॥ १ ॥ इति पञ्चमो न्यासः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अष्टादशभुजा महालक्ष्मीर्मध्यं पातु ॥ ॐ क्लीं अष्टभुजा महासरस्वती ऊर्ध्वं पातु ॥ ॐ ऐं त्रिंशल्लोचनमण्डिता महाकाली अधः पातु ॥ ॐ सिंहा हस्तद्वयं पातु ॥ ॐ परमहंसः अक्षिमण्डलं पातु ॥ ॐ महिषेण समायुक्तः प्रेतः पादद्वयं पातु ॥ ॐ महेशानी सर्वाङ्गानि पातु ॥ ॐ चण्डिका परमुत्कृष्टं पातु ॥ वैकुण्ठसुखकृन्न्यासः षष्ठः कष्टोपशान्तये ॥ १ ॥ इति षष्ठो न्यासः ॥६॥ ॐ ऐं ब्रह्मरन्ध्रेॐ ह्रीं दक्षनेत्रे ॐ क्लीं वामनेत्रे ॐ चां दक्षकर्णे ॐ मुं वामकर्णे ॐ डां दक्षनासायाम् ॐ य वामनासायाम् ॐ विं मुखे ॐ च्चें लिंगे ॐ पायौ ॥ इति गुप्तन्यासः सप्तमः ॥७॥ ॐ ऊं पादौ ॐऐं लिङ्गे ॐह्रीं मुखे ॐ क्लींवामनासायाम् ॐ चां दक्षनासायाम्ॐ मुं वाम नेत्रे ॐ डां दक्षनेत्रे ॐ यैं वामकर्णे ॐ विं दक्षकर्णे ॐ च्चें ब्रह्मरन्ध्रे ॥ न्यासद्वयमिदं प्रोक्तं सुगोप्यं सप्तमाष्टमम् ॥ महाभयमहाव्याधिशत्रुचौराग्निघातकम् ॥ १ ॥ महारक्षोगणानां च कल्पान्ताग्निसमं भवेत् ॥ २ ॥ इति गुप्ततरन्यासोऽष्टमः ॥ ८ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे च्चेवियैडामुंचाक्लींह्रींऐं ॐ नमःमूर्धनि ॐ २१ हृदयेॐ२१ गुह्ये ॐ२१ पादयोः विलोमतः ॐ २१ पादयोः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ २१ गुह्ये ॐ २१ हृदये ॐ २१ मूर्धनि ॐ २१ पूर्वाङ्गे ॐ २१ दक्षिणांगे ॐ २१ पश्चिमांगे ॐ २१ वामांगे ॥ अस्मिन् न्यासे कृते सकृन्नवमे देववद्भवेत् ॥ इति दिग्न्यासो नवमः ॥ ९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हृदयाय नमः ॐ ९ शिरसे स्वाहा ॐ ९ शिखायै वषट् ॐ ९ कवचाय हुम् ॐ ९ नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ९ अस्त्राय फट् ॐ ९ पूर्वस्याम् ॐ ९ आग्नेय्याम् ॐ ९ दक्षिणस्याम् ॐ नैर्ऋत्याम् ॐ ९ पश्चिमायाम् ॐ ९ वायव्याम् ॐ ९ उत्तरस्याम् ॐ ९ ईशान्याम् ॐ ९ ऊर्ध्वम् ॐ ९ अधः ॥ इति त्रैलोक्यपूजान्यासो दशमः ॥ १० ॥ दशन्यासप्रतिष्ठोऽयं यद्वद्देवतस्था भवेत् ॥ यत्पश्यति यथां दृष्ट्वा तद्भवेत्तादृशं किल ॥१॥ तेन सार्धं महालक्ष्मीः स्वयं वदति तत्फलम् ॥ भविष्यमभविष्यं च तं पालयति पुत्रवत् ॥२॥ ब्रह्मविष्णु शिवाश्चैव पालयन्त्यात्मवत्सदा ॥ त्रिषु लोकेषु पश्यन्ति तदाधिक्यं न कंचन ॥३॥ दशन्यासकृते पापं दशजन्मार्जितं क्षणात् ॥ सुतीव्रं विलयं याति तिमिरं रविणा यथा ॥ ४ ॥ सन्नद्धो दशभिर्न्यासैश्चण्डीसप्तसतीं जपेत् ॥ असाध्यं साधयत्याशु शीघ्रं लोकत्रये च यत ॥ ५ ॥ माधवे मासि मध्याह्ने तपन्तं निर्मलं रविम् ॥ दिवाऽन्धास्तं न पश्यन्ति सर्वदा सर्वगं यथा ॥ ६ ॥ चण्डीसप्तशतीजाप्ये सरहस्ये नृपोत्तम ॥ न्यासं ते संप्रवक्ष्यामि ब्रह्मविष्णुशिवैः कृतम् ॥ ७ ॥ अभीष्टसर्वसिद्ध्यर्थं चन्द्रामृत मनामुखम् ॥ अस्मिन्न्यासे दश श्लोका ब्रह्मविष्णुशिवोदिताः ॥ ८ ॥ खड्गिनी शूलिनीत्यादि पठित्वा श्लोकपञ्चकम् ॥ ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणा भुशुण्डी परिघायुधां ॥१॥ सौम्या सौम्यतराऽशेषसौम्येभ्यस्त्वति सुन्दरी ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी॥२॥ यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ ३ ॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पाताऽत्ति यो जगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ ४ ॥ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ ५ ॥ इत्येवं श्लोकपञ्चकमर्गलं कृष्ण वर्णं ध्यात्वा ऐं इति सर्वाङ्गके न्यसेत् ॥ कृष्णतरं ध्यानं नाभौ न्यसेत् ॥ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

स्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ १ ॥ सूर्यसदृशं द्वितीयं ह्रीं सर्वतो न्यसेत् ॥ ॐ ह्रीं हृदि ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी ॥२॥ ॐह्रीं गुदे ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं दक्षिणपादे ॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ कर पल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं वामपादे ॥ इत्येवं श्लोकचतुष्टयं कीलकं बालार्कसदृशं ध्यात्वा स्वदेहे व्यापक त्वेन विन्यसेत् ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे इत्यादिश्लोकपञ्चकम् ॥ पठित्वा स्फाटिकाभासं तृतीयं ( बीजं क्लीं ) स्वतनौ न्यसेत् ॥ सर्वस्व रूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ ॐ क्लीं शिरसि ॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचन त्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्मभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ ॐ क्लीं मुखे ॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ ॐ क्लीं दक्षिणभुजे ॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ ४ ॥ ॐ क्लीं वामभुजे ॥ असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ ५ ॥ ॐ क्लीं हृदये ॥ इत्येवं श्लोकपञ्चकं कवचं शुद्धस्फटिकसङ्काशं ध्यात्वा स्वदेहव्यापकं कुर्यात् ॥ शुद्ध फटिकसङ्काशं न्यासं त्रैलोक्यकामदम् ॥ अयमेकादशो न्यासो दशन्याससमो भवेत् ॥ १ ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा योनिमुद्रां विलोकयेत् ॥ यस्या विलोकनाद्राजन् कृतो न्यासः स्थिरो भवेत् ॥ २ इति सप्तशक्तिकायाः एकादशन्यासविधिः संपूर्णः ॥ ॥ ११ ॥ अथ प्रकारान्तरेण न्यासः ॥ ॐ यन्मोहो ज्ञानिनोरपि अंगु० ॐ निद्रां भगवतीं विष्णोः तर्ज० ॐ जयेति देवाश्च मुदा मध्य० ॥ ॐ आजघान भुजे सव्ये अना० ॥ ॐ हते तस्मिन्महावीर्ये कनि० ॥ ॐ नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तं कर तल० ॥ एवं हृदयादिन्यासः ॥ अत्र मूलं नोपलभ्यत इति नागोजीभट्टः॥ अथ पाठाङ्गत्वेन विहितन्यासः॥तत्र नामानि ॥ चरितत्रय जाप्यस्य चण्डिकाया नृपोत्तम ॥ सरहस्यस्य नामानि ब्रह्मोक्तानि वदामि ते ॥ १ ॥ महाविद्या महामन्त्रा चण्डीसप्तशतीति च ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

स्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ १ ॥ सूर्यसदृशं द्वितीयं ह्रीं सर्वतो न्यसेत् ॥ ॐ ह्रीं हृदि ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी ॥२॥ ॐ ह्रीं गुदे ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं दक्षिणपादे ॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं वामपादे ॥ इत्येवं श्लोकचतुष्टयं कीलकं बालार्कसदृशं ध्यात्वा स्वदेहे व्यापकत्वेन विन्यसेत् ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे इत्यादिश्लोकपञ्चकम् ॥ पठित्वा स्फाटिकाभासं तृतीयं ( बीजं क्लीं ) स्वतनौ न्यसेत् ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ ॐ क्लीं शिरसि ॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्मभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ ॐ क्लीं मुखे ॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ ॐ क्लीं दक्षिणभुजे ॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ ४ ॥ ॐ क्लीं वामभुजे ॥ असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ ५ ॥ ॐ क्लीं हृदये ॥ इत्येवं श्लोकपञ्चकं कवचं शुद्धस्फटिकसङ्काशं ध्यात्वा स्वदेहव्यापकं कुर्यात् ॥ शुद्धफटिकसङ्काशं न्यासं त्रैलोक्यकामदम् ॥ अयमेकादशो न्यासो दशन्याससमो भवेत् ॥ १ ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा योनिमुद्रां विलोकयेत् ॥ यस्या विलोकनाद्राजन् कृतो न्यासः स्थिरो भवेत् ॥ २ इति सप्तशक्तिकायाः एकादशन्यासविधिः संपूर्णः ॥ ॥ ११ ॥ अथ प्रकारान्तरेण न्यासः ॥ ॐ यन्मोहो ज्ञानिनोरपि अंगु० ॐ निद्रां भगवतीं विष्णोः तर्ज० ॐ जयेति देवाश्च मुदा मध्य० ॥ ॐ आजघान भुजे सव्ये अना० ॥ ॐ हते तस्मिन्महावीर्ये कनि० ॥ ॐ नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तं करतल० ॥ एवं हृदयादिन्यासः ॥ अत्र मूलं नोपलभ्यत इति नागोजीभट्टः॥ अथ पाठाङ्गत्वेन विहितन्यासः॥तत्र नामानि ॥ चरितत्रयजाप्यस्य चण्डिकाया नृपोत्तम ॥ सरहस्यस्य नामानि ब्रह्मोक्तानि वदामि ते ॥ १ ॥ महाविद्या महामन्त्रा चण्डीसप्तशतीति च ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मृतसंजीविनी नाम चतुर्थ परिकीर्तितम् ॥ २ ॥ पञ्चमं च महाचण्डी चतुःषष्टिपदी परम् ॥ एतानि योऽभिजानाति नामानि नृपसत्तम ॥ ३ ॥ तपो विना भवेत्तस्य चण्डिका वरदा सदा ॥ ४ ॥ अथैभिरेव षडङ्गः ॥ ॐ महाविद्यायै नमः अंगु हृदये ॥ ॐ महामन्त्रायै नमः तर्ज० शिरसि ॥ ॐ चण्डीसप्तशत्यै नमः मध्य० शिखायै वषट् ॥ मृतसंजीविन्यै नमः अना०कवचाय हुम् ॥ ॐ महाचण्डच्यै नमः कनि० नेत्र० ॥ ॐ चतु षष्टिपद्यै नमः करतल० अस्त्रा० इति पाठाङ्गत्वेन विहितन्यासः ॥ अथ प्रकारान्तरेण डामरतन्त्रोक्तन्यासः ॥ ॐ अस्य श्रीसप्तशतिकास्तोत्रमालामन्त्रस्य मार्कण्डेयसुमेधाब्रह्मेन्द्रवासुदेवरुद्रादय ऋषयः ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि ॥ मधुकैटभमर्दिनीमहिषासुरसेनानीमहिषासुरमर्दिनीधूम्रलोचनचण्डमुण्डरक्तबीजशुम्भनिशुम्भमर्दिन्यो देवताः ॥ मधुकैटभमर्दिनीमहिषासुरमर्दिनीशुम्भनिशुम्भमर्दिन्यः प्रधानदेवताः ॥ ब्राह्मीमाहेश्वरीकौमारीवैष्णवीवाराहीन्द्राणीचामुण्डा गर्भदेवताः ॥ नन्दारक्तदन्तिकाशाकंभरीदुर्गाभीमाभ्रामर्यश्चाङ्गदेवताः ॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥ देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ॥ आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थिताऽसि इति बीजम् ॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ॥ विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु इति शक्तिः ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी॥मेधाऽसि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ॥ इति कीलकम् ॥ श्रीदेवीमाहात्म्योक्तसंपूर्णफलसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ न्यासः॥ ॐ शंभुतेजोज्वलज्ज्वालामालिनि पावके ॥ ॐ ह्रां नन्दायै नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः हृ० ॥ ॐ शंभुतेजो० ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः तर्जनीभ्यां नमः शि० ॥ ॐ शंभुतेजो० ह्रूं शाकम्भर्यै मध्यमाभ्यां नमः शिखा० ॥ ॐ शंभुतेजो० ह्र दुर्गाय नमः अनामिकाभ्यां नमः क०॥ ॐ शंभुतेजो०ह्रौं भीमायै नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ने० ॥ ॐ शंभुतेजो० ह्रः भ्रामर्यै नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः अ० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इति दिग्बन्धः ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अथाङ्गन्यासः ॥ ॐ वाराह्यै नमः पादयोः ॥ ॐ नारसिंह्यै नमः नितम्बे ॥ ॐ ब्राह्म्यै नमः पृष्ठे ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः दक्षभुजे ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः वामभुजे ॥ ॐ कौमार्यै नमः स्कन्धयो ॥ ॐ कात्यायन्यै नमः मुखे ॥ ॐ शिवदूत्यै नमः शिरसि ॥ ॐ शिवायै नमः हृदये ॥ ॐ काल्यै नमः वामकुक्षौ ॥ रक्तदन्तिकायै नमः दक्षकुक्षौ ॥ ॐ शताक्ष्यै नमः पृष्ठवंशे ॥ ॐ शाकम्भर्यै नमः भ्रुवोः ॥ अथान्यश्च अङ्गन्यासः ॥ ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणा भुशुण्डी परिघायुधा ॥ १ ॥ शिरसि ॥ ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ २ ॥ मुखे ॥ ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी ॥ ३ ॥ इति कण्ठे ॥ ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ ४ ॥ इति भुजयोः ॥ ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥५ ॥ इति हृदि ॥ ॐ सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो नित्यं दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥ इति उदरे ॥ ॐ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सवभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥ इति नाभौ ॥ ॐ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुर सूदनम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥ इति ऊर्वोः ॥ ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ ९ ॥ इति जान्वोः ॥ ॐ असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ १० ॥ इति पादयोः ॥ अथ ध्यानम् ॥ सौवर्णाम्बुजमध्यगां त्रिनयनां सौदामिनीसन्निभां शङ्खं चक्रगदाभयानि दधतीमिन्दोः कलां बिभ्रतीम् ॥ ग्रैवेयाङ्गदहारकुण्डलधरामाखण्डलाद्यैः स्तुतां ध्यायेद्विन्ध्यनिवासिनीं शशि मुखीं पार्श्वस्थपञ्चाननाम् ॥ १ ॥ या देवी मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डशमनी या रक्तबीजाशनी ॥ या शुम्भादिनिशुम्भदैत्यदमनी या सिद्धलक्ष्मीः परा सा चण्डी नवकोटिशक्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥ २ ॥ इति प्रकारान्तर

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

न्यासः ॥ अथ कुल्लुकादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं हूं कुल्लुकायै नमः शिरसि ॥ ॐ सेतवे नमः हृदि ॥ ॐ ह्रीं महासेतवे नमः कण्ठे ॥ ॐऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे एं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ॥ ॐ निर्वाणाय नमः मणिपूरे ॥ ॐऐं महाकुण्डलिन्यै नमः मूलाधारे॥ॐक्लीं कामराजाय नमः लिंगे ॥ ॐ रां रीं रमलवरयूं राकिन्यै नमः ब्रह्मरन्ध्रे ॥ ॐ द्विजिह्वायै नमः हृदि ॥ इति कुल्लुकादिन्यासः ॥ अथ नवार्णन्यासक्रमः ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः नन्दाशाकंभरीभीमाः शक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि अग्निवायुसूर्यास्त त्त्वानि सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ ऋष्यादिन्यासः ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दोभ्यो नमः मुखे ॥ महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदये ॥ नन्दाशाकंभरीभीमाशक्तिभ्यो नमः कण्ठे ॥ रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामरीबीजेभ्यो नमः स्तनयोः ॥ अग्निवायुसूर्यतत्त्वेभ्यो नमः फलके ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इत्यनेन करौ संशोध्य ॥ ततोऽङ्गुलिन्यासो यथा ॥ ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीं तर्ज० ॥ ॐ क्लीं मध्य० ॥ ॐचामुण्डायै अना० ॥ ॐ विच्चे कनि० ॥ ॐ ९ करतलकरपृष्ठा० ॥ अथ हृदयादि न्या० ॥ ॐ ऐं हृ० ॥ ॐ ह्रीं शिर० ॥ ॐ क्लीं शिखा० ॥ ॐचामुण्डायै क० ॥ ॐ विच्चे ने० ॥ सकलेन अस्त्राय फट् ॥ ततोऽक्षरन्यासो यथा ॥ ॐ ऐं नमः शिखायाम् ॥ ॐ ह्रीं नमः दक्षनेत्रे ॥ ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे ॥ ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे ॥ ॐ मुं नमः वामकर्णे ॥ ॐ डां नमः दक्षिणनासायाम् ॥ ॐ यैं नमः वामनासायाम् ॥ ॐ विं नमः मुखे ॥ ॐ च्चें नमः गुह्ये ॥ ततो मूलेन शिखादिपादपर्यन्तमष्टवारं व्यापकं कुर्यात् ॥ ततः ॐ ऐं नमः प्राच्यै ॥ ॐ ऐं आग्नेय्यै० ॥ ॐ ह्रीं दक्षिणायै० ॥ ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै० ॥ ॐ क्लीं पश्चिमायै० ॥ ॐ क्लीं वायव्यै० ॥ ॐ चामुण्डायै उदीच्यै० ॥ ॐ विच्चे ईशान्यै० ॥ ॐ सकलेन ऊर्ध्वायै० ॥ पुनः सकलेन अधरायै० ॥ अथ ध्यानम् ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघान् शूलं भुशुण्डीशिरःपाशान् संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ॥ नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥ १ ॥ अक्षस्रक्परशू गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ॥ शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्य प्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजेच्छुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ३ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य ॥ इति नवार्णन्यासविधिः ॥ अथ सप्तशतीन्यासः ॥ तत्रादौ समष्टिसंकल्पः ॥ ॐ अस्य श्रीसप्तशतिकामालामन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि ऐं ह्रीं क्लीं नन्दाशाकंभरीभीमाः शक्तयः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि ह्सौं ह्रीं क्लीं अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि ऋग्यजुःसामवेदा ध्यानानि मम सकलपापक्षयार्थे चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे अभीष्टप्राप्त्यर्थे न्यासशापोद्धारोत्कीलनजपरात्रिसूक्तपूर्वकं मार्कण्डेय उवाचेत्यारभ्य सावर्णिर्भविता मनुरित्यन्तं पुनः देवीसूक्तन्यासनवार्णजपान्तं सप्तशतीपाठं करिष्ये अथ ऋष्यादिन्यासः ॥ ऋषये वा ऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ छन्दोभ्यो नमः मुखे ॥ देवताभ्यो नमः हृदये ॥ शक्तिभ्यो नमः पादयोः ॥ अथ करषडङ्गन्यासः ॥ ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणा भुशुण्डी परिघायुधा ॥ १ ॥ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ हृद० ॥ ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥ २ ॥ तर्जनीभ्यां नमः ॥ शिर० ॥ ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी ॥ ॥ ३ ॥ मध्यमाभ्यां नमः ॥ शि० ॥ ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ ४ ॥ अनामिकाभ्यां० ॥ कव० ॥ ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सर्वतः ॥५॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ नेत्र० ॥ ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥६॥ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अस्त्रा० ॥ एवं हृदयादिन्यासं कृत्वा ॥ अथ ध्यानम् ॥ विद्युद्दामसमप्रां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ॥ हस्तैश्चक्रधरासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य ॥ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि ॥ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि ॥ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि ॥ रं अग्न्यात्मकं दीपं परिकल्पयामि ॥ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि ॥ सं सर्वात्मकं सर्वोपस्करं परिकल्पयामि ॥ ततो गन्धादिना पुस्तकं संपूज्य आधारे स्थापयेत् ॥ इति सप्तशतीन्यासः ॥ इति श्रीह०बृ०ध०उ० श्रीदुर्गोपासनाध्याये विविधन्यासनिरूपणं नाम द्विपञ्चाशं प्रकरणम्॥५२॥अथ शापोद्धारोत्कीलनादिप्रकरणम् ॥ ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा ॥ पाठादौ सप्तवारं जपेत् ॥ ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ अन्यच्च ॥ ॐ ह्रूसां ह्रूसीं क्षों ऐं क्षमलवरफ्रीं डमलवरफ्रीं ॐक्षं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः उत्कीलय २ स्वाहा॥ अन्यच्च ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं क्रौं ॐ ऐं क्षोभय २ मोहय२ अमलवरफ्रीं स्फ्रां स्फ्रीं उत्कीलय २ स्वाहा ॥ पाठादौ एकविंशतिवारं जपेत् ॥ ॐ रं सं मूलं रं क्षं ॐ इति सप्तवारं जपित्वा जागरिता विद्या भवति ॥ ततः पञ्चदशवारं प्रणवं जपित्वा ॐ मूलं सप्तवारं जपित्वा शतमादौ शतं चान्ते मध्ये च चरितत्रयम् ॥ सकामः संपुटो जाप्यो निष्कामः संपुटं विनेति वचनात् ॥ जपं कर्तुं माला प्रार्थनां कुर्यात् ॥ ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ १ ॥ ॐ ऐं ह्रीं सिद्ध्यै नमः ॥ अविघ्नं कुरु माले त्वं अनेन मन्त्रेण मालां गृहीत्वा संपूज्य दक्षकरस्य मध्यांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्यैकाग्रचित्तः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सन् मूलमष्टोत्तरशतं प्रजप्य मालामभिवन्द्य ॥ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव ॥ शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे ॥ ॐ नमः सिद्धयै नमः इति मन्त्रेण मालां शिरसि निधाय रहसि स्थापयित्वा गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि प्रसन्ना भव सर्वदा ॥ १ ॥ इति मन्त्रेण देव्या वामकरे जपं निवेद्य ॥ अम्ब त्वत्सर्ववाक्यानि सूक्ता सूक्तानि यानि च ॥ तानि स्वीकुरु सर्वज्ञे दयालुत्वेन सादरम् ॥ १ ॥ तव प्रतिज्ञा मद्भक्ता न नश्यन्तीत्यपि क्वचित् ॥ इति संचिन्त्य सञ्चिन्त्य प्राणान्संधारयाम्यहम् ॥ २ ॥ इति मन्त्रेण क्षमापयेत् ॥ ततः रात्रिसूक्तं पठेदादौ मध्ये सप्तशतीस्तवम् ॥ प्रान्ते तु पठनीयं वै देवीसूक्तमिति क्रमः ॥ १ ॥ अतो रात्रिसूक्तं जपेत् वेदोक्तं वा ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीमित्यारभ्य हन्तुमेतौ महासुरौ इत्यन्तं पञ्चदशश्लोकात्मकं पठेत् ॥ अथ रात्रिसूक्तम् ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ स्तौमि निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलतेजसः ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्राऽत्मिका स्थिता ॥२॥ अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ॥ त्वमेव सा त्वं सावित्री त्वं देवि जननी परा॥३॥त्वयै तद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्॥त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा॥४॥विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ तथा संहृतिरूपाऽन्ते जगतोऽस्य जगन्मये॥५॥महाविद्या महमाया महामेधा महास्मृतिः॥महामोहा भगवती महादेवी महासुरी॥६॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ ७ ॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्मोह लक्षणा ॥ लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ ८ ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणा भुशुण्डी परिघायुधा ॥ ९ ॥ सौम्या सौम्यतराऽशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमे

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

श्वरी १० ॥ यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया ॥ ११ ॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ १२ ॥ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ १३ ॥ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ १४ ॥ प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥१५॥ पाठादौ पञ्चदशश्लोकात्मकं रात्रिसूक्तं पठेत् ॥ इति दुर्गायाः प्रथमाध्यायोक्तं रात्रिसूक्तम् ॥ अथ वेदोक्तम् ॥ ॐ रात्री व्यख्य दायती पुरुत्रा दे १ व्या अक्षभिः विश्वाऽअधिश्रियोधित ॥ ओर्वप्रा अमर्त्या निवतो देव्यु १ द्वतः ॥ ज्योतिषा बाधते तमः ॥ निरु स्वसारमस्कृतोषसंदेव्यायती ॥ अपेदुहासतेतमः ॥ सानोअद्ययस्यावयंनितेयामन्नविक्ष्महि ॥ वृक्षेन वसतिं वयः ॥ निग्रामासो अविक्षतनिपद्वन्तोनिपक्षिणः ॥ निश्येनासश्चिदर्थिनः ॥ यावयावृक्यं १ वृकंयवयस्तेनमूर्म्यै ॥ अनाथः सुतरा भव ॥ उपमापेपि शत्तमःकृष्णंव्यक्तमस्थित ॥ उषऋणेवयातय ॥ उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः ॥ रात्रीस्तोमं न जिग्युषे ॥ आरात्रिपार्थिवं रजः पितरः सोमधामभिः ॥ दिवः सदांसि बृहती वितिष्ठस आत्वेषं वर्तते तमः ॥ ये ते रात्री नृक्षचसो युक्तासो नवतीर्नव ॥ अशीत संत्वष्टाऽउतो ते सप्तसप्ततीः ॥ रात्रीं प्रपद्ये जननीं सर्वभूतनिवेशनीम् ॥ भद्रां भगवतीं कृष्णां विश्वस्य जगतो दिशाम् ॥ संवेशनीं संयमनीं ग्रहनक्षत्रमालिनीम् ॥ प्रपन्नोऽहं शिवां रात्रीं भद्रे पारमशीमहि ॥ आदित्यवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोकिणीं चन्द्र सहस्रदीपिताम् ॥ देवीं कुमारीमृषिभिश्च पूजितां तां दुर्गमातां शरणं प्रपद्ये ॥ दुर्गेषु विषमे घोरे संग्रामे रिपुसंपुटे ॥ अग्निचौर निपातेषु सर्वग्रहनिवारणे ॥ दुर्गेषु विषमेषु त्वं संग्रामेषु वनेषु च ॥ नमस्कृत्य प्रपद्यन्ते तेषां नो अभयं कुरु ॥ क्षीरेण स्नापिता दुर्गा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

चन्दनेनानुलेपिता ॥ बिल्वपत्रकृतामाला नमो दुर्गे नमो नमः ॥ सर्वभूतपिशाचेभ्यः सर्वसर्पसरीसृपैः ॥ देवेभ्यो मानुषेभ्यश्चो भयेभ्यो माऽभिरक्षताम् ॥ इति वैदिकरात्रिसूक्तम् ॥ द्वयोर्मध्ये एकं पठनीयम् ॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ या कुन्देन्दु० ॥ १ ॥ नारायणं न० ॥ २ ॥ जयशब्दार्थश्च भविष्यपुराणे ॥ विष्णुधर्मादिशास्त्राणि शिवधर्माश्च भारत ॥ ३ ॥ कार्ष्णं च पञ्चमो वेदो यन्मया भारतं स्मृतम् ॥ श्रीरामधर्मा राजेन्द्र मानवोक्ता महीपते ॥ ४ ॥ जयेति नाम एतेषां प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ प्रणवमादितो जप्त्वा स्तोत्रं वा संहितां पठेत् ॥५॥ अश्वमेधः क्रतूनां च देवानां च यथा हरिः ॥ स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः ॥ ६ ॥ प्रथमचरित्रे ॥ प्रणवं पूर्वमुच्चार्य पराबीजं ततः परम् ॥ एतत्संपुटितं कुर्यान्नमोऽन्तं प्रथमं जपेत् ॥ ७ ॥ प्रणवं पूर्वमुच्चार्य बीजमन्ते समुच्चरेत् ॥ ततः श्लोकं पठित्वा तु श्लोकान्ते पूर्ववज्जपेत् ॥ ८ ॥ ॐ ह्सौं नमः ॥ अथ पराबीजलक्षणम् ॥ अनन्तं चन्द्रभुवन मिन्दुबिन्दुयुगान्वितम् ॥ पराबीजमिति ज्ञेयं नाल्पस्य तपसः फलम्॥९॥मार्कण्डेयपुराणे ॥ चन्द्रबीजं सुचन्द्राढ्यं ह्सौं बीजं चलं स्थितम् ॥ एतत्परापरं तत्त्वं येन सिध्येत्ततोत्तमम् ॥१०॥ चरिते चरिते राजन् जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम्॥शतमादौ शतं चान्ते विधानेन तु सुव्रत ॥११॥ बीजं विना महास्तोत्रं न सिध्यति कदाचन ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन बीजयुक्तं सदा पठेत् ॥१२॥ इति श्रीह०बृ०ध० उ० दुर्गोपासनाध्याये त्रिपञ्चाश शापोद्धारादिप्रकरणम्॥५३॥ॐ अस्य श्रीदुर्गायाः प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः ह्रीं श्रीमहाकाली देवताः ऐं नन्दजा शक्तिः ह्रीं रक्तदन्तिका बीजं रं अग्निस्तत्त्वं ऋग्वेदो ध्यानं श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम्॥त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता ॥ सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते ॥ १ ॥ योगनिद्रा हरे रुक्ता महाकाली तमोगुणा॥मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः ॥२॥ दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाऽञ्जनप्रभा ॥ विशालया राज



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

माना त्रिंशल्लोचनमालया॥३॥स्फुरद्दशनदंष्ट्राभा भीमरूपाऽपि भूमिप॥रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियाम् ॥ ४ ॥ खड्ग बाणगदाशूलशङ्खचक्रभुशुण्डिभृत् ॥ परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्चोतद्रुधिरं दधौ ॥५॥ एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया ॥ आराधिता वशीकुर्यात्पूजाकर्तुश्चराचरम् ॥ ६ ॥ इति ध्यात्वा ॥ ॐ ह्स्रौं नमः ॥ ॐ मार्कण्डेय उवाच ॥ मःनह्स्रौं ॐ ॥ एवं श्लोकविलोमेन प्रथमचरित्रे संपुटितं कार्यम् ॥ सूत उवाच ॥ तपस्यन्तं महात्मानं मार्कण्डेयं महामुनिम् ॥ व्यासशिष्यो महातेजा जैमिनिः पर्यपृच्छत ॥ १ ॥ जैमिनिरुवाच ॥ महर्षे कथयोत्पत्तिं चण्डिकायाः सविस्तरम् ॥ यया सर्वमिदं व्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ २ ॥ ( चित्र नं० २ )

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० ५ )

मार्कंडेय ऋषि क्रोष्टुकि ऋषि ❀ मार्कंडेय ऋषि जैमिनि ऋषि ❀



अश्वारूढः सुरथो वनंगच्छति. ❀ सुमेधऋषेराश्रमः




Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० ६ )

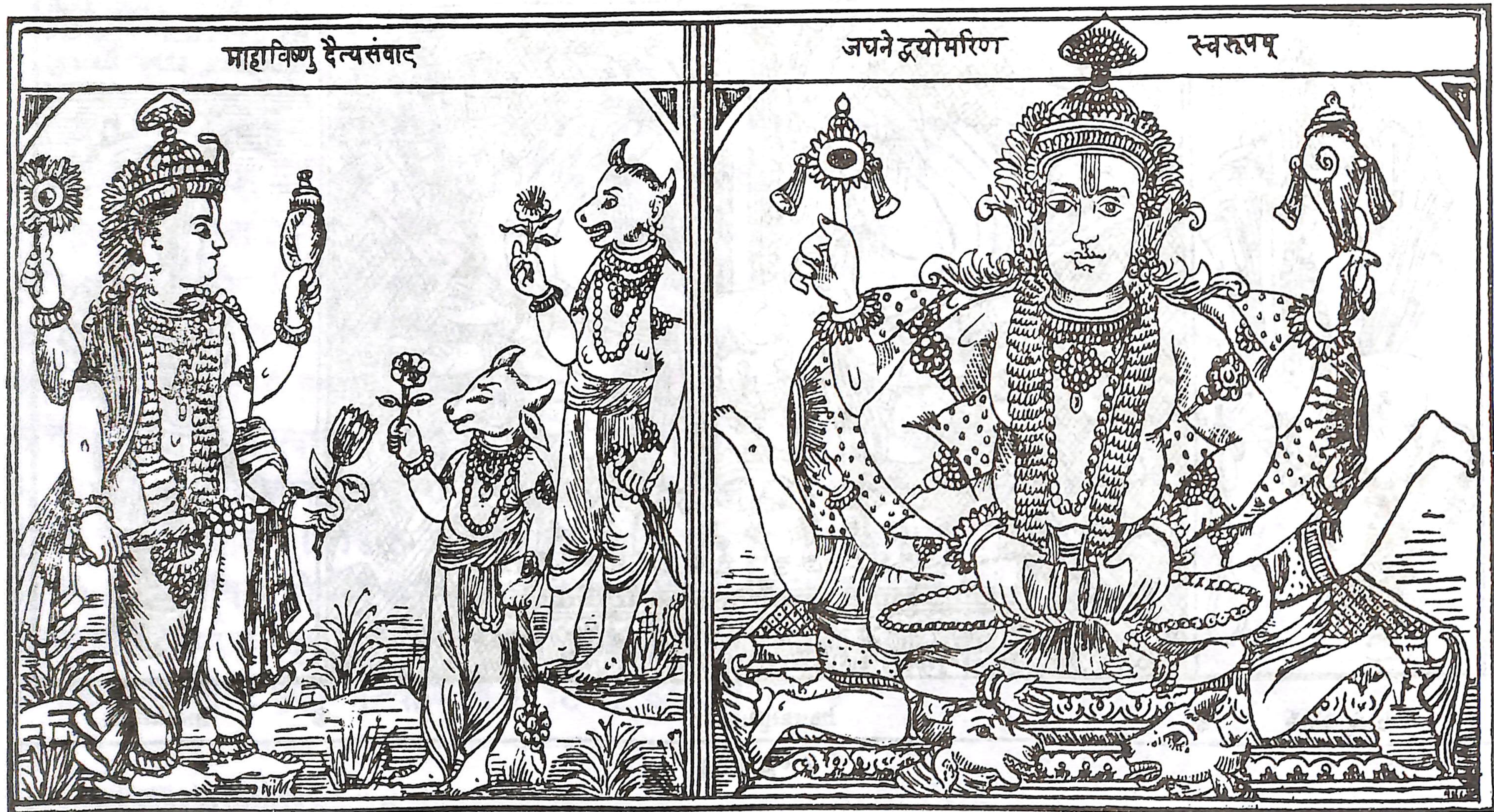
सुरथराज समाधि वैश्य संवादः  ❀विष्णुःशेषशायी भगवान् ब्रह्मदेवस्तुतिःमधुकैटभौ ब्रह्माणं हंतुमुद्यतौ.

सुरथराजा समाधि वैश्य सुमेधा ऋ.

विष्णुनासह मधुकैटभमहायुद्ध.

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० ७ )



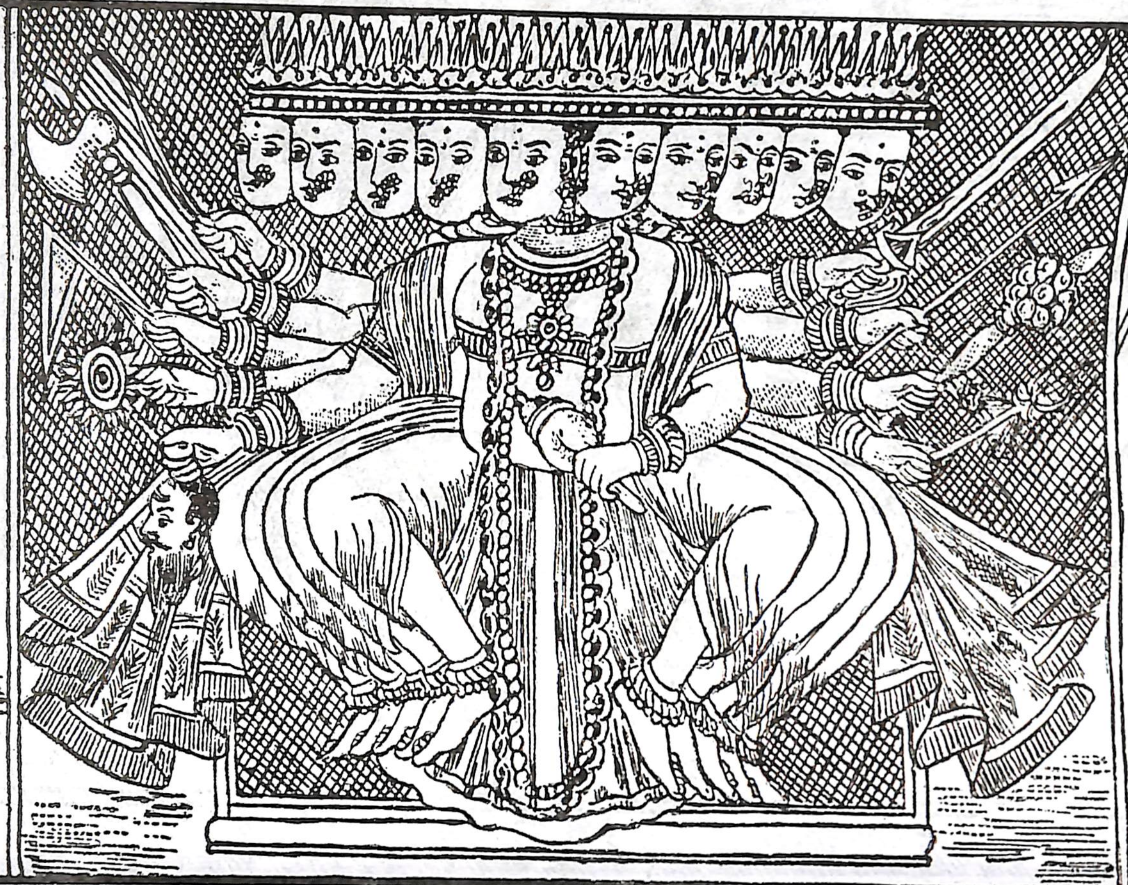

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० ८ )

कालस्वरूपम्  महाकालीस्वरूपम्  मृत्युस्वरूपम्



निमेषस्तु भवेदत्र मशकाभार्थ-
नीलहक् ॥ अक्षसूत्रं करे दक्षे
ज्ञानमुद्राम्पथोत्तरे ॥ दधानो यो-
गसंसिध्यै पूजनीयो विपश्चिता १





Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ मार्कण्डेय उवाच ॥१॥ ॐ सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः॥ निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद्गदतो मम ॥२॥ ॐ महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः ॥ स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ॥ ३ ॥ ॐ स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः ॥ सुरथो नाम राजाऽभूत्समस्ते क्षितिमण्डले ॥ ४ ॥ ॐ तस्य पालयतः सम्यक्प्रजाः पुत्रानिवौरसान् ॥ बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा ॥ ५ ॥ ॐ तस्य तैरभवद्युद्धमतिप्रबलदण्डिनः ॥ न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः ॥ ६ ॥ ॐ ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत् ॥ आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥ ७ ॥ ॐ अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः ॥ कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥ ८ ॥ ॐ ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः ॥ एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् ॥ ९ ॥ ॐ स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः ॥ प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् ॥ १० ॥ ॐ तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः ॥ इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे ॥ ११ ॥ ॐ सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः ॥ मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् ॥१२॥ ॐ मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा ॥ न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः ॥ १३ ॥ ॐ मम वैरिवशं यातः कान्भोगानुपलप्स्यते ॥ ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः ॥ १४ ॥ ॐ अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम् ॥ असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततंव्ययम् ॥ ॥ १५ ॥ ॐ संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति ॥ एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः ॥ १६ ॥ ॐ तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः ॥ स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः ॥१७॥ॐ सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे ॥ इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥ १८ ॥ ॐ प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम् ॥ १९ ॥ ॐ वैश्य

---

पाठान्तरम्–१ प्रणतोदितम् ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

उवाच ॥२०॥ ॐ समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥ २१ ॥ ॐ पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः ॥ विहीनः स्वजनै र्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम् ॥२२॥ ॐ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः ॥ सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम् ॥ ॥२३॥ॐ प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्रसंस्थितः॥ किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम्॥२४॥ॐ कथं ते किंनु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः ॥ २५ ॥ ॐ राजोवाच ॥ २६ ॥ ॐ यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः ॥ २७ ॥ ॐ तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम् ॥ २८ ॥ ॐ वैश्य उवाच ॥ २९ ॥ ॐ एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ॥३०॥ ॐ किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः ॥ यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ॥३१॥ ॐ पतिः स्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः ॥ किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥ ३४ ॥ ॐ यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु ॥ तेषां कृते मे निश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ॥ ३३ ॥ ॐ करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥ ३ ॥ ॐ मार्कण्डेय उवाच ॥ ३५ ॥ ॐ ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥ ३६ ॥ ॐ समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः ॥ कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संवि दम् ॥ ३७ ॥ ॐ उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥ ३८ ॥ ॐ राजोवाच ॥ ३९ ॥ ॐ भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छा म्येकं वदस्व तत् ॥ ४० ॥ ॐ दुःखाय यन्मे मनसः स्वचितायततां विना ॥ ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि ॥४१॥ ॐ जानतोऽपि यथाऽज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम ॥ अयं च निष्कृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ॥४२॥ ॐ स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाऽप्यति ॥ एवमेष तथाऽहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ॥ ४३ ॥ ॐ दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ ॥ तत्किमेत

---

पाठान्तरम्–१ तत्केनैत ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

न्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥ ४४ ॥ ॐ ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥ ४५ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ४६ ॥ ॐ ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ॥ ४७ ॥ ॐ विषयाश्च महाभाग यान्ति चैवं पृथक् पृथक् ॥ दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथाऽपरे ॥ ४८ ॥ ॐ केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः ॥ ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं नु ते न हि केवलम् ॥ ४९ ॥ ॐ यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ॥ ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥ ५० ॥ ॐ मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः ॥ ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान्पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥ ५१ ॥ ॐ कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा ॥ मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान्प्रति ॥ ५२ ॥ ॐ लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान्किं न पश्यसि ॥ तथाऽपि ममतावर्ते मोहगर्ते निपातिताः ॥ ५३ ॥ ॐ महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा[1] ॥ तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥ ५४ ॥ ॐ महामाया हरेश्चैषा[2] तया संमोह्यते जगत् ॥ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥ ५५ ॥ ॐ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ॥ ५६ ॥ ॐ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ॥ सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥ ५७ ॥ ॐ संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥५८॥ ॐ राजोवाच ॥ ५९ ॥ ॐ भगवन्का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥ ६० ॥ ॐ ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज ॥ यत्स्वभावा[3] च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ॥ ६१ ॥ ॐ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर ॥ ६२ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ६३ ॥ ॐ नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥ ६४ ॥ ॐ तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम ॥ देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमावि

---

पाठान्तरम्–१ कारिणः । २ श्चैतत्तया । ३ यत्प्रभावा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

भवति सा यदा ॥ ६५ ॥ ॐ उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याऽप्यभिधीयते ॥ योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥ ६६ ॥ ॐ आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान्प्रभुः ॥ तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ॥ ६७ ॥ ॐ विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ ॥ स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥ ६८ ॥ ॐ दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम् ॥ तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः ॥ ६९ ॥ ॐ विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम् ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ ७० ॥ ॐ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥७१॥ ॐ ब्रह्मोवाच ॥७२॥ ॐ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥ ७३ ॥ ॐ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ अर्धमात्रा स्थिता नित्या याऽनुच्चार्या विशेषतः ॥ ॥ ७४ ॥ ॐ त्वमेव सा त्वं सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥ त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥ ७५ ॥ ॐ त्वयैतत् पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥७६॥ ॐ तथा संहृतिरूपाऽन्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ ७७ ॥ ॐ महामोहा भगवती महादेवी महासुरी ॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ ७८ ॥ ॐ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥ ॥७९॥ ॐ लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ ८० ॥ ॐ शङ्खिनी चापिनी बाणा भुशुण्डी परिघायुधा ॥ सौम्या सौम्यतराऽशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥ ८१ ॥ ॐ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिके ॥ ८२ ॥ ॐ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ यया

---

पाठान्तरम्-१ च भवती।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पाताऽत्ति यो जगत् ॥ ८३ ॥ ॐ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ ८४ ॥ ॐ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ ॥ ८५ ॥ ॐ मोहयन्तौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ ८६ ॥ ॐ बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ ८७ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ८८ ॥ एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ ८९ ॥ विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ॥ नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥ ९० ॥ ॐ निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ॥ उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः ॥ ९१ ॥ ॐ एकार्णवे हि शयनात्ततः स ददृशे च तौ ॥ मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥ ९२ ॥ ॐ क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ ॥ समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ॥९३॥ ॐ पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः ॥ तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥९४॥ ॐ उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम् ॥ ९५ ॥ ॐ भगवानुवाच ॥ ९६ ॥ ॐ भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ॥ ९७ ॥ ॐ किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम ॥ ९८ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ९९ ॥ ॐ वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ॥१००॥ ॐ विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः ॥ आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥ १०१ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १०२ ॥ ॐ तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता ॥ कृत्वा चक्रेण वै छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥ १०३ ॥ ॐ एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् ॥ प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ॥ १०४ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधो

---

पाठान्तरम्--१ मोहयैतौ । २ वृतं मया । ३ प्रीतौ स्वस्तव युद्धेन श्लाघ्यस्त्वन्मृत्युरावयोः ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥ नमो देव्यै० ॥ साङ्गायै ॥ सपरिवारायै सवाहनायै वाग्भवबीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लोकाः ॥ ६६ ॥ अर्धश्लो० ॥२४ ॥ उवाच ॥ १४ ॥ श्लोकानामष्टसप्तत्या चतुर्भिरधिकं शतम् ॥ सृष्टिस्थितिविनाशानामित्यारभ्य त्वयि भक्तिनम्रा इत्यन्तं २२ श्लोकात्मकम्॥एकादशाध्यायोक्तं लक्ष्मीसूक्तं पठित्वा मध्यमचरित्रं पठेत् ॥ तत्सूक्तं पाठान्ते लिखितम् ॥ अस्य श्रीमध्यमचरित्रस्य अच्युतात्मा सुमेधा ऋषि उष्णिक् छन्दः श्रीमहालक्ष्मीर्देवता ह्रीं शाकम्भरी शक्तिः ह्स्रौं दुर्गा बीजं हं वायुस्तत्त्वं श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ह्रां इत्यादि करषडङ्गः ॥ ( चित्र नं० ३ )

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० ९ )

महिषासुरः राक्षससभा ❀ विष्णुः देवता स्तवन करते हैं ।



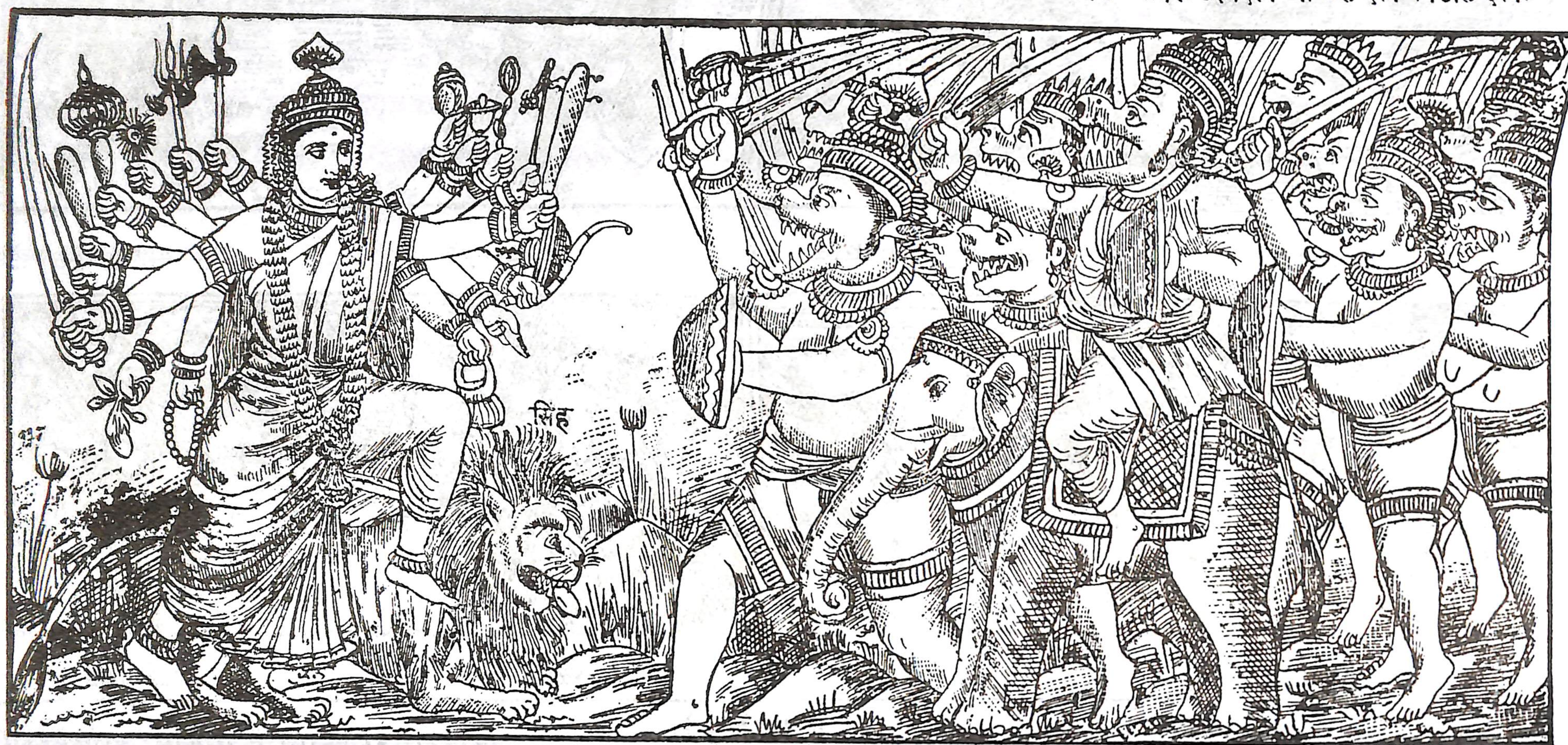
सर्वदेव तेजोमय अग्निज्वाला. देवीस्वरूपम् ❀ सहस्रभुजादेवी सिंहारूढा. महिषासुरसेना.



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० १० )

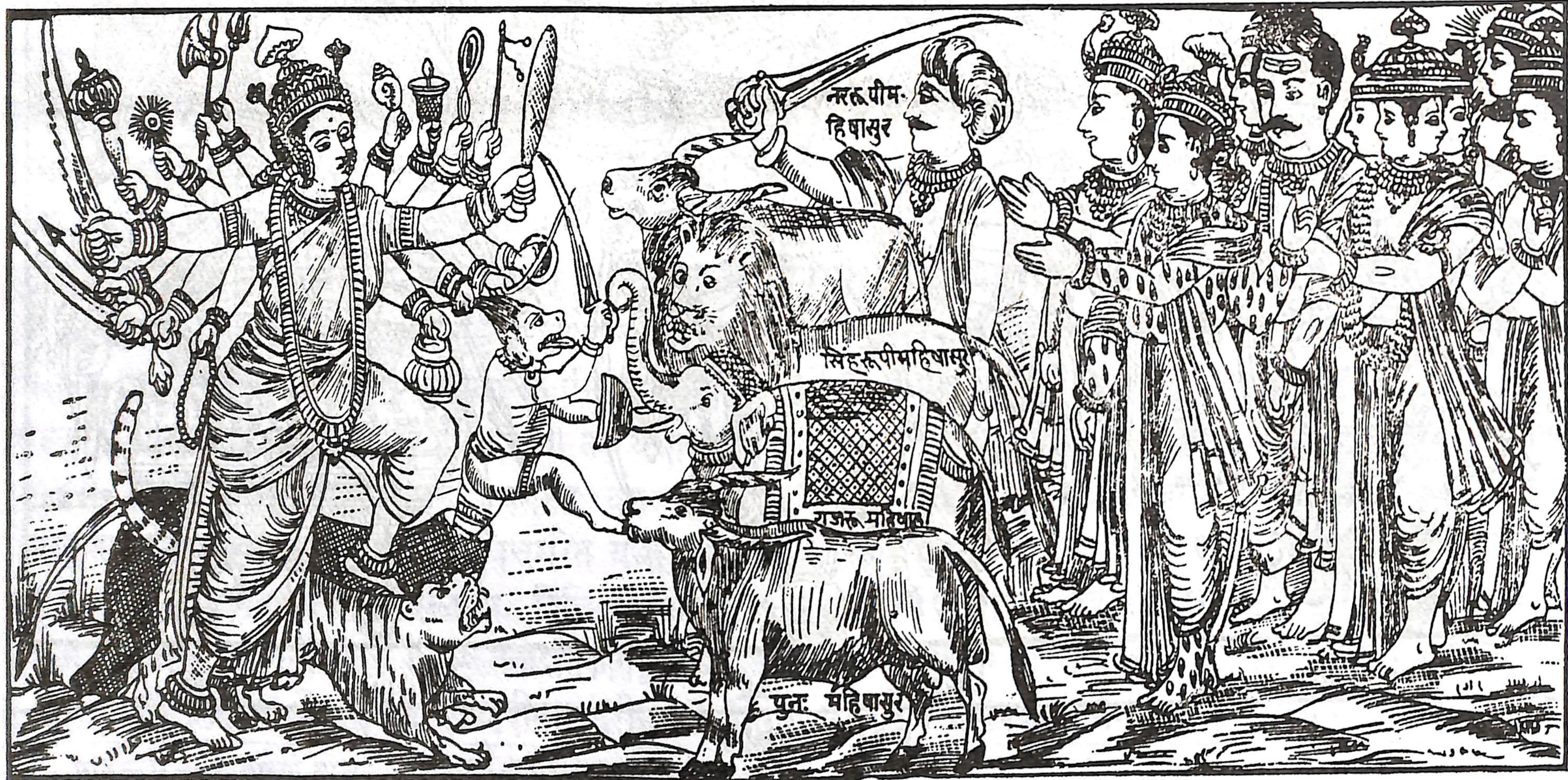
अष्टादशभुजादेवी. सेनापति. गजारूढः चामरः उदग्रदैत्यः बाष्कल दैत्यः बिडाल दैत्यः




Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० ११ )

महिषासुरमर्दिनीदेवी. खड्गपाणिपुरुषः इंद्रादिदेवताः स्तुतिंकुर्वन्ति



( चित्र नं० १२ )






Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अथ ध्यानम् ॥ सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूताऽमितप्रभा ॥ त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥ १ ॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला ॥ रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा ॥ २ ॥ सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा ॥ चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ ३ ॥ अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ॥ आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः करक्रमात् ॥ ४ ॥ अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा ॥ चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः ॥ ५ ॥ शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः ॥ अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ॥ ६ ॥ सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप ॥ पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत् ॥ ७ ॥ अन्यच्च ॥ अक्ष० ॥ इति ध्यात्वा ॥ प्रणवं पूर्वमुच्चार्य मायाबीजं ततः परम् ॥ एतत्संपुटितं कार्यं नमोऽन्तं मध्यमं जपेत् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ ऋषिरुवाच ॥ मः न ह्रीं ॐ ॥ एवं मध्यमचरित्रे सर्वत्र ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा ॥ महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरंदरे ॥ २ ॥ ॐ तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम् ॥ जित्वा च सकलान्देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥ ३ ॥ ॐ ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम् ॥ पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ४ ॥ ॐ यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम् ॥ त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम् ॥ ५ ॥ ॐ सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च ॥ अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ६ ॥ ॐ स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि ॥ विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥ ७ ॥ ॐ एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम् ॥ शरणं च प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ८ ॥ ॐ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः ॥ चकार कोपं शंभुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥ ९ ॥ ॐ ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः ॥ निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च ॥ ॥ १० ॥ ॐ अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ॥ निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥ ११ ॥ ॐ अतीव तेजसः कूटं

---

पाठान्तरम्-१ शरणं वः ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ज्वलन्तमिव पर्वतम् ॥ ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् ॥ १२ ॥ ॐ अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम् ॥ एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥ १३ ॥ ॐ यदभूच्छांभवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम् ॥ याम्येन चाभवन्केशा बाहवो विष्णु तेजसा ॥ १४ ॥ ॐ सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् ॥ वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः ॥ १५ ॥ ॐ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदंगुल्योऽर्कतेजसा ॥ वसूनां च करांगुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥ १६ ॥ ॐ तस्यास्तु दन्ताः संभूताः प्राजापत्येन तेजसा ॥ नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा ॥ १७ ॥ ॐ भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च ॥ अन्येषां चैव देवानां संभवस्तेजसां शिवा ॥ १८ ॥ ॐ ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम् ॥ तां विलोक्य मुदं प्रापु रमरा महिषार्दिताः ॥ १९ ॥ ॐ शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक् ॥ चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः ॥ ॥ २० ॥ ॐ शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः ॥ मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥ २१ ॥ ॐ वज्रमिन्द्रः समु त्पाट्य कुलिशादमराधिपः ॥ ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद्गजात ॥ २२ ॥ ॐ कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ ॥ प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥ २३ ॥ ॐ समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन्दिवाकरः ॥ कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम् ॥२४॥ ॐ क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाऽम्बरे ॥ चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानिच ॥२५॥ ॐ अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान्सर्वबाहुषु ॥ नूपुरौ विमलौ तद्वद्ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥ २६ ॥ ॐ अंगुलीयकरत्नानि समस्तास्वंगुलीषु च ॥ विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ॥ २७ ॥ ॐ अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाऽभेद्यं च दंशनम् ॥ अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥ २८ ॥ ॐ अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम् ॥ हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥ २९ ॥ ॐ ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः ॥ शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् ॥ ३० ॥ ॐ नागहारं ददौ तस्य धत्ते यः पृथिवीमिमाम् ॥ अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा ॥ ३१ ॥ ॐ संमानिता ननादोच्चैः साट्टहासं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मुहुर्मुहुः ॥ तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥ ३२ ॥ ॐ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत् ॥ चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥ ३३ ॥ ॐ चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः ॥ जयेति च मुदा देवास्तामूचुः सिंह वाहिनीम् ॥ ३४ ॥ ॐ तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः ॥ दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥ ३५ ॥ ॐ सन्नद्धा खिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः ॥ आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥ ३६ ॥ ॐ अभ्यधावत तं शब्द मशेषैरसुरैर्वृतः ॥ स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयीं त्विषा ॥ ३७ ॥ ॐ पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिता म्बराम् ॥ क्षोभिता शेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम् ॥३८॥ ॐ दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद्व्याप्य संस्थिताम् ॥ ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् ॥ ३९ ॥ ॐ शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम् ॥ महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥ ४० ॥ ॐ युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः ॥ रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥ ४१ ॥ ॐ अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः ॥ पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥ ४२ ॥ ॐ अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे ॥ गजवाजि सहस्रौघैरनेकैः परिवारितः ॥ ४३ ॥ ॐ वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत ॥ बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथा युतैः ॥४४॥ ॐ युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः॥ अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः॥ ४५ ॥ ॐ युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः ॥ कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥४६॥ॐ हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः ॥ तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥ ४७ ॥ ॐ युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः ॥ केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथाऽपरे ॥४८॥ ॐ देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः ॥ साऽपि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥४९॥ॐ लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी ॥ अनायस्ताननना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः ॥ ५० ॥ ॐ मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी ॥

पाठान्तरम्--१ जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः । २ लोकत्रयम् ।

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी ॥ ५१ ॥ ॐ चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः ॥ निःश्वासान्मुमुचे यांश्च युध्य माना रणेऽम्बिका ॥५२॥ ॐ त एव सद्यः संभूता गणाः शतसहस्रशः ॥ युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ॥ ५३ ॥ ॐ नाशयन्तोऽसुरगणान्देवीशक्त्युपबृंहिताः ॥ अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथाऽपरे ॥ ५४ ॥ ॐ मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे ॥ ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ॥ ५५ ॥ खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान् ॥ पातयामास चैवान्यान्घण्टास्वनविमोहितान् ॥५६॥ ॐ असुरान्भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत ॥ केचिद्द्विधाकृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथाऽपरे ॥ ५७ ॥ ॐ विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते ॥ वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥ ५८ ॥ ॐ केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि ॥ निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥ ५९ ॥ ॐ सेनानुकारिणः प्राणान्मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः ॥ केषांचिद्बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथाऽपरे ॥ ६० ॥ ॐ शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः ॥ विच्छिन्नजंघास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥ ६१ ॥ ॐ एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधाकृताः ॥ छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ॥ ॥६२॥ ॐ कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः ॥ ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥६३॥ ॐ कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः ॥ तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥ ६४ ॥ ॐ पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुंधरा ॥ अगम्या साऽभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः ॥ ६५ ॥ ॐ शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः ॥ मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥ ६६ ॥ ॐ क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका ॥ निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥ ६७ ॥ ॐ स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेशरः ॥ शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥६८॥ ॐ देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं तथाऽसुरैः ॥ यथैषां तुष्टुवुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥ ६९ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरसैन्य

---

पाठान्तरम्--१ विसुस्रुवुः ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ नमो देव्यै० ॥ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लो० ॥ ६८ ॥ अर्ध० ॥ उवाच ॥ १ ॥ एकोनसप्ततिः सर्वेऽध्याये मन्त्रा द्वितीयके ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः ॥ सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ॥ २ ॥ ॐ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः ॥ यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः ॥ ३ ॥ ॐ तस्य च्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान् ॥ जघान तुरगान्बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥ ४ ॥ ॐ चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम् ॥ विव्याध चैव गात्रेषु च्छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥ ५ ॥ ॐ स च्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः ॥ अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ॥ ६ ॥ ॐ सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि ॥ आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥ ७ ॥ ॐ तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन ॥ ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः ॥ ८ ॥ ॐ चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः ॥ जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ॥ ९ ॥ ॐ दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत ॥ तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः ॥ १० ॥ ॐ हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ ॥ आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥ ११ ॥ ॐ सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम् ॥ हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥ १२ ॥ ॐ भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः ॥ चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साऽच्छिनत् ॥१३॥ ॐ ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरस्थितः ॥ बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥ १४ ॥ ॐ युध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ ॥ युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ॥ १५ ॥ ॐ ततो वेगात्खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा ॥ करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक् कृतम् ॥१६॥ ॐ उदग्रश्चरणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः ॥ दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥ १७ ॥ ॐ देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम् ॥ बाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथाऽन्धकम् ॥ १८ ॥ ॐ उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम् ॥ त्रिनेत्रा च त्रिशू

पाठान्तरम्--१ भिण्डिपालेन ।

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

लेन जघान परमेश्वरी ॥ १९ ॥ ॐ बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः ॥ दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥२०॥ ॐ एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः ॥ महिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान् ॥२१॥ ॐ कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपै स्तथाऽपरान् ॥ लाङ्गूलताडितांश्चान्यान् शृङ्गाभ्यां च विदारिताम् ॥ २२ ॥ ॐ वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च ॥ निःश्वास पवनेनान्यान्पातयामास ॥भूतले ॥ २३ ॥ ॐ निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः ॥ सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततो ऽम्बिका ॥ २४ ॥ ॐ सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः ॥ शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च ॥ २५ ॥ ॐ वेग भ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत ॥ लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयायास सर्वतः ॥ २६ ॥ ॐ धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः ॥ श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥ २७ ॥ ॐ इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्॥दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाऽकरोत् ॥ २८ ॥ ॐ सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम् ॥ तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महा मृधे ॥ २९ ॥ ॐ ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः ॥ छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत ॥ ३० ॥ तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः ॥ तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः ॥ ३१ ॥ ॐ करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च ॥ कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत ॥३२॥ ॐ ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः॥तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम्॥ ॥३३॥ ॐ ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम् ॥ पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना ॥ ३४ ॥ ॐ ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः ॥ विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥ ३५ ॥ ॐ सा च तान्प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्क रैः ॥ उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम् ॥ ३६ ॥ ॐ देव्युवाच ॥ ३७ ॥ गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम् ॥ मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥ ३८ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ३९ ॥ ॐ एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम् ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ॥ ४० ॥ ॐ ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः ॥ अर्धनिष्क्रान्त एवासी द्देव्या वीर्येण संवृतः ॥ ४१ ॥ ॐ अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः ॥ तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥ ४२ ॥ ॐ ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश यत् ॥ प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ॥ ४३ ॥ ॐ तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः ॥ जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ४४ ॥ २१७ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ नमो देव्यै० ॥ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै अष्टविंशतिवर्णा त्मिकायै महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लो० ४१ अर्ध० उवाच ३ ॥ चतुश्चत्वारिंशदेवं सर्वे मन्त्रास्तृतीयके ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ॥ तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्र शिरोधरांसा वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥ ॐ देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ॥ तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ ३ ॥ ॐ यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ॥ सा चण्डिकाऽखिलजगत्परिपालनाय नाशाय चासुरभयस्य मतिं करोतु ॥ ४ ॥ ॐ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेषु लक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ॥ श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ ५ ॥ ॐ किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत् किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ॥ किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ६ ॥ ॐ हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषैर्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ॥ सर्वाश्रयाऽखिलमिदं जगदंशभूतमव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥ ॐ यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ॥ स्वाहाऽसि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतुरुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥ ८ ॥ ॐ या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहा

पाठान्तरम्- १ एवातिदेव्या । २ तत् । ३ तवातियाति ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

व्रता त्वमभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः ॥ मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषैर्विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि ॥ ९ ॥ ॐ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानमुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् ॥ देवि त्रयी भगवती भवभावनाय वार्ताऽसि सर्वं जगतां परमार्तिहन्त्री ॥ १० ॥ ॐ मेधाऽसि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ॥ श्रीः कैटभारिहृद यैककृताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥ ११ ॥ ॐ ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्रबिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्ति कान्तम् ॥ अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथाऽपि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥ १२ ॥ ॐ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः ॥ प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥ १३ ॥ ॐ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि ॥ विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥ ॥ १४ ॥ ॐ ते संमता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ॥ धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा येषां सदाऽभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ १५ ॥ ॐ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्याहृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ॥ स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ १६ ॥ ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि ॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥ १७ ॥ ॐ एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ॥ संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति नूनमहितान्विनिहंसि देवि ॥ १८ ॥ ॐ दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ॥ लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता इत्थं मति र्भवति तेष्वहितेषु साध्वी ॥ १९ ॥ ॐ खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ॥ यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डयोग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥ २० ॥ ॐ दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्य

पाठान्तरम्-१ वार्त्ता च। २ बन्धुवर्गः।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मन्यैः ॥ वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥ २१ ॥ ॐ केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥ २२ ॥ ॐ त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ॥ नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥ २३ ॥ ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥ २४ ॥ ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २५ ॥ ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ २६ ॥ ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वशः[1] ॥ २७ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ २८ ॥ ॐ एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः ॥ आर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः ॥ २९ ॥ ॐ भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैः सुधूपिता ॥ प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान्प्रणतान्सुरान् ॥ ३० ॥ ॐ देव्युवाच ॥ ३१ ॥ ॐ व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवांछितम् ॥ ददाम्यहमतिप्रीत्या स्तवैरेभिः सुपूजिता ॥ ३२ ॥ ॐ देवा ऊचुः ॥ ३३ ॥ ॐ भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते ॥ ३४ ॥ ॐ यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ॥ यदि चापि वरो देयस्त्वयाऽस्माकं महेश्वरि ॥ ३५ ॥ ॐ संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ॥ यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥ ३६ ॥ ॐ तस्य वित्तर्धिविभवैर्धनदारादिसंपदाम् ॥ वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना[2] त्वं भवेथाः सर्वदाऽम्बिके ॥ ३७ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ३८ ॥ ॐ इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः ॥ तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ॥ ३९ ॥ ॐ इत्येतत्कथितं भूप संभूता सा यथा पुरा ॥ देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥ ४० ॥ ॐ पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाऽभवत् ॥ वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ४१ ॥ ॐ रक्षणाय च लोकानां देवानामुप

पाठान्तरम्-१ सर्वतः। २ अस्मत्प्रपन्ना।



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

कारिणी ॥ तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते ॥ ४२ ॥ २५९ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ नमो देव्यै० साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै त्रिवर्णात्मिकायै शक्तिलक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लो० ॥३६॥ अर्ध ॥१॥ उवाच ॥५॥ नेत्रवेदाहुतिप्रोक्तेऽध्याये मन्त्राश्चतुर्थके ॥ ॐ अस्य श्रीउत्तमचरित्रस्य शिवात्मा भगवान् सुमेधा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः ह्रीं महासरस्वती देवता क्लीं भीमा शक्तिः क्लीं भ्रामरी बीजं यं सूर्यस्तत्त्वं श्रीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॐ क्रामित्यादिकरषडङ्गः ॥ अथ ध्यानम् ॥ गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया ॥ साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ १ ॥ दधौ चाष्टभुजा बाणान् मुसलं शूलचक्रभृत् ॥ शङ्खं घण्टां लांगलं च कार्मुकं वसुधाधिप ॥ २ ॥ एषा संपूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति ॥ निशुम्भमथनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ ३ ॥ अन्यच्च-घण्टा० ॥ ४ ॥ इति ध्यात्वा ॥ ( चित्र नं० ४ )

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० १३ )

शुंभः निशुंभः दैत्यसभा. ❀ देवी. इन्द्रादिदेवाः सर्वेस्तुवन्ति



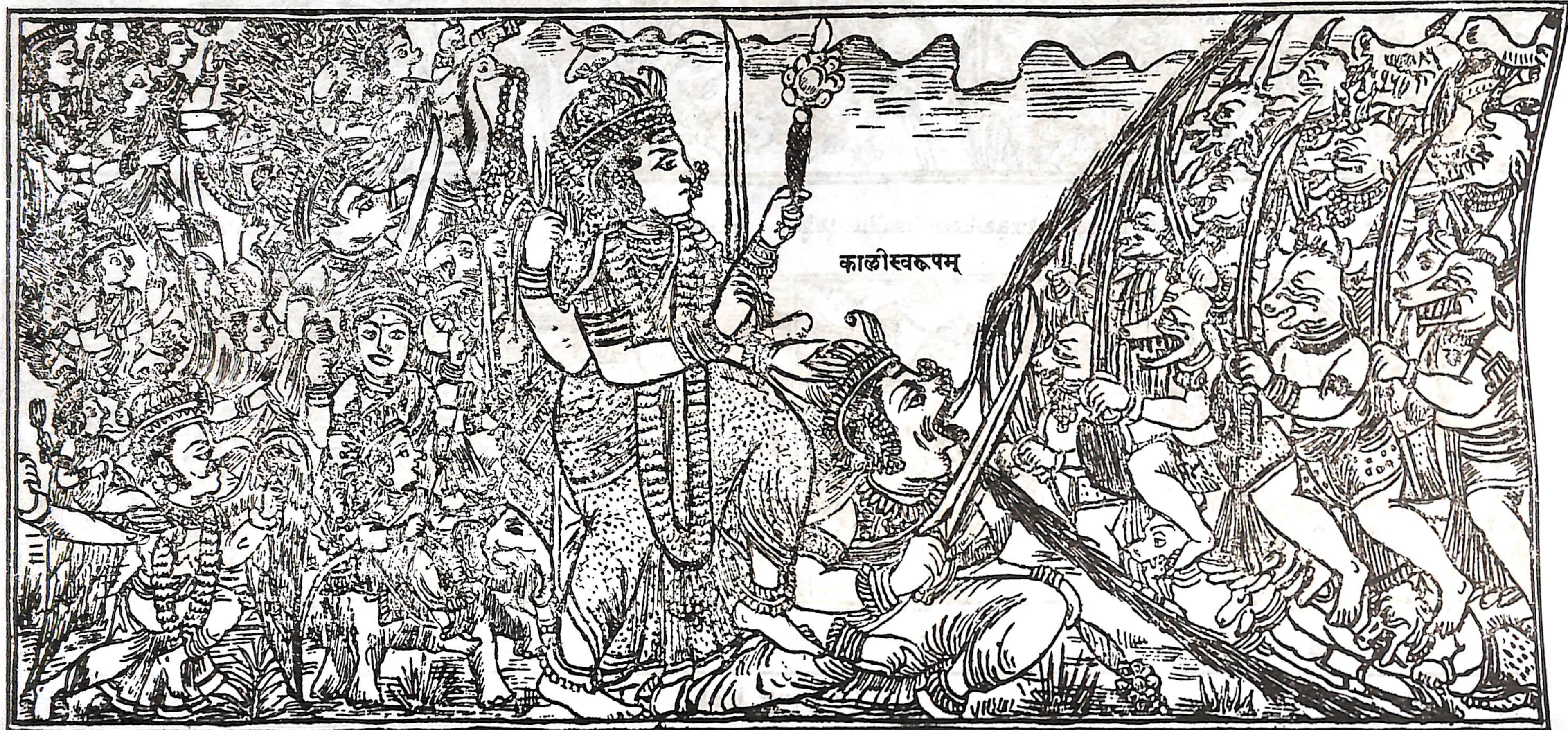

देवी. चण्ड मुण्ड दूत. ❀ देवी. धूम्रलोचन सैन्यम् ❀देवी चामुण्डा. चण्डमुण्डसेनाहस्ती,अश्व,रथ ❀ चण्डिकादवी. शुंभनिशुंभ सन्य



Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० १४ )

श्री सेना. ब्रह्माणी,पार्वती, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नरसिंही,ऐन्द्री, चण्डिकास्वरूपम् दैत्य सैन्यम्




Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० १५ )

महासरस्वती. शुंभ निशुंभयुद्धम्



नारयणी स्तुति. ❀ समाधिवैश्य सुरथराजा. देवी.



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० १६ )




Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

प्रणवं पूर्वमुच्चार्य कामबीजं ततः परम् ॥ एतत्संपुटितं कार्यं नमोऽन्तमुत्तरं जपेत् ॥ १ ॥ क्लीं नमः ॐ ऋषिरुवाच मः नक्लीं ॐ ॥ एवं सर्वत्र संपुटितम् ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः ॥ त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥ २ ॥ ॐ तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम् ॥ कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥ ३ ॥ ॐ तावेव पवनर्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च ॥ ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥ ४ ॥ ॐ हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः ॥ महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥५॥ ॐ तयाऽस्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताऽखिलाः ॥ भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥ ६ ॥ ॐ इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् ॥ जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥ ७ ॥ ॐ देवा ऊचुः ॥ ८ ॥ ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ९ ॥ ॐ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ॥ ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ १० ॥ ॐ कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै[1] नमो नमः ॥ नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ११ ॥ ॐ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ॥ ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ १२ ॥ ॐ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ॥ नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥१३॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ॥ नमस्तस्यै ॥ १४ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ १५ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १६ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ॥ नमस्तस्यै ॥ १७ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥१८॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १९ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥२०॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ २१ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २२ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ २३ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ २४ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥२६ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥२७॥ ॐ नमस्तस्यै

पाठान्तरम्—१ कूर्मैः ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नमो नमः ॥२८॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ २९ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ३० ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३१ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ३२ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ३३ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३४ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ३५ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ३६ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३७ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ३८ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ३९ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४० ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४१ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ४२ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४३ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४४ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ४५ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४६ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४७ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ४८ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४९ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण ॥ संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५० ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ५१ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥५२॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५३ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥५४॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥५५॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५६ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ५७॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५८ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५९ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ६० ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६१ ॥ ॐ या देवी सर्वभतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥६२॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ६३ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६४ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥६५॥ ॐ नमस्तस्यै ॥६६॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६७ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६८ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ६९ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥७०॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता॥ नमस्तस्यै ॥ ७१ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ७२ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७३ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ७४ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ७५ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७६ ॥ ॐ इन्द्रि

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

याणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ॥ भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ॥७७॥ ॐ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् ॥ नमस्तस्यै ॥ ७८ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ७९ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८० ॥ ॐ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट संश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ ८१ ॥ ॐ या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्नाभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ८२॥ ॐऋषिरुवाच ॥ ८३ ॥ ॐ एवं स्तवाभियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती ॥ स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥ ८४ ॥ ॐ साऽब्रवीत्तान्सुरान्सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ॥ शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताऽब्रवीच्छिवा ॥ ८५ ॥ ॐ स्तोत्रं ममैतत्क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः ॥ देवैः समस्तैः समरे निशुम्भेन पराजितैः ॥८६॥ ॐ शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताऽम्बिका ॥ कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥८७॥ ॐ तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाऽभूत्साऽपि पार्वती ॥ कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥ ॥ ८८ ॥ ॐ ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम् ॥ ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ८९ ॥ ॐ ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा ॥ काऽप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥ ९० ॥ ॐ नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम् ॥ ज्ञायतां काऽप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ॥ ९१ ॥ ॐ स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा॥सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति ॥९२॥ ॐ यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो ॥ त्रैलोक्ये तु समस्तानि सांप्रतं भ्रांति ते गृहे ॥९३॥ ॐ ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात् ॥ पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥ ९४ ॥ ॐ विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे ॥ रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् ॥ ९५ ॥ ॐ निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ॥ किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम् ॥ ९६ ॥ ॐ छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति ॥ तथाऽयं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः ॥९७॥ ॐ मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वयाऽहृता ॥ पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥ ९८ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः ॥ वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥ ९९ ॐ एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते ॥ स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥ १०० ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः ॥ प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥ २ ॥ ॐ इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम ॥ यथा चाभ्येति संप्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥ ३ ॥ ॐ स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने ॥ सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥४॥ ॐ दूत उवाच ॥५॥ ॐ देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः ॥ दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः ॥ ॥ ६ ॥ ॐ अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु ॥ निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥७॥ ॐ मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः ॥ यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ॥ ८ ॥ ॐ त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः ॥ तथैव गजरत्नं च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम् ॥ ९ ॥ ॐ क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः ॥ उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम् ॥ ११०॥ ॐ यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च ॥ रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥ ११ ॥ ॐ स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम् ॥ सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ॥ १२ ॥ ॐ मां वा ममानुजं वाऽपि निशुम्भमुरुविक्रमम् ॥ भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूताऽसि वै यतः ॥ १३ ॥ ॐ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात् ॥ एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज ॥ १४ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १५ ॥ ॐ इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ ॥ दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥ १६ ॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥ १७॥ ॐ सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम् ॥ त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥ १८ ॥ ॐ किंत्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम् ॥ श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥ १९ ॥ ॐ यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति ॥ यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥ १२० ॥ ॐ तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः ॥ मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

लघु ॥२१॥ ॐ दूत उवाच ॥२२॥ ॐ अवलिप्ताऽसि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः॥ त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ॥ २३ ॥ ॐ अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि ॥ तिष्ठंति संमुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥ २४ ॥ ॐ इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे ॥ शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि संमुखम् ॥ २५ ॥ ॐ सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि ॥ २६ ॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥ २७ ॥ ॐ एवमेतद्बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान् ॥ किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ॥ २८ ॥ ॐ स त्वं गच्छ मयैवोक्तं यदेतत्सर्वमादृतः ॥ तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु यत् ॥१२९॥ ३८८॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देवी दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ नमो देव्यै० साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै विष्णुमायादित्रयोविंशति देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लोकाः ७६ अर्धः उवाच ९ ॥ ॐ षट्सप्ततिश्लोकयुक्तेऽध्याये मन्त्रास्तु पञ्चमे ॥ एकोन त्रिंशदधिकं शतं कात्यायनीमते ॥ १ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः ॥ समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥ २ ॥ ॐ तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः ॥ सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्र लोचनम् ॥ ३॥ ॐ हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः ॥ तामानय बलाद्दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥४॥ ॐ तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः ॥ स हन्तव्योऽमरो वाऽपि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥ ५ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ६ ॥ ॐ तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः ॥ वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ॥ ७ ॥ ॐ स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम् ॥ जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ८ ॥ ॐ न चेत्प्रीत्याऽद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति ॥ ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ९ ॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥ १० ॥ ॐ दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान्बलसंवृतः ॥ बलान्नयसि मामेवं ततः

---

पाठान्तरम्--१ एव च । २ हिमाचल० ।

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

किं ते करोम्यहम् ॥ ११ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १२ ॥ ॐ इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः ॥ हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः ॥ १३ ॐ अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका ॥ ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः ॥ १४ ॥ ॐ ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम् ॥ पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥ १५ ॥ ॐ कांश्चित्कर प्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् ॥ आक्रान्त्या चाधरेणान्यान्स जघान महासुरान् ॥ ॥ १६ ॥ ॐ केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी ॥ तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान्पृथक् ॥ १७ ॥ ॐ विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथाऽपरे ॥ पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः ॥ १८ ॥ ॐ क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना ॥ तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ॥ १९ ॥ ॐश्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम् ॥ बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः ॥ २० ॥ ॐ चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः ॥ आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥ २१ ॥ ॐ हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ ॥ तत्र¹ गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥ २२ ॥ ॐ केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि ॥ तदाऽशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥२३॥ ॐ तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते ॥ शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॥२४॥ ४१२ ॥ इति श्रीमार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये धूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ नमो देव्यै० साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै शताक्ष्यै धूम्राक्ष्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लोकाः ॥२०॥ उवाच ॥ ४ ॥ चतुर्विंशतिमन्त्राणामित्येवं परिकीर्तितम् ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः ॥ चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥ २ ॥ ॐ ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम् ॥ सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥ ३ ॥ ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः ॥ आकृष्टचापासिधरास्तथाऽन्ये तत्समीपगाः ॥ ४ ॥ ॐ ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन्प्रति ॥ कोपेन चास्या

---

पाठान्तरम्--१ गच्छ त्वं तत्र गत्वा च ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वदनं मषीवर्णमभूत्तदा ॥ ५ ॥ ॐ भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम् ॥ काली करालवदना विनिष्क्रान्ताऽसिपाशिनी ॥ ६ ॥ ॐ विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा ॥ द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसाऽतिभैरवा ॥ ७ ॥ ॐ अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा ॥ निमग्ना रक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा ॥ ८ ॥ ॐ सा वेगेनातिपतिता घातयन्ती महासुरान् ॥ सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम् ॥ ९ ॥ ॐ पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान् ॥ समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥ १० ॥ ॐ तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह ॥ निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम् ॥ ११ ॥ ॐ एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम् ॥ पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसाऽन्यमपोथयत् ॥ १२ ॥ ॐ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथाऽसुरैः ॥ मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ॥ १३ ॥ ॐ बलिनां तद्बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम् ॥ ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा ॥ १४ ॥ ॐ असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः ॥ जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा ॥१५॥ ॐ क्षणेन तद्बलं सर्वमसुराणां निपातितम् ॥ दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥ १६ ॥ ॐ शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः ॥ छादयामास चक्रैश्च मुण्डक्षिप्तैः सहस्रशः ॥ १७ ॥ ॐ तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम् ॥ बभुर्यथाऽर्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् ॥ १८ ॥ ॐ ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी ॥ काली करालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ॥ १९ ॥ ॐ उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत ॥ गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाऽच्छिनत ॥ २० ॥ ॐ अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् ॥ तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा ॥२१॥ ॐ हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् ॥ मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥ २२ ॥ ॐ शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च ॥ प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् ॥ २३ ॥ ॐ मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू ॥ युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि ॥ २४ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ २५ ॥

---

पाठान्तरम्-१ नाभिपतिता । २ दंष्ट्राग्राभिहता रुषा । ३ खट्वाङ्गाभिहतं रुषा ।

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥ उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः ॥२६॥ ॐ यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता ॥ चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ॥ २७ ॥ ४३९ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी० चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ नमो देव्यै० ॥ साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै कालीचामुण्डादेव्यै महाहुतिं सम० ॥ श्लो० २९ उवाच २ ॥ सप्तविंशतिरेवं च मन्त्रसंख्या प्रकीर्तिता ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ॥ १ ॥ ॐ चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते ॥ बाहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥ २ ॥ ॐ ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान् ॥ उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ॥ ३ ॥ ॐ अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः ॥ कम्बूनां चतुरशीति निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ॥ ४ ॥ ॐ कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै ॥ शतं कुलानि धूम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥ ५ ॥ ॐ कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथाऽसुराः ॥ युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥ ६ ॥ ॐ इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः ॥ निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥ ७ ॥ ॐ आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् ॥ ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ॥ ८ ॥ ॐ ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान्नृप ॥ घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत् ॥ ॥ ९ ॥ ॐ धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा ॥ निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ॥ १० ॥ ॐ तन्निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् ॥ देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ॥ ११ ॥ ॐ एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् ॥ भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥ १२ ॥ ॐ ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः ॥ शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥१३॥ ॐ यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषणवाहनम् ॥ तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान्योद्धुमाययौ ॥ १४ ॥ ॐ हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः ॥ आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणीत्यभिधीयते ॥ १५ ॥ ॐ माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी ॥ महाहिवलया प्राप्ता चन्द्र

पाठान्तरम्--१अपराः । २ साऽभिधीयते ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

रेखाविभूषणा ॥१६॥ ॐ कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ॥ योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी ॥१७॥ ॐ तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता ॥ शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताऽभ्युपाययौ ॥ १८ ॥ ॐ यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः॥ शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् ॥ १९ ॥ ॐ नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः॥ प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्र संहतिः ॥ २० ॥ वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता ॥ प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥ २१ ॥ ॐ ततः परिवृत स्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः ॥ हन्यन्तामसुराः शीघ्रं ममप्रीत्याऽऽह चण्डिकाम् ॥ २२ ॥ ॐ ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्ताऽति भीषणा ॥ चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी ॥ २३ ॥ ॐ सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता ॥ दूतत्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ २४ ॥ ॐ ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ ॥ ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥ ॥ २५ ॥ ॐ त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः ॥ यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥ २६ ॥ ॐ बलावलेपा दथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः ॥ तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥ २७ ॥ ॐ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम् ॥ शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता ॥ २८ ॥ ॐ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः ॥ अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता ॥ २९ ॥ ॐ ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः ॥ ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरा रयः ॥ ३० ॥ ॐ सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलचक्रपरश्वधान् ॥ चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥ ३१ ॥ ॐ तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान् ॥ खट्वाङ्गपोथितांश्चान्यान्कुर्वती व्यचरत्तदा ॥ ३२ ॥ ॐ कमण्डलुजलाक्षेपहत वीर्यान्हतौजसः ॥ ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून्येन येन स्म धावति ॥ ३३ ॥ ॐ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी ॥ दैत्यान् जघान कौमारी तथा शक्त्याऽतिकोपना ॥ ३४ ॥ ॐ ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः ॥ पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघ प्रवर्षिणः ॥ ३५ ॥ ॐ तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः॥ वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ॥ ३६ ॥ ॐ नखैर्विदारितां

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

श्चान्यान्भक्षयन्ती महासुरान् ॥ नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा[1] ॥ ३७ ॥ ॐ चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः ॥ पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा ॥ ३८ ॥ ॐ इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान् ॥ दृष्ट्वाऽभ्युपायैर्विविधैर्नेशु र्देवारिसैनिकाः ॥ ३९ ॥ ॐ पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान्मातृगणार्दितान् ॥ योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः ॥ ४० ॥ ॐ रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः ॥ समुत्पतति मेदिन्यास्तत्प्रमाणस्तदा[2]ऽसुरः ॥ ४१ ॥ ॐ युयुधे स गदापाणिरिन्द्र शक्त्या महासुरः ॥ ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ॥४२॥ ॐ कुलिशेनाहतस्याशु तस्य सुस्राव शोणितम् ॥ समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥ ४३ ॥ ॐ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः ॥ तावन्तः पुरुषाजातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥ ॥ ४४ ॥ ॐ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसंभवाः ॥ समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम् ॥ ४५ ॥ ॐ पुनश्च[3] वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा ॥ ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः[4] सहस्रशः ॥ ४६ ॥ ॐ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह ॥ गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् ॥ ४७ ॥ ॐ वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसंभवैः सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः ॥ ॥ ४८ ॥ ॐ शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथाऽसिना ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् ॥ ४९ ॥ ॐ स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत्पृथक् ॥ मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥ ५० ॥ तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि ॥ पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥ ५१ ॥ ॐ तैश्चासुरासृक्संभूतैरसुरैः सकलं जगत् ॥ व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मु रुत्तमम् ॥ ५२ ॥ तान्विषण्णान्सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरम् ॥ उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥ ५३ ॥ ॐ मच्छस्त्रपातसंभूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान् ॥ रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥ ५४ ॥ ॐ भक्षयन्ती चर रणे तदु त्पन्नान्महासुरान् ॥ एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥ ५५ ॥ ॐ भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे ॥

---

पाठान्तरम्—१ दिगन्तरा । २ प्रमाणो महासुरः । ३ पुनः स्ववज्रपातेन । ४ याताः ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ॥ ५६ ॥ ॐ मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् ॥ ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् ॥ ५७ ॥ ॐ न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि ॥ तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ ५८ ॥ ॐ यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा संप्रतीच्छति ॥ मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः ॥ ५९ ॥ ॐ तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् ॥ देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ॥ ६० ॥ ॐ जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम् ॥ स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसंघसमाहतः ॥ ६१ ॥ ॐ नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः ॥ ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप ॥ ६२ ॥ ॐ तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ॥ ६३ ॥ ५०२ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ नमो देव्यै० ॥ साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै अष्टमातृकासहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लो० ६१ अर्धम् १ उवाच १ ॥ आदावेव ऋषिश्चैव त्रिषष्टिमन्त्रसंततिः ॥ १ ॥ ॐ राजोवाच ॥ १ ॥ ॐ विचित्रमिदमाख्यातं भगवन्भवता मम ॥ देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥ २ ॥ ॐ भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते ॥ चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ॥ ३ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ४ ॥ ॐ चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते ॥ शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥ ५ ॥ ॐ हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् ॥ अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययाऽसुरसेनया ॥ ६ ॐ तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः ॥ सन्दष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुंदेवीमुपाययुः ॥ ७ ॥ ॐ आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः ॥ निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥ ८ ॥ ॐ ततो युद्धमतीवासीद्देव्याः शुम्भनिशुम्भयोः ॥ शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥ ९ ॥ ॐचिच्छेदास्तान्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः ॥ ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥ १० ॥ ॐ निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम् ॥ अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥ ११ ॥ ॐ ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम् ॥ निशुम्भ

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

स्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥१२॥ ॐ छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः ॥ तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभि मुखागताम् ॥ १३ ॥ ॐ कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः ॥ आयान्तं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ॥ १४ ॥ ॐ आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति ॥ सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ॥ १५ ॥ ॐ ततः परशु हस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम् ॥ आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले ॥ १६ ॥ ॐ तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे ॥ भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् ॥ १७ ॥ ॐ स रथस्थस्तथाऽत्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः ॥ भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥ १८ ॥ ॐ तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत् ॥ ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् ॥ १९ ॥ ॐ पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च ॥ समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥ २० ॥ ॐ ततः सिंहो महानादैस्त्या जितेभमहामदैः ॥ पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश ॥ २१ ॐ ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत् ॥ कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः ॥ २२ ॥ ॐ अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह ॥ तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ ॥ २३ ॥ ॐ दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा ॥ तदा जयेत्यभिहितं देवैराकशसंस्थितैः ॥ २४ ॥ ॐ शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा ॥ आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥ २५ ॥ ॐ सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् ॥ निर्घातनिः स्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥ २६ ॥ ॐ शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् ॥ चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥२७॥ ॐ ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम् ॥ स तदाऽभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह ॥ २८ ॥ ॐ ततो निशुम्भः संप्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः ॥ आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥ २९ ॥ ॐ पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः ॥ चक्रायुतेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् ॥ ३० ॥ ॐ ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्ति नाशिनी ॥ चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान् ॥ ३१ ॥ ॐ ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम् ॥ अभ्य

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

धावत वै हन्तुं दैत्यसैन्यसमावृतः ॥ ३२ ॥ ॐ तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका ॥ खड्गेन शितधारेण स च शूलं समादृदे ॥ ३३ ॥ ॐ शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम् ॥ हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥ ३४ ॥ ॐ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयन्निःसृतोऽपरः ॥ महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् ॥ ३५ ॥ ॐ तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः ॥ शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ॥ ३६ ॥ ॐ ततः सिंहश्चखादोग्रदंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् ॥ असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथाऽपरान् ॥ ३७ ॥ ॐ कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ॥ ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥ ३८ ॥ ॐ माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथाऽपरे ॥ वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृताभुवि ॥ ३९ ॥ ॐ खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ॥ वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथाऽपरे ॥ ४० ॥ ॐ केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात् ॥ भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः ॥ ४१ ॥ ५४३ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये निशुम्भो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ नमो देव्यै० ॥ १ ॥ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै वाग्भवबीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लो० ३९ अर्धम्० उवाच ॥२॥ राजा ऋषिश्चेति एकचत्वारिंशन्मनुः स्वयम् ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥१॥ ॐ निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसंमितम् ॥ हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥ २ ॥ ॐ बलावलेपाद्दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह ॥ अन्यासां बलमाश्रित्य युद्धयसे याऽतिमानिनी ॥ ३ ॥ ॐ देव्युवाच ॥ ४ ॥ ॐ एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा ॥ पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥ ५ ॥ ॐ ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम् ॥ तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाऽम्बिका ॥ ६ ॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥७॥ ॐ अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदा स्थिता ॥ तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥ ८ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ९ ॥ ॐ ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः ॥ पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् ॥ १० ॥ ॐ शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथाऽस्त्रैश्चैव दारुणैः ॥ तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयंकरम् ॥ ११ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका ॥ बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥१२॥ ॐ मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी ॥ बभञ्ज लीलयैवोग्रहुंकारोच्चारणादिभिः ॥ १३ ॥ ॐ ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत् सोऽसुरः ॥ साऽपि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥ १४ ॥ ॐ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे[1] ॥ चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करस्थिताम् ॥ १५ ॥ ॐ ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत् ॥ अभ्यधावत[2] तां देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥१६॥ ॐ तस्य पतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका ॥ धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् ॥ १७ ॥ ॐ हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः ॥ जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ॥ १८ ॥ ॐ चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः ॥ तथाऽपि सोऽभ्य धावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥ १९ ॥ ॐ स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः ॥ देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताड यत ॥ २० ॥ ॐ तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले ॥ स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥२१॥ ॐ उत्पत्य च प्रगृह्योच्चै देवीं गगनमास्थितः ॥ तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥ २२ ॥ ॐ नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम् ॥ चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥ २३ ॥ ॐ ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह ॥ उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥ २४ ॥ ॐ स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगतः[3] ॥ अभ्मधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया ॥ २५ ॥ ॐतमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम् ॥ जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥२६॥ॐ स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्र विक्षतः ॥ चालयन्सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥ २७ ॥ ॐ ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि ॥ जगत्स्वास्थ्यमती वाप निर्मलं चाभवन्नभः ॥ २८ ॥ ॐ उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः ॥ सरितो मार्गवाहिन्यस्तथाऽऽसंस्तत्र पातिते ॥ २९ ॥ ॐ ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः ॥ बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः ॥३०॥ ॐ अवादयंस्तथै

---

पाठान्तरम्--१ मुपाददे । २ अभ्यधावत्तदा । ३ वेगवान् ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

वान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः॥ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥ ३१ ॥ ॐ जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः ॥ ३२ ॥ ॥ ५७५ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ नमो दे० ॥ साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सिंहवाहनायै त्रिशूलपाशधारिण्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लोकाः २७ अर्धमं० १ उवाच ४ ॥ देव्युवाचद्वयं चैव द्वात्रिंशन्मनुसंततिः ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम् ॥ कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्विकाशिवक्त्रास्तु विकाशिताशाः ॥ २ ॥ ॐ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ॥ प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ ३ ॥ ॐ आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थिताऽसि ॥ अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये ॥४॥ ॐ त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमाऽसि माया ॥ संमोहितं देवि समस्तमेतत्त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥ ५ ॥ ॐ विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ॥ त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः ॥ ६ ॥ ॐ सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्ति प्रदायिनी ॥ त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥७॥ ॐ सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ॥ स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥ ॐ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि ॥ विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥ ॐ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यम्बके गौरि ना० ॥ १० ॥ ॐ सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ॥ गुणाश्रये गुणमये नारा० ॥११॥ ॐ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्तिहरे देवि नारा० ॥ १ ॥ ॐ हंसयुक्त विमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि ॥ कौशाम्भःक्षरिके देवि नारा० ॥ १३ ॥ ॐ त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि ॥ माहेश्वरी स्वरूपेण नारा० ॥ १४ ॥ ॐ मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे ॥ कौमारीरूपसंस्थाने नारा० ॥ १५ ॥ ॐ शङ्खचक्रगदाशार्ङ्ग

पाठान्तरम्--१ प्रपन्ना ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

गृहीतपरमायुधे ॥ प्रसीद वैष्णवीरूपेनारा० ॥ १६ ॥ ॐ गृहीतोग्रमहांचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरे ॥ वराहरूपिणि शिवे नारा० ॥ ॥ १७ ॥ ॐ नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान्कृतोद्यमे ॥ त्रैलोक्यत्राणसहिते नारा० ॥ १८ ॥ ॐ किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले ॥ वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारा० ॥ १९ ॥ ॐ शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले ॥ घोररूपे महारावे ॥ २० ॥ ॐ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे ॥ चामुण्डे मुण्डमथने नारा० ॥२१॥ ॐ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ॥ महारात्रि महामाये नारा० ॥ २२ ॥ ॐ मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि ॥ नियते त्वं प्रसीदेशे नारा० ॥ २३ ॥ ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ २४ ॥ ॐ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ २५ ॥ ॐ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ २६ ॥ ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ २७ ॥ ॐ असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वा नता वयम् ॥ २८ ॥ ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान् ॥ त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ २९ ॥ ॐ एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाऽद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ॥ ॐ रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं कृत्वाऽम्बिके तत्प्रकरोति काऽन्या ॥ ३० ॥ ॐ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ॥ ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥ ३१ ॥ ॐ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ॥ दावानलो यत्र तथाऽब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ ३२ ॥ ॐ विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिकाधारयसीति विश्वम् ॥ विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥ ३३ ॥ ॐ देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथाऽसुरवधादधुनैव सद्यः ॥ पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु

पाठान्तरम्—१ प्रपन्ना ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ॥ ३४ ॥ ॐ प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ॥ त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव ॥ ३५ ॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥ ३६ ॥ ॐ वरदाऽहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ ॥ तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् ॥ ३७ ॥ ॐ देवा ऊचुः ॥ ३८ ॥ ॐ सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ ३९ ॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥ ४० ॥ ॐ वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे ॥ शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥ ४१ ॐ नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसंभवा ॥ ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥ ४२ ॥ ॐ पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले ॥ अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ॥ ४३ ॥ ॐ भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्वैप्रचित्तान्महासुरान् ॥ रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः ॥ ४४ ॥ ॐ ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवा ॥ स्तुवन्तो व्याहरिष्यंति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥ ४५ ॥ ॐ भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि ॥ मुनिभिः संस्तुता भूमौ संभविष्याम्ययोनिजा ॥ ॥ ४६ ॥ ॐ ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन् ॥ कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥ ४७ ॥ ॐ ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः ॥ भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः ॥ ४८ ॥ ॐ शाकम्भरीति विख्याति तदा यास्याम्यहं भुवि ॥ तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥४९॥ ॐ दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ॥ पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥ ५० ॥ ॐ रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात् ॥ तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ॥ ५१ ॥ ॐ भीमादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति॥यदाऽरुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥५२॥ ॐ तदाऽहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम् ॥ त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् ॥५३॥ॐ भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः ॥ इत्थं यदा यदाबाधा दानवोत्था भविष्यति ॥ ५४ ॥ ॐ तदा तदाऽवतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥ ५५ ॥ ६३० ॥ इति श्रीमार्कंडेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये नारायणीस्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ नमो देव्यै० ॥ साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै

पाठान्तरम् १ संस्मृता ।



Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सायुधायै सर्वनारायण्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लो० ५० अर्धम्० १ उ० ४ ॥ पञ्चाधिकं तु पञ्चाशन्मन्त्रा ज्ञेयाः परिस्फुटाः ॐ श्रीदेव्युवाच ॥ १ ॥ ॐ एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः ॥ तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् ॥ २ ॥ ॐ मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम् ॥ कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद्वधं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ३ ॥ ॐ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः ॥ श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥ ४ ॥ ॐ न तेषां दुष्कृतं किंचिद् दुष्कृतोत्था न चापदः ॥ भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् ॥ ५ ॥ ॐ शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः ॥ न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्संभविष्यति ॥ ६ ॥ ॐ तस्मान्ममैतन्माहात्यं पठितव्यं समाहितैः ॥ श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ ७ ॥ ॐ उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् ॥ तथा त्रिविधमृत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥ ८ ॥ ॐ यत्रैतत् पठ्यते सम्यङ् नित्यमायतने मम ॥ सदा न तद्विमोक्ष्यामि सान्निध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ ९ ॥ ॐ बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे ॥ सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेवं च ॥ १० ॥ ॐ जानताऽजानता वाऽपि बलिपूजां तथा कृताम् ॥ प्रतीक्षिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम् ॥ ११ ॥ ॐ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी ॥ तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥ १२ ॥ ॐ सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः ॥ मनुष्यो मत्प्रसादन भविष्यतिति न संशयः ॥ १३ ॥ ॐ श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः ॥ पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भय पुमान् ॥ १४ ॥ ॐ रिपव संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते ॥ नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥ १५ ॥ ॐ शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने ॥ ग्रहपीडासु चोग्रासु माहत्म्यं शृणुयान्मम ॥ १६ ॥ ॐ उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः ॥ दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥ १७ ॥ ॐ बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम् ॥ संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तम् ॥ १८ ॥ ॐ दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम् ॥ रक्षोभूतपिचानां पठनादेव नाशनम् ॥ १९ ॥ ॐ सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम् ॥

---

पाठान्तरम्–१ मेवा वा । २ समन्वितः ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पशुपुष्पार्घधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥ २० ॥ ॐ विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम् ॥ अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानै र्वत्सरेण या ॥ २१ ॥ ॐ प्रीतिर्मे क्रियते साऽस्मिन्सकृदुच्चरिते श्रुते ॥ श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति ॥ २२ ॥ ॐ रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम ॥ युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम् ॥ २३ ॥ ॐ तस्मिन् श्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते ॥ युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥ २४ ॥ ॐ ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम् ॥ अरण्ये प्रान्तरे वाऽपि दावाग्निपरिवारितः ॥ २५ ॥ ॐ दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वाऽपि शत्रुभिः ॥ सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः ॥ २६ ॥ ॐ राज्ञा क्रुद्धेन वाऽऽज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा ॥ आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥ २७ ॥ ॐ पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे ॥ सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥ २८ ॥ ॐ स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात् ॥ मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥ २९ ॥ ॐ दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम ॥ ३० ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ३१ ॥ ॐ इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा ॥ ३२ ॥ ॐ पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत ॥ तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान्यथा पुरा ॥ ३३ ॥ ॐ यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः ॥ दैत्यांश्च[1] देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥ ३४ ॥ ॐ जगद्विध्वंसके[2] तस्मिन्महोग्रेऽतुलविक्रमे ॥ निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययु ॥ ३५ ॥ ॐ एवं भगवती देवी सा नित्याऽपि पुनः पुनः ॥ संभूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥३६॥ ॐ तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते ॥ सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ॥ ३७ ॥ ॐ व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर ॥ महाकाल्या महाकाली महामारीस्वरूपया ॥३८॥ ॐ सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा ॥ स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥ ३९ ॥ ॐ भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे ॥ सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते ॥ ४० ॥ ॐ स्तुता संपूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा ॥ ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे तथा[3] शुभाम् ॥४१॥ ६७१ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके

पाठान्तरम्--१ दैत्ये च। २ ध्वंसिनि। ३ गतिम्।



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये भगवतीवाक्यं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ नमो देव्यै० ॥ साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै बालात्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लो०३७॥ अर्धे० २ ॥ उवाच २ चत्वारिंशत्तथैकश्च मन्त्रास्तत्राहुतिद्वयम् ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ एवंप्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत् ॥ २ ॥ ॐ विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया ॥ तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्येऽविवेकिनः ॥ ३ ॥ ॐ मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे ॥ तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥४॥ ॐ आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा ॥५॥ ॐ मार्कण्डेय उवाच ॥६॥ ॐ इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥ ७ ॥ ॐ प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं संशितव्रतम् ॥ निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥ ॥ ८ ॥ ॐ जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने ॥ संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनमास्थितः ॥ ९ ॥ ॐ स च वैश्यस्तपस्तेपे देवी सूक्तं परं जपन् ॥ तौ तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् ॥ १० ॥ ॐ अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः ॥ निरा हारौ यतात्मानौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥११॥ ॐ ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम् ॥ एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥ ॥ १२ ॥ ॐ परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ॥ १३ ॥ ॐ देव्युवाच ॥ १४ ॥ ॐ यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुल नन्दन ॥ मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ॥ १५ ॥ ॐ मार्कण्डेय उवाच ॥ १६ ॥ ॐ ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्य न्यजन्मनि ॥ अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥१७॥ ॐ सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः ॥ ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम् ॥ १८ ॥ ॐ देव्युवाच ॥ १९ ॥ ॐ स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥२०॥ ॐ हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति ॥ २१ ॥ ॐ मृतश्च भूयः संप्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥ २२ ॥ ॐ सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति ॥ २३ ॥ ॐ वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः ॥ २४ ॥ ॐ तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भवि ष्यति ॥ २५ ॥ ॐ मार्कण्डेय उवाच ॥ २६ ॥ ॐ इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाऽभिलषितं वरम् ॥ बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्या

पाठान्तरम्-१ यताहारौ ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मभिष्टुता ॥ २७ ॥ ॐ एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥२८॥ॐ एवं दे० सूर्याज्ज० ॥२९॥७००॥ इति श्रीमार्कंडेयपुराणे सावर्णिके मन्वान्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥ नमो देव्यै० ॥ साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्रीत्रिपुरसुन्दर्यै श्रीविद्यायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥श्लो०॥१४॥ अ० ६ उवाच ६ ॥ एकोननत्रिंशत्संख्याका मन्त्रास्त्वत्र स्मृता बुधैः ॥ आवृत्त्या त्वधिको मन्त्रः सावर्णिर्भविता मनुः ॥ १ ॥ब्रह्मैको भगवानेक ऋषयः सप्तविंशतिः ॥ देवीद्वादश देवास्त्रीन् मार्कण्डेयस्तु मार्गणः ॥ २ ॥ राजोवाचेति चत्वारि दूतवैश्यद्विकौ द्विकौ ॥ चतुःषष्टिरर्धसंख्या एकाधिकमतो मनुः ॥ संख्या १२२॥३॥ एवं विधानतः कुर्याज्जपहोमक्रमादिषु ॥४॥ अष्टसप्तत्युत्तराणां श्लोकानां शतपञ्चकम् ॥५७८॥ प्रोक्तं सप्तशतीस्तोत्रे तत्सप्तशतिसंख्यया ॥ ५ ॥ इति कात्यायनीमतम् ॥ एवं डामरे वाराहीतन्त्रेऽप्येवमेव ॥ इति ह० बृ० ध० उ० दुर्गो० सप्तशतीनिरूपणं नाम चतुष्पंचाशं प्रकरणम् ॥५४॥ अथ देवीसूक्तम्॥देवा ऊचुः ॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नम प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥१॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ॥ ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ २ ॥ कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः ॥ नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ३ ॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ॥ ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ ४ ॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ ५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ॥ बुद्धिरूपेण नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ॥ नम० ॥ ७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ॥ नम० ॥ ८ ॥ या देवी० निद्रारू० ॥ नम० ॥९॥ या देवी० क्षुधारू० ॥ नम० ॥१०॥या देवी० छायारू० ॥ नम०॥११॥ या देवी० शक्तिरू० ॥ नम० ॥ १२ ॥ या देवी० तृष्णारू० ॥ नम० ॥ १३ ॥ या देवी० ॥ क्षान्तिरू० ॥ नम० ॥ १४ ॥ या देवी० जातिरू० ॥ नम० ॥ १५ ॥ या देवी० लज्जारू० ॥ नम० ॥ १६ ॥ या देवी० शान्तिरू० ॥ नम० ॥ १७॥ या देवी० श्रद्धारू०

---

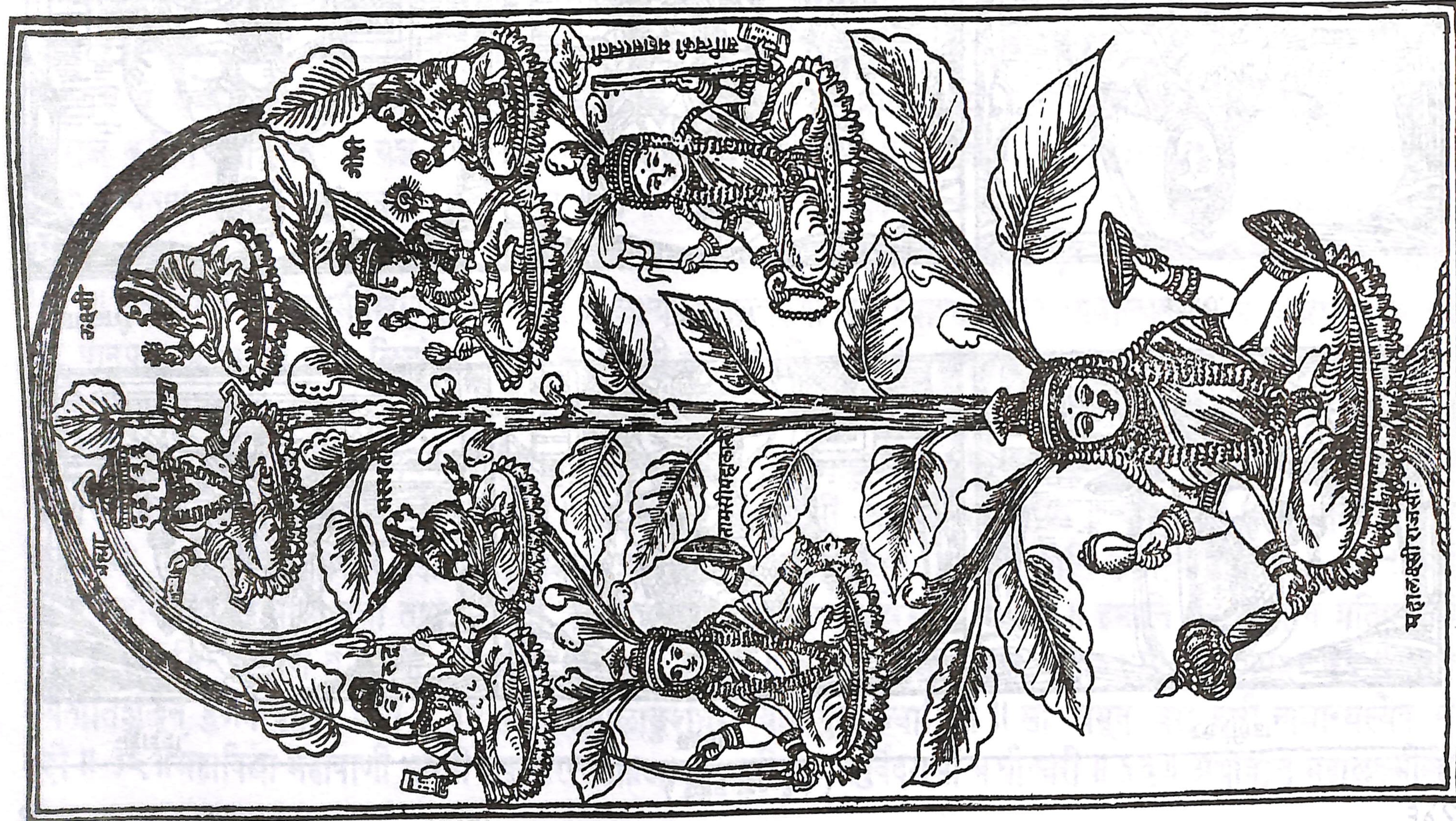
पठान्तरम् १ सावर्णिर्भविता मनुः । १ कुर्मः ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नम० ॥ १८ ॥ या देवी० कान्तिरू० ॥ नम० ॥ १९ ॥ या देवी० लक्ष्मीरू० ॥ नम० ॥ २० ॥ या देवी० वृत्तिरू० ॥ नम० ॥ ॥ २१ ॥ या देवी० स्मृतिरू० ॥ नम० ॥ २२ ॥ या देवी०दयारू०॥ नम०॥ २३ ॥ या देवी तुष्टिरू० ॥ नम० ॥ २४ ॥ या देवी० मातृरू० ॥ नम० ॥ २५ ॥ या देवी० भ्रान्तिरू० ॥ नम० ॥ २६ ॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ॥ २७ ॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् ॥ नमस्त० ॥ २८ ॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ २९ ॥ या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्तिः नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ३० ॥ इति दुर्गायाः पञ्चमाध्यायोक्तं देवीसूक्तम् ॥ अथ वैदिकम् ॥ ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः ॥ अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥ १ ॥ अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम् ॥ अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये २ यजमानाय सुन्वते ॥ २ ॥ अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ॥ तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ॥३॥ मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम् ॥ अम न्तवोमान्त उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुतश्रद्धिवन्ते वदामि ॥ ४ ॥ अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः ॥ यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥ ५ ॥ अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवाउ ॥ अहं जनाय समदं कृणो म्यहं द्यावापृथिवी आविवेश ॥ ६ ॥ अहं सुवेपितरमस्य मूर्धन् मम योनिरप्स्वं १ तः समुद्रे ॥ ततो वितिष्ठे भुवनानि विश्वोताभूं द्यां वर्ष्मणोपस्पृशामि ॥ १ ॥ अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा ॥ परो दिवा पर एना पृथिव्यै तावती महिना संबभूव ॥ २ ॥ इति वैदिकं देवीसूक्तम् ॥ एवं पाठान्ते देवीसूक्तं पठित्वा खड्गिनीत्यादिभिः करषडङ्गन्यासं कृत्वा अष्टोत्तरशतवारं नवार्णं जपित्वा पूर्ववन्मालां प्रार्थ्य पुनः षडङ्गं कृत्वा मानसोपचारैः संपूज्य कृतजपं देव्या वामकरे समर्प्य योन्या प्रणम्य रहस्यत्रयं पठेत् ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उ० श्रीदुर्गोपासनाध्याये सूक्तन्यासादिनिरूपणं नाम पञ्चपञ्चाशं प्रकरणम् ॥ ५५ ॥ [ चित्र नं ५ ]

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

( चित्र नं० १७ )



( चित्र नं० १८ )

नंदादेवी.



लक्ष्मी.



रक्तदंतिका.



शाकभरी.



भीमादेवी.



भ्रामरी.



Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्रीदेव्याः मूर्तिरहस्येषु प्रथमं प्राधानिकं नाम रहस्यं तस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः महाकाली देवता ऐं नन्दजा शक्तिः ह्सौं रक्तदन्तिका बीजं रं अग्निस्तत्त्वं श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थं प्रथमरहस्यजपे विनियोगः ॥ ॐ आं एं ऐं राजोवाच ऐं एं आं ॐ महाकाल्यै नमः ॥ एवं प्रतिश्लोके लोमविलोमेन प्रथमरहस्ये संपुटितं कार्यम् ॥ वैश्य उवाच ॥ पुनर्ब्रूहि महाराज कथितं यत्तवाग्रतः ॥ यच्च सर्वं महादेव्याः परमं गूढमेव च ॥ १ ॥ राजोवाच ॥ भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयो दिताः ॥ एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन्प्रधानं वक्तुमर्हसि ॥ १ ॥ आराध्यं यन्मयादेव्याः स्वरूपं येन च द्विज ॥ विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच ॥ इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते ॥ भक्तोऽसीति न मे किंचित्तवावाच्यं नराधिप ॥ ॥ ३ ॥ सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी ॥ लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता ॥ ४ ॥ मातुलिङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्धनि ॥ ५ ॥ तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा ॥ शून्यं तद खिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥ ६ ॥ शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी ॥ बभार रूपमपरं तमसा केवलेन हि ॥ ७ ॥ सा भिन्नाञ्जनसङ्काशा दंष्ट्राङ्कितवरानना ॥ विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा ॥ ८ ॥ खड्गपात्रशिरःखेटैरलंकृतचतुर्भुजा ॥ कबन्धहारमुरसा बिभ्राणा हि शिरःस्रजम् ॥ ९ ॥ सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा ॥ नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः ॥ १० ॥ तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम् ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ॥ ११ ॥ महा माया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा ॥ निद्रा कृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया ॥ १२ ॥ इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः ॥ एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम् ॥ १३ ॥ तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप ॥ सत्त्वा ख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ ॥ १४ ॥ अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी ॥ सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यैव सा ददौ ॥ १५ ॥ महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती ॥ आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी ॥ १६ ॥ अथोवाच महालक्ष्मीर्महा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

कालीं सरस्वतीम्॥युवां जनयतं देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः॥ १७॥इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम् ॥ हिरण्यगर्भौ रुचिरो स्त्रीपुंसौ कमलासनौ॥ १८॥ब्रह्मन् विधे विरञ्चेति धातरित्याह तं नृप ॥ श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता स्त्रियं च ताम् ॥ १९ ॥ महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह ॥ एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते ॥ २० ॥ नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्र शेखरम् ॥ जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम् ॥ २१ ॥ स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः ॥ त्रयी विद्या कामधेनुः स्त्री भाषा स्वराऽक्षरा ॥ २२ ॥ सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप ॥ जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते ॥ २३ ॥ विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः ॥ उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शुभा ॥ २४ ॥ एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे ॥ चक्षुष्मन्तोऽनुपश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः ॥ २५ ॥ ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम् ॥ रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥ २६ ॥ स्वरया सह संभूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत् ॥ बिभेद भगवान् रुद्रस्तद्गौर्या सह वीर्य वान् ॥२७॥ अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप॥महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥२८॥ पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः ॥ महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी ॥ २९ ॥ निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत् ॥ नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित् ॥३०॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके०प्राधानिकरहस्यं नाम चतुर्दशोऽध्यायः॥ १४ ॥ १ ॥ ॐ अस्य श्रीवैकृतिकद्वितीयरहस्यस्य विष्णुर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः महालक्ष्मीर्देवता ह्सौं दुर्गा बीजं ह्रीं शाकंभरी शक्तिः हं वायुस्तत्त्वं श्रीमहा लक्ष्मीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥ ॐ हूं श्रीं ह्रीं ॥ ऋषिरुवाच ॥ ह्रीं श्रीं हूं ॐ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ एवं प्रकारेण प्रति श्लोके संपुटितं कार्यम् ॥ ऋषिरुवाच ॥ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता ॥ सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगव तीर्यते ॥ १ ॥ योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा ॥ मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावांबुजासनः ॥ २ ॥ दशवक्त्रा दशभुजा

पाठान्तरम्--१ श्राह माता च तां स्त्रियम् । २ शिवा । सावित्री । नृपसत्तम । ४ सर्वलोकमहेश्वरी । ५ भगवतीति च ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दशपादाऽञ्जनप्रभा ॥ विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया ॥ ३ ॥स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपाऽपि भूमिप ॥ रूपसौभाग्य कान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियाम् ॥ ४ ॥ खड्गबाणगदाशूलशङ्खचक्रभुशुण्डिभृत् ॥ परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्चोतद्रुधिरं दधौ ॥ ॥ ५ ॥ एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया ॥ आराधिता वशीकुर्यात्पूजाकर्तुश्चराचरम् ॥ ६ ॥ सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽवि र्भूताऽमितप्रभा ॥ त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥ ७ ॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला ॥ रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा ॥ ८ ॥ सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषिणा ॥ चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ ९ ॥ अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ॥ आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात् ॥ १० ॥ अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा ॥ चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः ॥ ११ ॥ शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः ॥ अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ॥ १२ ॥ सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप ॥ पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभु र्भवेत् ॥ १३ ॥ गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया ॥ साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ १४ ॥ दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत् ॥ शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप ॥ १५ ॥ एषा संपूजिता[3] भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति ॥ निशुम्भमथनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ १६ ॥ इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव ॥ उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय ॥ १७ ॥ महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती ॥ दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम् ॥ १८ ॥ विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे ॥ वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम् ॥ १९ ॥ अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना ॥ दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ॥ २० ॥ अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप ॥ दशानना चाष्ट भुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥ २१ ॥ कालमृत्यू च संपूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये ॥ यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ २२ ॥

पाठान्तरम्--१ पात्र । २ कार्मुकं च बिभर्ति या । ३ एषा सा पूजिता ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तथा रुद्रविनायकौ ॥ नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत् ॥ २३ ॥ अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः ॥ अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी ॥ २४ ॥ महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती ॥ ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी ॥ २५ ॥ महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः ॥ कृत्वा चाष्टदलं पद्मं चन्दनागरुकुङ्कुमैः ॥२६॥ षट्कोणं च त्रिकोणं च देवीं तन्मध्यतो यजेत् ॥ पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥२७॥ अर्घ्यादिभिरलंकारैर्गन्धपुष्पैस्तथाऽक्षतैः ॥ धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः ॥ २८ ॥ रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप ॥ बलिमांसादिपूजा या विप्रवर्ज्या मयेरिता ॥ २९ ॥ प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना ॥ सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः ॥ ३० ॥ वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम् ॥ पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया ॥ ३१ ॥ दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम् ॥ वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम् ॥ ३२ ॥ ततः कृताञ्जलिपुटः स्तुवीत चरितैरिमैः ॥ एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह ॥ ३३ ॥ चरितार्धं तु न जपेज्जपंश्छिद्रमवाप्नुयात् ॥ स्तोत्रमन्त्रैः स्तुवीत्तेमां यदि वा जगदम्बिकाम् ॥३४॥ प्रदक्षिणानमस्कारान्कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः ॥३५॥ प्रतिश्लोकं तु जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा ॥ जुहुयात्स्तोत्रैर्मन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः ॥ ३६ ॥ नमोनमः पदैर्देवीं पूजयेत् सुसमाहितः ॥ प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि ॥ ३७ ॥ सुचिरं भावयेद्देवीं चण्डिकां तन्मयो भवेत् ॥ एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम् ॥३८॥ भुक्त्वा भोगान्यथाकाम देवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥ यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥३९॥ भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी ॥ तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम् ॥ ४० ॥ यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि ॥ ४१ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपु० वैकृतिकरहस्यं नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ २ ॥ अथ मूर्तिरहस्येषु रक्तदन्तिकादि

पाठान्तरम्--१ लिखित्वाऽष्टदलम् । २ कात्यायनतिन्त्रोक्तं प्रतिमन्त्रमित्यर्थः । ३ अशक्तविषये ५७८ एतावद्भिः श्लोकैः । ४ दीशाम् । ५ कामान् ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

माहात्म्यं नाम तृतीयरहस्यम्॥तस्य रुद्र ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः महासरस्वती देवता क्लीं भीमा शक्तिः क्लीं भ्रामरी बीजं यं सूर्यस्तत्त्वं तृतीयरहस्यजपे विनियोगः॥ ॐ ह्रौं ह्रीं क्लीं ऋषिरुवाच क्लीं ह्रीं ह्रौं ॐ ॐ महासरस्वत्यै नमः॥ एवं सोमविलोमेन तृतीयरहस्ये प्रतिश्लोके संपुटितं कार्यम्॥ ऋषिरुवाच॥ नन्दा भगवती नाम या भाविष्यति नन्दजा॥ संस्तुता पूजिता भक्त्या वशी कुर्याज्जगत्त्रयम्॥ १॥ कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा॥ देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा॥ २॥ कमलांकुश पाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा॥ इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना॥ ३॥ या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयाऽनघ॥ तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम्॥ ४॥ यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः॥ रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा॥ ५॥ रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशाऽतिभीषणा॥ रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका॥ ६॥ यथा माता प्रियं पुत्रं देवी भक्तं भजेज्जनम्॥ वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी॥ ७॥ दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ॥ कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी॥ ८॥ आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च॥ अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम्॥ ९॥ इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम्॥ अधीते य इमं नित्यं रक्तदंत्या वपुः स्तवम्॥१०॥ तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना॥ शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना॥११॥ गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी॥ सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी॥ १२॥ मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया॥ पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसंचयम्॥ १३॥ काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापहम्॥ कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी॥ १४॥ शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता॥ उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती॥१५॥ शाकम्भरीं स्तुवन्ध्यायन् जपन्संपूजयन्नमन्॥ अक्षय्याण्यश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतानि सः॥ १६॥ भीमाऽपि नीलवर्णा च दंष्ट्रादशनभासुरा॥ विशाललोचना नारी वृत्तपीन पयोधरा॥१७॥ चन्द्रहासं च डमरुं शिरःपात्रंचबिभ्रती॥ एकवीरा कालरात्रिःसैवोक्ता कामदा स्तुता॥ तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरी

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

चित्रकान्तिभृत् ॥ १८ ॥ चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता ॥ चित्राभरणपाणिः सा महामारीति गीयते ॥ १९ ॥ मेधा प्रज्ञातथा श्रद्धा धारणा कान्तिरेव च ॥ भवन्ति स्तुवतो नित्यं चण्डिकायाः प्रकीर्तिताः ॥२०॥ इति ते मूर्तयोदेव्याव्याख्याता वसुधाधिप ॥ जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः ॥ २१ ॥ इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥ व्याख्यानं दिव्यमूर्तीना मधीष्वावहितः स्वयम् ॥ २२ ॥ देव्याश्चैव प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि ॥ शान्तिः पुष्टिस्तथा लक्ष्मीरेतत्सर्वंप्रयच्छति ॥२३॥ सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत् ॥ अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि जगदम्बिकाम् ॥ २४ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मूर्तिरहस्यं नाम तृतीयम् ॥इति ह० बृ० ध० उ० दु० ध्याये रहस्यत्रयनिरूपणनामषट्पञ्चाशंप्रकरणम्॥५६॥ अथ लक्ष्मीसूक्तंप्रथमचरित्रान्ते पठित्वा पश्चात् मध्यमचरित्रं पठेत् सृष्टिस्थितिविनाशानां इत्यारभ्यत्वयिभक्तिनम्राःइत्यन्तंदुर्गायाः एकादशाध्यायोक्तं द्वाविंशतिश्लोकात्मकं सूक्तं पठेत् ॥ वा तन्त्रान्तरे शक्रादिस्तुत्यध्यायं पठित्वा पश्चात् शूलेन पाहि नो देवीति० यथावत् कथयामि ते इत्यन्तं लक्ष्मीसूक्तं पठेत्॥अथ एकादशाध्यायोक्तलक्ष्मीसूक्तमुच्यते॥सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ॥ गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि० ॥ २ ॥ हंसयुक्त विमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि ॥ कौशाम्भःक्षरिके देवि नाराय० ॥ ३ ॥ त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि ॥ माहेश्वरीस्वरूपेण नाराय० ॥ ४ ॥ शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ॥ प्रसीद वैष्णवीरूपे नाराय० ॥ ५ ॥ गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरे ॥ वाराहरूपिणि शिवे नाराय० ॥ ६ ॥ नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान्कृतोद्यमे ॥ त्रैलोक्यत्राणसहिते नाराय० ॥ ७ ॥ किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्वले ॥ वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नाराय० ॥ ८॥ शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले ॥ घोररूपे महारावे नाराय० ॥ ॥ ९ ॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे ॥ चामुण्डे मुण्डमथने नाराय० ॥ १० ॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ॥ महारात्रि महाविद्ये नाराय० ॥ ११ ॥ मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि ॥ नियते त्वं प्रसीदेशे नाराय० ॥ १२ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि नाराय० ॥ १३ ॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ १४ ॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ १६ ॥ असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ १७ ॥ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान् ॥ त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ १८ ॥ एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाऽद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ॥ रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं कृत्वाऽम्बिके तत्प्रकरोति काऽन्या ॥ १९ ॥ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ॥ ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥ २० ॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ॥ दावानलो यत्र तथाऽब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ २१ ॥ विश्वेश्वरी त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ॥ विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥ २२ ॥ इति श्रीह० बृ० ध० उ० दु० ध्याये एकादशाध्यायोक्तलक्ष्मीसूक्तनिरूपणं नाम सप्तपंचाशं प्रकरणम् ॥ ५७ ॥ अथ विलोमदुर्गापाठः ॥ तत्रादौ कवचार्गलकीलकनवार्णन्यासाः ॥ जपं रात्रिसूक्तं च पठित्वा विलोमपाठान्ते देवीसूक्तजपन्यासरहस्यानि पठेत् ॥ अथ विनियोगः ॥ अस्य श्रीविलोमसप्तशत्युत्तममध्यमप्रथमचरित्रस्य रुद्रविष्णुब्रह्माणां ऋषयः श्रीसरस्वती महालक्ष्मी महाकाली देवताः अनुष्टुप् त्रिष्टुप् गायत्री छन्दांसि भीमाशाकंभरीनन्दाः शक्तयः भ्रामरी दुर्गा रक्तदन्तिका बीजानि सूर्यवाय्वग्नयस्तत्त्वानि ॥ सामयजुऋग्वेदा ध्यानानि मानसेप्सितकामनासिद्ध्यर्थे विलोमसप्तशतीपाठे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम् ॥ घण्टाशूल० ॥ १ ॥ अक्षस्रक्परशुं० ॥ २ ॥ खड्गं चक्र० ॥ ३ ॥ इति ध्यात्वा ॥ अथ विलोमसप्तशतीन्यासः ॥ क्लीं कीलकं १ ह्रीं शक्तिः २ ऐं बीजं ३ ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति० १ अस्त्राय फट् करतलकरपृष्ठाभ्यां० १ ॐ खड्गशूलगदादीनि० १ नेत्रत्रयाय वौषट् कनिष्ठिकाभ्यां २

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलो० १ कवचाय हुं अनामिकाभ्यां नमः ३ ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके० १ शिखायै वषट् मध्यमाभ्यां नमः ४ ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि० १ शिरसे स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः ५ ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि०१ हृदयाय नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ इति षडङ्गकरन्यासौ कृत्वा ध्यानम् ॥ विद्युद्दामसमप्रभां० ॥ १ ॥ अथ संहारपाठः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥ १ ॥ एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥ २ ॥ इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाऽभिलषितं वरम् ॥ बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ॥ ३ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ४ ॥ तं प्रयच्छामि संसिद्धयै तव ज्ञानं भविष्यति ॥ ५ ॥ वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः ॥ ६ ॥ सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति ॥ ७ ॥ मृतश्च भूयः संप्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥ ८ ॥ हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति ॥ ९ ॥ स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥ १० ॥ देव्युवाच ॥ ११ ॥ सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः ॥ ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम् ॥ १२ ॥ ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि ॥ अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥ १३ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ १४ ॥ यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन ॥ मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ॥ ॥ १५ ॥ देव्युवाच ॥ १६ ॥ परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ॥ १७ ॥ ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम् ॥ एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥ १८ ॥ अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः ॥ निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥ १९ ॥ स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् ॥ तौ तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वाः मूर्तिं महीमयीम् ॥ २० ॥ जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने ॥ संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनमास्थितः ॥ २१ ॥ प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं संशितव्रतम् ॥ निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥ २२ ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥ २३ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ २४ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा ॥ २५ ॥ मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे ॥ तामुपैहि महाराज शरणं परमे श्वरीम् ॥ २६ ॥ विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया ॥ तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्येऽविवेकिनः ॥ २७ ॥ एतत्ते कथितं भूप देवीमहात्म्यमुत्तमम् ॥ एवंप्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत् ॥ २८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ २९ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ स्तुता संपूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा ॥ ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे तथा शुभाम् ॥ १ ॥ भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे ॥ सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीविनाशायोप जायते ॥ २ ॥ सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा ॥ स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥ ३ व्याप्तं तयैतत्स कलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर ॥ महाकाल्या महाकाली महामारीस्वरूपया ॥ ४ ॥ तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते ॥ सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ॥ ५ ॥ एवं भगवती देवी सा नित्याऽपि पुनः पुनः ॥ संभूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥ ६ ॥ जगद्विध्वंसके तस्मिन्महोग्रेऽतुलविक्रमे ॥ निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः ॥ ७ ॥ यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रु र्विनिहतारयः ॥ दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥ ८ ॥ पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत ॥ तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान्यथा पुरा ॥ ९ ॥ इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा ॥१०॥ ऋषिरुवाच ॥११॥ दूरादेव पलायन्ते स्मरत श्चरितं मम ॥ १२ ॥ स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात् ॥ मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥ १३ ॥ पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे ॥ सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥ १४ ॥ राज्ञा क्रुद्धेन वाऽऽज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा ॥ आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥ १५ ॥ दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वाऽपि शत्रुभिः ॥ सिंहव्याघ्रनुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः ॥ १६ ॥ ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम् ॥ अरण्ये प्रान्तरे वाऽपि दावाग्निपरिवारितः ॥१७॥ तस्मिन् श्रुते वैरिकृतं भयं पुंसा न जायते ॥ युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥ १८ ॥ रक्षां करोति भूतेभ्यो

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

जन्मनां कीर्तनं मम ॥ युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम् ॥ १९ ॥ प्रीतिर्मे क्रियते साऽस्मिन्सकृदुच्चरिते श्रुते ॥ श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति ॥ २० ॥ विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम् ॥ अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या ॥२१॥ सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम् ॥ पशुपुष्पार्घधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥ २२ ॥ दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम् रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥ २३ ॥ बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम् ॥ संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरण मुत्तमम् ॥२४॥ उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः ॥ दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥२५॥ शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने ॥ ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥२६॥ रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते ॥ नन्दते च कुलं पुंसां माहत्म्यं मम शृण्वताम् ॥ २७ ॥ श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः ॥ पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥ ॥ २८ ॥ सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः ॥ मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥ २९ ॥ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी ॥ तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥ ३० ॥ जानताऽजानता वाऽपि बलिपूजां तथा कृताम् ॥ प्रतीक्षिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम् ॥ ३१ ॥ बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे ॥ सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्य मेव च ॥ ३२ ॥ यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ् नित्यमायतने मम ॥ सदा न तद्विमोक्ष्यामि सान्निध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ ३३ ॥ उपसर्गा नशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् ॥ तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥ ३४ ॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः॥ श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ ३५ ॥ शत्रुतो न भयं तेषां दस्युतो वा न राजतः ॥ न शस्त्रानलतोयौघात्कदा चित्संभविष्यति ॥ ३६ ॥ न तेषां दुष्कृतं किंचिद्दुष्कृतोत्था न चापदः ॥ भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् ॥ ३७ ॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः ॥ श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम ॥३८॥ मधुकैटभनाशं च महिषा सुरघातनम् ॥ कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद्वधं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ३९ ॥ एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः ॥ तस्याहं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् ॥ ४० ॥ देव्युवाच ॥ ४१ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीवाक्यं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ तदा तदाऽवतीर्याऽहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥ १ ॥ भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः ॥ इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥ २ ॥ तदाऽहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम् ॥ त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् ॥ ३ ॥ भीमादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ॥ यदाऽरुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥ ४ ॥ रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात् ॥ तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ॥ ५ ॥ दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ॥ पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥ ६ ॥ शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि ॥ तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥ ७ ॥ ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः ॥ भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः ॥ ८ ॥ ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन् ॥ कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥ ९ ॥ भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि ॥ मुनिभिः संस्तुता भूमौ संभविष्याम्ययोनिजा ॥ १० ॥ ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः ॥ स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥ ११ ॥ भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्वैप्रचित्तान् महासुरान् ॥ रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः ॥ १२ ॥ पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले ॥ अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ॥ १३ ॥ नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसंभवा ॥ ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥ १४ ॥ वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे ॥ शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥ १५ ॥ देव्युवाच ॥ १६ ॥ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ १७ ॥ देवा ऊचुः ॥ १८ ॥ वरदाऽहं सुरगणा वरं यं मनसेच्छथ ॥ तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् ॥ १९ ॥ देव्युवाच ॥ २० ॥ प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ॥ त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव ॥ २१ ॥ देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथाऽसुरवधादधुनैव सद्यः ॥ पापानि सर्व

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

जगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ॥ २२ ॥ विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ॥ विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥ २३ ॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ॥ दावानलो यत्र तथाऽब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ २४ ॥ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वा द्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ॥ ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥ २५ ॥ एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाऽद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ॥ रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं कृत्वाऽम्बिके तत्प्रकरोति काऽन्या ॥ २६ ॥ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान् ॥ त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ २७ ॥ असुरासृग्वसा पङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ २८ ॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ २९ ॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ ३० ॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ ३१ ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ ३२ ॥ मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि ॥ नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३३ ॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ॥ महा रात्रि महामाये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३४ ॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे ॥ चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३५ ॥ शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले ॥ घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३६ ॥ किरीटिनि महावज्रे सहस्र नयनोज्ज्वले ॥ वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३७ ॥ नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे ॥ त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३८ ॥ गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे ॥ वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३९ ॥ शङ्ख चक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ॥ प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४० ॥ मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे ॥ कौमारी

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

रूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४१ ॥ त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि ॥ माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४२ ॥ हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि ॥ कौशाम्भः क्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४३ ॥ शरणागतदीनार्त परित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४४ ॥ सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ॥ गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४५ ॥ सर्वमंगलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४६ ॥ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि ॥ विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४७ ॥ सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ॥ स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४८ ॥ सर्वभूता यदा देवि स्वर्गमुक्तिप्रदायिनि ॥ त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥ ४९ ॥ विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ॥ त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः ॥ ५० ॥ त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमाऽसि माया ॥ संमोहितं देवि समस्तमेतत्त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥ ५१ ॥ आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थिताऽसि ॥ अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये ॥ ५२ ॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ॥ प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ ५३ ॥ देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम् ॥ कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्विकासिवक्त्रास्तु विकासिताशाः ॥ ५४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ५५ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये नारायणीस्तुतिर्नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः ॥ १ ॥ अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥ २ ॥ ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः ॥ बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः ॥ ३ ॥ उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः ॥ सरितो मार्गवाहिन्यस्तथाऽऽसंस्तत्र पातिते ॥ ४ ॥ ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन्दुरात्मनि जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः ॥ ५ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः ॥ चालयन्सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥ ६ ॥ तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्य जनेश्वरम् ॥ जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥ ७ ॥ स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यस्य वेगतः ॥ अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया ॥ ८ ॥ ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह ॥ उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥ ९ ॥ नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम् ॥ चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥ १० ॥ उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगन मास्थितः ॥ तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥ ११ ॥ तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले ॥ स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥ १२ ॥ स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः ॥ देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् ॥ १३ ॥ चिच्छेदा पततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः ॥ तथाऽपि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यस्य वेगवान् ॥ १४ ॥ हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः ॥ जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ॥ १५ ॥ तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका ॥ धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणै श्चर्म चार्ककरामलम् ॥ १६ ॥ ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत् ॥ अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥ १७ ॥ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे ॥ चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करस्थिताम् ॥ १८ ॥ ततः शरशतैर्देवीमाच्छाद यत सोऽसुरः ॥ साऽपि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥ १९ ॥ मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी ॥ बभञ्ज लील यैवोग्रहुंकारोच्चारणादिभिः ॥ २० ॥ दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका ॥ बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥ २१ ॥ शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथाऽस्त्रैश्चैव दारुणैः ॥ तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयंकरम् ॥ २२ ॥ ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः ॥ पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् ॥ २३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ २४ ॥ अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदा स्थिता ॥ तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥ २५ ॥ देव्युवाच ॥ २६ ॥ ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम् ॥ तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाऽम्बिका ॥ २७ ॥ एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा ॥ पश्यैता दुष्ट मय्येव

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥ २८ ॥ देव्युवाच ॥ २९ ॥ बलावलेपाद्दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह ॥ अन्यासां बलमाश्रित्य युध्यसे याऽतिमानिनी ॥ ३० ॥ निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसंमितम् ॥ हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥ ३१ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३२ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात् ॥ भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः ॥ १ ॥ खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ॥ वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथा परे ॥ २ ॥ माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथा परे ॥ वाराही तुण्डघातेन केचिच्चूर्णी कृता भुवि ॥ ३ ॥ कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ॥ ब्राह्मणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥ ४ ॥ ततः सिंहश्चखादोग्रदंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् ॥ असुरास्तांस्तथा काली शिवदूती तथा परान् ॥५॥ तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ॥ ६ ॥ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः ॥ महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् ॥ ७ ॥ शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम् ॥ हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥ ८ ॥ तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका ॥ खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ॥ ९ ॥ ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम् ॥ अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृताः ॥ १० ॥ ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ॥ चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान् ॥ ११ ॥ पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः ॥ चक्रायुधेनदितिजश्छादयामास चण्डिकाम् ॥ १२ ॥ ततो निशुम्भः संप्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः ॥ आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥ १३ ॥ ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम् ॥ स तदाऽभिहतोभूमौ मूर्च्छितो निपपात ह ॥ १४ ॥ शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् ॥ चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ १५ सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् ॥ निर्घातनिः स्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥ १६ ॥ शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा ॥ आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥ १७ ॥ दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति

।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

व्याजहाराम्बिका यदा ॥ तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥ १८ ॥ अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह ॥ तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ ॥ १९ ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत् ॥ कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः ॥ २० ॥ ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः ॥ पूरयामास गगनं गां तथोपदिशो दश ॥ २१ ॥ पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च ॥ समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥ २२ तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत् ॥ ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् ॥ २३ ॥ स रथस्थस्तथाऽत्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः ॥ भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥ ॥ २४ ॥ तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे ॥ भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् ॥ २५ ॥ ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम् ॥ आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले ॥ २६ ॥ आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति ॥ साऽपि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ॥ २७ ॥ कोपाध्यातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः आयान्तं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत ॥ २८ ॥ छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः ॥ तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ॥२९॥ ताडितवाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम् ॥ निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥ ३० ॥ निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम् अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥ ३१ ॥ चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः ॥ ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥ ३२ ॥ ततो युद्धमतीवासीद्देव्याः शुम्भनिशुम्भयोः ॥ शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥ ३३ ॥ आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः ॥ निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥ ३४ ॥ तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः ॥ संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ॥ ३५ ॥ हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् ॥ अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्याऽसुरसेनया ॥ ३६ ॥ चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते ॥ शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥ ३७ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३८ ॥ भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते ॥ चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ॥ ३९ ॥ विचित्र

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मिदमाख्यातं भगवन्भवता मम ॥ देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥ ४० ॥ राजोवाच ॥ ४१ ॥ इति श्रीमार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ॥१॥ नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः ॥ ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप ॥ २ ॥ जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम् ॥ स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसंघसमाहतः ॥ ३ ॥ तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् ॥ देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभि र्ऋष्टिभिः ॥ ४ ॥ यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा संप्रतीच्छति ॥ मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः ॥ ५ ॥ न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि ॥ तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ ६ ॥ मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् ॥ ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् ॥ ७ ॥ भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे ॥ इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ॥ ८ ॥ भक्षयन्ती चर रणे त्वदुत्पन्नान्महासुरान् ॥ एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥ ९ ॥ मच्छस्त्र पातसंभूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान् ॥ रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥ १० ॥ तान्विषण्णान्सुरान्दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरम् ॥ उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥ ११ ॥ तैश्चासुरासृक्संभूतैरसुरैः सकलं जगत् ॥ व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥ १२ ॥ तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि ॥ पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥१३॥ स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत्पृथक् ॥ मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥ १४ ॥ शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथाऽसिना ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् ॥ १५ ॥ वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसंभवैः ॥ सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः ॥ १६ ॥ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह ॥ गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् ॥ १७ ॥ पुनश्च वज्र पातेन क्षतमस्य शिरो यदा ॥ ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः ॥ १८ ॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसंभवाः ॥ समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम् ॥ १९ ॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः ॥ तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबल

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

विक्रमाः ॥ २० ॥ कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥ २१ ॥ युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः ॥ ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ॥ २२ ॥ रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः ॥ समुत्पतति मेदिन्यास्तत्प्रमाणो महासुरः ॥ २३ ॥ पलायनपरान्दृष्ट्वा दैत्यान्मातृगणार्दितान् ॥ योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः ॥ २४ ॥ इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान् ॥ दृष्ट्वाऽस्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥ २५ ॥ चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः ॥ पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा ॥ २६ ॥ नखैर्विदारितांश्चान्यान्भक्षयन्ती महासुरान् ॥ नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥ २७ ॥ तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः ॥ वराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ॥ २८ ॥ ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः ॥ पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥ २९ ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी ॥ दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्याऽतिकोपना ॥ ३० ॥ कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान्हतौजसः ॥ ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून्येन येन स्म धावति ॥ ३१ ॥ तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान् ॥ खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन्कुर्वती व्यचरत्तदा ॥ ३२ ॥ सा च तान्प्रहितान्बाणान् शूलशक्तिपरश्वधान् ॥ चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥३३॥ ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः ॥ ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः ॥ ३४ ॥ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः ॥ अमर्षापूरिता जग्मुर्यतः कात्यायनी स्थिता ॥ ३५ ॥ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम् ॥ शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता ॥ ३६ ॥ बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः ॥ तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥ ३७ ॥ त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः ॥ यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥ ३८ ॥ ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ ॥ ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥ ३९ ॥ सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता ॥ दूतत्वं गच्छ भगवन्पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ४० ॥ ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्ताऽतिभीषणा ॥ चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

शिवाशतनिनादिनी ॥४१॥ ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः ॥ हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽहचण्डिकाम् ॥ ४२ ॥ वज्रहस्ता तथैवेन्द्री गजराजोपरि स्थिता ॥ प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥ ४३ ॥ नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः ॥ प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥ ४४ ॥ यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः ॥ शक्तिः साऽप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् ॥ ४५ ॥ तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता ॥ शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताऽभ्युपाययौ ॥ ४६ ॥ कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ॥ योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी ॥ ४७ ॥ माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी ॥ महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा ॥ ४८ ॥ हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः ॥ आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साऽभिधीयते ॥ ४९ ॥ यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषणवाहनम् ॥ तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान्योद्धुमाययौ ॥ ५० ॥ ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः ॥ शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥५१॥ एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् ॥ भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥ ५२ ॥ तन्निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् ॥ देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ॥५३॥ धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा ॥ निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ॥ ५४ ॥ ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान्नृप ॥ घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत् ॥ ५५ ॥ आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् ॥ ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ॥ ५६ ॥ इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः ॥ निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥ ५७ ॥ कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथाऽसुराः ॥ युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥ ५८ ॥ कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै ॥ शतं कुलानि धूम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥ ५९ ॥ अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः ॥ कम्बूनां चतुराशीति निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ॥ ६० ॥ ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान् ॥ उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ॥ ६१ ॥ चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते ॥ बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥ ६२ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ६३॥ इतिश्रीमार्कण्डेय



Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता ॥ चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ॥ १ ॥ तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥ उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच ॥३॥ मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू ॥ युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि ॥ ४ ॥ शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च ॥ प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् ॥५॥हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् ॥ मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥६॥अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्॥ तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा ॥ ७ ॥ उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत ॥ गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाऽच्छिनत् ॥ ८ ॥ ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी ॥ काली करालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ॥ ९ ॥ तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम् ॥ बभुर्यथाऽर्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम्॥ १० ॥ शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः ॥ छादयामास चक्रैश्च मुण्डक्षिप्तैः सहस्रशः ॥ ११ ॥ क्षणेन तद्बलं सर्वमसुराणां निपातितम् ॥ दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥ १२ ॥ असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः ॥ जग्मुर्विनाशमसुरा दंष्ट्राग्राभिहतास्तथा ॥ १३ ॥ बलिनां तद्बलं सर्वमसुराणां महात्मनाम् ॥ ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तदा ॥ १४ ॥ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथाऽसुरैः ॥ मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ॥ १५ ॥ एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम् ॥ पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसाऽन्यमपोथयत् ॥ १६ ॥ तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह ॥ निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम् ॥ १७ ॥ पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान् ॥ समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥ १८ ॥ सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान् ॥ सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम् ॥ १९ ॥ अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा ॥ निमग्ना रक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा ॥ २० ॥ विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा ॥ द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसाऽतिभैरवा ॥ २१ ॥ भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम् ॥ काली

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

करालवदना विनिष्क्रान्ताऽसिपाशिनी ॥ २२ ॥ ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन्प्रति ॥ कोपेन चास्या वदनं मषीवर्ण मभूत्तदा ॥ २३ ॥ ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः ॥ आकृष्टचापासिधरास्तथाऽन्ये तत्समीपगाः ॥ २४ ॥ ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम् ॥ सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥ २५ ॥ आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमः ॥ चतु रङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥ २६ ॥ ऋषिरुवाच ॥ २७ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये चण्ड मुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते ॥ शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथा म्बिकाम् ॥ १ ॥ केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वा संशयो युधिः ॥ तदाऽशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥ २ ॥ हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुलैः परिवारितौ ॥ तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥ ३ ॥ चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः ॥ आज्ञापयामास चं तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥ ४ ॥ श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम् ॥ बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेस रिणा ततः ॥ ५ क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना ॥ तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपना ॥ ६ ॥ विच्छिन्नबाहु शिरसः कृतास्तेन तथाऽपरे ॥ पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः ॥७॥ केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी ॥ तथा तल प्रहारेण शिरांसि कृतवान्पृथक् ॥ ८ ॥ कांश्चित्करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् ॥ आक्रान्त्या चाधरेणान्यान् जघान स महा सुरान् ॥ ९ ॥ ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम् ॥ पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥ १० ॥ अथ क्रुद्धं महा सैन्यमसुराणां तथाऽम्बिकाम् ॥ ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः ॥११॥ इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः ॥ हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः ॥ १२ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १३ ॥ दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान्बलसंवृतः ॥ बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् ॥ १४ ॥ देव्युवाच ॥ १५ ॥ न चेत्प्रीत्याऽद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति ॥ ततो बलान्नयाम्येष केशा कर्षणविह्वलाम् ॥ १६ ॥ स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम् ॥ जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ १७ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्योधूम्रलोचनः ॥ वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुत ययौ ॥ १८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १९ ॥ तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः ॥ स हन्तव्योऽमरो वाऽपि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥ २० ॥ हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः तामानय बलाद्दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ २१ ॥ तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः ॥ सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ॥ २२ ॥ इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः ॥ समाचष्ट समागम्य दैत्याराजाय विस्तरात् ॥ २३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ २४ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भनिशुम्भसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ स त्वं गच्छ मयैवोक्तं यदेतत्सर्वमादृतः ॥ तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु यत् ॥ १ ॥ एवमेतद्बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान् ॥ किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ॥ २ ॥ देव्युवाच ॥ ३ ॥ सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि ॥ ४ ॥ इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे ॥ शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि संमुखम् ॥ ५ ॥ अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि ॥ तिष्ठन्ति संमुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥ ६ ॥ अवलिप्ताऽसि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः ॥ त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ७ ॥ दूत उवाच ॥ ८ ॥ तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः ॥ मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणि गृह्णातु मे लघु ॥ ९ ॥ यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति ॥ यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥ १० ॥ किंत्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम् ॥ श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥ ११ ॥ सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम् ॥ त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृश ॥ १२ ॥ देव्युवाच ॥ १३ ॥ इत्युक्त्वा सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ ॥ दुर्गा भगवती भद्रा ययेतं धार्यते जगत ॥ १४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १५ ॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात् ॥ एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज ॥ १६ ॥ मां वा ममानुजं वाऽपि निशुम्भमुरुविक्रमम् ॥ भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूताऽसि वै यतः ॥ १७ ॥ स्त्रीरत्नभूतां त्वां

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

देवि लोके मन्यामहे वयम् ॥ सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ॥ १८ ॥ यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च ॥ रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥ १९ ॥ क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः ॥ उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम् ॥ ॥ २० ॥ त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः ॥ तथैव गजरत्नं च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम् ॥ २१ ॥ मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः ॥ यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ॥ २२ ॥ अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु ॥ निर्जिताखिल दैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥ २३ ॥ देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः ॥ दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः ॥ ॥ २४ ॥ दूत उवाच ॥ २५ ॥ स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने ॥ सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥ २६ ॥ इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम ॥ यथा चाभ्येति संप्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥ २७ ॥ निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः ॥ प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुराम् ॥२८॥ ऋषिरुवाच ॥२९॥ एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते ॥ स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥ ३० ॥ निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः ॥ वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥ ३१ ॥ मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता ॥ पाशः सलिलराज्यस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥ ३२ ॥ छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति ॥ तथाऽयं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः ॥ ३३ ॥ निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ॥ किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम् ॥ ३४ ॥ विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे ॥ रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् ॥ ३५ ॥ ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात् ॥ पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥ ३६ ॥ यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो ॥ त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे ॥ ३७ ॥ स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा ॥ सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान्द्रष्टुमर्हति ॥ ३८ ॥ नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम् ॥ ज्ञायतां काऽप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ॥ ३९ ॥ ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा ॥ काऽप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥४०॥ ततोऽम्बिका

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम् ॥ ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ४१ ॥ तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाऽभूत् साऽपि पार्वती ॥ कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥ ४२ ॥ शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताऽम्बिका ॥ कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रं ममैतत्क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः ॥ देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः॥ ॥ ४४ ॥ साऽब्रवीत्तान्सुरान्सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ॥ शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताऽब्रवीच्छिवा ॥ ४५ ॥ एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती ॥ स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥ ४६ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ४७ ॥ या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्मभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ४८ ॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः॥४९॥नमस्तस्यै नमो नमः॥५०॥ नमस्तस्यै ॥ ५१ ॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् ॥ नमस्तस्यै ॥ ५२ ॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ॥ भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ॥ ५३ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५४ ॥ नमस्तस्यै ॥ ५५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५६॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥५७॥ नमस्तस्यै ॥५८॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता॥ नमस्तस्यै ॥ ५९ ॥ नमस्तस्यै नमः ॥ ६० ॥ नमस्तस्यै ॥ ६१ ॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ॥ ६२ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६३ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६५ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६६ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६८ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६९ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७० ॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ७१ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७२ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७३ ॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥७४॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥७५॥ नमस्तस्यै ॥७६ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ७७ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७९ ॥ या देवी

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ८० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८१ ॥ नमस्तस्यै ॥ ८२ ॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ८३ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८४ ॥ नमस्तस्यै ॥ ८५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ८६ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८७ ॥ नमस्तस्यै ॥ ८८ ॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ८९ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ९० ॥ नमस्तस्यै ॥ ९१ ॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ९२ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ९३ ॥ नमस्तस्यै ॥ ९४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपे संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ९५ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ९६ ॥ नमस्तस्यै ॥ ९७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ९८ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ९९ ॥ नमस्तस्यै ॥ १०० ॥ या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥१०१॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १०२ ॥ नमस्तस्यै ॥ १०३ ॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ १०४ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १०५ ॥ नमस्तस्यै ॥१०६॥ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥१०७॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥१०८॥ नमस्तस्यै ॥ १०९ ॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ११० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १११ ॥ नमस्तस्यै ॥ ११२ ॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ॥ नमस्तस्यै ॥ ११३ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ११४ ॥ नमस्तस्यै ॥ ११५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ११६ ॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ ११७ ॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ॥ ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ ११८ ॥ कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः ॥ नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥११९॥रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ॥ ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ १२० ॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ १२१ ॥ देवा ऊचुः ॥ १२२ ॥ इति कृत्वा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मर्ति देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् ॥ जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥ १२३ तयाऽस्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताऽखिलाः ॥ भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥ १२४ ॥ हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः ॥ महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥ १२५ ॥ तावेव पवनार्धं च चक्रतुर्वह्निकर्म च ॥ ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥ १२६ ॥ तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम् ॥ कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥ १२७ ॥ पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः ॥ त्रैलोक्यं यज्ञभगाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥ १२८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १२९ ॥ गौरी० दधौ चाष्टभुजा० ॥ १ ॥ उत्तरचरित्रस्य शिवात्मा सुमेधा भगवान् ऋषिः अनुष्टुप्जगती छन्दसी महासरस्वती देवता भीमा शक्तिः भ्रामरीति बीजं सूर्यस्तत्त्वं क्लीं षडङ्गः ॥ गौरीदेहात्समुद्भूता० ॥ २ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी ॥ तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते ॥ १ ॥ पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाऽभवत् ॥ वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः ॥ २ ॥ इत्येतत्कथितं भूप संभूता सा यथा पुरा ॥ देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥ ३ ॥ इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः ॥ तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ॥ ४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ५ ॥ तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसंपदाम् ॥ वृद्धयेऽस्मत्प्रपन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाऽम्बिके ॥ ६ ॥ संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ॥ यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥ ७ ॥ यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ॥ यदि वाऽपि वरो देयस्त्वयाऽस्माकं महेश्वरि ॥ ८ ॥ भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते ॥ ९ ॥ देवा ऊचुः ॥ १० ॥ व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥ ददाम्यहमतिप्रीत्या स्तवैरेभिः सुपूजिता ॥ ११ ॥ देव्युवाच ॥ १२ ॥ भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैः सुधूपिता ॥ प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान्प्रणतान्सुरान् ॥ १३ ॥ एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः॥ अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः ॥ १४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १५ ॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ कर

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ १६ ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ १७ ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी ॥ १८ ॥ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥१९॥ त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ॥ नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥ २० ॥ केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥ २१ ॥ दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः ॥ वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥ २२ ॥ खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ॥ यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डयोग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥ २३ ॥ दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ॥ लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेषु साध्वी ॥ २४ ॥ एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ॥ संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ॥ ॥ २५ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैःस्मृता मतिमतीव शुभां ददासि॥दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥ २६ ॥ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्याहृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ॥ स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ २७ ॥ ते संमता जनपदेषु धनानि तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ॥ धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा येषां सदाऽभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ २८ ॥ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि ॥ विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥ २९ ॥ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकरालमुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः॥प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं कैर्जीव्यते हि कुपितान्तक

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दर्शनेन ॥ ३० ॥ ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्रबिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्ति कान्तम् ॥ अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथाऽपि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥ ३१ ॥ मेधाऽसि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ॥ श्रीः कटभारिहृदयैककृताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥ ३२ ॥ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानमुद्गीथरम्यपद पाठवतां च साम्नाम् ॥ देवि त्रयी भगवती भवभावनाय वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥ ३३ ॥ या मुक्तिहेतुरविचिन्त्य महाव्रता त्वमभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः ॥ मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषैर्विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि ॥ ३४ ॥ यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ॥ स्वाहाऽसि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतुरुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥ ३५ ॥ हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणाऽपि दोषैर्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ॥ सर्वाश्रयाऽखिलमिदं जगदंशभूत मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ३६ ॥ किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ॥ किं चाहवेषु चरितानि तवातियानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ३७ ॥ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ॥ श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ ३८ ॥ यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ॥ सा चण्डिकाऽखिलजगत्परिपालनाय नाशाय चासुरभयस्य मतिं करोतु ॥ ॥ ३९ ॥ देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या निःशेषदेवगण शक्तिसमूहमूर्त्या ॥ तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ ४० ॥ शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ॥ तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ ४१ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ४२ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे साव र्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः ॥ जगुर्गन्धर्व पतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ १ ॥ ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत् ॥ प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ॥ २ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युद्ध्यमानो महासुरः ॥ तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥ ३ ॥ ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्त स्तया निजमुखात्ततः ॥ अर्धनिष्क्रान्त एवासीद्देव्या वीर्येण संवृतः ॥ ४ ॥ एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम् ॥ पादे नाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ॥ ५ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ६ ॥ गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम् ॥ मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥ ७ ॥ देव्युवाच ॥ ८ ॥ सा च तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्तीशरोत्करैः ॥ उवाच तं मदोद्धूतमुख रागाकुलाक्षरम् ॥ ९ ॥ ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः ॥ विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥ १० ॥ ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम् ॥ पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना ॥ ११ ॥ ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः ॥ तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ १२ ॥ करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च ॥ कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत ॥ १३ ॥ तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः ॥ तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः ॥ १४ ॥ ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः ॥ छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत ॥ १५ ॥ सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम् ॥ तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे ॥१६॥ इति क्रोधसमाध्मातमापतन्त महासुरम् ॥ दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाऽकरोत् ॥ १७ ॥ धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः ॥ श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥१८॥ वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत ॥ लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥ १९ ॥ सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्ण महीतलः ॥ शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च ॥ २० ॥ निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः ॥ सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥ २१ ॥ वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च ॥ निःश्वासपवनेनान्यान्पातयामास भूतले ॥ २२ ॥ कांश्चि त्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथाऽपरान् ॥ लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान् ॥२३॥ एवं संक्षीयमाणेतु स्वसैन्ये महिषा सुरः ॥ माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान्॥२४॥बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः ॥ दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरै

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

र्निन्ये यमक्षयम् ॥ २५ ॥ उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम् ॥ त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥२६॥ देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम् ॥ बाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथाऽन्धकम् ॥ २७ ॥ उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः ॥ दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः॥२८॥ततो वेगात्खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा॥करप्रहारेणशिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् ॥२९॥ युध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ ॥ युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ३० ॥ ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरस्थितः ॥ बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥ ३१ ॥ भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः ॥ चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साऽच्छिनत् ॥३२॥ सोपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामंबिका द्रुतम् ॥ हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥ ॥ ३३ ॥ हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ ॥ आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥३४॥ दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत ॥ तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः ॥ ३५ ॥ चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः ॥ जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ॥ ३६ ॥ तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन ॥ ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः ॥ ३७ ॥ सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि ॥ आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥ ३८ ॥ स च्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः ॥ अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ॥ ३९ ॥ चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम् ॥ विव्याध चैव गात्रेषु च्छिन्नधन्वानमाशुगैः ।४०॥ तस्य च्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान् ॥ जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥४१॥ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः ॥ यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः ॥ ४२ ॥ निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः ॥ सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ॥ ४३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ४४ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं तथाऽसुरैः ॥ यथैषां तुष्टुवुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥ १ ॥ स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः ॥ शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥ २ ॥ क्षणेन

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तन्महासैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका ॥ निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥ ३ ॥ शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र विसुस्रुवुः ॥ मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥ ४ ॥ पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा ॥ अगम्या साऽभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः ॥ ॥ ५ ॥ कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः ॥ तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥ ६ ॥ कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः ॥ ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥ ७ ॥ एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ॥ ८ ॥ शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः ॥ विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥९॥ सेनानुकारिणः प्राणान्मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः ॥ केषांचिद्बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथाऽपरे ॥ १० ॥ केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि ॥ निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥ ११ ॥ विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते ॥ वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥ १२ ॥ असुरान्भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत् ॥ केचिद्द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथाऽपरे ॥ १३ ॥ खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान् ॥ पातयामास चैवान्यान्घण्टास्वनविमोहितान् ॥ १४ ॥ मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन्युद्धमहोत्सवे ॥ ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिऋष्टिभिः ॥ १५ ॥ नाशयन्तोऽसुरगणान्देवीशक्त्युपबृंहिताः ॥ अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथाऽपरे ॥ १६ ॥ त एव सद्यः संभूता गणाः शतसहस्रशः ॥ युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ॥ १७ ॥ चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः ॥ निश्वासान्मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ॥ १८ ॥ मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी ॥ सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी ॥ १९ ॥ लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी ॥ अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः ॥ २० ॥ देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः ॥ साऽपि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥ २१ ॥ युयुधुः संयुगे देव्याः खड्गैः परशुपट्टिशैः ॥ केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथाऽपरे ॥ २२ ॥ हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः ॥ तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥ २३ ॥ युयुधुः

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः ॥ कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥ २४ ॥ युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः ॥ अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः ॥ २५ ॥ वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत ॥ बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भि रथायुतैः ॥ २६ ॥ अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे ॥ गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः ॥ २७ ॥ अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः ॥ पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥ २८ ॥ युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः ॥ रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥२९॥ शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम् ॥ महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥३०॥ दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद्व्याप्य संस्थिताम् ॥ ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् ॥ ३१ ॥ पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम् ॥ क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम् ॥ ३२ ॥ अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः ॥ स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥ ३३ ॥ सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः ॥ आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥३४॥ तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः ॥ दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥३५॥ चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः ॥ जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् ॥ ३६ ॥ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत् ॥ चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥ ३७ ॥ संमानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः ॥ तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥ ३८ ॥ नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम् ॥ अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा ॥ ३९ ॥ ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः ॥ शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् ॥ ४० ॥ अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम् ॥ हिमवान्वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥ ४१ ॥ अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाऽभेद्यं च दंशनम् ॥ अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥ ४२ ॥ अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च ॥ विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ॥४३॥ अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान्सर्वबाहुषु ॥ नूपुरौ विमलौ तद्वद्ग्रैवेयकमनुत्तमम्॥४४॥क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाऽम्बरे ॥ चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥४५॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन्दिवाकरः ॥ कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम् ॥ ४६ ॥ कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ ॥ प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥ ४६ ॥ वज्रमिन्द्रः समुत्पाट्य कुलिशादमराधिपः ॥ ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद्गजात् ॥ ४८ ॥ शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः ॥ मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥ ४९ ॥ शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक् ॥ चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाट्य स्वचक्रतः ॥ ५० ॥ ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम् ॥ तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः ॥ ५१ ॥ भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च ॥ अन्येषां चैव देवानां संभवस्तेजसां शिवा ॥ ५२ ॥ तस्यास्तु दन्ताः संभूताः प्राजापत्येन तेजसा ॥ नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा ॥ ५३ ॥ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदंगुल्योऽर्कतेजसा ॥ वसूनां च करांगुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥ ५४ । सौम्येन स्तनयोर्युग्म मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् । वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः ॥ ५५ ॥ यदभूच्छांभवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम् ॥ याम्येन चाभवन्केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥५६॥ अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम् ॥ एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥५७॥ अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम् ॥ ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्त दिगन्तरम् ॥ ५८ ॥ अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ॥ निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥५९॥ ततोऽतिकोप पूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः ॥ निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च ॥६०॥ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः ॥ चकार कोपं शंभुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥ ॥ ६१ ॥ एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम् ॥ शरणं च प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ६२ ॥ स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि ॥ विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥६३॥ सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च ॥ अन्येषां चाधिकारान्स स्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ६४ ॥ यथा वृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम् ॥ त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम् ॥ ६५ ॥ ततः पराजिता देवा पद्मयोनिं प्रजापतिम् ॥ पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ६६ ॥ तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देव

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सैन्यं पराजितम् ॥ जित्वा च सकलान्देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥ ६७ ॥ देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा ॥ महिषेऽसुराणा मधिपे देवानां च पुरंदरे ॥ ६८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ६९ ॥ श्लोकैर्ध्यात्वा जपेत् ॥ सर्वदेवमयीमीशाम्० ॥ १ ॥ शक्तिर्दण्ड० ॥ २ ॥ अक्षमालाम्० ॥ ३ ॥ अष्टादश० ॥४॥ सुचित्रज० ॥५॥ श्वेतानना० ॥ ६ ॥ मध्यमचरित्रस्य अच्युतात्मा सुमेधा भगवान् ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः महालक्ष्मीर्देवता शाकंभरी शक्तिः दुर्गा बीजं वायुस्तत्त्वं पूर्ववद्विनियोगः ॥ माया ह्रीं बीजेन षडङ्गः ॥ सर्वदेव शरीरेभ्यो० ॥ ७ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् ॥ प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ॥ १ ॥ तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदा भृता ॥ कृत्वा चक्रेण वै छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३ ॥ विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान्कमलेक्षणः ॥ आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥ ४ ॥ वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ॥ ५ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ६ ॥ किम न्येन वरेणात्र एतावृद्धि वृत मम ॥ भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ॥ ८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ९ ॥ उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम् ॥ १० ॥ पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः ॥ तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥ ॥ ११ ॥ क्रोधरक्तेक्षणौ हन्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ ॥ समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ॥१२॥ एकार्णवे हि शयनात्ततः स ददृशे च तौ ॥ मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥ १३ ॥ निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ॥ उत्तस्थौ च जग न्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः ॥ १४ ॥ विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ॥ नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥ १५ ॥ एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ १६ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १७ ॥ बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ १८ ॥ मोह यैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ १९ ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्ति मान् भवेत् ॥ सा त्वमित्थंप्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ २० ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ विष्णुः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ २१ ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ २२ ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिके ॥ २३ ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणाभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ सौम्या सौम्यातराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥ २४ ॥ लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ २५ ॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥ २६ ॥ महामोहा भगवती महादेवी महासुरी ॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥२७॥ तथा संहृतिरूपाऽन्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ २८ ॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ २९ ॥ त्वमेव सा त्वं सावित्री त्वं देवि जननी परा॥त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥ ३० ॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ अर्धमात्रा स्थिता नित्या याऽनुच्चार्या विशेषतः ॥ ॥ ३१ ॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥ ३२ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ३३ ॥ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ ३४ ॥ विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम् ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ ३५ ॥ दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम् ॥ तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः ॥ ३६ ॥ विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ ॥ स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥३७॥ आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान्प्रभुः ॥ तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ॥ ३८ ॥ उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याऽप्यभिधीयते ॥ योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥ ३९ ॥ तथाऽपि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम ॥ देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ॥ ४० ॥ नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥४१॥ ऋषिरुवाच॥ ४२ ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर ॥ ४३ ॥ ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज ॥ यस्स्वभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ॥ ४४ ॥ भगवन्का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥४५॥ राजोवाच ॥४६॥ संसारबन्धहेतुश्च

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥ ४७ ॥ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ॥ सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥ ४८ ॥ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ॥४९॥ महामाया हरेश्चैतत्तया संमोह्यते जगत ॥ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥५०॥ महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा ॥ तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥ ५१ ॥ लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेते किं न पश्यसि ॥ तथाऽपि ममतावर्तं मोहगर्तं निपातिताः ॥ ५२ ॥ कणमोक्षादृतान्मोहात्पीडयमानानपि क्षुधा ॥ मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान्प्रति ॥ ५३ ॥ मनुष्याणां च यत्तेषां तुलयमन्यत्तथोभयोः ॥ ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥५४॥ यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ॥ ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥ ५५ ॥ केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः ॥ ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किंनु ते नहि केवलम् ॥ ५६ ॥ विषयाश्च महाभाग यान्ति चैवं पृथक् पृथक् ॥ दिवाऽन्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथाऽपरे ॥५७॥ ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ॥५८॥ ऋषिरुवाच ॥ ५९ ॥ ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥ ६० ॥ दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ ॥ तत्केनैतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥ ६१ ॥ स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाऽप्यति ॥ एवमेष तथाऽहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ॥ ६२ ॥ जानतोऽपि यथाऽज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम ॥ अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तयोज्झितः ॥ ६३ ॥ दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना ॥ ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि ॥ ६४ ॥ भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥ ६५ ॥ राजोवाच ॥ ६६ ॥ उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥ ६७ ॥ समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः ॥ कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् ॥ ६८ ॥ ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥ ६९ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ॥ ७० ॥ करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥ ७१ ॥ यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु ॥ तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ॥७२॥ पतिः स्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः ॥ किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥ ७३ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

किं करोमि न वध्नाति मम निष्ठुरतां मनः ॥ यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ॥ ७४ ॥ एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ॥ ७५ ॥ वैश्य उवाच ॥ ७६ ॥ तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम् ॥ ७७ ॥ यैर्निरस्तो भवाल्लुँब्धैः पुत्रदारादिभि र्धनैः ॥ ७८ ॥ राजोवाच ॥ ७९ ॥ कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः ॥ ८० ॥ प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः ॥ किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम् ॥ ८१ ॥ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः ॥ सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम् ॥ ८२ ॥ पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः ॥ विहीनः स्वजनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम् ॥ ॥ ८३ ॥ समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥ ८४ ॥ वैश्य उवाच ॥ ८५ ॥ प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम् ॥ ॥ ८६ ॥ सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे ॥ इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥ ८७ ॥ तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः ॥ स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः ॥८८ ॥ संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति ॥ एतच्चा न्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः ॥ ८९ ॥ अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम् ॥ असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥ ९० ॥ मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते ॥ ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः ॥ ९१ ॥ मद्भृत्यैस्तै रसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा ॥ न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः ॥ ९२ ॥ सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः ॥ मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् ॥ ९३ ॥ तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः ॥ इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन् मुनिवराश्रमे ॥ ९४ ॥ स तत्राश्रममद्राक्षीद्द्विजवर्यस्य मेधसः ॥ प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् ॥ ९५ ॥ ततो मृगया व्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः ॥ एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् ॥ ९६ ॥ अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः ॥ कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥ ९७ ॥ ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत् ॥ आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥ ९८ ॥ तस्य तैरभवद्युद्धमतिप्रबलदण्डिनः ॥ न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः ॥ ९९ ॥ तस्य पालयतः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान् ॥ बभूवुःशत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तथा ॥ १०० ॥ स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः ॥ सुरथो नाम राजाऽभूत्समस्ते क्षितिमण्डले ॥ १०१ ॥ महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः ॥ स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ॥ १०२ ॥ सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ॥ निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद्गदतो मम ॥ १०३ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ १०४॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥ इति श्रीह० बृ० ध० उ० श्रीदुर्गोपासनाध्याये दुर्गासंहारपाठक्रमनिरूपणं नामाष्टपंचाशं प्रकरणम् ॥ ५८ ॥ अथ श्रीदुर्गा देवीगीता ॥ उक्तं च देवीभागवते सप्तमस्कन्धे एकत्रिंशेऽध्याये ॥ जन्मेजय उवाच ॥ धराधराधीशमौलावाविरासीत्परं महः ॥ यदुक्तं भवता पूर्वं विस्तरात्तद्वदस्व मे ॥ १ ॥ को विरज्येत मतिमान्पिबञ्छक्तिकथामृतम् ॥ सुधां तु पिबतां मृत्युः स नैत च्छृण्वतो भवेत् ॥ २ ॥ व्यास उवाच ॥ धन्योऽसि कृत्यकृत्योऽसि शिक्षितोऽसि महात्मभिः ॥ भाग्यवानसि यद्देव्यां निर्व्याजा भक्तिरस्ति ते ॥ ३ ॥ शृणु राजन्पुरा वृत्तं सतीदेहेऽग्निभर्जिते ॥ भ्रान्तः शिवस्तु बभ्राम क्वचिद्देशे स्थिरोऽभवत् ॥ ४ ॥ प्रपञ्चभानरहितः समाधिगतमानसः ॥ ध्यायन्देवीस्वरूपं तु कालं निन्ये स आत्मवान् ॥ ५ ॥ सौभाग्यरहितं जातं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ शक्तिहीनं जगत्सर्वं साब्धिद्वीपं सपर्वतम् ॥ ६ ॥ आनन्दः शुष्कतां यातः सर्वेषां हृदयान्तरे ॥ उदासीनाः सर्वलोकाश्चिन्ताजर्जरचेतसः ॥ ७ ॥ सदा दुःखोदधौ मग्ना रोगग्रस्तास्तदाऽभवन् ॥ ग्रहाणां देवतानां च वैपरीत्येन वर्तनम् ॥ ॥ ८ ॥ आधिभूताधिदैवानां सत्यभावा नृपाभवन् ॥ अथास्मिन्नेव काले तु तारकाख्यो महासुरः ॥ ९ ॥ ब्रह्मदत्तवरो दैत्यो ऽभवत्त्रैलोक्यनायकः ॥ शिवौरसस्तु यः पुत्रः स ते हन्ता भविष्यति ॥ १० ॥ इति कल्पितमृत्युः स देवदेवैर्महासुरः ॥ शिवौरससुताभावाज्जगर्ज च ननन्द च ॥ ११ ॥ तेन चोपद्रुताः सर्वे स्वस्थानात्प्रच्युताः सुराः ॥ शिवौरससुताभावाच्चिन्तामापु र्दुरत्ययाम्॥१२॥नाङ्गना शंकरस्यास्ति कथं तत्सुतसंभवः ॥ अस्माकं भाग्यहीनानां कथं कार्यं भविष्यति ॥ १३ ॥ इति चिन्तातुराः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

सर्वे जग्मुर्वैकुण्ठमण्डले ॥ शशंसुर्हरिमेकान्ते स चोपायं जगाद ह ॥ १४ ॥ कुतश्चिन्तातुराः सर्वे कामकल्पद्रुमा शिवा ॥ जागर्ति भुवनेशानी मणिद्वीपाधिवासिनी ॥१५॥ अस्माकमनयादेव तदुपेक्षाऽस्ति नान्यथा ॥ शिक्षैवेयं जगन्मात्रा कृताऽस्मच्छिक्षणायच॥ ॥ १६ ॥ लालने ताडने मातुर्नाकारुण्यं यथाऽर्भके ॥ तद्वदेव जगन्मातुर्नियन्त्र्या गुणदोषयोः ॥ १७ ॥ अपराधो भवत्येव तन यस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहते लोके केवलं मातरं विना ॥ १८ ॥ तस्माद्यूयं पराम्बां तां शरणं यात मा चिरम् ॥ निर्व्याजया चित्तवृत्त्या सा वः कार्यं विधास्यति ॥ १९ ॥ इत्यादिश्य सुरान्सर्वान्महाविष्णुः स्वजायया ॥ संयुतो निर्जगामाशु देवैः सह सुराधिपः ॥ २० ॥ आजगाम महाशैलं हिमवन्तं नगाधिपम् ॥ अभवंश्च सुराः सर्वे पुरश्चरणकर्मिणः ॥२१॥ अम्बायज्ञविधानज्ञा अम्बायज्ञं च चक्रिरे ॥ तृतीयादिव्रतान्याशु चक्रुः सर्वे सुरा नृप ॥ २२ ॥ केचित्समाधिनिष्णाताः केचिन्नामपरायणाः ॥ केचित्सूक्तपराः केचिन्नामपारायणोत्सुकाः ॥ २३ ॥ मन्त्रपारायणपराः केचित्कृच्छ्रादिकारिणः ॥ अन्तर्यागपराः केचित्केचिन्न्यासपरायणाः ॥ २४ ॥ हृल्लेखयाऽपराः शक्तेःपूजां चक्रुरतन्द्रिताः ॥ इत्येवं बहुवर्षाणि कालोऽगाज्जनमेजय ॥ २५ ॥ अकस्माच्चैत्रमासीयनवम्यां च भृगोर्दिने ॥ प्रादुर्बभूव पुरतस्तन्महः श्रुतिबोधितम् ॥ २६ ॥ चतुर्दिक्षु चतुर्वेदैर्मूर्तिमद्भिरभिष्टुतम् ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम् ॥ २७ ॥ विद्युत्कोटिसमानाभमरुणं तत्परं महः ॥ नैव चोर्ध्वं न तिर्यक्च न मध्ये परिजग्रभत् ॥ ॥२८॥ आद्यन्तरहितं तत्तु न हस्ताद्यङ्गसंयुतम् ॥ न च स्त्री रूपथवा न पुंरूपममथोभयम् ॥ २९ ॥ दीप्त्या विधानं नेत्राणां तेषामासीन्महीपते ॥ पुनश्च धैर्यमालम्ब्य यावत्ते ददृशुः सुराः ॥ ३० ॥ तावत्तदेवस्त्रीरूपेणाभाद्दिव्यं मनोहरम् ॥ अतीव रमणीयाङ्गीं कुमारीं नवयौवनाम् ॥ ३१ ॥ उद्यत्पीनकुचद्वन्द्वनिन्दिताम्भोजकुड्मलाम् ॥ रणत्किङ्किणिकाजालसिञ्चन्मञ्जीरमेखलाम् ॥ ३२ ॥ कनकाङ्गदकेयूरग्रैवेयकविभूषिताम् ॥ अनर्घ्यमणिसंभिन्नगलबन्धविराजिताम् ॥३३॥ तनुकेतकसंराजन्नीलभ्रमरकुन्तलाम् ॥ नितम्बबिम्बसुभगां रोमराजिविराजिताम् ॥ ३४ ॥ कर्पूरशकलोन्मिश्रताम्बूलपूरिताननाम् ॥ कनत्कनकताटङ्कविटङ्कवदनाम्बुजाम् ॥ ३५ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अष्टमीचन्द्रबिम्बाभललाटामायतभ्रुवम् ॥ रक्तारविन्दनयनामुन्नसां मधुराधराम् ॥३६॥ कुन्दकुड्मलदन्ताग्रां मुक्ताहारविराजिताम्॥ रत्नसन्निभमुकुटां चन्द्ररेखावतंसिनीम् ॥ ३७ ॥ मल्लिकामालतीमालाकेशपाशविराजिताम् ॥ काश्मीरबिन्दुनिटिलां नेत्रत्रयविलासिनीम् ॥ ३८ ॥ पाशाङ्कुशवराभीतिचतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ॥ रक्तवस्त्रपरीधानां दाडिमीकुसुमप्रभाम् ॥ ३९ ॥ सर्वशृङ्गारवेषाढ्यां सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वाशापूरकां सर्वमातरं सर्वमोहिनीम् ॥ ४० ॥ प्रसादसुमुखीमम्बांमन्दस्मितमुखाम्बुजाम् ॥ अव्याजकरुणामूर्तिं ददृशुः पुरतः सुराः ॥ ४१ ॥ दृष्ट्वा तां करुणामूर्तिं प्रणेमुः सकलाः सुराः ॥ वक्तुं नाशक्नुवन्किंचिद्बाष्पसंरुद्धनिःस्वनाः ॥ प्रेमाश्रुलोचनाः सर्वे विलोकनपराः स्थिताः ॥ ४२ ॥ कथंचित्स्थैर्यमालम्ब्य भक्त्या चानतकन्धराः ॥ प्रेमाश्रुपूर्णनयनास्तुष्टुवुर्जगदम्बिकाम् ॥४३॥ देवा ऊचुः ॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥४४॥ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ॥ दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः ॥ ४५ ॥ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ॥ सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु ॥ ४६ ॥ कालरात्रिं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् ॥ सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्॥४७॥महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ ४८ ॥ नमो विराट्स्वरूपिण्यै नमः सूत्रात्ममूर्तये ॥ नमोऽव्याकृतरूपिण्यै नमः श्रीब्रह्ममूर्तये ॥४९॥ यदज्ञानाज्जगद्भाति रज्जुसर्पस्रगादिवत् ॥ यज्ज्ञानाल्लयमाप्नोति नुमस्तां भुवनेश्वरीम् ॥५०॥ नमस्तत्पदलक्ष्यार्थां चिदेकरसरूपिणीम् ॥ अखण्डानन्दरूपां तां वेदतात्पर्यभूमिकाम् ॥ ५१ ॥ पञ्चकोशातिरिक्तां तामवस्थात्रयसाक्षिणीम् ॥ नुमस्त्वंपदलक्ष्यार्थां प्रत्यगात्मस्वरूपिणीम् ॥५२॥ नमः प्रणवरूपायै नमो ह्रींकारमूर्तये ॥ नानामन्त्रात्मिकायै ते करुणायै नमो नमः॥५३॥इति स्तुता तदा देवैर्मणिद्वीपाधिवासिनी ॥ प्राह वाचा मधुरया मत्तकोकिलनिःस्वना ॥५४॥ श्रीदेव्युवाच॥वदन्तु विबुधाः कार्यं यदर्थमिह संगताः॥ वरदाऽहं सदा भक्तकामकल्पद्रुमाऽस्मि च ॥ ५५ ॥ तिष्ठन्त्यां मयि का चिन्ता युष्माकं भक्तिशालिनाम् ॥ समुद्धरामि मद्भक्त्या

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दुःखसंसारसागरात् ॥५६॥ इति प्रतिज्ञां मे सत्यां जानीथ विबुधोत्तमाः ॥ इति प्रेमाकुलां वाणीं श्रुत्वा संतुष्टमानसाः ॥५७॥ निर्भया निर्जरा राजन्नूचुर्दुःखं स्वकीयकम् ॥ देवा ऊचुः ॥ नाज्ञातं किंचिदप्यत्र भवत्याऽस्ति जगत्त्रये ॥ ५८ ॥ सर्वज्ञया सर्वसाक्षिरूपिण्या परमेश्वरि ॥ तारकेणासुरेन्द्रेण पीडिताः स्मो दिवानिशम् ॥ ५९ ॥ शिवाङ्गजाद्वधस्तस्य निर्मितो ब्रह्मणा शिवे ॥ शिवाङ्गना तु नैवास्ति जानासि त्वं महेश्वरि ॥ ६० ॥ सर्वज्ञपुरतः किंवा वक्तव्यं पामरैर्जनैः ॥ एतदुद्देशतः प्रोक्तमपरं तर्कयाम्बिके ॥ ६१ ॥ सर्वदा चरणाम्भोजे भक्तिः स्यात्तव निश्चला ॥ प्रार्थनीयमिदं मुख्यमपरं देहहेतवे ॥ ६२ ॥ इति तेषां वचः श्रुत्वा प्रोवाच परमेश्वरी ॥ मम शक्तिस्तु या गौरी भविष्यति हिमालये ॥ ६३ ॥ शिवाय सा प्रदेया स्यात्सा वः कार्यं विधास्यति ॥ भक्तिर्मच्चरणाम्भोजे भूयाद्युष्माकमादरात् ॥ ६४ ॥ हिमालयो हि मनसा मामुपास्तेऽतिभक्तितः ॥ ततस्तस्य गृहे जन्म मम प्रियकरं मतम् ॥ ६५ ॥ व्यास उवाच ॥ हिमालयोऽपि तच्छ्रुत्वाऽत्यनुग्रहकरं वचः ॥ बाष्पैः संरुद्धकण्ठाक्षो महाराज्ञीं वचोऽब्रवीत् ॥ ६६ ॥ महत्तरं तं कुरुषे यस्यानुग्रहमिच्छसि ॥ नोचेत्क्वाहं जडः स्थाणुः क्व त्वं सच्चित्स्वरूपिणी ॥ ६७ ॥ असंभाव्यं जन्मशतैस्त्वत्पितृत्वं ममानघे ॥ अश्वमेधादिपुण्यैर्वा पुण्यैर्वा तत्समाधिजैः ॥ ६८ ॥ अद्य प्रपञ्चे कीर्तिः स्याज्जगन्माता सुताऽभवत् ॥ अहो हिमालयस्यास्य धन्योऽसौ भाग्यवानिति ॥ ६९ ॥ यस्यास्तु जठरे सन्ति ब्रह्माण्डानां च कोटयः ॥ सैव यस्य सुता जाता को वा स्यात्तत्समो भुवि ॥ ७० ॥ न जानेऽस्मत्पितॄणां किं स्थानं स्यान्निर्मितं परम् ॥ एतादृशानां वासाय येषां वंशेऽस्ति मादृशः ॥ ७१ ॥ इदं यथा च दत्तं मे कृपया प्रेमपूर्णया ॥ सर्ववेदान्तसिद्धं च त्वद्रूपं ब्रूहि मे तथा ॥ ७२ ॥ योगं च भक्तिसहितं ज्ञानं च श्रुतिसंमतम् ॥ वदस्व परमेशानि त्वमेवाहं यतो भवे ॥ ७३ ॥ व्यास उवाच ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रसन्नमुखपङ्कजा ॥ वक्तुमारभताम्बा सा रहस्यं श्रुतिगूहितम् ॥ ७४ ॥ इति श्रीदेवीगीतायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ शृण्वन्तु निर्जराः सर्वे व्याहरन्त्या वचो मम ॥ यस्य श्रवणमात्रेण मद्रूपत्वं प्रपद्यते ॥ ७५ ॥ अहमेवास पूर्वं तु नान्यत्

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

किंचिन्नगाधिप ॥ तदात्मरूपं चित्संवित्परब्रह्मैकनामकम् ॥ ७६ ॥ अप्रतर्क्यमनिर्देश्यमनौपम्यमनामयम् ॥ तस्य काचित्स्वतः सिद्धा शक्तिर्मायेति विश्रुता ॥७७॥ न सती सा नासती सा नोभयात्मा विरोधतः ॥ एतद्विलक्षणा काचिद्वस्तुभूताऽस्ति सर्वदा ॥ ॥ ७८ ॥ पावकस्योष्णतेवेयमुष्णांशोरिव दीधितिः ॥ चन्द्रस्य चन्द्रिकेवेयं ममेयं सहजा ध्रुवा ॥७९॥ तस्यां कर्माणि जीवानां जीवाः कालश्च संचरे ॥ अभेदेन विलीनाः स्युः सुषुप्तौ व्यवहारवत् ॥८०॥ स्वशक्तेश्च समायोगादहं बीजात्मतां गता ॥ स्वाधारावरणा तस्या दोषत्वं च समागतम् ॥ ८१ ॥ चैतन्यस्य समायोगान्निमित्तत्वं च कथ्यते ॥ प्रपञ्चपरिणामाच्च समवायित्वमुच्यते ॥ ॥ ८२ ॥ केचित्तां तप इत्याहुस्तमः केचिज्जडं परे ॥ ज्ञानं मायां प्रधानं च प्रकृतिं शक्तिमप्यजाम् ॥ ८३ ॥ विमर्श इति तां प्राहुः शैवशास्त्रविशारदाः ॥ अविद्यामितरे प्राहुर्वेदतत्त्वार्थचिन्तकाः ॥ ८४ ॥ एवं नानाविधानि स्युर्नामानि निगमादिषु ॥ तस्या जडत्वं दृश्यत्वाज्ज्ञाननाशात्ततोऽसती ॥ ८५ ॥ चैतन्यस्य न दृश्यत्वं दृश्यत्वे जडमेव तत् ॥ स्वप्रकाशं च चैतन्यं न परेण प्रकाशितम् ॥ ८६ ॥ अनवस्थादोषसत्त्वान्न स्वेनापि प्रकाशितम् ॥ कर्मकर्तृविरोधः स्यात्तस्मात्तद्दीपवत्स्वयम् ॥ ८७ ॥ प्रकाशमानमन्येषां भासकं विद्धि पर्वत ॥ अत एव च नित्यत्वं सिद्धं संवित्तनोर्मम ॥८८॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादौ दृश्यस्य व्यभिचारतः ॥ संविदो व्यभिचारश्च नानुभूतोऽस्ति कर्हिचित् ॥ ८९ ॥ यदि तस्याप्यनुभवस्तर्ह्ययं येन साक्षिणा ॥ अनुभूतः स एवात्र शिष्टः संविद्वपुः पुरा ॥ ९० ॥ अत एव च नित्यत्वं प्रोक्तं सच्छास्त्रकोविदैः ॥ आनन्दरूपता चास्याः परप्रेमास्पदत्वतः ॥ ९१ ॥ मा न भूवं हि भूयासमिति प्रेमात्मनि स्थितम् ॥ सर्वस्यान्यस्य मिथ्यात्वादसङ्गत्वं स्फुटं मम ॥ ९२ ॥ अपरिच्छिन्नताऽप्येवमत एव मता मम ॥ तच्च ज्ञानं नात्मधर्मो धर्मत्वे जडताऽऽत्मनः ॥ ९३ ॥ ज्ञानस्य जडशेषत्वं न दृष्टं न च संभवि ॥ चिद्धर्मत्वं तथा नास्ति चितश्चिन्न हि भिद्यते ॥ ९४ ॥ तस्मादात्मा ज्ञानरूपः सुखरूपश्च सर्वदा ॥ सत्यः पूर्णोऽप्यसङ्गश्च द्वैतजालविवर्जितः ॥ ९५ ॥ स पुनः कामकर्मादियुक्तया स्वीयमायया ॥ पूर्वानुभवसंस्कारात्कालकर्मविपाकतः ॥ ९६ ॥ अविवेकाच्च

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

तत्त्वस्य सिसृक्षावान्प्रजायते ॥ अबुद्धपूर्वः सर्वोऽयं कथितस्ते नगाधिप ॥ ९७ ॥ एतद्धि यन्मया प्रोक्त मम रूपमलौकिकम् ॥ अव्याकृतं तदव्यक्तं मायाशबलमित्यपि ॥ ९८ ॥ प्रोच्यते सर्वशास्त्रेषु सर्वकारणकारणम् ॥ तत्त्वानामादिभूत च सच्चिदानन्दविग्रहम् ॥ ९९ ॥ सर्वकर्मघनीभूतमिच्छाज्ञानक्रियाश्रयम् ॥ ह्रींकारमन्त्रवाच्यं तदादितत्त्वं तदुच्यते ॥ ॥ १०० ॥ तस्मादाकाश उत्पन्नः शब्दतन्मात्ररूपकः ॥ भवेत्स्पर्शात्मको वायुस्तेजोरूपात्मकं पुनः ॥ १०१ ॥ जलं रसात्मकं पश्चात्ततो गन्धात्मिका धरा ॥ शब्दैकगुणआकाशो वायुः स्पर्शरवान्वितः ॥ १०२ ॥ शब्दस्पर्शरूपगुणं तेज इत्युच्यते बुधैः ॥ शब्दस्पर्शरूपरसैरापो वेदगुणाः स्मृताः ॥ १०३ ॥ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धैः पञ्चगुणा धरा ॥ तेभ्योऽभवन्महत्सूत्रं यल्लिङ्गं परिचक्षते ॥१०४॥ सर्वात्मकं तत्संप्रोक्तं सूक्ष्मदेहोऽयमात्मनः ॥ अव्यक्तकारणो देहः स चोक्तः पूर्वमेव हि ॥ १०५ ॥ यस्मिन् जगद्बीजरूपं स्थितं लिङ्गोद्भवो यतः ॥ ततः स्थूलानि भूतानि पञ्चीकरणमार्गतः ॥ १०६ ॥ पञ्चसंख्यानि जायन्ते तत्प्रकारस्त्वथोच्यते ॥ पूर्वोक्तानि च भूतानि प्रत्येकं विभजेद्द्विधा ॥ १०७ ॥ एकैकं भागमेकस्य चतुर्धा विभजेद्गिरे ॥ स्वस्वेतरद्वितीयांशे योजनात्पञ्च पञ्च ते ॥१०८॥ तत्कार्यं च विराड्देहः स्थूलदेहोऽयमात्मनः ॥ पञ्चभूतस्थसत्त्वांशैः श्रोत्रादीनां समुद्भवः ॥ १०९ ॥ ज्ञानेन्द्रियाणां शैलेन्द्र प्रत्येकं मिलितैस्तु तैः ॥ अन्तःकरणमेकं स्याद् वृत्तिभेदाच्चतुर्विधम् ॥११०॥ यदा तु संकल्पविकल्पकृत्यं तदा भवेत्तन्मन इत्यभिख्यम् ॥ स्याद् बुद्धिसंज्ञं च यदा प्रवेत्ति सुनिश्चितं संशयहीनरूपम् ॥ १११ ॥ अनुसंधानरूपं तच्चित्तं च परिकीर्तितम् ॥ अहंकृत्याऽऽत्मवृत्त्या तु तदहंकारतां गतम् ॥ ११२ ॥ तेषां रजोंऽशैर्जातानि क्रमात्कर्मेन्द्रियाणि च ॥ प्रत्येक मिलितैस्तैस्तु प्राणो भवति पञ्चधा ॥ ११३ ॥ हृदि प्राणो गुदेऽपानो नाभिस्थस्तु समानकः ॥ कण्ठदेशेऽप्युदानः स्याद्व्यानः सर्वशरीरगः ॥ ११४ ॥ ज्ञानेन्द्रियाणि पञ्चैव पञ्च कर्मेन्द्रियाणि च ॥ प्राणादिपञ्चकं चैव धिया च सहितं मनः ॥ ११५ ॥ एतत्सूक्ष्मशरीरं स्यान्मम लिङ्गं यदुच्यते ॥ तत्र या प्रकृतिः प्रोक्ता सा राजन् द्विविधा स्मृता ॥ ११६ ॥ सत्त्वात्मिका तु माया स्या



Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

दविद्या गुणमिश्रिता ॥ स्वाश्रयं या तु संरक्षेत्सा मायेति निगद्यते ॥ ११७ ॥ तस्यां यत्प्रतिबिम्बं स्याद्बिम्बभूतस्य चेशितुः ॥ स ईश्वरः समाख्यातः स्वाश्रयज्ञानवान्परः ॥ ११८ ॥ सर्वज्ञः सर्वकर्ता च सर्वानुग्रहकारकः ॥ अविद्यायां तु यत्किंचित्प्रतिबिम्बं नगाधिप ॥ ११९ ॥ तदेव जीवसंज्ञं स्यात्सर्वदुःखाश्रयं पुनः ॥ द्वयोरपीह संप्रोक्तं देहत्रयमविद्यया ॥ १२० ॥ देहत्रयाभिमानाच्चाप्यभून्नामत्रयं पुनः ॥ प्राज्ञस्तु कारणात्मा स्यात्सूक्ष्मदेही तु तैजसः ॥ १२१ ॥ स्थूलदेही तु विश्वाख्यस्त्रिविधः परिकीर्तितः ॥ एवमीशोऽपि संप्रोक्त ईशसूत्रविराट्पदैः ॥ १२२ ॥ प्रथमो व्यष्टिरूपस्तु समष्ट्यात्माऽपरः स्मृतः ॥ स हि सर्वेश्वरः साक्षाज्जीवानुग्रहकाम्यया ॥ १२३ ॥ करोति विविधं विश्वं नानाभोगाश्रयं पुनः ॥ मच्छक्तिप्रेरितो नित्यं मयि राजन् प्रकल्पितः ॥ १२४ ॥ इति श्रीदेवीगीतायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ देव्युवाच ॥ मन्मायाशक्तिसंक्लृप्तं जगत्सर्वं चराचरम् ॥ साऽपि मत्तः पृथङ्‌ माया नास्त्येव परमार्थतः ॥ १२५ ॥ व्यवहारदृशा सेयं विद्या मायेति विश्रुता ॥ तत्त्वदृष्ट्या तु नास्त्येव तत्त्वमेवास्ति केवलम् ॥ ॥ १२६ ॥ साऽहं सर्वं जगत्सृष्ट्वा तदन्तः प्रविशाम्यहम्॥मायाकर्मादिसहिता गिरे प्राणपुरःसरा॥१२७॥लोकान्तरगतिर्नो चेत्कथं स्यादिति हेतुना ॥ यथा यथा भवन्त्येव मायाभेदास्तथा तथा ॥१२८॥ उपाधिभेदाद्भिन्नाऽहं घटाकाशादयो यथा ॥ उच्चनीचादि वस्तूनि भासयन्भास्करः सदा ॥ १२९ ॥ न दुष्यति तथैवाहं दोषैर्लिप्ता कदाऽपि न ॥ मयि बुद्ध्यादिकर्तृत्वमध्यस्यैवापरे जनाः ॥ १३० ॥ वदन्ति चात्मा कर्मेति विमूढा न सुबुद्धयः ॥ अज्ञानभेदतस्तद्वन्मायाया भेदतस्तथा ॥ १३१ ॥ जीवेश्वर विभागश्च कल्पितो माययैव तु ॥ घटाकाशमहाकाशविभागः कल्पितो यथा ॥ १३२ ॥ तथैव कल्पितो भेदो जीवात्मपरमात्मनोः॥ यथा जीवबहुत्वं च मायया न स्वभावतः ॥१३३॥ तथेश्वरबहुत्वं च मायया न स्वभावतः ॥ देहेन्द्रियादिसंघातवासनाभेदभेदिता ॥ १३४ ॥ अविद्या जीवभेदस्य हेतोर्नान्यः प्रकीर्तितः ॥ गुणानां वासनाभेदभेदिता या धराधर ॥ १३५ ॥ माया सा परभेदस्य हेतुर्नान्यः कदाचन ॥ मयि सर्वमिदं प्रोतमोतं च धरणीधर ॥ १३६ ॥ ईश्वरोऽहं च सूत्रात्मा विराडात्माऽहमस्मि च ॥ ब्रह्माऽहं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

विष्णुरुद्रौ च गौरी ब्राह्मी च वैष्णवी ॥ १३७ ॥ सूर्योऽहं तारकाश्चाहं तारकेशस्तथाऽस्म्यहम् ॥ पशुपक्षिस्वरूपाऽहं चाण्डालोऽहं च तस्करः ॥ १३८ ॥ व्याधोऽहं क्रूरकर्माऽहं सत्कर्माऽहं महाजनः ॥ स्त्रीपुंनपुंसकाकारोऽप्यहमेव न संशयः ॥ ॥ १३९ ॥ यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु दृश्यते श्रूयतेऽपि वा ॥ अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्याहं सर्वदा स्थिता ॥ १४० ॥ न तदस्ति मया त्यक्तं वस्तु किंचिच्चराचरम् ॥ यद्यस्ति चेत्तच्छून्यं स्याद्वन्ध्यापुत्रोपमं हि तत् ॥ १४१ ॥ रज्जुर्यथा सर्प मालाभेदैरेका विभाति हि ॥ तथैवेशादिरूपेण भास्म्यहं नात्र संशयः ॥ १४२ ॥ अधिष्ठानातिरेकेन कल्पितं तन्न भासते ॥ तस्मान्मत्सत्तयैवैतत्सत्तावन्नान्यथा भवेत् ॥ १४३ ॥ हिमालय उवाच ॥ यथा वदसि देवेशि समष्ट्यात्मवपुस्त्विदम् ॥ तथैव द्रष्टुमिच्छामि यदि देवि कृपा मयि ॥ १४४ ॥ व्यास उवाच । इति तस्य वचः श्रुत्वा सर्वे देवाः सविष्णवः ॥ ननन्दुर्मुदितात्मानः पूजयन्तश्च तद्वचः ॥ १४५ ॥ अथ देवमतं ज्ञात्वा भक्तकामदुघा शिवा ॥ अदर्शयन्निजं रूपं भक्त कामप्रपूरिणी ॥ १४६ ॥ अपश्यंस्ते महादेव्या विराड्रूपं परात्परम् ॥ द्यौर्मस्तकं भवेद्यस्य चन्द्रसूर्यौ च चक्षुषी ॥ ॥ १४७ ॥ दिशः श्रोत्रे वचो वेदाः प्राणो वायुः प्रकीर्तितः ॥ विश्वं हृदयमित्याहुः पृथिवी जघनं स्मृतम् ॥ १४८ ॥ नभस्तलं नाभिसरो ज्योतिश्चक्रमुरःस्थलम् ॥ महर्लोकस्तु ग्रीवा स्याज्जनोलोको मुखं स्मृतम् ॥ १४९ ॥ तपोलोको रराटिस्तु सत्यलोका दधः स्थितः ॥ इन्द्रादयो बाहवः स्युः शब्दः श्रोत्रं महेशितुः ॥ १५० ॥ नासत्यदस्रौ नासे स्तो गन्धो घ्राणं स्मृतो बुधैः ॥ मुख मग्निः समाख्यातो दिवारात्री च पक्ष्मणी ॥ १५१ ॥ ब्रह्मस्थानं भ्रूविजृम्भोऽप्यापस्तालुः प्रकीर्तिताः ॥ रसो जिह्वा समाख्याता यमो दंष्ट्राः प्रकीर्तिताः ॥ १५२ ॥ दन्ताः स्नेहकला यस्य हासो माया प्रकीर्तिता ॥ स्वर्गस्त्वपाङ्गमोक्षः स्याद्व्रीडोर्ध्वोष्ठो महे शितुः ॥ १५३ ॥ लोभः स्यादधरोष्ठोऽस्य धर्ममार्गस्तु पृष्ठभूः ॥ प्रजापतिश्च मेढ्रं स्याद्यः स्रष्टा जगतीतले ॥ १५४ ॥ कुक्षिः समुद्रा गिरयोऽस्थीनि देव्या महेशितुः ॥ नद्यो नाड्यः समाख्याता वृक्षाः केशाः प्रकीर्तिताः ॥ १५५ ॥ कौमारयौवनजरावयो

Chinmaya, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ऽस्य गतिरुत्तमा ॥ बलाहकास्तु केशाः स्युः सन्ध्ये ते वाससी विभो ॥ १५६ ॥ राजन् श्रीजगदम्बायाश्चन्द्रमास्तु मनः स्मृतम् ॥ विज्ञानशक्तिस्तु हरी रुद्रोऽन्तःकरणं स्मृतम् ॥ १५७ ॥ अश्वादिजातयः सर्वाः श्रोणिदेशे स्थिता विभो ॥ अतलादिमहालोकाः कट्यधोभागतां गताः ॥ १५८ ॥ एतादृशं महारूपं ददृशुः सुरपुङ्गवाः ॥ ज्वालामालासहस्राढ्यं लेलिहानं च जिह्वया ॥ १५९ ॥ दंष्ट्राकटकटारावं वमन्तं वह्निमक्षिभिः ॥ नानायुधधरं वीरं ब्रह्मक्षत्रौदनं च यत् ॥ १६० ॥ सहस्रशीर्षनयनं सहस्रचरणं तथा ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशं विद्युत्कोटिसमप्रभम् ॥ १६१ ॥ भयंकरं महाघोरं हृदक्ष्णोस्त्रासकारकम् ॥ ददृशुस्ते सुराः सर्वे हाहाकारं च चक्रिरे ॥ १६२ ॥ विकम्पमानहृदया मूर्छामापुर्दुरत्ययाम् ॥ स्मरणं च गतं तेषां जगदम्बेयमित्यपि ॥ १६३ ॥ अथ ते ये स्थिता वेदाश्चतुर्दिक्षु महाविभो ॥ बोधयामासुरत्युग्रमूर्च्छातो मूर्च्छितान् सुरान् ॥ १६४ ॥ अथ ते धैर्यमालम्ब्य लब्ध्वा च श्रुतिमुत्तमाम् ॥ प्रेमाश्रुपूर्णनयना रुद्धकण्ठास्तु निर्जराः ॥ १६५ ॥ बाष्पगद्गदया वाचा स्तोतुं समुपचक्रिरे ॥ देवा ऊचुः ॥ अपराधं क्षमस्वाम्ब पाहि दीनांस्त्वदुद्भवान् ॥ १६६ ॥ कोपं संहर देवेशि सभया रूपदर्शनात ॥ का ते स्तुतिः प्रकर्तव्या पामरैर्निजरैरिह ॥ १६७ ॥ स्वस्याप्यज्ञेय एवासौ यावान्यश्च स्वविक्रमः ॥ तदर्वाग् जायमानानां कथं स विषयो भवेत् ॥ १६८ ॥ नमस्ते भुवनेशानि नमस्ते प्रणवात्मिके ॥ सर्ववेदान्तसंसिद्धे नमो ह्रींकारमूर्तये ॥ १६९ ॥ यस्मादग्निः समुत्पन्नो यस्मात्सूर्यश्च चन्द्रमाः ॥ यस्मादोषधयः सर्वास्तस्मै सर्वात्मने नमः ॥ १७० ॥ यस्माच्च देवाः संभूताः साध्याः पक्षिण एव च ॥ पशवश्च मनुष्याश्च तस्मै सर्वात्मने नमः ॥ १७१ ॥ प्राणापानौ व्रीहियवौ तपः श्रद्धा ऋतं तथा ॥ ब्रह्मचर्यविधिश्चैव यस्मात्तस्मै नमो नमः ॥ १७२ ॥ सप्त प्राणार्चिषो यस्मात्समिधः सप्त एव च ॥ होमाः सप्त तथा लोकास्तस्मै सर्वात्मने नमः ॥ १७३ ॥ यस्मात्समुद्रा गिरयः सिन्धवः प्रचरन्ति च ॥ यस्मादोषधयः सर्वा रसास्तस्मै नमो नमः ॥ १७४ ॥ यस्मद्यज्ञः समुद्भूतो दीक्षा यूपश्च दक्षिणा ॥ ऋचो यजूंषि सामानि तस्मै सर्वात्मने नमः ॥ १७५ ॥ नमः पुरस्तात्पृष्ठे च नमस्ते पार्श्वयोर्द्वयोः॥ अध ऊर्ध्वं चतुर्दिक्षु मातर्भूयो नमो नमः॥१७६॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

उपसंहर देवेशि रूपमेतदलौकिकम् ॥ तदेव दर्शयास्माकं रूपं सुंदरसुन्दरम् ॥ १७७ ॥ व्यास उवाच ॥ इति भीतान्सुरान् दृष्ट्वा जगदम्बा कृपार्णवा ॥ संहृत्य रूपं घोरं तद्दर्शयामास सुन्दरम् ॥ १७८ ॥ पाशाङ्कुशवराभीतिधरं सर्वाङ्गकोमलम् ॥ करुणापूर्णनयनं मन्दस्मितमुखाम्बुजम् ॥ १७९ ॥ दृष्ट्वा तत्सुन्दरं रूपं तदा भीतिविवर्जिताः ॥ शान्तचित्ताः प्रणेमुस्ते हर्षगद्गदनिस्वनाः ॥ १८० ॥ इति श्रीदेवीगीतायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ क्व यूयं मन्दभाग्या वै क्वेदं रूपं महाद्भुतम् ॥ तथाऽपि भक्तवात्सल्यादीदृशं दर्शितं मया ॥ १८१ ॥ न वेदाध्ययनैर्योगैर्न दानैस्तपसेज्यया ॥ रूपं द्रष्टुमिदं शक्यं केवलं मत्कृपां विना ॥ १८२ ॥ प्रकृतं शृणु राजेन्द्र परमात्माऽत्र जीवताम् ॥ उपाधियोगात्संप्राप्तः कर्तृत्वादिकमप्युत ॥ १८३ ॥ क्रियाः करोति विविधा धर्माधर्मैकहेतवः ॥ नानायोनीस्ततः प्राप्य सुखदुःखैश्च युज्यते ॥ १८४ ॥ पुनस्तत्संस्कृतिवशान्नानाकर्मरतः सदा ॥ नानादेहान्समाप्नोति सुखदुःखैश्च युज्यते ॥ १८५ ॥ घटीयन्त्रवदेतस्य न विरामः कदाऽपि हि ॥ अज्ञानमेव मूलं स्यात्ततः कामः क्रियास्ततः ॥ १८६ ॥ तस्मादज्ञाननाशाय यतेत नियतं नरः ॥ एतद्धि जन्मसाफल्यं यदज्ञानस्य नाशनम् ॥ १८७ ॥ पुरुषार्थसमाप्तिश्च जीवन्मुक्तदशाऽपि च ॥ अज्ञाननाशने शक्ता विद्यैव तु पटीयसी ॥ १८८ ॥ न कर्म तज्जनोपास्तिविरोधाभावतो गिरे ॥ प्रत्युताशाज्ञाननाशे कर्मणा नैव भाव्यताम् ॥१८९॥ अनर्थदानि कर्माणि पुनः पुनरुशन्ति हि॥ ततो रागस्ततो दोषस्ततोऽनर्थो महान् भवेत् ॥१९०॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ज्ञानं संपादयेन्नरः ॥ कुर्वन्नेवेह कर्माणीत्यतः कर्माप्यवश्यकम् ॥ १९१ ॥ ज्ञानादेव हि कैवल्यमतः स्यात्तत्समुच्चयः ॥ सहायतां व्रजेत्कर्म ज्ञानस्य हितकारि च ॥ १९२ ॥ इति केचिद्वदन्त्यत्र सद्विरोधान्न संभवेत् ॥ ज्ञानाद्धृद्ग्रन्थिभेदः स्याद्धृद्ग्रन्थौ कर्मसंभवः ॥ १९३ ॥ यौगपद्यं न संभाव्यं विरोधात्तु ततस्तयोः ॥ तमःप्रकाशयोर्यद्वद्यौगपद्यं न संभवि ॥ १९४ ॥ तस्मात्सर्वाणि कर्माणि वैदिकानि महामते ॥ चित्तशुद्ध्यन्तमेव स्युस्तानि कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ १९५ ॥ शमो दमस्तितिक्षा च वैराग्यं सत्त्वसंभवः ॥ तावत्पर्यन्तमेव स्युः कर्माणि न ततः परम् ॥१९६॥ तदन्ते चैव संन्यस्य संश्रयेद्गुरुमात्मवान् ॥ श्रोत्रियं

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

ब्रह्मनिष्ठं च भक्त्या निर्व्याजया पुनः ॥ १९७ ॥ वेदान्तश्रवणं कुर्यान्नित्यमेवमतन्द्रितः ॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यस्य नित्यमर्थं विचारयेत् ॥ १९८ ॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यं तु जीवब्रह्मैक्यबोधकम् ॥ ऐक्ये ज्ञाते निर्भयस्तु मद्रूपो हि प्रजायते ॥ १९९ ॥ पदार्थावगतिः पूर्वं वाक्यार्थावगतिस्ततः ॥ तत्पदस्य च वाक्यार्थो गिरेऽहं परिकीर्तितः ॥ २०० ॥ वाच्यार्थयोर्विरुद्धत्वादैक्यं नैव घटेत ह ॥ लक्षणाऽतः प्रकर्तव्या तत्त्वयोः श्रुतिसंस्थयोः ॥२०१॥ चिन्मात्रं तु तयोर्लक्ष्यं तयोरैक्यस्य संभवः ॥ तयोरैक्यं तथा ज्ञात्वा स्वाभेदेनाद्वयो भवेत् ॥२०२॥ देवदत्तः स एवायमितिवल्लक्षणा स्मृता ॥ स्थूलादिदेहरहितो ब्रह्म संपद्यते नरः ॥ २०३ ॥ पञ्चीकृतमहाभूतसंभूतः स्थूलदेहकः ॥ भोगालयो जराव्याधिसंयुतः सर्वकर्मणाम् ॥ २०४ ॥ मिथ्याभूतोऽयमाभाति स्फुटं मायामयत्वतः ॥ सोऽयं स्थूल उपाधिः स्यादात्मनो मे नगेश्वर ॥२०५॥ ज्ञानकर्मेन्द्रिययुतं प्राणपञ्चकसंयुतम् ॥ मनोबुद्धियुतं चैतत्सूक्ष्मं तत्कवयो विदुः ॥ २०६॥ अपञ्चीकृतभूतोत्थं सूक्ष्मदेहोऽयमात्मनः ॥ द्वितीयोऽयमुपाधिः स्यात्सुखादेरवबोधकः ॥ २०७ ॥ अनाद्यनिर्वाच्यमिदमज्ञानं तु तृतीयकः ॥ देहोऽयमात्मनो भाति कारणात्मा नगेश्वर ॥ २०८ ॥ उपाधिविलये जाते केवलात्माऽवशिष्यते ॥ देहत्रये पञ्च कोशा अन्तःस्थाः सन्ति सर्वदा ॥ २०९ ॥ पञ्चकोशपरित्यागे ब्रह्मपुच्छं हि लभ्यते ॥ नेति नेतीत्यादिवाक्यैर्मम रूपं यदुच्यते ॥२१०॥ न जायते म्रियते तत्कदाचिन्नायं भूत्वा न बभूव कश्चित् ॥ अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २११ ॥ हन्ता चेन्मन्यते हन्तुंहतश्चेन्मन्यते हतम् ॥ उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥ २१२ ॥ अणोरणीयन्महतो महीयानात्माऽस्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् ॥ तमक्रतुं पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादान्महिमानमस्य ॥ २१३ ॥ आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु ॥ बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रह एव च ॥ २१४ ॥ इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान् ॥ आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥ २१५ ॥ यस्त्वविद्वान् भवति चामनस्कः सदाऽशुचिः ॥ न तत्पदमवाप्नोति संसारं चाधिगच्छति ॥ २१६ ॥ यस्तु विज्ञानवान्भवति समनस्कः सदा शुचिः ॥ स तु तत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयो

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

न जायते ॥ २१७ ॥ विज्ञानसारथिर्यस्तु मनःप्रग्रहवान्नरः ॥ सोऽध्वनः परमाप्नोति मदीयं यत्परं पदम् ॥ २१८ ॥ इत्थं श्रुत्याच मत्या च निश्चित्यात्मानमात्मनः ॥ भावयेन्मामात्मरूपां निदिध्यासनतोऽपि च ॥ २१९ ॥ योगवृत्तेः पुरा स्वस्मिन्भावयेदक्षर त्रयम् ॥ देवीप्रणवसंज्ञस्य ध्यानार्थं मन्त्रवाच्ययोः ॥ २२० ॥ हकारः स्थूलदेहः स्याद्रकारः स्थूलदेहकः ॥ ईकारः कारणात्मा ऽसौ ह्रींकारोऽहं तुरीयकम् ॥२२१॥ एवं समष्टिदेहेऽपि ज्ञात्वा बीजत्रयं क्रमात् ॥ समष्टिव्यष्टयोरेकत्वं भावयेन्मतिमान्नरः ॥२२२॥ समाधिकालात्पूर्वं तु भावयित्वैवमादृतः ॥ ततो ध्यायेन्निलीनाक्षो देवीं मां जगदीश्वरीम् ॥ २२३ ॥ प्राणापानौ समौ कृत्वा नासा भ्यन्तरचारिणौ ॥ निवृत्तविषयाकांक्षो वीतदोषो विमत्सरः ॥ २२४ ॥ भक्त्या निर्व्याजया युक्तो गुहायां निःस्वने स्थले ॥ हकारं विश्वमात्मानं रकारे प्रविलापयेत् ॥ २२५ ॥ रकारं तैजसं देवमीकारे प्रविलापयेत् ॥ ईकारं प्राज्ञमात्मानं ह्रींकारे प्रविलापयेत् ॥ ॥२२६॥ वाच्यवाचकताहीनं द्वैतभावविवर्जितम् ॥ अखण्डं सच्चिदानन्दं भावयेत्तच्छिखान्तरे ॥ २२७ ॥ इति ध्यानेन मां राजन् साक्षात्कृत्य नरोत्तमः ॥ मद्रूप एव भवति द्वयोरप्येकता यतः ॥ २२८ ॥ योगयुक्त्याऽनया दृष्ट्वा मामात्मानं परात् परम् ॥ अज्ञानस्य स कार्यस्य तत्क्षणे नाशको भवेत् ॥ २२९ ॥ इति श्रीदेवीगीतायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ हिमालय उवाच ॥ योगं वद महेशानि सांगं संवित्प्रदायकम् ॥ कृतेन येन योग्योऽहं भवेयं तत्त्वदर्शने ॥ २३० ॥ न योगो नभसः पृष्ठे न भूमौ न रसातले ॥ ऐक्यं जीवात्मनोराहुर्योगं योगविशारदाः ॥ २३१ ॥ तत्प्रत्यूहाः षडाख्याता योगविघ्न करा नग ॥ कामक्रोधौ लोभमोहौ मदमात्सर्यसंज्ञकौ॥२३२॥योगांगैरेव भित्त्वा तान्योगिनो योगमाप्नुयुः ॥ यमं नियममासनप्राणा यामौ ततः परम् ॥ २३३ ॥ प्रत्याहारं धारणाख्यं ध्यानं सार्धं समाधिना ॥ अष्टाङ्गान्याहुरेतानि योगिनां योगसाधने ॥ २३४ ॥ अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यं दयाऽऽर्जवम् ॥ क्षमा धृतिर्मिताहारः शौचं चेति यमा दश ॥ २३५ ॥ तपः संतोष आस्तिक्यं दानं देवस्य पूजनम् ॥ सिद्धान्तश्रवणं चैव ह्रीर्मतिश्च जपो हुतम् ॥२३६॥ दशैते नियमाः प्रोक्ता मया पर्वतनायक ॥ पद्मासनंस्वस्तिकं

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

च भद्रं वज्रासनं तथा ॥ २३७ ॥ वीरासनमिति प्रोक्तं क्रमादासनपञ्चकम् ॥ ऊर्वोरुपरि विन्यस्य सम्यक्पादतले शुभे ॥ २३८ ॥ अंगुष्ठौ च निबध्नीयाद्धस्ताभ्यां व्युत्क्रमात्ततः ॥ पद्मासनमिति प्रोक्तं योगिनां हृदयंगमम् ॥ २३९ ॥ जानूर्वोरन्तरे सम्यक् कृत्वा पादतले शुभे ॥ ऋजुकायो विशेद्योगी स्वस्तिकं तत्प्रचक्षते ॥ २४० ॥ सीवन्याः पार्श्वयोर्न्यस्य गुल्फयुग्मं सुनिश्चितम् ॥ वृषणाधः पापपार्ष्णिः पाणिभ्यां परिबन्धयेत् ॥ २४१ ॥ भद्रासनमिति प्रोक्तं योगिभिः परिपूजितम् ॥ ऊर्वोः पादौ क्रमान्न्यस्य जान्वोः प्रत्यङ्मुखांगुली ॥ २४२ ॥ करौ विदध्यादाख्यातं वज्रासनमनुत्तमम् ॥ एकं पादमधः कृत्वा विन्यस्योरुं तथोत्तरे ॥२४३॥ ऋजुकायो विशेद्योगी वीरासनमितीरितम् ॥ इडया कर्षयेद्वायुं बाह्यं षोडशमात्रया ॥२४४॥ धारयेत्पूरितं योगी चतुःषष्ट्यातुमात्रया ॥ सुषुम्नामध्यगं सम्यग्द्वात्रिंशन्मात्रया शनैः ॥ २४५ ॥ नाड्या पिङ्गलया चैव रेचयेद्योगवित्तमः ॥ प्राणायाममिमं प्राहुर्योगशास्त्रविशारदाः ॥ २४६ ॥ भूयो भूयः क्रमात्तस्य बाह्यमेवं समाचरेत् ॥ मात्रावृद्धिः क्रमेणैव सम्यग्द्वादश षोडश ॥ २४७ ॥ जपध्यानादिभिः सार्धं सगर्भं तं विदुर्बुधाः ॥ तदपेतं विगर्भं च प्राणायामं परे विदुः ॥ २४८ ॥ क्रमादभ्यस्यतः पुंसो देहे स्वेदोद्गमोऽधमः ॥ मध्यमः कम्पसंयुक्तो भूमित्यागः परो मतः ॥ २४९ ॥ उत्तमस्य गुणावाप्तिर्यावच्छीलनमिष्यते ॥ इन्द्रियाणां विचरतां विषयेषु निरर्गलम् ॥ २५० ॥ बलादाहरणं तेभ्यः प्रत्याहारोऽभिधीयते ॥ अंगुष्ठगुल्फजानूरुमूलाधारलिङ्गनाभिषु ॥ २५१ ॥ हृद्ग्रीवाकण्ठदेशस्तु लम्बिकायां ततो नसि ॥ भ्रूमध्ये मस्तके मूर्ध्नि द्वादशान्ते यथाविधि ॥ २५२ ॥ धारणं प्राणमरुतो धारणेति निगद्यते ॥ समाहितेन मनसा चैतन्यान्तरवर्तिना ॥ २५३ ॥ आत्मन्यभीष्टदेवानां ध्यानं ध्यानमिहोच्यते ॥ समत्वभावना नित्यं जीवात्मपरमात्मनोः ॥ २५४ ॥ समाधिमाहुर्मुनयः प्रोक्तमष्टाङ्गलक्षणम् ॥ इदानीं कथये तेऽहं मन्त्रयोगमनुत्तमम् ॥२५५॥ विश्वं शरीरमित्युक्तं पञ्चभूतात्मकं नग ॥ चन्द्रसूर्याग्नितेजोभिर्जीवब्रह्मैक्यरूपकम् ॥ २५६ ॥ तिस्रः कोट्यस्तदर्धेन शरीरे नाड्यो मताः ॥ तासु मुख्या दश प्रोक्तास्ताभ्यस्तिस्रो व्यवस्थिताः ॥ २५७ ॥ प्रधाना मेरुदण्डेऽत्र चन्द्रसूर्याग्निरूपिणी ॥ इडा वामे स्थिता

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

नाडी शुभ्रा तु चन्द्ररूपिणी ॥ २५८ ॥ शक्तिरूपा तु सा नाडी साक्षादमृतविग्रहा ॥ दक्षिणे या पिङ्गलाख्या पुंरूपा सूर्यविग्रहा ॥ ॥ २५९ ॥ सर्वतेजोमयी सा तु सुषुम्ना वह्निरूपिणी ॥ तस्या मध्ये विचित्राख्ये इच्छाज्ञातक्रियात्मकम् ॥ २६० ॥ मध्ये स्वयंभू लिङ्गं तु कोटिसूर्यसमप्रभम् ॥ तदूर्ध्वं मायाबीजं तु हरात्मा बिन्दुनादकम् ॥ २६१ ॥ तदूर्ध्वं तु शिखाकारा कुण्डली रक्तविग्रहा ॥ देव्यात्मिका तु सा प्रोक्ता मदभिन्ना नगाधिप ॥ २६२ ॥ तद्बाह्ये हेमरूपाभं वादिसान्तचतुर्दलम् ॥ द्रुतहेमसमप्रख्यं पद्मं तत्र विचिन्तयेत् ॥ २६३ ॥ तदूर्ध्वं त्वनलप्रख्यं षड्दलं हीरकप्रभम् ॥ हादिलान्तषडर्णेन स्वाधिष्ठानमनुत्तमम् ॥ २६४ ॥ मूलमाधार षट्कानां मूलधारं ततो विदुः ॥ स्वशब्देन परं लिङ्गं स्वाधिष्ठानं ततो विदुः ॥ २६५ ॥ तदूर्ध्वं नाभिदेशे तु मणिपूरं महा प्रभम् ॥ मेघाभं विद्युदाभं च बहुतेजोमयं ततः ॥२६६ ॥ मणिवद्भिन्नं तत्पद्मं मणिपद्मं तथोच्यते ॥ दशभिश्च दलैर्युक्तं डादिफान्ताक्ष रान्वितम् ॥ २६७ ॥ विष्णुनाऽधिष्ठितं पद्मं विष्ण्वालोकनकारणम् ॥ तदूर्ध्वेऽनाहतं पद्ममुद्यदादित्यसन्निभम् ॥ २६८ ॥ कादिठान्त दलैरर्कपत्रैश्च समधिष्ठितम् ॥ तन्मध्ये बाणालिङ्गं तु सूर्यायुतसमप्रभम् ॥ २६९ ॥ शब्दब्रह्ममयं शब्दानाहतं तत्र दृश्यते ॥ अनाहताख्यं तत्पद्मं मुनिभिः परिकीर्तितम् ॥ २७० ॥ आनन्दसदनं तत्तु पुरुषाधिष्ठितं परम् ॥ तदूर्ध्वं तु विशुद्धाख्यं दलषोडश पङ्कजम् ॥ २७१ ॥ स्वरैः षोडशभिर्युक्तं धूम्रवर्णं महाप्रभम् ॥ विशुद्धं तनुते यस्माज्जीवस्य हंसलोकनात् ॥ २७२ ॥ विशुद्धं पद्म माख्यातमाशाख्यं महाद्भुतम् ॥ आज्ञाचक्रं तदूर्ध्वं तु आत्मनाऽधिष्ठितं परम् ॥ २७३ ॥ आज्ञासंक्रमणं तत्र तेनाज्ञेति प्रकीर्ति तम् ॥ द्विदलं हक्षसंयुक्तं पद्मं तत्सुमनोहरम् ॥ २७४ ॥ कैलासाख्यं तदूर्ध्वं तु रोधिनी तु तदूर्ध्वतः ॥ एवं त्वाधारचक्राणि प्रोक्तानि तव सुव्रत ॥ २७५ ॥ सहस्रायुतं बिन्दुस्थानं तदूर्ध्वमीरितम् ॥ इत्येतत्कथितं सर्वं योगमार्गमनुत्तमम् ॥ २७६ ॥ आदौ पूरक योगेनाप्याधारे योजयेन्मनः ॥ गुदमेढ्रान्तरे शक्तिस्तामाकुञ्च्य प्रबोधयेत् ॥ २७७ ॥ लिङ्गभेदक्रमेणैव बिन्दुचक्रं च प्रापयेत् ॥ शंभुना तां परां शक्तिमेकीभूतां विचिन्तयेत् ॥ २७८ ॥ तत्रोत्थितामृतं यत्तु द्रुतलाक्षारसोपमम् ॥ पाययित्वा तु तां शक्तिं मायाख्यां

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

योगसिद्धिदाम् ॥ २७९ ॥ षट्चक्रदेवतास्तत्र संतर्प्यामृतधारया ॥ आनयेत्तेन मार्गेण मूलधारं ततः सुधीः ॥ २८० ॥
एवमभ्यस्यमानस्याप्यहन्यहनि निश्चितम् ॥ जरामरणदुःखाद्यैर्मुच्यते भवबन्धात् ॥ २८१ ॥ पूर्वोक्तदूषिता मन्त्राः सर्वे
सिद्ध्यन्ति नान्यथा ॥ ये गुणाः सन्ति देव्या मे जगन्मातुर्यथा तथा ॥ २८२ ॥ ते गुणाः साधकवरे भवन्त्ये च नान्यथा ॥
इत्येवं कथितं तात वायुधारणमुत्तमम् ॥ २८३ ॥ इदानीं धारणाख्यं तु शृणुष्वावहितो मम ॥ दिक्कालाद्यनवच्छिन्नदेव्यां चेतो
विधाय च ॥ २८४ ॥ तन्मयो भवति क्षिप्रं जीवब्रह्मैक्ययोजनात् ॥ अथवा समलं चेतो यदि क्षिप्रं न सिद्ध्यति ॥ २८५ ॥
तदाऽवयवयोगेन योगी योगान्समभ्यसेत् ॥ मदीयहस्तपादादावङ्गे तु मधुरे नग ॥ २८६ ॥ चित्तं संस्थापयेन्मन्त्री स्थानं स्थान
जयात्पुनः ॥ विशुद्धचित्तः सर्वस्मिन् रूपे संस्थापयेन्मनः ॥ २८७ ॥ यावन्मनो लयं याति देव्यां संविदि पर्वत ॥ तावदिष्टमनु
मन्त्री जपहोमैः समभ्यसेत् ॥ २८८ ॥ मन्त्राभ्यासेन योगेन ज्ञेयज्ञानाय कल्पते ॥ न योगेन विना मन्त्रो न मन्त्रेण विना हि
सः ॥ २८९ ॥ द्वयोरभ्यासयोगो हि ब्रह्मसंसिद्धिकारणम् ॥ तमःपरिवृते गेहे घटो दीपेन दृश्यते ॥ २९० ॥ एवं मायावृतो ह्यात्मा
मनुना गोचरीकृतः ॥ योगविधिः कृत्स्नः साङ्गः प्रोक्तो मयाऽधुना ॥ २९१ ॥ गुरुपदेशतो ज्ञेयो नान्यथा शास्त्रकोटिभिः
॥ २९२ ॥ इति श्रीदेवीगीतायां पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ इत्यादियोगयुक्तात्मा ध्यायेन्मां ब्रह्मरूपिणीम् ॥ भक्त्या
निर्व्याजया राजन्नासने समुपस्थितः ॥ २९३ ॥ आविःसन्निहितं गुहाचरं नाम महत्पदम् ॥ अत्रैतत्सर्वमर्पितमेजत्प्राणन्निमिषच्च
यत् २९४ ॥ एतज्जानथ सदसद्वरेण्यं परं विज्ञानाद्यद्वरिष्ठं प्रजानाम् ॥ यदर्चिमद्यदणुभ्योऽणु च यस्मिंल्लोका निहिता लोकि
नश्च ॥ २९५ ॥ तदेतदक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदु वाङ् मनः ॥ तदेतत्सत्यममृतं तद्वेद्धव्यं सौम्य विद्धि ॥ २९६ ॥ धनु
र्गृहीत्वौपनिषदं महास्त्रं शरं ह्युपासानिशितं संधयीत ॥ आयम्य तद्भावगतेन चेतसा लक्ष्यं तदेवाक्षरं सौम्य विद्धि ॥ २९७ ॥
प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते ॥ अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥ २९८ ॥ यस्मिन्द्यौश्च पृथिवी चान्तरिक्ष

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मोतं मनः सह प्राणैश्च सर्वैः ॥ तमेवैकं जानथात्मानमन्या वाचो विमुञ्चथाऽमृतस्यैष सेतुः ॥ २९९ ॥ अरा इव रथनाभौ संहता यत्र नाड्यः ॥ स एषोऽन्तश्चरते बहुधा जायमानः ॥ ३०० ॥ ॐ इत्येवं ध्यायतात्मानं स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात् ॥ दिव्ये ब्रह्मपुरे व्योम्नि आत्मा संप्रतिष्ठितः ॥ ३०१ ॥ मनोमयः प्राणशरीरनेता प्रतिष्ठितोऽन्ने हृदयं सन्निधाय ॥ तद्विज्ञानेन परि पश्यन्ति धीरा आनन्दरूपममृतं यद्विभाति ॥ ३०२ ॥ भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः॥क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥ ३०३ ॥ हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलम् ॥ तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः ॥ ३०४ ॥ न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः ॥ तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥ ३०५ ॥ ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्ताद्ब्रह्म पश्चाद्ब्रह्म दक्षिणतश्चोत्तरेण ॥ अधश्चोर्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वं वरिष्ठम् ॥ ३०६ ॥ एतादृ गनुभवो यस्य स कृतार्थो नरोत्तमः ॥ ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ॥३०७॥ द्वितीयाद्वै भयं राजंस्तदभावाद्बिभेति न ॥ न तद्वियोगो मेऽप्यस्ति मद्वियोगोऽपि तस्य न ॥ ३०८ ॥ अहमेव स सोऽहं वै निश्चितं विद्धि पर्वत ॥ मद्दर्शन तु तत्र स्या द्यत्र ज्ञानी स्थितो मम ॥ ॥ ३०९ ॥ नाहं तीर्थे न कैलासे वैकुण्ठे वा न कर्हिचित् ॥ वसामि किन्तु मज्ज्ञानिहृदयाम्भोजमध्यमे ॥ ३१० ॥ मत्पूजाकोटिफलदं सकृन्मज्ज्ञानिनोऽर्चनम् ॥ कुलं पवित्रं तस्यास्ति जननी कृतकृत्यका ॥३११॥ विश्वंभरा पुण्यवती चिल्लयो यस्य चेतसः ॥ ब्रह्मज्ञानं तु यत्पृष्टं त्वया पर्वतसत्तम ॥ ३१२ ॥ कथितं तन्मया सर्वं नातो वक्तव्यमस्ति हि॥इदं ज्येष्ठाय पुत्राय भक्तियुक्ताय शीलिने ॥ ३१३ ॥ शिष्याय च यथोक्ताय वक्तव्यं नान्यथा क्वचित् ॥ यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ॥ ३१४ ॥ तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥ येनोपदिष्टा विद्येयं स एव परमेश्वरः ॥ ३१५ ॥ यस्यायं सुकृतं कर्तु मसमर्थस्ततो ऋणी ॥ पित्रोरप्यधिकः प्रोक्तो ब्रह्मजन्मप्रदायकः ॥ ३१६ ॥ पितृजातं जन्म नष्टं नेत्थं जातं कदाचन ॥ तस्मै न द्रुह्येदित्यादि निगमोऽप्यवदन्नग ॥ ३१७ ॥ तस्माच्छास्त्रस्य सिद्धान्तो ब्रह्मदाता गुरुः परः ॥ शिवे रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न

Chinmaya Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

शङ्करः॥३१८॥तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्रीगुरुं तोषयेन्नग ॥ कायेन मनसा वाचः सर्वदा तत्परो भवेत्॥३१९॥अन्यथा तु कृतघ्नःस्यात्कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः ॥ इन्द्रेणाथर्वणायोक्ता शिरश्छेदप्रतिज्ञया ॥ ३२० ॥ अश्विभ्यां कथने तस्य शिरश्छिन्नं च वज्रिणा ॥ अश्वीयं तच्छिरो नष्टं दृष्ट्वा वैद्यौ सुरोत्तमौ ॥ ३२१ ॥ पुनः संयोजितं स्वीयं ताभ्यां मुनिशिरस्तदा ॥ इति संकटसंपाद्या ब्रह्मविद्या नगाधिप ॥ ३२२ ॥ लब्धा येन स धन्यः स्यात्कृतकृत्यश्च भूधर ॥ ३२३ ॥ इति श्रीदेवीगीतायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ हिमालय उवाच ॥ स्वीयां भक्तिं वदस्वाम्ब येन ज्ञानं सुखेन हि ॥ जायेत मनुजस्यास्य मध्यमस्याविरागिणः ॥ ३२४ ॥ देव्युवाच ॥ मार्गास्त्रयो मे विख्याता मोक्षप्राप्तौ नगाधिप ॥ कर्मयोगो ज्ञानयोगो भक्तियोगश्च सत्तम ॥ ३२५ ॥ त्रयाणामप्ययं योग्यः कर्तुं शक्योऽस्ति सर्वदा ॥ सुलभत्वान्मानसत्वात्कायचित्ताद्यपीडनात् ॥ ३२६ ॥ गुणभेदान्मनुष्याणां सा भक्तिस्त्रिविधा मता ॥ परपीडां समुद्दिश्य दम्भं कृत्वा पुरःसरम् ॥ ३२७ ॥ मात्सर्यक्रोधयुक्तो यस्तस्य भक्तिस्तु तामसी ॥ परपीडादिरहितः स्वकल्याणार्थमेव च ॥ ३२८ ॥ नित्यं सकामो हृदये यशोऽर्थी भोगलोलुपः ॥ तत्तत्फलसमावाप्त्यै मामुपास्तेऽतिभक्तितः ॥ ३२९ ॥ भेदबुद्ध्या तु मां स्वस्मादन्यां जानाति पामरः ॥ तस्य भक्तिः समाख्याता नगाधिप तु राजसी ॥ ३३० ॥ परमेशार्पणं कर्म पापसंक्षालनाय च ॥ वेदोक्तत्वादवश्यं तत्कर्तव्यं तु मयाऽनिशम् ॥ ३३१ ॥ इति निश्चितबुद्धिस्तु भेदबुद्धिमुपाश्रितः ॥ करोति प्रीतये कर्म भक्तिः सा नग सात्त्विकी ॥ ३३२ ॥ परभक्तेः प्रापिकेयं भेदबुद्ध्यवलम्बनात्॥पूर्वप्रोक्ते ह्युभे भक्ती न परप्रापिके मते ॥३३३॥ अधुना परभक्तिं तु प्रोच्यमानां निबोध मे ॥ मद्गुणश्रवणं नित्यं मम नामानुकीर्तनम् ॥ ३३४ ॥ कल्याणगुणरत्नानामाकरायां मयि स्थिरम् ॥ चेतसो वर्त्तनं चैव तैलधारासमं सदा ॥ ३३५ ॥ हेतुस्तु तत्र को वाऽपि न कदाचिद्भवेदपि ॥ सामीप्यसार्ष्टिसायुज्यसालोक्यानां न चेषणा ॥३३६॥ मत्सेवातोऽधिकं किंचिन्नैव जानाति कर्हिचित् ॥ सेव्यसेवकताभावात्तत्र मोक्षं न वाञ्छति ॥३३७॥ परानुरक्त्या मामेव चिन्तयेद्यो ह्यतन्द्रितः ॥ स्वाभेदेनैव मां नित्यं जानाति न विभेदतः ॥ ३३८ ॥ मद्रूपत्वेन जीवानां

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

*चिन्तनं कुरुते तु यः ॥ यथा स्वस्यात्मनि प्रीतिस्तथैव च परात्मनि* ॥ ३३९ ॥ चैतन्यस्य समानत्वान्न भेदं कुरुते तु यः ॥ सर्वत्र वर्तमानां मां सर्वरूपां च सर्वदा ॥ ३४० ॥ नमते यजते चैवाप्याचाण्डालान्तमीश्वर ॥ न कुत्रापि द्रोहबुद्धिं कुरुते भेद वर्जनात् ॥ ३४१ ॥ मत्स्थानदर्शने श्रद्धा मद्भक्तदर्शने तथा ॥ मच्छास्त्रश्रवणे श्रद्धा मन्त्रतन्त्रादिषु प्रभो ॥ ३४२ ॥ मयि प्रेमाकुल मती रोमाञ्चिततनुः सदा ॥ प्रेमाश्रुजलपूर्णाक्षः कण्ठगद्गदनिःस्वनः ॥ ३४३ ॥ अनन्येनैव भावेन पूजयेद्यो नगाधिप ॥ मामीश्वरीं जगद्योनिं सर्वकारणकारणम् ॥ ३४४ ॥ व्रतानि मम दिव्यानि नित्यनैमित्तिकान्यपि ॥ नित्यं यः कुरुते भक्त्या वित्तशाठ्य विवर्जितः ॥ ३४५ ॥ मदुत्सवदिदृक्षा च मदुत्सवकृतिस्तथा ॥ जायते यस्य नियतं स्वभावादेव भूधर ॥ ३४६ ॥ उच्चैर्गायंश्च नामानि ममैव खलु नृत्यति ॥ अहंकारादिरहितो देहतादात्म्यवर्जितः ॥ ३४७ ॥ प्रारब्धेन यथा यच्च क्रियते यत्तथा भवेत् ॥ न मे चिन्ताऽस्ति तत्रापि देहसंरक्षणादिषु ॥ ३४८ ॥ इति भक्तिस्तु या प्रोक्ता परभक्तिस्तु सा स्मृता ॥ यस्यां देव्यतिरिक्तं तु न किंचिदपि भाव्यते ॥ ३४९ ॥ इत्थं जाता परा भक्तिर्यस्य भूधर तत्त्वतः ॥ तदैव तस्य चिन्मात्रे मद्रूपे विलयो भवेत् ॥ ३५० ॥ भक्तेस्तु या परा काष्ठा सैव ज्ञानं प्रकीर्तितम् ॥ वैराग्यस्य च सीमा सा ज्ञाने तदुभयं यतः ॥ ३५१ ॥ भक्तौ कृतायां यस्यापि प्रारब्धवशतो नग ॥ न जायते मम ज्ञानं मणिद्वीपं स गच्छति ॥ ३५२ ॥ तत्र गत्वाऽखिलान्भोगाननिच्छन्नपि चर्च्छति ॥ तदन्ते मम चिद्रूपज्ञानं सम्यग्भवेन्नग ॥ ३५३ ॥ तेन मुक्तः सदैव स्याज्ज्ञानान्मुक्तिर्न चान्यथा ॥ इहैव यस्य ज्ञानं स्याद्धृद्गतप्रत्यगात्मनः ॥ ३५४ ॥ मम संवित्परतनोस्तस्य प्राणा व्रजन्ति न ॥ ब्रह्मैव संस्तदाऽऽप्नोति ब्रह्मैव ब्रह्म वेद यः ॥३५५॥ कण्ठचामीकरसममज्ञा नात्तु तिरोहितम् ॥ ज्ञानादज्ञाननाशेन लब्धमेव हि लभ्यते ॥ ३५६ ॥ विदिताविदितादन्यन्नगोत्तम वपुर्मम ॥ यथाऽऽदर्शे तथा ऽऽत्मनि यथा जले तथा पितृलोके ॥ ३५७ ॥ छायातपौ यथा स्वच्छौ विविक्तौ तद्वदेव हि ॥ मम लोके भवेज्ज्ञानं द्वैतभाव विवर्जितम् ॥ ३५८ ॥ यस्तु वैराग्यवानेव ज्ञानहीनो म्रियेत चेत् ॥ ब्रह्मलोके वसेन्नित्यं यावत्कल्पं ततः परम् ॥ ३५९ ॥ शुचीनां

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

श्रीमतां गेहे भवेत्तस्य जनिः पुनः ॥ करोति साधनं पश्चात्ततो ज्ञानं हि जायते ॥ ३६० ॥ अनेकजन्मभी राजन् ज्ञानं स्यान्नैकजन्मना ॥ ततः सर्वप्रयत्नेन ज्ञानार्थं यत्नमाश्रयेत् ॥ ३६१ ॥ नो चेन्महाविनाशः स्याज्जन्मैतद् दुर्लभं पुनः ॥ तत्रापि प्रथमे वर्णे वेदप्राप्तिश्च दुर्लभा ॥ ३६२ ॥ शमादिषट्कसंपत्तिर्योगसिद्धिस्तथैव च ॥ तथोत्तमगुरुप्राप्तिः सर्वमेवात्र दुर्लभम् ॥ ३६३ ॥ तथेन्द्रियाणां पटुता संस्कृततत्वं तनोस्तथा ॥ अनेकजन्मपुण्यैस्तु मोक्षेच्छा जायते ततः ॥ ३६४ ॥ साधने सकलेऽप्येवं जायमानेऽपि यो नरः ॥ ज्ञानार्थं नैव यतते तस्य जन्म निरर्थकम् ॥ ३६५ ॥ तस्माद्राजन्यथाशक्त्या ज्ञानार्थं यत्नमाश्रयेत् ॥ पदे पदेऽश्वमेधस्य फलमाप्नोति निश्चितम् ॥ ३६६ ॥ घृतमिव पयसि निगूढं भूते भूते च वसति विज्ञानम् ॥ सततं मन्थयितव्यं मनसा मन्थानभूतेन ॥ ३६७ ॥ ज्ञानं लब्ध्वा कृतार्थः स्यादिति वेदान्तडिण्डिमः ॥ सर्वमुक्तं समासेन किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ ३६८ ॥ इति श्रीदेवीगीतायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ हिमालय उवाच ॥ कति स्थानानि देवेशि द्रष्टव्यानि महीतले ॥ मुख्यानि च पवित्राणि देवीप्रियतमानि च ॥ ३६९ ॥ व्रतान्यपि तथा यानि तुष्टिदान्युत्सवा अपि ॥ तत्सर्वं वद मे मातः कृतकृत्यो यतो नरः ॥ ३७० ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ सर्वं दृश्यं मम स्थानं सर्वे काला व्रतात्मकाः ॥ उत्सवाः सर्वकालेषु यतोऽहं सर्वरूपिणी ॥ ३७१ ॥ तथाऽपि भक्तवात्सल्यात्किंचित्किंचिदथोच्यते ॥ शृणुष्वावहितो भूत्वा नगराज वचो मम ॥ ३७२ ॥ कोलापुरं महास्थानं यत्र लक्ष्मीः सदा स्थिता ॥ मातुः पुरं द्वितीयं च रेणुकाधिष्ठितं परम् ॥ ३७३ ॥ तुलजापुरं तृतीयं स्यात्सप्तशृङ्गं तथैव च ॥ हिङ्गुलाया महास्थानं ज्वालामुख्यास्तथैव च ॥ ३७४ ॥ शाकंभर्याः परं स्थानं भ्रामर्याः स्थानमुत्तमम् ॥ श्रीरक्तदन्तिकास्थानं दुर्गास्थानं तथैव च ॥३७५॥ विन्ध्याचलनिवासिन्याः स्थानं सर्वोत्तमोत्तमम् ॥ अन्नपूर्णामहास्थानं काञ्चीपुरमनुत्तमम् ॥ ३७६ ॥भीमादेव्याः परं स्थानं विमलास्थानमेव च ॥ श्रीचन्द्रलामहास्थानं कौशिकीस्थानमेव च ॥ ३७७ ॥ नीलाम्बायाः परं स्थानं नीलपर्वतमस्तके ॥ जाम्बूनदेश्वरीस्थानं तथा श्रीनगरं शुभम् ॥ ३७८ ॥ गुह्यकाल्या महास्थानं नेपाले

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

यत्प्रतिष्ठितम् ॥ मीनाक्ष्याः परमं स्थानं यच्च प्रोक्तं चिदम्बरे ॥ ३७९ ॥ वेदारण्यं महास्थानं सुन्दर्या समधिष्ठितम् ॥ एकाम्बरं महास्थानं परशक्त्या प्रतिष्ठितम् ॥ ३८० ॥ महालसा परं स्थानं योगेश्वर्यास्तथैव च ॥ तथा नीलसरस्वत्याः स्थानं चीनेषु विश्रुतम् ॥ ३८१ ॥ वैद्यनाथे तु बगलास्थानं सर्वोत्तमं मतम् ॥ श्रीमच्छ्रीभुवनेश्वर्या मणिद्वीपं मम स्मृतम् ॥ ३८२ ॥ श्रीमच्छ्रीपुरभैरव्याः कामाख्यायोनिमण्डलम् ॥ भूमण्डले क्षेत्ररत्नं महामायाधिवासितम् ॥ ३८३ ॥ नातः परतरं स्थानं क्वचिदस्ति धरातले ॥ प्रतिमासं भवेद्देवी यत्र साक्षाद्रजस्वला ॥ ३८४ ॥ तत्रत्या देवताः सर्वाः पर्वतात्मकतां गताः ॥ पर्वतेषु वसन्त्येव महत्यो देवता अपि ॥ ३८५ ॥ पृथ्वी सर्वा देवीरूपा स्मृता बुधैः ॥ नातः परतरं स्थानं कामाख्यायोनिमण्डलात् ॥ ॥ ३८६ ॥ गायत्र्याश्च परं स्थानं श्रीमत्पुष्करमीरितम् ॥ अमरेशे चण्डिका स्यात्प्रभासे पुष्करेक्षिणी ॥ ३८७ ॥ नैमिषे तु महास्थाने देवी सा लिङ्गधारिणी ॥ पुरुहूता पुष्कराक्ष्ये आषाढौ च रतिस्तथा ॥३८८॥ चण्डमुण्डा महास्थाने दण्डिनी परमेश्वरी ॥ भारभूतौ भवेद्भूतिर्नाकुले नकुलेश्वरी ॥ ३८९ ॥ चण्डिका तु हरिश्चन्द्रे श्रीगिरौ शांकरी स्मृता ॥ जप्येश्वरे त्रिशूला स्यात्सूक्ष्मा चाम्रातकेश्वरे ॥ ३९० ॥ शांकरी तु महाकाले शर्वाणी मध्यमाभिधे ॥ केदाराख्ये महाक्षेत्रे देवी सा मार्गदायिनी ॥ ३९१ ॥ भैरवाख्ये भैरवी सा गयायां मङ्गला स्मृता ॥ स्थाणुप्रिया कुरुक्षेत्रे स्वायंभुव्यपि नाकुले ॥ ३९२ ॥ कनखले भावेदुग्रा विश्वेशा विमलेश्वरे ॥ अट्टहासे महानन्दा महेन्द्रे तु महान्तका ॥ ३९३ ॥ भीमे भीमेश्वरी प्रोक्ता स्थाने वस्त्रापथे पुनः ॥ भवानी शांकरी प्रोक्ता रुद्राणी त्वर्धकोटिके॥३९४॥अविमुक्ते विशालाक्षी महाभागा महालये ॥ गोकर्णे भद्रकर्णी स्याद्भद्रा स्याद्भद्रकर्णके ॥३९५॥ उत्पलाक्षी सुवर्णाक्षे स्थाण्वीशा स्थाणुसंज्ञके॥कमलालये तु कमला प्रचण्डा च्छगलण्डके॥३९६॥कुरण्डले त्रिसन्ध्या स्यान्माकोटे मुकुटेश्वरी ॥ मण्डलेशे शाडकी स्यात्काली कालञ्जरे पुनः ॥ ३९७ ॥ शङ्कुकर्णे ध्वनिः प्रोक्ता स्थूला स्यात्स्थूलकेश्वरे॥ज्ञानिनां हृदयाम्भोजे हृल्लेखा परमेश्वरी ॥ ३९८ ॥ प्रोक्तानीमानि स्थानानि देव्याः प्रियतमानि च ॥ तत्तत्क्षेत्रस्य माहात्म्यं श्रुत्वा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पूर्वं नगोत्तम ॥ ३९९ ॥ तदुक्तेन विधानेन पश्चाद्देवीं प्रपूजयेत् ॥ अथवा सर्वक्षेत्राणि काश्यां सन्ति नगोत्तम ॥ ॥ ४०० ॥ तत्र नित्यं वसेन्नित्यं देवोभक्तिपरायणः ॥ तानि स्थानानि संपश्यन् जपन्देवीं निरन्तरम् ॥ ४०१ ॥ ध्यायं स्तच्चरणाम्भोजं मुक्तो भवति बन्धनात् ॥ इमानि देवीनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ॥ ४०२ ॥ भस्मीभवन्ति पापानि त त्क्षणान्नग सत्वरम् ॥ श्राद्धकाले पठेदेतान्यमलानि द्विजाग्रतः ॥ ४०३ ॥ मुक्तास्तत्पितरः सर्वे प्रयान्ति परमां गतिम् ॥ अधुना कथयिष्यामि व्रतानि तव सुव्रत ॥ ४०४ ॥ नारीभिश्च नरैश्चैव कर्तव्यानि प्रयत्नतः ॥ व्रतमनन्ततृतीयाख्यं रसकल्याणिनीव्रतम् ॥ ॥४०५॥ आर्द्रानन्दकरं नाम्ना तृतीयायां व्रतं च यत् ॥ शुक्रवारव्रतं चैव तथा कृष्णचतुर्दशी ॥४०६॥ भौमवारव्रतंचैव प्रदोषव्रतमेव च यत्र देवो महादेवो देवी संस्थाप्य विष्टरे ॥ ४०७ ॥ नृत्यं करोति पुरतः सार्धं देवैर्निशामुखे ॥ तत्रोपोष्य रजन्यादौ प्रदोषे पूजयेच्छिवाम् ॥ ४०८ ॥ प्रतिपक्षं विशेषेण तद्देवीप्रीतिकारकम् ॥ सोमवारव्रतं चैव ममातिप्रियकृन्नग ॥ ४०९ ॥ तत्रापि देवीं संपूज्य रात्रौ भोजनमाचरेत् ॥ नवरात्रद्वयं चैव व्रतं प्रीतिकरं मम ॥ ४१० ॥ एवमन्यान्यपि विभो नित्यनैमित्तिकानि च ॥ व्रतानि कुरुते यो वै मत्प्रीत्यर्थं विमत्सरः ॥ ४११ ॥ प्राप्नोति मम सायुज्य स मे प्रियः ॥ उत्सवानपि कुर्वीत दोलोत्सवमुखान्विभो ॥ ४१२ ॥ शयनोत्सवं यथा कुर्यात्तथा जागरणोत्सवम् ॥ रथोत्सवं च मे कुर्याद्दमनोत्सवमेव च ॥४१३॥ पवित्रोत्सवमेवापि श्रवणे प्रीतिकारकम् ॥ मम भक्तः सदा कुर्यादेवमन्यान्महोत्सवान् ॥ ४१४ ॥ मद्भक्तान्भोजयेत्प्रीत्या तथा चैव सुवासिनीः ॥ कुमारीर्बटुकांश्चापि मद्बुद्ध्या मद्गतान्तरः ॥ ४१५ ॥ वित्तशाठ्येन रहितो यजेदेतान्सुमादिभिः ॥ य एवं कुरुते भक्त्या प्रतिवर्षमतन्द्रितः ॥ ४१६ ॥ स धन्यः कृतकृत्योऽसौ मत्प्रीतेः पात्रमञ्जसा ॥ सर्वमुक्तं समासेन मम प्रीति प्रदायकम् ॥ नाशिष्याय प्रदातव्यं नाभक्ताय कदाचन ॥ ४१७ ॥ इति श्रीदेवीगीतायामष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ श्रीहिमालय उवाच ॥ देवदेवि महेशानि करुणासागरेऽम्बिके ॥ ब्रूहि पूजाविधिं सम्यग्यथावदधुना निजम् ॥ ४१८ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ वक्ष्ये पूजा

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

विधिं राजन्नम्बिकाया यथा प्रियम् ॥ अत्यन्तश्रद्धया सार्धं शृणु पर्वतपुंगव ॥ ४१९ ॥ द्विविधा मम पूजा स्याद्बाह्या चाभ्यन्तराऽपि च ॥ बाह्याऽपि द्विविधा प्रोक्ता वैदिकी तान्त्रिकी तथा ॥ वैदिक्यर्चाऽपि द्विविधा मूर्तिभेदेन भूधर ॥ ४२० ॥ वैदिकी वैदिकैः कार्या वेददीक्षासमन्वितैः ॥ तन्त्रोक्तदीक्षावद्भिस्तु तान्त्रिकी संश्रिता भवेत् ॥ इत्थं पूजारहस्यं च न ज्ञात्वा विपरीतकम् ॥ ४२१ ॥ करोति यो नरो मूढः स पतत्येव सर्वथा ॥ तत्र या वैदिकी प्रोक्ता प्रथमा तां वदाम्यहम् ॥ ४२२ ॥ यन्मे साक्षात् परं रूपं दृष्टवानसि भूधर ॥ अनन्तशीर्षनयनमनन्तचरणं महत् ॥ ४२३ ॥ सर्वशक्तिसमायुक्तं प्रेरकं यत्परात्परम् ॥ तदेव पूजयेन्नित्यं नमेद्ध्यायेत्स्मरेदपि ॥ ४२४ इत्येतत्प्रथमार्चायाः स्वरूपं कथितं नग ॥ शान्तः समाहितमना दम्भाहंकारवर्जितः ॥ ॥ ४२५ ॥ तत्परो भव तद्याजी तदेव शरणं व्रज ॥ तदेव चेतसा पश्य जप ध्यायस्व सर्वदा ॥ ४२६ ॥ अनन्यया प्रेमयुक्तभक्त्या मद्भावमाश्रितः ॥ यज्ञैर्यश तपोदानैर्मामेव परितोषय ॥ ४२७ ॥ इत्थं ममानुग्रहतो मोक्ष्यसे भवबन्धनात् ॥ मत्परा ये मदासक्तचित्ता भक्तवरा मताः॥४२८॥प्रतिजाने भवादस्मादुद्धराम्यचिरेण तु॥ध्यानेन कर्मयुक्तेन भक्तिज्ञानेन वा पुनः ॥४२९॥ प्राप्योऽहं सर्वथा राजन्न तु केवलकर्मभिः ॥ धर्मात्संजायते भक्तिर्भक्त्या संजायते परम् ॥ ४३० ॥ श्रुतिस्मृतिभ्यामुदितं यत्स धर्मः प्रकीर्तितः ॥ अन्यशास्त्रेण यः प्रोक्तो धर्माभासः स उच्यते ॥ ४३१ ॥ सर्वज्ञात्सर्वशक्तेश्च मत्तो वेदः समुत्थितः ॥ अज्ञानस्य ममाभावादप्रमाणा न च श्रुतिः ॥ ४३२ ॥ स्मृतयश्च श्रुतेरर्थं गृहीत्वैव च निर्गताः ॥ मन्वादीनां स्मृतीनां च ततः प्रामाण्यमिष्यते ॥ ४३३ ॥ क्वचित्कदाचित्तन्त्रार्थकटाक्षेण परोदितम् ॥ धर्मं वदन्ति सोंऽशस्तु नैव ग्राह्योऽस्ति वैदिकैः ॥४३४॥ अन्येषां शास्त्रकर्तॄणामज्ञानप्रभवत्वतः ॥ अज्ञानदोषदुष्टत्वात्तदुक्तेर्न प्रमाणता ॥ ४३५ ॥ तस्मान्मुमुक्षुर्धर्मार्थं सर्वथा वेदमाश्रयेत् ॥ राजाज्ञा च यथा लोके हन्यते न कदाचन ॥ ४३६ ॥ सर्वेशान्या ममाज्ञा सा श्रुतिस्त्याज्या कथं नृभिः ॥ मदाज्ञारक्षणार्थं तु ब्रह्मक्षत्रियजातयः ॥ ४३७ ॥ मया सृष्टास्ततो ज्ञेयं रहस्यं मे श्रुतेर्वचः ॥ यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भूधर ॥ ४३८ ॥

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदा वेषान्बिभर्म्यहम् ॥ देवदैत्यविभागश्चाप्यत एवाभवन्नृप ॥ ४३९ ॥ ये न कुर्वन्ति तद्धर्मं तच्छिक्षार्थं मया सदा ॥ संपादितास्तु नरकास्त्रासो यच्छ्रवणाद्भवेत् ॥ ४४० ॥ यो वेदधर्ममुज्झित्वा धर्ममन्यं समाश्रयेत् ॥ राजा प्रवासयेद्देशान्निजादेतानधर्मिणः ॥ ४४१ ॥ ब्राह्मणैर्न च संभाष्याः पङ्क्तिग्राह्या न च द्विजैः ॥ अन्यानि यानि शास्त्राणि लोकेऽस्मिन्विविधानि च ॥ ४४२ ॥ श्रुतिस्मृतिविरुद्धानि तामसान्येव सर्वशः ॥ वामं कापालकं चैव कौलकं भैरवागमः ॥ ॥ ४४३ ॥ शिवेन मोहनार्थाय प्रणितो नान्यहेतुकः ॥ दक्षशापाद्भृगोः शापाद्दधीचस्य च शापतः ॥ ४४४ ॥ दग्धा ये ब्राह्मणवरा वेदमार्गबहिष्कृताः ॥ तेषामुद्धरणार्थाय सोपानक्रमतः सदा ॥ ४४५ ॥ शैवाश्च वैष्णवाश्चैव सौराः शाक्तास्तथैव च ॥ गाणपत्या आगमाश्च प्रणीताः शंकरेण तु ॥ ४४६ ॥ तत्र वेदाविरुद्धोंऽशोऽप्युक्त एव क्वचित्क्वचित् ॥ वैदिकैस्तद्ग्रहे दोषो न भवत्येव कर्हिचित् ॥ ४४७ ॥ सर्वथा वेदभिन्नार्थे नाधिकारी द्विजो भवेत् ॥ वेदाधिकारहीनस्तु भवेत्तत्राधिकारवान् ॥ ४४८ । तत्मात्सर्वप्रयत्नेन वैदिको वेदमाश्रयेत् ॥ धर्मेणासहितं ज्ञानं परं ब्रह्म प्रकाशयेत् ॥ ४४९ ॥ सर्वैषणाः परित्यज्य मामेव शरणं गताः ॥ सर्वभूतदयावन्तो मानाहंकारवर्जिताः ॥ ४५० ॥ मच्चिता मद्गतप्राणा मत्स्थानकथने रताः ॥ संन्यासिनो वनस्थाश्च गृहस्था ब्रह्मचारिणः ॥ ४५१ ॥ उपासते सदा भक्त्या योगमैश्वरसंज्ञितम् ॥ तेषां नित्याभियुक्ताना महमज्ञानजं तमः ॥ ४५२ ॥ ज्ञानसूर्यप्रकाशेन नाशयामि न संशयः ॥ इत्थं वैदिकपूजायाः प्रथमाया नगाधिप ॥ ४५३ ॥ स्वरूपमुक्तं संक्षेपाद्द्वितीयाया अथो ब्रुवे ॥ मूर्तौ वा स्थण्डिले वाऽपि तथासूर्यैन्दुमण्डले ॥ ४५४ ॥ जलेऽथवा बाणलिङ्गे यन्त्रे वाऽपि महापटे ॥ तथा श्रीहृदयाम्भोजे ध्यात्वा देवीं परात्पराम् ॥ ४५५ ॥ सगुणां करुणापूर्णां तरुणीमरुणारुणाम् ॥ सौन्दर्य सारसीमान्तां सर्वावयवसुन्दरीम् ॥ ४५६ ॥ शृङ्गाररससंपूर्णां सदा भक्तार्तिकातराम् ॥ प्रसादसुमुखीमम्बां चन्द्रखण्डशिखण्डि नीम् ॥ ४५७ ॥ पाशाङ्कुशवराभीतिधरामानन्दरूपिणीम् ॥ पूजयेदुपचारैश्च यथा वित्तानुसारतः ॥ ४५८ ॥ यावदान्तरपूजाया

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

मधिकारो भवेन्न हि ॥ तावद्बाह्यामिमां पूजां श्रयेज्जाते तु तां त्यजेत् ॥४५९॥ आभ्यन्तरा तु या पूजा सा तु संविल्लयः स्मृतः ॥ संविदेव परं रूपमुपाधिरहितं मम ॥ ४६० ॥ अतः संविदि मद्रूपे चेतः स्थाप्य निराश्रयम् ॥ संविद्रूपातिरिक्तं तु मिथ्या मायामयं जगत् ॥ ४६१ ॥ प्रातः संसारनाशाय साक्षिणीमात्मरूपिणीम् ॥ भावयेन्निर्मनस्केन योगयुक्तेन चेतसा ॥ ४६२ ॥ अतः परं बाह्यपूजाविस्तारः कथ्यते मया ॥ सावधानेन मनसा शृणु पर्वतसत्तम ॥ ४६३ ॥ इति श्रीदेवीगीतायां नवमोऽध्यायः ॥ ॥ ९ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ प्रातरुत्थाय शिरसि संस्मरेत्पद्ममुज्ज्वलम् ॥ कर्पूराभं स्मरेत्तत्र श्रीगुरुं निजरूपिणम् ॥ ४६४ ॥ सुप्रसन्नं लसद्भूषाभूषितं शक्तिसंयुतम् ॥ नमस्कृत्य ततो देवीं कुण्डलीं संस्मरेद्बुधः ॥ ४६५ ॥ प्रकाशमानां प्रथमे प्रयाणे प्रतिप्रयाणेऽप्य मृतायमानाम् ॥ अन्तःपदव्यामनुसंचरन्तीमानन्दरूपामबलां प्रपद्ये ॥ ४६६ ॥ ध्यात्वैवं तच्छिखामध्ये सच्चिदानन्दरूपिणीम् ॥ मां ध्यायेदन्नशौचादिक्रियाः सर्वाः समापयेत् ॥ ४६७ ॥ अग्निहोत्रं ततो हुत्वा मत्प्रीत्यर्थं द्विजोत्तमः ॥ होमान्ते स्वासने स्थित्वा पूजासंकल्पमाचरेत् ॥ ४६८ ॥ भूतशुद्धिं पुरा कृत्वा मातृकान्यासमेव च ॥ हृल्लेखामातृकान्यासं नित्यमेव समाचरेत्॥४६९॥ मूलाधारे हकारं च हृदये च रकारकम् भ्रूमध्ये तद्वदीकारं ह्रींकारं मस्तके न्यसेत्॥४७०॥ तत्तन्मन्त्रोदितानन्यान्न्यासान्सर्वान् समाचरेत् ॥ कल्पयेत्स्वात्मनो देहे पीठं धर्मादिभिः पुनः ॥ ४७१ ॥ ततो ध्यायेन्महादेवीं प्राणायामैर्विजृम्भिते ॥ हृदम्भोजे मम स्थाने पञ्चप्रेतासने बुधः ॥४७२॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ॥ एते पञ्च महाप्रेताः पादमूले मम स्थिताः॥ ४७३॥ पञ्चभूतात्मका ह्येते पञ्चावस्थात्मका अपि ॥ अहं त्वव्यक्तचिद्रूपा तदतीताऽस्मि सर्वथा ॥४७४॥ ततो विष्टरतां याताः शक्तितन्त्रेषु सर्वदा ॥ ध्यात्वैवं मानसैर्भोगैः पूजयेन्मां जपेदपि ॥ ४७५ ॥ जपं समर्प्य श्रीदेव्यै ततोऽर्घ्यस्थापनं चरेत् ॥ पात्रासादनकं कृत्वा पूजाद्रव्याणि शोधयेत् ॥ ४७६ ॥ जलेन तेन मनुना चास्त्रमन्त्रेण देशिकः ॥ दिग्बन्धं च पुरा कृत्वा गुरून्नत्वा ततःपरम् ॥ ॥ ४७७ ॥ तदनुज्ञां समादाय बाह्यपीठे ततः परम् ॥ हृदिस्थां भावितां मूर्तिं मम दिव्यां मनोहराम् ॥ ४७८ ॥ आवाहयेत्ततः

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

पीठे प्राणस्थापनविधया ॥ आसनावाहने चार्घ्यं पाद्याद्याचमनं तथा ॥ ४७९ ॥ स्नानं वासोद्वयं चैव भूषणानि च सर्वशः ॥ गन्धपुष्पं यथायोग्यं दत्त्वा देव्यै स्वभक्तितः ॥ ४८० ॥ यन्त्रस्थानामावृतीनां पूजनं सम्यगाचरेत् ॥ प्रतिवारमशक्तानां शुक्र वारो नियम्यते ॥ ४८१ ॥ मूलदेवीप्रभारूपाः स्मर्तव्या अङ्गदेवताः ॥ तत्प्रभापटलव्याप्तं त्रैलोक्यं च विचिन्तयेत् ॥ ४८२ ॥ पुनरावृत्तिसहितां मूलदेवीं च पूजयेत् ॥ गन्धादिभिः सुगन्धैस्तु तथा पुष्पैः सुवासितैः ॥४८३॥ नैवेद्यैस्तर्पणैश्चैव ताम्बूलैर्दक्षिणा दिभिः ॥ तोषयेन्मां त्वत्कृतेन नाम्नां साहस्रकेण च ॥ ४८४ ॥ कवचेन च सूक्तेनाहं रुद्रेभिरिति प्रभो ॥ देव्यथर्वशिरोमन्त्रैर्हृल्लेखो पनिषद्भवैः ॥ ४८५ ॥ महाविद्यां महामन्त्रैस्तोषयेन्मां मुहुर्मुहुः ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रीं प्रेमार्द्रहृदयो नरः ॥ ४८६ ॥ पुलकाङ्कित सर्वाङ्गैर्बाष्परुद्धाक्षिनिःस्वनः ॥ नृत्यगीतादिघोषेण तोषयेन्मां मुहुर्मुहुः ॥ ४८७ ॥ वेदपारायणैश्चैव पुराणैः सकलैरपि ॥ प्रतिपाद्या यतोऽहं वै तस्मात्तैस्तोषयेत्तु माम् ॥ ४८८ ॥ निजं सर्वस्वमपि मे सदेहं नित्यशोऽर्पयेत् ॥ नित्यहोमं ततः कुर्याद्ब्राह्मणांश्च सुवा सिनीः ॥ ४८९ ॥ बटुकान्पामरानन्यान्देवीबुद्ध्या तु भोजयेत् ॥ नत्वा पुनः स्वहृदये व्युत्क्रमेण विसर्जयेत् ॥ ४९० ॥ सर्वं हृल्लेखया कुर्यात्पूजनं मम सुव्रत॥हृल्लेखा सर्वमन्त्राणां नायिका परमा स्मृता ॥४९१॥ हृल्लेखादर्पणे नित्यमहं तु प्रतिबिम्बिता ॥ तस्माद्धृल्लेखया दत्तं सर्वमन्त्रैः समर्पितम् ॥ ४९२ ॥ गुरुं संपूज्य भूषाद्यैः कृतकृत्यत्वमावहेत् ॥ य एवं पूजयेद्देवीं श्रीमद्भुवनसुन्द रीम् ॥४९३॥ न तस्य दुर्लभं किंचित्कदाचित्क्वचिदस्ति हि ॥ देहान्ते तु मणिद्वीपं मम यात्येव सर्वथा ॥४९४॥ ज्ञेयो देवीस्वरूपो ऽसौ देवा नित्यं नमन्ति तम् ॥ इति ते कथितं राजन् महादेव्याः प्रपूजनम् ॥ ४९५ ॥ विमृश्यैतदशेषेणाप्यधिकारानुरूपतः ॥ कुरु मे पूजनं तेन कृतार्थस्त्वं भविष्यसि॥४९६॥इदं तु गीताशास्त्रं मे नाशिष्याय वदेत्क्वचित् ॥ नाभक्ताय प्रदातव्यं न धूर्ताय च दुर्हृदे ॥ ४९७ ॥ एतत्प्रकाशनं मातुरुद्घाटनमुरोजयोः ॥ तस्मादवश्यं यत्नेन गोपनीयमिदं सदा ॥४९८॥ देयं भक्ताय शिष्याय ज्येष्ठ पुत्राय चैव हि ॥ सुशीलाय सुवेषाय देवीभक्तियुताय च ॥ ४९९ ॥ श्राद्धकाले पठेदेतद्ब्राह्मणानां समीपतः ॥ तृप्तास्तत्पितरः सर्वे

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

प्रयान्ति परमं पदम् ॥५००॥ व्यास उवाच ॥ इत्युक्त्वा सा भगवती तत्रैवान्तरधीयत ॥ देवाश्च मुदिताः सर्वे देवीदर्शनतोऽभवन्५०१ ततो हिमालये जज्ञे देवी हैमवती तु सा ॥ या गौरीति प्रसिद्धाऽसीद्दत्ता सा शंकराय च ॥ ५०२ ॥ ततः स्कन्दः समुद्भूतस्तारकस्तेन पातितः ॥ समुद्रमन्थने पूर्वं रत्नान्यासुर्नराधिप ॥ ५०३ ॥ तत्र देवैः स्तुता देवी लक्ष्मीप्रीत्यर्थमादरात् ॥ तेषामनुग्रहार्थाय निर्गता तु रमा ततः ॥ ५०४ ॥ वैकुण्ठाय सुरैर्दत्ता तेन तस्य शमोऽभवत् ॥ इति ते कथितं राजन्देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ ५०५ ॥ गौरीलक्ष्म्योः समुद्भूतिविषयं सर्वकामदम् ॥ न वाच्य ते तदन्यस्मै रहस्यं कथितं यतः ॥ ५०६ ॥ गीता रहस्यभूतेयं गोपनीया प्रयत्नतः ॥ सर्वमुक्तं समासेन यत्पृष्टं तत्त्वयाऽनघ ॥ ५०७ ॥ पवित्रं पावनं दिव्यं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥५०८॥ इति श्रीदेवीगीतायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते बृहज्ज्योतिषार्णवे अष्टमे धर्मस्कन्धे तृतीये उपासनास्तबके अष्टाविंशत्युत्तरशततमे श्रीदुर्गोपासनाध्याये देवीभागवतसप्तमस्कंधोक्तश्रीदेवीगीतानिरूपणं नामैकोनषष्टितमं प्रकरणम् ॥ ५९ ॥ अथ ग्रन्थालङ्कारः—वाराहीतन्त्रोक्तरवियामलतन्त्रोक्तएकादशविधपाठक्रमो ग्रन्थविस्तरभयान्नात्रोच्यते ॥ शेषग्रन्थे भविष्यति ॥ श्रीमद्वाजसनेयिगौतमकुलोत्पन्नोऽतिविद्यावतां मान्यो गुर्जरपण्डितोपपदकौदीच्यः सहस्राह्वकः ॥ ज्योतिःशास्त्रविशारदोऽतिमतिमान् श्रीव्यङ्कटाख्यो द्विजस्तज्जोऽहं हरिकृष्णसंज्ञ इममाकार्षं विदां प्रीतये ॥ १ ॥ दक्षिणे सुमहाराष्ट्रदेशे च नगरं महत् ॥ औरङ्गाबादसंज्ञं वै तत्र चास्ति जनिर्मम ॥२॥ प्रार्थये सर्वविदुषां क्षमध्वं मेऽपराधकम् ॥ यद्यत्र कुकृतं वा स्यादधिकं यत्रकुत्रचित् ॥ ॥ ३ ॥ रागमुत्सृज्य तत्सर्वं निर्मलं कुरुतादरात् ॥ अत्रावशिष्टो यो भागः स तु शेषे भविष्यति ॥ ४ ॥ इति ग्रन्थालंकारप्रकरणं षष्टितमम् ॥६०॥ इति श्रीमज्ज्योतिर्वित्कुण्डलावतंसव्यंकटरामात्मजहरिकृष्णविनिर्मिते बृहज्ज्योतिषार्णवेऽष्टमे धर्मस्कन्धे तृतीये उपासनास्तबके श्रीदुर्गोपासनानिरूपणं नामाष्टाविंशत्युत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १२८ ॥ अथाग्रे त्रिपुरभैरव्युपासना ॥

---

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

इति बृहज्ज्योतिषार्णवेऽष्टमे धर्मस्कंध उपासनास्तबकेऽष्टाविंश-त्यधिकशततमः श्रीदुर्गोपासनाकल्पद्रुमाध्यायः समाप्तः ।

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri




खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

Chinma, Punjab Collection of Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri